सामान्य

# हिन्दी व्याकरण

एवम्

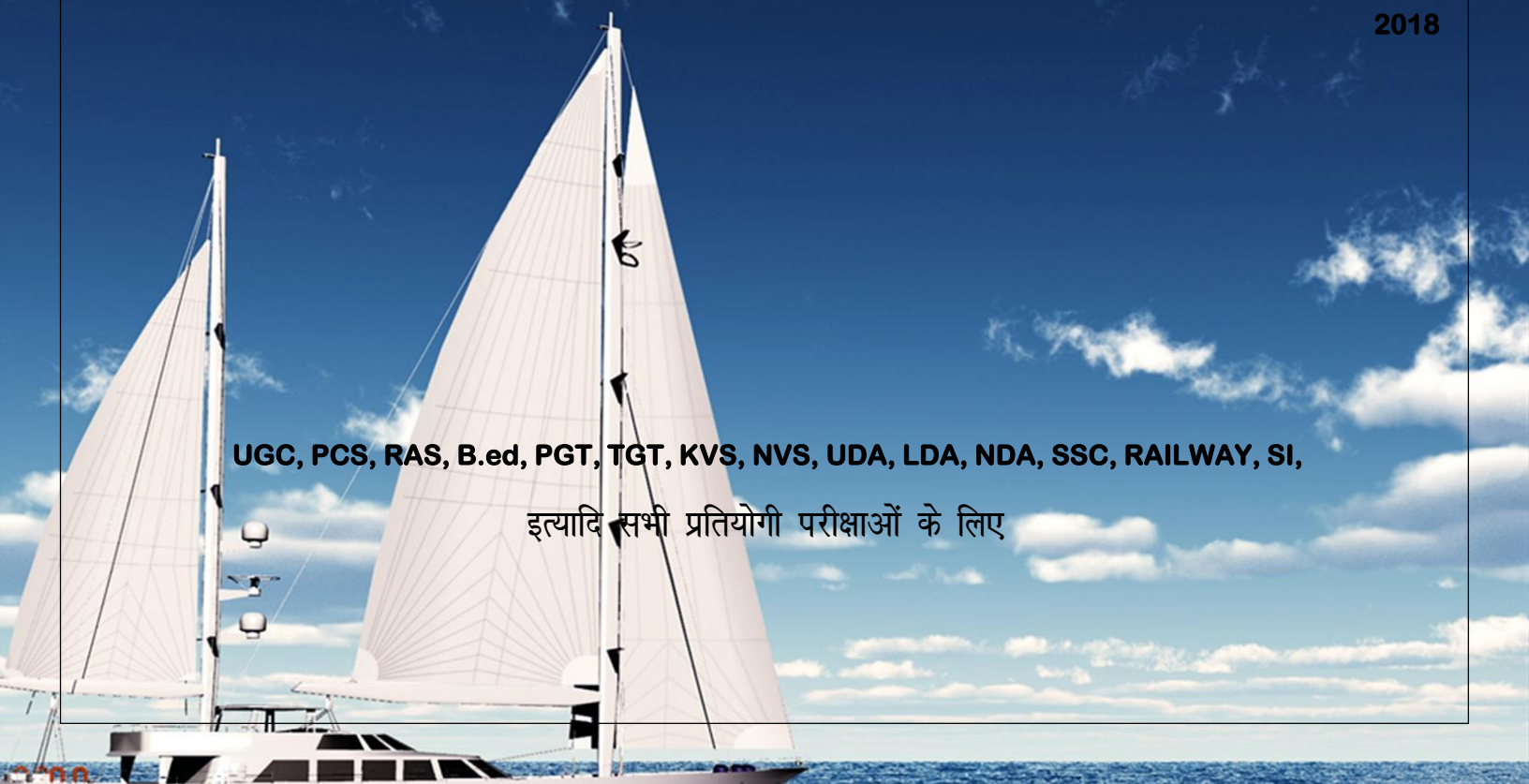
## संक्षिप्त हिन्दी साहित्य

अजय कुमार

एम.ए.(हिन्दी)

1st Edition

2018



**UGC, PCS, RAS, B.ed, PGT, TGT, KVS, NVS, UDA, LDA, NDA, SSC, RAILWAY, SI,**

इत्यादि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

सामान्य

# हिन्दी व्याकरण

एवम्

## संक्षिप्त हिन्दी साहित्य

अजय कुमार

एम.ए.(हिन्दी)

**1st Edition**

**2018**

AJAY KUMAR

**UGC, PCS, RAS, B.ed, PGT, TGT, KVS, NVS, UDA, LDA, NDA, SSC, RAILWAY, SI,**

इत्यादि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

**सामान्य**

**हिन्दी व्याकरण एवम सन्क्षिप्त हिन्दी साहित्य**

By

अजय कुमार

एम.ए.(हिन्दी)

प्रथम संस्करण 2018

**©लेखक**

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके-इलेक्ट्रानिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या वेब माध्यम से लेखक की अनुमति के बिना वितरित नही किया जा सकता है । लेखक ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है । पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक जिम्मेदार नहीं हैं ।

MRP - ....

AJAY KUMAR

# प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक **"सामान्य हिन्दी व्याकरण एवम् संक्षिप्त हिन्दी साहित्य"** विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं पूछे गए प्रश्नो के आधार पर तैयार की गई है । इसे अधिक से अधिक लाभप्रद एवं उपयोगी बनाने के लिए प्रत्येक खण्ड मे अधिक विषयवस्तु एवं अधिक जानकारी का समावेश इस प्रकार किया गया है कि परीक्षार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में कोई कठिनाई नहीं हो ।

प्रस्तुत पुस्तक को उपयोगी बनाने में जिन विशेषज्ञों तथा सहकर्मियों का हमें सहयोग मिला उनके प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद पुस्तक में कुछ कमियों या त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सुधी पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित है।

01.01.2018

**अजय कुमार** .

onlinetaiyarigroup@gmail.com

AJAY KUMAR

# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1 | भाषा | 9 |
| 2 | लिपि | 13 |
| 3 | व्याकरण | 15 |
| 4 | वर्ण, वर्णमाला | 16 |
| 5 | शब्द | 25 |
| 6 | वाक्य | 34 |
| 7 | संज्ञा | 50 |
| 8 | सर्वनाम | 62 |
| 9 | क्रिया | 71 |
| 10 | काल | 79 |
| 11 | विशेषण | 83 |
| 12 | अव्यय | 93 |
| 13 | लिंग | 108 |
| 14 | उपसर्ग | 139 |
| 15 | प्रत्यय | 145 |
| 16 | तत्सम-तद्भव शब्द | 167 |
| 17 | संधि | 169 |
| 18 | कारक | 222 |
| 19 | मुहावरे | 236 |
| 20 | लोकोक्ति | 276 |
| 21 | समास | 286 |
| 22 | वचन | 330 |
| 23 | अलंकार | 337 |
| 24 | विलोम | 349 |
| 25 | अनेकार्थी शब्द | 372 |
| 26 | अनेक शब्दों के लिए एक शब्द | 383 |
| 27 | पत्रलेखन | 443 |
| 28 | विराम-चिह्न | 479 |
| 29 | युग्म शब्द | 494 |


AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| 30 | अनुच्छेद-लेखन | 507 |
| 31 | कहानी-लेखन | 509 |
| 32 | संवाद-लेखन | 514 |
| 33 | तार-लेखन | 517 |
| 34 | प्रतिवेदन-लेखन | 520 |
| 35 | पल्लवन | 524 |
| 36 | संक्षेपण | 529 |
| 37 | छन्द | 536 |
| 38 | रस | 554 |
| 39 | शब्दार्थ | 561 |
| 40 | धातु | 566 |
| 41 | पदबंध | 569 |
| 42 | उपवाक्य | 573 |
| 43 | शब्दों की अशुद्धियाँ | 574 |
| 44 | समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द | 578 |
| 45 | वाच्य | 581 |
| 46 | सारांश | 584 |
| 47 | भावार्थ | 585 |
| 48 | व्याख्या | 587 |
| 49 | टिप्पण | 590 |
| 50 | कार्यालयीय आलेखन | 593 |
| 51 | पर्यायवाची शब्द | 598 |
| 52 | श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द | 617 |
| 53 | वाक्य-शुद्धि | 622 |
| 54 | पाठ-बोधन | 638 |
| 55 | शब्द शक्ति | 661 |
| 56 | हिन्दी संख्याएँ | 673 |
| 57 | पारिभाषिक शब्दावली | 678 |
| | | |
| | हिन्दी-साहित्य | |
| 1 | 1. काव्य | 693 |
| 2 | 2. गद्य | 763 |
| | | |


AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ | 799 |
| 2 | प्रमुख स्थापनाएँ | 807 |
| 3 | प्रमुख वाद | 808 |
| 4 | प्रमुख दर्शन | 810 |
| 5 | प्रमुख उपनाम | 812 |
| 6 | प्रमुख तिथि/वर्ष | 816 |
| 7 | हिंदी में सर्वप्रथम | 824 |
| 8 | पुरस्कार | 831 |
| 9 | हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ प्रश्न | 837 |


AJAY KUMAR

AJAY KUMAR

# भाषा(Language)

सामान्यतः भाषा मनुष्य की सार्थक व्यक्त वाणी को कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और दूसरों के भावो को समझ सके उसे भाषा कहते है।

भाषा शब्द संस्कृत के भाष धातु से बना है। इसका अर्थ वाणी को व्यक्त करना है। इसके द्वारा मनुष्य के भावो, विचारो और भावनाओ को व्यक्त किया जाता है। वैसे भी भाषा की परिभाषा देना एक कठिन कार्य है। फिर भी भाषा  वैज्ञानिकों ने इसकी अनेक परिभाषा दी है। किन्तु ये परिभाषा पूर्ण नही है। हर में कुछ न कुछ त्रुटि पायी जाती है।

आचार्य देवनार्थ शर्मा ने भाषा की परिभाषा इस प्रकार बनायी है। उच्चरित ध्वनि संकेतो की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अथवा जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते है उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि संकेत की प्रणाली को भाषा कहते है।

यहाँ तीन बातें विचारणीय है- (1) भाषा ध्वनि संकेत है; (2) वह यादृच्छिक है; (3) वह रूढ़ है।

(1) सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते है। यह संकेत स्पष्ट होना चाहिए। मनुष्य के जटिल मनोभावों को भाषा व्यक्त करती है; किन्तु केवल संकेत भाषा नहीं है। रेलगाड़ी का गार्ड हरी झण्डी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि गाड़ी अब खुलनेवाली है; किन्तु भाषा में इस प्रकार के संकेत का महत्त्व नहीं है। सभी संकेतों को सभी लोग ठीक-ठीक समझ भी नहीं पाते और न इनसे विचार ही सही-सही व्यक्त हो पाते हैं। सारांश यह कि भाषा को सार्थक और स्पष्ट होना चाहिए।

(2) भाषा यादृच्छिक संकेत है। यहाँ शब्द और अर्थ में कोई तर्क-संगत सम्बन्ध नहीं रहता। बिल्ली, कौआ, घोड़ा, आदि को क्यों पुकारा जाता है, यह बताना कठिन है। इनकी ध्वनियों को समाज ने स्वीकार कर लिया है। इसके पीछे कोई तर्क नहीं है।

(3) भाषा के ध्वनि-संकेत रूढ़ होते हैं। परम्परा या युगों से इनके प्रयोग होते आये हैं। औरत, बालक, वृक्ष आदि शब्दों का प्रयोग लोग अनन्तकाल से करते आ रहे है। बच्चे, जवान, बूढ़े- सभी इनका प्रयोग करते है। क्यों करते है, इसका कोई कारण नहीं है। ये प्रयोग तर्कहीन हैं।

AJAY KUMAR

प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा होती है। हमारी राष्टभाषा हिंदी है। संसार में अनेक भाषाए है जैसे- हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बँगला, गुजराती, उर्दू, तेलगु, कन्नड़, चीनी, जमर्न आदि।

हिंदी के कुछ भाषावैज्ञानिकों ने भाषा के निम्नलिखित लक्षण दिए है।

डॉ श्यामसुन्दरदास के अनुसार - मनुष्य और मनुष्य बीच वस्तुओं के विषय अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि -संकेतो का जो ब्यवहार होता है, उसे भाषा कहते है।

डॉ बाबुराम सक्सेना के अनुसार- जिन ध्वनि-चिंहों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-बिनिमय करता है उसको समष्टि रूप से भाषा कहते है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते है-

(1) भाषा में ध्वनि-संकेतों का परम्परागत और रूढ़ प्रयोग होता है।

(2) भाषा के सार्थक ध्वनि-संकेतों से मन की बातों या विचारों का विनिमय होता है।

(3) भाषा के ध्वनि-संकेत किसी समाज या वर्ग के आन्तरिक और ब्राह्य कार्यों के संचालन या विचार-विनिमय में सहायक होते हैं।

(4) हर वर्ग या समाज के ध्वनि-संकेत अपने होते हैं, दूसरों से भित्र होते हैं।

## भाषा के प्रकार

भाषा के तीन रूप होते है-

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा।

1. मौखिक भाषा :- जिस ध्वनि का उच्चारण करके या बोलकर हम अपनी बात दुसरो को समझाते है, उसे मौखिक भाषा कहते है।

जैस- हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बंगला आदि।



AJAY KUMAR

2. लिखित भाषा :- जिन अक्षरों या चिन्हों की सहायता से हम अपने मन के विचारो को लिखकर प्रकट करते है, उसे लिखित भाषा कहते है।

जैसे - रोमन लिपि, देवनागरी लिपि, गुजराती लिपि, गुरुमुखी लिपि आदि।

3. सांकेतिक भाषा :- जिन संकेतो के द्वारा बच्चे या गूँगे अपनी बात दूसरों को समझाते है, वे सब सांकेतिक भाषा कहलाती है।

## भाषा की प्रकृति

भाषा सागर की तरह सदा चलती-बहती रहती है। भाषा के अपने गुण या स्वभाव को भाषा की प्रकृति कहते हैं। हर भाषा की अपनी प्रकृति, आंतरिक गुण-अवगुण होते है। भाषा एक सामाजिक शक्ति है, जो मनुष्य को प्राप्त होती है। मनुष्य उसे अपने पूवर्जो से सीखता है और उसका विकास करता है।

यह परम्परागत और अर्जित दोनों है। जीवन्त भाषा 'बहता नीर' की तरह सदा प्रवाहित होती रहती है। भाषा के दो रूप है- कथित और लिखित। हम इसका प्रयोग कथन के द्वारा, अर्थात बोलकर और लेखन के द्वारा (लिखकर) करते हैं। देश और काल के अनुसार भाषा अनेक रूपों में बंटी है। यही कारण है कि संसार में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं। भाषा वाक्यों से बनती है, वाक्य शब्दों से और शब्द मूल ध्वनियों से बनते हैं। इस तरह वाक्य, शब्द और मूल ध्वनियाँ ही भाषा के अंग हैं। व्याकरण में इन्हीं के अंग-प्रत्यंगों का अध्ययन-विवेचन होता है। अतएव, व्याकरण भाषा पर आश्रित है।

### भाषा के विविध रूप

हर देश में भाषा के तीन रूप मिलते है-

(1)बोलियाँ (2)परिनिष्ठित भाषा (3)राष्ट्रभाषा

बोलियाँ :- जिन स्थानीय बोलियों का परयोग साधारण अपने समूह या घरों में करती है, उसे बोली (dialect) कहते है।

किसी भी देश में बोलियों की संख्या अनेक होती है। ये घास-पात की तरह अपने-आप जन्म लेती है और किसी क्षेत्र-विशेष में बोली जाती है। जैसे- भोजपुरी, मगही, अवधी, मराठी तेलगु, इंग्लिश आदि।

परिनिष्ठित भाषा :- यह व्याकरण से नियन्त्रित होती हैं इसका प्रयोग शिक्षा, शासन और साहित्य में होता है। बोली को जब व्याकरण से परिष्कृत किया जाता है, तब वह परिनिष्ठित भाषा बन जाती है। खड़ीबोली कभी बोली थी, आज परिनिष्ठित भाषा बन गयी है, जिसका उपयोग भारत में सभी स्थानों पर होता है। जब भाषा व्यापक शक्ति ग्रहण कर लेती है, तब आगे चलकर राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के आधार पर राजभाषा या राष्टभाषा का स्थान पा लेती है। ऐसी भाषा सभी सीमाओं को लाँघकर अधिक व्यापक और विस्तृत क्षेत्र में विचार-विनिमय का साधन बनकर सारे देश की भावात्मक एकता में सहायक होती है। भारत में पन्द्रह विकसित भाषाएँ है, पर हमारे देश के राष्ट्रीय नेताओं ने हिन्दी भाषा को 'राष्ट्रभाषा' (राजभाषा) का गौरव प्रदान किया है। इस प्रकार, हर देश की अपनी राष्ट्रभाषा है- रूस की रूसी, फ्रांस की फ्रांसीसी, जर्मनी की जर्मन, जापान की जापानी आदि।

राष्ट्रभाषा :- जब कोई भाषा किसी राष्ट्र के अधिकांश प्रदेशों के बहुमत द्वारा बोली व समझी जाती है तो वह राष्टभाषा बन जाती है।

जैसे- हिंदी भारत की राष्टभाषा है।

मातृभाषा- जो भाषा बच्चा अपने परिवार या माता से सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं।

जैसे- कोई परिवार मूल रूप से हिन्दी भाषा बोलता है तो उस परिवार में जन्म लेने वाला बच्चा भी हिन्दी भाषा ही सीखेगा। अतः हिन्दी उस बालक की मातृभाषा होगी।

प्रादेशिक भाषा- जब कोई भाषा एक प्रदेश में बोली जाती है तो उसे 'प्रादेशिक भाषा' कहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय भाषा- जब कोई भाषा विश्व के दो या दो से अधिक राष्ट्रों द्वारा बोली जाती है तो वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन जाती है। जैसे- अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है।

.....

AJAY KUMAR

# लिपि

लिपि -शब्द का अर्थ है -'लीपना 'या 'पोतना ' विचारो का लीपना अथवा लिखना ही लिपि कहलाता है।

हिंदी और संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी है। अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी और उर्दू भाषा की लिपि फारसी है।

**लिपि** या लेखन प्रणाली का अर्थ होता है किसी भी भाषा की लिखावट या लिखने का ढंग। लिपि और भाषा दो अलग अलग चीज़ें होती हैं। भाषा वो चीज़ होती है जो बोली जाती है, लिखने को तो उसे किसी भी लिपि में लिख सकते हैं। किसी एक भाषा को उसकी सामान्य लिपि से दूसरी लिपि में लिखना, इस तरह कि वास्तविक अनुवाद न हुआ हो, इसे लिप्यन्तरण कहते हैं।

यद्यपि संसार भर में प्रयोग हो रही भाषाओं की संख्या अब भी हजारों में है, तथापि इस समय इन भाषाओं को लिखने के लिये केवल लगभग दो दर्जन लिपियों का ही प्रयोग हो रहा है। और भी गहराई में जाने पर पता चलता है कि संसार में केवल तीन प्रकार की ही मूल लिपियाँ (या लिपि परिवार) है-

- **चित्रलिपि (ideographic scripts) -** चीन, जापान एवं कोरिया में प्रयुक्त लिपियाँ,
- **ब्राह्मी से व्युत्पन्न लिपियाँ -** देवनागरी तथा दक्षिण एशिया एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रयुक्त लिपियाँ ; तथा
- **फोनेशियन (Phonecian) से व्युत्पन्न लिपियाँ -** सम्प्रति यूरोप, मध्य एशिया एवं उत्तरी अफ्रीका में प्रयुक्त लिपियाँ

ये तीनो लिपियाँ तीन अलग-अलग क्षेत्रों में विकसित हुईं जो पर्वतों एवं मरुस्थलों द्वारा एक-दूसरे से अलग-अलग स्थित हैं।

## अल्फाबेटिक (Alphabetic) लिपियाँ

इसमें स्वर अपने पूरे अक्षर का रूप लिये व्यंजन के बाद आते हैं।

- लैटिन लिपि (रोमन लिपि) -- अंग्रेज़ी, फ्रांसिसी, जर्मन, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग और पश्चिमी और मध्य यूरोप की सारी भाषाएँ
- यूनानी लिपि -- यूनानी भाषा, कुछ गणितीय चिन्ह
- अरबी लिपि -- अरबी, उर्दू, फ़ारसी, कश्मीरी
- इब्रानी लिपि -- इब्रानी
- सीरिलिक लिपि -- रूसी, सवियत संघ की ज़्यादातर भाषाएँ

## अल्फासिलैबिक (Alphasyllabic) लिपियाँ

इसकी हरेक इकाई में अगर एक या अधिक व्यंजन होता है और उसपर स्वर की मात्रा का चिह्न लगाया जाता है। अगर इकाई में व्यंजन नहीं होता तो स्वर का पूरा चिह्न लिखा जाता है।

- देवनागरी लिपि -- हिन्दी, उर्दू(नस्तालीक लिपि भी),संस्कृत, मराठी, नेपाली
- ब्राह्मी लिपि -- प्राचीन काल में संस्कृत और पाली
- गुरुमुखी लिपि -- पंजाबी

- तमिल लिपि -- तमिल
- गुजराती लिपि -- गुजराती
- बंगाली लिपि -- बांगला
- भारत की अन्य लिपियाँ
- कानो लिपि -- जापानी

## चित्र लिपियाँ

ये सरलीकृत चित्र होते हैं।

- प्राचीन मिस्री लिपि -- प्राचीन मिस्री
- चीनी लिपि -- चीनी (मंदारिन, कैण्टोनी)
- कांजी लिपि -- जापानी

## देवनागरी से अन्य लिपियों में रूपान्तरण

- आईट्रान्स निरूपण, देवनागरी को लैटिन (रोमन) में परिवर्तित करने का आधुनिकतम और अक्षत (lossless) तरीका है।
- आजकल अनेक कम्प्यूटर प्रोग्राम उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से देवनागरी में लिखे पाठ को किसी भी भारतीय लिपि में बदला जा सकता है।
- कुछ ऐसे भी कम्प्यूटर प्रोग्राम हैं जिनकी सहायता से देवनागरी में लिखे पाठ को लैटिन, अरबी, चीनी, क्रिलिक, आईपीए (IPA) आदि में बदला जा सकता है।
- यूनिकोड के पदार्पण के बाद देवनागरी का रोमनीकरण (romanization) अब **अनावश्यक** होता जा रहा है। क्योंकि धीरे-धीरे कम्प्यूटर पर देवनागरी को (और अन्य लिपियों को भी) पूर्ण समर्थन मिलने लगा है।

# व्याकरण (Grammar)

व्याकरण वह विद्या है जिसके द्वारा हमे किसी भाषा का शुद्ध बोलना, लिखना एवं समझना आता है।

## व्याकरण के प्रकार

(1) वर्ण या अक्षर

(2) शब्द

(3)वाक्य

(1) वर्ण या अक्षर:- भाषा की उस छोटी ध्वनि (इकाई )को वर्ण कहते है जिसके टुकड़े नही किये सकते है।

जैसे -अ, ब, म, क, ल, प आदि।

(2) शब्द:- वर्णो के उस मेल को शब्द कहते है जिसका कुछ अर्थ होता है।

जैसे- कमल, राकेश, भोजन, पानी, कानपूर आदि।

(3 )वाक्य :- अनेक शब्दों को मिलाकर वाक्य बनता है। ये शब्द मिलकर किसी अर्थ का ज्ञान कराते है।

जैसे- सब घूमने जाते है। राजू सिनेमा देखता है

## हिन्दी व्याकरण की विशेषताएँ

हिन्दी-व्याकरण संस्कृत व्याकरण पर आधृत होते हुए भी अपनी कुछ स्वतंत्र विशेषताएँ रखता है। हिन्दी को संस्कृत का उत्तराधिकार मिला है। इसमें संस्कृत व्याकरण की देन भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। पं० किशोरीदास वाजपेयी ने लिखा है कि "हिन्दी ने अपना व्याकरण प्रायः संस्कृत व्याकरण के आधार पर ही बनाया है- क्रियाप्रवाह एकान्त संस्कृत व्याकरण के आधार पर है, पर कहीं-कहीं मार्गभेद भी है। मार्गभेद वहीं हुआ है, जहाँ हिन्दी ने संस्कृत की अपेक्षा सरलतर मार्ग ग्रहण किया है।"

AJAY KUMAR

# वर्ण, वर्णमाला(Alphabet)

वर्ण- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खंड या टुकड़े नहीं किये जा सकते। जैसे-अ, ई, व, च, क,ख्, इत्यादि।

ये सभी वर्ण है, क्योंकि इनके खंड नहीं किये जा सकते। उदाहरण द्वारा मूल ध्वनियों को यहाँ स्पष्ट किया जा सकता है। 'राम' और 'गया' में चार-चार मूल ध्वनियाँ हैं,जिनके खंड नहीं किये जा सकते- र+आ+म+अ =राम, ग+अ+य+आ =गया। इन्हीं अखंड मूल ध्वनियों को वर्ण कहते हैं। हर वर्ण की अपनी लिपि होती है। लिपि को वर्ण-संकेत भी कहते हैं।

वर्णमाला- वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है, किसी भाषा के समस्त वर्णो के समूह को वर्णमाला कहते हैै।

## वर्ण के भेद

हिंदी भाषा में वर्ण दो प्रकार के होते है।

(1)स्वर (vowel) (2) व्यंजन (Consonant)

(1) स्वर (vowel) :- वे वर्ण जिनका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के हो सकता है ,स्वर कहलाता है।

इसके उच्चारण में कंठ, तालु का उपयोग होता है, जीभ, होठ का नहीं।

हिंदी वर्णमाला में 16 स्वर है

जैसे -अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ॠ ऌ ॡ।

## स्वर के भेद

स्वर के दो भेद होते है-

(i) मूल स्वर(ii) संयुक्त स्वर

(i) मूल स्वर : - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ

(ii) संयुक्त स्वर : - ऐ (अ +ए) और औ (अ +ओ)

AJAY KUMAR

### मूल स्वर के भेद

मूल स्वर के तीन भेद होते है -

(i) ह्रस्व स्वर  (ii) दीर्घ स्वर  (iii)प्लुत स्वर

**(i)ह्रस्व स्वर :-** जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते है। ह्रस्व स्वर चार होते है -अ आ उ ऋ।

**(ii)दीर्घ स्वर :-** स्वरों उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते है।

दीर्घ स्वर सात होते है -आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

दीर्घ स्वर दो शब्दों योग से बनते है।

जैसे -आ =(अ +अ ) ई =(इ +इ ) ऊ =(उ +उ ) ए =(अ +इ ) ऐ =(अ +ए ) ओ =(अ +उ ) औ =(अ +ओ )

**(iii)प्लुत स्वर :-**जिस स्वर के उच्चारण में तिगुना समय लगे, उसे 'प्लुत' कहते हैं। इसका कोई चिह्न नहीं होता। इसके लिए तीन (३) का अंक लगाया जाता है। जैसे- ओउम। हिन्दी में साधारणतः प्लुत का प्रयोग नहीं होता। वैदिक भाषा में प्लुत स्वर का प्रयोग अधिक हुआ है। इसे 'त्रिमात्रिक' स्वर भी कहते हैं।

### वर्णों की मात्राएँ

व्यंजन वर्णों के उच्चारण में जिन स्वरमूलक चिह्नों का व्यवहार होता है, उन्हें 'मात्राएँ' कहते हैं।

दूसरे शब्दो में- स्वरों के व्यंजन में मिलने के इन रूपों को भी 'मात्रा' कहते हैं, क्योंकि मात्राएँ तो स्वरों की होती हैं।

ये मात्राएँ दस है; जैसे- ा े, ै ो ू इत्यादि। ये मात्राएँ केवल व्यंजनों में लगती हैं; जैसे- का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ इत्यादि। स्वर वर्णों की ही ह्रस्व-दीर्घ (छंद में लघु-गुरु) मात्राएँ होती हैं, जो व्यंजनों में लगने पर उनकी मात्राएँ हो जाती हैं। हाँ, व्यंजनों में लगने पर स्वर उपयुक्त दस रूपों के हो जाते हैं।

## अनुनासिक, निरनुनासिक, अनुस्वार और विसर्ग

अनुनासिक, निरनुनासिक, अनुस्वार और विसर्ग- हिन्दी में स्वरों का उच्चारण अनुनासिक और निरनुनासिक होता हैं। अनुस्वार और विर्सग व्यंजन हैं, जो स्वर के बाद, स्वर से स्वतंत्र आते हैं। इनके संकेतचिह्न इस प्रकार हैं।

AJAY KUMAR

**अनुनासिक (ँ) -** ऐसे स्वरों का उच्चारण नाक और मुँह से होता है और उच्चारण में लघुता रहती है। जैसे- गाँव, दाँत, आँगन, साँचा इत्यादि।

**अनुस्वार ( ं) -** यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिसकी ध्वनि नाक से निकलती है। जैसे- अंगूर, अंगद, कंकन।

**निरनुनासिक -** केवल मुँह से बोले जानेवाला सस्वर वर्णों को निरनुनासिक कहते हैं। जैसे- इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

विसर्ग ( ः) - अनुस्वार की तरह विसर्ग भी स्वर के बाद आता है। यह व्यंजन है और इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। संस्कृत में इसका काफी व्यवहार है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है; किन्तु तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे- मनःकामना, पयःपान, अतः, स्वतः, दुःख इत्यादि।

टिप्पणी- अनुस्वार और विसर्ग न तो स्वर हैं, न व्यंजन; किन्तु ये स्वरों के सहारे चलते हैं। स्वर और व्यंजन दोनों में इनका उपयोग होता है। जैसे- अंगद, रंग। इस सम्बन्ध में आचार्य किशोरीदास वाजपेयी का कथन है कि "ये स्वर नहीं हैं और व्यंजनों की तरह ये स्वरों के पूर्व नहीं पश्चात आते हैं, "इसलिए व्यंजन नहीं। इसलिए इन दोनों ध्वनियों को 'अयोगवाह' कहते हैं।" अयोगवाह का अर्थ है- योग न होने पर भी जो साथ रहे।

**(2) व्यंजन (Consonant):-** जिन वर्णो को बोलने के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है उन्हें व्यंजन कहते है।

दूसरे शब्दो में-व्यंजन उन वर्णों को कहते हैं, जिनके उच्चारण में स्वर वर्णों की सहायता ली जाती है। जैसे- क, ख, ग, च, छ, त, थ, द, भ, म इत्यादि।

'क' से विसर्ग ( : ) तक सभी वर्ण व्यंजन हैं। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं। जैसे- ख्+अ=ख, प्+अ =प। व्यंजन वह ध्वनि है, जिसके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख में कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी रूप में, बाधित होती है। स्वरवर्ण स्वतंत्र और व्यंजनवर्ण स्वर पर आश्रित है। हिन्दी में व्यंजनवर्णो की संख्या ३३ है।

**व्यंजनों के प्रकार -**

व्यंजनों चार प्रकार के होते है-

(1) स्पर्श व्यंजन
(2) अंतः स्थ व्यंजन
(3) उष्म व्यंजन

AJAY KUMAR

(4) संयुक्त व्यंजन

**(1)स्पर्श व्यंजन :-** स्पर्श का अर्थ होता है -छूना। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह की किसी भाग जैसे - कण्ठ,तालु ,मूर्धा ,दाँत ,अथवा होठ का स्पर्श करती है उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते है।

दूसरे शब्दो में- ये कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श से बोले जाते हैं। इसी से इन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इन्हें हम 'वर्गीय व्यंजन' भी कहते है;

क्योंकि ये उच्चारण-स्थान की अलग-अलग एकता लिए हुए वर्गों में विभक्त हैं।

ये 25 व्यंजन होते है

(1) कवर्ग- क ख ग घ ङ ये कण्ठ का स्पर्श करते है।
(2) चवर्ग- च छ ज झ ञ ये तालु का स्पर्श करते है।
(3) टवर्ग- ट ठ ड ढ ण (ड़, ढ़) ये मूर्धा का स्पर्श करते है
(4) तवर्ग- त थ द ध न ये दाँतो का स्पर्श करते है
(5) पवर्ग- प फ ब भ म ये होठों का स्पर्श करते है

**(2)अंतः स्थ व्यंजन :-** अंतः का अर्थ होता है -भीतर। उच्चारण के समय जो व्यंजन मुँह के भीतर ही रहे उन्हें अंतः स्थ व्यंजन कहते है।

ये व्यंजन चार होते है - य , र, ल, व। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओठों के परस्पर सटाने से होता है, किन्तु कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता। अतः ये चारों अन्तःस्थ व्यंजन 'अर्द्धस्वर' कहलाते हैं।

**(3)उष्म व्यंजन :-** उष्म का अर्थ होता है -गर्म। जिन वर्णो के उच्चारण के समय हवा मुँह के विभिन्न भागों टकराये और साँस में गर्मी पैदा कर दे उन्हें उष्म व्यंजनकहते है।

उष्म व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पत्र उष्म वायु से होता हैं। ये भी चार व्यंजन होते है -श, ष, स, ह।

**(4)संयुक्त व्यंजन :-** ये दो व्यंजनों से मिलकर बनते है। ये निम्नलिखित तीन होते है।-

क्ष =क +ष +अ

त्र=त +र +अ

ज्ञ=श +र +अ

AJAY KUMAR

## अल्पप्राण और महाप्राण

अल्पप्राण और महाप्राण- उच्चारण में वायुप्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं (1) अल्पप्राण (2) महाप्राण

**(1) अल्पप्राण :-** जिनके उच्चारण में श्वास पुरव से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार'-जैसी ध्वनि नहीं होती, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।

प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण अल्पप्राण व्यंजन हैं। जैसे-क, ग, ङ; ज, ञ; ट, ड, ण; त, द, न; प, ब, म,। अन्तःस्थ (य, र, ल, व ) भी अल्पप्राण ही हैं।

**(2) महाप्राण :-** महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार'-जैसी ध्वनि विशेषरूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण हैं।

जैसे- ख, घ; छ, झ; ठ, ढ; थ, ध; फ, भ और श, ष, स, ह। संक्षेप में अल्पप्राण वर्णों की अपेक्षा महाप्राणों में प्राणवायु का उपयोग अधिक श्रमपूर्वक करना पड़ता हैं।

## घोष और अघोष व्यंजन

**(1) घोष व्यंजन :-** नाद की दृष्टि से जिन व्यंजनवर्णों के उच्चारण में स्वरतन्तियाँ झंकृत होती हैं, वे घोष कहलाते हैं।

**(2) अघोष व्यंजन :-** नाद की दृष्टि से जिन व्यंजनवर्णों के उच्चारण में स्वरतन्तियाँ झंकृत नहीं होती हैं, वे अघोष कहलाते हैं।

'घोष' में केवल नाद का उपयोग होता हैं, जबकि 'अघोष' में केवल श्वास का। उदाहरण के लिए- अघोष वर्ण- क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स।

घोष वर्ण- प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण, सारे स्वरवर्ण, य, र, ल, व और ह।

## हल्

हल्- व्यंजनों के नीचे जब एक तिरछी रेखा लगाई जाय, तब उसे हल् कहते हैं।

'हल्' लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा हैं।

जैसे- 'क' व्यंजनवर्ण हैं, इसमें 'अ' स्वरवर्ण की ध्वनि छिपी हैं।

AJAY KUMAR

यदि हम इस ध्वनि को बिलकुल अलग कर देना चाहें, तो 'क' में हलन्त या हल् चिह्न लगाना आवश्यक होगा। ऐसी स्थिति में इसके रूप इस प्रकार होंगे- क्, ख्, ग्, च् ।

हिन्दी के नये वर्ण:हिन्दी वर्णमाला में पाँच नये व्यंजन- क्ष, त्र, ज्ञ, ड़ और ढ़- जोड़े गये हैं। किन्तु, इनमें प्रथम तीन स्वतंत्र न होकर संयुक्त व्यंजन हैं, जिनका खण्ड किया जा सकता हैं। जैसे- क्+ष =क्ष; त्+र=त्र; ज्+ञ=ज्ञ।

अतः क्ष, त्र और ज्ञ की गिनती स्वतंत्र वर्णों में नहीं होती। ड और ढ के नीचे बिन्दु लगाकर दो नये अक्षर ड़ और ढ़ बनाये गये हैं। ये संयुक्त व्यंजन हैं।

यहाँ ड़-ढ़ में 'र' की ध्वनि मिली हैं। इनका उच्चारण साधारणतया मूर्द्धा से होता हैं। किन्तु कभी-कभी जीभ का अगला भाग उलटकर मूर्द्धा में लगाने से भी वे उच्चरित होते हैं।

हिन्दी में अरबी-फारसी की ध्वनियों को भी अपनाने की चेष्टा हैं। व्यंजनों के नीचे बिन्दु लगाकर इन नयी विदेशी ध्वनियों को बनाये रखने की चेष्टा की गयी हैं। जैसे- कलम, खैर, जरूरत। किन्तु हिन्दी के विद्वानों (पं० किशोरीदास वाजपेयी, पराड़करजी, टण्डनजी), काशी नगरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन को यह स्वीकार नहीं हैं। इनका कहना है कि फारसी-अरबी से आये शब्दों के नीचे बिन्दी लगाये बिना इन शब्दों को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुरूप लिखा जाना चाहिए। बँगला और मराठी में भी ऐसा ही होता हैं।

## वर्णों का उच्चारण

कोई भी वर्ण मुँह के भित्र-भित्र भागों से बोला जाता हैं। इन्हें उच्चारणस्थान कहते हैं।

मुख के छह भाग हैं-कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दाँत, ओठ और नाक। हिन्दी के सभी वर्ण इन्हीं से अनुशासित और उच्चरित होते हैं। चूँकि उच्चारणस्थान भित्र हैं, इसलिए वर्णों की निम्नलिखित श्रेणियाँ बन गई हैं-

कण्ठ्य- कण्ठ और निचली जीभ के स्पर्श से बोले जानेवाले वर्ण- अ, आ, कवर्ग, ह और विसर्ग।

तालव्य- तालु और जीभ के स्पर्श से बोले जानेवाले वर्ण- इ, ई, चवर्ग, य और श।

मूर्द्धन्य- मूर्द्धा और जीभ के स्पर्शवाले वर्ण- टवर्ग, र, ष।

दन्त्य- दाँत और जीभ के स्पर्श से बोले जानेवाले वर्ण- तवर्ग, ल, स।

ओष्ठ्य- दोनों ओठों के स्पर्श से बोले जानेवाले वर्ण- उ, ऊ, पवर्ग।

कण्ठतालव्य- कण्ठ और तालु में जीभ के स्पर्श से बोले जानेवाले वर्ण- ए,ऐ।

कण्ठोष्ठय- कण्ठ द्वारा जीभ और ओठों के कुछ स्पर्श से बोले जानेवाले वर्ण- ओ और औ।

दन्तोष्ठय- दाँत से जीभ और ओठों के कुछ योग से बोला जानेवाला वर्ण- व।

## स्वरवर्णो का उच्चारण

'अ' का उच्चारण- यह कण्ठ्य ध्वनि हैं। इसमें व्यंजन मिला रहता हैं। जैसे- क्+अ=क। जब यह किसी व्यंजन में नहीं रहता, तब उस व्यंजन के नीचे हल् का चिह्न लगा दिया जाता हैं।

हिन्दी के प्रत्येक शब्द के अन्तिम 'अ' लगे वर्ण का उच्चारण हलन्त-सा होता हैं। जैसे- नमक्, रात्, दिन्, मन्, रूप्, पुस्तक्, किस्मत् इत्यादि ।

इसके अतिरिक्त, यदि अकारान्त शब्द का अन्तिम वर्ण संयुक्त हो, तो अन्त्य 'अ' का उच्चारण पूरा होता हैं। जैसे- सत्य, ब्रह्म, खण्ड, धर्म इत्यादि।

इतना ही नहीं, यदि इ, ई या ऊ के बाद 'य' आए, तो अन्त्य 'अ' का उच्चारण पूरा होता हैं। जैसे- प्रिय, आत्मीय, राजसूय आदि।

'ऐ' और 'औ' का उच्चारण-'ऐ' का उच्चारण कण्ठ और तालु से और 'औ' का उच्चारण कण्ठ और ओठ के स्पर्श से होता हैं। संस्कृत की अपेक्षा हिन्दी में इनका उच्चारण भिन्न होता हैं। जहाँ संस्कृत में 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' और 'औ' का उच्चारण 'अउ' की तरह होता हैं, वहाँ हिन्दी में इनका उच्चारण क्रमशः 'अय' और 'अव' के समान होता हैं। अतएव, इन दो स्वरों की ध्वनियाँ संस्कृत से भिन्न हैं। जैसे-

| संस्कृत में | हिन्दी में |
|---|---|
| श्अइल- शौल (अइ) | ऐसा- अयसा (अय) |
| क्अउतुक- कौतुक (अउ) | कौन-क्अवन (अव) |

AJAY KUMAR

## व्यंजनों का उच्चारण

'व' और 'ब' का उच्चारण-'व' का उच्चारणस्थान दन्तोष्ठ हैं, अर्थात दाँत और ओठ के संयोग से 'व' का उच्चारण होता है और 'ब' का उच्चारण दो ओठों के मेल से होता हैं। हिन्दी में इनके उच्चारण और लिखावट पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। नतीजा यह होता हैं कि लिखने और बोलने में भद्दी भूलें हो जाया करती हैं। 'वेद' को 'बेद' और 'वायु' को 'बायु' कहना भद्दा लगता हैं। संस्कृत में 'ब' का प्रयोग बहुत कम होता हैं, हिन्दी में बहुत अधिक। यही कारण है कि संस्कृत के तत्सम शब्दों में प्रयुक्त 'व' वर्ण को हिन्दी में 'ब' लिख दिया जाता हैं। बात यह है कि हिन्दीभाषी बोलचाल में भी 'व' और 'ब' का उच्चारण एक ही तरह करते हैं। इसलिए लिखने में भूल हो जाया करती हैं। इसके फलस्वरूप शब्दों का अशुद्ध प्रयोग हो जाता हैं। इससे अर्थ का अनर्थ भी होता हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

(i) वास- रहने का स्थान, निवास। बास- सुगन्ध, गुजर।
(ii) वंशी- मुरली। बंशी- मछली फँसाने का यन्त्र।
(iii) वेग- गति। बेग- थैला (अँगरेजी), कपड़ा (अरबी), तुर्की की एक पदवी।
(iv) वाद- मत। बाद- उपरान्त, पश्चात।
(v) वाह्य- वहन करने (ढोय) योग्य। बाह्य- बाहरी।

सामान्यतः हिन्दी की प्रवृत्ति 'ब' लिखने की ओर हैं। यही कारण है कि हिन्दी शब्दकोशों में एक ही शब्द के दोनों रूप दिये गये हैं। बँगला में तो एक ही 'ब' (व) है, 'व' नहीं। लेकिन, हिन्दी में यह स्थिति नहीं हैं। यहाँ तो 'वहन' और 'बहन' का अन्तर बतलाने के लिए 'व' और 'ब' के अस्तित्व को बनाये रखने की आवश्यकता हैं।

'ड़' और 'ढ़' का उच्चारण-हिन्दी वर्णमाला के ये दो नये वर्ण हैं, जिनका संस्कृत में अभाव हैं। हिन्दी में 'ड' और 'ढ' के नीचे बिन्दु लगाने से इनकी रचना हुई हैं। वास्तव में ये वैदिक वर्णों क और क् ह के विकसित रूप हैं। इनका प्रयोग शब्द के मध्य या अन्त में होता हैं। इनका उच्चारण करते समय जीभ झटके से ऊपर जाती है, इन्हें उश्रिप्प (ऊपर फेंका हुआ) व्यंजन कहते हैं।

जैसे- सड़क, हाड़, गाड़ी, पकड़ना, चढ़ाना, गढ़।

श-ष-स का उच्चारण-ये तीनों उष्म व्यंजन हैं, क्योंकि इन्हें बोलने से साँस की ऊष्मा चलती हैं। ये संघर्षी व्यंजन हैं।

AJAY KUMAR

'श' के उच्चारण में जिह्वा तालु को स्पर्श करती है और हवा दोनों बगलों में स्पर्श करती हुई निकल जाती है, पर 'ष' के उच्चारण में जिह्वा मूर्द्धा को स्पर्श करती हैं। अतएव 'श' तालव्य वर्ण है और 'ष' मूर्धन्य वर्ण। हिन्दी में अब 'ष' का उच्चारण 'श' के समान होता हैं। 'ष' वर्ण उच्चारण में नहीं है, पर लेखन में हैं। सामान्य रूप से 'ष' का प्रयोग तत्सम शब्दों में होता है; जैसे- अनुष्ठान, विषाद, निष्ठा, विषम, कषाय इत्यादि।

'श' और 'स' के उच्चारण में भेद स्पष्ट हैं। जहाँ 'श' के उच्चारण में जिह्वा तालु को स्पर्श करती है, वहाँ 'स' के उच्चारण में जिह्वा दाँत को स्पर्श करती है। 'श' वर्ण सामान्यतया संस्कृत, फारसी, अरबी और अँगरेजी के शब्दों में पाया जाता है; जैसे- पशु, अंश, शराब, शीशा, लाश, स्टेशन, कमीशन इत्यादि। हिन्दी की बोलियों में श, ष का स्थान 'स' ने ले लिया है। 'श' और 'स' के अशुद्ध उच्चारण से गलत शब्द बन जाते है और उनका अर्थ ही बदल जाता है। अर्थ और उच्चारण के अन्तर को दिखलानेवाले कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

अंश (भाग)- अंस (कन्धा) । शकल (खण्ड)- सकल (सारा) । शर (बाण)- सर (तालाब) । शंकर (महादेव)- संकर (मिश्रित) । श्व (कुत्ता)- स्व (अपना) । शान्त (धैर्ययुक्त)- सान्त (अन्तसहित)।

'ड' और 'ढ' का उच्चारण-इसका उच्चारण शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ह्रस्व स्वर के बाद अनुनासिक व्यंजन के संयोग से होता है।

जैसे- डाका, डमरू, ढाका, ढकना, ढोल- शब्द के आरम्भ में।

गड्ढा, खड्ढा- द्वित्व में।

डंड, पिंड, चंड्, मंडप- ह्रस्व स्वर के पश्रात, अनुनासिक व्यंजन के संयोग पर।

.....

AJAY KUMAR

# शब्द

दो या दो से अधिक वर्णो से बने ऐसे समूह को 'शब्द' कहते है, जिसका कोई न कोई अर्थ अवश्य हो।

दूसरे शब्दों में- ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्णसमुदाय को 'शब्द' कहते है।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है- वर्णों या ध्वनियों के सार्थक मेल को 'शब्द' कहते है।

जैसे- सन्तरा, कबूतर, टेलीफोन, आ, गाय, घर, हिमालय, कमल, रोटी, आदि।

इन शब्दों की रचना दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से हुई है। वर्णों के ये मेल सार्थक है, जिनसे किसी अर्थ का बोध होता है। 'घर' में दो वर्णों का मेल है, जिसका अर्थ है मकान, जिसमें लोग रहते हैं। हर हालत में शब्द सार्थक होना चाहिए। व्याकरण में निरर्थक शब्दों के लिए स्थान नहीं है।

शब्द और पद- यहाँ शब्द और पद का अंतर समझ लेना चाहिए। ध्वनियों के मेल से शब्द बनता है। जैसे- प+आ+न+ई- पानी। यही शब्द जब वाक्य में अर्थवाचक बनकर आये, तो वह पद कहलाता है।

जैसे- पुस्तक लाओ। इस वाक्य में दो पद है- एक नामपद 'पुस्तक' है और दूसरा क्रियापद 'लाओ' है।

शब्दों की रचना (i) ध्वनि और (ii) अर्थ के मेल से होती है। एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते है;

जैसे- मैं, धीरे, परन्तु, लड़की इत्यादि। अतः शब्द मूलतः ध्वन्यात्मक होंगे या वर्णात्मक। किन्तु, व्याकरण में ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का अधिक महत्त्व है। वर्णात्मक शब्दों में भी उन्हीं शब्दों का महत्त्व है।

## शब्द के भेद -

अर्थ, प्रयोग, उत्पत्ति, और व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द के कई भेद है। इनका वर्णन निम्न प्रकार है-

### (1) अर्थ की दृष्टि से शब्द-भेद

(i)साथर्क शब्द (ii) निरर्थक शब्द

**(i) सार्थक शब्द :-** जिस वर्ण समूह का स्पष्ट रूप से कोई अर्थ निकले, उसे 'सार्थक शब्द' कहते है।

जैसे-कमल, खटमल, रोटी, सेव आदि।

**(ii) निरर्थक :-** जिस वर्ण समूह का कोई अर्थ न निकले, उसे निरर्थक शब्द कहते है।

जैसे- राटी, विठा, चीं, वाना, वोती आदि।

सार्थक शब्दों के अर्थ होते है और निरर्थक शब्दों के अर्थ नहीं होते। जैसे- 'पानी' सार्थक शब्द है और 'नीपा' निरर्थक शब्द, क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं।

**(2) प्रयोग की दृष्टि से शब्द-भेद**

(i)विकारी शब्द (ii)अविकारी शब्द

**(i) विकारी शब्द :-** जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक के अनुसार परिवर्तन का विकार आता है, उन्हें विकारी शब्द कहते है।

जैसे-

लिंग- लड़का पढता है।..... लड़की पढ़ती है।

वचन- लड़का पढता है।.....लड़के पढ़ते है।

कारक- लड़का पढता है।..... लड़के को पढ़ने दो।

विकारी शब्द चार प्रकार के होते है -

(i) संज्ञा (noun) (ii) सर्वनाम (pronoun) (iii) विशेषण (adjective) (iv) क्रिया (verb)

**(ii) अविकारी शब्द :-** जिन शब्दों रूप में कोई परिवर्तन नही होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते है। जैसे- परन्तु, तथा, यदि, धीरे-धीरे, अधिक आदि।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते है - (i )क्रिया-विशेषण (Adverb) (ii )सम्बन्ध बोधक (Preposition) (iii )समुच्चय बोधक(Conjunction) (iv )विस्मयादि बोधक(Interjection)

AJAY KUMAR

### (3) उत्पति की दृष्टि से शब्द-भेद

(i)तत्सम (ii )तदभव (iii )देशज एवं (iv)विदेशी शब्द।

**(i) तत्सम :-** हिंदी में संस्कृत के मूल शब्दों को 'तत्सम' कहते है।

दूसरे शब्दों में- संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिन्दी में अपने वास्तविक रूप में प्रयुक्त होते है, उन्हें तत्सम शब्द कहते है।

ये शब्द आज भी ज्यों-के-त्यों व्यवहार में आते हैं।

जैसे- कवि, माता, विद्या, नदी, फल, पुष्प, पुस्तक, पृथ्वी आदि।

यहाँ संस्कृत के उन तत्स्मो की सूची है, जो संस्कृत से होते हुए हिंदी में आये है-

| तत्सम | हिंदी | तत्सम | हिंदी |
|---|---|---|---|
| आम्र | आम | गोमल ,गोमय | गोबर |
| उष्ट्र | ऊँट | घोटक | घोड़ा |
| चंचु | चोंच | पर्यक | पलंग |
| त्वरित | तुरंत | भक्त | भात |
| शलाका | सलाई | हरिद्रा | हल्दी, हरदी |
| उद्वर्तन | उबटन | सूचि | सुई |
| खर्पर | खपरा, खप्पर | सक्तु | सत्तू |
| तिक्त | तीता | क्षीर | खीर |

**(ii) तदभव :-** ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिंदी में आये है, 'तदभव' कहलाते है।

दूसरे शब्दों में- संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द, जो बिगड़कर अपने रूप को बदलकर हिन्दी में मिल गये है, 'तदभव' शब्द कहलाते है।

जैसे- अग्नि(तत्सम) का आग (तद्भव), कुब्ज (तत्सम) का कुबड़ा (तद्भव), कर्पूर (तत्सम) का कपूर (तद्भव),दुग्ध (तत्सम) का दूध, हस्त (तत्सम) का हाथ (तद्भव) आदि।

तत्+भव का अर्थ है- उससे (संस्कृत से) उत्पत्र। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिंदी में आये है। इसके लिए इन्हें एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी है। सभी तदभव शब्द संस्कृत से आये है, परन्तु कुछ शब्द देश-काल के प्रभाव से ऐसे विकृत हो गये हैं कि उनके मूलरूप का पता नहीं चलता।

AJAY KUMAR

**तदभव के प्रकार-**

तदभव शब्द दो प्रकार के है-(i)संस्कृत से आनेवाले और (2)सीधे प्राकृत से आनेवाले।

हिंदी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले बहुसंख्य शब्द ऐसे तदभव है, जो संस्कृत-प्राकृत से होते हुए हिंदी में आये है।

निम्नलिखित उदाहरणों से तदभव शब्दों के रूप स्पस्ट हो जायेंगे -

| संस्कृत | प्राकृत | तदभव हिंदी |
|---|---|---|
| अग्नि | अग्गि | आग |
| मया | मई | मैं |
| वत्स | वच्छ | बच्चा, बाछा |
| चत्वारि | चतारी | चार |
| पुष्प | पुप्फ | फूल |
| मयूर | मऊर | मोर |
| चतुर्थ | चडत्थ | चौथा |
| प्रिय | प्रिय | पिय, पिया |
| वचन | वअण | बैन |
| कृतः | कओ | किया |
| मध्य | मज्झ | में |
| नव | नअ | नौ |

**(iii) देशज :-** देश की बोलचाल में पाये जानेवाले शब्द 'देशज' कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में- जो शब्द देश की विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में अपना लिये गये है, उन्हें देशज शब्द कहते है।

जैसे- चिड़िया, कटरा, कटोरा, खिरकी, जूता, खिचड़ी, पगड़ी, लोटा, डिबिया, तेंदुआ, कटरा, अण्टा, ठेठ, ठुमरी, खखरा, चसक, फुनगी, डोंगा आदि।

AJAY KUMAR

देशज वे शब्द है, जिनकी व्युत्पति का पता नही चलता। ये अपने ही देश में बोलचाल से बने है,इसलिए इन्हे देशज कहते है।

हेमचन्द्र ने उन शब्दों को 'देशी' कहा है, जिनकी व्युत्पत्ति किसी संस्कृत धातु या व्याकरण के नियमों से नहीं हुई। विदेशी विद्वान जॉन बीम्स ने देशज शब्दों को मुख्यरूप से अनार्यस्त्रोत से सम्बद्ध माना हैं।

**(iv) विदेशी :-** विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में आये शब्दों को 'विदेशी' शब्द 'कहते है।

अथवा- जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आ गये है, उन्हें विदेशी शब्द कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिन शब्दों का जन्म विदेशों में हुआ है, उन्हें 'विदेशज' कहते हैं।

अँगरेजी- हॉस्पिटल, डॉक्टर, बुक, रेडियो, टिकट, टेबुल इत्यादि।

फारसी- आराम, अफसोस, किनारा, गिरफ्तार, नमक, दुकान, अनार, चश्मा, गिरह इत्यादि।

अरबी- असर, किस्मत, खयाल, दुकान, औरत, मालिक, गरीब, मदद इत्यादि।

तुर्की से- तोप, दरोगा, चाकू।

चीनी से- चाय, पटाखा,आदि।

इनमें फारसी, अरबी, तुर्की, अँगरेजी, पुर्तगाली और फ्रांसीसी भाषाएँ मुख्य है। अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों को हिन्दी ने अपने उच्चारण के अनुरूप या अपभ्रंश रूप में ढाल लिया है। हिन्दी में उनके कुछ हेर-फेर इस प्रकार हुए हैं-

(1) क, ख, ग, फ जैसे नुक्तेदार उच्चारण और लिखावट को हिन्दी में साधारणतया बेनुक्तेदार उच्चरित किया और लिखा जाता है।

जैसे- कीमत (अरबी)- कीमत (हिन्दी), खूब (फारसी)=खूब (हिन्दी), आगा (तुर्की)=आगा (हिन्दी), फैसला (अरबी)=फैसला (हिन्दी)।

(2) शब्दों के अन्तिम विसर्ग की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा लगाकर लिखा या बोला जाता है।

जैसे- आईन: और कमीन: (फारसी)=आईना और कमीना (हिन्दी), हैज: (अरबी)=हैजा (हिन्दी), चम्च: (तुर्की)=चमचा (हिन्दी)।

(3) शब्दों के अन्तिम हकार की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा कर दी जाती है।

जैसे- अल्लाह (अरब)=अल्ला (हिन्दी)।

AJAY KUMAR

(4) शब्दों के अन्तिम आकार की मात्रा को हिन्दी में हकार कर दिया जाता है।

जैसे- परवा (फारसी)=परवाह (हिन्दी)।

(5) शब्दों के अन्तिम अनुनासिक आकार को 'आन' कर दिया जाता है।

जैसे- दुकाँ (फारसी)=दुकान (हिन्दी), ईमाँ (अरबी) =ईमान (हिन्दी)।

(6) बीच के 'इ' को 'य' कर दिया जाता है।

जैसे- काइदः (अरबी)=कायदा (हिन्दी)।

(7) बीच के आधे अक्षर को लुप्त कर दिया जाता है।

जैसे- नश्शः (अरबी)=नशा (हिन्दी)।

(8) बीच के आधे अक्षर को पूरा कर दिया जाता है।

जैसे- अफ्सोस, गर्म, किश्मिश, बेर्हम, (फारसी)=अफसोस, गरम, जहर, किशमिश, बेरहम (हिन्दी)। तर्फ, कस्त्रत (अरबी)= तरफ, नहर, कसरत (हिन्दी) । चमचः, तग्गा (तुर्की)=चमचा, तमगा (हिन्दी)।

(9) बीच की मात्रा लुप्त कर दी जाती है।

जैसे- आबोदनः (फारसी)=आबदाना (हिन्दी), जवाहिर, मौसिम, वापिस (अरबी)=जवाहर, मौसम, वापस (हिन्दी), चुगुल (तुर्की)=चुगल (हिन्दी)।

(10) बीच में कोई ह्रस्व मात्रा (खासकर 'इ' की मात्रा) दे दी जाती है।

जैसे- आतशबाजी (फारसी)=आतिशबाजी (हिन्दी)। दुन्या, तक्यः (अरबी)=दुनिया, तकिया (हिन्दी)।

(11) बीच की ह्रस्व मात्रा को दीर्घ में, दीर्घ मात्रा को ह्रस्व में या गुण में, गुण मात्रा को ह्रस्व में और ह्रस्व मात्रा को गुण में बदल देने की परम्परा है।

जैसे- खुराक (फारसी)=खूराक (हिन्दी) (ह्रस्व के स्थान में दीर्घ), आईनः (फारसी)=आइना (हिन्दी) (दीर्घ के स्थान में ह्रस्व): उम्मीद (फारसी)=उम्मेद (हिन्दी) (दीर्घ 'ई' के स्थान में गुण 'ए'); देहात (फारसी)=दिहात (हिन्दी) (गुण 'ए' के स्थान में 'इ'); मुगल (तुर्की)=मोगल (हिन्दी) ('उ' के स्थान में गुण 'ओ')।

(12) अक्षर में सवर्गी परिवर्तन भी कर दिया जाता है।

जैसे- बालाई (फारसी)=मलाई (हिन्दी) ('ब' के स्थान में उसी वर्ग का वर्ण 'म')।

हिन्दी के उच्चारण और लेखन के अनुसार हिन्दी-भाषा में घुले-मिले कुछ विदेशज शब्द आगे दिये जाते है।

### (अ) फारसी शब्द

अफसोस, आबदार, आबरू, आतिशबाजी, अदा, आराम, आमदनी, आवारा, आफत, आवाज, आइना, उम्मीद, कबूतर, कमीना, कुश्ती, कुश्ता, किशमिश, कमरबन्द, किनारा, कूचा, खाल, खुद, खामोश, खरगोश, खुश, खुराक, खूब, गर्द, गज, गुम, गल्ला, गवाह, गिरफ्तार, गरम, गिरह, गुलूबन्द, गुलाब, गुल, गोश्त, चाबुक, चादर, चिराग, चश्मा, चरखा, चूँकि, चेहरा, चाशनी, जंग, जहर, जीन, जोर, जबर, जिन्दगी, जादू, जागीर, जान, जुरमाना, जिगर, जोश, तरकश, तमाशा, तेज, तीर, ताक, तबाह, तनख्वाह, ताजा, दीवार, देहात, दस्तूर, दुकान, दरबार, दंगल, दिलेर, दिल, दवा, नामर्द, नाव, नापसन्द, पलंग, पैदावार, पलक, पुल, पारा, पेशा, पैमाना, बेवा, बहरा, बेहूदा, बीमार, बेरहम, मादा, माशा, मलाई, मुर्दा, मजा, मुफ्त, मोर्चा, मीना, मुर्गा, मरहम, याद, यार, रंग, रोगन, राह, लश्कर, लगाम, लेकिन, वर्ना, वापिस, शादी, शोर, सितारा, सितार, सरासर, सुर्ख, सरदार, सरकार, सूद, सौदागर, हफ्ता, हजार इत्यादि।

### (आ) अरबी शब्द

अदा, अजब, अमीर, अजीब, अजायब, अदावत, अक्ल, असर, अहमक, अल्ला, आसार, आखिर, आदमी, आदत, इनाम, इजलास, इज्जत, इमारत, इस्तीफा, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औसत, औलाद, कसूर, कदम, कब्र, कसर, कमाल, कर्ज, क़िस्त, किस्मत, किस्सा, किला, कसम, कीमत, कसरत, कुर्सी, किताब, कायदा, कातिल, खबर, खत्म, खत, खिदमत, खराब, खयाल, गरीब, गैर, जिस्म, जलसा, जनाब, जवाब, जहाज, जालिम, जिक्र, तमाम, तकदीर, तारीफ, तकिया, तमाशा, तरफ, तै, तादाद, तरक्की, तजुरबा, दाखिल, दिमाग, दवा, दाबा, दावत, दफ्तर, दगा, दुआ, दफा, दल्लाल, दुकान, दिक, दुनिया, दौलत, दान, दीन, नतीजा, नशा, नाल, नकद, नकल, नहर, फकीर, फायदा, फैसला, बाज, बहस, बाकी, मुहावरा, मदद, मरजी, माल, मिसाल, मजबूर, मालूम, मामूली, मुकदमा, मुल्क, मल्लाह, मौसम, मौका, मौलवी, मुसाफिर, मशहूर, मजमून, मतलब, मानी, मान, राय, लिहाज, लफ्ज, लहजा, लिफाफा, लायक, वारिस, वहम, वकील, शराब, हिम्मत, हैजा, हिसाब, हरामी, हद, हज्जाम, हक, हुक्म, हाजिर, हाल, हाशिया, हाकिम, हमला, हवालात, हौसला इत्यादि।

### (इ) तुर्की शब्द

आगा, आका, उजबक, उर्दू, कालीन, काबू, कैंची, कुली, कुर्की, चिक, चेचक, चमचा, चुगुल, चकमक, जाजिम, तमगा, तोप, तलाश, बेगम, बहादुर, मुगल, लफंगा, लाश, सौगात, सुराग इत्यादि।

### (ई) अँगरेजी शब्द

| अँगरेजी | हिन्दी | अँगरेजी | हिन्दी |
|---|---|---|---|
| ऑफीसर | अफसर | थियेटर | थेटर, ठेठर |
| एंजिन | इंजन | टरपेण्टाइन | तारपीन |
| डॉक्टर | डाक्टर | लैनटर्न | लालटेन |
| बॉटल | बोतल | स्लेट | सिलेट |
| कैप्टेन | कप्तान | हास्पिटल | अस्पताल |

इनके अतिरिक्त, हिन्दी में अँगरेजी के कुछ तत्सम शब्द ज्यों-के-त्यों प्रयुक्त होते है। इनके उच्चारण में प्रायः कोई भेद नहीं रह गया है। जैसे- अपील, आर्डर, इंच, इण्टर, इयरिंग, एजेन्सी, कम्पनी, कमीशन, कमिश्नर, कैम्प, क्लास, क्वार्टर, क्रिकेट, काउन्सिल, गार्ड, गजट, जेल, चेयरमैन, ट्यूशन, डायरी, डिप्टी, डिस्ट्रिक्ट, बोर्ड, ड्राइवर, पेन्सिल, फाउण्टेन, पेन, नम्बर, नोटिस, नर्स, थर्मामीटर, दिसम्बर, पार्टी, प्लेट, पार्सल, पेट्रोल, पाउडर, प्रेस, फ्रेम, मीटिंग, कोर्ट, होल्डर, कॉलर इत्यादि।

### (ऊ) पुर्तगाली शब्द

| हिन्दी | पुर्तगाली | हिन्दी | पुर्तगाली |
|---|---|---|---|
| अलकतरा | Alcatrao | अनत्रास | Annanas |
| आलपीन | Alfinete | आलमारी | Almario |
| बाल्टी | Balde | किरानी | Carrane |
| चाबी | Chave | फीता | Fita |
| तम्बाकू | Tabacco | | |

इसी तरह, आया, इस्पात, इस्तिरी, कमीज, कनस्टर, कमरा, काजू, क्रिस्तान, गमला, गोदाम, गोभी, तौलिया, नीलाम, परात, पादरी, पिस्तौल, फर्मा, मेज, साया, सागू आदि पुर्तगाली तत्सम के तद्भव रूप भी हिन्दी में प्रयुक्त होते है।

ऊपर जिन शब्दों की सूची दी गयी है उनसे यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा में विदेशी शब्दों की कमी नहीं है। ये शब्द हमारी भाषा में दूध-पानी की तरह मिले है। निस्सन्देह, इनसे हमारी भाषा समृद्ध हुई है।

### रचना अथवा बनावट के अनुसार शब्दों का वर्गीकरण

शब्दों अथवा वर्णों के मेल से नये शब्द बनाने की प्रकिया को 'रचना या बनावट' कहते है।

कई वर्णों को मिलाने से शब्द बनता है और शब्द के खण्ड को 'शब्दांश' कहते है। जैसे- 'राम में शब्द के दो खण्ड है- 'रा' और 'म'। इन अलग-अलग शब्दांशों का कोई अर्थ नहीं है। इसके विपरीत, कुछ ऐसे भी शब्द है, जिनके दोनों खण्ड सार्थक होते है। जैसे- विद्यालय। इस शब्द के दो अंश है- 'विद्या' और 'आलय'। दोनों के अलग-अलग अर्थ है।

### (4 )व्युत्पत्ति या रचना की दृष्टि से शब्द भेद

(i)रूढ़ (ii )यौगिक और (iii)योगरूढ़।

**(i) रूढ़ शब्द :-** जो शब्द हमेशा किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हो तथा जिनके खण्डों का कोई अर्थ न निकले, उन्हें 'रूढ़' कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिन शब्दों के खण्ड सार्थक न हों, उन्हें 'रूढ़' कहते है।

यहाँ प्रत्येक शब्द के खण्ड- जैसे, 'नाक' शब्द का खंड करने पर 'ना' और 'क', दोनों का कोई अर्थ नहीं है।

उसी तरह 'कान' शब्द का खंड करने पर 'का' और 'न', दोनों का कोई अर्थ नहीं है।

**(ii) यौगिक शब्द :-** जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बने हो तथा जिनके प्रत्येक खण्ड का कोई अर्थ हो, उन्हें यौगिक शब्द कहते है।

दूसरे शब्दों में- ऐसे शब्द, जो दो शब्दों के मेल से बनते है और जिनके खण्ड सार्थक होते है, यौगिक कहलाते है।

दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों के योग से यौगिक शब्द बनते है; जैसे- आग-बबूला, पीला-पन, दूध-वाला, घुड़-सवार, डाक +घर, विद्या +आलय

यहाँ प्रत्येक शब्द के दो खण्ड है और दोनों खण्ड सार्थक है।

**(iii) योगरूढ़ शब्द :-** जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बनते हो, परन्तु एक विशेष अर्थ के लिए प्रसिद्ध होते है, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते है।

अथवा- ऐसे यौगिक शब्द, जो साधारण अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ ग्रहण करे, 'योगरूढ़' कहलाते है।

दूसरे शब्दों में- ऐसे शब्द, जो यौगिक तो होते है, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक है, 'योगरूढ़' कहलाते है।

मतलब यह कि यौगिक शब्द जब अपने सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ बताने लगें, तब वे 'योगरूढ़' कहलाते है;

जैसे- लम्बोदर, पंकज, दशानन, जलज इत्यादि ।

लम्बोदर =लम्ब +उदर बड़े पेट वाला )=गणेश जी

दशानन =दश +आनन (दस मुखों वाला _रावण)

'पंक +ज' अर्थ है कीचड़ से (में) उत्पन्न; पर इससे केवल 'कमल' का अर्थ लिया जायेगा, अतः 'पंकज 'योगरूढ़ है।

.....

AJAY KUMAR

# वाक्य

वह शब्द समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाये, 'वाक्य' कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- विचार को पूर्णता से प्रकट करनेवाली एक क्रिया से युक्त पद-समूह को 'वाक्य' कहते हैं।

सरल शब्दों में- सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है।

जैसे- विजय खेल रहा है, बालिका नाच रही है।

## वाक्य के भाग

वाक्य के दो भेद होते है-

(i) उद्देश्य (Subject)
(ii) विधेय (Predicate)

**(i) उद्देश्य (Subject) :-** वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाये उसे उद्देश्य कहते हैं।

सरल शब्दों में- जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।

जैसे- पूनम किताब पढ़ती है। सचिन दौड़ता है।

इस वाक्य में पूनम और सचिन के विषय में बताया गया है। अतः ये उद्देश्य है। इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है जैसे- 'परिश्रम करने वाला व्यक्ति' सदा सफल होता है। इस वाक्य में कर्ता (व्यक्ति) का विस्तार 'परिश्रम करने वाला' है।

### उद्देश्य के भाग-

उद्देश्य के दो भाग होते है-

(i) कर्ता

(ii) कर्ता का विशेषण या कर्ता से संबंधित शब्द।

**(ii) विधेय (Predicate):-** उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते है।

AJAY KUMAR

जैसे- पूनम किताब पढ़ती है।

इस वाक्य में 'किताब पढ़ती' है विधेय है क्योंकि पूनम (उद्देश्य )के विषय में कहा गया है।

दूसरे शब्दों में- वाक्य के कर्ता (उद्देश्य) को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ भी शेष रह जाता है, वह विधेय कहलाता है।

इसके अंतर्गत विधेय का विस्तार आता है। जैसे- लंबे-लंबे बालों वाली लड़की 'अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई' ।

इस वाक्य में विधेय (गई) का विस्तार 'अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर' है।

विशेष-आज्ञासूचक वाक्यों में विद्येय तो होता है किन्तु उद्देश्य छिपा होता है।

जैसे- वहाँ जाओ। खड़े हो जाओ।

इन दोनों वाक्यों में जिसके लिए आज्ञा दी गयी है वह उद्देश्य अर्थात 'वहाँ न जाने वाला '(तुम) और 'खड़े हो जाओ' (तुम या आप) अर्थात उद्देश्य दिखाई नही पड़ता वरन छिपा हुआ है।

**विधेय के भाग-**

विधेय के छः भाग होते है-

(i) क्रिया

(ii) क्रिया के विशेषण

(iii) कर्म

(iv) कर्म के विशेषण या कर्म से संबंधित शब्द

(v) पूरक

(vi)पूरक के विशेषण।

नीचे की तालिका से उद्देश्य तथा विधेय सरलता से समझा जा सकता है-

| वाक्य | उद्देश्य | विधेय |
|---|---|---|
| गाय घास खाती है | गाय | घास खाती है। |
| सफेद गाय हरी घास खाती है। | सफेद गाय | हरी घास खाती है। |

AJAY KUMAR

सफेद -कर्ता विशेषण

गाय -कर्ता[उद्देश्य]

हरी - विशेषण कर्म

घास -कर्म [विधेय]

खाती है- क्रिया[विधेय]

## वाक्य के भेद-

### रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते है-

(i) साधरण वाक्य या सरल वाक्य (Simple Sentence)
(ii) मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)
(iii) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

**(i) साधरण वाक्य या सरल वाक्य :-** जिन वाक्य में एक ही क्रिया होती है, और एक कर्ता होता है, वे साधारण वाक्य कहलाते है।

दूसरे शब्दों में- जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उन्हें साधारण वाक्य या सरल वाक्य कहते हैं।

इसमें एक 'उद्देश्य' और एक 'विधेय' रहते हैं। जैसे- 'बिजली चमकती है', 'पानी बरसा' ।

इन वाक्यों में एक-एक उद्देश्य, अर्थात कर्ता और विधेय, अर्थात क्रिया है। अतः, ये साधारण या सरल वाक्य हैं।

**(ii) मिश्रित वाक्य :-** जिस वाक्य में एक से अधिक वाक्य मिले हों किन्तु एक प्रधान उपवाक्य तथा शेष आश्रित उपवाक्य हों, मिश्रित वाक्य कहलाता है।

दूसरे शब्दों में- जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक या अधिक समापिका क्रियाएँ हों, उसे 'मिश्रित वाक्य' कहते हैं।

जैसे- 'वह कौन-सा मनुष्य है, जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हों'।

AJAY KUMAR

दूसरे शब्दों मे  - जिन वाक्यों में एक प्रधान (मुख्य) उपवाक्य हो और अन्य आश्रित (गौण) उपवाक्य हों तथा जो आपस में 'कि'; 'जो'; 'क्योंकि'; 'जितना'; 'उतना'; 'जैसा'; 'वैसा'; 'जब'; 'तब'; 'जहाँ'; 'वहाँ'; 'जिधर'; 'उधर'; 'अगर/यदि'; 'तो'; 'यद्यपि'; 'तथापि'; आदि से मिश्रित (मिले-जुले) हों उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं।

इनमे एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती है। जैसे- मैं जनता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते। जो लड़का कमरे में बैठा है वह मेरा भाई है। यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे।

'मिश्र वाक्य' के 'मुख्य उद्देश्य' और 'मुख्य विधेय' से जो वाक्य बनता है, उसे 'मुख्य उपवाक्य' और दूसरे वाक्यों को आश्रित उपवाक्य' कहते हैं। पहले को 'मुख्य वाक्य' और दूसरे को 'सहायक वाक्य' भी कहते हैं। सहायक वाक्य अपने में पूर्ण या सार्थक नहीं होते, पर मुख्य वाक्य के साथ आने पर उनका अर्थ निकलता हैं। ऊपर जो उदाहरण दिया गया है, उसमें 'वह कौन-सा मनुष्य है' मुख्य वाक्य है और शेष 'सहायक वाक्य'; क्योंकि वह मुख्य वाक्य पर आश्रित है।

**(iii) संयुक्त वाक्य :-** जिस वाक्य में दो या दो से अधिक उपवाक्य मिले हों, परन्तु सभी वाक्य प्रधान हो तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

संयुक्त वाक्य उस वाक्य-समूह को कहते हैं, जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हों। इस प्रकार के वाक्य लम्बे और आपस में उलझे होते हैं। जैसे- 'मैं रोटी खाकर लेटा कि पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को बुलाना पड़ा।' इस लम्बे वाक्य में संयोजक 'और' है, जिसके द्वारा दो मिश्र वाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया।

इसी प्रकार 'मैं आया और वह गया' इस वाक्य में दो सरल वाक्यों को जोड़नेवाला संयोजक 'और' है। यहाँ यह याद रखने की बात है कि संयुक्त वाक्यों में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाये रखता है, वह एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होता, केवल संयोजक अव्यय उन स्वतन्त्र वाक्यों को मिलाते हैं। इन मुख्य और स्वतन्त्र वाक्यों को व्याकरण में 'समानाधिकरण उपवाक्य भी कहते हैं।

दूसरे शब्दो में- जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर भी, तो, नहीं तो, किन्तु, परन्तु, लेकिन, पर आदि) से जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते है।

AJAY KUMAR

जैसे- वह सुबह गया और शाम को लौट आया। प्रिय बोलो पर असत्य नहीं। उसने बहुत परिश्रम किया किन्तु सफलता नहीं मिली।

## वाक्य के भेद-

### अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य मुख्य रूप से आठ प्रकार के होते है-

(i) सरल वाक्य (Affirmative Sentence)
(ii) निषेधात्मक वाक्य (Negative Semtence)
(iii) प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence)
(iv) आज्ञावाचक वाक्य (Imperative Sentence)
(v) संकेतवाचक वाक्य (Conditional Sentence)
(vi) विस्मयादिबोधक वाक्य (Exclamatory Sentence)
(vii) विधानवाचक वाक्य (Assertive Sentence)
(viii) इच्छावाचक वाक्य (IIlative Sentence)

**(i) सरल वाक्य :-** वे वाक्य जिनमे कोई बात साधरण ढंग से कही जाती है, सरल वाक्य कहलाते है।

जैसे- राम ने बाली को मारा। राधा खाना बना रही है।

**(ii) निषेधात्मक वाक्य :-** जिन वाक्यों में किसी काम के न होने या न करने का बोध हो उन्हें निषेधात्मक वाक्य कहते है।

जैसे- आज वर्षा नही होगी। मैं आज घर जाऊँगा।

**(iii) प्रश्नवाचक वाक्य :-** वे वाक्य जिनमें प्रश्न पूछने का भाव प्रकट हो, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते है।

जैसे- राम ने रावण को क्यों मारा? तुम कहाँ रहते हो ?

**(iv) आज्ञावाचक वाक्य :-** जिन वाक्यों से आज्ञा प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे- वर्षा होने पर ही फसल होगी। परिश्रम करोगे तो फल मिलेगा ही। बड़ों का सम्मान करो।

**(v) संकेतवाचक वाक्य:-** जिन वाक्यों से शर्त्त (संकेत) का बोध होता है यानी एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते है।

जैसे- यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होंगे। पिताजी अभी आते तो अच्छा होता। अगर वर्षा होगी तो फसल भी होगी।

AJAY KUMAR

**(vi)विस्मयादिबोधक वाक्य:-** जिन वाक्यों में आश्चर्य, शोक, घृणा आदि का भाव ज्ञात हो उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते है।

जैसे- वाह !तुम आ गये। हाय !मैं लूट गया।

**(vii) विधानवाचक वाक्य:-** जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते है।

जैसे- मैंने दूध पिया। वर्षा हो रही है। राम पढ़ रहा है।

**(viii) इच्छावाचक वाक्य:-** जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्यकहते है।

जैसे- तुम्हारा कल्याण हो। आज तो मैं केवल फल खाऊँगा। भगवान तुम्हें लंबी उमर दे।

## वाक्य के अनिवार्य तत्व

वाक्य में निम्नलिखित छ तत्व अनिवार्य है-

(1) सार्थकता
(2) योग्यता
(3) आकांक्षा
(4) निकटता
(5) पदक्रम
(6) अन्वय

**(1) सार्थकता** - वाक्य का कुछ न कुछ अर्थ अवश्य होता है। अतः इसमें सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होता है।

**(2) योग्यता** - वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में प्रसंग के अनुसार अपेक्षित अर्थ प्रकट करने की योग्यता होती है।

जैसे- चाय, खाई यह वाक्य नहीं है क्योंकि चाय खाई नहीं जाती बल्कि पी जाती है।

**(3) आकांक्षा** - आकांक्षा का अर्थ है 'इच्छा', वाक्य अपने आप में पूरा होना चाहिए। उसमें किसी ऐसे शब्द की कमी नहीं होनी चाहिए जिसके कारण अर्थ की अभिव्यक्ति में अधूरापन लगे। जैसे- पत्र लिखता है, इस वाक्य में क्रिया के कर्ता को जानने की इच्छा होगी। अतः पूर्ण वाक्य इस प्रकार होगा- राम पत्र लिखता है।

**(4) निकटता** - बोलते तथा लिखते समय वाक्य के शब्दों में परस्पर निकटता का होना बहुत आवश्यक है, रूक-रूक कर बोले या लिखे गए शब्द वाक्य नहीं बनाते। अतः वाक्य के पद निरंतर प्रवाह में पास-पास बोले या लिखे जाने चाहिए।

AJAY KUMAR

**(5) पदक्रम** - वाक्य में पदों का एक निश्चित क्रम होना चाहिए। 'सुहावनी है रात होती चाँदनी' इसमें पदों का क्रम व्यवस्थित न होने से इसे वाक्य नहीं मानेंगे। इसे इस प्रकार होना चाहिए- 'चाँदनी रात सुहावनी होती है'।

**(6) अन्वय** - अन्वय का अर्थ है- मेल। वाक्य में लिंग, वचन, पुरुष, काल, कारक आदि का क्रिया के साथ ठीक-ठीक मेल होना चाहिए; जैसे- 'बालक और बालिकाएँ गई', इसमें कर्ता क्रिया अन्वय ठीक नहीं है। अतः शुद्ध वाक्य होगा 'बालक और बालिकाएँ गए'।

## वाक्य-विग्रह (Analysis)

वाक्य-विग्रह (Analysis)- वाक्य के विभिन्न अंगों को अलग-अलग किये जाने की प्रक्रिया को वाक्य-विग्रह कहते हैं। इसे 'वाक्य-विभाजन' या 'वाक्य-विश्लेषण' भी कहा जाता है।

सरल वाक्य का विग्रह करने पर एक उद्देश्य और एक विधेय बनते है। संयुक्त वाक्य में से योजक को हटाने पर दो स्वतंत्र उपवाक्य (यानी दो सरल वाक्य) बनते हैं। मिश्र वाक्य में से योजक को हटाने पर दो अपूर्ण उपवाक्य बनते है।

सरल वाक्य= 1 उद्देश्य + 1 विधेय

संयुक्त वाक्य= सरल वाक्य + सरल वाक्य

मिश्र वाक्य= प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य

### वाक्य का रूपान्तर

किसी वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में, बिना अर्थ बदले, परिवर्तित करने की प्रकिया को 'वाक्यपरिवर्तन' कहते हैं। हम किसी भी वाक्य को भित्र-भित्र वाक्य-प्रकारों में परिवर्तित कर सकते है और उनके मूल अर्थ में तनिक विकार नहीं आयेगा। हम चाहें तो एक सरल वाक्य को मिश्र या संयुक्त वाक्य में बदल सकते हैं।

सरल वाक्य- हर तरह के संकटो से घिरा रहने पर भी वह निराश नहीं हुआ।

संयुक्त वाक्य- संकटों ने उसे हर तरह से घेरा, किन्तु वह निराश नहीं हुआ।

मिश्र वाक्य- यद्यपि वह हर तरह के संकटों से घिरा था, तथापि निराश नहीं हुआ।

AJAY KUMAR

वाक्यपरिवर्तन करते समय एक बात खास तौर से ध्यान में रखनी चाहिए कि वाक्य का मूल अर्थ किसी भी हालत में विकृत न हो। यहाँ कुछ और उदाहरण देकर विषय को स्पष्ट किया जाता है-

### (क) सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

सरल वाक्य- उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा।

मिश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।

सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।

मिश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

सरल वाक्य- लोकप्रिय कवि का सम्मान सभी करते हैं।

मिश्र वाक्य- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

### (ख) सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।

संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।

संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

### (ग) मिश्र वाक्य से सरल वाक्य

मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।

सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषित किया।

मिश्र वाक्य- मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।

AJAY KUMAR

सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।

मिश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।

### (घ) कर्तृवाचक से कर्मवाचक वाक्य

कर्तृवाचक वाक्य- लड़का रोटी खाता है।

कर्मवाचक वाक्य- लड़के से रोटी खाई जाती है।

कर्तृवाचक वाक्य- तुम व्याकरण पढ़ाते हो।

कर्मवाचक वाक्य- तुमसे व्याकरण पढ़ाया जाता है।

कर्तृवाचक वाक्य- मोहन गीत गाता है।

कर्मवाचक वाक्य- मोहन से गीत गाया जाता है।

### (ङ) विधिवाचक से निषेधवाचक वाक्य

विधिवाचक वाक्य- वह मुझसे बड़ा है।

निषेधवाचक- मैं उससे बड़ा नहीं हूँ।

विधिवाचक वाक्य- अपने देश के लिए हरएक भारतीय अपनी जान देगा।

निषेधवाचक वाक्य- अपने देश के लिए कौन भारतीय अपनी जान न देगा ?

## सामान्य वाक्य: अशुद्धियाँ एवं उनके संशोधन

### वाक्यरचना के कुछ सामान्य नियम

वाक्य को सुव्यवस्थित और संयत रूप देने को व्याकरण में 'पदक्रम' कहते हैं। निर्दोष वाक्य लिखने के कुछ नियम हैं। इनकी सहायता से शुद्ध वाक्य लिखने का प्रयास किया जा सकता है। सुन्दर वाक्यों की रचना के लिए (क) क्रम (order), (ख) अन्वय (co-ordination) और (ग) प्रयोग (use) से सम्बद्ध कुछ सामान्य नियमों का ज्ञान आवश्यक है।

AJAY KUMAR

## (क) क्रम

किसी वाक्य के सार्थक शब्दों को यथास्थान रखने की क्रिया को 'क्रम' अथवा 'पदक्रम' कहते हैं। इसके कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं-

(i) हिंदी वाक्य के आरम्भ में कर्ता, मध्य में कर्म और अन्त में क्रिया होनी चाहिए। जैसे- मोहन ने भोजन किया।

यहाँ कर्ता 'मोहन', कर्म 'भोजन' और अन्त में क्रिया 'क्रिया' है।

(ii) उद्देश्य या कर्ता के विस्तार को कर्ता के पहले और विधेय या क्रिया के विस्तार को विधेय के पहले रखना चाहिए। जैसे-अच्छे लड़के धीरे-धीरे पढ़ते हैं।

(iii) कर्ता और कर्म के बीच अधिकरण, अपादान, सम्प्रदान और करण कारक क्रमशः आते हैं। जैसे-

मुरारि ने घर में (अधिकरण) आलमारी से (अपादान) श्याम के लिए (सम्प्रदान) हाथ से (करण) पुस्तक निकाली।

(iv) सम्बोधन आरम्भ में आता है। जैसे-

हे प्रभु, मुझपर दया करें।

(v) विशेषण विशेष्य या संज्ञा के पहले आता है। जैसे-

मेरी उजली कमीज कहीं खो गयी।

(vi) क्रियाविशेषण क्रिया के पहले आता है। जैसे- वह तेज दौड़ता है।

(vii) प्रश्नवाचक पद या शब्द उसी संज्ञा के पहले रखा जाता है, जिसके बारे में कुछ पूछा जाय। जैसे-

क्या मोहन सो रहा है ?

टिप्पणी- यदि संस्कृत की तरह हिंदी में वाक्यरचना के साधारण क्रम का पालन न किया जाय, तो इससे कोई क्षति अथवा अशुद्धि नहीं होती। फिर भी, उसमें विचारों का एक तार्किक क्रम ऐसा होता है, जो एक विशेष रीति के अनुसार एक-दूसरे के पीछे आता है।

## (ख) अन्वय (मेल)

'अन्वय' में लिंग, वचन, पुरुष और काल के अनुसार वाक्य के विभिन्न पदों (शब्दों) का एक-दूसरे से सम्बन्ध या मेल दिखाया जाता है। यह मेल कर्ता और क्रिया का, कर्म और क्रिया का तथा संज्ञा और सर्वनाम का होता हैं।

AJAY KUMAR

## कर्ता और क्रिया का मेल

(i) यदि कर्तृवाचक वाक्य में कर्ता विभक्तिरहित है, तो उसकी क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होंगे। जैसे-

करीम किताब पढ़ता है। सोहन मिठाई खाता है। रीता घर जाती है।

(ii) यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष के अनेक विभक्तिरहित कर्ता हों और अन्तिम कर्ता के पहले 'और' संयोजक आया हो, तो इन कर्ताओं की क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी जैसे-

मोहन और सोहन सोते हैं। आशा, उषा और पूर्णिमा स्कूल जाती हैं।

(iii) यदि वाक्य में दो भिन्न लिंगों के कर्ता हों और दोनों द्वन्द्वसमास के अनुसार प्रयुक्त हों तो उनकी क्रिया पुंलिंग बहुवचन में होगी। जैसे-

नर-नारी गये। राजा-रानी आये। स्त्री-पुरुष मिले। माता-पिता बैठे हैं।

(iv) यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न विभक्तिरहित एकवचन कर्ता हों और दोनों के बीच 'और' संयोजक आये, तो उनकी क्रिया पुंलिंग और बहुवचन में होगी। जैसे-

राधा और कृष्ण रास रचते हैं। बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

(v) यदि वाक्य में दोनों लिंगों और वचनों के अनेक कर्ता हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी और उनका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा। जैसे-

एक लड़का, दो बूढ़े और अनेक लड़कियाँ आती हैं। एक बकरी, दो गायें और बहुत-से बैल मैदान में चरते हैं।

(vi) यदि वाक्य में अनेक कर्ताओं के बीच विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय 'या' अथवा 'वा' रहे तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी। जैसे-

घनश्याम की पाँच दरियाँ वा एक कम्बल बिकेगा। हरि का एक कम्बल या पाँच दरियाँ बिकेंगी। मोहन का बैल या सोहन की गायें बिकेंगी।

(vii) यदि उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष एक वाक्य में कर्ता बनकर आयें तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी। जैसे-

वह और हम जायेंगे। हरि, तुम और हम सिनेमा देखने चलेंगे। वह, आप और मैं चलूँगा।

गुरूजी का मत है कि वाक्य में पहले मध्यमपुरुष प्रयुक्त होता है, उसके बाद अन्यपुरुष और अन्त में उत्तमपुरुष; जैसे- तुम, वह और मैं जाऊँगा।

## कर्म और क्रिया का मेल

(i) यदि वाक्य में कर्ता 'ने' विभक्ति से युक्त हो और कर्म की 'को' विभक्ति न हो, तो उसकी क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगी। जैसे-

आशा ने पुस्तक पढ़ी। हमने लड़ाई जीती। उसने गाली दी। मैंने रूपये दिये। तुमने क्षमा माँगी।

(ii) यदि कर्ता और कर्म दोनों विभक्तिचिह्नों से युक्त हों, तो क्रिया सदा एकवचन पुंलिंग और अन्यपुरुष में होगी। जैसे-

मैंने कृष्ण को बुलाया। तुमने उसे देखा। स्त्रियों ने पुरुषों को ध्यान से देखा।

(iii) यदि कर्ता 'को' प्रत्यय से युक्त हो और कर्म के स्थान पर कोई क्रियार्थक संज्ञा आए तो क्रिया सदा पुंलिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में होगी। जैसे-

तुम्हें (तुमको) पुस्तक पढ़ना नहीं आता। अलका को रसोई बनाना नहीं आता।

उसे (उसको) समझकर बात करना नहीं आता।

(iv) यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक विभक्तिरहित कर्म एक साथ आएँ, तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन में होगी। जैसे-

श्याम ने बैल और घोड़ा मोल लिए। तुमने गाय और भैंस मोल ली।

(v) यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक-अप्राणिवाचक अप्रत्यय कर्म एक साथ एकवचन में आयें, तो क्रिया भी एकवचन में होगी। जैसे-

मैंने एक गाय और एक भैंस खरीदी। सोहन ने एक पुस्तक और एक कलम खरीदी। मोहन ने एक घोड़ा और एक हाथी बेचा।

(vi) यदि वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंग के अनेक प्रत्यय कर्म आयें और वे 'और' से जुड़े हों, तो क्रिया अन्तिम कर्म के लिंग और वचन में होगी। जैसे-

मैंने मिठाई और पापड़ खाये। उसने दूध और रोटी खिलाई।

## संज्ञा और सर्वनाम का मेल

(i) वाक्य में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार सर्वनाम उस संज्ञा का अनुसरण करता है। जिसके बदले उसका प्रयोग होता है। जैसे-

लड़के वे ही हैं। लड़कियाँ भी ये ही हैं।

(ii) यदि वाक्य में अनेक संज्ञाओं के स्थान पर एक ही सर्वनाम आये, तो वह पुंलिंग बहुवचन में होगा। जैसे-

रमेश और सुरेश पटना गये है, दो दिन बाद वे लौटेंगे।

AJAY KUMAR

सुरेश, शीला और रमा आये और वे चले भी गये।

## (ग) वाक्यगत प्रयोग

वाक्य का सारा सौन्दर्य पदों अथवा शब्दों के समुचित प्रयोग पर आश्रित है। पदों के स्वरूप और औचित्य पर ध्यान रखे बिना शिष्ट और सुन्दर वाक्यों की रचना नहीं होती। प्रयोग-सम्बन्धी कुछ आवश्यक निर्देश निम्नलिखित हैं-

### कुछ आवश्यक निर्देश

(i) एक वाक्य से एक ही भाव प्रकट हो।

(ii) शब्दों का प्रयोग करते समय व्याकरण-सम्बन्धी नियमों का पालन हो।

(iii) वाक्यरचना में अधूरे वाक्यों को नहीं रखा जाये।

(iv) वाक्य-योजना में स्पष्टता और प्रयुक्त शब्दों में शैली-सम्बन्धी शिष्टता हो।

(v) वाक्य में शब्दों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध हो। तात्पर्य यह कि वाक्य में सभी शब्दों का प्रयोग एक ही काल में, एक ही स्थान में और एक ही साथ होना चाहिए।

(vi) वाक्य में ध्वनि और अर्थ की संगति पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(vii) वाक्य में व्यर्थ शब्द न आने पायें।

(viii) वाक्य-योजना में आवश्यकतानुसार जहाँ-तहाँ मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग हो।

(ix) वाक्य में एक ही व्यक्ति या वस्तु के लिए कहीं 'यह' और कहीं 'वह', कहीं 'आप' और कहीं 'तुम', कहीं 'इसे' और कहीं 'इन्हें', कहीं 'उसे' और कहीं 'उन्हें', कहीं 'उसका' और कहीं 'उनका', कहीं 'इनका' और कहीं 'इसका' प्रयोग नहीं होना चाहिए।

(x) वाक्य में पुनरुक्तिदोष नहीं होना चाहिए। शब्दों के प्रयोग में औचित्य पर ध्यान देना चाहिए।

(xi) वाक्य में अप्रचलित शब्दों का व्यवहार नहीं होना चाहिए।

(xii) परोक्ष कथन (Indirect narration) हिन्दी भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है। यह वाक्य अशुद्ध है- उसने कहा कि उसे कोई आपत्ति नहीं है। इसमें 'उसे' के स्थान पर 'मुझे' होना चाहिए।

### अन्य ध्यातव्य बातें

AJAY KUMAR

(1) 'प्रत्येक', 'किसी', 'कोई' का प्रयोग- ये सदा एकवचन में प्रयुक्त होते है, बहुवचन में प्रयोग अशुद्ध है। जैसे-

प्रत्येक- प्रत्येक व्यक्ति जीना चाहता है।

प्रत्येक पुरुष से मेरा निवेदन है।

कोई- मैंने अब तक कोई काम नहीं किया।

कोई ऐसा भी कह सकता है।

किसी- किसी व्यक्ति का वश नहीं चलता।

किसी-किसी का ऐसा कहना है।

किसी ने कहा था।

टिप्पणी- 'कोई' और 'किसी' के साथ 'भी' का प्रयोग अशुद्ध है। जैसे- कोई भी होगा, तब काम चल जायेगा। यहाँ 'भी' अनावश्यक है। कोई 'कोऽपि' का तद्भव है। 'कोई' और 'किसी' में 'भी' का भाव वर्त्तमान है।

(2) 'द्वारा' का प्रयोग- किसी व्यक्ति के माध्यम (through) से जब कोई काम होता है, तब संज्ञा के बाद 'द्वारा' का प्रयोग होता है; वस्तु (संज्ञा) के बाद 'से' लगता है। जैसे-

सुरेश द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। युद्ध से देश पर संकट छाता है।

(3) 'सब' और 'लोग' का प्रयोग- सामान्यतः दोनों बहुवचन हैं। पर कभी-कभी 'सब' का समुच्चय-रूप में एकवचन में भी प्रयोग होता है। जैसे-

तुम्हारा सब काम गलत होता है।

यदि काम की अधिकता का बोध हो तो 'सब' का प्रयोग बहुवचन में होगा। जैसे-

सब यही कहते हैं।

हिंदी में 'सब' समुच्चय और संख्या- दोनों का बोध कराता है।

'लोग' सदा बहुवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे-

लोग अन्धे नहीं हैं। लोग ठीक ही कहते हैं।

कभी-कभी 'सब लोग' का प्रयोग बहुवचन में होता है। 'लोग' कहने से कुछ व्यक्तियों का और 'सब लोग' कहने से अनगिनत और अधिक व्यक्तियों का बोध होता है। जैसे-

AJAY KUMAR

सब लोगों का ऐसा विचार है। सब लोग कहते है कि गाँधीजी महापुरुष थे।

(4) व्यक्तिवाचक संज्ञा और क्रिया का मेल- यदि व्यक्तिवाचक संज्ञा कर्ता है, तो उसके लिंग और वचन के अनुसार क्रिया के लिंग और वचन होंगे। जैसे-

कशी सदा भारतीय संस्कृति का केन्द्र रही है।

यहाँ कर्ता स्त्रीलिंग है।

पहले कलकत्ता भारत की राजधानी था।

यहाँ कर्ता पुंलिंग है।

उसका ज्ञान ही उसकी पूँजी था।

यहाँ कर्ता पुंलिंग है।

(5) समयसूचक समुच्चय का प्रयोग- "तीन बजे हैं। आठ बजे हैं।" इन वाक्यों में तीन और आठ बजने का बोध समुच्चय में हुआ है।

(6) 'पर' और 'ऊपर' का प्रयोग- 'ऊपर' और 'पर' व्यक्ति और वस्तु दोनों के साथ प्रयुक्त होते हैं। किन्तु 'पर' सामान्य ऊँचाई का और 'ऊपर' विशेष ऊँचाई का बोधक है। जैसे-

पहाड़ के ऊपर एक मन्दिर है। इस विभाग में मैं सबसे ऊपर हूँ।

हिंदी में 'ऊपर' की अपेक्षा 'पर' का व्यवहार अधिक होता है। जैसे-

मुझपर कृपा करो। छत पर लोग बैठे हैं। गोप पर अभियोग है। मुझपर तुम्हारे एहसान हैं।

(7) 'बाद' और 'पीछे' का प्रयोग- यदि काल का अन्तर बताना हो, तो 'बाद' का और यदि स्थान का अन्तर सूचित करना हो, तो 'पीछे' का प्रयोग होता है। जैसे-

उसके बाद वह आया- काल का अन्तर।

मेरे बाद इसका नम्बर आया- काल का अन्तर।

गाड़ी पीछे रह गयी- स्थान का अन्तर।

मैं उससे बहुत पीछे हूँ- स्थान का अन्तर।

(8) (क) नए, नये, नई, नयी का शुद्ध प्रयोग- जिस शब्द का अन्तिम वर्ण 'या' है उसका बहुवचन 'ये' होगा। 'नया' मूल शब्द है, इसका बहुवचन 'नये' और स्त्रीलिंग 'नयी' होगा।

AJAY KUMAR

(ख) गए, गई, गये, गयी का शुद्ध प्रयोग- मूल शब्द 'गया' है। उपरिलिखित नियम के अनुसार 'गया' का बहुवचन 'गये' और स्त्रीलिंग 'गयी' होगा।

(ग) हुये, हुए, हुयी, हुई का शुद्ध प्रयोग- मूल शब्द 'हुआ' है, एकवचन में। इसका बहुवचन होगा 'हुए'; 'हुये' नहीं 'हुए' का स्त्रीलिंग 'हुई' होगा; 'हुयी' नहीं।

(घ) किए, किये, का शुद्ध प्रयोग- 'किया' मूल शब्द है; इसका बहुवचन 'किये' होगा।

(ङ) लिए, लिये, का शुद्ध प्रयोग- दोनों शुद्ध रूप हैं। किन्तु जहाँ अव्यय व्यवहृत होगा वहाँ 'लिए' आयेगा; जैसे- मेरे लिए उसने जान दी। क्रिया के अर्थ में 'लिये' का प्रयोग होगा; क्योंकि इसका मूल शब्द 'लिया' है।

(च) चाहिये, चाहिए का शुद्ध प्रयोग- 'चाहिए' अव्यय है। अव्यय विकृत नहीं होता। इसलिए 'चाहिए' का प्रयोग शुद्ध है; 'चाहिये' का नहीं। 'इसलिए' के साथ भी ऐसी ही बात है।

.....

AJAY KUMAR

# संज्ञा (Noun)

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते है, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते है।

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते है।

जैसे-

प्राणियों नाम-मोर, घोड़ा, अनिल, किरण, जवाहरलाल नेहरू आदि।

वस्तुओ के नाम- अनार, रेडियो, किताब, सन्दूक, आदि।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार, नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता, बुढापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और पदार्थ का वाचक नहीं, वरन उनके धर्मो का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु' का प्रयोग इस अर्थ में नहीं होता। अतः वस्तु के अन्तर्गत प्राणी, पदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

**संज्ञा के भेद**

संज्ञा के पाँच भेद होते है-

(1)व्यक्तिवाचक (proper noun )

(2) जातिवाचक (common noun)

(3)भाववाचक (abstract noun)

(4)समूहवाचक (collective noun)

(5)द्रव्यवाचक (material noun)

**(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा:-** जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे-

AJAY KUMAR

व्यक्ति का नाम-रवीना, सोनिया गाँधी, श्याम, हरि, सुरेश, सचिन आदि।

वस्तु का नाम- कार, टाटा चाय, कुरान, गीता रामायण आदि।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार, जयपुर आदि।

दिशाओं के नाम- उत्तर, पश्चिम, दक्षिण, पूर्व।

देशों के नाम- भारत, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, बर्मा।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय, रूसी, अमेरिकी।

समुद्रों के नाम- काला सागर, भूमध्य सागर, हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा, कावेरी, सिन्धु।

पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनन्दा, कराकोरम।

नगरों, चौकों और सड़कों के नाम- वाराणसी, गया, चाँदनी चौक, हरिसन रोड, अशोक मार्ग।

पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के नाम- रामचरितमानस, ऋग्वेद, धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही-विद्रोह, अक्तूबर-क्रान्ति।

दिनों, महीनों के नाम- मई, अक्तूबर, जुलाई, सोमवार, मंगलवार।

त्योहारों, उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी।

**(2) जातिवाचक संज्ञा :-** जिस शब्द से किसी जाति के सभी प्राणियों या प्रदार्थो का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे- लड़का, पशु-पक्षयों, वस्तु, नदी, मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षयों' से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

AJAY KUMAR

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता हैं।

**(3)भाववाचक संज्ञा :-** जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह'से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं।

हर पदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म पदार्थ से अलग नहीं रह सकता। घोड़ा है, तो उसमे बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ' और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

**भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण**

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय में प्रत्यय लगाकर होता है। उदाहरण-

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा के कुछ उदाहरण

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|---|
| स्त्री- | (स्त्रीत्व) | भाई- | (भाईचारा) |
| मनुष्य- | (मनुष्यता) | पुरुष- | (पुरुषत्व, पौरुष) |
| शास्त्र- | (शास्त्रीयता) | जाति- | (जातीयता) |
| पशु- | (पशुता) | बच्चा- | (बचपन) |
| दनुज- | (दनुजता) | नारी- | (नारीत्व) |
| पात्र- | (पात्रता) | बूढा- | (बुढापा) |
| लड़का- | लड़कपन | मित्र- | मित्रता |

AJAY KUMAR

दास- दासत्व पण्डित- पण्डिताई

अध्यापक- अध्यापन सेवक- सेवा

(2) विशेषण से संज्ञा (भाववाचक संज्ञा) के उदाहरण

| विशेषण | संज्ञा | विशेषण | संज्ञा |
|---|---|---|---|
| लघु- | (लघुता, लघुत्व, लाघव) | वीर- | (वीरता, वीरत्व) |
| एक- | (एकता, एकत्व) | चालाक- | (चालाकी) |
| खट्टा- | (खटाई) | गरीब- | (गरीबी) |
| गँवार- | (गँवारपन) | पागल- | (पागलपन) |
| बूढा- | (बुढापा) | मोटा- | (मोटापा) |
| नवाब- | (नवाबी) | दीन- | (दीनता, दैन्य) |
| बड़ा- | (बड़ाई) | सुंदर- | (सौंदर्य, सुंदरता) |
| भला- | (भलाई) | बुरा- | (बुराई) |
| ढीठ- | (ढिठाई) | चौड़ा- | (चौड़ाई) |
| लाल- | (लाली, लालिमा) | बेईमान- | (बेईमानी) |
| सरल- | (सरलता, सारल्य) | आवश्यकता- | (आवश्यकता) |
| परिश्रमी- | (परिश्रम) | अच्छा- | (अच्छाई) |
| गंभीर- | (गंभीरता, गांभीर्य) | सभ्य- | (सभ्यता) |
| स्पष्ट- | (स्पष्टता) | भावुक- | (भावुकता) |
| अधिक- | (अधिकता, आधिक्य) | गर्म- | गर्मी |
| सर्द- | सर्दी | कठोर- | कठोरता |
| मीठा- | मिठास | चतुर- | चतुराई |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| सफेद- | सफेदी | श्रेष्ठ- | श्रेष्ठता |
| मूर्ख- | मूर्खता | राष्ट्रीय | राष्ट्रीयता |

(3) क्रिया से संज्ञा (भाववाचक संज्ञा) के उदाहरण

| क्रिया | संज्ञा | क्रिया | संज्ञा |
|---|---|---|---|
| खोजना- | (खोज) | सीना- | (सिलाई) |
| जीतना- | (जीत) | रोना- | (रुलाई) |
| लड़ना- | (लड़ाई) | पढ़ना- | (पढ़ाई) |
| चलना- | (चाल, चलन) | पीटना- | (पिटाई) |
| देखना- | (दिखावा, दिखावट) | समझना- | (समझ) |
| सींचना- | (सिंचाई) | पड़ना- | (पड़ाव) |
| पहनना- | (पहनावा) | चमकना- | (चमक) |
| लूटना- | (लूट) | जोड़ना- | (जोड़) |
| घटना- | (घटाव) | नाचना- | (नाच) |
| बोलना- | (बोल) | पूजना- | (पूजन) |
| झूलना- | (झूला) | जोतना- | (जुताई) |
| कमाना- | (कमाई) | बचना- | (बचाव) |
| रुकना- | (रुकावट) | बनना- | (बनावट) |
| मिलना- | (मिलावट) | बुलाना- | (बुलावा) |
| भूलना- | (भूल) | छापना- | (छापा, छपाई) |
| बैठना- | (बैठक, बैठकी) | बढ़ना- | (बाढ़) |
| घेरना- | (घेरा) | छींकना- | (छींक) |

AJAY KUMAR

फिसलना- (फिसलन)

रँगना- रँगाई, रंगत

उड़ना- (उड़ान)

मुड़ना- (मोड़)

चढ़ना- चढाई

मारना- मार

गिरना- गिरावट

खपना- (खपत)

मुसकाना- (मुसकान)

घबराना- घबराहट

सजाना- सजावट

बहना- बहाव

दौड़ना- दौड़

कूदना- कूद

## (4) संज्ञा से विशेषण के उदाहरण

| संज्ञा | विशेषण | संज्ञा | विशेषण |
|---|---|---|---|
| अंत- | (अंतिम, अंत्य) | अर्थ- | (आर्थिक) |
| अवश्य- | (आवश्यक) | अंश- | (आंशिक) |
| अभिमान- | (अभिमानी) | अनुभव- | (अनुभवी) |
| इच्छा- | (ऐच्छिक) | इतिहास- | (ऐतिहासिक) |
| ईश्वर- | (ईश्वरीय) | उपज- | (उपजाऊ) |
| उन्नति- | (उन्नत) | कृपा- | (कृपालु) |
| काम- | (कामी, कामुक) | काल- | (कालीन) |
| कुल- | (कुलीन) | केंद्र- | (केंद्रीय) |
| क्रम- | (क्रमिक) | कागज- | (कागजी) |
| किताब- | (किताबी) | काँटा- | (कँटीला) |
| कंकड़- | (कंकड़ीला) | कमाई- | (कमाऊ) |
| क्रोध- | (क्रोधी) | आवास- | (आवासीय) |
| आसमान- | (आसमानी) | आयु- | (आयुष्मान) |
| आदि- | (आदिम) | अज्ञान- | (अज्ञानी) |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| अपराध- | (अपराधी) | चाचा- | (चचेरा) |
| जवाब- | (जवाबी) | जहर- | (जहरीला) |
| जाति- | (जातीय) | जंगल- | (जंगली) |
| झगड़ा- | (झगड़ालू) | तालु- | (तालव्य) |
| तेल- | (तेलहा) | देश- | (देशी) |
| दान- | (दानी) | दिन- | (दैनिक) |
| दया- | (दयालु) | दर्द- | (दर्दनाक) |
| दूध- | (दुधिया, दुधार) | धन- | (धनी, धनवान) |
| धर्म- | (धार्मिक) | नीति- | (नैतिक) |
| खपड़ा- | (खपड़ैल) | खेल- | (खेलाड़ी) |
| खर्च- | (खर्चीला) | खून- | (खूनी) |
| गाँव- | (गँवारू, गँवार) | गठन- | (गठीला) |
| गुण- | (गुणी, गुणवान) | घर- | (घरेलू) |
| घमंड- | (घमंडी) | घाव- | (घायल) |
| चुनाव- | (चुनिंदा, चुनावी) | चार- | (चौथा) |
| पश्चिम- | (पश्चिमी) | पूर्व- | (पूर्वी) |
| पेट- | (पेटू) | प्यार- | (प्यारा) |
| प्यास- | (प्यासा) | पशु- | (पाशविक) |
| पुस्तक- | (पुस्तकीय) | पुराण- | (पौराणिक) |
| प्रमाण- | (प्रमाणिक) | प्रकृति- | (प्राकृतिक) |
| पिता- | (पैतृक) | प्रांत- | (प्रांतीय) |
| बालक- | (बालकीय) | बर्फ- | (बर्फीला) |
| भ्रम- | (भ्रामक, भ्रांत) | भोजन- | (भोज्य) |
| भूगोल- | (भौगोलिक) | भारत- | (भारतीय) |
| मन- | (मानसिक) | मास- | (मासिक) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| माह- (माहवारी) | माता- (मातृक) |
| मुख- (मौखिक) | नगर- (नागरिक) |
| नियम- (नियमित) | नाम- (नामी, नामक) |
| निश्चय-(निश्चित) | न्याय- (न्यायी) |
| नौ- (नाविक) | नमक- (नमकीन) |
| पाठ- (पाठ्य) | पूजा- (पूज्य, पूजित) |
| पीड़ा- (पीड़ित) | पत्थर- (पथरीला) |
| पहाड़- (पहाड़ी) | रोग- (रोगी) |
| राष्ट्र- (राष्ट्रीय) | रस- (रसिक) |
| लोक- (लौकिक) | लोभ- (लोभी) |
| वेद- (वैदिक) | वर्ष- (वार्षिक) |
| व्यापर- (व्यापारिक) | विष- (विषैला) |
| विस्तार-(विस्तृत) | विवाह- (वैवाहिक) |
| विज्ञान- (वैज्ञानिक) | विलास- (विलासी) |
| विष्णु- (वैष्णव) | शरीर- (शारीरिक) |
| शास्त्र- (शास्त्रीय) | साहित्य-(साहित्यिक) |
| समय- (सामयिक) | स्वभाव- (स्वाभाविक) |
| सिद्धांत- (सैद्धांतिक) | स्वार्थ- (स्वार्थी) |
| स्वास्थ्य-(स्वस्थ) | स्वर्ण- (स्वर्णिम) |
| मामा- (ममेरा) | मर्द- (मर्दाना) |
| मैल- (मैला) | मधु- (मधुर) |
| रंग- (रंगीन, रँगीला) | रोज- (रोजाना) |
| साल- (सालाना) | सुख- (सुखी) |
| समाज- (सामाजिक) | संसार- (सांसारिक) |
| स्वर्ग- (स्वर्गीय, स्वर्गिक) | सप्ताह- (सप्ताहिक) |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| समुद्र- | (सामुद्रिक, समुद्री) | संक्षेप- | (संक्षिप्त) |
| सुर- | (सुरीला) | सोना- | (सुनहरा) |
| क्षण- | (क्षणिक) | हवा- | (हवाई) |

## (5) क्रिया से विशेषण के उदाहरण

| क्रिया | विशेषण | क्रिया | विशेषण |
|---|---|---|---|
| लड़ना- | (लड़ाकू) | भागना- | (भगोड़ा) |
| अड़ना- | (अड़ियल) | देखना- | (दिखाऊ) |
| लूटना- | (लुटेरा) | भूलना- | (भुलक्कड़) |
| पीना- | (पियक्कड़) | तैरना- | (तैराक) |
| जड़ना- | (जड़ाऊ) | गाना- | (गवैया) |
| पालना- | (पालतू) | झगड़ना- | (झगड़ालू) |
| टिकना- | (टिकाऊ) | चाटना- | (चटोर) |
| बिकना- | (बिकाऊ) | पकना- | (पका) |

## (6) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

अपना- अपनापन अपनाव;

मम- ममता ममत्व;

निज- निजत्व;

पराया से परायापन इत्यादि।

## (7) क्रिया विशेषण से भाववाचक संज्ञा

मन्द- मन्दी;

दूर- दूरी;

AJAY KUMAR

तीव्र- तीव्रता;

शीघ्र- शीघ्रता इत्यादि।

(8) अव्यय से भाववाचक संज्ञा

परस्पर- पारस्पर्य;

समीप- सामीप्य;

निकट- नैकट्य;

शाबाश- शाबाशी;

वाहवाह; वाहवाही इत्यादि।

**(4)समूहवाचक संज्ञा :-** जिस संज्ञा शब्द से वस्तुओ के समूह या समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे- व्यक्तियों का समूह- भीड़, जनता, सभा, कक्षा; वस्तुओं का समूह- गुच्छा, कुंज, मण्डल, घौद।

**(5)द्रव्यवाचक संज्ञा :-**जिस संज्ञा से नाप-तौलवाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु, द्रव या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे- ताम्बा, पीतल, चावल, घी, तेल, सोना, लोहा आदि।

संज्ञाओं का प्रयोग

संज्ञाओं के प्रयोग में कभी-कभी उलटफेर भी हो जाया करता है। कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे है-

**(क) जातिवाचक :** व्यक्तिवाचक- कभी- कभी जातिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में होता है। जैसे- 'पुरी' से जगन्नाथपुरी का 'देवी' से दुर्गा का, 'दाऊ' से कृष्ण के भाई बलदेव का, 'संवत्' से विक्रमी संवत् का, 'भारतेन्दु' से बाबू हरिश्चन्द्र का और 'गोस्वामी' से तुलसीदासजी का बोध होता है। इसी तरह बहुत-सी योगरूढ़ संज्ञाएँ मूल रूप से जातिवाचक होते हुए भी प्रयोग में व्यक्तिवाचक के अर्थ में चली आती हैं। जैसे- गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल इत्यादि।

AJAY KUMAR

**(ख) व्यक्तिवाचक :** जातिवाचक- कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक (अनेक व्यक्तियों के अर्थ) में होता है। ऐसा किसी व्यक्ति का असाधारण गुण या धर्म दिखाने के लिए किया जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा में बदल जाती है। जैसे- गाँधी अपने समय के कृष्ण थे; यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी है; तुम कलियुग के भीम हो इत्यादि।

**(ग) भाववाचक :** जातिवाचक- कभी-कभी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में होता है। उदाहरणार्थ- ये सब कैसे अच्छे पहरावे है। यहाँ 'पहरावा' भाववाचक संज्ञा है, किन्तु प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में हुआ। 'पहरावे' से 'पहनने के वस्त्र' का बोध होता है।

## संज्ञा के रूपान्तर (लिंग, वचन और कारक में सम्बन्ध)

संज्ञा विकारी शब्द है। विकार शब्दरूपों को परिवर्तित अथवा रूपान्तरित करता है। संज्ञा के रूप लिंग, वचन और कारक चिह्नों (परसर्ग) के कारण बदलते हैं।

<u>लिंग के अनुसार</u>

नर खाता है- नारी खाती है।

लड़का खाता है- लड़की खाती है।

इन वाक्यों में 'नर' पुंलिंग है और 'नारी' स्त्रीलिंग। 'लड़का' पुंलिंग है और 'लड़की' स्त्रीलिंग। इस प्रकार, लिंग के आधार पर संज्ञाओं का रूपान्तर होता है।

<u>वचन के अनुसार</u>

लड़का खाता है- लड़के खाते हैं।

लड़की खाती है- लड़कियाँ खाती हैं।

एक लड़का जा रहा है- तीन लड़के जा रहे हैं।

इन वाक्यों में 'लड़का' शब्द एक के लिए आया है और 'लड़के' एक से अधिक के लिए। 'लड़की' एक के लिए और 'लड़कियाँ' एक से अधिक के लिए व्यवहृत हुआ है। यहाँ संज्ञा के रूपान्तर का आधार 'वचन' है। 'लड़का' एकवचन है और 'लड़के' बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है।

AJAY KUMAR

कारक- चिह्नों के अनुसार

लड़का खाना खाता है- लड़के ने खाना खाया।

लड़की खाना खाती है- लड़कियों ने खाना खाया।

इन वाक्यों में 'लड़का खाता है' में 'लड़का' पुंलिंग एकवचन है और 'लड़के ने खाना खाया' में भी 'लड़के' पुंलिंग एकवचन है, पर दोनों के रूप में भेद है। इस रूपान्तर का कारण कर्ता कारक का चिह्न 'ने' है, जिससे एकवचन होते हुए भी 'लड़के' रूप हो गया है। इसी तरह, लड़के को बुलाओ, लड़के से पूछो, लड़के का कमरा, लड़के के लिए चाय लाओ इत्यादि वाक्यों में संज्ञा (लड़का-लड़के) एकवचन में आयी है। इस प्रकार, संज्ञा बिना कारक-चिह्न के भी होती है और कारक चिह्नों के साथ भी। दोनों स्थितियों में संज्ञाएँ एकवचन में अथवा बहुवचन में प्रयुक्त होती है। उदाहरणार्थ-

बिना कारक-चिह्न के-

लड़के खाना खाते हैं। (बहुवचन)

लड़कियाँ खाना खाती हैं। (बहुवचन)

कारक-चिह्नों के साथ-

लड़कों ने खाना खाया।

लड़कियों ने खाना खाया।

लड़कों से पूछो।

लड़कियों से पूछो।

इस प्रकार, संज्ञा का रूपान्तर लिंग, वचन और कारक के कारण होता है।

.....

AJAY KUMAR

# सर्वनाम (Pronoun)

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते है।

दूसरे शब्दों में-सर्वनाम उस विकारी शब्द को कहते है, जो पूर्वापरसंबध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है।

जैसे- मै, तू, वह, आप, कोई, यह, ये, वे, उसका इत्यादि।

अन्य उदाहरण

(1)'सुभाष' एक विद्यार्थी है।

(2) वह (सुभाष) रोज स्कूल जाता है।

(3)उसके (सुभाष के) पास सुन्दर बस्ता है।

(4)उसे (सुभाष को )घूमना बहुत पसन्द है।

उपयुक्त वाक्यों में 'सुभाष' शब्द संज्ञा है तथा इसके स्थान पर वह, उसके, उसे शब्द संज्ञा (सुभाष) के स्थान पर प्रयोग किये गए है। इसलिए ये सर्वनाम है।

सर्व (सब) नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आते है, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं।

संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम की विलक्षणता यह है कि संज्ञा से जहाँ उसी वस्तु का बोध होता है, जिसका वह (संज्ञा) नाम है, वहाँ सर्वनाम में पूर्वापरसम्बन्ध के अनुसार किसी भी वस्तु का बोध होता है। 'लड़का' कहने से केवल लड़के का बोध होता है, घर, सड़क आदि का बोध नहीं होता; किन्तु 'वह' कहने से पूर्वापरसम्बन्धके अनुसार ही किसी वस्तु का बोध होता है।

## सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छः भेद होते है-

(1)पुरुषवाचक सर्वनाम (personal pronoun)

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम (demonstrative pronoun)

(3)अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite pronoun)

AJAY KUMAR

(4)संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)

(5)प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)

(6)निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम:- जिन सर्वनाम शब्दों से व्यक्ति का बोध होता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है।

दूसरे शब्दों में-'पुरुषवाचक सर्वनाम' पुरुषों (स्त्री या पुरुष) के नाम के बदले आते हैं।

जैसे- मैं आता हूँ। तुम जाते हो। वह भागता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं, तुम, वह' पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के प्रकार

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है-

(i)उत्तम पुरुष (ii)मध्यम पुरुष (iii)अन्य पुरुष

(i)उत्तम पुरुष :- जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुष कहते है।

जैसे- मैं, हमारा, हम, मुझको, आदि।

उदाहरण- मैं स्कूल जाऊँगा।

हम मतदान नहीं करेंगे।

(ii) मध्यम पुरुष :- जिन सर्वनामों का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुष कहते है।

जैसे- तू, तुम, तुम्हे, आप, आपने आदि।

उदाहरण- तुमने होमवर्क क्यों नहीं किया

तुम सो जाओ।

(iii)अन्य पुरुष:- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुष कहते है।

जैसे- वे, यह, वह, इनका, इन्हें, उनसे आदि।

AJAY KUMAR

उदाहरण- वे मैच नही खेलेंगे।

उन्होंने कमर कस ली है।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम:- सर्वनाम के जिस रूप से हमे किसी बात या वस्तु का निश्चत रूप से बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता है, उसे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

जैसे- यह, वह, ये, वे आदि।

उदाहरण- पास की वस्तु के लिए- 'यह' कोई नया काम नहीं है; दूर की वस्तु के लिए- रोटी मत खाओ, क्योंकि 'वह' जली है।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम:- जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- कोई, कुछ, किसी आदि।

उदाहरण- 'कोई'- ऐसा न हो कि 'कोई' आ जाय;

'कुछ'- उसने 'कुछ' नहीं खाया।

(4)संबंधवाचक सर्वनाम :- जिन सर्वनाम शब्दों का दूसरे सर्वनाम शब्दों से संबंध ज्ञात हो तथा जो शब्द दो वाक्यों को जोड़ते है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- जो, जिसकी, सो, जिसने, जैसा, वैसा आदि।

उदाहरण- जैसा करेगा वैसा भरेगा।

जो परिश्रम करते हैं, वे सुखी रहते हैं।

वह 'जो' न करे, 'सो' थोड़ा

(5)प्रश्नवाचक सर्वनाम :- जो सर्वनाम शब्द सवाल पूछने के लिए प्रयुक्त होते है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है।

सरल शब्दों में- प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते है।

AJAY KUMAR

जैसे- कौन, क्या, किसने आदि।

उदाहरण- टोकरी में क्या रखा है।

बाहर कौन खड़ा है।

तुम क्या खा रहे हो ?

यहाँ पर यह ध्यान रखना चाहिए कि 'कौन' का प्रयोग चेतन जीवों के लिए और 'क्या' का प्रयोग जड़ पदार्थो के लिए होता है।

(6) निजवाचक सर्वनाम :- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए (स्वयं के अर्थ में) करता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- अपने आप, निजी, खुद आदि।

उदाहरण- मैने अपना कार्य स्वंय किया।

आप यह कार्य खुद कीजिये।

'निजवाचक सर्वनाम' का रूप 'आप' है। लेकिन पुरुषवाचक के अन्यपुरुषवाले 'आप' से इसका प्रयोग बिलकुल अलग है। यह कर्ता का बोधक है, पर स्वयं कर्ता का काम नहीं करता। पुरुषवाचक 'आप' बहुवचन में आदर के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे- आप मेरे सिर-आखों पर है; आप क्या राय देते है ? किन्तु, निजवाचक 'आप' एक ही तरह दोनों वचनों में आता है और तीनों पुरुषों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थो में होता है-

(क) निजवाचक 'आप' का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के अवधारण (निश्चय) के लिए होता है। जैसे- मैं 'आप' वहीं से आया हूँ; मैं 'आप' वही कार्य कर रहा हूँ।

(ख) निजवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए भी होता है। जैसे- उन्होंने मुझे रहने को कहा और 'आप' चलते बने; वह औरों को नहीं, 'अपने' को सुधार रहा है।

(ग) सर्वसाधारण के अर्थ में भी 'आप' का प्रयोग होता है। जैसे- 'आप' भला तो जग भला; 'अपने' से बड़ों का आदर करना उचित है।

AJAY KUMAR

(घ) अवधारण के अर्थ में कभी-कभी 'आप' के साथ 'ही' जोड़ा जाता है। जैसे- मैं 'आप ही' चला आता था; यह काम 'आप ही'; मैं यह काम 'आप ही' कर लूँगा।

## संयुक्त सर्वनाम

रूस के हिन्दी वैयाकरण डॉ० दीमशित्स ने एक और प्रकार के सर्वनाम का उल्लेख किया है और उसे 'संयुक्त सर्वनाम' कहा है। उन्हीं के शब्दों में, 'संयुक्त सर्वनाम' पृथक श्रेणी के सर्वनाम हैं। सर्वनाम के सब भेदों से इनकी भिन्नता इसलिए है, क्योंकि उनमें एक शब्द नहीं, बल्कि एक से अधिक शब्द होते हैं। संयुक्त सर्वनाम स्वतन्त्र रूप से या संज्ञा-शब्दों के साथ भी प्रयुक्त होता है।

इसका उदाहरण कुछ इस प्रकार है- जो कोई, सब कोई, हर कोई, और कोई, कोई और, जो कुछ, सब कुछ, और कुछ, कुछ और, कोई एक, एक कोई, कोई भी, कुछ एक, कुछ भी, कोई-न-कोई, कुछ-न-कुछ, कुछ-कुछ, कोई-कोई इत्यादि।

### सर्वनाम के रूपान्तर (लिंग, वचन और कारक)

सर्वनाम का रूपान्तर पुरुष, वचन और कारक की दृष्टि से होता है। इनमें लिंगभेद के कारण रूपान्तर नहीं होता। जैसे-

वह खाता है।

वह खाती है।

संज्ञाओं के समान सर्वनाम के भी दो वचन होते हैं- एकवचन और बहुवचन।

पुरुषवाचक और निश्चयवाचक सर्वनाम को छोड़ शेष सर्वनाम विभक्तिरहित बहुवचन में एकवचन के समान रहते हैं।

सर्वनाम में केवल सात कारक होते है। सम्बोधन कारक नहीं होता।

कारकों की विभक्तियाँ लगने से सर्वनामों के रूप में विकृति आ जाती है। जैसे-

मैं- मुझको, मुझे, मुझसे, मेरा; तुम- तुम्हें, तुम्हारा; हम- हमें, हमारा; वह- उसने, उसको उसे, उससे, उसमें, उन्होंने, उनको; यह- इसने, इसे, इससे, इन्होंने, इनको, इन्हें, इनसे; कौन- किसने, किसको, किसे।

AJAY KUMAR

## सर्वनाम की कारक-रचना (रूप-रचना)

### मैं (उत्तमपुरुष)

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | मैं, मैंने | हम, हमने |
| कर्म | मुझे, मुझको | हमें, हमको |
| करण | मुझसे | हमसे |
| सम्प्रदान | मुझे, मेरे लिए | हमें, हमारे लिए |
| अपादान | मुझसे | हमसे |
| सम्बन्ध | मेरा, मेरे, मेरी | हमारा, हमारे, हमारी |
| अधिकरण | मुझमें, मुझपर | हममें, हमपर |

### तू (मध्यमपुरुष)

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | तू, तूने | तुम, तुमने, तुमलोगों ने |
| कर्म | तुझको, तुझे | तुम्हें, तुमलोगों को |
| करण | तुझसे, तेरे द्वारा | तुमसे, तुम्हारे से, तुमलोगों से |
| सम्प्रदान | तुझको, तेरे लिए, तुझे | तुम्हें, तुम्हारे लिए, तुमलोगों के लिए |
| अपादान | तुझसे | तुमसे, तुमलोगों से |
| सम्बन्ध | तेरा, तेरी, तेरे | तुम्हारा-री, तुमलोगों का-की |
| अधिकरण | तुझमें, तुझपर | तुममें, तुमलोगों में-पर |

### वह (बहुवचन)

AJAY KUMAR

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | वह, उसने | वे, उन्होंने |
| कर्म | उसे, उसको | उन्हें, उनको |
| करण | उससे, उसके द्वारा | उनसे, उनके द्वारा |
| सम्प्रदान | उसको, उसे, उसके लिए | उनको, उन्हें, उनके लिए |
| अपादान | उससे | उनसे |
| सम्बन्ध | उसका, उसकी, उसके | उनका, उनकी, उनके |
| अधिकरण | उसमें, उसपर | उनमें, उनपर |

आप(आदरसूचक)

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | आपने | आपलोगों ने |
| कर्म | आपको | आपलोगों को |
| करण | आपसे | आपलोगों से |
| सम्प्रदान | आपको, के लिए | आपलोगों को, के लिए |
| अपादान | आपसे | आपलोगों से |
| सम्बन्ध | आपका, की, के | आपलोगों का, की, के |
| अधिकरण | आप में, पर | आपलोगों में, पर |

यह(निकटवर्ती)

AJAY KUMAR

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | यह, इसने | ये, इन्होंने |
| कर्म | इसको, इसे | ये, इनको, इन्हें |
| करण | इससे | इनसे |
| सम्प्रदान | इसे, इसको | इन्हें, इनको |
| अपादान | इससे | इनसे |
| सम्बन्ध | इसका, की, के | इनका, की, के |
| अधिकरण | इसमें, इसपर | इनमें, इनपर |

कोई (अनिश्चयवाचक)

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | कोई, किसने | किन्हीं ने |
| कर्म | किसी को | किन्हीं को |
| करण | किसी से | किन्हीं से |
| सम्प्रदान | किसी को, किसी के लिए | किन्हीं को, किन्हीं के लिए |
| अपादान | किसी से | किन्हीं से |
| सम्बन्ध | किसी का,किसी की,किसी के | किन्हीं का, किन्हीं की, किन्हीं के |
| अधिकरण | किसी में, किसी पर | किन्हीं में, किन्हीं पर |

सर्वनाम का पद-परिचय

AJAY KUMAR

सर्वनाम का पद-परिचय करते समय सर्वनाम, सर्वनाम का भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक और अन्य पदों से उसका सम्बन्ध बताना पड़ता है।

उदाहरण- वह अपना काम करता है।

इस वाक्य में, 'वह' और 'अपना' सर्वनाम है। इनका पद-परिचय होगा-

वह- पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'करता है' क्रिया का कर्ता।

अपना- निजवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, पुंलिंग, एकवचन, सम्बन्धकारक, 'काम' संज्ञा का विशेषण।

.....

AJAY KUMAR

# क्रिया(Verb)

जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का ज्ञान हो उसे क्रिया कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे क्रिया कहते है।

जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।

## क्रिया के भेद

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के प्रकार

(1) प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verb)

(2) यौगिक क्रिया

(3) द्विकर्मक क्रिया (Double Transitive Verb)

(4) संयुक्त क्रिया (Compound Verb)

(5) सहायक क्रिया (Helping Verb)

(6) नामबोधक क्रिया (Nominal Verb)

(7) पूर्वकालिक क्रिया (Absolutive Verb)

(1)प्रेरणार्थक क्रिया (Causative Verb)- जिन क्रियाओ से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है।

जैसे काटना से कटवाना, करना से कराना।

एक अन्य उदाहरण इस प्रकार है-

मोहन मुझसे किताब लिखाता है।

इस वाक्य में मोहन (कर्ता) स्वयं किताब न लिखकर 'मुझे' दूसरे व्यक्ति को लिखने की प्रेरणा देता है।

AJAY KUMAR

प्रेरणार्थक क्रियाओं के दो रूप हैं। जैसे- 'गिरना' से 'गिराना' और 'गिरवाना' । दोनों क्रियाएँ एक के बाद दूसरी प्रेरणा में हैं। याद रखने वाली बात यह है कि अकर्मक क्रिया प्रेरणार्थक होने पर सकर्मक (कर्म लेनेवाली) हो जाती है। जैसे-

राम लजाता है।

वह राम को लजवाता है।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बनती हैं। ऐसी क्रियाएँ हर स्थिति में सकर्मक ही रहती हैं। जैसे- मैंने उसे हँसाया; मैंने उससे किताब लिखवायी। पहले में कर्ता अन्य (कर्म) को हँसाता है और दूसरे में कर्ता दूसरे को किताब लिखने को प्रेरित करता है। इस प्रकार हिन्दी में प्रेरणार्थक क्रियाओं के दो रूप चलते हैं। प्रथम में 'ना' का और द्वितीय में 'वाना' का प्रयोग होता है- हँसाना-हँसवाना।

| मूल | द्वितीय-तृतीय (प्रेरणा) |
|---|---|
| उठना | उठाना, उठवाना |
| उड़ना | उड़ाना, उड़वाना |
| चलना | चलाना, चलवाना |
| देना | दिलाना, दिलवाना |
| जीना | जिलाना, जिलवाना |
| लिखना | लिखाना, लिखवाना |
| जगना | जगाना, जगवाना |
| सोना | सुलाना, सुलवाना |
| पीना | पिलाना, पिलवाना |
| देना | दिलाना, दिलवाना |

(2)यौगिक क्रिया- दो या दो से अधिक धातुओं और दूसरे शब्दों के संयोग से या धातुओं में प्रत्यय लगाने से जो क्रिया बनती है, उसे यौगिक क्रिया कहा जाता है।

जैसे- चलना-चलाना, हँसना-हँसाना।

AJAY KUMAR

(3)द्विकर्मक क्रिया (Double Transitive Verb)- जिस क्रिया के दो कर्म होते है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते है।

कुछ क्रियाएँ एक कर्मवाली और दो कर्मवाली होती है। जैसे- राम ने रोटी खायी। इस वाक्य में कर्म एक ही है-

'रोटी' । किन्तु 'मैं लड़के को वेद पढ़ाता हूँ' इस वाक्य में दो कर्म हैं- 'लड़के को' और 'वेद' ।

(4)संयुक्त क्रिया (Compound Verb)- जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

जैसे- घनश्याम रो चुका, किशोर रोने लगा, वह घर पहुँच गया।

इन वाक्यों में 'रो चुका', 'रोने लगा' और 'पहुँच गया' संयुक्त क्रियाएँ हैं।

विधि और आज्ञा को छोड़कर सभी क्रियापद दो या अधिक क्रियाओं के योग से बनते हैं, किन्तु संयुक्त क्रियाएँ इनसे भिन्न है, क्योंकि जहाँ एक ओर साधारण क्रियापद 'हो', 'रो', 'सो', 'खा' इत्यादि धातुओं से बनते है, वहाँ दूसरी ओर संयुक्त क्रियाएँ 'होना', 'आना', 'जाना', 'रहना', 'रखना', 'उठाना', 'लेना', 'पाना', 'पड़ना', 'डालना', 'सकना', 'चुकना', 'लगना', 'करना', 'भेजना', 'चाहना' इत्यादि क्रियाओं के योग से बनती हैं।

इसके अतिरिक्त, सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। जैसे-

अकर्मक क्रिया से- लेट जाना, गिर पड़ना।

सकर्मक क्रिया से- बेच लेना, काम करना, बुला लेना, मार देना।

संयुक्त क्रिया की एक विशेषता यह है कि उसकी पहली क्रिया प्रायः प्रधान होती है और दूसरी उसके अर्थ में विशेषता उत्पत्र करती है। जैसे- मैं पढ़ सकता हूँ। इसमें 'सकना' क्रिया 'पढ़ना' क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पत्र करती है। हिन्दी में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिक होता है।

संयुक्त क्रिया के भेद

अर्थ के अनुसार संयुक्त क्रिया के ११ मुख्य भेद है-

(i) आरम्भबोधक- जिस संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरम्भ होने का बोध होता है, उसे 'आरम्भबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

जैसे- वह पढ़ने लगा, पानी बरसने लगा, राम खेलने लगा।

AJAY KUMAR

(ii) समाप्तिबोधक- जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता, व्यापार की समाप्ति का बोध हो, वह 'समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया' है।

जैसे- वह खा चुका है; वह पढ़ चुका है। धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

(iii) अवकाशबोधक- जिससे क्रिया को निष्पत्र करने के लिए अवकाश का बोध हो, वह 'अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया' है।

जैसे- वह मुश्किल से सोने पाया; जाने न पाया।

(iv) अनुमतिबोधक- जिससे कार्य करने की अनुमति दिए जाने का बोध हो, वह 'अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया' है।

जैसे- मुझे जाने दो; मुझे बोलने दो। यह क्रिया 'देना' धातु के योग से बनती है।

(v) नित्यताबोधक- जिससे कार्य की नित्यता, उसके बन्द न होने का भाव प्रकट हो, वह 'नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया' है।

जैसे- हवा चल रही है; पेड़ बढ़ता गया; तोता पढ़ता रहा। मुख्य क्रिया के आगे 'जाना' या 'रहना' जोड़ने से नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है।

(vi) आवश्यकताबोधक- जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्तव्य का बोध हो, वह 'आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया' है।

जैसे- यह काम मुझे करना पड़ता है; तुम्हें यह काम करना चाहिए। साधारण क्रिया के साथ 'पड़ना' 'होना' या 'चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

(vii) निश्चयबोधक- जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के व्यापार की निश्चयता का बोध हो, उसे 'निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

जैसे- वह बीच ही में बोल उठा; उसने कहा- मैं मार बैठूँगा, वह गिर पड़ा; अब दे ही डालो। इस प्रकार की क्रियाओं में पूर्णता और नित्यता का भाव वर्तमान है।

(viii) इच्छाबोधक- इससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है।

जैसे- वह घर आना चाहता है; मैं खाना चाहता हूँ। क्रिया के साधारण रूप में 'चाहना' क्रिया जोड़ने से इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

(ix) अभ्यासबोधक- इससे क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

जैसे- यह पढ़ा करता है; तुम लिखा करते हो; मैं खेला करता हूँ।

(x) शक्तिबोधक- इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है।

जैसे- मैं चल सकता हूँ, वह बोल सकता है। इसमें 'सकना' क्रिया जोड़ी जाती है।

AJAY KUMAR

(xi) पुनरुक्त संयुक्त क्रिया- जब दो समानार्थक अथवा समान ध्वनिवाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें 'पुनरुक्त संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

जैसे- वह पढ़ा-लिखा करता है; वह यहाँ प्रायः आया-जाया करता है; पड़ोसियों से बराबर मिलते-जुलते रहो।

(5) सहायक क्रिया (Helping Verb)- सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायक करती है। जैसे-

(i) मैं घर जाता हूँ। (यहाँ 'जाना' मुख्य क्रिया है और 'हूँ' सहायक क्रिया है)

(ii) वे हँस रहे थे। (यहाँ 'हँसना' मुख्य क्रिया है और 'रहे थे' सहायक क्रिया है)

(6) नामबोधक क्रिया (Nominal Verb)- संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है, उसे 'नामबोधक क्रिया' कहते हैं।

जैसे-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| संज्ञा | + | क्रिया | = | नामबोधक क्रिया |
| लाठी | + | मारना | = | लाठी मारना |
| रक्त | + | खौलना | = | रक्त खौलना |
| विशेषण | + | क्रिया | = | नामबोधक क्रिया |
| दुःखी | + | होना | = | दुःखी होना |
| पीला | + | पड़ना | = | पीला पड़ना |

द्रष्टव्य- नामबोधक क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ नहीं हैं। संयुक्त क्रियाएँ दो क्रियाओं के योग से बनती है और नामबोधक क्रियाएँ संज्ञा अथवा विशेषण के मेल से बनती है। दोनों में यही अन्तर है।

(7) पूर्वकालिक क्रिया (Absolutive Verb)- जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक' कहलाती है।

AJAY KUMAR

जैसे- उसने नहाकर भोजन किया। इसमें 'नहाकर' पूर्वकालिक क्रिया है; क्योंकि इससे 'नहाने' की क्रिया की समाप्ति के साथ ही भोजन करने की क्रिया का बोध होता है।

रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद है-

(1) सकमर्क क्रिया (Transitive Verb) (2 ) अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)

(1)सकमर्क क्रिया :- वाक्य में जिस क्रिया के साथ कर्म भी हो, तो उसे सकमर्क क्रिया कहते है।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है- 'सकर्मक क्रिया' उसे कहते है, जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की सम्भावना हो, अर्थात जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता से हो, पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु, अर्थात कर्म पर पड़े।

दूसरे शब्दों में-जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े उसे सकमर्क क्रिया कहते है।

जैसे- बकरी घास खाती है, पिताजी अख़बार पढ़ते है।

उपयुक्त वाक्यों में 'खाती है' 'पढ़ते है' सकमर्क क्रियाये है। इनका फल 'घास' और 'अख़बार' पर पड़ रहा है जो कि कर्म है।

कभी-कभी सकर्मक क्रिया का कर्म छिपा रहता है। जैसे- वह गाता है; वह पढ़ता है। यहाँ 'गीत' और 'पुस्तक' जैसे कर्म छिपे हैं।

पहचान- क्रिया के साथ 'क्या' अथवा 'किसको' लगाने पर जो उत्तर आये वही 'कर्म' होता है

सकमर्क क्रिया दो प्रकार की होती है

(i) एककर्मक क्रिया (ii) द्विकर्मक क्रिया

(i) एककमर्क क्रिया :-जिस क्रिया का केवल एक ही कर्म होता है।

जैसे- विजय सेव खाया। (कर्म- सेव)

तुम स्कूल जाते हो। (कर्म- स्कूल )

(ii) द्विकर्मक क्रिया :- जिस सकमर्क क्रिया के दो कर्म होते है, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते है।

जैसे- अध्यापक 'बच्चों' को व्याकरण पढ़ा रहे है।

गाय 'बछड़े' को 'दूध' पिलाती है।

(2)अकर्मक क्रिया :- वाक्य में जब क्रिया के साथ कर्म नही होता तो उस क्रिया को अकर्मक क्रिया कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो, वे 'अकर्मक' कहलाती हैं।

अकर्मक क्रियाओं का 'कर्म' नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पकड़कर कर्ता पर पड़ता है।

उदाहरण के लिए -

श्याम सोता है। इसमें 'सोना' क्रिया अकर्मक है। 'श्याम' कर्ता है, 'सोने' की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः, सोने का फल भी उसी पर पड़ता है। इसलिए 'सोना' क्रिया अकर्मक है।

## सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान 'क्या', 'किसे' या 'किसको' आदि पश्न करने से होती है। यदि कुछ उत्तर मिले, तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है और यदि न मिले तो अकर्मक होगी।

जैसे-

(i) 'राम फल खाता हैै।'

प्रश्न करने पर कि राम क्या खाता है, उत्तर मिलेगा फल। अतः 'खाना' क्रिया सकर्मक है।

(ii) 'सीमा रोती है।'

इसमें प्रश्न पूछा जाये कि 'क्या रोती है ?' तो कुछ भी उत्तर नहीं मिला। अतः इस वाक्य में रोना क्रिया अकर्मक है।

उदाहरणार्थ- मारना, पढ़ना, खाना- इन क्रियाओं में 'क्या' 'किसे' लगाकर पश्न किए जाएँ तो इनके उत्तर इस प्रकार होंगे-

पश्न- किसे मारा ?

उत्तर- किशोर को मारा।

AJAY KUMAR

पश्न- क्या खाया ?

उत्तर- खाना खाया।

पश्न- क्या पढ़ता है।

उत्तर- किताब पढ़ता है।

इन सब उदाहरणों में क्रियाएँ सकर्मक है।

कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती है और प्रसंग अथवा अर्थ के अनुसार इनके भेद का निर्णय किया जाता है। जैसे-

| अकर्मक | सकर्मक |
|---|---|
| उसका सिर खुजलाता है। | वह अपना सिर खुजलाता है। |
| बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। | मैं घड़ा भरता हूँ। |
| तुम्हारा जी ललचाता है। | ये चीजें तुम्हारा जी ललचाती हैं। |
| जी घबराता है। | विपदा मुझे घबराती है। |
| वह लजा रही है। | वह तुम्हें लजा रही है। |

.....

AJAY KUMAR

# काल (Tense)

क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या होने के समय का ज्ञान होता है उसे 'काल' कहते है।

दूसरे शब्दों में- क्रिया के उस रूपान्तर को काल कहते है, जिससे उसके कार्य-व्यापर का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो।

जैसे-

(1) बच्चे खेल रहे हैं। मैडम पढ़ा रही हैं।

(2)बच्चे खेल रहे थे। मैडम पढ़ा रही थी।

(3)बच्चे खेलेंगे। मैडम पढ़ायेंगी।

पहले वाक्य में क्रिया वर्तमान समय में हो रही है। दूसरे वाक्य में क्रिया पहले ही समाप्त हो चुकी थी तथा तीसरे वाक्य की क्रिया आने वाले समय में होगी। इन वाक्यों की क्रियाओं से कार्य के होने का समय प्रकट हो रहा है।

काल के भेद-

काल के तीन भेद होते है-

(1) वर्तमान काल (present Tense) - जो समय चल रहा है।

(2) भूतकाल (Past Tense) - जो समय बीत चुका है।

(3) भविष्यत काल (Future Tense)- जो समय आने वाला है।

(1) वर्तमान काल:- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में चल रहे समय का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते है।

जैसे- वह खाता है।

सीता बातें कर रही है।

प्रियंका स्कूल जाती हैं।

AJAY KUMAR

वर्तमान कल की पहचान के लिए वाक्य के अन्त में 'ता, ती, ते, है, हैं' आदि आते है।

## वर्तमान काल के भेद

वर्तमान काल के पाँच भेद होते है-

(i) सामान्य वर्तमान
(ii) तत्कालिक वर्तमान
(iii) पूर्ण वर्तमान
(iv) संदिग्ध वर्तमान
(v) सम्भाव्य वर्तमान

(i)सामान्य वर्तमान :- क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमानकाल में होना पाया जाय, 'सामान्य वर्तमान' कहलाता है।

जैसे- वह आता है; वह देखता है।

(ii)तत्कालिक वर्तमान:- इससे यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है।

जैसे- मै पढ़ रहा हूँ; वह जा रहा है।

(iii)पूर्ण वर्तमान :- इससे वर्तमानकाल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है।

जैसे- वह आया है; सीता ने पुस्तक पढ़ी है।

(iv)संदिग्ध वर्तमान :- जिससे क्रिया के होने में सन्देह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानकाल में सन्देह न हो।

जैसे- राम खाता होगा; वह पढ़ता होगा।

(v)सम्भाव्य वर्तमान :- इससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की सम्भवना रहती है।

जैसे- वह आया हो; वह लौटा हो।

(2)भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते है।

सरल शब्दों में- जिससे क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।

जैसे- वह खा चुका था; राम ने अपना पाठ याद किया; मैंने पुस्तक पढ़ ली थी।

AJAY KUMAR

भूतकाल को पहचानने के लिए वाक्य के अन्त में 'था, थे, थी' आदि आते हैं।

## भूतकाल के भेद

भूतकाल के छह भेद होते है-

(i) सामान्य भूत
(ii) आसन भूत
(iii) पूर्ण भूत
(iv) अपूर्ण भूत
(v) संदिग्ध भूत
(vi) हेतुहेतुमद् भूत

(i)सामान्य भूत :- जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो।

जैसे- मोहन आया; सीता गयी।

(ii)आसन भूत :- इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है।

जैसे- मैने आम खाया है; मैं चला हूँ।

(iii)पूर्ण भूत :- क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते है, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है।

जैसे- उसने श्याम को मारा था; वह आया था।

(iv)अपूर्ण भूत :- इससे यह ज्ञात होता है कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, किन्तु उसकी समाप्ति का पता नही चलता।

जैसे- सुरेश गीत गा रहा था; रीता सो रही थी।

(v)संदिग्ध भूत :- इसमें यह सन्देह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ या नही।

जैसे- तुमने गाया होगा; तू गाया होगा।

(vi)हेतुहेतुमद् भूत :- इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, पर किसी कारण न हो सका।

AJAY KUMAR

जैसे- मै आता; तू जाता; वह खाता।

(3)भविष्यत काल:- भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यतकाल की क्रिया कहते है।

दूसरे शब्दो में- क्रिया के जिस रूप से काम का आने वाले समय में करना या होना प्रकट हो, उसे भविष्यतकाल कहते है।

जैसे- वह कल घर जाएगा।

हम सर्कस देखने जायेंगे।

किसान खेत में बीज बोयेगा।

भविष्यत काल की पहचान के लिए वाक्य के अन्त में 'गा, गी, गे' आदि आते है।

भविष्यत काल के भेद

भविष्यतकाल के तीन भेद होते है-

(i) सामन्य भविष्य
(ii) सम्भाव्य भविष्य
(iii) हेतुहेतुमद्भविष्य।

(i)सामन्य भविष्य :- इससे यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी।

जैसे- मै पढ़ूँगा; वह घर जायेगा।

(ii)सम्भाव्य भविष्य :- जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की सम्भावना हो।

जैसे- यह सम्भव है; रमेश कल आया।

(iii)हेतुहेतुमद्भविष्य :- इसमे एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है।

जैसे- वह आये तो मै जाऊ; वह कमाये तो मैं खाऊँ।

.....



AJAY KUMAR

# विशेषण(Adjective)

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते है उन्हें विशेषण कहते है।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है- जो किसी संज्ञा की विशेषता (गुण, धर्म आदि )बताये उसे विशेषण कहते है।

दूसरे शब्दों में- विशेषण एक ऐसा विकारी शब्द है, जो हर हालत में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है।

जैसे- यह भूरी गाय है, आम खट्टे  है।

उपयुक्त वाक्यों में 'भूरी' और 'खट्टे' शब्द गाय और आम (संज्ञा )की विशेषता बता रहे है। इसलिए ये शब्द विशेषण है।

इसका अर्थ यह है कि विशेषणरहित संज्ञा से जिस वस्तु का बोध होता है, विशेषण लगने पर उसका अर्थ सिमित हो जाता है। जैसे- 'घोड़ा', संज्ञा से घोड़ा-जाति के सभी प्राणियों का बोध होता है, पर 'काला घोड़ा' कहने से केवल काले घोड़े का बोध होता है, सभी तरह के घोड़ों का नहीं।
यहाँ 'काला' विशेषण से 'घोड़ा' संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित (सिमित) हो गयी है। कुछ वैयाकरणों ने विशेषण को संज्ञा का एक उपभेद माना है; क्योंकि विशेषण भी वस्तु का परोक्ष नाम है। लेकिन, ऐसा मानना ठीक नहीं; क्योंकि विशेषण का उपयोग संज्ञा के बिना नहीं हो सकता।

विशेष्य- जिस शब्द की विशेषता प्रकट की जाये, उसे विशेष्य कहते है।

जैसे- उपयुक्त विशेषण के उदाहरणों में 'गाय' और 'आम' विशेष्य है क्योंकि इन्हीं की विशेषता बतायी गयी है।

प्रविशेषण- कभी-कभी विशेषणों के भी विशेषण बोले और लिखे जाते है। जो शब्द विशेषण की विशेषता बताते है, वे प्रविशेषण कहलाते है।

जैसे- यह लड़की बहुत अच्छी है। मै पूर्ण स्वस्थ हुँ।

उपर्युक्त वाक्य में 'बहुत' 'पूर्ण' शब्द 'अच्छी' तथा 'स्वस्थ' (विशेषण )की विशेषता बता रहे ह, इसलिए ये शब्द प्रविशेषण है।

## विशेषण के प्रकार

विशेषण निम्नलिखित पाँच प्रकार होते है -

AJAY KUMAR

(1) गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)

(2) संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)

(3) परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)

(4) संकेतवाचक विशेषण (Demonstractive Adjective)

(5) व्यक्तिवाचक विशेषण (Proper Adjective)

(1)गुणवाचक विशेषण :- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष प्रकट करे, उसे गुणवाचक विशेषण कहते है।

जैसे- गुण- वह एक अच्छा आदमी है। रंग- काला टोपी, लाल रुमाल। आकार- उसका चेहरा गोल है। अवस्था- भूखे पेट भजन नहीं होता।

विशेषणों में इनकी संख्या सबसे अधिक है। इनके कुछ मुख्य रूप इस प्रकार हैं।

काल- नया, पुराना, ताजा, भूत, वर्तमान, भविष्य, प्राचीन, अगला, पिछला, मौसमी, आगामी, टिकाऊ।

स्थान- उजाड़, चौरस, भीतरी, बाहरी, उपरी, सतही, पूरबी, पछियाँ, दायाँ, बायाँ, स्थानीय, देशीय, क्षेत्रीय, असमी, पंजाबी, अमेरिकी, भारतीय।

आकार- गोल, चौकोर, सुडौल, समान, पीला, सुन्दर, नुकीला, लम्बा, चौड़ा, सीधा, तिरछा।

रंग- लाल, पीला, नीला, हरा, सफेद, काला, बैंगनी, सुनहरा, चमकीला, धुँधला, फीका।

दशा- दुबला, पतला, मोटा, भारी, पिघला, गाढ़ा, गीला, सूखा, घना, गरीब, उद्यमी, पालतू, रोगी।

गुण- भला, बुरा, उचित, अनुचित, सच्चा, झूठा, पापी, दानी, न्यायी, दुष्ट, सीधा, शान्त।

द्रष्टव्य- गुणवाचक विशेषणों में 'सा' सादृश्यवाचक पद जोड़कर गुणों को कम भी किया जाता है। जैसे- बड़ा-सा, ऊँची-सी, पीला-सा, छोटी-सी।

(2)संख्यावाचक विशेषण:- जिन शब्दों से किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते है।

जैसे 'दो' केले, 'चार' घोड़े, 'तीस' दिन, 'कुछ' लोग, 'सब' लड़के इत्यादि।

यहाँ चार, तीस, कुछ, दो और सब- संख्यावाचक विशेषण हैं।

<u>संख्यावाचक विशेषण के प्रकार</u>

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते है-

(i)निश्चित संख्यावाचक विशेषण (ii)अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण शब्द किसी निश्चित संख्या को प्रकट करें, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण होते है।

जैसे-'पाँच'आदमी 'चार' घोड़े, 'एक' लड़का, पचीस रुपये आदि।

(ii)अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण शब्द किसी अनिश्चित संख्या को प्रकट करे, वे अनिश्चित संख्यावाचक कहलाते है।

जैसे-'कुछ' फूल, 'बहुत-से' पेड़, 'सब' लोग।

प्रयोग के अनुसार निश्चित संख्यावाचक विशेषण के निम्नलिखित प्रकार हैं-

(क) गणनावाचक विशेषण- एक, दो, तीन।

(ख) क्रमवाचक विशेषण- पहला, दूसरा, तीसरा।

(ग) आवृत्तिवाचक विशेषण- दूना, तिगुना, चौगुना।

(घ) समुदायवाचक विशेषण- दोनों, तीनों, चारों।

(ड़) प्रत्येकबोधक विशेषण- प्रत्येक, हर-एक, दो-दो, सवा-सवा।

गणनावाचक संख्यावाचक विशेषण के भी दो भेद है-

(i) पूर्णांकबोधक विशेषण (ii) अपूर्णांकबोधक विशेषण

**(i) पूर्णांकबोधक विशेषण**- जैसे- एक, दो, चार, सौ, हजार।

**(ii) अपूर्णांकबोधक विशेषण**- जैसे- पाव, आध, पौन, सवा।

पूर्णांकबोधक विशेषण शब्दों में लिखे जाते है या अंकों में।

बड़ी-बड़ी निश्चित संख्याएँ अंकों में और छोटी-छोटी तथा बड़ी-बड़ी अनिश्चित संख्याएँ शब्दों में लिखनी चाहिए।

(3)परिमाणवाचक विशेषण :- जिन शब्दों से किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की परिमाण (नाप, तोल )का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते है। यह किसी वस्तु की नाप या तौल का बोध कराता है।

AJAY KUMAR

जैसे- 'सेर' भर दूध, 'तोला' भर सोना, 'थोड़ा' पानी, 'कुछ' पानी, 'सब' धन, 'और' घी लाओ, 'दो' लीटर दूध, 'बहुत' चीनी इत्यादि।

परिमाणवाचक विशेषण के प्रकार

(i) निश्चित परिमाणवाचक (ii)अनिश्चित परिमाणवाचक

(i) निश्चित परिमाणवाचक-: जो विशेषण शब्द निश्चित नाप-तोल का बोध कराये, वे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण होते है।

जैसे- 'दो सेर' घी, 'दस हाथ' जगह, 'चार गज' मलमल, 'चार किलो' चावल।

(ii)अनिश्चित परिमाणवाचक - जिन विशेषण शब्दों से किसी निश्चित नाप-तोल का बोध न हो, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है।

जैसे- 'सब' धन, 'कुछ' दूध, 'बहुत' पानी।

(4)संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण :- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की ओर संकेत करते है या जो शब्द सर्वनाम होते हुए भी किसी संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता को प्रकट करें, उन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते है।

दूसरे शब्दों में- ( मैं, तू, वह ) के सिवा अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे 'संकेतवाचक' या 'सार्वनामिक विशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- वह नौकर नहीं आया; यह घोड़ा अच्छा है।

यहाँ 'नौकर' और 'घोड़ा' संज्ञाओं के पहले विशेषण के रूप में 'वह' और 'यह' सर्वनाम आये हैं। अतः, ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के भी दो भेद है- (i) मौलिक सार्वनामिक विशेषण (ii) यौगिक सार्वनामिक विशेषण

(i) मौलिक सार्वनामिक विशेषण- जो बिना रूपान्तर के संज्ञा के पहले आता हैं। जैसे- 'यह' घर; वह लड़का; 'कोई' नौकर इत्यादि।

(ii) यौगिक सार्वनामिक विशेषण- जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं। जैसे- 'ऐसा' आदमी; 'कैसा' घर; 'जैसा' देश इत्यादि।

(5)व्यक्तिवाचक विशेषण:- जिन विशेषण शब्दों की रचना व्यक्तिवाचक संज्ञा से होती है, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते है।

जैसे- इलाहाबाद से इलाहाबादी, जयपुर से जयपुरी, बनारस से बनारसी। उदाहरण- 'इलाहाबादी' अमरूद मीठे होते है।

विशेष्य और विशेषण में सम्बन्ध

AJAY KUMAR

विशेषण संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताता है और जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतायी जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

वाक्य में विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है- कभी विशेषण विशेष्य के पहले आता है और कभी विशेष्य के बाद।

प्रयोग की दृष्टि से विशेषण के दो भेद है-

(1) विशेष्य-विशेषण (2) विधेय-विशेषण

(1) विशेष्य-विशेष- जो विशेषण विशेष्य के पहले आये, वह विशेष्य-विशेष होता है-

जैसे- रमेश 'चंचल' बालक है। सुनीता 'सुशील' लड़की है।

इन वाक्यों में 'चंचल' और 'सुशील' क्रमशः बालक और लड़की के विशेषण हैं, जो संज्ञाओं (विशेष्य) के पहले आये हैं।

(2) विधेय-विशेषण- जो विशेषण विशेष्य और क्रिया के बीच आये, वहाँ विधेय-विशेषण होता है;

जैसे- मेरा कुत्ता 'काला' हैं। मेरा लड़का 'आलसी' है। इन वाक्यों में 'काला' और 'आलसी' ऐसे विशेषण हैं,

जो क्रमशः 'कुत्ता'(संज्ञा) और 'है'(क्रिया) तथा 'लड़का'(संज्ञा) और 'है'(क्रिया) के बीच आये हैं।

यहाँ दो बातों का ध्यान रखना चाहिए- (क) विशेषण के लिंग, वचन आदि विशेष्य के लिंग, वचन आदि के अनुसार होते हैं। जैसे- अच्छे लड़के पढ़ते हैं। आशा भली लड़की है। राजू गंदा लड़का है।

(ख) यदि एक ही विशेषण के अनेक विशेष्य हों तो विशेषण के लिंग और वचन समीपवाले विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार होंगे; जैसे- नये पुरुष और नारियाँ, नयी धोती और कुरता।

विशेष्य-विशेषण

| विशेष्य/संज्ञा | विशेषण | विशेष्य/संज्ञा | विशेषण |
|---|---|---|---|
| कथन | कथित | राधा | राधेय |
| तुंद | तुंदिल | गंगा | गांगेय |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| धन | धनवान | दीक्षा | दीक्षित |
| नियम | नियमित | निषेध | निषिद्ध |
| प्रसंग | प्रासंगिक | पर्वत | पर्वतीय |
| प्रदेश | प्रादेशिक | प्रकृति | प्राकृतिक |
| बुद्ध | बौद्ध | भूमि | भौमिक |
| मृत्यु | मर्त्य | मुख | मौखिक |
| रसायन | रासायनिक | राजनीति | राजनीतिक |
| लघु | लाघव | लोभ | लुब्ध/लोभी |
| वन | वन्य | श्रद्धा | श्रद्धेय/श्रद्धालु |
| संसार | सांसारिक | सभा | सभ्य |
| उपयोग | उपयोगी/उपयुक्त | अग्नि | आग्नेय |
| आदर | आदरणीय | अणु | आणविक |
| अर्थ | आर्थिक | आशा | आशित/आशान्वित/आशावानी |
| ईश्वर | ईश्वरीय | इच्छा | ऐच्छिक |
| इच्छा | ऐच्छिक | उदय | उदित |
| उन्नति | उन्नत | कर्म | कर्मठ/कर्मी/कर्मण्य |
| क्रोध | क्रोधालु, क्रोधी | गृहस्थ | गार्हस्थ्य |
| गुण | गुणवान/गुणी | घर | घरेलू |
| चिंता | चिंत्य/चिंतनीय/चिंतित | जल | जलीय |
| जागरण | जागरित/जाग्रत | तिरस्कार | तिरस्कृत |
| दया | दयालु | दर्शन | दार्शनिक |
| धर्म | धार्मिक | कुंती | कौंतेय |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| समर | सामरिक | पुरस्कार | पुरस्कृत |
| नगर | नागरिक | चयन | चयनित |
| निंदा | निंद्य/निंदनीय | निश्चय | निश्चित |
| परलोक | पारलौकिक | पुरुष | पौरुषेय |
| पृथ्वी | पार्थिव | प्रमाण | प्रामाणिक |
| बुद्धि | बौद्धिक | भूगोल | भौगोलिक |
| मास | मासिक | माता | मातृक |
| राष्ट्र | राष्ट्रीय | लोहा | लौह |
| लाभ | लब्ध/लभ्य | वायु | वायव्य/वायवीय |
| विवाह | वैवाहिक | शरीर | शारीरिक |
| सूर्य | सौर/सौर्य | हृदय | हार्दिक |
| क्षेत्र | क्षेत्रीय | आदि | आदिम |
| आकर्षण | आकृष्ट | आयु | आयुष्मान |
| अंत | अंतिम | इतिहास | ऐतिहासिक |
| उत्कर्ष | उत्कृष्ट | उपकार | उपकृत/उपकारक |
| उपेक्षा | उपेक्षित/उपेक्षणीय | काँटा | कँटीला |
| ग्राम | ग्राम्य/ग्रामीण | ग्रहण | गृहीत/ग्राह्य |
| गर्व | गर्वीला | घाव | घायल |
| जटा | जटिल | जहर | जहरीला |
| तत्त्व | तात्त्विक | देव | दैविक/दैवी |
| दिन | दैनिक | दर्द | दर्दनाक |
| विनता | वैनतेय | रक्त | रक्तिम |

AJAY KUMAR

## विशेषण की अवस्थायें या तुलना (Degree of Comparison)

विशेषण(Adjective) की तीन अवस्थायें होती है -

(i) मूलावस्था (Positive Degree)

(ii) उत्तरावस्था (Comparative Degree)

(iii) उत्तमावस्था (Superlative Degree)

(i)मूलावस्था :- इस अवस्था में किसी विशेषण के गुण या दोष की तुलना दूसरी वस्तु से नही की जाती।

दूसरे शब्दों में- इसमे विशेषण अन्य किसी विशेषण से तुलित न होकर सीधे व्यक्त होता है।

जैसे- तुम 'सुन्दर' हो। वह अच्छी 'विद्यार्थी' है।

(ii)उत्तरावस्था :- यह विशेषण का वह रूप होता है, जो दो विशेष्यो की विशेषताओं से तुलना करता है।

इसमें विशेषण दो वस्तुओं की तुलना में होता है और उनमें किसी एक वस्तु के गुण या दोष अधिक बताये जाते हैं।

जैसे -तुम मेरे से 'अधिक सुन्दर' हो।

वह तुम से 'सबसे अच्छी' लड़की है।

राम मोहन से अधिक समझदार हैं।

(iii)उत्तमावस्था :- यह विशेषण का वह रूप है जो एक विशेष्य को अन्य सभी की तुलना में बढ़कर बताता है।

इसमें विशेषण द्वारा किसी वस्तु को सबसे अधिक गुणशाली या दोषी बताया जाता है।

जैसे- तुम 'सबसे सुन्दर' हो।

वह 'सबसे अच्छी' लड़की है।

हमारे कॉलेज में नरेन्द्र 'सबसे अच्छा' खिलाड़ी है।

अन्य उदाहरण

| मूलावस्था | उत्तरावस्था | उत्तमावस्था |
|---|---|---|

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| लघु | लघुतर | लघुतम |
| अधिक | अधिकतर | अधिकतम |
| कोमल | कोमलतर | कोमलतम |
| सुन्दर | सुन्दरतर | सुन्दरतम |
| उच्च | उच्चतर | उच्चतम |
| प्रिय | प्रियतर | प्रियतम |
| निम्न | निम्नतर | निम्नतम |
| निकृष्ट | निकृष्टतर | निकृष्टतम |
| महत् | महत्तर | महत्तम |

## विशेषण की रूप रचना

विशेषणों की रूप-रचना निम्नलिखित अवस्थाओं में मुख्यतः संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया में प्रत्यय लगाकर होती है-

विशेषण की रचना पाँच प्रकार के शब्दों से होती है-

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा से- गाजीपुर से गाजीपुरी, मुरादाबाद से मुरादाबादी, गाँधीवाद से गाँधीवादी।

(2) जातिवाचक संज्ञा से- घर से घरेलू, पहाड़ से पहाड़ी, कागज से कागजी, ग्राम से ग्रामीण, शिक्षक से शिक्षकीय, परिवार से पारिवारिक।

(3) सर्वनाम से- यह से ऐसा (सार्वनामिक विशेषण), यह से इतने (संख्यावाचक विशेषण), यह से इतना (परिमाणवाचक विशेषण), जो से जैसे (प्रकारवाचक विशेषण), जितने (संख्यावाचक विशेषण), जितना (परिमाणवाचक विशेषण), वह से वैसा (सार्वनामिक विशेषण), उतने (संख्यावाचक विशेषण), उतना (परिमाणवाचक विशेषण)।

(4) भाववाचक संज्ञा से- भावना से भावुक, बनावट से बनावटी, एकता से एक, अनुराग से अनुरागी, गरमी से गरम, कृपा से कृपालु इत्यादि।

(5) क्रिया से- चलना से चालू, हँसना से हँसोड़, लड़ना से लड़ाकू, उड़ना से उड़छू, खेलना से खिलाड़ी, भागना से भगोड़ा, समझना से समझदार, पठ से पठित, कमाना से कमाऊ इत्यादि।

AJAY KUMAR

कुछ शब्द स्वंय विशेषण होते है और कुछ प्रत्यय लगाकर बनते है। जैसे -

(1)'ई' प्रत्यय से = जापान-जापानी, गुण-गुणी, स्वदेशी, धनी, पापी।

(2) 'ईय' प्रत्यय से = जाति-जातीय, भारत-भारतीय, स्वर्गीय, राष्ट्रीय ।

(3)'इक' प्रत्यय से = सप्ताह-साप्ताहिक, वर्ष-वार्षिक, नागरिक, सामाजिक।

(4)'इन' प्रत्यय से = कुल-कुलीन, नमक-नमकीन, प्राचीन।

(5)'मान' प्रत्यय से = गति-गतिमान, श्री-श्रीमान।

(6)'आलु'प्रत्यय से = कृपा -कृपालु, दया-दयालु ।

(7)'वान' प्रत्यय से = बल-बलवान, धन-धनवान।

(8)'इत' प्रत्यय से = नियम-नियमित, अपमान-अपमानित, आश्रित, चिन्तित ।

(9)'ईला' प्रत्यय से = चमक-चमकीला, हठ-हठीला, फुर्ती-फुर्तीला।

## विशेषण का पद-परिचय

विशेषण के पद-परिचय में संज्ञा और सर्वनाम की तरह लिंग, वचन, कारक और विशेष्य बताना चाहिए।

उदाहरण- यह तुम्हें बापू के अमूल्य गुणों की थोड़ी-बहुत जानकारी अवश्य करायेगा।

इस वाक्य में अमूल्य और थोड़ी-बहुत विशेषण हैं। इसका पद-परिचय इस प्रकार होगा-

अमूल्य- विशेषण, गुणवाचक, पुंलिंग, बहुवचन, अन्यपुरुष, सम्बन्धवाचक, 'गुणों' इसका विशेष्य।

थोड़ी-बहुत- विशेषण, अनिश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, कर्मवाचक, 'जानकारी' इसका विशेष्य।

.....

AJAY KUMAR

# अव्यय (Indeclinable)

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नही होता है उन्हें अव्यय(अ +व्यय) या अविकारी शब्द कहते है ।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है- 'अव्यय' ऐसे शब्द को कहते हैं, जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पत्र नही होता। ऐसे शब्द हर स्थिति में अपने मूलरूप में बने रहते है। चूँकि अव्यय का रूपान्तर नहीं होता, इसलिए ऐसे शब्द अविकारी होते हैं। इनका व्यय नहीं होता, अतः ये अव्यय हैं।

जैसे- जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, क्यों, वाह, आह, ठीक, अरे, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अतः, अतएव, चूँकि, अवश्य, अर्थात इत्यादि।

## अव्यय और क्रियाविशेषण

पण्डित किशोरीदास बाजपेयी के मतानुसार, अँगरेजी के आधार पर सभी अव्ययों को क्रियाविशेषण मान लेना उचित नही; क्योंकि कुछ अव्यय ऐसे हैं, जिनसे क्रिया की विशेषता लक्षित नहीं होती। जैसे- जब मैं भोजन करता हूँ, तब वह पढ़ने जाता हैं। इस वाक्य में 'जब' और 'तब' अव्यय क्रिया की विशेषता नहीं बताते। अतः, इन्हें क्रियाविशेषण नहीं माना जा सकता।

निम्नलिखित अव्यय क्रिया की विशेषता नहीं बताते-

(i) कालवाचक अव्यय- इनमें समय का बोध होता है। जैसे- आज, कल, तुरन्त, पीछे, पहले, अब, जब, तब, कभी-कभी, कब, अब से, नित्य, जब से, सदा से, अभी, तभी, आजकल और कभी। उदाहरणार्थ-

अब से ऐसी बात नहीं होगी।

ऐसी बात सदा से होती रही है।

वह कब आया, मुझे पता नहीं।

(ii) स्थानवाचक अव्यय- इससे स्थान का बोध होता है। जैसे- यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, यहाँ से, वहाँ से, इधर-उधर। उदाहरणार्थ-

वह यहाँ नहीं है।

वह कहाँ जायेगा ?

वहाँ कोई नहीं है।

AJAY KUMAR

जहाँ तुम हो, वहाँ मैं हूँ।

(iii) दिशावाचक अव्यय- इससे दिशा का बोध होता है। जैसे- इधर, उधर, जिधर, दूर, परे, अलग, दाहिने, बाएँ, आरपार।

(iv) स्थितिवाचक अव्यय- नीचे,> नीचे, ऊपर तले, सामने, बाहर, भीतर इत्यादि।

## अव्यय के भेद

अव्यय निम्नलिखित चार प्रकार के होते है -

(1) क्रियाविशेषण (Adverb)

(2) संबंधबोधक (Preposition)

(3) समुच्चयबोधक (Conjunction)

(4) विस्मयादिबोधक (Interjection)

(1) क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते है।

दूसरे शब्दो में- जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते है, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसे- राम धीरे-धीरे टहलता है; राम वहाँ टहलता है; राम अभी टहलता है।

इन वाक्यों में 'धीरे-धीरे', 'वहाँ' और 'अभी' राम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता हैं।

वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

## क्रिया विशेषण के प्रकार

(1) प्रयोग के अनुसार- (i) साधारण (ii) संयोजक (iii) अनुबद्ध

(2) रूप के अनुसार- (i) मूल क्रियाविशेषण (ii) यौगिक क्रियाविशेषण (iii) स्थानीय क्रियाविशेषण

(3) अर्थ के अनुसार- (i) परिमाणवाचक (ii) रीतिवाचक

## (1) 'प्रयोग' के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद

AJAY KUMAR

(i) साधारण क्रियाविशेषण- जिन क्रिया  विशेषणों का प्रयोग किसी वाक्य में स्वतन्त्र होता हैं, उन्हें 'साधारण क्रियाविशेषण' कहा जाता हैं।

जैसे- हाय! अब मैं क्या करूँ? बेटा, जल्दी आओ। अरे ! साँप कहाँ गया ?

(ii) संयोजक क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्य से रहता है, उन्हें ' संयोजक क्रियाविशेषण' कहा जाता हैं।

जैसे- जब रोहिताश्व ही नहीं, तो मैं ही जीकर क्या करूँगी ! जहाँ अभी समुद्र हैं, वहाँ किसी समय जंगल था।

(iii) अनुबद्ध क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों के प्रयोग अवधारण (निश्चय) के लिए किसी भी शब्दभेद के साथ होता हो, उन्हें 'अनुबद्ध क्रियाविशेषण' कहा जाता है।

जैसे- यह तो किसी ने धोखा ही दिया है। मैंने उसे देखा तक नहीं।

(2) रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद

(i) मूल क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, 'मूल क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- ठीक, दूर, अचानक, फिर, नहीं।

(ii) यौगिक क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण,जो किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय या पद जोड़ने पर बनते हैं, 'यौगिक क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- मन से, जिससे, चुपके से, भूल से, देखते हुए, यहाँ तक, झट से, वहाँ पर। यौगिक क्रियाविशेषण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, धातु और अव्यय के मेल से बनते हैं।

यौगिक क्रियाविशेषण नीचे लिखे शब्दों के मेल से बनते हैं-

(i) संज्ञाओं की द्विरुक्ति से- घर-घर, घड़ी-घड़ी, बीच-बीच, हाथों-हाथ।

(ii) दो भिन्न संज्ञाओं के मेल से- दिन-रात, साँझ-सबेरे, घर-बाहर, देश-विदेश।

(iii) विशेषणों की द्विरुक्ति से- एक-एक, ठीक-ठीक, साफ-साफ।

(iv) क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से- धीरे-धीरे, जहाँ-तहाँ, कब-कब, कहाँ-कहाँ।

(v) दो क्रियाविशेषणों के मेल से- जहाँ-तहाँ, जहाँ-कहीं, जब-तब, जब-कभी, कल-परसों, आस-पास।

(vi) दो भिन्न या समान क्रियाविशेषणों के बीच 'न' लगाने से- कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ।

(vii) अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति से- पटपट, तड़तड़, सटासट, धड़ाधड़।

AJAY KUMAR

(viii) संज्ञा और विशेषण के योग से- एक साथ, एक बार, दो बार।

(ix) अव्य य और दूसरे शब्दों के मेल से- प्रतिदिन, यथाक्रम, अनजाने, आजन्म।

(x) पूर्वकालिक कृदन्त और विशेषण के मेल से- विशेषकर, बहुतकर, मुख़्यकर, एक-एककर।

(iii) स्थानीय क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो बिना रूपान्तर के किसी विशेष स्थान में आते हैं, 'स्थानीय क्रियाविशेषण' कहलाते हैं। जैसे- वह अपना सिर पढ़ेगा।

(3) 'अर्थ' के अनुसार क्रियाविशेषण के भेद

(i) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जो शब्द क्रिया परिमाण या माप प्रकट करते है उन्हें 'परिमाणवाचक क्रियाविशेषण' कहते है।

जैसे -बहुत, थोड़ा, अधिक, कम, छोटा, कितना आदि

उदाहरण- आप अधिक बोलते हो।

यहाँ अधिक शब्द क्रिया (बोलने )की माप प्रकट करता है। इसलिए अधिक शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण है।

(क) अधिकताबोधक- बहुत, अति, बड़ा, बिलकुल, सर्वथा, खूब, निपट, अत्यन्त, अतिशय।

(ख) न्यूनताबोधक- कुछ, लगभग, थोड़ा, टुक, प्रायः, जरा, किंचित्।

(ग) पर्याप्तिवाचक- केवल, बस, काफी, यथेष्ट, चाहे, बराबर, ठीक, अस्तु।

(घ) तुलनावाचक- अधिक, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, बढ़कर।

(ड़) श्रेणिवाचक- थोड़ा-थोड़ा, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, तिल-तिल, एक-एककर, यथाक्रम।

(ii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण- जो शब्द क्रिया की रीती या ढंग बताते है उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते है।

जैसे- सहसा, वैसे, ऐसे, अचानक आदि।

उदाहरण- कछुआ धीरे-धीरे चलता है।

यहाँ धीरे-धीरे शब्द क्रिया होने ढंग बता रहा है।

इस क्रियाविशेषण की संख्या गुणवाचक विशेषण की तरह बहुत अधिक है। ऐसे क्रियाविशेषण प्रायः निम्नलिखित अर्थों में आते हैं-

(क) प्रकार- ऐसे, वैसे, कैसे, मानो, धीरे, अचानक, स्वयं, स्वतः, परस्पर, यथाशक्ति, प्रत्युत, फटाफट।

(ख) निश्चय- अवश्य, सही, सचमुच, निःसन्देह, बेशक, जरूर, अलबत्ता, यथार्थ में, वस्तुतः, दरअसल।

(ग) अनिश्चय- कदाचित्, शायद, बहुतकर, यथासम्भव।

(घ) स्वीकार- हाँ, जी, ठीक, सच।

(ड़) कारण- इसलिए, क्यों, काहे को।

(च) निषेध- न, नहीं, मत।

(छ) अवधारण- तो, ही, भी, मात्र, भर, तक, सा।

कुछ समानार्थक क्रियाविशेषणों का अन्तर

(i) अब-अभी 'अब' में वर्तमान समय का अनिश्चय है और 'अभी' का अर्थ तुरन्त से है; जैसे-

अब- अब आप जा सकते हैं।

अब आप क्या करेंगे ?

अभी- अभी-अभी आया हूँ।

अभी पाँच बजे हैं।

(ii) तब-फिर- अन्तर यह है कि 'तब' बीते हुए हमय का बोधक है और 'फिर' भविष्य की ओर संकेत करता है। जैसे-

तब- तब उसने कहा।

तब की बात कुछ और थी।

फिर- फिर आप भी क्या कहेंगे।

फिर ऐसा होगा।

'तब' का अर्थ 'उस समय' है और 'फिर' का अर्थ 'दुबारा' है।

'केवल' सदा उस शब्द के पहले आता है, जिसपर जोर देना होता है; लेकिन 'मात्र' 'ही', उस शब्द के बाद आता है।

(iii) कहाँ-कहीं- 'कहाँ' किसी निश्चित स्थान का बोधक है और 'कही' किसी अनिश्चित स्थान का परिचायक। कभी-कभी 'कही' निषेध के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है; जैसे-

कहाँ- वह कहाँ गया ?

मैं कहाँ आ गया ?

AJAY KUMAR

कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली!

कहीं- वह कहीं भी जा सकता है।

अन्य अर्थों में भी 'कही' का प्रयोग होता है-

(क) बहुत अधिक- यह पुस्तक उससे कहीं अच्छी है। (ख) कदाचित्- कहीं बाघ न आ जाय। (ग) विरोध- राम की माया, कहीं धूप कहीं छाया।

(iv) न-नहीं-मत- इनका प्रयोग निषेध के अर्थ में होता है। 'न' से साधारण-निषेध और 'नहीं' से निषेध का निश्चय सूचित होता है। 'न' की अपेक्षा 'नहीं' अधिक जोरदार है। 'मत' का प्रयोग निषेधात्मक आज्ञा के लिए होता है। जैसे-

'न'- इनके विभित्र प्रयोग इस प्रकार हैं-

(क) क्या तुम न आओगे ?

(ख) तुम न करोगे, तो वह कर देगा।

(ग) 'न' तुम सोओगे, न वह।

(घ) जाओ न, रुक क्यों गये ?

नहीं- (क) तुम नहीं जा सकते।

(ख) मैं नहीं जाऊँगा।

(ग) मैं काम नहीं करता।

(घ) मैंने पत्र नहीं लिखा।

मत- (क) भीतर मत जाओ।

(ख) तुम यह काम मत करो।

(ग) तुम मत गाओ।

AJAY KUMAR

(v) ही-भी- बात पर बल देने के लिए इनका प्रयोग होता है। अन्तर यह है कि 'ही' का अर्थ एकमात्र और 'भी' का अर्थ 'अतिरिक्त' सूचित करता है। जैसे-

भी- इस काम को तुम भी कर सकते हो।

ही- यह काम तुम ही कर सकते हो।

(vi) केवल-मात्र- 'केवल' अकेला का अर्थ और 'मात्र' सम्पूर्णता का अर्थ सूचित करता है; जैसे-

केवल- आज हम केवल दूध पीकर रहेंगे। यह काम केवल वह कर सकता है।

मात्र-, मुझे पाँच रूपये मात्र मिले।

(vii) भला-अच्छा- 'भला' अधिकतर विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, पर कभी-कभी संज्ञा के रूप में भी आता है; जैसे- भला का भला फल मिलता है।

'अच्छा' स्वीकृतिमूलक अव्यय है। यह कभी अवधारण के लिए और कभी विस्मयबोधक के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे-

अच्छा, कल चला जाऊँगा।

अच्छा, आप आ गये !

(viii) प्रायः-बहुधा- दोनों का अर्थ 'अधिकतर' है, किन्तु 'प्रायः' से 'बहुधा की मात्रा अधिक होती है।

प्रायः- बच्चे प्रायः खिलाड़ी होते हैं।

बहुधा- बच्चे बहुधा हठी होते हैं।

(ix) बाद-पीछे- 'बाद' काल का और 'पीछे' समय का सूचक है। जैसे-

बाद- वह एक सप्ताह बाद आया।

पीछे- वह पढ़ने में मुझसे पीछे है।

(2)सम्बन्धबोधक अव्यय :- जो शब्द वाक्य में किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर वाक्य के दूसरे शब्द से उनका संबन्ध बताये वे शब्द 'सम्बन्धबोधक अव्यय' कहलाते ।

दूसरे शब्दों में- जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते है, उसे 'सम्बन्धबोधक अव्यय' कहते हैं।

यदि यह संज्ञा न हो, तो वही अव्यय क्रियाविशेषण कहलायेगा।

AJAY KUMAR

जैसे- दूर, पास, अन्दर, बाहर, पीछे, आगे, बिना, ऊपर, नीचे आदि।

उदाहरण- वृक्ष के 'ऊपर' पक्षी बैठे है।

धन के 'बिना' कोई काम नही होता।

मकान के 'पीछे' गली है।

उपयुक्त प्रथम वाक्य में 'ऊपर' शब्द 'वृक्ष और 'पक्षी' के सम्बन्ध को दर्शता है।

दूसरे वाक्य में 'बिना' शब्द 'धन' और 'काम' में सम्बन्ध दर्शता है।

तीसरे वाक्य में 'पीछे' शब्द 'मकान' और 'गली' में सम्बन्ध दर्शाता है।

अतः 'ऊपर' 'बिना' 'पीछे' शब्द सम्बन्धबोधक है।

विशेष- यह बात विशेष रूप से ध्यान रखनी चाहिए कि सम्बन्धबोधक शब्द को सम्बन्ध दर्शाना आवश्यक होता है। जब यह सम्बन्ध न जोड़कर साधारण रूप में प्रयोग होता है तो यह क्रिया-विशेषण का कार्य करता है। इस प्रकार एक ही शब्द क्रिया-विशेषण भी हो सकता है और सम्बन्धबोधक भी। जैसे-

| सम्बन्धबोधक | क्रिया-विशेषण |
|---|---|
| दुकान 'पर' ग्राहक खड़ा है। | दुकान 'पर' खड़ा है। |
| मेज के 'ऊपर' किताबें है। | मेज के 'ऊपर' है। |

<u>सम्बन्धबोधक के भेद</u>

प्रयोग, अर्थ और व्युत्पत्ति के अनुसार सम्बन्धबोधक अव्यय के निम्नलिखित भेद है ।

(1) प्रयोग के अनुसार- (i) सम्बद्ध (ii) अनुबद्ध

(2) अर्थ के अनुसार- (i) कालवाचक (ii) स्थानवाचक (iii) दिशावाचक (iv) साधनवाचक (v) हेतुवाचक (vi) विषयवाचक (vii) व्यतिरेकवाचक (viii) विनिमयवाचक (ix) सादृश्यवाचक (x) विरोधवाचक (xi) सहचरवाचक (xii) संग्रहवाचक (xiii) तुलनावाचक

(3) व्युत्पत्ति के अनुसार- (i) मूल सम्बन्धबोधक (ii) यौगिक सम्बन्धबोधक

AJAY KUMAR

(1) प्रयोग के अनुसार सम्बन्धबोधक के भेद

(i) सम्बद्ध सम्बन्धबोधक - ऐसे सम्बन्धबोधक शब्द संज्ञा की विभक्तियों के पीछे आते हैं। जैसे- धन के बिना, नर की नाई।

(ii) अनुबद्ध सम्बन्धबोधक- ऐसे सम्बन्धबोधकअव्यय संज्ञा के विकृत रूप के बाद आते हैं। जैसे- किनारे तक, सखियों सहित, कटोरे भर , पुत्रों समेत।

(2) अर्थ के अनुसार सम्बन्धबोधक के भेद

(i) कालवाचक- आगे, पीछे, बाद, पहले, पूर्व, अनन्तर, पश्चात्, उपरान्त, लगभग।

(ii) स्थानवाचक- आगे, पीछे, नीचे, तले, सामने, पास, निकट, भीतर, समीप, नजदीक, यहाँ, बीच, बाहर, परे, दूर।

(iii) दिशावाचक- ओर, तरफ, पार, आरपार, आसपास, प्रति।

(iv) साधनवाचक- द्वारा, जरिए, हाथ, मारफत, बल, कर, जबानी, सहारे।

(v) हेतुवाचक- लिए, निमित्त, वास्ते, हेतु, खातिर, कारण, मारे, चलते।

(vi)विषयवाचक- बाबत, निस्बत, विषय, नाम, लेखे, जान, भरोसे।

(vii) व्यतिरेकवाचक- सिवा, अलावा, बिना, बगैर, अतिरिक्त, रहित।

(viii) विनिमयवाचक- पलटे, बदले, जगह, एवज।

(ix) सादृश्यवाचक- समान, तरह, भाँति, नाई, बराबर, तुल्य, योग्य, लायक, सदृश, अनुसार, अनुरूप, अनुकूल, देखादेखी, सरीखा, सा, ऐसा, जैसा, मुताबिक।

(x) विरोधवाचक- विरुद्ध, खिलाप, उलटे, विपरीत।

(xi) सहचरवाचक- संग, साथ, समेत, सहित, पूर्वक, अधीन, स्वाधीन, वश।

(xii) संग्रहवाचक- तक, लौं, पर्यन्त, भर, मात्र।

(xiii) तुलनावाचक- अपेक्षा, बनिस्बत, आगे, सामने।

(3) व्युत्पत्ति के अनुसार सम्बन्धबोधक के भेद

(i) मूल सम्बन्धबोधक- बिना, पर्यन्त, नाई, पूर्वक इत्यादि।

(ii) यौगिक सम्बन्धबोधक- संज्ञा से- पलटे, लेखे, अपेक्षा, मारफत।

विशेषण से- तुल्य, समान, उलटा, ऐसा, योग्य।

क्रियाविशेषण से- ऊपर, भीतर, यहाँ, बाहर, पास, परे, पीछे।

क्रिया से- लिए, मारे, चलते, कर, जाने।

(3)समुच्चयबोधक अव्यय :-- जो अविकारी शब्द दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को परस्पर मिलाते है, उन्हें समुच्चयबोधक कहते है।

दूसरे शब्दों में- ऐसा पद (अव्यय) जो क्रिया या संज्ञा की विशेषता न बताकर एक वाक्य या पद का सम्बन्ध दूसरे वाक्य या पद से जोड़ता है, 'समुच्चयबोधक' कहलाता है।

सरल शब्दो में- दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते है।

जैसे- यद्यपि, चूँकि, परन्तु, और किन्तु आदि।

उदाहरण- आँधी आयी और पानी बरसा। यहाँ 'और' अव्यय समुच्चयबोधक है; क्योंकि यह पद दो वाक्यों- 'आँधी आयी', 'पानी बरसा'- को जोड़ता है।

समुच्चयबोधक अव्यय पूर्ववाक्य का सम्बन्ध उत्तरवाक्य से जोड़ता है।

इसी तरह समुच्चयबोधक अव्यय दो पदों को भी जोड़ता है। जैसे- दो और दो चार होते हैं।

राम 'और 'लक्ष्मण दोनों भाई थे।

मोहन ने बहुत परिश्रम किया परन्तु 'सफल' न सका।

उपयुक्त पहले वाक्य में 'और ' शब्दों को जोड़ रहा है तथा दूसरे वाक्य में 'परन्तु ' दो वाक्यांशों को जोड़ रहा है। अतः ये दोनों शब्द समुच्चयबोधक है।

<u>समुच्चयबोधक के भेद</u>

इस अव्यय के मुख्य भेद निम्नलिखित है-

(1) समानाधिकरण (2) व्यधिकरण

(1) समानाधिकरण- जिन पदों या अव्ययों द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते है, उन्हें 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक' कहते है। इसके चार उपभेद हैं-

(i) संयोजक- जो शब्द, शब्दों या वाक्यों को जोड़ने का काम करते है, उन्हें संयोजक कहते है।

जैसे- जोकि, कि, तथा, व, एवं, और आदि।

उदाहरण -गीता ने इडली खायी 'तथा ' रीता डोसा खाया।

(ii) विभाजक- जो शब्द, विभिन्नता प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते है, उन्हें विभाजक कहते है।

जैसे- या, वा, अथवा, किंवा, कि, चाहे, न.... न, न कि, नहीं तो, ताकि, मगर, तथापि, किन्तु, लेकिन आदि।

उदाहरण- कॉपी मिल गयी 'किन्तु' किताब नही मिली।

(iii)विकल्पसूचक- जो शब्द विकल्प का ज्ञान करायें, उन्हें 'विकल्पसूचक' शब्द कहते है।

जैसे- तो, न, अथवा, या आदि।

उदाहरण - मेरी किताब रमेश ने चुराई या राकेश ने। इस वाक्य में 'रमेश' और 'राकेश' के चुराने की क्रिया करने में विकल्प है।

(iv) विरोधदर्शक- पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, वरन, बल्कि।

(v) परिणामदर्शक- इसलिए, सो, अतः, अतएव।

(2) व्यधिकरण- जिन पदों या अव्ययों के मेल से एक मुख्य वाक्य में एक या अधिक आश्रित वाक्य जोड़े जाते है, उन्हें ' व्यधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं। इसके चार उपभेद है।-

(i) कारणवाचक- क्योंकि, जोकि, इसलिए कि।

(ii) उद्देश्यवाचक- कि, जो, ताकि, इसलिए कि।

(iii) संकेतवाचक- जो-तो, यदि-तो, यद्यपि-तथापि, चाहे-परन्तु, कि।

(iv) स्वरूपवाचक- कि, जो, अर्थात, याने, मानो।

AJAY KUMAR

(4)विस्मयादिबोधक अव्यय :- जो शब्द आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा, आशीर्वाद, क्रोध, उल्लास, भय आदि भावों को प्रकट करें, उन्हें 'विस्मयादिबोधक' कहते है।

दूसरे शब्दों में-जिन अव्ययों से हर्ष-शोक आदि के भाव सूचित हों, पर उनका सम्बन्ध वाक्य या उसके किसी विशेष पद से न हो, उन्हें 'विस्मयादिबोधक' कहते है।

इन अव्ययों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!)लगाते है।

जैसे- हाय! अब मैं क्या करूँ ? हैं !तुम क्या कर रहे हो ? यहाँ 'हाय!' और 'है !'

अरे !पीछे हो जाओ, गिर जाओगे।

इस वाक्य में अरे !शब्द से भय प्रकट हो रहा है।

विस्मयादिबोधक अव्यय है, जिनका अपने वाक्य या किसी पद से कोई सम्बन्ध नहीं।

व्याकरण में विस्मयादिबोधक अव्ययों का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। इनसे शब्दों या वाक्यों के निर्माण में कोई विशेष सहायता नहीं मिलती। इनका प्रयोग मनोभावों को तीव्र रूप में प्रकट करने के लिए होता है। 'अब मैं क्या करूँ ? इस वाक्य के पहले 'हाय!' जोड़ा जा सकता है।

विस्मयादिबोधक के निम्नलिखित भेद हैं-

(i)हर्षबोधक- अहा!, वाह-वाह!,धन्य-धन्य, शाबाश!, जय, खूब आदि।

(ii)शोकबोधक- अहा!, उफ, हा-हा!, आह, हाय,त्राहि-त्राहि आदि।

(iii) आश्चर्यबोधक- वाह!, हैं!,ऐ!, क्या!, ओहो, अरे, आदि

(iv) क्रोधबोधक- हट, दूर हो, चुप आदि।

(v) स्वीकारबोधक- हाँ!, जी हाँ, जी, अच्छा, जी!, ठीक!, बहुत अच्छा! आदि।

(vi)सम्बोधनबोधक- अरे!, अजी!, लो, रे, हे आदि।

(vii)भयबोधक- अरे, बचाओ-बचाओ आदि।

AJAY KUMAR

## निपात और उसके कार्य

यास्क के अनुसार 'निपात' शब्द के अनेक अर्थ है, इसलिए ये निपात कहे जाते हैं- उच्चावच्चेषु अर्थेषु निपतन्तीति निपाताः। यह पाद का पूरण करनेवाला होता है- 'निपाताः पादपूरणाः । कभी-कभी अर्थ के अनुसार प्रयुक्त होने से अनर्थक निपातों से अन्य सार्थक निपात भी होते हैं। निपात का कोई लिंग, वचन नहीं होता। मूलतः इसका प्रयोग अववयों के लिए होता है। जैसे अव्ययों में आकारगत अपरिवर्तनीयता होती है, वैसे ही निपातों में भी।

निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द, शब्द-समूह या पूरे वाक्य को अन्य (अतिरिक्त) भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नही होते। पर वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का समग्र अर्थ प्रभावित होता है।

### निपात के भेद

यास्क ने निपात के तीन भेद माने है-

(1) उपमार्थक निपात : यथा- इव, न, चित्, नुः

(2) कर्मोपसंग्रहार्थक निपात : यथा- न, आ, वा, ह;

(3) पदपूरणार्थक निपात : यथा- नूनम्, खलु, हि, अथ।

यद्यपि निपातों में सार्थकता नहीं होती, तथापि उन्हें सर्वथा निरर्थक भी नहीं कहा जा सकता। निपात शुद्ध अव्यय नहीं है; क्योंकि संज्ञाओं, विशेषणों, सर्वनामों आदि में जब अव्ययों का प्रयोग होता है, तब उनका अपना अर्थ होता है, पर निपातों में ऐसा नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द, शब्द-समुदाय या पूरे वाक्य को अन्य भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। इसके अतिरिक्त, निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं हैं। पर वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का सम्रग अर्थ व्यक्त होता है। साधारणतः निपात अव्यय ही है। हिन्दी में अधिकतर निपात शब्दसमूह के बाद आते हैं, जिनको वे बल प्रदान करते हैं।

### निपात के कार्य

निपात के निम्नलिखित कार्य होते हैं-

(1) पश्न- जैसे : क्या वह जा रहा है ?

(2) अस्वीकृति- जैसे : मेरा छोटा भाई आज वहाँ नहीं जायेगा।

(3) विस्मयादिबोधक- जैसे : क्या अच्छी पुस्तक है !

AJAY KUMAR

(4) वाक्य में किसी शब्द पर बल देना- बच्चा भी जानता है।

## निपात के प्रकार

निपात के नौ प्रकार या वर्ग हैं-

(1) स्वीकार्य निपात- जैसे : हाँ, जी, जी हाँ।

(2) नकरार्थक निपात- जैसे : नहीं, जी नहीं।

(3) निषेधात्मक निपात- जैसे : मत।

(4) पश्नबोधक- जैसे : क्या ? न।

(5) विस्मयादिबोधक निपात- जैसे : क्या, काश, काश कि।

(6) बलदायक या सीमाबोधक निपात- जैसे : तो, ही, तक, पर सिर्फ, केवल।

(7) तुलनबोधक निपात- जैसे : सा।

(8) अवधारणबोधक निपात- जैसे : ठीक, लगभग, करीब, तकरीबन।

(9) आदरबोधक निपात- जैसे : जी।

## अव्यय का पद परिचय

इसमें अव्यय, अव्यय का भेद और उससे सम्बन्ध रखनेवाला पद- इतनी बातें लिखनी चाहिए।

उदाहरण- वह अभी आया है।

इसमें 'अभी' अव्यय है। इसका पदान्वय होगा-

अभी- कालवाचक अव्यय, 'आना' क्रिया का काल सूचित करता है, अतः 'आना' क्रिया का विशेषण।

उदाहरण- अहा ! आप आ गये।

अहा- हर्षबोधक अव्यय।

## पद-परिचय के कुछ अन्य उदाहरण



AJAY KUMAR

उदाहरण (1) अच्छा लड़का कक्षा में शान्तिपूर्वक बैठता है।

अच्छा- गुणवाचक विशेषण, पुंलिंग, एकवचन, इसका विशेष्य 'लड़का' है।

लड़का- जातिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्ताकारक, 'बैठता है' क्रिया का कर्ता।

कक्षा में- जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरणकारक।

शान्तिपूर्वक- रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'बैठता है' क्रिया का विशेषण।

बैठता है- अकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमानकाल, पुंलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, इसका कर्ता लड़का है।

उदाहरण (2) मोहन अपने भाई सोहन को छड़ी से मारता है।

मोहन- व्यक्तिवाचक संज्ञा, अन्यपुरुष, पुंलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, इसकी क्रिया है 'मारता है' ।

अपने- निजवाचक सर्वनाम, पुंलिंग, एकवचन, सम्बन्धकारक, 'भाई' से सम्बन्ध रखता है, सार्वनामिक विशेषण, इसका विशेष्य 'भाई' है।

भाई- जातिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'सोहन' (कर्म) का विशेषण, 'मारता है' क्रिया का कर्म।

सोहन को- व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'भाई' के अर्थ को प्रकट करता है अतः 'समानाधिकरण संज्ञा' ।

छड़ी से- जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, करणकारक।

मारता है- सकर्मक क्रिया, इसका कर्म 'भाई सोहन', सामान्य वर्तमानकाल, पुंलिंग, कर्तृवाच्य, अन्यपुरुष, इसका कर्ता 'मोहन' है।

.....

AJAY KUMAR

# लिंग (Gender)

"संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते है।

दूसरे शब्दों में-संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते है।

सरल शब्दों में- शब्द की जाति को 'लिंग' कहते है।

जैसे -पुरुष जाति- बैल, बकरा, मोर, मोहन, लड़का आदि।

स्त्री जाति- गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लड़की आदि।

'लिंग' संस्कृत भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'चिह्न' या 'निशान'। चिह्न या निशान किसी संज्ञा का ही होता है। 'संज्ञा' किसी वस्तु के नाम को कहते है और वस्तु या तो पुरुषजाति की होगी या स्त्रीजाति की। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक संज्ञा पुंलिंग होगी या स्त्रीलिंग। संज्ञा के भी दो रूप हैं। एक, अप्रणिवाचक संज्ञा- लोटा, प्याली, पेड़, पत्ता इत्यादि और दूसरा, प्राणिवाचक संज्ञा- घोड़ा-घोड़ी, माता-पिता, लड़का-लड़की इत्यादि।

हिन्दी व्याकरण में लिंग के दो भेद होते है-

(1) पुलिंग(Masculine Gender)

(2) स्त्रीलिंग( Feminine Gender)

(1) पुलिंग :- जिन संज्ञा शब्दों से पुरूष जाति का बोध होता है, उसे पुलिंग कहते है।

जैसे- सजीव- कुत्ता, बालक, खटमल, पिता, राजा, घोड़ा, बन्दर, हंस, बकरा, लड़का इत्यादि।

निर्जीव पदार्थ- मकान, फूल, नाटक, लोहा, चश्मा इत्यादि।

भाव- दुःख, लगाव, इत्यादि।

(2)स्त्रीलिंग :- जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते है।

जैसे- सजीव- माता, रानी, घोड़ी, कुतिया, बंदरिया, हंसिनी, लड़की, बकरी,जूँ।

निर्जीव पदार्थ- सूई, कुर्सी, गर्दन इत्यादि।

AJAY KUMAR

भाव- लज्जा, बनावट इत्यादि।

<u>पुल्लिंग की पहचान</u>

(1) कुछ संज्ञाएँ हमेशा पुल्लिंग रहती है-

खटमल, भेड़या, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी, आदि

(2) समूहवाचक संज्ञा- मण्डल, समाज, दल, समूह, वर्ग आदि

(3) भारी और बेडौल वस्तुओ के नाम- जूता, रस्सा, लोटा ,पहाड़ आदि।

(4) दिनों के नाम- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शनिवार आदि।

(5) महीनो के नाम- चैत, वैसाख, जनवरी, फरवरी आदि।

(6) पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्द्याचल, सतपुडा आदि।

(7) देशों के नाम- भारत, चीन, इरान, अमेरिका आदि।

(8) नक्षत्रों, व ग्रहों के नाम- सूर्य, चन्द्र, राहू, शनि, आकाश, बृहस्पति, बुध आदि।

अपवाद- पृथ्वी

(9) धातुओं- सोना, तांबा, पीतल, लोहा, आदि

(10) वृक्षों,फलो के नाम- अमरुद, केला, शीशम, पीपल, आम आदि।

(11) अनाजों के नाम- चावल, चना, जौ, गेहूँ आदि।

(12) रत्नों के नाम- नीलम, पन्ना, मोती, हीरा आदि।

(13) फूलों के नाम- गेंदा, मोतिया, कमल, गुलाब आदि।

(14) देशों और नगरों के नाम- दिल्ली, लन्दन, चीन, रूस, भारत आदि।

(15) द्रव पदार्थो के नाम- शरबत, दही, दूध, पानी, तेल, घी आदि।

(16) आकारान्त संज्ञायें- गुस्सा, चश्मा, पैसा, छाता आदि।

AJAY KUMAR

## स्त्रीलिंग की पहचान

(1) कुछ संज्ञाएँ हमेशा स्त्रीलिंग रहती है- मक्खी ,कोयल, मछली, तितली, मैना आदि।

(2) समूहवाचक संज्ञायें- भीड़, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि।

(3) प्राणिवाचक संज्ञा- धाय, सन्तान, सौतन आदि।

(4) छोटी और सुन्दर वस्तुओं के नाम- जूती, रस्सी, लुटिया, पहाड़ी आदि।

(5) नदियों के नाम- रावी, कावेरी, कृष्णा, गंगा आदि।

(6) भाषाओं व लिपियों के नाम- देवनागरी, अंग्रेजी, हिंदी, बंगाली आदि।

(7) पुस्तकों के नाम- कुरान, रामायण, गीता आदि।

(8) तिथियों के नाम- पूर्णिमा, अमावस्था, चतुर्थी, प्रथमा आदि।

(9) आहारों के नाम- सब्जी, दाल, कचौरी, पूरी, रोटी आदि।

अपवाद- हलुआ, अचार, रायता आदि।

(10) ईकारान्त वाले शब्द- नानी, बेटी, मामी, भाभी आदि।

(12) जिन शब्दों के अन्त में 'हट, वट, ता, आई, या' तथा 'आस' आये-

हट- कड़वाहट, बौखलाहट, घबराहट आदि।

वट- मिलावट, बनावट, सजावट आदि।

ता- शत्रुता, मित्रता, मूखर्ता आदि।

आई- बड़ाई, रजाई, मिठास, प्यास आदि।

या- छाया, माया, काया आदि।

आस- खटास, मिठास, प्यास आदि

नोट- हिन्दी भाषा में वाक्य रचना में क्रिया का रूप लिंग पर ही निर्भर करता है। यदि कर्ता पुल्लिंग है तो क्रिया रूप भी पुल्लिंग होता है तथा यदि कर्ता स्त्रीलिंग है तो क्रिया का रूप भी स्त्रीलिंग होता है।

AJAY KUMAR

पं० कामताप्रसाद गुरु ने संस्कृत शब्दों को पहचानने के निम्नलिखित नियम बताये है-

(अ) जिन संज्ञाओं के अन्त में 'त्र' होता है। जैसे- चित्र, क्षेत्र, पात्र, नेत्र, चरित्र, शस्त्र इत्यादि।

(आ) 'नान्त' संज्ञाएँ। जैसे- पालन, पोषण, दमन, वचन, नयन, गमन, हरण इत्यादि।

अपवाद- 'पवन' उभयलिंग है।

(इ) 'ज'-प्रत्ययान्त संज्ञाएँ। जैसे- जलज,स्वेदज, पिण्डज, सरोज इत्यादि।

(ई) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में त्व, त्य, व, य होता है। जैसे- सतीत्व, बहूत्व, नृत्य, कृत्य, लाघव, गौरव, माधुर्य इत्यादि।

(उ) जिन शब्दों के अन्त में 'आर', 'आय', 'वा', 'आस' हो। जैसे- विकार, विस्तार, संसार, अध्याय, उपाय, समुदाय, उल्लास, विकास, ह्रास इत्यादि।

अपवाद- सहाय (उभयलिंग), आय (स्त्रीलिंग) ।

(ऊ) 'अ'-प्रत्ययान्त संज्ञाएँ। जैसे- क्रोध, मोह, पाक, त्याग, दोष, स्पर्श इत्यादि।

अपवाद- जय (स्त्रीलिंग), विनय (उभयलिंग) आदि।

(ऋ) 'त'-प्रत्ययान्त संज्ञाएँ। जैसे- चरित, गणित, फलित, मत, गीत, स्वागत इत्यादि।

(ए) जिनके अन्त में 'ख' होता है। जैसे- नख, मुख, सुख, दुःख, लेख, मख, शख इत्यादि।

पं० कामताप्रसाद गुरु ने संस्कृत स्त्रीलिंग शब्दों को पहचानने के निम्नलिखित नियम बताये है-

(अ) आकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- दया, माया, कृपा, लज्जा, क्षमा, शोभा इत्यादि।

(आ) नाकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- प्रार्थना, वेदना, प्रस्तावना, रचना, घटना इत्यादि।

(इ) उकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- वायु, रेणु, रज्जु, जानु, मृत्यु, आयु, वस्तु, धातु इत्यादि।

अपवाद- मधु, अश्रु, तालु, मेरु, हेतु, सेतु इत्यादि।

(ई) जिनके अन्त में 'ति' वा 'नि' हो। जैसे- गति, मति, रीति, हानि, ग्लानि, योनि, बुद्धि, ऋद्धि, सिद्धि (सिध् +ति=सिद्धि) इत्यादि।

(उ) 'ता'-प्रत्ययान्त भाववाचक संज्ञाएँ। जैसे- नम्रता, लघुता, सुन्दरता, प्रभुता, जड़ता इत्यादि।

(ऊ) इकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- निधि, विधि, परिधि, राशि, अग्नि, छवि, केलि, रूचि इत्यादि।

अपवाद- वारि, जलधि, पाणि, गिरि, अद्रि, आदि, बलि इत्यादि।

AJAY KUMAR

(ऋ) 'इमा'- प्रत्ययान्त शब्द। जैसे- महिमा, गरिमा, कालिमा, लालिमा इत्यादि।

तत्सम पुंलिंग शब्द

चित्र, पत्र, पात्र, मित्र, गोत्र, दमन, गमन, गगन, श्रवण, पोषण, शोषण, पालन, लालन, मलयज, जलज, उरोज, सतीत्व, कृत्य, लाघव, वीर्य, माधुर्य, कार्य, कर्म, प्रकार, प्रहार, विहार, प्रचार, सार, विस्तार, प्रसार, अध्याय, स्वाध्याय, उपहार, ह्रास, मास, लोभ, क्रोध, बोध, मोद, ग्रन्थ, नख, मुख, शिख, दुःख, सुख, शंख, तुषार, तुहिन, उत्तर, पश्न, मस्तक, आश्चर्य, नृत्य, काष्ट, छत्र, मेघ, कष्ट, प्रहर, सौभाग्य, अंकन, अंकुश, अंजन, अंचल, अन्तर्धान, अन्तस्तल, अम्बुज, अंश, अकाल, अक्षर, कल्याण, कवच, कायाकल्प, कलश, काव्य, कास, गज, गण, ग्राम, गृह, चन्द्र, चन्दन, क्षण, छन्द, अलंकार, सरोवर, परिमाण, परिमार्जन, संस्करण, संशोधन, परिवर्तन, परिशोध, परिशीलन, प्राणदान,

वचन, मर्म, यवन, रविवार, सोमवार, मार्ग, राजयोग, रूप, रूपक, स्वदेश, राष्ट, प्रान्त, नगर, देश, सर्प, सागर, साधन, सार, तत्त्व, स्वर्ग, दण्ड, दोष, धन, नियम, पक्ष, पृष्ट, विधेयक, विनिमय, विनियोग, विभाग, विभाजन, विरोध, विवाद, वाणिज्य, शासन, प्रवेश, अनुच्छेद, शिविर, वाद, अवमान, अनुमान, आकलन, निमन्त्रण, नियंत्रण, आमंत्रण,उद्भव, निबन्ध, नाटक, स्वास्थ्य, निगम, न्याय, समाज, विघटन, विसर्जन, विवाह, व्याख्यान, धर्म, उपकरण, आक्रमण, श्रम,बहुमत, निर्माण, सन्देश, ज्ञापक, आभार, आवास, छात्रावास, अपराध, प्रभाव, लोक, विराम, विक्रम, न्याय, संघ, संकल्प इत्यादि।

तत्सम स्त्रीलिंग शब्द

दया, माया, कृपा, लज्जा, क्षमा, शोभा, सभा, प्रार्थना, वेदना, समवेदना, प्रस्तावना, रचना, घटना, अवस्था, नम्रता, सुन्दरता, प्रभुता, जड़ता, महिमा, गरिमा, कालिमा, लालिमा, ईष्र्या, भाषा, अभिलाषा, आशा, निराशा, पूर्णिमा, अरुणिमा, काया, कला, चपला, इच्छा, अनुज्ञा, आज्ञा, आराधना, उपासना, याचना, रक्षा, संहिता, आजीविका, घोषणा, परीक्षा, गवेषणा, नगरपालिका, नागरिकता, योग्यता, सीमा, स्थापना, संस्था, सहायता,मान्यता, व्याख्या, शिक्षा, समता, सम्पदा, संविदा, सूचना, सेवा, सेना, विज्ञप्ति, अनुमति, अभियुक्ति, अभिव्यक्ति, उपलब्धि, विधि, क्षति,

पूर्ति, विकृति, जाति, निधि, सिद्धि, समिति, नियुक्ति, निवृत्ति, रीति, शक्ति, प्रतिकृति, कृति, प्रतिभूति, प्रतिलिपि, अनुभूति, युक्ति, धृति, हानि, स्थिति, परिस्थिति, विमति, वृत्ति, आवृत्ति, शान्ति, सन्धि, समिति, सम्पत्ति, सुसंगति, कटि, छवि, रुचि, अग्नि, केलि, नदी, नारी, मण्डली, लक्ष्मी, शताब्दी, श्री, कुण्डली, कुण्डलिनी, कौमुदी, गोष्ठी, धात्री, मृत्यु, आयु, वस्तु, रज्जु, रेणु, वायु इत्यादि।

तद्भव शब्दों के लिंगनिर्णय में अधिक कठिनाई होती है। तद्भव शब्दों का लिंगभेद, वह भी अप्राणिवाचक शब्दों का, कैसे किया जाय और इसके सामान्य नियम क्या हों, इसके बारे में विद्वानों में मतभेद है। पण्डित कामताप्रसाद गुरु ने हिन्दी के तद्भव शब्दों को परखने के लिए पुंलिंग के तीन और स्त्रीलिंग के दस नियमों का उल्लेख अपने हिन्दी व्याकरण में किया है वे नियम इस प्रकार है-

## तद्भव पुंलिंग शब्द

(अ) ऊनवाचक संज्ञाओं को छोड़ शेष आकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- कपड़ा, गत्रा, पैसा, पहिया, आटा, चमड़ा, इत्यादि।

(आ) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ना, आव, पन, वा, पा, होता है। जैसे- आना, गाना, बहाव, चढाव, बड़प्पन, बढ़ावा, बुढापा इत्यादि।

(इ) कृदन्त की आनान्त संज्ञाएँ। जैसे- लगान, मिलान, खान, पान, नहान, उठान इत्यादि।

अपवाद- उड़ान, चट्टान इत्यादि।

## तद्भव स्त्रीलिंग शब्द

(अ) ईकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- नदी, चिट्ठी, रोटी, टोपी, उदासी इत्यादि।

अपवाद- घी, जी मोती, दही इत्यादि।

(आ) ऊनवाचक याकारान्त संज्ञाए। जैसे- गुड़िया, खटिया, टिबिया, पुड़िया, ठिलिया इत्यादि।

(इ) तकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- रात, बात, लात, छत, भीत, पत इत्यादि।

अपवाद- भात, खेत, सूत, गात, दाँत इत्यादि।

(ई) उकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- बालू, लू, दारू, ब्यालू, झाड़ू इत्यादि।

अपवाद- आँसू, आलू, रतालू, टेसू इत्यादि।

(ऊ) अनुस्वारान्त संज्ञाएँ। जैसे- सरसों, खड़ाऊँ, भौं, चूँ, जूँ इत्यादि।

अपवाद- गेहूँ।

(ऊ) सकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- प्यास, मिठास, निदास, रास (लगाम), बाँस, साँस इत्यादि।

अपवाद- निकास, काँस, रास (नृत्य) ।

(ऋ) कृदन्त नकारान्त संज्ञाएँ, जिनका उपान्त्य वर्ण अकारान्त हो अथवा जिनकी धातु नकारान्त हो। जैसे- रहन, सूजन, जलन, उलझन, पहचान इत्यादि।

अपवाद- चलन आदि।

(ए) कृदन्त की अकारान्त संज्ञाएँ। जैसे- लूट, मार,समझ, दौड़, सँभाल, रगड़, चमक, छाप, पुकारइत्यादि।

अपवाद- नाच, मेल, बिगाड़, बोल, उतार इत्यादि।

(ऐ) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में ट, वट, हट, होता है। जैसे- सजावट, घबराहट, चिकनाहट, आहट, झंझट इत्यादि।

(ओ) जिन संज्ञाओं के अन्त में 'ख' होता है। जैसे- ईख, भूख, राख, चीख, काँख, कोख, साख, देखरेख इत्यादि।

अपवाद- पंख, रूख।

## अर्थ के अनुसार लिंग-निर्णय

कुछ लोग अप्राणिवाचक शब्दों का लिंगभेद अर्थ के अनुसार करते है। पं० कामताप्रसाद गुरु ने इस आधार और दृष्टिकोण को 'अव्यापक और अपूर्ण' कहा है; क्योंकि इसके जितने उदाहरण है, प्रायः उतने ही अपवाद हैं। इसके अलावा, इसके जो थोड़े-से नियम बने हैं, उनमें सभी तरह के शब्द सम्मिलित नहीं होते। गुरुजी ने इस सम्बन्ध में जो नियम और उदाहरण दिये है, उनमें भी अपवादों की भरमार है। उन्होंने जो भी नियम दिये है, वे बड़े जटिल और अव्यवहारिक है।

यहाँ इन नियमों का उल्लेख किया जा रहा है-

(क) अप्राणिवाचक पुंलिंग हिन्दी शब्द

(i) शरीर के अवयवों के नाम पुंलिंग होते है। जैसे- कान, मुँह, दाँत, ओठ, पाँव, हाथ, गाल, मस्तक, तालु, बाल, अँगूठा, मुक्का, नाख़ून, नथना, गट्टा इत्यादि।

अपवाद- कोहनी, कलाई, नाक, आँख, जीभ, ठोड़ी, खाल, बाँह, नस, हड्डी, इन्द्रिय, काँख इत्यादि।

(ii) रत्नों के नाम पुंलिंग होते है। जैसे- मोती, माणिक, पत्रा, हीरा, जवाहर, मूँगा, नीलम, पुखराज, लाल इत्यादि।

अपवाद- मणि, चुन्नी, लाड़ली इत्यादि।

(iii) धातुओं के नाम पुंलिंग होते है। जैसे- ताँबा, लोहा, सोना, सीसा, काँसा, राँगा, पीतल, रूपा, टीन इत्यादि।

अपवाद- चाँदी।

(iv) अनाज के नाम पुंलिंग होते है। जैसे- जौ, गेहूँ, चावल, बाजरा, चना, मटर, तिल इत्यादि।

अपवाद- मकई, जुआर, मूँग, खेसारी इत्यादि।

(v) पेड़ों के नाम पुंलिंग होते है। जैसे- पीपल, बड़, देवदारु, चीड़, आम, शीशम, सागौन, कटहल, अमरूद, शरीफा, नीबू, अशोक तमाल, सेब, अखरोट इत्यादि।

अपवाद-लीची, नाशपाती, नारंगी, खिरनी इत्यादि।

(vi) द्रव्य पदार्थों के नाम पुंलिंग होते हैं। जैसे- पानी, घी, तेल, अर्क, शर्बत, इत्र, सिरका, आसव, काढ़ा, रायता इत्यादि।

अपवाद- चाय, स्याही, शराब।

(vii) भौगोलिक जल और स्थल आदि अंशों के नाम प्रायः पुंलिंग होते है। जैसे- देश, नगर, रेगिस्तान, द्वीप, पर्वत, समुद्र, सरोवर, पाताल, वायुमण्डल, नभोमण्डल, प्रान्त इत्यादि।

अपवाद- पृथ्वी, झील, घाटी इत्यादि।

(ख) अप्राणिवाचक स्त्रीलिंग हिन्दी-शब्द

(i) नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते है। जैसे- गंगा, यमुना, महानदी, गोदावरी, सतलज, रावी, व्यास, झेलम इत्यादि।

अपवाद- शोण, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र नद है, अतः पुंलिंग है।

(ii) नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते है। जैसे- भरणी, अश्विनी, रोहिणी इत्यादि।

अपवाद- अभिजित, पुष्य आदि।

(iii) बनिये की दुकान की चीजें स्त्रीलिंग है। जैसे- लौंग, इलायची, मिर्च, दालचीनी, चिरौंजी, हल्दी, जावित्री, सुपारी, हींग इत्यादि।

अपवाद- धनिया, जीरा, गर्म मसाला, नमक, तेजपत्ता, केसर, कपूर इत्यादि।

(iv) खाने-पीने की चीजें स्त्रीलिंग है। जैसे- कचौड़ी, पूरी, खीर, दाल, पकौड़ी, रोटी, चपाती, तरकारी, सब्जी, खिचड़ी इत्यादि।

अपवाद- पराठा, हलुआ, भात, दही, रायता इत्यादि।

## प्रत्ययों के आधार पर तद्भव हिन्दी शब्दों का लिंग-निर्णय

हिन्दी के कृदन्त और तद्धित-प्रत्ययों में स्त्रीलिंग-पुंलिंग बनानेवाले अलग-अलग प्रत्यय इस प्रकार है-

AJAY KUMAR

स्त्रीलिंग कृदन्त-प्रत्यय- अ, अन्त,आई, आन, आवट, आस, आहट, ई, औती, आवनी, क, की, त, ती, नी इत्यादि। हिन्दी कृदन्त-प्रत्यय जिन धातु-शब्दों में लगे होते है, वे स्त्रीलिंग होते है। जैसे- लूट, चमक, देन, भिड़न्त, लड़ाई, लिखावट, प्यास, घबराहट, हँसी, मनौती, छावनी, बैठक, फुटकी, बचत, गिनती, करनी, भरनी।

द्रष्टव्य- इन स्त्रीलिंग कृदन्त-प्रत्ययों में अ, क, और न प्रत्यय कहीं-कहीं पुंलिंग में भी आते है और कभी-कभी इनसे बने शब्द उभयलिंग भी होते है। जैसे- 'सीवन' ('न'-प्रत्ययान्त) क्षेत्रभेद से दोनों लिंगों में चलता है। शोष सभी प्रत्यय स्त्रीलिंग है।

पुंलिंग कृदन्त-प्रत्यय- अक्कड़, आ, आऊ, आक, आकू, आप, आपा, आव, आवना, आवा, इयल, इया, ऊ, एरा, ऐया, ऐत, औता, औना, औवल, क, का, न, वाला, वैया, सार, हा इत्यादि हिन्दी कृदन्त-प्रत्यय जिन धातु-शब्दों में लगे है, वे पुंलिंग होते है। जैसे- पियक्कड़, घेरा, तैराक, लड़ाकू, मिलाप, पुजापा, घुमाव, छलावा, लुटेरा, कटैया, लड़ैत, समझौता, खिलौना, बुझौवल, घालक, छिलका, खान-पान, खानेवाला, गवैया।

द्रष्टव्य- (i) क और न कृदन्त-प्रत्यय उभयलिंग हैं। इन दो प्रत्ययों और स्त्रीलिंग प्रत्ययों को छोड़ शेष सभी पुंलिंग हैं। (ii)'सार' उर्दू का कृदन्त- प्रत्यय है, जो हिन्दी में फारसी से आया है मगर काफी प्रयुक्त है।

स्त्रीलिंग तद्धित-प्रत्यय- आई, आवट, आस, आहट, इन, एली, औड़ी, औटी, औती, की, टी, ड़ी, त, ती, नी, री, ल, ली इत्यादि। हिन्दी तद्धित-प्रत्यय जिन शब्दों में लगे होते है, वे स्त्रीलिंग होते है। जैसे- भलाई, जमावट, हथेली, टिकली, चमड़ी।

पुंलिंग तद्धित-प्रत्यय- आ, आऊ, आका, आटा, आना, आर, इयल, आल, आड़ी, आरा, आलू, आसा, ईला, उआ, ऊ, एरा, एड़ी, ऐत, एला, ऐला, ओटा, ओट, औड़ा, ओला, का, जा, टा, डा, ता, पना, पन, पा, ला, वन्त, वान, वाला, वाँ, वा, सरा, सों, हर, हरा, हा, हारा, इत्यादि। हिन्दी तद्धित प्रत्यय जिन शब्दों में लगे होते है वे शब्द पुंलिंग होते है। जैसे- धमाका, खर्राटा, पैताना, भिखारी, हत्यारा, मुँहासा, मछुआ, सँपेरा, डकैत, अधेला, चमोटा, लँगोटा, हथौड़ा, चुपका, दुखड़ा, रायता, कालापन, बुढापा, गाड़ीवान, टोपीवाला, छठा, दूसरा, खण्डहर, पीहर, इकहरा, चुड़िहारा।

द्रष्टव्य- (i) इया, ई, एर, एल, क तद्धित प्रत्यय उभयलिंग हैं। जैसे-

| प्रत्यय | पद | तद्धित पद |
|---|---|---|

| | | |
|---|---|---|
| इया | मुख | मुखिया (पुंलिंग) |
| खाट | खटिया (ऊनवाचक)(स्त्रीलिंग) | |
| ई | डोर | डोरी(स्त्रीलिंग) |
| एर | मूँड | मुँडेर (स्त्रीलिंग) |
| अंध | अँधेर (पुंलिंग) | |
| एल | फूल | फुलेल (पुंलिंग) |
| नाक | नकेल (स्त्रीलिंग) | |
| क | पंच | पंचक (पुंलिंग) |
| ठण्ड | ठण्डक (स्त्रीलिंग) | |

(ii) विशेषण अपने विशेष्य के लिंग के अनुसार होता है। जैसे- 'ल' तद्धित-प्रत्यय संज्ञा-शब्दों में लगने पर उन्हें स्त्रीलिंग कर देता है, मगर विशेषण में- 'घाव+ल=घायल'- अपने विशेष्य के अनुसार होगा, अर्थात विशेष्य स्त्रीलिंग हुआ तो 'घायल' स्त्रीलिंग और पुंलिंग हुआ तो पुंलिंग।

(iii) 'क' तद्धित प्रत्यय स्त्रीलिंग है, किन्तु संख्यावाचक के आगे लगने पर उसे पुंलिंग कर देता है। जैसे- चौक, पंचक (पुंलिंग) और ठण्डक, धमक (स्त्रीलिंग)। 'आन' प्रत्यय भाववाचक होने पर शब्द को स्त्रीलिंग करता है, किन्तु विशेषण में विशेष्य के अनुसार। जैसे- लम्बा+आन=लम्बान (स्त्रीलिंग)।

(iv) अधिकतर भाववाचक और उनवाचक प्रत्यय स्त्रीलिंग होते है।

## उर्दू शब्दों का लिंग-निर्णय

उर्दू से होते हुए हिन्दी में अरबी-फारसी के बहुत से शब्द आये है, जिनका व्यवहार हम प्रतिदिन करते है। इन शब्दों का लिंगभेद निम्नलिखित नियमों के अनुसार किया जाता है-

### पुंलिंग उर्दू शब्द

AJAY KUMAR

(i) जिनके अन्त में 'आब' हो, वे पुंलिंग है। जैसे- गुलाब, जुलाब, हिसाब, जवाब, कबाब।

अपवाद- शराब, मिहराब, किताब, ताब, किमखाब इत्यादि।

(ii) जिनके अन्त में 'आर' या 'आन' लगा हो। जैसे- बाजार, इकरार, इश्तिहार, इनकार, अहसान, मकान, सामान, इम्तहान इत्यादि।

अपवाद- दूकान, सरकार, तकरार इत्यादि।

(iii) आकारान्त शब्द पुंलिंग है ; जैसे- परदा, गुस्सा, किस्सा, रास्ता, चश्मा, तमगा।

(मूलतः ये शब्द विसर्गात्मक हकारान्त उच्चारण के हैं। जैसे- परदः, तम्गः । किन्तु हिन्दी में ये 'परदा', 'तमगा' के रूप में आकारान्त ही उच्चरित होते है।

अपवाद- दफा।

<u>स्त्रीलिंग उर्दू शब्द</u>

(i) ईकारान्त भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है। जैसे- गरीबी, गरमी, सरदी, बीमारी, चालाकी, तैयारी, नवाबी इत्यादि।

(ii) शकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है। जैसे- नालिश, कोशिश, लाश, तलाश, वारिश, मालिश इत्यादि।

अपवाद- ताश, होश आदि।

(iii) तकारन्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है। जैसे- दौलत, कसरत, अदालत, इजाजत, कीमत, मुलाकात इत्यादि।

अपवाद- शरबत, दस्तखत, बन्दोबस्त, वक्त, तख्त, दरख्त इत्यादि।

(iv) आकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है। जैसे- हवा, दवा, सजा, दुनिया, दगा इत्यादि।

अपवाद- मजा इत्यादि।

(v) हकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- सुबह, तरह, राह, आह, सलाह, सुलह इत्यादि।

(vi) 'तफईल' के वजन की संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है। जैसे- तसवीर, तामील, जागीर, तहसील इत्यादि।

## अँगरेजी शब्दों का लिंगनिर्णय

विदेशी शब्दों में उर्दू (फारसी और अरबी)- शब्दों के बाद अँगरेजी शब्दों का प्रयोग भी हिन्दी में कम नहीं होता। जहाँ तक अँगरेजी शब्दों के लिंग-निर्णय का पश्र है, मेरी समझ से इसमें कोई विशेष कठिनाई नहीं है; क्योंकि हिन्दी में अधिकतर अँगरेजी शब्दों का प्रयोग

AJAY KUMAR

पुंलिंग में होता है। इस निष्कर्ष की पुष्टि नीचे दी गयी शब्दसूची से हो जाती है। अतः इन शब्दों के तथाकथित 'मनमाने प्रयोग' बहुत अधिक नहीं हुए है। मेरा मत है कि इन शब्दों के लिंगनिर्णय में रूप के आधार पर अकारान्त, आकारान्त, और ओकारान्त को पुंलिंग और ईकारान्त को स्त्रीलिंग समझना चाहिए।

फिर भी, इसके कुछ अपवाद तो हैं ही। अँगरेजी के 'पुलिस' (Police) शब्द के स्त्रीलिंग होने पर प्रायः आपत्ति की जाती है। मेरा विचार है कि यह शब्द न तो पुंलिंग है, न स्त्रीलिंग। सच तो यह है कि 'फ्रेण्ड' (Friend) की तरह उभयलिंग है। अब तो स्त्री भी 'पुलिस' होने लगी है। ऐसी अवस्था में जहाँ पुरुष पुलिस का काम करता हो, वहाँ 'पुलिस' पुंलिंग में और जहाँ स्त्री पुलिस का काम करेगी, वहाँ उसका व्यवहार स्त्रीलिंग में होना चाहिए। हिन्दी में ऐसे शब्दों की कमी नहीं है, जिनका प्रयोग दोनों लिंगों में अर्थभेद के कारण होता है। जैसे- टीका, हार, पीठ इत्यादि। ऐसे शब्दों की सूची आगे दी गयी है।

लिंगनिर्णय के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होनेवाले अँगरेजी शब्दों की सूची निम्नलिखित है-

<u>अँगरेजी के पुंलिंग शब्द</u>

अकारान्त- ऑर्डर, आयल, ऑपरेशन, इंजिन, इंजीनियर, इंजेक्शन, एडमिशन, एक्सप्रेस, एक्सरे, ओवरटाइम, क्लास, कमीशन, कोट, कोर्ट, कैलेण्डर, कॉलेज, कैरेम, कॉलर, कॉलबेल, काउण्टर, कारपोरेशन, कार्बन, कण्टर, केस, क्लिनिक, क्लिप, कार्ड, क्रिकेट, गैस, गजट, ग्लास, चेन, चॉकलेट, चार्टर, टॉर्च, टायर, ट्यूब, टाउनहाल, टेलिफोन, टाइम, टाइमटेबुल, टी-कप, टेलिग्राम, ट्रैक्टर, टेण्डर, टैक्स, टूथपाउडर, टिकट, डिवीजन, डान्स, ड्राइंग-रूम, नोट, नम्बर, नेकलेस, थर्मस, पार्क, पोस्ट, पोस्टर, पेन, पासपोर्ट, पेटीकोट, पाउडर, पेंशन, प्रोमोशन, प्रोविडेण्ट फण्ड,

पेपर, प्रेस, प्लास्टर, प्लग, प्लेट, पार्सल, प्लैटफार्म, फुटपाथ, फुटबॉल, फार्म, फ्रॉक, फर्म, फैन, फ्रेम, फुलपैण्ट, फ्लोर, फैशन, बोर्ड, बैडमिण्टन, बॉर्डर, बाथरूम, बुशशर्ट, बॉक्स, बिल, बोनस, बजट, बॉण्ड, बोल्डर, ब्रश, ब्रेक, बैंक, बल्ब, बम, मैच, मेल, मीटर, मनिआर्डर, रोड, रॉकेट, रबर, रूल, राशन, रिवेट, रिकार्ड, रिबन, लैम्प, लेजर, लाइसेन्स, वाउचर, वार्ड, स्टोर, स्टेशनर, स्कूल, स्टोव, स्टेज, स्लीपर, स्टेल, स्विच, सिगनल, सैलून, हॉल, हॉस्पिटल, हेयर, हैण्डिल, लाइट, लेक्चर, लेटर।

<u>अँगरेजी के स्त्रीलिंग शब्द</u>

ईकारान्त- एसेम्बली, कम्पनी, केतली, कॉपी, गैलरी, डायरी, डिग्री, टाई, ट्रेजेडी, ट्रेजरी, म्युनिसिपैलिटी, युनिवर्सिटी, पार्टी, लैबोरेटरी।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, आटा, आव, आवा, औरा, पन इत्यादि (कृदंत-तद्धित) प्रत्यय लगते हों, वे पुंलिंग होते है-

| प्रत्यय | पुंलिंग शब्द |
|---|---|
| त्व | महत्त्व |
| ना | पढ़ना, दिखाना |
| र्य | शौर्य, वीर्य, माधुर्य |
| आ | घेरा, फेरा, तोड़ा, जोड़ा, फोड़ा |
| आटा | सन्नाटा, खर्राटा |
| आपा | पुजापा, बुढापा |
| आव | जमाव, घुमाव, फैलाव, बचाव, बहाव |
| आवा | बुलावा, चढ़ावा, दिखावा, भुलावा, पहनावा |
| औड़ा | हथौड़ा, पकौड़ा |
| त्र | चित्र, मित्र |
| पन | बचपन, छुटपन, पागलपन, बड़प्पन |

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हों, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-

| प्रत्यय | स्त्रीलिंग शब्द |
|---|---|
| आई | महँगाई, भलाई, बुराई, ढिलाई, चिकनाई, सिलाई, धुनाई, रुलाई |
| आवट | रुकावट, मिलावट, गिरावट |
| आस | प्यास (पिआस), मिठास |
| आहट | घबराहट, बुलाहट |
| इया | डिबिया, टिकिया |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| ई | हँसी, गरीबी, अमीरी, गुलामी, रस्सी, टोपी, गोटी, जूती |
| त | रंगत, चाहत, हजामत |
| नी | घिरनी, चलनी, चटनी, खैनी |
| री | कोठरी, गठरी, छतरी |
| ली | टिकली, डफली |

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुलिंग और आकारांत स्त्रीलिंग होते हैं। ऊपर उदाहरण दिये गये हैं।

जैसे- जल, स्वर्ण, लाभ, स्तंभ (पुलिंग), भिक्षा, शिक्षा, निन्द्रा, संध्या, परीक्षा, लज्जा (स्त्रीलिंग)

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे-

| अकारांत तत्सम | लिंग | हिंदी तद्भव | अकारांत तत्सम | लिंग | हिंदी तद्भव |
|---|---|---|---|---|---|
| आश्चर्य | पुलिंग | अचरज | गोधूम | पुलिंग | गेहूँ |
| काष्ठ | पुलिंग | काठ | दुग्ध | पुलिंग | दूध |
| स्नान | पुलिंग | नहान | वंध्या | स्त्रीलिंग | बाँझ |
| स्तंभ | पुलिंग | खंभा, खंभ | संध्या | स्त्रीलिंग | साँझ |
| कटाह | पुलिंग | कड़ाह | नासिका | स्त्रीलिंग | नाक |
| चत्वर | पुलिंग | चबूतरा | निन्द्रा | स्त्रीलिंग | नींद |
| स्वर्ण | पुलिंग | सोना | परीक्षा | स्त्रीलिंग | परख |
| जीव | पुलिंग | जी | हरिद्रा | स्त्रीलिंग | हरदी |
| कर्पट | पुलिंग | कपड़ा | भिक्षा | स्त्रीलिंग | भीख |
| पर्यक | पुलिंग | पलंग | शय्या | स्त्रीलिंग | सेज |
| आम्र | पुलिंग | आम | शिक्षा | स्त्रीलिंग | सीख |

AJAY KUMAR

पौत्र पुलिंग पोता लौह स्त्रीलिंग लोहा

(ड़) हिंदी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुलिंग होती हैं। जैसे- लोहा, चूना, मोती, दही, घी, तेल, सोना इत्यादि। अपवाद- चाँदी स्त्रीलिंग है।

(च) लिंग-निर्णय का सबसे सरल नियम यह है कि जिस अकारांत शब्द का लिंग जानना हो, उसका कर्ता में बहुवचन-रूप बनाकर देखा जाय। यदि बहुवचन में एकारांतता के साथ अनुनासिकता है (अर्थात अंतिम स्वर पर चंद्रबिंदु या अनुस्वार लगता हो) तो वह स्त्रीलिंग है। यदि अप्रत्यय एकवचन-रूप और बहुवचन-रूप में कोई अंतर नहीं है तो वह शब्द पुलिंग है, अर्थात यदि बहुवचन में एकार के साथ अनुनासिकता नहीं है, तो वह शब्द पुलिंग है। जैसे-

राम के चार भवन हैं (पुलिंग)

राम के वचन सुने (पुलिंग)

श्याम के चार पुत्र है। (पुलिंग)

ये चार इमारतें राम की हैं (स्त्रीलिंग)

राम की बातें हुई। (स्त्रीलिंग)

मैंने कोशिशें की (स्त्रीलिंग)

लिंगकोश

(पुलिंग शब्द)(Masculine)

अ- अरमान, अनार, अदरख, अपराध, अनाज, अनुसार, अनुसरण, अबरब, अबीर, अन्वय, अमृत, अपरिग्रह, अपहरण, अनुदान, अनुमोदन, अनुसन्धान, अपयश, अक्षत, अणु, अकाल, अक्षर, अनुच्छेद, अखरोट।

आ- आलस्य, आचार, आईना, आचरण, आखेट, आभार, आलू, आवेश, आविर्भाव, आश्रम, आश्वासन, आसन, आषाढ़, आस्वादन, आहार, आसव, आशीर्वाद, आकाश, आयोग, आटा, आमंत्रण, आक्रमण, आरोप, आयात, आयोजन, आरोपण, आलोक, आवागमन, आविष्कार।

AJAY KUMAR

अं, अँ, आँ- अंधड़, अंगूर, अंक, अंबार, अंकुश, अंगार, अंतरिक्ष, अंतर्धान, अंतस्तल, अंबुज, अंश, अंजन, अंचल, अंकन, अंगुल, अंकगणित, अंतःपुर, अंतःकरण, अँधेरा, अंधेर, अंबर, अंशु, आँसू।

ओ, औ- ओठ, ओल, ओला, औजार, औसत।

इ, ई- इजलास, इन्द्रासन, इकतारा, इलाका, इजहार, इनाम, इलाज, इस्तीफा, इस्पात, इस्तेमाल, इन्तजार, इन्साफ, इलजाम, इत्र, ईंधन।

उ, ऊ- उद्धार, उतार, उपवास, उफान, उबटन, उबाल, उलटफेर, उपादान, उपकरण, उत्पादन, उत्कर्ष, उच्छेदन, उत्तरदायित्व, उत्तरीय, उत्ताप, उत्साह, उत्सर्ग, उदय, उद्गार, उद्घाटन, उद्धरण, उद्यम, उन्माद, उन्मूलन, उपकार, उपक्रम, उपग्रह, उपचार, उपनयन, उपसर्ग, उपहास, उपाख्यान, उपालंभ, उल्लंघन, उल्लास, उल्लू, उल्लेख, ऊख, ऊन, ऊखल, ऊधम।

क- कण्ठ, कपूर, कर्म, कम्बल, कलंक, कपाट, कछार, कटहल, कफन, कटोरा, कड़ाह, कलह, कक्ष, कच्छा, कछुआ, कटिबन्ध, कदम्ब, कनस्तर, कफ, कबाब, कब्ज, करकट, करतल, कर्णफूल, करार, करेला, कलाप, कलेवर, कल्प, कल्याण, कल्लोल, कवच।

का- काग, काजल, काठ, कार्तिक, काँच (शीशा), कानन, कार्य, कायाकल्प।

कि, की- कित्रर, किमाम, किसलय, कीर्तन, कीचड़।

कु, कू- कुँआ, कुटीर, कुतूहल, कुमुद, कुल, कुहासा, कुशल, कुष्ट, कूड़ा।

के, को, कौ- केवड़ा, केंकड़ा, केराव, केशर, केश, कोटर, कोल्हू, कोढ़, कोदो, कीप, कोष(श), कोहनूर, कोष्ठ, कोट, कौतूहल, कौर, कौआ,कौशल।

ख- खँडहर, खजूर, खटका, खटमल, खपड़ा, खरगोश, खरबूजा, खराद (यन्त्र), खर्राटा, खलिहान, खाँचा, खाका, खान(पठान), खान-पान, खार, खिंचाव, खीर-मोहन, खीरा, खुमार, खुदरा, खुर, खुलासा, खूँट(छोर), खूँटा, खेमा, खेल, खेलवाड़, खोंचा, खोआ।

ग- गंजा, गन्धक, गन्धराज, गगन, गज, गजट, गजब, गठबन्धन, गढ़, गदर, गद्य, गबन, गमन, गरुड़, गर्जन, गर्व, गर्भाशय, गलसुआ, गलियारा, गलीचा, गश, गाँजा, गार्हस्थ्य, गिरजा, गिरगिट, गड्ढा, गुणगान, गोदाम, गुनाह, गुंजार, गुलाब, गुलाम, गिला, गूदा, गोंद, गेंद, गोत्र, गोधन, गोलोक, गौरव, ग्रह, ग्रीष्म, ग्रहण, ग्रास, गिलाफ, गिद्ध।

घ- घट, घटाटोप, घटाव, घड़ा, घड़ियाल, घन, घराना, घपला, घर्षण, घाघरा, घाघ, घाटा, घात (चोट), घाव, घी, घुँघरू, घुटना, घुन, घुमाव, घूँघट, घूँट, घृत, घेघा, घोंघा, घोटाला, घोल।

च- चंगुल, चण्डमुण्ड, चन्दन, चन्द्रमा, चन्दनहार, चन्द्रबिन्दु, चन्द्रहार, चन्द्रोदय, चकमा, चकला, चकवा, चकोर, चक्कर, चक्र, चक्रव्यूह, चटावन, चढाव, चढ़ावा, चप्पल, चमगादड़, चमत्कार, चमर, चम्मच, चम्पक, चयन, चर्खा, चरागाह, चर्स, चलचित्र, चलन, चालान, चषक, चाँटा, चाँद, चाक, चातक, चातुर्य, चाप (धनुष), चाबुक, चाम, चरण, चाकू, चाव, चिन्तन, चित्रकूट, चित्रपट, चिरकुट, चिराग, चीता, चीत्कार, चीर, चीलर, चुम्बक, चुम्बन, चुनाव, चुल्लू, चैन, चोकर, चौक, चौपाल।

छ- छन्द, छछूँदर, छज्जा, छटपट, छत्ता, छत्र, छप्पर, छलछन्द, छाजन, छार, छिद्र, छिपाव, छींटा, छेद, छोआ, छोर।

ज- जख्म, जमघट, जहाज, जंजाल, जन्तु, जड़ाव, जत्था, जनपद, जनवासा, जप, जमाव, जलधर, जलपथ, जलपान, जाँता, जाकड़, जाम, जाप, जासूस, जिक्र, जिगर, जिन, जिहाद, जी, जीरा, जीव, ज्वारभाटा, जुआ, जुकाम, जुर्म, जुलाब, जुल्म, जुलूस, जूड़ा, जेठ, जेल, जौ, जैतून, जोश, ज्वर।

झ- झंझा, झंझावात, झकझोर, झकोर, झाड़ (झाड़ी), झंखाड़, झाल (बाजा), झींगुर, झुण्ड, झुकाव, झुरमुट, झूमर।

ट- टण्टा, टमटम, टकुआ, टाट, टापू, टिकट, टिकाव, टिफिन, टीन, टमाटर, टैक्स।

ठ- डंक, डंड, डण्डा, डब्बा, डमरू, डर, डीह, डोल, डेरा।

ढ- ढक्कन, ढेला, ढाँचा, ढोंग, ढाढस, ढंग, ढोल, ढकना, ढिंढोरा, ढोंग, ढेर।

त- तम्बाकू, तम्बूरा, तकिया, तन, तनाव, तप, तबला, तमंचा, तरकश, तरबूज, तराजू, तल, ताण्डव, ताज, तार, ताला, तालाब, ताश, त्रिफला, तिल, तिलक, तिलकुट, तीतर, तीर, तीर्थ, तेजाब, तेल, तेवर, तोड़-जोड़, तोड़-फोड़, तौल, तौलिया, त्रास, तख्ता, तंत्र।

थ- थन, थप्पड़, थल, थूक, थोक, थाना, थैला।

द- दंड, दबाव, दर्जा, दर्शन, दरबार, दहेज, दाँत, दाग, दाम, दही, दिन, दिमाग, दिल, दीपक, दीया, दुःख, दुशाला, दूध, दृश्य, देहात, देश, द्वार, द्वीप, दर्द, दुखड़ा, दुपट्टा, दंश, दफा, दालान, दलाल, दानव, दाय, दास, दिखाया, दिमाग, दिल, दीपक, दुलार, दुशाला, दूध, दृश्य, दैत्य, दोष, दौरान, द्वार, द्वीप, द्वेष, दफ्तर।

ध- धन्धा, धक्का, धड़, धन, धनुष, धर्म, धान, धाम, धैर्य, ध्यान, धनिया, धुआँ।

न- नकद, नक्षत्र, नग, ननिहाल, नभ, नगर, नमक, नसीब, नरक, नल, नाख़ून, निबाह, नियम, निर्झर, निगम, निवास, निवेदन, निशान, निष्कर्ष, नीबू, नीर, नीलम, नीलाम, नृत्य, नेत्र, नैवेद्य, न्याय, नमस्कार, नक्शा, नगीना, नशा, न्योता।

प-पंक्षी, पकवान, पक्ष, पक्षी, पत्र, पड़ोस, पतंग, पनघट, पतलून, पतन, पत्थर, पद, पदार्थ, पनीर, पपीहा, पर्दा, परमाणु, परलोक, पराग, परिचय, परिणाम, परिवर्तन, परिवार, पर्व, पल्लव, पहर, पहिया, पाखण्ड, पाचन, पाताल, पापड़, पाला, पिल्लू, पीताम्बर, पीपल, पुआल, पुराण, पुरस्कार, पुल, पुलक, पुस्तकालय, पूर्व, पोत, पोल, पोषण, पाजामा, प्याज, प्रकोप, प्रयोग, प्रतिफल, प्रतिबन्ध, प्रत्यय, प्रदेश, प्रभाव, प्रलय, प्रसार, प्रातः, प्रारम्भ, पैसा, प्राण, पेट, पौधा, प्यार, पहरा, पानी।

फ- फर्क, फर्ज, फर्श, फल, फसाद, फाटक, फल, फूल, फेन, फेफड़ा, फेर, फेरा, फतिंगा।

ब- बण्डल, बन्दरगाह, बखान, बबूल, बचपन, बचाव, बड़प्पन, बरतन, बरताव, बल, बलात्कार, बहाव, बहिष्कार, बाँध, बाँस, बाग, बाज, बाजा, बाजार, बादाम, बेलन, बेला, बेसन, बोझ, बोल, बैर, बगीचा, बादल, बुढापा, बटन, बिल, बुखार, बीज, बिछावन, बेंत, बदला।

भ- भण्डाफोड़, भँवर, भजन, भवन, भत्ता, भरण, भस्म, भाग्य, भाल, भाव, भाषण, भिनसार, भुजंग, भुलावा, भूकम्प, भेदभाव, भेड़िया, भोज, भोर, भरोसा।

म- मंच, मंजन, मण्डन, मजा, मटर, मसूर, मतलब, मद्य, मच्छर, मनसूबा, मनोवेग, मरहम, मरोड़, मवेशी, मलय, मलाल, महुआ, माघ, माजरा, मिजाज, मील, मुकदमा, मुरब्बा, मुकुट, मूँगा, मृग, मेघ, मेवा, मोक्ष, मोती, मोतीचूर, मोम, मोर, मोह, मौन, म्यान, मुरब्बा, मक्खन।

य- यन्त्र, यति (संन्यासी), यम, यश, यातायात।

र- रक्त, रबर, रमण, रहस्य, राग, रासो, रूपा, रेत, रोग, रोमांच, रिवाज, रूमाल ।

ल- लंगर, लक्ष्य, लगान, लगाव, लटकन, लाघव, लालच, लिहाज, लेख, लेप, लोप, लोभ, लेनदेन।

व- वजन, वज्र, वन, वनवास, वर, वसन्त, वार, विकल्प, विक्रय, विघटन, विमर्श, विलास, विष, विवाद, विसर्जन, विस्फोट, विहार, वैष्णव, व्यंजन, व्यय, व्याख्यान, व्याज, व्यास, व्यूह।

श- शंख, शक, शनि, शर, शव, शरबत, शहद, शाप, शिखर, शीर्ष, शील, शुक्र, शून्य, शोक, श्रम, श्वास।

स- संकट, संकेत, संकोच, संखिया, संगठन, संगम, संचार, संयोग, सन्दूक, संन्यास, सम्पर्क, सम्बन्ध, संविधान, सतू, सफर, समीर, सर, सरोवर, सहन, सहयोग, सहारा, साग, साधन, साया, सार, सिंगार, सिन्दूर, सियार, सिर, सिल्क, सींग, सुमन, सुराग, सूअर, सूत, सूत्र, सूना, सूद, सूप, सेतु, सेब, सेवन, सोच, सोन, सोना, सोफा, सोम, सोहर (गीत), सौभाग्य, सौरभ, स्तर, स्थल, स्पर्श, स्वरूप, स्वर्ग, सवर्ण, स्वाद।

ह- हंस, हक, हमला, हरण, हरिण, हल, हवाला, हार (माला), हाल (समाचार, दशा), हास्य, हित, हिल्लोल, हीरा, हेरफेर, हैजा, होंठ, होश, ह्रास।

AJAY KUMAR

## स्त्रीलिंग शब्द (Feminine)

अ- अँगड़ाई, अँतड़ी, अकड़, अक्ल, अदालत, अनबन, अप्सरा, अफवाह, अपेक्षा, अपील, अहिंसा, अरहर, अवस्था।

आ- आँच, आँत, आग, आजीविका, आज्ञा, आत्मा, आत्महत्या, आदत, आन, आपदा, आफत, आमद, आय, आयु, आराधना,आवाज, आस्तीन, आह, आहट, आशिष, आँख।

इ, ई- इंच, इन्द्रिय, इच्छा, इजाजत, इज्जत, इमारत, इला, ईट, ईद, ईख, ईर्ष्या।

उ, ऊ- उड़ान, उथल-पुथल, उपासना, उपेक्षा, उमंग, उम्र, उर्दू (भाषा), उलझन, उषा, ऊब।

ए, ऐ- एकता, ऐंठ, ऐंठन, ऐनक।

ओ, औ- ओट, ओस, औलाद।

क- कक्षा, कटुता, कड़क, कतार, कथा, कदर, कन्या, कमर, कमाई, कमान, कमीज, करवट, करुणा, कसक, कसम, कसरत, कपास, कसौटी, कस्तूरी, काँगरेस, काश्त, करतूत, किस्मत, किशमिश, क़िस्त (ऋण चुकाने का भाग), कीमत, कील, कुंजी, कुटिया, कुशल(कुशलता), कुल्हाड़ी, कूक, कृपा, कैद, कोख, कोयल, क्रिया, क्रीड़ा, क्षमा।

ख- खटपट, खटास, खटिया, खड़क, खडांऊँ, खनक, खपत, खबर, खरीद, खींच, खरोंच, खाँड़, खाई, खाज, खाट, खातिर, खाद, खाल, खान (खनि), खिजाँ, खिदमत, खोच, खीझ, खीर, खील, खुदाई, खुरमा, खुशामद, खैरात, खोट, खोह।

ग- गंगा, गन्ध, गजल, गटपट, गठिया, गड़बड़, गणना, गति, गदा, गनीमत, गफलत, गरज, गर्दन, गरिमा, गर्द, गर्दिश, गाँठ, गाजर, गाज (बिजली), गागर, गाथा, गाद, गिटपिट, गिरफ्त, गिरह, गिलहरी, गीता, गीतिका, गुंजाइश, गुड़िया, गुड्डी, गुफा, गुरुता, गेरू, गुलेल, गूज, गैल, गैस, गोट, गोद, गोपिका, गौ।

घ- घटा, घटिका, घास, घिन, घुड़दौड़, घुड़साल, घूस, घृणा, घोषणा।

AJAY KUMAR

च- चमेली, चकई, चटक (चमक-दमक), चट्टान, चपत, चपला, चर्चा, चमक, चहक, चहल-पहल, चाँदी, चाँप, चाट, चादर, चारपाई, चाल, चाह, चाहत, चालढाल, चिकित्सा, चिट, चिमनी, चिलक, चिल्लाहट, चिढ, चिंता, चिन्ता, चित्रकला, चिनक, चिनगारी, चिप्पी, चिलम, चील, चीख, चींटी, चीनी, चुटिया, चुड़ैल, चुनरी, चुनौती, चुहल, चुहिया, चूक, चें-चें, चेचक, चेतना, चेष्टा, चोंच, चोट, चौपड़, चौखट।

छ- छटा, छत, छमछम, छलाँग, छवि, छाँह, छाछ, छानबीन, छाप, छाया, छाल, छींक, छींट, छीछालेदर, छूट, छूत, छेनी, छुआछूत।

ज- जंग, जंजीर, जँभाई, जगह, जटा, जड़, जनता, जमात, जलवायु, जमानत, जमावट, जमीन, जलन, जय, जरा, जरूरत, जाँच, जाँघ, जागीर, जान, जायदाद, जिज्ञासा, जिद, जिरह, जिल्द, जिल्लत, जिह्वा, जीत, जीभ, जूँ, जूठन, जेब, जेवनार, जोंक, जोत, ज्वाला।

झ- झंकार, झंझट, झख, झिझक, झड़प, झनकार, झपक, झपट, झपास, झरझर, झकझक, झलमल, झाड़फूंक, झाड़(झाड़ने की क्रिया), झाड़, झाँझ, झाँझर, झाँप, झाड़न, झाल, (तितास), झालर, झिड़क, झील, झूम।

ट- टकसाल, टक्कर, टपक, टहल, टाँक, टाँग, टाँय-टाँय, टाप, टाल-मटोल, टिकिया, टिप-टिप, टिप्पणी, टीक, टीपटाप, टीमटाम, टीस, टूट, टेंट, टेंटे, टेक, टेर, टोह, टोक, ट्रेन।

ठ- ठण्डक, ठक-ठक, ठनक, ठमक, ठिठक, ठिलिया, ठूँठ, ठेक, ठोकर, ठेस।

ड- डग, डगर, डपट, डाक, डाट, डाँक, डाल, डींग, डीठ, डोर, डिबिया।

ढ- ढोलक।

त- तन्द्रा, तकरीर, तकदीर, तकरार, तड़क-भड़क, तड़प, तबीयत, तमत्रा, तरंग, तरकीब, तरफ, तरह, तरावट, तराश, तलब, तलवार, तलाश, तशरीफ, तह, तहजीब, तहसील, तान, ताक-झाँक, ताकत, तादाद, ताकीद, तातील, तारीफ, तालीम, तासीर, तिजारत, तीज, तुक, तुला, तोंद, तोबा, तोप, तोल, तोशक, त्योरी, त्रिया।

AJAY KUMAR

थ- थकान, थकावट, थरथर, थलिया, थाप, थाह।

द- दक्षिण, दगा, दतवन, दमक, दरखास्त, दरगाह, दरार, दलदल, दस्तक, दहाड़, दारू, दहशत, दावत, दिनचर्या, दिव्या, दीक्षा, दीठ, दीद, दीमक, दीवार, दुआ, दुकान, दुविधा, दुत्कार, दुम, दूरबीन, दुनिया, दुर्दशा, दूर, दूब, देखभाल, देखरेख, देन, देह।

ध- धड़क, धड़कन, धरपकड़, धमक, धरा, धरोहर, धाक, धातु, धाय, धार, धारणा, धुन्ध, धुन, धूम, धूप (सूर्य-प्रकाश), धूपछाँह, धौंक, धौंस, ध्वजा।

न- नकल, नस (स्त्रायु), नकाव, नकेल, नजर, नहर, नजाकत, नजात, नफरत, नफासत, नसीहत, नब्ज, नमाज, नाँद, नाक, निगाह, निद्रा, निराशा, निशा, निष्ठा, नींद, नीयत, नुमाइश, नोक, नोकझोंक, नौबत, नालिश, नेत्री।

प- पंचायत, पंगत, पकड़, पखावज, पछाड़, पतवार, पटपट, पतझड़, पताका, पत्तल, पनाह, परख, पसन्द, परवाह, परत, परात, परिक्रमा, परिषद, परीक्षा, पलटन, पहचान, पहुँच, पायल, पिपासा, पिस्तौल, पुलिस, पुश्त, पुड़िया, पुकार, पूछताछ, पूँछ, पेंसिल, पेंशन, पोशाक, पैदावार, पौध, प्रकिया, प्रतिज्ञा, प्रतिभा, प्रतीक्षा, प्रभा।

फ- फजीहत, फटकार, फटकन, फतह, फरियाद, फसल, फिक्र, फुरसत, फुलिया, फुहार, फूंक, फूट, फीस, फौज।

ब- बन्दूक, बकवास, बयार, बगल, बचत, बदबू, बदौलत, बधाई, बनावट, बरात, बर्दाश्त, बर्फ, बला, बहार, बाँह, बातचीत, बाबत, बरसात, बुलाहट, बूँद, बूझ, बेर (दफा या बार), बैठक, बोतल, बोलचाल, बौखलाहट, बौछार।

भ-भगदड़, भड़क, भनक, भभक, भरमार, भभूत, भाँग, भाप, भार्या, भिक्षा, भीख, भीड़, भुजा, भूख, भेंट, भेड़, भैंस, भौंह।

म- मंजिल, मंशा, मचक, मचान, मजाल, मखमल, मटक, मणि, मसनद, ममता, मरम्मत, मर्यादा, मलमल, मशाल, मज्जा, मशीन, मस्जिद, महक, मसल, महफिल, महिमा, माँग, माता, मात्रा, माया, माप, माला, मिठास, मिर्च, मिलावट, मीनार, मुद्रा, मुराद, मुलाकात, मुसकान, मुसीबत, मुस्कराहट, मुहब्बत, मुहर, मूँग, मूँछ, मूर्खता, मेखला, मेहनत, मैना, मैल, मौज, मौत, मृत्यु।

य- यमुना, याचना, यादगार, यातना, यात्रा, यामा, योजना।

र- रक्षा, रचना, रात, राह, रेखा, रंगत, रकम, रंग, रगड़, रफ्तार, रस्म, राख, रामायण, राय, राहत, रियासत, रिमझिम, रीढ़, रुकावट, रूह, रेणु, रेत (बालू), रेल, रोक, रोकड़, रोर, रौनक, रोकटोक,रोटी।

ल- लौंग, लड़ाई, लता, ललकार, लात, लहर, लार, लालटेन, लंका, लकीर, लगन, लगाम, लटक, लताड़, लचर, लज्जा, लट, लपक, ललक, ललकार, लहर, लात, लाज, लालमिर्च, लाश, लीक, लोटपोट, लू।

व- वकालत, वायु, विद्या, विनय, वसीयत, विजय, विदाई, विधवा, व्यथा, विदुषी।

श- शंका, शक्कर, शराब, शान, शाम, शरण, शर्त, शतरंज, शक्ल, शराफत, शबनम, शान, शाखा, शिखा, शिकायत, श्रद्धा। स- सरसों, संस्कृत, संस्था, सजावट, सड़क, समझ, सभ्यता, समस्या, सरकार, ससुराल, साँझ, साँस, सिगरेट, सीमा, सुधा, सुविधा, सुबह, सूझ, सेना, सैर, साजिश, सनक, सन्तान (औलाद), सम्पदा, संसद।

ह-हजामत, हड़ताल, हत्या, हवा, हलचल, हाय, हाट, हालत, हिंसा, हिचक, हिम्मत, हींग, हरकत, हड़प, हद, हकीकत, हिफाजत, हैसियत, हिम्मत।

## पुलिंग शब्दों की सूची और उनका वाक्य-प्रयोग :

| शब्द | वाक्य | शब्द | वाक्य |
|---|---|---|---|
| प्राण- | उसके प्राण उड़ गये। | घी- | घी महँगा है। |
| अपराध- | उनका अपराध क्षमा के योग्य है। | अकाल- | राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा है। |
| आईना- | आईना टूट गया। | आयोजन- | पूजा का आयोजन हो रहा है। |
| अम्बार- | किताबों का अम्बार लगा हुआ है। | आँसू- | उनके आँसू निकल पड़े। |
| इत्र- | यह गुलाब का इत्र है। | ईंधन- | ईंधन जल गया। |

AJAY KUMAR

कंबल- कंबल मोटा है।

कवच- यह लोहे का कवच है।

कुआँ- कुआँ गहरा है।

गिरगिट-गिरगिट रंग बदलता है।

खलिहान-यह राम का खलिहान है।

चाबुक- उसका चाबुक गिर पड़ा।

छप्पर- वह फूस का छप्पर है।

जख्म- जख्म हरा हो गया।

जेल- यह पटना का जेल है।

टिकट- यह रेल का टिकट है।

तीर- हाथ से तीर छूट गया।

दंगा- दंगा अच्छा नहीं होता है।

नकद- आपके पास नकद कितना है ?

नीलाम- जमीन को नीलाम होना है।

पहिया- पहिया टूट गया।

बोझ- बोझ हल्का है।

मोती- मोती चमक रहा है।

रूमाल- रूमाल फट गया।

सींग- गाय को दो सींग होता है।

होश- उनके होश उड़ गये।

दही- दही खट्टा है।

घर- घर सुंदर बना है।

कफन- कफन छोटा है।

कीचड़- कीचड़ सुख गया है।

कुहासा- कुहासा छाया है।

गुनाह- उनका गुनाह क्या है ?

घाव- घाव पक गया है।

चुनाव- चुनाव आ गया।

जहाज- जहाज डूब गया।

जुलूस- जुलूस लंबा है।

जौ- जौ खाने में अच्छा नहीं लगता।

तकिया- यह छोटू का तकिया है।

तौलिया-यह डी० सी० एम० का तौलिया है।

दाग- पान का दाग नहीं छूटता।

नीड़- मेरा नीड़ उजड़ गया।

पतंग- पतंग उड़ रहा है।

फर्ज- मेरे प्रति उनका क्या फर्ज है ?

भोर- भोर हो गया।

मोम- मोम पिघल रहा है।

शोक- उन्हें नाचने का शोक है।

हार- यह हार महँगा है।

पानी- पानी गंदा है।

बचपन- बचपन बड़ा सुंदर होता है।

पर्वत- पर्वत ऊँचा है।

AJAY KUMAR

उमंग- यह अच्छी उमंग है।

गीत- वह गीत अच्छा है।

क्रोध- क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है।

वृक्ष- वृक्ष सूख गया।

## स्त्रीलिंग शब्दों की सूची और उनका वाक्य-प्रयोग :

| शब्द | वाक्य | शब्द | वाक्य |
|---|---|---|---|
| आदत- | मुझे पान खाने की आदत है। | आय- | मेरी आय थोड़ी है। |
| आँख- | उनकी आँख बड़ी-बड़ी है। | आग- | आग लग गयी। |
| इच्छा- | मेरी इच्छा घूमने की है। | ईट- | ईट पकी नहीं है। |
| ईष्र्या- | दूसरे की संपत्ति से ईष्र्या नहीं करनी चाहिए। | उम्र- | तुम्हारी उम्र लम्बी है। |
| ऊब- | नीरस बातों से ऊब होती है। | कब्र- | कब्र खोदी गयी। |
| कमर- | मेरी तो कमर टूट गयी। | कसम- | मुझे उनकी कसम है। |
| कलम- | कलम टूट गयी। | खटिया- | उसने मेरी खटिया खड़ी कर दी। |
| खोज- | खोये हुए बच्चे की खोज जारी है। | खबर- | उनकी मृत्यु की खबर गलत निकली। |
| गर्दन- | मेरी गर्दन फँसी है। | घूस- | घूस बुरी चीज है। |
| घात- | बिल्ली चूहे की घात में है। | चमक- | उनके चेहरे की चमक गायब हो गयी। |
| चिढ- | राम की चिढ महँगी पड़ी। | चाल- | घोड़े की चाल अच्छी है। |
| चील- | आकाश में चील उड़ रही है। | छत- | छत टूट गयी। |
| जाँच- | जाँच हो रही है। | जीभ- | जीभ कट गयी। |
| जूँ- | मेरे बाल में जूँ रेंगती है। | झंझट- | झंझट किसी से नहीं करनी चाहिए। |
| टाँग- | मेरी टाँग टूट गयी। | ठेस- | ठेस लग गयी। |
| किताब- | किताब पुरानी है। | तबीयत- | उसकी तबीयत ठीक नहीं है। |
| थकावट- | बिस्तर पर जाते ही थकावट दूर हो गयी। | दीवार- | दीवार गिर गयी। |

AJAY KUMAR

देह- उनकी देह मोटी है।

नकल- मेरी नकल मत करो।

नब्ज- मैं उसकी नब्ज पहचानता हूँ।

फटकार- उसने फटकार लगायी।

बर्फ- बर्फ गिर रही है।

बूँद- पानी की बूँदे गिरी है।

भीड़- वहाँ भीड़ लगी थी।

मूँछ- उनकी मूँछे नुकीली हैं।

लाश- लाश सड़ गयी।

लू- लू चल रही है।

विजय- उसकी विजय हुई।

सड़क- सड़क चौड़ी है।

धूप- धूप निकल आयी है।

नहर- नहर गाँव से होकर जाती है।

प्रतिज्ञा- मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

बंदूक- यह किसकी बंदूक है ?

बालू- बालू पीली है।

भीख- भीख देनी चाहिए।

भूख- मुझे भूख लगी है।

यात्रा- यात्रा अच्छी रही।

लीक- यह लीक कैसी है।

शराब- शराब महँगी है।

सजा- उसको सजा हो गयी है।

साँझ- साँझ घिर आयी है।

## स्त्रीलिंग /पुलिंग शब्दों की सूची और उनका वाक्य-प्रयोग :

| शब्द | वाक्य | शब्द | वाक्य |
|---|---|---|---|
| प्राण (पु०)- | प्राण उड़ गए। | मोती (पु०)- | मोती चमकता है। |
| घी (पु०)- | घी उजला है। | छत (स्त्री०)- | छत गिर गई। |
| मूँछ (स्त्री०)- | पिताजी की मूँछ पक रही है। | दाल (स्त्री०)- | दाल अच्छी बनी है। |
| खेत (पु०)- | मेरा खेत हरा-भरा है। | पीठ (स्त्री०)- | मेरी पीठ में दर्द है। |
| चादर (स्त्री)- | चादर फट गई है। | होश (पु०)- | उसके होश उड़ गए। |
| धूप (स्त्री /पु०)- | धूप कड़ी है।/यज्ञ में धूप जल रहा है। | पहिया (पु०)- | बैलगाड़ी में दो पहिये होते है। |
| बुढापा (पु०)- | देखते-देखते बुढापा आ गया। | दीमक (स्त्री०)- | किताबों में दीमक लग गई है। |

AJAY KUMAR

दर्शन (पु०)- आपके दर्शन हुए, अहोभाग्य।

खीर (स्त्री०)- खीर अच्छी बनी है।

अफवाह (स्त्री०)- अफवाह फैल गई कि उसकी हत्या कर दी गई है।

अफीम (स्त्री०)- अफीम जहरीली होती है।

आँख (स्त्री०)- मेरी आँख में दर्द हो रहा है।

अरहर (स्त्री०)- जनवरी में अरहर फूलने लगती है।

चोंच (स्त्री०)- इस पंक्षी की चोंच लंबी है।

नाक (स्त्री०)- भरी सभा में सौदागर की नाक कट गई।

हार (स्त्री० /पु०)- रावण की हार हो गई /रानी का हार खो गया।

लगाम (स्त्री०)- घोड़े की लगाम हाथ में थी।

आयु (स्त्री०)- भगवान करे, आपकी आयु लंबी हो।

ऋतु (स्त्री०)- वर्षा ऋतु आ गई।

सरसों (स्त्री०)- फागुन चढ़ते ही सरसों कटने लगती है।

खोज (स्त्री०)- हनुमान ने सीता की खोज की।

खटिया (स्त्री०)- मेरी खटिया पुरानी हो गई है।

चाँदी (स्त्री०)- सोनार के यहाँ से चाँदी चोरी हो गई।

साँस (स्त्री०)- साँप को देखकर मेरी साँस फूल गई।

भूख (स्त्री०)- मुझे जोरों से भूख लगी है।

चश्मा (पु०)- चश्मा हमारी आँखों की रक्षा करता है।

जूँ (स्त्री०)- मूर्ख के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती।

आग (स्त्री०)- आग धधक उठी है।

कीचड़ (पु०)- गली में कीचड़ फैल गया है।

अनबन (स्त्री०)- दोनों भाइयों में अनबन चल रही है।

मोती (पु०)- मोती चमकीला होता है।

घूँट (पु०)- मैं खून का घूँट पीकर रह गया।

भीड़ (स्त्री०)- भीड़ एकत्र हो गई।

बाढ़ (स्त्री०)- पिछले साल भीषण बाढ़ आई थी।

प्यास (स्त्री०)- कौवे को प्यास लगी थी।

नींद (स्त्री०)- खाने के बाद मुझे नींद लगने लगी।

शपथ (स्त्री०)- मैंने शपथ खाई कि उसे हराकर ही रहूँगा।

लालच (पु०)- ज्यादा लालच नहीं करना चाहिए।

चरित्र (पु०)- चरित्र चला जाता है, तो सब कुछ चला जाता है।

आदत (स्त्री०)- उसे तम्बाकू खाने की आदत पड़ गई है।

नेत्र (पु०)- मेरा नेत्र लाल है।

कचनार(स्त्री)-ग्रीष्म ऋतु में भीषण ताप में भी कचनार हरी-भरी रहती है।

ओस (स्त्री०)- जाड़े में ओस पड़ती है।

उल्लास (पु०)- हारने से सारा उल्लास ही समाप्त हो गया।

सरकार (स्त्री०)-केंद्र की सरकार राजनीतिक दलों के सहयोग से बनी है।

पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम और प्रत्यय

हिन्दी-स्त्रीप्रत्यय

AJAY KUMAR

(1) अकारान्त तथा आकारान्त पुलिंग शब्दों को ईकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते है। जैसे-

आकारान्त शब्द

लड़का- लड़की

गूँगा- गूँगी

देव- देवी

नर- नारी

गधा- गधी

नाला- नाली

मोटा- मोटी

बन्दर- बन्दरी

(2) 'आ' या 'वा' प्रत्ययान्त पुलिंग शब्दों में 'आ' या 'वा' की जगह इया लगाने से वे स्त्रीलिंग बनते है। जैसे-

कुत्ता- कुतिया

बूढा- बुढ़िया

बाछा- बछिया

(3) व्यवसायबोधक, जातिबोधक तथा उपनामवाचक शब्दों के अन्तिम स्वर का लोप कर उनमें कहीं इन और कहीं आइन प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है जैसे-

माली- मालिनी

धोबी- धोबिनी

तेली- तेलिनी

बाघ- बाघिनी

बनिया- बनियाइन

AJAY KUMAR

(4) कुछ उपनामवाची शब्द ऐसे भी है, जिनमे आनी प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे-

ठाकुर- ठाकुरानी

पण्डित- पण्डितानी

चौधरी- चौधरानी

देवर- देवरानी

जेठ- जेठरानी

मेहतर- मेहतरानी

सेठ- सेठरानी

(4) जाती या भाव बतानेवाली संज्ञाओं का पुलिंग से स्त्रीलिंग करने में यदि शब्द का अन्य स्वर दीर्घ है, तो उसे ह्रस्व करते हुए नी प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जैसे-

स्यार- स्यारनी

हिन्दू- हिन्दुनी

ऊँट- ऊँटनी

हाथी- हथिनी

(5) कुछ शब्द स्वतन्त्ररूप से स्त्री-पुरुष के जोड़े होते है। ये स्वतन्त्ररूप से स्त्रीलिंग या पुलिंग शब्द होते है। जैसे-

माँ- बाप

मर्द- औरत

पुत्र- कन्या

राजा- रानी

भाई- बहन

पुरुष- स्त्री

AJAY KUMAR

गाय- बैल

वर- दामाद

साहब - मेम

माता- पिता

बेटा- पुतोहू

## संस्कृत स्त्रीप्रत्यय

(6) संस्कृत के 'वान्' और 'मान्' प्रत्ययान्त विशेषण शब्दों में 'वान्' तथा 'मान्' को क्रमशः वती और मती कर देने से स्त्रीलिंग बन जाता है। जैसे-

बुद्धिमान्- बुद्धिमती

पुत्रवान्- पुत्रवती

श्रीमान्- श्रीमती

भाग्यवान्- भाग्यवती

आयुष्मान्- आयुष्मती

भगवान्- भगवती

धनवान्- धनवती

(7) संस्कृत के बहुत-से अकारान्त विशेषण शब्दों के अन्त में आ लगा देने से स्त्रीलिंग हो जाते है। जैसे-

तनुज- तनुजा

चंचल- चंचलता

आत्मज- आत्मजा

सुत- सुता

प्रिय- प्रिया

पूज्य- पूज्या

AJAY KUMAR

श्याम- श्यामा

(8) जिन पुलिंग शब्दों के अन्त में 'अक' होता है, उनमें 'अक' के स्थान पर इका कर देने से वे शब्द स्त्रीलिंग बन जाते है। जैसे-

सेवक- सेविका

पालक- पालिका

बालक- बालिका

भक्षक- भक्षिकानायक

पाठक- पाठिका

(9) संस्कृत की अकारान्त संज्ञाएँ पुलिंग रूप में आकारान्त कर देने और स्त्रीलिंग रूप में ईकारान्त कर देने से पुलिंग-स्त्रीलिंग होती है। जैसे-

| शब्द | पुंलिंग शब्द | स्त्रीलिंग शब्द |
|---|---|---|
| धातृ | धाता | धात्री |
| दातृ | दाता | दात्री |
| नेतृ | नेता | नेत्री |

AJAY KUMAR

# उपसर्ग (Prefixes)

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में - जो शब्दांश शब्दों के आदि में जुड कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते है, वे उपसर्ग कहलाते है।

जैसे- प्रसिद्ध, अभिमान, विनाश, उपकार।

इनमे कमशः 'प्र', 'अभि', 'वि' और 'उप' उपसर्ग है।

यह दो शब्दों (उप+ सर्ग) के योग से बनता है। 'उप' का अर्थ 'समीप', 'निकट' या 'पास में' है। 'सर्ग' का अर्थ है सृष्टि करना। 'उपसर्ग' का अर्थ है पास में बैठाकर दूसरा नया अर्थवाला शब्द बनाना। 'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया गया, तो एक नया शब्द 'प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना' । उपसर्गो का स्वतन्त्र अस्तित्व न होते हुए भी वे अन्य शब्दों के साथ मिलाकर उनके एक विशेष अर्थ का बोध कराते हैं।

उपसर्ग शब्द के पहले आते है। जैसे -'अन' उपसर्ग 'बन' शब्द के पहले रख देने से एक शब्द 'अनबन 'बनता है, जिसका विशेष अर्थ 'मनमुटाव' है। कुछ उपसर्गो के योग से शब्दों के मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि तेजी आती है। जैसे- 'भ्रमण' शब्द के पहले 'परि' उपसर्ग लगाने से अर्थ में अन्तर न होकर तेजी आयी। कभी-कभी उपसर्ग के प्रयोग से शब्द का बिलकुल उल्टा अर्थ निकलता है।

उपसर्ग के प्रयोग से शब्दों को तीन स्थितियाँ होती है - (i)शब्द के अर्थ में एक नई विशेषता आती है;

(ii)शब्द के अर्थ में प्रतिकूलता उत्पत्र होती है,

(iii) शब्द के अर्थ में कोई विशेष अन्तर नही आता।

## उपसर्ग की संख्या

हिंदी में प्रचलित उपसर्गो को निम्नलिखित भागो में विभाजित किया जा सकता है-

(1) संस्कृत के उपसर्ग

(2) हिंदी के उपसर्ग

(3) उर्दू के उपसर्ग

(4) अंग्रेजी के उपसर्ग

(5) उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

AJAY KUMAR

(1) संस्कृत के उपसर्ग-

| उपसर्ग | अर्थ | उपसर्ग से बने शब्द |
|---|---|---|
| अति | अधिक, ऊपर, उस पार | अतिकाल, अत्याचार, अतिकर्मण,अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त, अत्युक्ति, अतिक्रमण,इत्यादि। |
| अधि | ऊपर, श्रेष्ठ | अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि। |
| अप | बुरा, अभाव, हीनता, विरुद्ध | अपकार, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपहरण, अपकीर्ति, अपप्रयोग, अपव्यय, अपवाद इत्यादि। |
| अ | अभाव | अज्ञान, अधर्म, अस्वीकार इत्यादि। |
| अनु | पीछे,समानता,क्रम,पश्चात | अनुशासन,अनुज,अनुपात अनुवाद,अनुचर,अनुकरण,अनुरूप,अनुस्वार,अनुशीलन इत्यादि। |
| आ | ओर,सीमा,समेत,कमी,विपरीत | आकाश,आदान,आजीवन,आगमन,आरम्भ,आचरण,आमुख,आकर्षण,आरोहण इत्यादि। |
| अव | हीनता, अनादर, पतन | अवगत,अवलोकन,अवनत,अवस्था,अवसान,अवज्ञा,अवरोहण,अवतार,अवनति,अवशेष,इत्यादि। |
| उप | निकटता,सदृश,गौण,सहायक,हीनता | उपकार,उपकूल,उपनिवेश,उपदेश,उपस्थिति,उपवन,उपनाम,उपासना,उपभेद इत्यादि। |
| नि | भीतर, नीचे, अतिरिक्त | निदर्शन,निपात,नियुक्त,निवास,निरूपण,निवारण,निम्न,निषेध,निरोध,निदान,निबन्ध इत्यादि। |
| निर् | बाहर, निषेध, रहित | निर्वास, निराकरण, निर्भय, निरपराध, निर्वाह, निर्दोष, निर्जीव, नीरोग, निर्मल इत्यादि। |
| परा | उलटा, अनादर, नाश | पराजय, पराक्रम, पराभव, परामर्श, पराभूत इत्यादि। |
| परि | आसपास, चारों ओर, पूर्ण | परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण इत्यादि। |
| प्र | अधिक, आगे, ऊपर, यश | प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रभु, प्रयोग, प्रगति, प्रसार, प्रयास इत्यादि। |
| प्रति | विरोध, बराबरी, प्रत्येक, परिवर्तन | प्रतिक्षण, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रत्येक, प्रतिदान, प्रतिकूल, प्रत्यक्ष इत्यादि। |
| वि | भिन्नता,हीनता,असमानता,विशेषता | विकास,विज्ञान,विदेश,विधवा,विवाद,विशेष,विस्मरण,विराम,वियोग,विभाग,विकार, विमुख,विनय,विनाश,इत्यादि। |
| सम् | पूर्णता, संयोग | संकल्प,संग्रह,सन्तोष,संन्यास,संयोग,संस्कार,संरक्षण,संहार,सम्मेलन,संस्कृत,सम्मुख, संग्राम इत्यादि। |
| सु | सुखी, अच्छा भाव, सहज, सुन्दर | सुकृत, सुगम, सुलभ, सुदूर, स्वागत, सुयश, सुभाषित, सुवास, सुजन इत्यादि। |
| अध | आधे के अर्थ में | अधजला, अधपका, अधखिला, अधमरा, अधसेरा इत्यादि। |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| अ-अन | निषेध के अर्थ में | अमोल, अपढ़, अजान, अथाह, अलग, अनमोल, अनजान इत्यादि। |
| उन | एक कम | उत्रीस, उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर इत्यादि। |
| औ | हीनता, निषेध | औगुन, औघट, औसर, औढर इत्यादि। |
| दु | बुरा, हीन | दुकाल, दुबला इत्यादि। |
| नि | निषेध, अभाव, विशेष | निकम्मा, निखरा, निडर, निहत्था, निगोड़ा इत्यादि। |
| बिन | निषेध | बिनजाना, बिनब्याहा, बिनबोया, बिनदेखा, बिनखाया, बिनचखा, बिनकाम इत्यादि। |
| भर | पूरा, ठीक | भरपेट, भरसक, भरपूर, भरदिन इत्यादि। |
| कु-क | बुराई, हीनता | कुखेत, कुपात्र, कुकाठ, कपूत, कुढंग इत्यादि। |

(2)हिंदी के उपसर्ग-

| उपसर्ग | अर्थ | उपसर्ग से बने शब्द |
|---|---|---|
| अन | निषेध अर्थ में | अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि। |
| अध् | आधे अर्थ में | अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि। |
| उन | एक कम | उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि। |
| भर | पूरा ,ठीक | भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि। |
| दु | बुरा, हीन, विशेष | दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि। |
| नि | आभाव, विशेष | निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि। |
| अ | अभाव, निषेध | अछूता, अथाह, अटल |
| क | बुरा, हीन | कपूत, कचोट |
| कु | बुरा | कुचाल, कुचैला, कुचक्र |
| अव | हीन, निषेध | औगुन, औघर, औसर, औसान |
| भर | पूरा | भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार |

AJAYKUMAR

| | | |
|---|---|---|
| सु | अच्छा | सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल |
| पर | दूसरा, बाद का | परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित |
| बिन | बिना, निषेध | बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने |

(3)उर्दू के उपसर्ग-

| उपसर्ग | अर्थ | उपसर्ग से बने शब्द |
|---|---|---|
| ला | बिना | लाचार, लाजवाब, लापरवाह, लापता इत्यादि। |
| बद | बुरा | बदसूरत, बदनाम, बददिमाग, बदमाश, बदकिस्मत इत्यादि। |
| बे | बिना | बेकाम, बेअसर, बेरहम, बेईमान, बेरहम इत्यादि। |
| कम | थोड़ा, हीन | कमसिन, कामखयाल, कमज़ोर, कमदिमाग, कमजात, इत्यादि। |
| ग़ैर | के बिना, निषेध | गैरकानूनी, गैरजरूरी, ग़ैर हाज़िर, गैर सरकारी, इत्यादि। |
| खुश | श्रेष्ठता के अर्थ में | खुशनुमा, खुशगवार, खुशमिज़ाज, खुशबू, खुशदिल, खुशहाल इत्यादि। |
| ना | अभाव | नाराज, नालायक, नादनामुमकिन, नादान, नापसन्द, नादान इत्यादि। |
| अल | निश्चित | अलबत्ता, अलगरज आदि। |
| बर | ऊपर, पर, बाहर | बरखास्त, बरदाश्त, बरवक्त इत्यादि। |
| बिल | के साथ | बिलआखिर, बिलकुल, बिलवजह |
| हम | बराबर, समान | हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा इत्यादि। |
| दर | में | दरअसल, दरहक़ीक़त |
| फिल/फीमें | प्रति | फिलहाल, फीआदमी |
| ब | और, अनुसार | बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर |
| बा | सहित | बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब, बामौक़ा |
| सर | मुख्य | सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| बिला | बिना | बिलावजह, बिलाशक |
| हर | प्रत्येक | हरदिन हरसाल हरएक हरबार |

(4) अंग्रेजी के उपसर्ग -

| उपसर्ग | अर्थ | उपसर्ग से बने शब्द |
|---|---|---|
| सब | अधीन, नीचे | सब-जज, सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर |
| डिप्टी | सहायक | डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर |
| वाइस | सहायक | वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-पप्रेसीडेंट |
| जनरल | प्रधान | जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी |
| चीफ | प्रमुख | चीफ-मिनिस्टर, चीफ-इंजीनियर, चीफ-सेक्रेटरी |
| हेड | मुख्य | हेडमास्टर, हेड क्लर्क |

(5) उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय -

| उपसर्ग | अर्थ | उपसर्ग से बने शब्द |
|---|---|---|
| अधः | नीचे | अधःपतन, अधोगति, अधोमुखी, अधोलिखित |
| अंतः | भीतरी | अंतःकरण, अंतःपुर, अंतर्मन, अंतर्देशीय |
| अ | अभाव | अशोक, अकाल, अनीति |
| चिर | बहुत देर | चिरंजीवी, चिरकुमार, चिरकाल, चिरायु |
| पुनर | फिर | पुनर्जन्म, पुनर्लेखन, पुनर्जीवन |
| बहिर | बाहर | बहिर्गमन, बहिर्जगत |
| सत | सच्चा | सज्जन, सत्कर्म, सदाचार, सत्कार्य |
| पुरा | पुरातन | पुरातत्व, पुरावृत्त |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| सम | समान | समकालीन, समदर्शी, समकोण, समकालिक |
| सह | साथ | सहकार, सहपाठी, सहयोगी, सहचर |

.....

AJAY KUMAR

# प्रत्यय (Suffix)

प्रत्यय उस शब्दांश को कहते है, जो किसी शब्द के अन्त में जुडकर उस शब्द के भिन्न अर्थ को प्रकट करता है।

दूसरे अर्थ में-शब्दों के बाद जो अक्षर या अक्षर समूह लगाया जाता है, उसे प्रत्यय कहते है।

जैसे- 'भला' शब्द में 'आई' प्रत्यय लगाकर 'भलाई' शब्द बनता है।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है- प्रति+अय। 'प्रति'का अर्थ 'साथ में, 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है। जैसे- 'भला' शब्द में 'आई' प्रत्यय लगाने से 'भलाई' शब्द बनता है। यहाँ प्रत्यय 'आई' है।

## प्रत्यय के भेद

मूलतः प्रत्यय के दो प्रकार है -

(1) कृत् प्रत्यय

(2) तद्धित प्रत्यय

(1) कृत् प्रत्यय:- क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होनेवाले प्रत्ययों को 'कृत्' प्रत्यय कहते है और उनके मेल से बने शब्द को 'कृदन्त' कहते है।

दूसरे शब्दो में- वे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप यानी धातु(root word) में जोड़ जाते है, कृत् प्रत्यय कहलाते है।

जैसे- लिख् + अक =लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है तथा लेखक कृदंत शब्द है।

ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया अर्थ देते है। कृत् प्रत्यय के योग से संज्ञा और विशेषण बनते है। हिंदी में क्रिया के नाम के अंत का 'ना' (कृत् प्रत्यय) हटा देने पर जो अंश बच जाता है, वही धातु है। जैसे- कहना की कह्, चलना की चल् धातु में ही प्रत्यय लगते है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

(1)

AJAY KUMAR

| कृत्-प्रत्यय | क्रिया | शब्द |
|---|---|---|
| वाला | गाना | गानेवाला |
| हार | होना | होनहार |
| इया | छलना | छलिया |

(2)

| कृत्-प्रत्यय | धातु | शब्द |
|---|---|---|
| अक | कृ | कारक |
| अन | नी | नयन |
| ति | शक् | शक्ति |

(3)

| कृत्-प्रत्यय | क्रिया या धातु | शब्द (संज्ञा) |
|---|---|---|
| तव्य (संस्कृत) | कृ | कर्तव्य |
| यत् | दा | देय |
| वैया (हिंदी) | खेना-खे | खेवैया |
| अना (संस्कृत) | विद् | वेदना |
| आ (संस्कृत) | इश् (इच्छ्) | इच्छा |

(4)

| कृत्-प्रत्यय | धातु | विशेषण |
|---|---|---|
| क्त | भू | भूत |
| क्त | मद् | मत्त |
| क्त (न) | खिद् | खिन्न |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| क्त (ण) | जृ | जीर्ण |
| मान | विद् | विद्यमान |
| अनीय (संस्कृत) | दृश् | दर्शनीय |
| य (संस्कृत) | दा | देय |
| य (संस्कृत) | पूज् | पूज्य |
| आऊ (हिंदी) | टिकना- टिक | टिकाऊ |
| आका (हिंदी) | लड़ना- लड़ | लड़ाका |
| आड़ी (हिंदी) | खेलना- खेल | खेलाड़ी |

## कृदन्त के भेद

हिंदी में रूप के अनुसार 'कृदन्त्' के दो भेद है-(i)विकारी (ii)अविकारी

विकारी कृदन्तों का प्रयोग प्रायः संज्ञा या विशेषण के सदृश होता है और कृदन्त अव्यय का प्रयोग क्रियाविशेषण या कभी-कभी सम्बन्धसूचक के समान होता है।

विकारी कृदन्त के चार भेद होते है-

(i)क्रियार्थक संज्ञा (ii)कर्तृवाचक संज्ञा (iii)वर्तमानकालिक कृदन्त (iv)भूतकालिक कृदन्त

हिन्दी क्रियापदों के अन्त में कृत्-प्रत्ययों के योग से (i) कर्तृवाचक संज्ञा (ii) कर्मवाचक (iii) करणवाचक (iv) भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। इनके साथ ही कर्तृवाचक और क्रियाद्योतक- दो प्रकार के विशेषण भी बनते हैं। आगे संस्कृत और हिंदी के कृत्-प्रत्ययों के उदाहरण दिये जाते हैं।

## संस्कृत के कृत्-प्रत्यय और संज्ञाएँ

AJAY KUMAR

| कृत्-प्रत्यय | धातु | भाववाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| अ | कम् | काम |
| अना | विद् | वेदना |
| अना | वन्द् | वन्दना |
| आ | इष् | इच्छा |
| आ | पूज् | पूजा |
| ति | शक् | शक्ति |
| या | मृग | मृगया |
| तृ | भुज् | भोक्तृ (भोक्ता) |
| उ | तन् | तनु |
| इ | त्यज् | त्यागी |

| कृत्-प्रत्यय | धातु | कर्तृवाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| अक | गै | गायक |
| अ | सृप् | सर्प |
| अ | दिव् | देव |
| तृ | दा | दातृ (दाता) |
| य | कृ | कृत्य |
| अ | प्र+ह् | प्रहार |

## हिंदी के कृत्-प्रत्यय (Primary suffixes)

हिंदी के कृत् या कृदन्त प्रत्यय इस प्रकार हैं- अ, अन्त, अक्कड़, आ, आई, आड़ी, आलू, आऊ, अंकू, आक, आका, आकू, आन, आनी, आप, आपा, आव, आवट, आवना, आवा, आस, आहट, इयल, ई, इया, ऊ, एरा, ऐया, ऐत, ओड़ा, औता, औती, औना, औनी, आवनी, औवल, क,

AJAY KUMAR

का, की, गी, त, ता, ती, न, नी, वन, वाँ, वाला, वैया, सार, हारा, हार, हा इत्यादि। हिंदी के कृत्-प्रत्ययों से भाववाचक, करणवाचक, कर्तृवाचक संज्ञाएँ और विशेषण बनते हैं।

इनके उदाहरण, प्रत्यय-चिह्नों के साथ आगे दिये जाते है।

## भाववाचक कृदन्तीय संज्ञाएँ

भाववाचक कृदन्त-संज्ञाओं की रचना धातु के मूल के अन्त में अ, अन्त, आ, आई, आन, आप, आपा, आव, आवा, आस, आवना, आवनी, आवट, आहट, ई, औता, औती, औवल, औनी, क, की, गी, त, ती, न, नी इत्यादि प्रत्ययों को जोड़ने से होती है। उदाहरणार्थ-

| प्रत्यय | धातु | भाववाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| अ | भर | भार |
| अन्त | भिड़ | भिड़न्त |
| आ | फेर | फेरा |
| आई | लड़ | लड़ाई |
| आन | उठ | उठान |
| आप | मिल | मिलाप |
| आपा | पूज | पुजापा |
| आव | खिंच | खिंचाव |
| आवा | भूल | भुलावा |
| आस | निकस | निकास |
| आवना | पा | पावना |
| आवनी | पा | पावनी |
| आवट | सज | सजावट |
| आहट | चिल्ल | चिल्लाहट |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| ई | बोल | बोली |
| औता | समझ | समझौता |
| औती | मान | मनौती |
| औवल | भूल | भुलौवल |
| औनी | पीस | पिसौनी |
| क | बैठ | बैठक |
| की | बैठ | बैठकी |
| गी | देन | देनगी |
| त | खप | खपत |
| ती | चढ़ | चढ़ती |
| न | दे | देन |
| नी | चाट | चटनी |

## करणवाचक संज्ञाएँ

करणवाचक कृदन्तीय संज्ञाएँ बनाने के लिए धातु के अन्त में आ, आनी, ई, ऊ, औटी, न, ना, नी इत्यादि प्रत्यय लगते हैं। उदाहरणार्थ-

| प्रत्यय | धातु | करणवाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| आ | झूल | झूला |
| आनी | मथ | मथानी |
| ई | रेत | रेती |
| ऊ | झाड़ | झाड़ू |
| औटी | कस | कसौटी |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| न | बेल | बेलन |
| ना | बेल | बेलना |
| नी | बेल | बेलनी |

## कर्तृवाचक कृदन्त-विशेषण

कर्तृवाचक कृदन्त-विशेषण बनाने के लिए धातु के अन्त में अंकू, आऊ, आक, आका, आड़ी, आलू, इया, इयल, एरा, ऐत, आकू, अक्कड़, वन, वाला, वैया, सार, हार, हारा इत्यादि प्रत्यय लगाये जाते हैं। उदाहरणार्थ-

| प्रत्यय | धातु | विशेषण |
|---|---|---|
| आऊ | टिक | टिकाऊ |
| आक | तैर | तैराक |
| आका | लड़ | लड़का |
| आड़ी | खेल | खिलाड़ी |
| आलू | झगड़ | झगड़ालू |
| इया | बढ़ | बढ़िया |
| इयल | अड़ | अड़ियल |
| इयल | मर | मरियल |
| ऐत | लड़ | लड़ैत |
| ऐया | बच | बचैया |
| ओड़ | हँस | हँसोड़ |
| ओड़ा | भाग | भगोड़ा |
| अक्कड़ | पी | पिअक्कड़ |
| वन | सुहा | सुहावन |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| वाला | पढ़ | पढ़नेवाला |
| वैया | गा | गवैया |
| सार | मिल | मिलनसार |
| हार | रख | राखनहार |
| हारा | रो | रोवनहारा |

क्रियाद्योतक विशेषण

क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण बनाने में आ, ता आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। 'आ' भूतकाल का और 'ता' वर्तमानकाल का प्रत्यय है।

अतः क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण के दो भेद है- (i) वर्तमानकाल क्रियाद्योतककृदन्त-विशेषण, और (ii) भूतकालिक क्रियाद्योतक कृदन्त-विशेषण। इनके उदाहरण इस प्रकार है-

वर्तमानकालिक विशेषण-

| प्रत्यय | धातु | वर्तमानकालिक विशेषण |
|---|---|---|
| ता | बह | बहता |
| ता | मर | मरता |
| ता | गा | गाता |

भूतकालिक विशेषण-

| प्रत्यय | धातु | भूतकालिक विशेषण |
|---|---|---|
| आ | पढ़ | पढ़ा |
| आ | धो | धोया |
| आ | गा | गाया |

(2)तद्धित प्रत्ययः- संज्ञा सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय को 'तद्धित' कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितान्त'।

AJAY KUMAR

जैसे- मानव + ता =मानवता

अच्छा+ आई =अच्छाई

अपना +पन=अपनापन

एक +ता =एकता

ड़का + पन = लडकपन

मम + ता = ममता

अपना + पन = अपनत्व

कृत-प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में लगता है, जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में। तद्धित और कृत-प्रत्यय में यही अन्तर है। उपसर्ग की तरह तद्धित-प्रत्यय भी तीन स्रोतों- संस्कृत, हिंदी और उर्दू- से आकर हिन्दी शब्दों की रचना में सहायक हुए है। नीचे इनके उदाहरण दिये गए है।

संस्कृत के तद्धित-प्रत्यय -

| प्रत्यय | संज्ञा-विशेषण | तद्धितान्त | वाचक |
|---|---|---|---|
| अ | कुरु | कौरव | अपत्य |
| अ | शिव | शौव | संबंध |
| अ | निशा | नैश | गुण, सम्बन्ध |
| अ | मुनि | मौन | भाव |
| आयन | राम | रामायण | स्थान |
| इक | तर्क | तार्किक | जानेवाला |
| इत | पुष्प | पुष्पित | गुण |
| ई | पक्ष | पक्षी | गुण |
| ईन | कुल | कुलीन | गुण |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| क | बाल | बालक | ऊन |
| अंश | तः | अंशतः | रीति |
| अंश | जन | जनता | समाहर |
| म | मध्य | मध्यम | गुण |
| तन | अद्य | अद्यतन | काल-सम्बन्ध |
| तः | अंश | अंशतः | रीति |
| ता | लघु | लघुता | भाव |
| ता | जन | जनता | समाहार |
| त्य | पश्चा | पाश्चात्य | सम्बन्ध |
| त्र | अन्य | अन्यत्र | स्थान |
| त्व | गुरु | गुरुत्व | भाव |
| था | अन्य | अन्यथा | रीति |
| दा | सर्व | सर्वदा | काल |
| धा | शत | शतधा | प्रकार |
| निष्ठ | कर्म | कर्मनिष्ठ | कर्तृ, सम्बन्ध |
| म | मध्य | मध्यम | गुण |
| मान् | बुद्धि | बुद्धिमान् | गुण |
| मय | काष्ठ | काष्ठमय | विकार |
| मय | जल | जलमय | व्याप्ति |
| मी | वाक् | वाग्मी | कर्तृ |
| य | मधुर | माधुर्य | भाव |
| य | दिति | दैत्य | अपत्य |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| य | ग्राम | ग्राम्य | सम्बन्ध |
| र | मधु | मधुर | गुण |
| ल | वत्स | वत्सल | गुण |
| लु | निद्रा | निद्रालु | गुण |
| वान् | धन | धनवान् | गुण |
| वी | माया | मायावी | गुण |
| श | रोम | रोमेश | गुण |
| श | कर्क | कर्कश | स्वभाव |
| सात् | भस्म | भस्मसात् | विकार |

अब इन प्रत्ययों द्वारा विभिन्न वाचक संज्ञाओं और विशेषणों से विभिन्न वाचक संज्ञाओं और विशेषणों के निर्माण के प्रकार देखें

जातिवाचक से भाववाचक संज्ञाएँ- संस्कृत की तत्सम जातिवाचक संज्ञाओं के अन्त में तद्धित प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। इसके उदाहरण इस प्रकार है-

| तद्धित प्रत्यय | संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|
| ता | शत्रु | शत्रुता |
| ता | वीर | वीरता |
| त्व | गुरु | गुरुत्व |
| त्व | मनुष्य | मनुष्यत्व |
| अ | मुनि | मौन |
| य | पण्डित | पाण्डित्य |
| इमा | रक्त | रक्तिमा |

AJAY KUMAR

व्यक्तिवाचक से अपत्यवाचक संज्ञाएँ- अपत्यवाचक संज्ञाएँ किसी नाम के अन्त में तद्धित-प्रत्यय जोड़ने से बनती हैं। अपत्यवाचक संज्ञाओं के कुछ उदाहरण ये हैं-

| तद्धित-प्रत्यय | व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ | अपत्यवाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| अ | वसुदेव | वासुदेव |
| अ | मनु | मानव |
| अ | कुरु | कौरव |
| अ | पृथा | पार्थ |
| अ | पाण्डु | पाण्डव |
| य | दिति | दैत्य |
| आयन | बदर | बादरायण |
| एय | राधा | राधेय |
| एय | कुन्ती | कौन्तेय |

विशेषण से भाववाचक संज्ञाएँ- विशेषण के अन्त में संस्कृत के निम्नलिखित तद्धित-प्रत्ययों के मेल से निम्नलिखित भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं-

| तद्धित-प्रत्यय | विशेषण | भाववाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| ता | बुद्धिमान् | बुद्धिमत्ता |
| ता | मूर्ख | मूर्खता |
| ता | शिष्ट | शिष्टता |
| इमा | रक्त | रक्तिमा |
| इमा | शुक्ल | शुक्लिमा |
| त्व | वीर | वीरत्व |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| त्व | लघु | लघुत्व |
| अ | गुरु | गौरव |
| अ | लघु | लाघव |

संज्ञा से विशेषण- संज्ञाओं के अन्त में संस्कृत के गुण, भाव या सम्बन्ध के वाचक तद्धित-प्रत्ययों को जोड़कर विशेषण भी बनते हैं। उदाहरणार्थ-

| प्रत्यय | संज्ञा | विशेषण |
|---|---|---|
| अ | निशा | नैश |
| य | तालु | तालव्य |
| य | ग्राम | ग्राम्य |
| इक | मुख | मौखिक |
| इक | लोक | लौकिक |
| मय | आनन्द | आनन्दमय |
| मय | दया | दयामय |
| इत | आनन्द | आनन्दित |
| इत | फल | फलित |
| इष्ठ | बल | बलिष्ठ |
| निष्ठ | कर्म | कर्मनिष्ठ |
| र | मुख | मुखर |
| र | मधु | मधुर |
| इम | रक्त | रक्तिम |
| ईन | कुल | कुलीन |
| ल | मांस | मांसल |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| वी | मेधा | मेधावी |
| इल | तन्द्रा | तन्द्रिल |
| लु | तन्द्रा | तन्द्रालु |

## हिंदी के तद्धित-प्रत्यय (Nominal suffixes)

ऊपर संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ तद्धित-प्रत्यय लगाकर संज्ञा और विशेषण बनाये गये हैं। अब हम हिंदी के तद्भव शब्दों के अन्त में तद्धित-प्रत्यय लगाकर संज्ञा और विशेषण बनायेंगे। हिंदी के तद्धित-प्रत्यय ये है- आ, आई, ताई, आऊ, आका, आटा, आन, आनी, आयत आर, आरी आरा, आलू, आस आह, इन, ई, ऊ, ए, ऐला एला, ओ, ओट, ओटा औटी, औती, ओला, क, की, जा, टा, टी, त, ता, ती, नी, पन, री, ला, ली, ल, वंत, वाल, वा, स, सरा, सा, हरा, हला, इत्यादि।

तद्धित-प्रत्यय शब्दों के अनेक रूप है-

(1) भाववाचक (2)ऊनवाचक (3)कर्तृवाचक (4)संबंधवाचक और (5) विशेषण प्रमुख हैं। इनके उदाहरण इस प्रकार है-

## भाववाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

भाववाचक तद्धित-प्रत्यय हैं- आ, आयँध, आई, आन, आयत, आरा, आवट, आस, आहट, ई, एरा, औती, त, ती, पन, पा, स इत्यादि। जैसे-

| प्रत्यय | संज्ञा-विशेषण | भाववाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| आ | चूर | चूरा |
| आई | चतुर | चतुराई |
| आन | चौड़ा | चौड़ान |
| आयत | अपना | अपनायत, अपनापन |
| आरा | छूट | छुटकारा |
| आस | मीठा | मिठास |

| | | |
|---|---|---|
| आहट | कड़वा | कड़वाहट |
| ई | खेत | खेती |
| एरा | अन्ध | अँधेरा |
| औती | बाप | बपौती |
| त | रंग | रंगत |
| पन | काला | कालापन |
| पन | लड़का | लड़कपन |
| पा | बूढा | बुढापा |

## ऊनवाचक तद्धितान्त संज्ञाए

ऊनवाचक संज्ञाएँ से वस्तु की लघुता, प्रियता, हीनता इत्यादि के भाव व्यक्त होता हैं।

ऊनवाचक तद्धित-प्रत्यय हैं- आ, इया, ई, ओला, क, की, टा, टी, ड़ा, ड़ी, री, ली, वा, सा इत्यादि। प्रत्ययों के साथ उदाहरण इस प्रकार हैं-

| प्रत्यय | संज्ञा-विशेषण | ऊनवाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| आ | ठाकुर | ठकुरा |
| इया | खाट | खटिया |
| ई | ढोलक | ढोलकी |
| ओला | साँप | सँपोला |
| क | ढोल | ढोलक |
| की | कन | कनकी |
| टा | चोर | चोट्टा |
| टी | बहू | बहुटी |
| ड़ा | बाछा | बछड़ा |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| ड़ी | टाँग | टँगड़ी |
| री | कोठा | कोठरी |
| ली | टीका | टिकली |
| वा | बच्चा | बचवा |
| सा | मरा | मरा-सा |

## सम्बन्धवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

सम्बन्धवाचक तद्धित-प्रत्यय है- आल, हाल, ए, एरा, एल, औती, जा इत्यादि। संज्ञा के अन्त में इन प्रत्ययों को लगाकर सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ बनायी जाती हैं। जैसे-

| प्रत्यय | संज्ञा-विशेषण | सम्बन्धवाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| आल | ससुर | ससुराल |
| हाल | नाना | ननिहाल |
| औती | बाप | बपौती |
| जा | भाई | भतीजा |
| एरा | मामा | ममेरा |
| एल | नाक | नकेल |

## कर्तृवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ

संज्ञा के अन्त में आर, इया, ई, एरा, हारा, इत्यादि तद्धित-प्रत्यय लगाकर कर्तृवाचक तद्धितान्त संज्ञाएँ बनायी जाती हैं। जैसे-

| प्रत्यय | संज्ञा-विशेषण | कर्तृवाचक संज्ञाएँ |
|---|---|---|
| आर | सोना | सुनार |
| आर | लोहा | लुहार |
| ई | तमोल | तमोली |
| ई | तेल | तेली |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| हारा | लकड़ी | लकरहारा |
| एरा | साँप | सँपेरा |
| एरा | काँसा | कसेरा |

## तद्धितीय विशेषण

संज्ञा के अन्त में आ, आना, आर, आल, ई, ईला, उआ, ऊ, एरा, एड़ी, ऐल, औं, वाला, वी, वाँ, वंत, हर, हरा, हला, हा इत्यादि तद्धित-प्रत्यय लगाकर विशेषण बनते हैं। उदाहरण निम्नलिखित हैं-

| प्रत्यय | संज्ञा | विशेषण |
|---|---|---|
| आ | भूख | भूखा |
| आना | हिन्दू | हिन्दुआना |
| आर | दूध | दुधार |
| आल | दया | दयाल |
| ई | देहात | देहाती |
| ऊ | बाजार | बाजारू |
| एरा | चाचा | चचेरा |
| एरा | मामा | ममेरा |
| हा | भूत | भुतहा |
| हरा | सोना | सुनहरा |

## उर्दू के तद्धित-प्रत्यय

बहुतेरे उर्दू शब्द हिंदी में प्रयुक्त होते है। ये शब्द ये फारसी, अरबी, और तुर्की के है।

फारसी तद्धित -प्रत्यय के तीन प्रकार होते है-

संज्ञात्मक, विशेषणात्मक, अरबी तद्धित-प्रत्यय

## संज्ञात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय

AJAY KUMAR

| प्रत्यय | मूलशब्द | सपरतीय शब्द | वाचक |
|---|---|---|---|
| आ | सफेद | सफेदा | भाववाचक |
| आ | खराब | खराबा | भाववाचक |
| कार | काश्त | काश्तकार | कतृवाचक |
| गार | मदद | मददगार | कतृवाचक |
| ईचा | बाग | बगीचा | स्थितिवाचक |
| दान | कलम | कलमदान | स्थितिवाचक |

विशेषणात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय

| प्रत्यय | मूलशब्द | सपरतीय शब्द | प्रत्ययार्थ |
|---|---|---|---|
| आना | मर्द | मर्दाना | स्वभाव |
| इन्दा | शर्म | शर्मिन्दा | संज्ञा |
| नाक | दर्द | दर्दनाक | गुण |
| ई | आसमान | आसमानी | विशेषण |
| ईना | कम | कमीन | ऊनार्थ |
| ईना | माह | महीना | संज्ञा |
| जादा | हराम | हरामजादा | अपत्य |

अरबी तद्धित-प्रत्यय

| प्रत्यय | मूलशब्द | सपरतीय शब्द | वाचक |
|---|---|---|---|
| आनी | जिस्म | जिस्मानी | विशेषण |
| इयत | इंसान | इंसानियत | भाव |
| म | बेग | बेगम | स्त्री |

AJAY KUMAR

इतिहास या स्रोत के आधार पर हिन्दी प्रत्ययों को चार वर्गो में विभाजित किया जाता है-

(1)तत्सम प्रत्यय

(2)तद्भव प्रत्यय

(3) देशज प्रत्यय

(4) विदेशज प्रत्यय

(1)तत्सम प्रत्यय

| प्रत्यय | बोधक/अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| -आ | स्त्री प्रत्यय; भाववाचक संज्ञा प्रत्यय | आदरणीया, प्रिया, माननीया, सुता, इच्छा, पूजा |
| -आनी | स्त्री प्रत्यय | देवरानी, भवानी, मेहतरानी |
| -आलु | विशेषण प्रत्यय, वाला | कृपालु, दयालु, निद्रालु, श्रद्धालु |
| -इत | विशेषण प्रत्यय, युक्त | पल्लवित, पुष्पित, फलित, हर्षित |
| -इमा | भाववाचक संज्ञा प्रत्यय | गरिमा, नीलिमा, मधुरिमा, महिमा |
| -इक | विशेषण व संज्ञा प्रत्यय | दैनिक, वैज्ञानिक, वैदिक, लौकिक |
| -क | स्वार्थ, समूह | घटक, ठंडक, शतक, सप्तक |
| -कार | लिखने या बनाने वाला; वाला | पत्रकार, जानकर |
| -ज | जन्मा हुआ | अंडज, जलज, पंकज, पिंडज, देशज, विदेशज |
| -जीवी | जीनेवाला | परजीवी, बुद्धिजीवी, लघुजीवी, दीर्घजीवी |
| -ज्ञ | जाननेवाला | अज्ञ, मर्मज्ञ, विज्ञ, सर्वज्ञ |
| -तः | क्रिया विशेषण प्रत्यय | मुख्यतया, विशेषतया, सामान्ततया |
| -तर | तुलना बोधक प्रत्यय | उच्चतर, निम्नतर, सुन्दरतर, श्रेष्ठतर |
| -तम | सर्वाधिकता बोधक प्रत्यय | उच्चतम, निकृष्टतम, महत्तम, लघुतम |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| -ता | भाववाचक संज्ञा प्रत्यय | नवीनता, मधुरता, सुन्दरता |
| -त्व | भाववाचक संज्ञा प्रत्यय | कृतित्व, ममत्व, महत्व, सतीत्व |
| -मान | विशेषण वाचक प्रत्यय | उच्चतम, निकृष्टतम, महत्तम, लघुतम |
| -वान | वाला | गुणवान, धनवान, बलवान, रूपवान |

(2)तद्भव प्रत्यय

| प्रत्यय | बोधक/अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| -अंगड़ | वाला | बतंगड़ |
| अंतू | वाला | रटंतू, घुमंतू |
| -अत | संज्ञा प्रत्यय | खपत, पढ़त, रंगत, लिखत |
| -आँध | संज्ञा प्रत्यय | बिषांध, सराँध |
| -आ | भाववाचक | जोड़ा, फोड़ा, झगड़ा, रगड़ा |
| -आई | भाववाचक प्रत्यय | कठिनाई, बुराई, सफाई |
| -आऊ | वाला | खाऊ, टिकाऊ, पंडिताऊ, बिकाऊ |
| आप/आपा | भाववाचक प्रत्यय | मिलाप, अपनापा, पुजापा, बुढ़ापा |
| -आर/आरा/आरी | करनेवाला | कुम्हार, लुहार, चमार, घसियारा, पुजारी, भिखारी |
| -आलू | करनेवाला | झगड़ालू, दयालु |
| -आवट | भाववाचक प्रत्यय | कसावट, बनावट, बिनावट, लिखावट, सजावट |
| -आस | इच्छावाचक प्रत्यय | छपास, प्यास, लिखा, निकास |
| -आहट/-आहत | भाववाचक प्रत्यय | गड़गड़ाहट, घबराहट, चिल्लाहट, भलमनसाहत |
| -इन | स्त्री प्रत्यय | जुलाहिन, ठकुराइन, तेलिन, पुजारिन |
| -इया | वाला; लघुत्व, बोधक; स्त्री प्रत्यय | चुटिया, चुहिया, डिबिया, कनौजिया, भोजपुरिया |
| -इला | वाला | चमकीला, पथरीला, शर्मीला |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| -एरा | वाला | चचेरा, फुफेरा, बहुतेरा, ममेरा |
| -औड़ा/-औड़ी | लिंगवाचक | पकौड़ी, सेवड़ा, रेवड़ी |
| -त/-ता | भाववाचक, कर्मवाचक | चाहत, मिल्लत, आता, खाता, जाता, सोता |
| -पन | भाववाचक प्रत्यय | छुटपन, बचपन, बड़प्पन, पागलपन |
| -वाला | कर्तृवाचक, विशेषण | अपनेवाला, ऊपरवाला, खानेवाला, जानेवाला, लालवाला |

(3) देशज प्रत्यय

| प्रत्यय | बोधक/अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| -अक्कड़ | वाला | घुमक्कड़, पियक्कड़, भुलक्कड़ |
| -अड़ | स्वार्थिक | अंधड़, भुक्खड़ |
| -आक | भाववाचक | खर्राटा, फर्राटा |
| -इयल | वाला | अड़ियल, दढ़ियल, सड़ियल |

(4) विदेशज प्रत्यय

(i) अरबी-फारसी प्रत्यय

| प्रत्यय | बोधक/अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| -आ | भाववाचक | सफेदा, खराबा |
| -आना | भाववाचक विशेषण | वाचक जुर्माना, दस्ताना, मर्दाना, मस्ताना |
| -आनी | संबंधवाचक | जिस्मानी, बर्फ़ानी, रूहानी |
| -कार | करनेवाला | काश्तकार, दस्तकार, सलाहकार, पेशकार |
| -खोर | खानेवाला | गमखोर, घूसखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर |
| -गार | करनेवाला | परहेजगार, मददगार, यादगार, रोजगार |
| -गी | भाववाचकसंज्ञा प्रत्यय | गन्दगी,जिन्दगी,बंदगी-चा/ची वाला देगचा,बगीचा,इलायची,डोलची,संदूकची |
| -दान | स्थिति वाचक | इत्रदान, कलमदान, पीकदान |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| -दार | वाला | ईमानदार, कर्जदार, दूकानदार, मालदार |
| -नाक | वाला | खतरनाक, खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक |
| -बान | वाला | दरबान, बागबान, मेजबान |
| -मंद | वाला | अक्लमंद, जरूरतमंद |

(ii) अंग्रेजी प्रत्यय

| प्रत्यय | बोधक/अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| -इज्म | वाद/मत | कम्युनिज्म, बुद्धिज्म, सोशलिज्म |
| -इस्ट | वादी/व्यक्ति | कम्युनिस्ट, बुद्धिस्ट, सोशलिष्ट |

.....

AJAY KUMAR

# तत्सम-तद्भव शब्द (Pure and Modified Words)

तत्सम शब्द- हिन्दी भाषा का विकास संस्कृत भाषा से हुआ है। अतः इसी भाषा से सीधे शब्द हिन्दी में आये हैं। इन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

जैसे- नासिका, मुख, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि आदि।

तद्भव शब्द- वे शब्द जो तत्सम न रहकर उसी शब्द से बिगड़कर बने हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

जैसे- चाँद, सूरज, रात, नाक, मुँह आदि।

| तत्सम | तद्भव | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|---|
| चन्द्र | चाँद | ग्राहक | गाहक |
| मयूर | मोर | विद्युत | बिजली |
| वधू | बहू | नृत्य | नाच |
| चर्म | चमड़ा | गौ | गाय |
| ग्रीष्म | गर्मी | अज्ञानी | अज्ञानी |
| अकस्मात् | अचानक | अग्नि | आग |
| आलस्य | आलस | उज्ज्वल | उजला |
| कर्म | काम | नवीन | नया |
| स्वर्ण | सोना | शत | सौ |
| श्रंगार | सिंगार | सर्प | साँप |
| कूप | कुआँ | कोकिल | कोयल |
| मृत्यु | मौत | सप्त | सात |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| घृत | घी | दधि | दही |
| दुग्ध | दूध | धूम्र | धुआँ |
| दन्त | दाँत | छिद्र | छेद |
| अमूल्य | अमोल | आश्चर्य | अचरज |
| अश्रु | आँसू | कर्ण | कान |
| कृषक | किसान | ग्राम | गाँव |
| हस्ती | हाथी | आम्र | आम |
| मक्षिका | मक्खी | शर्कर | शक्कर |
| सत्य | सच | हस्त | हाथ |
| हरित | हरा | शिर | सिर |
| गृह | घर | चूर्ण | चूरन |
| कुम्भकार | कुम्हार | कटु | कड़वा |
| नग्न | नंगा | भगिनी | बहिन |
| वार्ता | बात | पाद | पाँव |
| मृत्तिका | मिट्टी | पुत्र | पूत |
| कपाट | किवाड़ | छत्र | छाता |
| धैर्य | धीरज | कर्ण | कान |
| भुजा | बाँह | | |

.....

AJAY KUMAR

# संधि (Seam )

दो वर्णों ( स्वर या व्यंजन ) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

दूसरे अर्थ में- संधि का सामान्य अर्थ है मेल। इसमें दो अक्षर मिलने से तीसरे शब्द रचना होती है,

इसी को संधि कहते हैै।

उन पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद हैै।

जैसे -हिम +आलय =हिमालय ( यह संधि है ), अत्यधिक = अति + अधिक ( यह संधि विच्छेद है )

यथा + उचित =यथोचित

यशः +इच्छा=यशइच्छ

अखि + ईश्वर =अखिलेश्वर

आत्मा + उत्सर्ग =आत्मोत्सर्ग

महा + ऋषि = महर्षि ,

लोक + उक्ति = लोकोक्ति

संधि निरथर्क अक्षरों मिलकर सार्थक शब्द बनती है। संधि में प्रायः शब्द का रूप छोटा हो जाता है। संधि संस्कृत का शब्द है।

## संधि के भेद

वर्णों के आधार पर संधि के तीन भेद है-

(1) स्वर संधि ( vowel sandhi )

(2) व्यंजन संधि ( Combination of Consonants )

(3) विसर्ग संधि( Combination Of Visarga )

(1) स्वर संधि (vowel sandhi) :- दो स्वरों से उतपन विकार अथवा रूप -परिवर्तन को स्वर संधि कहते है।

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी , सूर्य + उदय = सूर्योदय , मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र , कवि + ईश्वर = कवीश्वर , महा + ईश = महेश .

AJAY KUMAR

इनके पाँच भेद होते है -

(i) दीर्घ संधि
(ii) गुण संधि
(iii) वृद्धि संधि
(iv) यण् संधि
(v) अयादी संधि

## (i)दीर्घ स्वर संधि-

नियम -दो सवर्ण स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है। यदि 'अ'',' 'आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ'के बाद वे ही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आये, तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ', 'ई', 'ऊ', 'ऋ' हो जाते है। जैसे-

| | | |
|---|---|---|
| अ+अ =आ | अत्र+अभाव =अत्राभाव | कोण+अर्क =कोणार्क |
| अ +आ =आ | शिव +आलय =शिवालय | भोजन +आलय =भोजनालय |
| आ +अ =आ | विद्या +अर्थी =विद्यार्थी | लज्जा+अभाव =लज्जाभाव |
| आ +आ =आ | विद्या +आलय =विद्यालय | महा+आशय =महाशय |
| इ +इ =ई | गिरि +इन्द्र =गिरीन्द्र | |
| इ +ई =ई | गिरि +ईश =गिरीश | |
| ई +इ =ई | मही +इन्द्र =महीन्द्र | |
| ई +ई =ई | पृथ्वी +ईश =पृथ्वीश | |
| उ +उ =ऊ | भानु +उदय =भानूदय | |
| ऊ +उ =ऊ | स्वयम्भू +उदय =स्वयम्भूदय | |
| ऋ+ऋ=ऋ | पितृ +ऋण =पितृण | |

### दीर्घ स्वर संधि के कुछ उदाहरण

AJAY KUMAR

अ/आ+अ/आ = आ

दैत्य+अरि = दैत्यारि

देह+अंत = देहांत

उत्तम+अंग = उत्तमांग

कुश+आसन = कुशासन

परम+आत्मा = परमात्मा

दीक्षा+अंत = दीक्षांत

गदा+आघात = गदाघात

जन्म+अन्ध = जन्मान्ध

सभा+अध्याक्ष = सभाध्यक्ष

हिम+आलय = हिमालय

स्व+अर्थ = स्वार्थ

पर+अधीन = पराधीन

परम+अणु = परमाणु

अधिक+अंश = अधिकांश

अभय+अरण्य = अभयारण्य

श्रदा+आनन्द = श्रद्धानन्द

माया+ आचरण = मायाचरण

द्राक्षा+अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट

भय+आनक = भयानक

दीप+अवली = दीपावली

कृपा+आकांक्षी = कृपाकांक्षी

अ/आ+अ/आ = आ

राम+अवतार = रामावतार

अद्य+अवधि = अद्यावधि

सूर्य+अस्त = सूर्यास्त

धर्म+आत्मा = धर्मात्मा

कदा+अपि = कदापि

वर्षा+अंत = वर्षांत

आत्मा+ आनंद = आत्मानंद

श्रद्धा+आलु = श्रद्धालु

पुरुष+अर्थ = पुरुषार्थ

परम+अर्थ = परमार्थ

स्व+अधीन = स्वाधीन

शस्त्र+अस्त्र = शस्त्रास्त्र

वेद+अन्त = वेदान्त

सुषुप्त+अवस्था = सुषुप्तावस्था

दया+आनन्द = दयानन्द

वार्ता+आलाप = वार्तालाप

महा+अमात्य = महामात्य

मूल्य+अंकन = मूल्यांकन

मुक्त+अवली = मुक्तावली

प्रश्न+अवली = प्रश्नावली

विस्मय+आदि = विस्मयादि

AJAY KUMAR

सत्य+आग्रह = सत्याग्रह

शुभ+आरंभ = शुभारंभ

शरण+आगत = शरणागत

भाव+आविष्ट = भावाविष्ट

अंत्य+अक्षरी = अंत्याक्षरी

रेखा+अंकित = रेखांकित

सीमा+अंकित = सीमांकित

परा+अस्त = परास्त

गीत+अंजलि = गीतांजलि

प्र+अंगन = प्रांगण

प्रधान+अध्यापक = प्रधानाध्यापक

पुस्तक+आलय = पुस्तकालय

प्राण+आयाम = प्राणायाम

मरण+आसन्न = मरणासन्न

नील+आकाश = नीलाकाश

सर्व+अंगीण = सर्वांगीण

रेखा+अंश = रेखांश

परीक्षा+अर्थी = परीक्षार्थी

माया+अधीन = मायाधीन

निशा+अंत = निशांत

प्र+अर्थी = प्रार्थी

काम+अयनी = कामायनी

विभाग+अध्यक्ष = विभागाध्यक्ष

चर+अचर = चराचर

इ/ई+इ/ई = ई

रवि+इन्द्र = रवीन्द्र

कवि+इन्द्र = कवीन्द्र

अभि+इष्ट = अभीष्ट

यति+इन्द्र = यतीन्द्र

श्री+ईश = श्रीश

रजनी+ईश = रजनीश

हरि+ईश = हरीश

कपि+ईश = कपीश

इ/ई+इ/ई = ई

मुनि+इन्द्र = मुनीन्द्र

परि+ईक्षक = परीक्षक

शचि+इन्द्र = शचीन्द्र

पृथ्वी+ईश्वर = पृथ्वीश्वर

नदी+ईश = नदीश

नारी+ईश्वर = नारीश्वर

कवि+ईश = कवीश

मुनि+ईश्वर = मुनीश्वर

AJAY KUMAR

प्रति+ईक्षा = प्रतीक्षा

महो+इन्द्र = महीन्द्र

नारी+इन्द्र = नारीन्द्र

सती+ईश = सतीश

अधि+ईक्षक = अधीक्षक

फण+इन्द्र = फणीन्द्र

परि+ईक्षित = परीक्षित

अभि+ईप्सा = अभीप्सा

नारी+इच्छा = नारीच्छा

नदी+इन्द्र = नदीन्द्र

परि+ईक्षा = परीक्षा

वि+ईक्षण = वीक्षण

प्रति+इत = प्रतीत

उ/ऊ+उ/ऊ = ऊ

लघु+ऊर्मि = लघूर्मि

सिँधु+ऊर्मि = सिँधूर्मि

लघु+उत्तर = लघूत्तर

साधु+उपदेश = साधूपदेश

भू+ऊर्ध्व = भूर्ध्व

वधू+उत्सव = वधूत्सव

वधू+उक्ति = वधूक्ति

सरयू+ऊर्मि = सरयूर्मि

उ/ऊ+उ/ऊ = ऊ

गुरु+उपदेश = गुरूपदेश

सु+उक्ति = सूक्ति

मंजु+उषा = मंजूषा

लघु+उत्तम = लघूत्तम

वधू+उर्मि = वधूर्मि

भू+उपरि = भूपरि

अनु+उदित = अनूदित

ऋ/ॠ+ऋ/ॠ = ॠ

मातृ+ऋण = मात्ऋण

भ्रातृ+ऋण = भ्रात्ऋण

AJAY KUMAR

(ii) गुण स्वर संधि

नियम- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई ' 'उ' या 'ऊ ' और 'ऋ' आये ,तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर' हो जाते है।

जैसे-

| | |
|---|---|
| अ +इ =ए | देव +इन्द्र=देवन्द्र |
| अ +ई =ए | देव +ईश =देवेश |
| आ +इ =ए | महा +इन्द्र =महेन्द्र |
| अ +उ =ओ | चन्द्र +उदय =चन्द्रोदय |
| अ+ऊ =ओ | समुद्र +ऊर्मि =समुद्रोर्मि |
| आ +उ=ओ | महा +उत्स्व =महोत्स्व |
| आ +ऊ = ओ | गंगा+ऊर्मि =गंगोर्मि |
| अ +ऋ =अर् | देव + ऋषि =देवर्षि |
| आ+ऋ =अर् | महा+ऋषि =महर्षि |

**गुण स्वर संधि के कुछ उदाहरण**

| अ/आ+इ/ई = ए | अ/आ+इ/ई = ए |
|---|---|
| भारत+इन्द्र = भारतेन्द्र | नर+इन्द्र = नरेन्द्र |
| सुर+इन्द्र = सुरेन्द्र | वीर+इन्द्र = वीरेन्द्र |
| स्व+इच्छा = स्वेच्छा | न+इति = नेति |
| अंत्य+इष्टि = अंत्येष्टि | रमा+इन्द्र = रमेन्द्र |
| राजा+इन्द्र = राजेन्द्र | यथा+इष्ट = यथेष्ट |
| रसना+इन्द्रिय = रसनेन्द्रिय | सुधा+इन्दु = सुधेन्दु |
| सोम+ईश = सोमेश | महा+ईश = महेश |

AJAY KUMAR

नर+ईश = नरेश

परम+ईश्वर = परमेश्वर

गण+ईश = गणेश

अंक+ईक्षण = अंकेक्षण

महा+ईश्वर = महेश्वर

उप+ईक्षा = उपेक्षा

रमा+ईश = रमेश

राजा+ईश = राजेश

राका+ईश = राकेश

लंका+ईश = लंकेश

प्र+ईक्षक = प्रेक्षक

अ/आ+उ/ऊ = ओ

सूर्य+उदय = सूर्योदय

पर+उपकार = परोपकार

वीर+उचित = वीरोचित

नव+ऊढ़ा = नवोढ़ा

महा+उदधि = महोदधि

यथा+उचित = यथोचित

स्वातंत्र्य+उत्तर = स्वातंत्र्योत्तर

आत्म+उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग

करुणा+उत्पादक = करुणोत्पादक

प्र+ऊढ़ = प्रौढ़

अ/आ+उ/ऊ = ओ

पूर्व+उदय = पूर्वोदय

लोक+उक्ति = लोकोक्ति

आद्य+उपान्त = आद्योपान्त

जल+ऊर्मि = जलोर्मि

गंगा+उदक = गंगोदक

कथा+उपकथन = कथोपकथन

महा+ऊर्मि = महोर्मि

महा+उदय = महोदय

विद्या+उपार्जन = विद्योपार्जन

अक्ष+हिनी = अक्षौहिनी

अ/आ+ऋ = अर्

ब्रह्म+ऋषि = ब्रह्मर्षि

राज+ऋषि = राजर्षि

अ/आ+ऋ = अर्

महा+ऋद्धि = महर्द्धि

सप्त+ऋषि = सप्तर्षि

AJAY KUMAR

सदा+ऋतु = सदर्तु

शिशिर+ऋतु = शिशिरर्तु

महा+ऋण = महर्ण

(ii) वृद्धि स्वर संधि

नियम -यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ'आये, तो दोनों के स्थान में 'ऐ' तथा 'ओ' या 'औ' आये, तो दोनों के स्थान में 'औ' हो जाता है। जैसे-

| | | |
|---|---|---|
| अ +ए =ऐ | एक +एक =एकैक | |
| अ +ऐ =ऐ | नव +ऐश्वर्य =नवैश्वर्य | |
| आ +ए=ऐ | महा +ऐश्वर्य=महैश्वर्य | सदा +एव =सदैव |
| अ +ओ =औ | परम +ओजस्वी =परमौजस्वी | वन+ओषधि =वनौषधि |
| अ +औ =औ | परम +औषध =परमौषध | |
| आ +ओ =औ | महा +ओजस्वी =महौजस्वी | |
| आ +औ =औ | महा +औषध =महौषध | |

**वृद्धि स्वर संधि के कुछ उदाहरण**

अ/आ+ए/ऐ = ऐ

मत+ऐक्य = मतैक्य

लोक+एषणा = लोकैषणा

वसुधा+ऐव = वसुधैव

महा+ऐन्द्रजालिक = महैन्द्रजालिक

वित्त+एषणा = वित्तैषणा

अ/आ+ए/ऐ = ऐ

स्व+ऐच्छिक = स्वैच्छिक

पुत्र+ऐषणा = पुत्रैषणा

तथा+एव = तथैव

हित+एषी = हितैषी

अ/आ+ओ/औ = औ

परम+ओज = परमौज

महा+औदार्य = महौदार्य

अ/आ+ओ/औ = औ

महा+औघ = महौघ

परम+औदार्य = परमौदार्य

AJAY KUMAR

जल+ओध = जलौध

महा+औषधि = महौषधि

प्र+औद्योगिकी = प्रौद्योगिकी

दंत+ओष्ठ = दंतोष्ठ (अपवाद)

(iv) यण् स्वर संधि

नियम- यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ'के बाद कोई भिन्न स्वर आये, तो इ-ई का ' य् ', 'उ-ऊ' का 'व्' और 'ऋ' का 'र्' हो जाता हैं।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि इ/ई या उ/ऊ स्वर तो 'य्' या 'व्' में बदल जाते हैं किँतु जिस व्यंजन के ये स्वर लगे होते हैं, वह संधि होने पर स्वर–रहित हो जाता है। जैसे– अभि+अर्थी = अभ्यार्थी, तनु+अंगी = तन्वंगी। यहाँ अभ्यर्थी में 'य्' के पहले 'भ्' तथा तन्वंगी में 'व्' के पहले 'न्' स्वर–रहित हैं। प्रायः य्, व्, र् से पहले स्वर–रहित व्यंजन का होना यण् संधि की पहचान है।

जैसे-

| | |
|---|---|
| इ +अ =य | यदि +अपि =यद्यपि |
| इ +आ = या | अति +आवश्यक =अत्यावश्यक |
| इ +उ =यु | अति +उत्तम =अत्युत्तम |
| इ + ऊ = यू | अति +ऊष्म =अत्यूष्म |
| उ +अ =व | अनु +आय =अन्वय |
| उ +आ =वा | मधु +आलय =मध्वालय |
| उ + ओ = वो | गुरु +ओदन= गुवौंदन |
| उ +औ =वौ | गुरु +औदार्य =गुवौंदार्य |
| ऋ+आ =रा | पितृ +आदेश=पित्रादेश |

**यण् स्वर संधि के कुछ उदाहरण**

इ/ई+अ = य

परि+अटन = पर्यटन

वि+अस्त = व्यस्त

वि+अग्र = व्यग्र

इ/ई+अ = य

नि+अस्त = न्यस्त

वि+अय = व्यय

परि+अंक = पर्यंक

AJAY KUMAR

परि+अवेक्षक = पर्यवेक्षक

वि+अंजन = व्यंजन

वि+अभिचार = व्यभिचार

वि+अवस्था = व्यवस्था

प्रति+अय = प्रत्यय

अभि+अर्थी = अभ्यर्थी

अभि+उदय = अभ्युदय

प्रति+अर्पण = प्रत्यर्पण

वि+अंग्य = व्यंग्य

इ/ई+आ = या

वि+आप्त = व्याप्त

इति+आदि = इत्यादि

अभि+आगत = अभ्यागत

वि+आयाम = व्यायाम

वि+आख्यान = व्याख्यान

अधि+आपक = अध्यापक

अधि+आत्म = अध्यात्म

प्रति+आशित = प्रत्याशित

प्रति+आरोपण = प्रत्यारोपण

वि+आधि = व्याधि

प्रति+आहार = प्रत्याहार

सखी+आगमन = सख्यागमन

वि+अष्टि = व्यष्टि

वि+अवहार = व्यवहार

वि+अक्ति = व्यक्ति

वि+अवसाय = व्यवसाय

नदी+अर्पण = नद्यर्पण

परि+अंत = पर्यंत

देवी+अर्पण = देव्यर्पण

प्रति+अक्ष = प्रत्यक्ष

इ/ई+आ = या

अधि+आय = अध्याय

परि+आवरण = पर्यावरण

वि+आस = व्यास

अधि+आदेश = अध्यादेश

प्रति+आशी = प्रत्याशी

वि+आकुल = व्याकुल

प्रति+आवर्तन = प्रत्यावर्तन

प्रति+आभूति = प्रत्याभूति

वि+आवृत्त = व्यावृत्त

वि+आहत = व्याहत

अभि+आस = अभ्यास

मही+आधार = मह्याधार

AJAY KUMAR

इ/ई+उ/ऊ = यु/यू

परि+उषण = पर्युषण

उपरि+उक्त = उपर्युक्त

अभि+उदय = अभ्युदय

प्रति+उत्तर = प्रत्युत्तर

आदि+उपांत = आद्युपांत

प्रति+उत्पन्न = प्रत्युत्पन्न

वि+उत्पत्ति = व्युत्पत्ति

नि+ऊन = न्यून

वि+ऊह = व्यूह

इ/ई+ए/ओ/औ = ये/यो/यौ

प्रति+एक = प्रत्येक

वाणी+औचित्य = वाण्यौचित्य

उ/ऊ+अ/आ = व/वा

तनु+अंगी = तन्वंगी

मधु+अरि = मध्वरि

समनु+अय = समन्वय

परमाणु+अस्त्र = परमाण्वस्त्र

साधु+आचार = साध्वाचार

मधु+आचार्य = मध्वाचार्य

ऋतु+आगमन = ऋत्वागमन

सु+आगम = स्वागम

इ/ई+उ/ऊ = यु/यू

नारी+उचित = नार्युचित

स्त्री+उपयोगी = स्त्र्युपयोगी

अति+उक्ति = अत्युक्ति

अभि+उत्थान = अभ्युत्थान

स्त्री+उचित = स्त्र्युचित

प्रति+उपकार = प्रत्युपकार

वि+उपदेश = व्युपदेश

प्रति+ऊह = प्रत्यूह

अभि+ऊह = अभ्यूह

इ/ई+ए/ओ/औ = ये/यो/यौ

वि+ओम = व्योम

उ/ऊ+अ/आ = व/वा

अनु+अय = अन्वय

सु+अल्प = स्वल्प

सु+अस्ति = स्वस्ति

सु+आगत = स्वागत

गुरु+आदेश = गुर्वादेश

वधू+आगमन = वध्वागमन

सु+आभास = स्वाभास

AJAY KUMAR

उ/ऊ+इ/ई/ए = वि/वी/वे

अनु+इति = अन्विति

अनु+इष्ट = अन्विष्ट

अनु+ईक्षा = अन्वीक्षा

तनु+ई = तन्वी

अनु+एषण = अन्वेषण

अनु+एक्षक = अन्वेक्षक

उ/ऊ+इ/ई/ए = वि/वी/वे

धातु+इक = धात्विक

पू+इत्र = पवित्र

अनु+ईक्षण = अन्वीक्षण

धातु+ईय = धात्वीय

अनु+एषक = अन्वेषक

ऋ+अ/आ/इ/उ = र/रा/रि/रु

मातृ+अर्थ = मात्रर्थ

मातृ+आनन्द = मात्रानन्द

मातृ+आज्ञा = मात्राज्ञा

मातृ+आदेश = मात्रादेश

पितृ+इच्छा = पित्रिच्छा

ऋ+अ/आ/इ/उ = र/रा/रि/रु

पितृ+अनुमति = पित्रनुमति

पितृ+आज्ञा = पित्राज्ञा

पितृ+उपदेश = पित्रुपदेश

मातृ+इच्छा = मात्रिच्छा

मातृ+उपदेश = मात्रुपदेश

(v) अयादि स्वर संधि

नियम- यदि 'ए', 'ऐ' 'ओ', 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए, तो (क) 'ए' का 'अय्', (ख ) 'ऐ' का 'आय्', (ग) 'ओ' का 'अव्' और (घ) 'औ' का 'आव' हो जाता है। जैसे-

(क) ने +अन =नयन चे +अन =चयन

शे +अन =शयन श्रो+अन =श्रवन (पद मे 'र' होने के कारण 'न' का 'ण' हो गया)

(ख) नै +अक =नायक गै +अक =गायक

(ग) पो +अन =पवन

(घ) श्रौ+अन =श्रावण पौ +अन =पावन पौ +अक =पावक श्रौ+अन =श्रावण ('श्रावण' के अनुसार 'न' का 'ण')

**अयादि स्वर संधि के कुछ उदाहरण**

AJAY KUMAR

ए/ऐ+अ/इ = अय/आय/आयि

संचे+अ = संचय

गै+अक = गायक

नै+अक = नायक

शै+अर = शायर

विनै+अक = विनायक

गै+इका = गायिका

विधै+इका = विधायिका

ओ/औ+अ = अव/आव

भो+अन् = भवन

भो+अति = भवति

पौ+अन् = पावन

प्रस्तौ+अ = प्रस्ताव

भौ+अ = भाव

गव+अक्ष = गवाक्ष (अपवाद)

ओ/औ+इ/ई/उ = अवि/अवी/आवु

रो+इ = रवि

गौ+ईश = गवीश

प्रभौ+इति = प्रभावित

भौ+उक = भावुक

ए/ऐ+अ/इ = अय/आय/आयि

चै+अ = चाय

गै+अन् = गायन

दै+अक = दायक

विधै+अक = विधायक

नै+इका = नायिका

दै+इनी = दायिनी

ओ/औ+अ = अव/आव

स्रौ+अ = स्राव

हो+अन् = हवन

धौ+अक = धावक

शौ+अक = शावक

रौ+अन = रावण

ओ/औ+इ/ई/उ = अवि/अवी/आवु

भो+इष्य = भविष्य

नौ+इक = नाविक

प्रस्तौ+इत = प्रस्तावित

(2)व्यंजन संधि ( Combination of Consonants ) :- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पत्र विकार को व्यंजन संधि कहते है।

AJAY KUMAR

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ग के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है। जैसे-
अहम् +कार =अहंकार

पम्+चम =पंचम

सम् +गम =संगम

(2) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त्-द्' 'ल्' में बदल जाते है और 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के बाद 'ल्' हो जाता है। जैसे-
उत्+लास =उल्लास

महान् +लाभ =महांल्लाभ

(3) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प', के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आये, या, य, र, ल, व, या कोई स्वर आये, तो 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प',के स्थान में अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे-

दिक्+गज =दिग्गज

सत्+वाणी =सदवाणी

अच+अन्त =अजन्त

षट +दर्शन =षड्दर्शन

वाक् +जाल =वगजाल

अप् +इन्धन =अबिन्धन

तत् +रूप =तद्रूप

जगत् +आनन्द =जगदानन्द

दिक्+भ्रम =दिगभ्रम

## कुछ और उदाहरण

'क्' का 'ग्' होना

दिक्+अम्बर = दिगम्बर

दिक्+दर्शन = दिग्दर्शन

वाक्+जाल = वाग्जाल

वाक्+ईश = वागीश

दिक्+अंत = दिगंत

दिक्+गज = दिग्गज

ऋक्+वेद = ऋग्वेद

दृक्+अंचल = दृगंचल

वाक्+ईश्वरी = वागीश्वरी

प्राक्+ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

दिक्+गयंद = दिग्गयंद

वाक्+जड़ता = वाग्जड़ता

AJAY KUMAR

सम्यक्+ज्ञान = सम्यग्ज्ञान

दिक्+भ्रम = दिग्भ्रम

दिक्+वधू = दिग्वधू

वाक्+व्यापार = वाग्व्यापार

वाक्+दान = वाग्दान

वाक्+दत्ता = वाग्दत्ता

दिक्+हस्ती = दिग्हस्ती

वाक्+हरि = वाग्हरि

'च्' का 'ज्'

अच्+आदि = अजादि

णिच्+अंत = णिजंत

'ट्' का 'ड्'

षट्+आनन = षडानन

षट्+अक्षर = षडक्षर

षट्+गुण = षड्गुण

षट्+यंत्र = षड्यंत्र

षट्+राग = षड्राग

षट्+रिपु = षड्रिपु

षट्+अभिज्ञ = षडभिज्ञ

षट्+भुजा = षड्भुजा

षट्+रस = षड्रस

'त्' का 'द्'

सत्+विचार = सद्विचार

सत्+धर्म = सद्धर्म

उत्+घाटन = उद्घाटन

जगत्+आत्मा = जगदात्मा

जगत्+ईश = जगदीश

सत्+उपयोग = सदुपयोग

सत्+गति = सद्गति

उत्+आहरण = उदाहरण

जगत्+अम्बा = जगदम्बा

तत्+भव = तद्भव

सत्+आशय = सदाशय

सत्+आचार = सदाचार

तत्+अनुसार = तदनुसार

भगवत्+गीता = भगवद्गीता

उत्+गम = उद्गम

AJAY KUMAR

इस नियम का अपवाद भी है जो इस प्रकार है–

त्+ड/ढ = त् के स्थान पर ड्

त्+ज/झ = त् के स्थान पर ज्

त्+ल् = त् के स्थान पर ल्

जैसे–

उत्+डयन = उड्डयन

उत्+लंघन = उल्लंघन

तत्+जन्य = तज्जन्य

विपत्+जाल = विपत्जाल

तत्+लीन = तल्लीन

सत्+जन = सज्जन

उत्+लेख = उल्लेख

उत्+ज्वल = उज्ज्वल

उत्+लास = उल्लास

जगत्+जननी = जगज्जननी

(4) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प', के बाद 'न' या 'म' आये, तो क्, च्, ट्, त्, प, अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं।

जैसे- प्रथम/तृतीय वर्ण+पंचम वर्ण = पंचम वर्ण

वाक्+मय =वाङ्मय

षट्+मार्ग =षणमार्ग

उत् +नति =उन्नति

अप् +मय =अम्मय

जगत् +नाथ= जगन्नाथ

षट् +मास =षण्मास

**कुछ और उदाहरण**

दिक्+नाग = दिङ्नाग

सत्+मार्ग = सन्मार्ग

सत्+मति = सन्मति

उत्+मूलन = उन्मूलन

उत्+माद = उन्माद

सत्+नारी = सन्नारी

चित्+मय = चिन्मय

उत्+नायक = उन्नायक

सत्+मान = सन्मान

उत्+नत = उन्नत

AJAY KUMAR

वाक्+निपुण = वाङ्निपुण

उत्+मत्त = उन्मत्त

तत्+नाम = तन्नाम

षट्+मुख = षण्मुख

श्रीमत्+नारायण = श्रीमन्नारायण

उत्+मोचन = उन्मोचन

तत्+मय = तन्मय

दिक्+नाथ = दिङ्नाथ

वृहत्+नला = वृहन्नला

जगत्+माता = जगन्माता

उत्+मेष = उन्मेष

उत्+नयन = उन्नयन

उत्+मुख = उन्मुख

षट्+मूर्ति = षण्मूर्ति

भवत्+निष्ठ = भवन्निष्ठ

सत्+नियम = सन्नियम

वृहत्+माला = वृहन्माला

(5)सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के योग में शकार और चवर्ग तथा षकार और टवर्ग के योग में षकार और टवर्ग हो जाता है।

दूसरे शब्दों में- 'त्' या 'द्' के बाद च या छ हो तो 'त्/द्' के स्थान पर 'च्', 'ज्' या 'झ' हो तो 'ज्', 'ट्' या 'ठ्' हो तो 'ट्', 'ड्' या 'ढ' हो तो 'ड्' और 'ल' हो तो 'ल्' हो जाता है।

जैसे-

स्+श रामस् +शेते =रामश्शेते

त्+च सत् +चित् =सच्चित्

त्+छ महत् +छात्र =महच्छत्र

त् +ण महत् +णकार =महण्णकार

ष्+त द्रष् +ता =द्रष्टा

त्+ट बृहत् +टिट्टिभ=बृहटिट्टिभ

**कुछ और उदाहरण**

त्+च/छ = च्च/च्छ

सत्+छात्र = सच्छात्र

समुत्+चय = समुच्चय

जगत्+छाया = जगच्छाया

उत्+चाटन = उच्चाटन

सत्+चरित्र = सच्चरित्र

उत्+चरित = उच्चरित

उत्+छेद = उच्छेद

उत्+चारण = उच्चारण

AJAY KUMAR

शरत्+चन्द्र = शरच्चन्द्र

सत्+चिदानन्द = सच्चिदानन्द

उत्+छिन = उच्छिन

उत्+छादन = उच्छादन

त्/द्+ज्/झ् = ज्ज/ज्झ

सत्+जन = सज्जन

उत्+ज्वल = उज्ज्वल

त्+ट/ठ = ट्ट/ट्ठ

वृहत्+टीका = वृहट्टीका

तत्+जन्य = तज्जन्य

जगत्+जननी = जगज्जननी

तत्+टीका = तट्टीका

त्+ड/ढ = ड्ड/ड्ढ

उत्+डयन = उड्डयन

भवत्+डमरु = भवड्डमरु

जलत्+डमरु = जलड्डमरु

महत्+ढाल = महड्ढाल

त्+ल = ल्ल

उत्+लेख = उल्लेख

तत्+लीन = तल्लीन

उत्+लास = उल्लास

उत्+लंघन = उल्लंघन

(6)यदि वर्गों के अन्तिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह' आये, तो 'ह' पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह्' के पूर्ववाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण।

दूसरे शब्दों में- यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ह' आये तो उनके स्थान पर 'द्ध' हो जाता है।

जैसे-

उत्+हार = उद्धार

उत्+हरण = उद्धरण

पत्+हति = पद्धति

तत्+हित = तद्धित

उत्+हत = उद्धत

पत्+हरि = पद्धरि

उपर्युक्त संधियाँ का दूसरा रूप इस प्रकार प्रचलित है–

उद्+हार = उद्धार

तद्+हित = तद्धित



AJAY KUMAR

उद्+हरण = उद्धरण

उद्+हत = उद्धत

पद्+हति = पद्धति

ये संधियाँ दोनों प्रकार से मान्य हैं।

(7) हस्व स्वर के बाद 'छ' हो, तो 'छ' के पहले 'च्' जुड जाता है। दीर्घ स्वर के बाद 'छ' होने पर यह विकल्प से होता है।

दूसरे शब्दों में- यदि किसी भी स्वर वर्ण के बाद 'छ' हो तो वह 'च्छ' हो जाता है।

जैसे-

कोई स्वर+छ = च्छ

परि+छेद =परिच्छेद

शाला +छादन =शालाच्छादन

अनु+छेद = अनुच्छेद

वि+छेद = विच्छेद

तरु+छाया = तरुच्छाया

स्व+छन्द = स्वच्छन्द

आ+छादन = आच्छादन

वृक्ष+छाया = वृक्षच्छाया

(8) यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'श्' हो तो 'त् या द्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है। जैसे–

त्/द्+श् = च्छ

उत्+श्वास = उच्छ्वास

तत्+शिव = तच्छिव

उत्+शिष्ट = उच्छिष्ट

मृद्+शकटिक = मृच्छकटिक

सत्+शास्त्र = सच्छास्त्र

तत्+शंकर = तच्छंकर

उत्+शृंखल = उच्छृंखल

(9) यदि 'त्' के बाद 'स्' (हलन्त) हो तो 'स्' का लोप हो जाता है। जैसे–

उत्+स्थान = उत्थान

उत्+स्थित = उत्थित

AJAY KUMAR

(10) यदि 'म्' के बाद 'क्' से 'भ्' तक का कोई भी स्पर्श व्यंजन हो तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है, या उसी वर्ग का पाँचवाँ अनुनासिक वर्ण बन जाता है। जैसे–

म्+कोई व्यंजन = म् के स्थान पर अनुस्वार ( ं ) या उसी वर्ग का पंचम वर्ण

सम्+चार = संचार/सञ्चार

सम्+ध्या = संध्या/सन्ध्या

सम्+पूर्ण = संपूर्ण/सम्पूर्ण

सम्+तोष = संतोष/सन्तोष

सम्+बन्ध = संबन्ध/सम्बन्ध

सम्+गति = संगति/सङ्गति

परम्+तु = परन्तु/परंतु

दिवम्+गत = दिवंगत

शुभम्+कर = शुभंकर

सम्+घनन = संघनन

सम्+तुष्ट = संतुष्ट/सन्तुष्ट

अम्+ड = अण्ड/अंड

सम्+क्षेप = संक्षेप

हृदयम्+गम = हृदयंगम

सम्+जय = संजय

सम्+क्रांति = संक्रान्ति

सम्+चित = संचित/सञ्चित

वसुम्+धर = वसुन्धरा/वसुंधरा

तीर्थम्+कर = तीर्थंकर

सम्+कल्प = संकल्प/सङ्कल्प

सम्+भव = संभव/सम्भव

सम्+जीवनी = संजीवनी

किम्+कर = किँकर/किङ्कर

सम्+धि = संधि/सन्धि

सम्+चय = संचय/सञ्चय

दम्+ड = दण्ड/दंड

अलम्+कार = अलंकार

सम्+कलन = संकलन

पम्+चम् = पंचम

सम्+दिग्ध = संदिग्ध/सन्दिग्ध

सम्+तति = संतति

अम्+क = अंक/अङ्क

सम्+गठन = संगठन/सङ्गठन

सम्+ज्ञा = संज्ञा

सम्+देश = संदेश/सन्देश

किम्+तु = किँतु/किन्तु

सम्+भाषण = संभाषण

सम्+कर = संकर

AJAY KUMAR

सम्+घटन = संघटन

किम्+चित = किँचित

धनम्+जय = धनंजय/धनञ्जय

सम्+देह = सन्देह/संदेह

सम्+न्यासी = संन्यासी

सम्+निकट = सन्निकट

(11) यदि 'म्' के बाद 'म' आये तो 'म्' अपरिवर्तित रहता है। जैसे–

म्+म = म्म

सम्+मति = सम्मति

सम्+मिश्रण = सम्मिश्रण

सम्+मिलित = सम्मिलित

सम्+मान = सम्मान

सम्+मोहन = सम्मोहन

सम्+मानित = सम्मानित

सम्+मुख = सम्मुख

(12) यदि 'म्' के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से कोई वर्ण आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है। जैसे–

म्+य, र, ल, व, श, ष, स, ह = अनुस्वार (ं)

सम्+योग = संयोग

सम्+वाद = संवाद

सम्+हार = संहार

सम्+लग्न = संलग्न

सम्+रक्षण = संरक्षण

सम्+शय = संशय

किम्+वा = किँवा

सम्+विधान = संविधान

सम्+शोधन = संशोधन

सम्+रक्षा = संरक्षा

सम्+सार = संसार

सम्+रक्षक = संरक्षक

सम्+युक्त = संयुक्त

सम्+स्मरण = संस्मरण

स्वयम्+वर = स्वयंवर

सम्+हित = संहिता

(13) यदि 'स' से पहले अ या आ से भिन्न कोई स्वर हो तो स का 'ष' हो जाता है। जैसे–



AJAY KUMAR

अ, आ से भिन्न स्वर+स = स के स्थान पर ष

वि+सम = विषम

नि+सेध = निषेध

नि+सिद्ध = निषिद्ध

अभि+सेक = अभिषेक

परि+सद् = परिषद्

नि+स्नात = निष्णात

अभि+सिक्त = अभिषिक्त

सु+सुप्ति = सुषुप्ति

उपनि+सद = उपनिषद

अपवाद–

अनु+सरण = अनुसरण

अनु+स्वार = अनुस्वार

वि+स्मरण = विस्मरण

वि+सर्ग = विसर्ग

(14) यदि 'ष्' के बाद 'त' या 'थ' हो तो 'ष्' आधा वर्ण तथा 'त' के स्थान पर 'ट' और 'थ' के स्थान पर 'ठ' हो जाता है। जैसे–

ष्+त/थ = ष्ट/ष्ठ

आकृष्+त = आकृष्ट

उत्कृष्+त = उत्कृष्ट

तुष्+त = तुष्ट

सृष्+ति = सृष्टि

षष्+थ = षष्ठ

पृष्+थ = पृष्ठ

(15) यदि 'द्' के बाद क, त, थ, प या स आये तो 'द्' का 'त्' हो जाता है। जैसे–

द्+क, त, थ, प, स = द् की जगह त्

उद्+कोच = उत्कोच

मृद्+तिका = मृत्तिका

विपद्+ति = विपत्ति

आपद्+ति = आपत्ति

तद्+पर = तत्पर

संसद्+सत्र = संसत्सत्र

संसद्+सदस्य = संसत्सदस्य

उपनिषद्+काल = उपनिषत्काल

AJAY KUMAR

उद्+तर = उत्तर

तद्+क्षण = तत्क्षण

विपद्+काल = विपत्काल

शरद्+काल = शरत्काल

मृद्+पात्र = मृत्पात्र

(16) यदि 'ऋ' और 'द्' के बाद 'म' आये तो 'द्' का 'ण्' बन जाता है। जैसे–

ऋद्+म = ण्म

मृद्+मय = मृण्मय

मृद्+मूर्ति = मृण्मूर्ति

(17) यदि इ, ऋ, र, ष के बाद स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य, व, ह में से किसी वर्ण के बाद 'न' आ जाये तो 'न' का 'ण' हो जाता है। जैसे–

(i) इ/ऋ/र/ष+ न= न के स्थान पर ण

(ii) इ/ऋ/र/ष+स्वर/क वर्ग/प वर्ग/अनुस्वार/य, व, ह+न = न के स्थान पर ण

प्र+मान = प्रमाण

भर+न = भरण

नार+अयन = नारायण

परि+मान = परिमाण

परि+नाम = परिणाम

प्र+यान = प्रयाण

तर+न = तरण

शोष्+अन् = शोषण

परि+नत = परिणत

पोष्+अन् = पोषण

विष्+नु = विष्णु

राम+अयन = रामायण

भूष्+अन = भूषण

ऋ+न = ऋण

मर+न = मरण

पुरा+न = पुराण

हर+न = हरण

तृष्+ना = तृष्णा

तृ+न = तृण

प्र+न = प्रण

AJAY KUMAR

(18) यदि सम् के बाद कृत, कृति, करण, कार आदि में से कोई शब्द आये तो म् का अनुस्वार बन जाता है एवं स् का आगमन हो जाता है। जैसे–

सम्+कृत = संस्कृत

सम्+कृति = संस्कृति

सम्+करण = संस्करण

सम्+कार = संस्कार

(19) यदि परि के बाद कृत, कार, कृति, करण आदि में से कोई शब्द आये तो संधि में 'परि' के बाद 'ष्' का आगम हो जाता है। जैसे–

परि+कार = परिष्कार

परि+कृत = परिष्कृत

परि+करण = परिष्करण

परि+कृति = परिष्कृति

(3) विसर्ग संधि ( Combination Of Visarga ) :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मेल से जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।

दूसरे शब्दों में - स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है। जैसे-

अः+ किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण, य, र, ल, व = अः का ओ

मनः +रथ =मनोरथ

सरः +ज =सरोज

मनः +भाव =मनोभाव

पयः +द =पयोद

मनः +विकार = मनोविकार

पयः+धर =पयोधर

मनः+हर =मनोहर

वयः+वृद्ध =वयोवृद्ध

यशः+धरा =यशोधरा

सरः+वर =सरोवर

तेजः+मय =तेजोमय

यशः+दा =यशोदा

पुरः+हित =पुरोहित

मनः+योग =मनोयोग

मनः+वेग = मनोवेग

मनः+अभिलाषा = मनोभिलाषा

मनः+अनुभूति = मनोभूति

यशः+अभिलाषा = यशोभिलाषा

मनः+रंजन = मनोरंजन

तपः+भूमि = तपोभूमि

तपः+धन = तपोधन

शिरः+भाग = शिरोभाग

मनः+नीत = मनोनीत

पुरः+गामी = पुरोगामी

अधः+गति = अधोगति

मनः+ज = मनोज

मनः+दशा = मनोदशा

पयः+निधि = पयोनिधि

मनः+बल = मनोबल

तपः+बल = तपोबल

मनः+नयन = मनोनयन

उरः+ज = उरोज

मनः+व्यथा = मनोव्यथा

तमः+गुण = तमोगुण

रजः+गुण = रजोगुण

यशः+गान = यशोगान

मनः+विज्ञान = मनोविज्ञान

(2) यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग का ष् हो जाता है। जैसे-

इः/उः+क/ख/प/फ = ष्

निः+कपट = निष्कपट

निः+काम = निष्काम

बहिः+कृत = बहिष्कृत

निः+प्रभ = निष्प्रभ

निः+पाप = निष्पाप

दुः+परिणाम = दुष्परिणाम

दुः+कर्म = दुष्कर्म

दुः+कर = दुष्कर

चतुः+कोण = चतुष्कोण

निः+फल = निष्फल

दुः+प्रकृति = दुष्प्रकृति

चतुः+पद = चतुष्पद

(3) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और परे क, ख, प, फ मे से कोइ वर्ण हो, तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों रहता है। जैसे-

AJAY KUMAR

अः+क/ख/प/फ = (:) का लोप नहीं

अन्तः+करण = अन्तःकरण

अधः+पतन = अधःपतन

मनः+कामना = मनःकामना

प्रातः+काल =प्रातःकाल

पयः+पान =पयःपान

(4) यदि 'इ' - 'उ' के बाद विसर्ग हो और इसके बाद 'र' आये, तो 'इ' - 'उ' का 'ई' - 'ऊ' हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है। जैसे-

निः+रव =नीरव

निः +रस =नीरस

निः +रोग =नीरोग

दुः+राज =दूराज

(5) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो, तो विसर्ग के स्थान में 'र्' हो जाता है। जैसे-

अ, आ से भिन्न स्वर+वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण/य, र, ल, व, ह = (:) का 'र्

निः+उपाय =निरुपाय

निः+झर =निर्झर

निः+जल =निर्जल

निः+धन =निर्धन

दुः+गन्ध =दुर्गन्ध

निः +गुण =निर्गुण

निः+विकार =निर्विकार

दुः+आत्मा =दुरात्मा

दुः+नीति =दुर्नीति

निः+मल =निर्मल

दुः+बल = दुर्बल

पुनः+आगमन = पुनरागमन

आशीः+वाद = आशीर्वाद

निः+मल = निर्मल

दुः+गुण = दुर्गुण

आयुः+वेद = आयुर्वेद

बहिः+रंग = बहिरंग

दुः+उपयोग = दुरुपयोग

निः+बल = निर्बल

बहिः+मुख = बहिर्मुख

AJAY KUMAR

दुः+ग = दुर्ग

निः+आशा = निराशा

निः+यात = निर्यात

निः+उत्साह = निरुत्साह

आशीः+वचन = आशीर्वचन

निः+आधार = निराधार

निः+आमिष = निरामिष

धनुः+धर = धनुर्धर

प्रादुः+भाव = प्रादुर्भाव

निः+अर्थक = निरर्थक

दुः+आशा = दुराशा

आविः+भाव = आविर्भाव

निः+आहार = निराहार

निः+भय = निर्भय

निः+विघ्न = निर्विघ्न

(6) यदि विसर्ग के बाद 'च-छ-श' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट-ठ-ष' हो तो 'ष्' और ' क -त-थ-स' हो तो 'स्' हो जाता है। जैसे-

निः+सार =निस्सार

निः+शेष =निश्शेष

विसर्ग (:)+च/छ = श्

निः+चय=निश्चय

निः+चय = निश्चय

दुः+चरित्र = दुश्चरित्र

पुरः+चरण = पुरश्चरण

कः+चित् = कश्चित्

निः+चल = निश्चल

पुनः+चर्या = पुनश्चर्या

विसर्ग (:)+च/छ = श्

निः+छल =निश्छल

निः+चिन्त = निश्चिन्त

हयिः+चन्द्र = हरिश्चन्द्र

तपः+चर्या = तपश्चर्या

मनः+चिकित्सा = मनश्चिकित्सा

दुः+चक्र = दुश्चक्र

अः+चर्य = आश्चर्य

विसर्ग(:)+ट/ठ = ष्

धनुः+टंकार = धनुष्टंकार

निः+ष्ठीव =निष्ष्ठीव

AJAY KUMAR

निः+ठुर = निष्ठुर

विसर्ग(:)+त/थ = स्

मनः+ताप = मनस्ताप

दुः+तर = दुस्तर

निः+तेज = निस्तेज

निः+तार = निस्तार

नमः+ते = नमस्ते

अः/आः+क = स्

भाः+कर = भास्कर

पुरः+कृत = पुरस्कृत

नमः+कार = नमस्कार

तिरः+कार = तिरस्कार

(7) यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' हो जाता है और विसर्ग के बादवाले 'अ' का लोप होता है तथा उसके स्थान पर लुप्ताकार का चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है।

दूसरे शब्दों में- यदि विसर्ग से पहले और बाद में 'अ' हो, तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' या 'ओऽ' हो जाता है तथा बाद के 'अ' का लोप हो जाता है।

अः+अ = ओऽ/ओ

प्रथमः +अध्याय =प्रथमोऽध्याय

मनः+अभिलषित =मनोऽभिलषित

यशः+अभिलाषी= यशोऽभिलाषी

यशः+अर्थी = यशोऽर्थी/यशोर्थी

मनः+अनुकूल = मनोऽनुकूल/मनोनुकूल

प्रथमः+अध्याय = प्रथमोऽध्याय/प्रथमोध्याय

मनः+अभिराम = मनोऽभिराम/मनोभिराम

परः+अक्ष = परोक्ष

(8) यदि विसर्ग के बाद श, ष, स हो तो विसर्ग ज्यों के त्यों रह जाते हैं या विसर्ग का स्वरूप बाद वाले वर्ण जैसा हो जाता है। जैसे–

विसर्ग+श/ष/स = (:) या श्श/ष्ष/स्स

निः+शुल्क = निःशुल्क/निश्शुल्क

दुः+शासन = दुःशासन/दुश्शासन

यशः+शरीर = यशःशरीर/यश्शरीर

निः+सन्देह = निःसन्देह/निस्सन्देह

निः+सन्तान = निःसन्तान/निस्सन्तान

निः+संकोच = निःसंकोच/निस्संकोच

AJAY KUMAR

दुः+साहस = दुःसाहस/दुस्साहस

दुः+सह = दुःसह/दुस्सह

(9) यदि 'अ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पास आये स्वरों में संधि नहीं होती है। जैसे–

अः+अ से भिन्न स्वर = विसर्ग का लोप

अतः+एव = अत एव

पयः+ओदन = पय ओदन

रजः+उद्गम = रज उद्गम

यशः+इच्छा = यश इच्छा

## हिन्दी भाषा की अन्य संधियाँ

हिन्दी की कुछ विशेष सन्धियाँ भी हैं। इनमें स्वरों का दीर्घ का ह्रस्व होना और ह्रस्व का दीर्घ हो जाना, स्वर का आगम या लोप हो जाना आदि मुख्य हैं। इसमें व्यंजनों का परिवर्तन प्रायः अत्यल्प होता है। उपसर्ग या प्रत्ययों से भी इस तरह की संधियाँ हो जाती हैं। ये अन्य संधियाँ निम्न प्रकार हैं–

1. ह्रस्वीकरण–

(क) आदि ह्रस्व– इसमें संधि के कारण पहला दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे –

घोड़ा+सवार = घुडसवार

घोड़ा+चढ़ी = घुडचढ़ी

दूध+मुँहा = दुधमुँहा

कान+कटा = कनकटा

काठ+फोड़ा = कठफोड़ा

काठ+पुतली = कठपुतली

मोटा+पा = मुटापा

छोटा+भैया = छुटभैया

लोटा+इया = लुटिया

मूँछ+कटा = मुँछकटा

आधा+खिला = अधखिला

काला+मुँहा = कलमुँहा

ठाकुर+आइन = ठकुराइन

लकड़ी+हारा = लकड़हारा

(ख) उभयपद ह्रस्व– दोनों पदों के दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे –

एक+साठ = इकसठ

काट+खाना = कटखाना

AJAY KUMAR

पानी+घाट = पनघट

ऊँचा+नीचा = ऊँचनीच

लेना+देना = लेनदेन

2. दीर्घीकरण–

इसमें संधि के कारण ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है और पद का कोई अंश लुप्त भी हो जाता है। जैसे–

दीन+नाथ = दीनानाथ

ताल+मिलाना = तालमेल

मूसल+धार = मूसलाधार

आना+जाना = आवाजाही

व्यवहार+इक = व्यावहारिक

उत्तर+खंड = उत्तराखंड

लिखना+पढ़ना = लिखापढ़ी

हिलना+मिलना = हेलमेल

मिलना+जुलना = मेलजोल

प्रयोग+इक = प्रायोगिक

स्वस्थ+य = स्वास्थ्य

वेद+इक = वैदिक

नीति+इक = नैतिक

योग+इक = यौगिक

भूत+इक = भौतिक

कुंती+एय = कौंतेय

वसुदेव+अ = वासुदेव

दिति+य = दैत्य

देव+इक = दैविक

सुंदर+य = सौंदर्य

पृथक+य = पार्थक्य

3. स्वरलोप–

इसमें संधि के कारण कोई स्वर लुप्त हो जाता है। जैसे–

बकरा+ईद = बकरीद।

4. व्यंजन लोप–

इसमें कोई व्यंजन सन्धि के कारण लुप्त हो जाता है।

AJAY KUMAR

(क) 'स' या 'ह' के बाद 'ह्' होने पर 'ह्' का लोप हो जाता है। जैसे–

इस+ही = इसी

उस+ही = उसी

यह+ही = यही

वह+ही = वही

(ख) 'हाँ' के बाद 'ह' होने पर 'हाँ' का लोप हो जाता है तथा बने हुए शब्द के अन्त में अनुस्वार लगता है। जैसे–

यहाँ+ही = यहीं

वहाँ+ही = वहीं

कहाँ+ही = कहीं

(ग) 'ब' के बाद 'ह्' होने पर 'ब' का 'भ' हो जाता है और 'ह्' का लोप हो जाता है। जैसे–

अब+ही = अभी

तब+ही = तभी

कब+ही = कभी

सब+ही = सभी

5. आगम संधि–

इसमें सन्धि के कारण कोई नया वर्ण बीच में आ जुड़ता है। जैसे–

खा+आ = खाया

रो+आ = रोया

ले+आ = लिया

पी+ए = पीजिए

ले+ए = लीजिए

आ+ए = आइए।

AJAY KUMAR

## संधि विच्छेद की परिभाषा -

संधि में पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद है। जैसे- धनादेश = धन + आदेश

यहाँ पर कुछ प्रचलित संधि विच्छेदों को दिया जा रहा है, जो की विद्यार्थियों के बड़े काम आएगी।

### (अ, आ)

अल्पायु = अल्प + आयु

अत्यधिक = अति + अधिक

आत्मोत्सर्ग= आत्मा + उत्सर्ग

अत्युष्म =अति +उष्म

अन्याय =अ+नि +आय

अविष्कार=आविः +कार

आशीर्वाद =आशीः+वाद

अहंकार =अहम् +कार

अभ्यागत =अभि +आगत

अभीष्ट =अभि+इष्ट

अत्यन्त =अति+अन्त

आच्छादन =आ+छादन

अधोगति =अधः+गति

अब्ज =अप्+ज

आद्यन्त =आदि+अन्त

अन्योन्याश्रय =अन्य+अन्य+आश्रय

अनावृष्टि = अन + आवृष्टि

अखिलेश्वर = अखि + ईश्वर

अत्यावश्यक = अति + आवश्यक

अन्वय=अनु +अय

अभ्युदय=अभि +उदय

अन्वेषण=अनु +एषण

अत्याचार=अति+आचार

अन्वित=अनु+अय+इत

अम्मय =अप्+मय

अरण्याच्छादित=अरण्य+आच्छादित

अत्राभाव =अत्र+अभाव

अधीश्वर =अधि+ईश्वर

अन्तर्निहित =अन्तः+निहित

आकृष्ट =आकृष्+त

अन्तःपुर =अन्तः+पुर

अन्यान्य =अन्य+अन्य

AJAY KUMAR

अहर्निश =अहः+निश

आत्मोत्सर्ग =आत्म+उत्सर्ग

अंतःकरण= अंतः + करण

अन्तर्गत= अन्तः + गत

अन्तर्धान= अन्तः + धान

अनायास= अन् + आयास

अनुचित= अन् + उचित

अनुपमेय= अन् + उपमेय

अनंग= अन् + अंग

अनन्य= अन् + अन्य

अध्याय= अधि + आय

अधीश= अधि + ईश

अधिकांश= अधिक + अंश

अवच्छेद= अव + छेद

अभ्यागत= अभि + आगत

अभीष्ट= अभि + इष्ट

अस्तित्व= अस्ति + त्व

अहोरूप= अहः + रूप

आश्चर्य= आ + चर्य

आत्मावलम्बन= आत्मा + अवलम्बन

अजन्त =अच्+अन्त

अत्युत्तम= अति +उत्तम =

अन्तर्निहित= अन्तः + निहित

अन्तस्तल = अंतः + तल

अन्योक्ति= अन्य + उक्ति

अधपका= आधा + पका

अनूप= अन् + ऊप

अन्तर्राष्ट्रीय= अन्तः + राष्ट्रीय

अनन्त= अन् + अंत

अतएव= अतः + एव

अध्ययन= अधि + अयन

अधीश्वर= अधि + ईश्वर

अधरोष्ठ= अधर + ओष्ठ

अभ्यस्त= अभि + अस्त

अभिषेक= अभि + सेक

अम्मय= अप् + मय

अहर्मुख= अहर + मुख

अज्ञानांधकार= अज्ञान + अंधकार

आशोन्मुख= आशा + उन्मुख

आध्यात्मिक= आधि + आत्मिक

( इ, ई, उ, ऊ, ए,)

AJAY KUMAR

इत्यादि = इति + आदि

ईश्वरेच्छा =ईश्वर+इच्छा

उपर्युक्त =उपरि +उक्त

उपेक्षा =उप+ईक्षा

उल्लास =उत् +लास

उद्धार =उत् +हार

उदभव=उत् +भव

उन्नति =उत्+नति

उल्लंघन=उत्+लंघन

उच्छ्वास =उत्+श्वास

उन्मत्त=उत्+मत्त

उद्धत =उत्+हत

उन्मीलित =उत्+मीलित

उड्डयन =उत्+डयन

उच्छिन्न =उत्+छिन्न

उत्कृष्ट=उत्कृष् + त

उत्तमोत्तम= उत्तम + उत्तम

उत्तरोत्तर= उत्तर + उत्तर

उद्वेग= उत् + वेग

उद्धरण= उत् + हरण

उद्गम=उत् +गम

उन्नायक= उत् + नायक

इतस्ततः= इतः + ततः

उन्मत्त =उत् +मत्त

उन्माद =उत् +माद

उच्चारण=उत् +चारण

उज्ज्वल =उत् +ज्वल

उदय =उत् +अय

उल्लेख =उत् +लेख

उन्मूलित =उत्+मूलित

उद्दाम =उत्+दाम

उन्नायक =उत्+नायक

उन्नयन =उत्+नयन

उपदेशान्तर्गत =उपदेश+अन्तर्गत

उद्योग=उत्+योग

उद्घाटन = उत्+घाटन

उच्छिष्ट =उत्+शिष्ट

उद्यान= उत् + यान

उतेजना= उत् + तेजना

उदयोन्मुख= उदय + उन्मुख

उद्देश्य= उत् + देश्य

उदाहरण= उत् + आहरण

उद्भाषित= उत् + भाषित

उपास्य= उप + आस्य

AJAY KUMAR

उपर्युक्त= उपरि + उक्त

उपनिदेशक= उप + देशक

उपासना= उप + आसना

उपदेशान्तर्गत= उपदेश + अन्तः + गत

एकाध= एक +आध

एकोनविंश= एक + उनविंश

एकैक=एक+एक

उपयोगिता= उप + योगिता

उपाधि= उप + आधि

ऊहापोह= ऊह + अपोह

एकाकार= एक + आकार

एकासन= एक + आसन

एकान्त= एक + अंत

कृदन्त=कृत् +अन्त

(क, ग, घ )

(च, छ, ज )

कल्पान्त =कल्प+अन्त

क्रोधाग्नि= क्रोध + अग्नि

कित्रर =किम्+नर

कंठोष्ठय= कंठ + ओष्ठ्य

कपीश= कपि + ईश

कवीश्वर= कवि + ईश्वर

किंवा= किम् + वा

कूपोदक= कूप + उदक

कुशासन= कुश + आसन

कुठाराघात= कुठार + आघात

क्रोधान्ध= क्रोध + अंध

कौमी= कौम + ई

कीटाणु= कीट + अणु

कुर्मावतार= कूर्म + अवतार

कालांतर = काल + अंतर

किंचित् = किम्+चित

कपलेश्वर= कपिल + ईश्वर

कवीन्द्र= कवि + इन्द्र

कपीश्वर= कपि + ईश्वर

किन्तु= किम् + तु

कुशाग्र= कुश + अग्र

कुसुमायुध= कुसुम + आयुध

कोणार्क= कोण + अर्क

कोषाध्यक्ष= कोष + अध्यक्ष

कृतान्त= कृत + अंत

खगासन= खग + आसन

AJAY KUMAR

खटमल= खाट + मल

गवीश= गो + ईश

गणेश= गण + ईश

गंगौघ= गंगा + ओघ

गंगोदक= गंगा + उदक

गंगैश्वर्य= गंगा + ऐश्वर्य

ग्रामोद्धार= ग्राम + उद्धार

गायन= गै + अन

गिरीन्द्र= गिरि + इन्द्र

गुडाकेश= गुडाका + ईश

गुप्पचति= गुब + पचति

गिरीश= गिरि + ईश

गुरुत्वाकर्षण= गुरुत्व + आकर्षण

गौरवान्वित= गौरव + अन्वित

घड़घड़ाहट= घड़घड़ + आहट

घनानंद= घन + आनंद

घुडदौड़= घोड़ा + दौड़

चतुरानन= चतुर + आनन

चतुर्भुज= चतुः + भुज

चन्द्रोदय=चन्द्र+उदय

चरणामृत=चरण+अमृत

चतुष्पाद= चतुः+पाद

चयन=चे+अन

चिकित्सालय=चिकित्सा+आलय

चिन्मय=चित्+मय

चतुर्दिक= चतुः + दिक्

चतुरंग= चतुः + अंग

चूड़ान्त= चूड़ा + अंत

चिन्ताक्रान्त= चिंता + आक्रान्त

छिद्रान्वेषी= छिद्र + अनु + एषी

छुटपन= छोटा + पन

छुटभैया= छोटा + भैया

जगदीन्द्र= जगत् + इन्द्र

जगज्जय= जगत् + जय

जगन्नियन्ता= जगत् + नियन्ता

जगद्बन्धु= जगत् + बन्धु

जनतैक्य= जनता + ऐक्य

जनतौत्सुक्य= जनता + औत्सुक्य

ज्योतिर्मठ= ज्योतिः + मठ

जलौघ= जल + ओघ

जानकीश= जानकी + ईश

जागृतावस्था= जागृत + अवस्था

जात्यभिमानी= जाति + अभिमानी

AJAY KUMAR

जीवनानुकूल= जीवन + अनुकूल

जीवनोपयोगी= जीवन + उपयोगी

जीवनोपार्जन= जीवन + उपार्जन

जीविकार्थ= जीविका + अर्थ

जीर्णोद्धार = जीर्ण + उद्धार

जगदीश= जगत्+ईश

जलोर्मि= जल+ऊर्मि

झड़बेरी= झाड़ + बेड़

झंडोत्तोलन= झंडा + उत्तोलन

झगड़ालू= झगड़ा + आलू

(ट, ठ, ड, ढ़ )

टुकड़तोड़= टुकड़ा + तोड़

टुटपूँजिया= टूटी + पूँजी

ठाढ़ेश्वरी= ठाढ़ा + ईश्वरी

ठकुरसुहाती= ठाकुर + सुहाना

डंडपेल= डंड + पेलना

डिठौना= डीठ + औना

ढँढोरिया= ढँढोरा + इया

ढकोसला= ढंक + कौशल

(त, थ)

तथैव =तथा +एव

तृष्णा =तृष +ना

तपोवन =तपः +वन

तल्लीन=तत्+लीन

तपोभूमि=तपः +भूमि

तेजोराशि=तेजः +राशि

तिरस्कार=तिरः +कार

तथापि =तथा +अपि

तेजोमय =तेजः +मय

तथास्तु = तथा + अस्तु

तमसावृत = तमसा + आवृत

तेजोपुंज =तेजः+पुंज

तद्रूप =तत्+रूप

तदाकार =तत्+आकार

तद्धित =तत्+हित

तद्रूप=तत्+रूप

तट्टीका=तत्+टीका

तेनादिष्ट=तेन+अदिष्ट

तज्जय= तत् + जय

तच्छरण= तत् + शरण

तच्छरीर= तत् + शरीर

तद्धवि= तत् + हवि

AJAY KUMAR

तदिह= तत् + इह

तदस्ति= तत् + अस्ति

तदाम्य= तत् + आत्म्य

तन्मय= तत् + मय

तत्त्व= तत् + त्व

तल्लय= तत् + लय

तच्छिव= तत् + शिव

त्वगिन्द्रय= त्वक + इन्द्रिय

तिरस्कृत= तिरः + कृत

तेऽपि= ते + अपि

तत्तनोति= तद + तनोति

तृष्णा= तृष् + ना

तेऽद्र= ते + अद्र

तेजआभास= तेजः + आभास

तस्मिन्नारमे= तस्मिन + आरामे

त्रिलोकेश्वर= त्रिलोक + ईश्वर

तदुपरान्त= तत् + उपरान्त

थनैला= थन + ऐला

थुक्काफजीहत= थूक + फजीहत

(द )

देवेन्द्र=देव +इन्द्र

दुर्नीति=दुः +नीति

दावानल=दाव+अनल

दिग्गज=दिक् +गज

दुर्धर्ष=दुः +धर्ष

दिग्भ्रम=दिक+भ्रम

दुर्दिन=दुः+दिन

दुर्वह=दुः+वह

देवर्षि=देव+ऋषि

दुनीति=दुः +नीति

दुर्ग=दुः +ग

दुश्शासन =दुः +शासन

दिगम्बर =दिक् +अम्बर

देवेश =देव +ईश

दुःस्थल =दुः +स्थल

दुस्तर =दुः +तर

देव्यागम=देवी +आगम

दुष्कर =दुः +कर

दुर्जन =दुः +जन

दोषारोपण = दोष + आरोपण

देहांत =देह+अंत

देवैश्वर्य=देव+ऐश्वर्य

AJAY KUMAR

देवालय=देव+आलय

दैव्यंग=देवी+अंग

दुष्परिणाम= दुः + परिणाम

दुर्बलता= दुः + बलता

दुर्घटना= दुः + घटना

देशान्तर= देश + अंतर

देशाभिमान= देश + अभिमान

देशानुराग= देश + अनुराग

देवैश्वर्य= देव + ऐश्वर्य

देवीच्छा= देवी + इच्छा

दैन्यावस्था= दैन्य + अवस्था

दैन्यादि= दैन्य + आदि

दृष्टि= दृष् + ति

दृष्टान्त= दृष्ट + अंत

दन्त्योष्ठ्य= दन्त + ओष्ठ्य

दिगन्त= दिक् + अंत

दिनेश= दिन + ईश

दिग्भाग= दिक् + भाग

दिग्हस्ती= दिक् + हस्ती

दुर्लभ= दुः + लभ

दुःखात्मक= दुख + आत्मक

दुर्बल= दुः + बल

दुरन्त= दुः + अंत

दुस्साहस= दुः + साहस

दुरुप्रयोग= दुः + उपयोग

दुष्कर्म= दुः + कर्म

दुःख= दुः + ख

दुःखान्त= दुःख + अंत

दुस्तर= दुः + तर

दुर्निवार= दुः + निवार

( ध )

धनान्ध= धन + अन्ध

धनुर्धर= धनुः + धर

धनुष्टंकार= धनुः + टंकार

धनित्व= धनिन + त्व

धर्मोपदेश= धर्म + उपदेश

धर्माधिकारी= धर्म + अधिकारी

ध्यानावस्थित= ध्यान + अवस्थित

(न)

AJAY KUMAR

नमस्कार=नमः +कार

निस्सन्देह =निः +सन्देह

निस्सहाय=निः +सहाय

निष्कपट=निः +कपट

नयन =ने+अन

निरन्तर=निः +अन्तर

नायक=नै +अक

निर्मल=निः +मल

नीरव =निः +रव

निम्नाकित= निम्न + अंकित

नागाधिराज= नाग + अधिराज

निश्चिन्त=निः+चिन्त

निर्विकार=निः+विकार

नद्यम्बु=नदी+अम्बु

निस्सृत=निः+सृत

निष्काम=निः+काम

निष्प्राण=निः+प्राण

निष्फल=निः+फल

नारायण=नार+अयन

निश्चल=निः+चल

निषिद्ध=निः+सिद्ध

निर्झर=निः+झर

नाविक =नौ +इक

निराधार =निः +आधार

निर्भर=निः +भर

नीरोग =निः +रोग

निश्छल=निः +छल

निर्गुण =निः +गुण

निस्सार =निः +सार

निस्तार =निः +तार

नरोत्तम = नर + उत्तम

नारीश्वर=नारी+ईश्वर

नद्यूर्मि=नदी+ऊर्मि

निश्चय=निः+चय

निरुपाय=निः+उपाय

नदीश=नदी+ईश

निरीक्षण =निः+ईक्षण

निरर्थक=निः+अर्थक

निरुद्देश्य=निः+उद्देश्य

निर्जल=निः+जल

न्यून=निः+ऊन

निरीह=निः+ईह

निर्विवाद=निः+विवाद

निश्शब्द =निः+शब्द

AJAY KUMAR

निष्कारण=निः+कारण

निस्संतान=निः+संतान

नरेंद्र=नर+इंद्र

निराहार=निः+आहार

नवोऽकुंर= नव + अंकुर

नास्ति= न + अस्ति

नष्ट= नष् + त

नयनाभिराम= नयन + अभिराम

निष्पाप= निः + पाप

निस्तांर= निः + तार

निर्माण= निः + मान

निस्तेज= निः +तेज

निर्भीकता= निः + भीकता

निरौषध= निः + औषध

निरिच्छा= निः + इच्छा

निश्छिद्र= निः + छिद्र

निरन्तर= निः + अंतर

निरेफ= निः + रेफ

निराधार= निः + आधार

निगमागम= निगम + आगम

निर्बल= निः + बल

निर्दोष= निः + दोष

नीरव=निः+रव

नमस्ते=नमः+ते

निराशा=निः+आशा

नारींदु=नारी+इंदु

नरेश= नर + ईश

नवोढा= नव + ऊढ़ा

न्यून= नि + ऊन

नद्यर्पण= नदी + अर्पण

निष्पक्ष= निः + पक्ष

निर्धन= निः + धन

निर्दोष= निः + दोष

निर्घोषित= निः + घोषित

निरर्थ= निः + अर्थ

निर्हस्त= निः + हस्त

निराशा= निः + आशा

निषिद्ध= निः + सिद्ध

निर्वासित= निः + वासित

निरन्ध्र= निः + रन्ध्र

निरक्षर= निः + अक्षर

निर्जीव= निः + जीव

निर्बलात्मा= निर्बल + आत्मा

निराकार= निः + आकार

AJAY KUMAR

निर्णय= निः + नय

निर्भर= निः + भर

निर्द्वन्द्व= निः + द्वन्द्व

निश्चित= निः + चित

निश्चय= निः + चय

निष्क्रिय= निः + क्रिय

निर्विरोध= निः + विरोध

न्यूनातिन्यून= न्यून + अति

नियमानुसार= नियम + अनुसार

(प)

परमार्थ =परम +अर्थ

पीताम्बर =पीत +अम्बर

परिणाम=परि+नाम

प्रमाण=प्र+मान

पयोधि =पयः+धि

पुस्तकालय = पुस्तक + आलय

प्रधानाध्यापक=प्रधान+अध्यापक

परोपकार = पर + उपकार

परमेश्वर = परम + ईश्वर

पदोन्नति = पद + उन्नति

प्रत्येक = प्रति + एक

परमावश्यक= परम + आवश्यक

प्रत्यक्ष = प्रति + अक्ष

प्रत्याघात = प्रति + अघात

पुलकावली = पुलक + अवलि

परन्तु =परम् +तु

पावक =पौ +अक

पुरुषोत्तम=पुरुष +उत्तम

पवन =पो +अन

पुरस्कार=पुरः +कार

परीक्षा=परि+ईक्षा

पयोद =पयः +द

परमौजस्वी=परम+ओजस्वी

पित्रादेश =पितृ+आदेश

पवित्र=पो+इत्र

प्रत्यय=प्रति+अय

पृष्ठ=पृष्+थ

प्रातःकाल=प्रातः+काल

पृथ्वीश=पृथ्वी+ईश

पावन=पौ+अन

पंचम=पम्+चम

प्रत्युत्तर=प्रति+उत्तर

AJAY KUMAR

पित्रिच्छा=पितृ+इच्छा

परिच्छेद=परि+छेद

प्रतिच्छाया=प्रति+छाया

परमौषध=परम+औषध

पित्रनुमति=पितृ+अनुमति

पश्र्वधम=पशु+अधम

पुरोहित = पुरः+हित

पुनर्जन्म= पुनर +जन्म

पच्छाक= पच + शाक

परमाद्रि= परम + आद्रि

परमाणु= परम + अणु

पर्यान्त= परि + आप्त

पयोमन= पयः + मान

पितृऋण= पितृ + ऋण

पितारक्ष= पितः + रक्ष

पुनरुक्ति= पुनः + उक्ति

पुनरुत्थान= पुनः + उत्थान

प्रहार= प्र + हार

प्रतीत= प्रति + इत

प्रजार्थ= प्रजा + अर्थ

प्रत्युपकार= प्रति + उपकार

प्रतिच्छवि= प्रति + छवि

पुनर्जन्म=पुनः+जन्म

प्रांगण=प्र+अंगण

प्रथमोऽध्यायः=प्रथमः+अध्यायः

पुरुषोत्तम=पुरुष+उत्तम

पुनरुक्ति=पुनः+उक्ति

प्रोत्साहन=प्र+उत्साहन

परिष्कार=परिः+कार

परमैश्वर्य= परम + ऐश्वर्य

पदाक्रान्त= पद + आक्रान्त

पराधीन= पर + अधीन

परिच्छेद= परि + छेद

पश्वधम= पशु + अधम

पंचांग= पंच + अंग

पित्रादि= पितृ + आदि

पुरस्कृत= पुरः + कृत

पुष्ट= पुष् + त

पुनर्रचना= पुनः + रचना

प्रत्याचरण= प्रति + आचरण

प्रत्यारुयान= प्रति + आरुयान

प्रत्यक्षात्मा= प्रत्यक्ष + आत्मा

प्रत्युत्पन्न= प्रति + उत्पन्न

प्रलयंकर= प्रलयम + कर

AJAY KUMAR

प्रार्थना= प्र + अर्थना

प्राणिमात्र= प्राणिन + मात्र

प्राणेश्वर= प्राण + ईश्वर

प्रोत्साह= प्र + उत्साह

प्रोज्ज्वल= प्र + उज्ज्वल

प्रौढ़= प्र + उढ़

( फ, ब )

फलाहारी= फल + आहारी

फलागम= फल + आगम

बलात्कार= बलात् + कार

बहिर्देश= बहिः + देश

बहिर्भाग= बहिः + भाग

बिंबोष्ठय= बिंब + ओष्ठ्य

बृहद्रथ= बृहत् + रथ

ब्रह्मास्त्र= ब्रह्म + अस्त्र

ब्रह्मानन्द= ब्रह्म + आनन्द

ब्रह्मर्षि= ब्रह्म + ऋषि

बहिर्मुख= बहिः + मुख

बहिष्कार= बहिः + कार

(भ)

भवन =भो +अन

भोजनालय =भोजन +आलय

भानूदय=भानु+उदय

भाग्योदय =भाग्य +उदय

भावुक=भौ+उक

भूषण=भूष्+अन

भूष्मा=भू+ऊष्मा

भूत्तम=भू+उत्तम

भगवद्गीता= भगवत् + गीता

भरण= भर + अन

भारतेन्दु= भारत + इन्दु

भाविनी= भौ + इनी

भास्कर= भाः + कर

भास्पति= भाः + पति

भावोन्मेष= भाव + उन्मेष

भिन्न= भिद् + न

भूर्जित= भू + उर्जित

भूदार= भू + उदार

भगवद्भक्ति= भगवत् + भक्ति

भविष्यद्वाणी= भविष्यत् + वाणी

(म )

AJAY KUMAR

मुनीन्द्र=मुनि+इन्द्र

मृण्मय=मृत्+मय

महोर्मि=महा+ऊर्मि

महौज=महा+ओज

महार्णव=महा+अर्णव

महौषध=महा+औषध

मृगेन्द्र=मृग+इन्द्र

महेश्वर=महा+ईश्वर

महामात्य= महा + अमात्य

मत्स्याकार = मत्स्य + आकार

महोदय= महा + उदय

महर्षि= महा + ऋषि

मरणोत्तर = मरण+उत्तर

महत्वाकांक्षा= महत्व+आकांक्षा

महेश= महा+ईश

महाशय= महा+आशय

मनोरथ=मनः +रथ

मनोभाव= मनः+भाव

महैश्वर्य= महा+ऐश्वर्य

मकराकृत= मकर + आकृत

मनस्पात= मनः + ताप

मनोवैज्ञानिक= मनः + वैज्ञानिक

महीन्द्र=मही +इन्द्र

मातृण=मातृ+ऋण

मतैक्य=मत+ऐक्य

मन्वन्तर=मनु+अन्तर

मनोयोग=मनः+योग

मध्वासव=मधु+आसव

मनोऽनुकूल=मनः+अनुकूल

महेन्द्र=महा+इन्द्र

मंगलाकार= मंगल + आकार

मध्यावकाश = मध्य + अवकाश

मतानुसार= मत + अनुसार

महोत्सव= महा + उत्सव

मदांध= मद+अंध

मनोगत= मनः+गत

मनोविकार= मनः+विकार

मनोज= मनः+ज

मनोहर= मनः+हर

महर्षि= महा+ऋषि

मनोबल= मनः+बल

मतैक्ता= मत + एकता

मनोरंजन= मनः + रंजन

मनोऽनुसार= मनः + अनुसार

AJAY KUMAR

मनोनीत= मनः + नीत

मनोऽवधान= मनः + अवधान

महच्छत्र= महत् + छत्र

महात्मा= महा + आत्मा

महत्व= महत् + त्व

महदोज= महत् + ओज

महीश्वर= मही + ईश्वर

महालाभ= महान + लाभ

महोरु= महा + ऊरु

महौज= महा + ओज

महौदार्य= महा + औदार्य

महौषधि= महा + औषधि

मायाधीन= माया + अधीन

मातृऋण= मातृ + ऋण

मात्रानन्द= मातृ + आनन्द

मुनीश्वर= मुनि + ईश्वर

मन्त्रोच्चारण= मंत्र + उत् + चारण

महामात्य= महा + अमात्य

(य )

यथेष्ट= यथा + इष्ट

यद्यपि= यदि + अपि

यशोऽभिलाषी= यशः+अभिलाषी

योजनावधि = योजन + अवधि

युगानुसार= युग+अनुसार

यथोचित = यथा +उचित

यशइच्छा=यशः +इच्छा

यशोदा =यशः+दा

युधिष्ठिर =युधि+स्थिर

यशोधरा=यशः+धरा

यशोधन=यशः+धन

यवनावनि= यवन + अवनि

यज्ञ= यज + न

यशोलाभ= यशः + लाभ

योऽसि= यो + असि

( र, ल )

रत्नाकर= रत्न+आकर

राजर्षि= राज+ऋषि

रहस्योदघाटन =रहस्य+उद्घाटन

राज्यगार= राज्य + आगार

राज्याभिषेक= राज्य + अभिषेख

रमेश =रमा+ईश

AJAY KUMAR

रामायण=राम +अयन

रजकण= रजः + कण

रसास्वादन= रस + आस्वादन

रामावतार= राम + अवतार

रेखांश= रेखा + अंश

रहस्याधिकारी=रहस्य+अधिकारी

लोकोक्ति = लोक + उक्ति

लोकोत्तर= लोक + उत्तर

लम्बोदर= लम्ब + उदर

रवींद्र= रवि+इंद्र

रसातल= रसा + अतल

राजाज्ञा= राजा + आज्ञा

रुद्रावतार= रूद्र + अवतार

रसायन= रस + अयन

लक्ष्मीश= लक्ष्मी + ईश

लघूर्मि=लघु+ऊर्मि

लोकोपकार= लोक + उपकार

( व )

वागीश= वाक्+ईश

वाग्जाल= वाक्+जाल

व्युत्पत्ति=वि+उत्पत्ति

विद्योन्नति=विद्या+उन्नति

व्याप्त=वि +आप्त

विद्यालय = विद्या + आलय

विद्वोत्मा = विद्या + उत्तमा

व्ययामादी= व्यायाम + आदि

वसुधैव=वसुधा +एव

विद्यार्थी= विद्या+अर्थी

विधूदय=विधु+उदय

वधूत्सव=वधू+उत्सव

वीरांगणा= वीर+अंगना

विपज्जाल= विपद्+जाल

व्यर्थ=वि +अर्थ

वयोवृद्ध=वयः+वृद्ध

बहिष्कार=बहिः+कार

विद्याध्ययन= विद्या + अध्ययन

वधूत्सव =वधू +उत्सव

व्यायाम=वि +आयाम

व्याकुल=वि +आकुल

विषम=वि+सम

वनौषधि=वन+ओषधि

वधूर्जा=वधू+ऊर्जा

AJAY KUMAR

वधूल्लेख=वधू+उल्लेख

वधूर्मिका= वधू + उर्मिका

व्यस्त= वि + अस्त

व्यभिचार= वि + अभिचार

व्यापी= वि + आपी

वार्तालाप= वार्ता + आलाप

वाग्रोध= वाक् + रोध

वाग्दान= वाक् + दान

विद्योपदेश= विद्या + उपदेश

विमलोदक= विमल + उदक

विश्वामित्र= विश्व + अमित्र

विस्मरण= वि + स्मरण

वृक्षच्छाया= वृक्ष + छाया

विशेषोन्मुख= विशेष + उन्मुख

वध्वैश्वर्य=वधू + ऐश्वर्य

वनस्पति= वनः + पति

व्यवहार= वि + अवहार

व्यापकता= वि + आपकता

व्यापक= वि + आपक

वातावरण= वात + आवरण

वारीश= वारि + ईश

विच्छेद= वि + छेद

विन्यास= वि + नि + आस

विपल्लीन= विपद् + लीन

वधूचित= वधू + उचित

वृद्धावस्था= वृद्ध + अवस्था

वृहदाकार= वृहत् + आकार

विरुदावली= विरुद + अवली

(श, ष, स )

शंकर =शम् +कर

शशांक= शश+अंक

शताब्दी= शत + अब्दी

शिलारोपण= शिला + आरोपण

शेषांश= शेष + अंश

श्वासोच्छवास= श्वास + उत्

शिरोमणि=शिरः +मणि

शस्त्रास्त्र=शस्त्र+अस्त्र

शरच्चंद्र= शरत् + चन्द्र

शुद्धोदन= शुद्ध + ओदन

शीघ्रातिशीघ्र= शीघ्र + अतिशीघ्र

षोडशोपचार= षोडस + उपचार

AJAY KUMAR

सदहस्ती= सत् + हस्ती

संदेह= सम् + देश

समाचार= सम् + आचार

समालोचना= सम् + आलोचना

सम्मुख= सम् +मुख

सद्गुरु= सत् +गुरु

संसार=सम् +सार

संयम= सम+यम

साश्चर्य= स+आश्चर्य

सच्चरित्र= सत+चरित्र

सन्धि=सम+धि

शुद्धोदन= शुद्ध+ओदन

सदभावना= सत+भावना

संचय=सम+चय

सीमान्त=सीमा+अंत

समन्वय= सम् +अनु +अय

संगठन= सम+गठन

समुच्चय= सम+उत्+चय

संकोच= सम् + कोच

सुरेन्द्र= सुर+इन्द्र

सद्धर्म= सत्+धर्म

संयोग= सम् +योग

संतुष्ट= सम् + तुष्ट

संघर्ष= सम् + घर्ष

संकट= सम् + कल्प

सर्वोच्च= सर्व + उच्च

सत्कार= सत् + कार

सज्जन=सत् +जन

सदाचार= सत् +आचार

स्वाधीन= स्व+अधीन

सावधान= स+अवधान

सदभाव=सत+भाव

स्वर्ग= स्वः+ग

स्वार्थ= स्व+अर्थ

सच्छास्त्र=सत्+शास्त्र

संवाद=सम् +वाद

सप्तर्षि= सप्त+ऋषि

सत्याग्रह= सत्य+आग्रह

सद्विचार=सत्+विचार

सर्वोदय= सर्व+उदय

श्रेयस्कर=श्रेयः +कर

सदानन्द= सत्+आनन्द

संकल्प= सम् +कल्प

संयम =सम् +यम

AJAY KUMAR

संवत्= सम+वत्

सर्वोत्तम= सर्व+उत्तम

समुदाय= सम+उत्+आय

सदवाणी= सत्+वाणी

संतप्त= सम् + तप्त

स्वाध्याय= स्व + अध्याय

सर्वोच्च= सर्व + उच्च

स्वाभिमानी = स्व + अभिमानी

स्वालंबन = स्व + अवलंबन

स्वाध्याय = स्व + अध्याय

सत्याग्रह = सत्य + आग्रह

सदुत्तर= सत् + उत्तर

सन्तोष=सम् +तोष

सद्वंश= सत् + वंश

सतीश =सती +ईश

षडानन= षट्+आनन

संकल्प= सम् +कल्प

संबंध= सम् +बंध

संवाद= सम्+वाद

संसार= सम्+सार

सम्मान= सम्+मान

स्वच्छंद= स्व +छंद

साष्टाग= स+अष्ट+अंग

सत्रिहित= सत्+निहित

सूर्योदय= सूर्य+उदय

स्वयम्भूदय= स्वयम्भू+उदय

षड्दर्शन= षट्+दर्शन

सर्वाधिक = सर्व + अधिक

सत्याग्रही = सत्य + आग्रही

सर्वोत्तम= सर्व + उत्तम

स्वर्णाक्षरों = स्वर्ण + अक्षरों

स्वाधीनता= स्व + आधीनता

शरीरांत= शरीर + अंत

स्वागत =सु+आगत

सरोज =सरः +ज

सरोवर =सरः +वर

सदैव =सदा +एव

षण्मास= षट्+मास

संपूर्ण= सम्+पूर्ण

संरक्षण= सम्+रक्षण

संविधान= सम्+विधान

सज्जन= सत्+जन

सम्मति= सम्+मति

स्वागत= सु+आगत

AJAY KUMAR

सन्नद= सत् +नद

समीक्षा= सम् + ईक्षा

संस्कृति= सम् + कृति

संगठन= सम् + गठन

सन्तान= सम् +तान

संसर्ग= सम् + सर्ग

सर्वोदय= सर्व + उदय

सदिच्छा= सत् + इच्छा

सतीच्छा= सती + इच्छा

सत्कार= सत् + कार

संकीर्ण= सम् + कीर्ण

संभव= सम् + भव

संग्राम= सम् + ग्राम

सज्जन= सत् + जन

संलग्न= सम् + लग्न

सर्वोपरि= सर्व + उपरि

सारांश= सार + अंश

साग्रह= स + आग्रह

साधूहा= साधु + उहा

सिहांसन= सिंह + आसन

सुन्दरौदन= सुन्दर + ओदन

सेवार्थ= सेवा + अर्थ

संहारैषण= संहार + एषण

समुचित= सम् + उचित

संगीत= सम् + गीत

संदेह= सम् + देह

सदुप्रयोग= सत् +उपयोग

सत्यासक्त= सत्य + आसक्त

समाधान= सम् + आधान

समालोचक= सम् + आलोचक

सदवतार= सत् + अवतार

सम्राज = सम् + राज

संयोग= सम् + योग

संयुक्त= सम् + युक्त

सहायतार्थ= सहायता + अर्थ

सत्साहित्य= सत् + साहित्य

संघाराम= संघ + आराम

सर्वागीण= सर्व + अंगीन

साश्चर्य= स + आश्चर्य

सावधान= स + अवधान

सिद्धांत= सिद्ध + अन्त

सुधेच्छा= सुधा + इच्छा

सुरानुकूल= सुर + अनुकूल

सोत्साह= स + उत्साह

AJAY KUMAR

सोऽहम= सः + अहम्

स्वेच्छा= स्व + इच्छा

सम्मति= सम् + मति

स्वाधीन= स्व + अधीन

समुदाय= सम् + उदाय

समृद्धि= सम् + ऋद्धि

सच्छात्र= सत् + शास्त्र

संपूर्ण= सम् + पूर्ण

संहार= सम् + हार

संसार= सम् + सार

सन्धि= सम् + धि

संकोच= सम् + कोच

स्थानान्तर= स्थान + अंतर

स्वात्मबल= स्व + आत्मबल

साभिलाष= स + अभिलाष

सम्मानास्पद=सम्+मान+आस्पद

सदसद्विवेकिनी=सत्+असत्+विवेकिनी

सर्वतोभावेन= सर्वतः + भावेन

स्वेच्छाचारी= स्वेच्छा + आचारी

स्वार्थ= स्व + अर्थ

सहोदर= सह + उदर

स्वैर= स्व + ईर

सज्जाति= सत् + जाति

समुद्रोर्मि= समुद्र + ऊर्मि

सख्युचित= सखी + उचित

संभव= सम् + भव

संक्रान्ति= सम् + क्रान्ति

संवत्= सम् + वत्

संपर्क= सम् + पर्क

संगम= सम् + गम

संचय= सम् + चय

स्वच्छन्द= स्व + छन्द

सुखोपभोग= सुख + उपभोग

सावकाश= स + अवकाश

संग्रहालय= सम् + ग्रह + आलय

सच्चिदानन्द= सत् + चित् + आनन्द

स्वर्गारोहण= स्वर्ग + आरोहण

(ह, ञ )

हिमांचल = हिम + अंचल

हरिश्चन्द्र= हरिः + चन्द्र

हिमालय= हिम + आलय

ह्रदयानन्द= ह्रदय + आनन्द

AJAY KUMAR

हताश= हत + आश

हरीच्छा= हरि + इच्छा

हिमाच्छादित=हिम+आच्छादित

ज्ञानोपदेश= ज्ञान+उपदेश

हितोपदेश= हित + उपदेश

ह्रदयहारिणी= ह्रदय + हारिणी

हरेक= हर + एक

ह्रद्येश= ह्रद् + देश

.....

AJAY KUMAR

# कारक (Case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) सम्बन्ध सूचित हो, उसे (उस रूप को) 'कारक' कहते हैं।

अथवा- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) क्रिया से सम्बन्ध सूचित हो, उसे (उस रूप को) 'कारक' कहते हैं।

इन दो 'परिभाषाओं' का अर्थ यह हुआ कि संज्ञा या सर्वनाम के आगे जब 'ने', 'को', 'से' आदि विभक्तियाँ लगती हैं, तब उनका रूप ही 'कारक' कहलाता हैं।

तभी वे वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध रखने योग्य 'पद' होते है और 'पद' की अवस्था में ही वे वाक्य के दूसरे शब्दों से या क्रिया से कोई लगाव रख पाते हैं। 'ने', 'को', 'से' आदि विभिन्न विभक्तियाँ विभिन्न कारकों की है। इनके लगने पर ही कोई शब्द 'कारकपद' बन पाता है और वाक्य में आने योग्य होता है। 'कारकपद' या 'क्रियापद' बने बिना कोई शब्द वाक्य में बैठने योग्य नहीं होता।

जैसे- ''रामचन्द्रजी ने खारे जल के समुद्र पर बन्दरों से पुल बँधवा दिया।''

इस वाक्य में 'रामचन्द्रजी ने', 'समुद्र पर', 'बन्दरों से' और 'पुल' संज्ञाओं के रूपान्तर है, जिनके द्वारा इन संज्ञाओं का सम्बन्ध 'बँधवा दिया' क्रिया के साथ सूचित होता है।

दूसरा उदाहरण-

श्रीराम ने रावण को बाण से मारा

इस वाक्य में प्रत्येक शब्द एक-दूसरे से बँधा है और प्रत्येक शब्द का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में क्रिया के साथ है।

यहाँ 'ने' 'को' 'से' शब्दों ने वाक्य में आये अनेक शब्दों का सम्बन्ध क्रिया से जोड़ दिया है। यदि ये शब्द न हो तो शब्दों का क्रिया के साथ तथा आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होगा। संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाला रूप कारक होता है।

## कारक के भेद-

हिन्दी में कारको की संख्या आठ है-

(1) कर्ता कारक (Nominative case)

(2) कर्म कारक (Accusative case)

(3) करण कारक (Instrument case)

(4) सम्प्रदान कारक(Dative case)

(5) अपादान कारक(Ablative case)

(6) सम्बन्ध कारक (Gentive case)

(7) अधिकरण कारक (Locative case)

(8) संबोधन कारक(Vocative case)

## कारक के विभक्ति चिन्ह

कारकों की पहचान के चिह्न व लक्षण निम्न प्रकार हैं-

| कारक | लक्षण | चिह्न | कारक-चिह्न या विभक्तियाँ |
|---|---|---|---|
| (1) कर्ता | जो काम करें | ने | प्रथमा |
| (2) कर्म | जिस पर क्रिया का फल पड़े | को | द्वितीया |
| (3) करण | काम करने (क्रिया) का साधन | से, के द्वारा | तृतीया |
| (4) सम्प्रदान | जिसके लिए किया की जाए | को,के लिए | चतुर्थी |
| (5) अपादान | जिससे कोई वस्तु अलग हो | से (अलग के अर्थ में) | पंचमी |
| (6) सम्बन्ध | जो एक शब्द का दूसरे से सम्बन्ध जोड़े | का, की, के, रा, री, रे | षष्ठी |
| (7) अधिकरण | जो क्रिया का आधार हो | में,पर | सप्तमी |
| (8) सम्बोधन | जिससे किसी को पुकारा जाये | हे! अरे! हो! | |

सम्बोधन  विभक्तियाँ- सभी कारकों की स्पष्टता के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें व्याकरण में 'विभक्तियाँ' अथवा 'परसर्ग' कहते हैं।

विभक्ति से बने शब्द-रूप को 'पद' कहते हैं। शब्द (संज्ञा और क्रिया) बिना पद बने वाक्य में नहीं चल सकते। ऊपर सभी कारकों के विभक्त-चिह्न दे दिये गये हैं।

AJAY KUMAR

विभक्तियों की प्रायोगिक विशेषताएँ

प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी कारक की विभक्तियों की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। इनका व्यवहार करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

(i) सामान्यतः विभक्तियाँ स्वतन्त्र हैं। इनका अस्तित्व स्वतन्त्र है। चूँकि एक काम शब्दों का सम्बन्ध दिखाना है, इसलिए इनका अर्थ नहीं होता। जैसे- ने, से आदि।

(ii) हिन्दी की विभक्तियाँ विशेष रूप से सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होने पर प्रायः विकार उत्पत्र कर उनसे मिल जाती हैं। जैसे- मेरा, हमारा, उसे, उन्हें।

(iii) विभक्तियाँ प्रायः संज्ञाओं या सर्वनामों के साथ आती है। जैसे- मोहन की दुकान से यह चीज आयी है।

विभक्तियों का प्रयोग

हिन्दी व्याकरण में विभक्तियों के प्रयोग की विधि निश्चित है। हिन्दी में दो तरह की विभक्तियाँ हैं- (i) विश्लिष्ट और (ii) संश्लिष्ट। संज्ञाओं के साथ आनेवाली विभक्तियाँ विश्लिष्ट होती है, अर्थात अलग रहती है। जैसे- राम ने, वृक्ष पर, लड़कों को, लड़कियों के लिए। सर्वनामों के साथ विभक्तियाँ संश्लिष्ट या मिली होती हैं। जैसे- उसका, किसपर, तुमको, तुम्हें, तेरा, तुम्हारा, उन्हें। यहाँ यह ध्यान रखना है कि तुम्हें-इन्हें में 'को' और तेरा-तुम्हारा में 'का' विभक्तिचिह्न संश्लिष्ट है। अतः 'के लिए'- जैसे दो शब्दों की विभक्ति में पहला शब्द संश्लिष्ट होगा और दूसरा विश्लिष्ट। जैसे- तू+रे लिए =तेरे लिए; तुम+रे लिए =तुम्हारे लिए; मैं+रे लिए =मेरे लिए।

यहाँ प्रत्येक कारक और उसकी विभक्ति के प्रयोग का परिचय उदाहरणसहित दिया जाता है।

(1) कर्ता कारक (Nominative case):- वाक्य में जो शब्द काम करने वाले के अर्थ में आता है, उसे कर्ता कहते है। दूसरे शब्द में- क्रिया का करने वाला 'कर्ता' कहलाता है।

इसकी विभक्ति 'ने' लुप्त है।

जैसे- ''मोहन खाता है।'' इस वाक्य में खाने का काम मोहन करता है अतः कर्ता मोहन है ।

''मनोज ने पत्र लिखा।'' इस वाक्य क्रिया का करने वाला 'मनोज' कर्ता है।

विशेष- कभी-कभी कर्ता कारक में 'ने' चिह्न नहीं भी लगता है। जैसे- 'घोड़ा' दौड़ता है।

AJAY KUMAR

इसकी दो विभक्तियाँ है- ने और ०। संस्कृत का कर्ता ही हिन्दी का कर्ताकारक है। वाक्य में कर्ता का प्रयोग दो रूपों में होता है- पहला वह, जिसमें 'ने' विभक्ति नहीं लगती, अर्थात जिसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होते हैं। इसे 'अप्रत्यय कर्ताकारक' कहते है। इसे 'प्रधान कर्ताकारक' भी कहा जाता है।

उदाहरणार्थ, 'मोहन खाता है। यहाँ 'खाता हैं' क्रिया है, जो कर्ता 'मोहन' के लिंग और वचन के अनुसार है। इसके विपरीत जहाँ क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते है, वहाँ 'ने' विभक्ति लगती है। इसे व्याकरण में 'सप्रत्यय कर्ताकारक' कहते हैं। इसे 'अप्रधान कर्ताकारक' भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ, 'श्याम ने मिठाई खाई'। इस वाक्य में क्रिया 'खाई' कर्म 'मिठाई' के अनुसार आयी है।

कर्ता के 'ने' चिह्न का प्रयोग कर्ताकारक की विभक्ति 'ने' है। बिना विभक्ति के भी कर्ताकारक का प्रयोग होता है। 'अप्रत्यय कर्ताकारक' में 'ने' का प्रयोग न होने के कारण वाक्यरचना में कोई खास कठिनाई नहीं होती। 'ने' का प्रयोग अधिकतर 'पश्चिमी हिन्दी' में होता है। बनारस से पंजाब तक इसके प्रयोग में लोगों को विशेष कठिनाई नहीं होती; क्योंकि इस 'ने' विभक्ति की सृष्टि उधर ही हुई है। हिन्दी भाषा की इस विभक्ति से अहिन्दीभाषी घबराते हैं। लेकिन, थोड़ी सावधानी रखी जाय और इसकी व्युत्पत्ति को ध्यान में रखा जाय, तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि ''इसका स्वरूप तथा प्रयोग जैसा संस्कृत में है, वैसा हिन्दी में भी है, हिन्दी में वैशिष्टय नहीं आया।''

खड़ीबोली हिन्दी में 'ने' चिह्न कर्ताकारक में संज्ञा-शब्दों की एक विश्लिष्ट विभक्ति है, जिसकी स्थिति बड़ी नपी-तुली और स्पष्ट है। किन्तु, हिन्दी लिखने में इसके प्रयोग की भूलें प्रायः हो जाया करती हैं। 'ने' का प्रयोग केवल हिन्दी और उर्दू में होता है। अहिन्दीभाषियों को 'ने' के प्रयोग में कठिनाई होती है।

यहाँ यह दिखाया गया है कि हिन्दी भाषा में 'ने' का प्रयोग कहाँ होता है और कहाँ नहीं होता।

कर्ता के 'ने' विभक्ति-चिह्न का प्रयोग कहाँ होता ?

'ने' विभक्ति का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है।

(i) 'ने' का प्रयोग कर्ता के साथ तब होता है, जब एकपदीय या संयुक्त क्रिया सकर्मक भूतकालिक होती है। केवल सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण भूत, संदिग्ध भूत, हेतुहेतुमद् भूत कालों में 'ने' विभक्ति लगती है। जैसे-

सामान्य भूत- राम ने रोटी खायी।

आसन्न भूत- राम ने रोटी खायी है।

पूर्ण भूत- राम ने रोटी खायी थी।

संदिग्ध भूत-राम ने रोटी खायी होगी।

हेतुहेतुमद् भूत- राम ने पुस्तक पढ़ी होती, तो उत्तर ठीक होता।

तात्पर्य यह है कि केवल अपूर्ण भूत को छोड़ शेष पाँच भूतकालों में 'ने' का प्रयोग होता है।

(ii) सामान्यतः अकर्मक क्रिया में 'ने' विभक्ति नहीं लगती, किन्तु कुछ ऐसी अकर्मक क्रियाएँ है, जैसे- नहाना, छींकना, थूकना, खाँसना- जिनमें 'ने' चिह्न का प्रयोग अपवादस्वरूप होता है। इन क्रियाओं के बाद कर्म नहीं आता। जैसे- उसने थूका। राम ने छींका। उसने खाँसा। उसने नहाया।

(iii) जब अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाय, तब 'ने' का प्रयोग होता है, अन्यथा नहीं। जैसे- उसने टेढ़ी चाल चली। उसने लड़ाई लड़ी।

(iv) जब संयुक्त क्रिया के दोनों खण्ड सकर्मक हों, तो अपूर्णभूत को छोड़ शेष सभी भूतकालों में कर्ता के आगे 'ने' चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे- श्याम ने उत्तर कह दिया। किशोर ने खा लिया।

(v) प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ, अपूर्णभूत को छोड़ शेष सभी भूतकालों में 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे- मैंने उसे पढ़ाया। उसने एक रुपया दिलवाया।

कर्ता के 'ने' विभक्ति-चिह्न का प्रयोग कहाँ नहीं होता ?

'ने' विभक्ति का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में नहीं होता है।

(i) वर्तमान और भविष्यत् कालों की क्रिया में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे- राम जाता है। राम जायेगा।

(ii) बकना, बोलना, भूलना- ये क्रियाएँ यद्यपि सकर्मक हैं, तथापि अपवादस्वरूप सामान्य, आसत्र, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतकालों में कर्ता के 'ने' चिह्न का व्यवहार नहीं होता।

AJAY KUMAR

जैसे- वह गाली बका। वह बोला। वह मुझे भूला।

हाँ, 'बोलना' क्रिया में कहीं-कहीं 'ने' आता है।

जैसे- उसने बोलियाँ बोलीं।

'वह बोलियाँ बोला'- ऐसा भी लिखा या कहा जा सकता है।

(iii) यदि संयुक्त क्रिया का अन्तिम खण्ड अकर्मक हो, तो उसमें 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे- मैं खा चुका। वह पुस्तक ले आया। उसे रेडियो ले जाना है।

(iv) जिन वाक्यों में लगना, जाना, सकना तथा चुकना सहायक क्रियाएँ आती हैं उनमे 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे- वह खा चुका। मैं पानी पीने लगा। उसे पटना जाना हैं।

कर्ता में 'को' का प्रयोग-

विधि-क्रिया ('चाहिए' आदि) और संभाव्य भूत ('जाना था', 'करना चाहिए था' आदि) में कर्ता 'को' के साथ आता है।

जैसे- राम को जाना चाहिए। राम को जाना था, जाना चाहिए था।

(2) कर्म कारक (Accusative case) :- जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का प्रभाव पड़े उसे कर्म कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'को' है।

जैसे- माँ बच्चे को सुला रही है।

इस वाक्य में सुलाने की क्रिया का प्रभाव बच्चे पर पड़ रहा है। इसलिए 'बच्चे को' कर्म कारक है।

राम ने रावण को मारा। यहाँ 'रावण को' कर्म है।

विशेष-कभी-कभी 'को' चिह्न का प्रयोग नहीं भी होता है। जैसे- मोहन पुस्तक पढता है।

AJAY KUMAR

कर्मकारक का प्रत्यय चिह्न 'को' है। बिना प्रत्यय के या अप्रत्यय कर्म के कारक का भी प्रयोग होता है। इसके नियम है-

(i) बुलाना, सुलाना, कोसना, पुकारना, जगाना, भगाना इत्यादि क्रियाओं के कर्मों के साथ 'को' विभक्ति लगती है।

जैसे- मैंने हरि को बुलाया।

माँ ने बच्चे को सुलाया।

शीला ने सावित्री को जी भर कोसा।

पिता ने पुत्र को पुकारा।

हमने उसे (उसकी) खूब सबेरे जगाया।

लोगों ने शेरगुल करके डाकुओं को भगाया।

(ii) 'मारना' क्रिया का अर्थ जब 'पीटना' होता है, तब कर्म के साथ विभक्ति लगती है, पर यदि उसका अर्थ 'शिकार करना' होता है, तो विभक्ति नहीं लगती, अर्थात कर्म अप्रत्यय रहता है। जैसे-

लोगों ने चोर को मारा।

पर- शिकारी ने बाघ मारा।

हरि ने बैल को मारा।

पर- मछुए ने मछली मारी।

(iii) बहुधा कर्ता में विशेष कर्तृत्वशक्ति जताने के लिए कर्म सप्रत्यय रखा जाता है। जैसे- मैंने यह तालाब खुदवाया है, मैंने इस तालाब को खुदवाया है। दोनों वाक्यों में अर्थ का अन्तर ध्यान देने योग्य है। पहले वाक्य के कर्म से कर्ता में साधारण कर्तृत्वशक्ति का और दूसरे वाक्य में कर्म से कर्ता में विशेष कर्तृत्वशक्ति का बोध होता है। इस तरह के अन्य वाक्य है- बाघ बकरी को खा गया, हरि ने ही पेड़ को काटा है, लड़के ने फलों को तोड़ लिया इत्यादि। जहाँ कर्ता में विशेष कर्तृत्वशक्ति का बोध कराने की आवश्यकता न हो, वहाँ सभी स्थानों पर कर्म को सप्रत्यय नहीं रखना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, जब कर्म निर्जीव वस्तु हो, तब 'को' का प्रयोग नहीं होना चाहिए। जैसे- 'राम ने रोटी को खाया' की अपेक्षा 'राम ने रोटी खायी ज्यादा अच्छा है। मैं कॉलेज को जा रहा हूँ; मैं आम को खा रहा हूँ; मैं कोट को पहन रहा हूँ- इन उदाहरणों में 'को' का प्रयोग भद्दा है। प्रायः चेतन पदार्थों के साथ 'को' चिह्न का प्रयोग होता है और अचेतन के साथ नहीं। पर यह अन्तर वाक्य-प्रयोग पर निर्भर करता है।

AJAY KUMAR

(iv) कर्म सप्रत्यय रहने पर क्रिया सदा पुंलिंग होगी, किन्तु अप्रत्यय रहने पर कर्म के अनुसार।

जैसे- राम ने रोटी को खाया (सप्रत्यय), राम ने रोटी खायी (अप्रत्यय)।

(v) यदि विशेषण संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हों, तो कर्म में 'को' अवश्य लगता है।

जैसे- बड़ों को पहले आदर दो,; छोटों को प्यार करो।

(3) करण कारक (Instrument case):- जिस वस्तु की सहायता से या जिसके द्वारा कोई काम किया जाता है, उसे करण कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के सम्बन्ध का बोध हो, उसे करण कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'से' है।

जैसे- ''हम आँखों से देखते है।''

इस वाक्य में देखने की क्रिया करने के लिए आँख की सहायता ली गयी है। इसलिए आँखों से करण कारक है ।

करणकारक के सबसे अधिक प्रत्ययचिह्न हैं। 'ने' भी करणकारक का ऐसा चिह्न है, जो करणकारक के रूप में संस्कृत में आये कर्ता के लिए 'एन' के रूप में, कर्मवाच्य और भाववाच्य में आता है। किन्तु, हिन्दी की प्रकृति 'ने' को सप्रत्यय कर्ताकारक का ही चिह्न मानती है।

हिन्दी में करणकारक के अन्य चिह्न है- से, द्वारा, के द्वारा, के जरिए, के साथ, के बिना इत्यादि। इन चिह्नों में अधिकतर प्रचलित से', 'द्वारा', 'के द्वारा' 'के जरिए' इत्यादि ही है। 'के साथ', के बिना' आदि साधनात्मक योग-वियोग जतानेवाले अव्ययों के कारण, साधनात्मक योग बतानेवाले 'के द्वारा' की ही तरह के करणकारक के चिह्न हैं। 'करन' का अर्थ है 'साधन'। अतः 'से' चिह्न वहीं करणकारक का चिह्न है जहाँ यह 'साधन' के अर्थ में प्रयुक्त हो।

जैसे- मुझसे यह काम न सधेगा। यहाँ 'मुझसे' का अर्थ है 'मेरे द्वारा', 'मुझ साधनभूत के द्वारा' या 'मुझ-जैसे साधन के द्वारा। अतः 'साधन' को इंगित करने के कारण यहाँ 'मुझसे' का 'से' करण का विभक्तिचिह्न है। अपादान का भी विभक्तिचिह्न 'से' है।

'अपादान' का अर्थ है 'अलगाव की प्राप्ति' । अतः अपादान का 'से' चिह्न अलगाव के संकेत का प्रतीक है, जबकि करन का, अपादान के विपरीत, साधना का, साधनभूत लगाव का। 'पेड़ से फल गिरा', 'मैं घर से चला' आदि वाक्यों में 'से' प्रत्यय 'पेड़' को या घर को 'साधन'

AJAY KUMAR

नहीं सिद्ध करता, बल्कि इन दोनों से बिलगाव सिद्ध करता है। अतः इन दोनों वाक्यों में 'घर' और 'पेड़' के आगे प्रयुक्त 'से' विभक्तिचिह्न अपादानकारक का है और इन दोनों शब्दों में लगाकर इन्हे अपादानकारक का 'पद' बनाता है।

करणकारक का क्षेत्र अन्य सभी कारकों से विस्तृत है। इस कारण में अन्य समस्त कारकों से छूटे हुए प्रत्यय या वे पद जो अन्य किसी कारक में आने से बच गए हों, आ जाते है।

अतः इसकी कुछ सामान्य पहचान और नियम जान लेना आवश्यक है-

(i) 'से' करन और अपादान दोनों विभक्तियों का चिह्न है, किन्तु साधनभूत का प्रत्यय होने पर करण माना जायेगा, जबकि अलगाव का प्रत्यय होने पर अपादान।

जैसे- वह कुल्हाड़ी से वृक्ष काटता है।

मुझे अपनी कमाई से खाना मिलता है।

साधुओं की संगति से बुद्धि सुधरती है।

यह तीनों करण है।

पेड़ से फल गिरा।

घर से लौटा हुआ लड़का।

छत से उतरी हुई लता।

यह तीनों अपादान है।

(ii) 'ने' सप्रत्यय कर्ताकारक का चिह्न है। किन्तु, 'से', 'के द्वारा' और 'के जरिये' हिन्दी में प्रधानतः करणकारक के ही प्रत्यय माने जाते है; क्योंकि ये सारे प्रत्यय 'साधन' अर्थ की ओर इंगित करते हैं। जैसे-

मुझसे यह काम न सधेगा।

उसके द्वारा यह कथा सुनी थी।

आपके जरिये ही घर का पता चला।

तीर से बाघ मार दिया गया।

AJAY KUMAR

मेरे द्वारा मकान ढहाया गया था।

(iii) भूख, प्यास, जाड़ा, आँख, कान, पाँव इत्यादि शब्द यदि एकवचन करणकारक में सप्रत्यय रहते है, तो एकवचन होते है और अप्रत्यय रहते है, तो बहुवचन।

जैसे- वह भूख से बेचैन है;..... वह भूखों बेचैन है;

लड़का प्यास से मर रहा है;..... लड़का प्यासों मर रहा है।

स्त्री जाड़े से काँप रही है;..... स्त्री जाड़ों काँप रही है।

मैंने अपनी आँख से यह घटना देखी;..... मैंने अपनी आँखों यह घटना देखी।

कान से सुनी बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए;..... कानों सुनी बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए

लड़का अब अपने पाँव से चलता है;..... लड़का अब अपने पाँवों चलता है।

(4) सम्प्रदान कारक :- जिसके लिए कोई क्रिया (काम )की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिसके लिए कुछ किया जाय या जिसको कुछ दिया जाय, इसका बोध करानेवाले शब्द के रूप को सम्प्रदान कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'को' और 'के लिए' है।

जैसे- शिष्य ने अपने गुरु के लिए सब कुछ किया। गरीब को धन दीजिए।

''वह अरुण के लिए मिठाई लाया।''

इस वाक्य में लाने का काम 'अरुण के लिए' हुआ। इसलिए 'अरुण के लिए' सम्प्रदान कारक है।

(i)कर्म और सम्प्रदान का एक ही विभक्तिप्रत्यय है 'को', पर दोनों के अर्थो में अन्तर है। सम्प्रदान का 'को', 'के लिए' अव्यय के स्थान पर या उसके अर्थ में प्रयुक्त होता है, जबकि कर्म के 'को' का 'के लिए' अर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं है।

नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए-

कर्म- हरि मोहन को मारता है।..... सम्प्रदान- हरि मोहन को रुपये देता है।

कर्म- उसके लड़के को बुलाया।..... सम्प्रदान- उसने लड़के को मिठाइयाँ दी।

AJAY KUMAR

कर्म- माँ ने बच्चे को खेलते देखा।..... सम्प्रदान- माँ ने बच्चे को खिलौने खरीदे।

(ii) साधारणतः जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई काम किया जाता है, वह पद सम्प्रदानकारक का होता है।

जैसे- भूखों को अत्र देना चाहिए और प्यासों को जल। गुरु ही शिष्य को ज्ञान देता है।

(iii) 'के हित', 'के वास्ते', 'के निर्मित' आदि प्रत्ययवाले अव्यय भी सम्प्रदानकारक के प्रत्यय है। जैसे-

राम के हित लक्ष्मण वन गये थे।

तुलसी के वास्ते ही जैसे राम ने अवतार लिया।

मेरे निर्मित ही ईश्वर की कोई कृपा नहीं।

(5) अपादान कारक(Ablative case):- जिससे किसी वस्तु का अलग होना पाया जाता है, उसे अपादान कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'से' है।

जैसे- "दूल्हा घोड़े से गिर पड़ा।"

इस वाक्य में 'गिरने' की क्रिया 'घोड़े से' हुई अथवा गिरकर दूल्हा घोड़े से अलग हो गया। इसलिए 'घोड़े से' अपादान कारक है।

जिस शब्द में अपादान की विभक्ति लगती है, उससे किसी दूसरी वस्तु के पृथक होने का बोध होता है। जैसे-

हिमालय से गंगा निकलती है।

मोहन ने घड़े से पानी ढाला।

बिल्ली छत से कूद पड़ी

चूहा बिल से बाहर निकला।

करण और अपादान के 'से' प्रत्यय में अर्थ का अन्तर करणवाचक के प्रसंग में बताया जा चुका है।

AJAY KUMAR

(6) सम्बन्ध कारक (Gentive case):- शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के संबध का ज्ञान हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ सम्बन्ध या लगाव प्रतीत हो, उसे सम्बन्धकारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'का', 'की', और 'के' हैं।

जैसे- ''सीता का भाई आया है।''

इस वाक्य में गीता तथा भाई दोनों शब्द संज्ञा है। भाई से गीता का संबध दिखाया गया है। वह किसका भाई है ? गीता का। इसलिए गीता का संबध कारक है ।

रहीम का मकान छोटा है। संबंध का लिंग-वचन संबद्ध वस्तु के अनुसार होता है। जैसे- रहीम की कोठरी, रहीम के बेटे। सर्वनाम में संबंध में 'का', 'की', 'के' प्रत्यय का रूप 'रा', 'री', 'रे' या 'ना', 'नी', 'ने' भी होता है। जैसे- मेरा लड़का, मेरी लड़की, मेरे लड़के या अपना लड़का, अपनी लड़की, अपने लड़के।

(i) सम्बन्धकारक का विभक्तिचिह्न 'का' है। वचन और लिंग के अनुसार इसकी विकृति 'के' और 'की' है। इस कारक से अधिकतर कर्तृत्व, कार्य-कारण, मोल-भाव, परिमाण इत्यादि का बोध होता है। जैसे-

अधिकतर- राम की किताब, श्याम का घर।

कर्तृत्व- प्रेमचन्द्र के उपन्यास, भारतेन्दु के नाटक।

कार्य-करण- चाँदी की थाली, सोने का गहना।

मोल-भाव- एक रुपए का चावल, पाँच रुपए का घी।

परिमाण- चार भर का हार, सौ मील की दूरी, पाँच हाथ की लाठी।

द्रष्टव्य- बहुधा सम्बन्धकारक की विभक्ति के स्थान में 'वाला' प्रत्यय भी लगता है। जैसे- रामवाली किताब, श्यामवाला घर, प्रेमचन्दवाले उपन्यास, चाँदीवाली थाली इत्यादि।

(ii) सम्बन्धकारक की विभक्तियों द्वारा कुछ मुहावरेदार प्रयोग भी होते है। जैसे-

(अ) दिन के दिन, महीने के महीने, होली की होली, दीवाली की दीवाली, रात की रात, दोपहर के दोपहर इत्यादि।

(आ) कान का कच्चा, बात का पक्का, आँख का अन्धा, गाँठ का पूरा, बात का धनी, दिल का सच्चा इत्यादि।

AJAY KUMAR

(इ) वह अब आने का नहीं, मैं अब जाने का नहीं, वह टिकने का नहीं इत्यादि।

(iii) दूसरे कारकों के अर्थ में भी सम्बन्धकारक की विभक्ति लगती है। जैसे- जन्म का भिखारी= जन्म से भिखारी (करण), हिमालय का चढ़ना= हिमालय पर चढ़ना (अधिकरण)

(iv) सम्बन्ध, अधिकार और देने के अर्थ में बहुधा सम्बन्धकारक की विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे- हरि को बाल-बच्चा नहीं हैं। राम के बहन हुई है। राजा के आँखें नहीं होती, केवल कान होते हैं। रावण ने विभीषण के लात मारी। ब्राह्मण को दक्षिणा दो।

(v) सर्वनाम की स्थिति में सम्बन्धकारक का प्रत्यय रा-रे-री और ना-ने-नी हो जाता है। जैसे- मेरा लड़का, मेरी लड़की, तुम्हारा घर, तुम्हारी पगड़ी, अपना भरोसा, अपनी रोजी।

(7) अधिकरण कारक (Locative case):- शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में- क्रिया या आधार को सूचित करनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के स्वरूप को अधिकरण कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'में' और 'पर' हैं।

जैसे- मोहन मैदान में खेल रहा है। इस वाक्य में 'खेलने' की क्रिया किस स्थान पर हो रही है ?

मैदान पर। इसलिए मैदान पर अधिकरण कारक है।

दूसरा उदाहरण-''मनमोहन छत पर खेल रहा है।'' इस वाक्य में 'खेलने' की क्रिया किस स्थान पर हो रही है?

'छत पर' । इसलिए 'छत पर' अधिकरण कारक है।

(i) कभी-कभी 'में' के अर्थ में 'पर' और 'पर' के अर्थ में 'में' का प्रयोग होता है। जैसे- तुम्हारे घर पर चार आदमी हैं=घर में। दूकान पर कोई नहीं था =दूकान में। नाव जल में तैरती है =जल पर।

(ii) कभी-कभी अधिकरणकारक की विभक्तियों का लोप भी हो जाता है। जैसे-

इन दिनों वह पटने है।

वह सन्ध्या समय गंगा-किनारे जाता है।

AJAY KUMAR

वह द्वार-द्वार भीख माँगता चलता है।

लड़के दरवाजे-दरवाजे घूम रहे हैं।

जिस समय वह आया था, उस समय मैं नहीं था।

उस जगह एक सभा होने जा रही है।

(iii) किनारे, आसरे और दिनों जैसे पद स्वयं सप्रत्यय अधिकरणकारक के है और यहाँ, वहाँ, समय आदि पदों का अर्थ सप्रत्यय अधिकरणकारक का है। अतः इन पदों की स्थिति में अधिकरणकारक का प्रत्यय नहीं लगता।

(8) संबोधन कारक(Vocative case):- जिन शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने में किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में-संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'अरे', 'हे' आदि है।

जैसे- ' हे भगवान' से पुकारने का बोध होता है। सम्बोधनकारक की कोई विभक्ति नहीं होती है। इसे प्रकट करने के लिए 'हे', 'अरे', 'रे' आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

दूसरा उदाहरण-हे श्याम !इधर आओ । अरे! तुम क्या कर रहे हो ? उपयुक्त वाक्यों में 'हे श्याम!, अरे!' संबोधन कारक है।

.....

AJAY KUMAR

# मुहावरे (Idioms)

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

अरबी भाषा का 'मुहावर:' शब्द हिन्दी में 'मुहावरा' हो गया है। उर्दूवाले 'मुहाविरा' बोलते हैं। इसका अर्थ 'अभ्यास' या 'बातचीत' से है। हिन्दी में 'मुहावरा' एक पारिभाषिक शब्द बन गया है। कुछ लोग मुहावरा को रोजमर्रा या 'वाग्धारा' कहते है।

मुहावरा का प्रयोग करना और ठीक-ठीक अर्थ समझना बड़ा ही कठिन है, यह अभ्यास और बातचीत से ही सीखा जा सकता है। इसलिए इसका नाम मुहावरा पड़ गया

मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पत्र होते है। इसका काम है बात इस खूबसूरती से कहना की सुननेवाला उसे समझ भी जाय और उससे प्रभावित भी हो।

## मुहावरा की विशेषता

(1) मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग नही। जैसे, कोई कहे कि 'पेट काटना' तो इससे कोई विलक्षण अर्थ प्रकट नही होता है। इसके विपरीत, कोई कहे कि 'मैने पेट काटकर' अपने लड़के को पढ़ाया, तो वाक्य के अर्थ में लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह उत्पत्र होगा।

(2) मुहावरा अपना असली रूप कभी नही बदलता अर्थात उसे पर्यायवाची शब्दों में अनूदित नही किया जा सकता। जैसे कमर टूटना एक मुहावरा है, लेकिन स्थान पर कटिभंग जैसे शब्द का प्रयोग गलत होगा।

(3) मुहावरे का शब्दार्थ नहीं, उसका अवबोधक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है; जैसे- 'खिचड़ी पकाना'। ये दोनों शब्द जब मुहावरे के रूप में प्रयुक्त होंगे, तब इनका शब्दार्थ कोई काम न देगा। लेकिन, वाक्य में जब इन शब्दों का प्रयोग होगा, तब अवबोधक अर्थ होगा- 'गुप्तरूप से सलाह करना'।

(4) मुहावरे का अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है। जैसे- 'लड़ाई में खेत आना' । इसका अर्थ 'युद्ध में शहीद हो जाना' है, न कि लड़ाई के स्थान पर किसी 'खेत' का चला आना।

(5) मुहावरे भाषा की समृद्धि और सभ्यता के विकास के मापक है। इनकी अधिकता अथवा न्यूनता से भाषा के बोलनेवालों के श्रम, सामाजिक सम्बन्ध, औद्योगिक स्थिति, भाषा-निर्माण की शक्ति, सांस्कृतिक योग्यता, अध्ययन, मनन और आमोदक भाव, सबका एक साथ पता चलता है। जो समाज जितना अधिक व्यवहारिक और कर्मठ होगा, उसकी भाषा में इनका प्रयोग उतना ही अधिक होगा।

AJAY KUMAR

(6) समाज और देश की तरह मुहावरे भी बनते-बिगड़ते हैं। नये समाज के साथ नये मुहावरे बनते है। प्रचलित मुहावरों का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि हमारे सामाजिक जीवन का विकास कितना हुआ। मशीन युग के मुहावरों और सामन्तवादी युग के मुहावरों तथा उनके प्रयोग में बड़ा अन्तर है।

(7) हिन्दी के अधिकतर मुहावरों का सीधा सम्बन्ध शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से है। यह बात दूसरी भाषाओं के मुहावरों में भी पायी जाती है; जैसे- मुँह, कान, हाथ, पाँव इत्यादि पर अनेक मुहावरे प्रचलित हैं। हमारे अधिकतर कार्य इन्हीं के सहारे चलते हैं।

यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध मुहावरे और उनके अर्थ वाक्य में प्रयोग सहित दिए जा रहे है।

( अ, आ )

अक्ल पर पत्थर पड़ना (बुद्धि भष्ट होना) - विद्वान और वीर होकर भी रावण की अक्ल पर पत्थर ही पड़ गया था कि उसने राम की पत्नी का अपहरण किया।

आँख भर आना (आँसू आना)- बेटी की विदाई पर माँ की आखें भर आयी।

आँखों में बसना (हृदय में समाना)- वह इतना सुंदर है की उसका रूप मेरी आखों में बस गया है।

अंक भरना (स्नेह से लिपटा लेना)- माँ ने देखते ही बेटी को अंक भर लिया।

अंग टूटना (थकान का दर्द)- इतना काम करना पड़ा कि आज अंग टूट रहे है।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (स्वयं अपनी प्रशंसा करना)- अच्छे आदमियों को अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता।

अक्ल का चरने जाना (समझ का अभाव होना)- इतना भी समझ नहीं सके ,क्या अक्ल चरने गए है ?

अपने पैरों पर खड़ा होना (स्वालंबी होना)- युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने पर ही विवाह करना चाहिए।

अक्ल का दुश्मन (मूर्ख)- राम तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते, लगता है आजकल तुम अक्ल के दुश्मन हो गए हो।

अपना उल्लू सीधा करना (मतलब निकालना)- आजकल के नेता अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही लोगों को भड़काते है।

आँखे खुलना (सचेत होना)- ठोकर खाने के बाद ही बहुत से लोगों की आँखे खुलती है।

आँख का तारा - (बहुत प्यारा)- आज्ञाकारी बच्चा माँ-बाप की आँखों का तारा होता है।

आँखे दिखाना (बहुत क्रोध करना)- राम से मैंने सच बातें कह दी, तो वह मुझे आँख दिखाने लगा।

आसमान से बातें करना (बहुत ऊँचा होना)- आजकल ऐसी ऐसी इमारते बनने लगी है, जो आसमान से बातें करती है।

अंगारों पर लेटना (डाह होना, दुःख सहना) वह उसकी तरक्की देखते ही अंगारों पर लोटने लगा। मैं जीवन भर अंगारों पर लोटता रहा हूँ।

अँगूठा दिखाना (समय पर धोखा देना)- अपना काम तो निकाल लिया, पर जब मुझे जरूरत पड़ी, तब अँगूठा दिखा दिया। भला, यह भी कोई मित्र का लक्षण है।

अँचरा पसारना(माँगना,याचना करना)- हे देवी मैया,अपने बीमार बेटे के लिए आपके आगे अँचरा पसारती हूँ। उसे भला-चंगा कर दो,माँ।

अण्टी मारना (चाल चलना)- ऐसी अण्टीमारो कि बच्चू चारों खाने चित गिरें।

अण्ड-बण्ड कहना (भला-बुरा या अण्ट- सण्ट कहना)- क्या अण्ड-बण्ड कहे जा रहे हो। वह सुन लेगा, तो कचूमर ही निकाल छोड़ेगा।

अन्धाधुन्ध लुटाना (बिना विचारे व्यय)- अपनी कमाई भी कोई अन्धाधुन्ध लुटाता है ?

अन्धा बनना (आगे-पीछे कुछ न देखना)- धर्म से प्रेम करो, पर उसके पीछे अन्धा बनने से तो दुनिया नहीं चलती।

अन्धा बनाना (धोखा देना)- मायामृग ने रामजी तक को अन्धा बनाया था। इस माया के पीछे मौजीलाल अन्धे बने तो क्या।

अन्धा होना (विवेकभ्रष्ट होना)- अन्धे हो गये हो क्या, जवान बेटे के सामने यह क्या जो-सो बके जा रहे हो ?

अन्धे की लकड़ी (एक ही सहारा)- भाई, अब तो यही एक बेटा बचा, जो मुझे अन्धे की लकड़ी है। इसे परदेश न जाने दूँगा।

अन्धेरखाता (अन्याय)- मुँहमाँगा दो, फिर भी चीज खराब। यह कैसा अन्धेरखाता है।

अन्धेर नगरी (जहाँ धांधली का बोलबाला हो)- इकत्री का सिक्का था, तो चाय इकत्री में मिलती थी, दस पैसे का निकला, तो दस पैसे में मिलने लगी। यह बाजार नहीं, अन्धेरनगरी ही है।

अकेला दम (अकेला)- मेरा क्या ! अकेला दम हूँ; जिधर सींग समायेगा, चल दूँगा।

अक्ल की दुम (अपने को बड़ा होशियार लगानेवाला)- दस तक का पहाड़ा भी तो आता नहीं, मगर अक्ल की दुम साइन्स का पण्डित बनता है।

अगले जमाने का आदमी (सीधा-सादा, ईमानदार)- आज की दुनिया ऐसी हो गई कि अगले जमाने का आदमी बुद्धू समझा जाता है।

अढाई दिन की हुकूमत (कुछ दिनों की शानोशौकत)- जनाब, जरा होशियारी से काम लें। यह अढाई दिन की हुकूमत जाती रहेगी।

अत्र-जल उठना (रहने का संयोग न होना, मरना)- मालूम होता है कि तुम्हारा यहाँ से अत्र-जल उठ गया है, जो सबसे बिगाड़ किये रहते हो।

अत्र-जल करना (जलपान, नाराजगी आदि के कारण निराहार के बाद आहार-ग्रहण)- भाई, बहुत दिनों पर आये हो। अत्र-जल तो करते जाओ।

अत्र लगना (स्वस्थ रहना)- उसे ससुराल का ही अत्र लगता है। इसलिए तो वह वहीं का हो गया।

अपना किया पाना (कर्म का फल भोगना)- बेहूदों को जब मुँह लगाया है, तो अपना किया पाओ। झखते क्या हो ?

अपना-सा मुँह लेकर रह जाना (शर्मिन्दा होना)- आज मैंने ऐसी चुभती बात कही कि वे अपना-सा मुँह लिए रह गये।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना (स्वार्थी होना, अलग रहना)-यदि सभी अपनी खिचड़ी अलग पकाने लगें, तो देश और समाज की उन्नति होने से रही।

अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारना (संकट मोल लेना)- उससे तकरार कर तुमने अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारी है।

अब-तब करना (बहाना करना)- कोई भी चीज माँगो, वह अब-तब करना शुरू कर देगा।

अब-तब होना (परेशान करना या मरने के करीब होना)- दवा देने से क्या ! वह तो अब-तब हो रहा है।

आँच न आने देना (जरा भी कष्ट या दोष न आने देना)- तुम निश्चिन्त रहो। तुमपर आँच न आने दूँगा।

आठ-आठ आँसू रोना (बुरी तरह पछताना)- इस उमर में न पढ़ा, तो आठ-आठ आँसू न रोओ तो कहना।

आसन डोलना (लुब्ध या विचलित होना)- धन के आगे ईमान का भी आसन डोल जाया करता है।

आस्तीन का साँप (कपटी मित्र)- उससे सावधान रहो। आस्तीन का साँप है वह।

आसमान टूट पड़ना (गजब का संकट पड़ना)- पाँच लोगों को खिलाने-पिलाने में ऐसा क्या आसमान टूट पड़ा कि तुम सारा घर सिर पर उठाये हो ?

अढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना- (सबसे अलग रहना)- मोहन आजकल अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाते है।

अंगारों पर पैर रखना (अपने को खतरे में डालना, इतराना)- भारतीय सेना अंगारों पर पैर रखकर देश की रक्षा करते है।

अक्ल का अजीर्ण होना (आवश्यकता से अधिक अक्ल होना)- सोहन किसी भी विषय में दूसरे को महत्व नही देता है, उसे अक्ल का अजीर्ण हो गया है।

अक्ल दंग होना (चकित होना)- मोहन को पढ़ाई में ज्यादा मन नहीं लगता लेकिन परीक्षा परिणाम आने पर सब का अक्ल दंग हो गया।

अक्ल का पुतला (बहुत बुद्धिमान)- विदुर जी अक्ल का पुतला थे।

अन्त पाना (भेद पाना)- उसका अन्त पाना कठिन है।

अन्तर के पट खोलना (विवेक से काम लेना)- हर हमेशा हमें अन्तर के पट खोलना चाहिए।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना (कल्पनाएँ करना)- वह हमेशा अक्ल के घोड़े दौड़ाता रहता है।

अपनी डफली आप बजाना- (अपने मन की करना)- राधा दूसरे की बात नहीं सुनती, वह हमेशा अपनी डफली आप बजाती है।

अन्धों में काना राजा- (अज्ञानियों में अल्पज्ञान वाले का सम्मान होना)

अंकुश देना- (दबाव डालना)

अंग में अंग चुराना- (शरमाना)

अंग-अंग फूले न समाना- (आनंदविभोर होना)

अंगार बनना- (लाल होना, क्रोध करना)

अंडे का शाहजादा- (अनुभवहीन)

अठखेलियाँ सूझना- (दिल्लगी करना)

अँधेरे मुँह- (प्रातः काल, तड़के)

अड़ियल टट्टू- (रूक-रूक कर काम करना)

अपना घर समझना- (बिना संकोच व्यवहार)

अड़चन डालना- (बाधा उपस्थित करना)

अरमान निकालना- (इच्छाएँ पूरी करना)

अरण्य-चन्द्रिका- (निष्प्रयोजन पदार्थ)

आकाश-पाताल एक करना- (अत्यधिक उद्योग/परिश्रम करना)

आकाश से तारे तोड़ना- (कठिन कार्य करना)

आकाश छूना- (बहुत ऊँचा होना)

आग का पुतला- (क्रोधी)

आग पर आग डालना- (जले को जलाना)

आग पर पानी डालना- (क्रुद्ध को शांत करना, लड़नेवालों को समझाना-बुझाना)

आग पानी का बैर- (सहज वैर)

आग बबूला होना- (अति क्रुद्ध होना)

आग बोना- (झगड़ा लगाना)

AJAY KUMAR

आग में घी डालना- (झगड़ा बढ़ाना, क्रोध भड़काना)

आग लगाकर तमाशा देखना- (झगड़ा खड़ाकर उसमें आनंद लेना)

आग लगाकर पानी को दौड़ाना- पहले झगड़ा लगाकर फिर उसे शांत करने का यत्न करना)

आग लगने पर कुआँ खोदना- (पहले से करने के काम को ऐन वक़्त पर करने चलना)

आग से पानी होना- (क्रोध करने के बाद शांत हो जाना)

आग में कूद पड़ना- (खतरा मोल लेना)

आग उगलना- (क्रोध प्रकट करना)

आन की आन में- (फौरन ही)

आग रखना- (मान रखना)

आटे-दाल का भाव मालूम होना- (सांसरिक कठिनाइयों का ज्ञान होना)

आसमान दिखाना- (पराजित करना)

आड़े आना- (नुकसानदेह)

आड़े हाथों लेना- (झिड़कना, बुरा-भला कहना)

(ई)

ईंट से ईंट बजाना (युद्धात्मक विनाश लाना )- शुरू में तो हिटलर ने यूरोप में ईट-से-ईट बजा छोड़ी, मगर बाद में खुद उसकी ईंटे बजनी लगी।

ईंट का जबाब पत्थर से देना (जबरदस्त बदला लेना)- भारत अपने दुश्मनों को ईंट का जबाब पत्थर से देगा।

ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना)- तुम तो कभी दिखाई ही नहीं देते, तुम्हे देखने को तरस गया, ऐसा लगता है कि तुम ईद के चाँद हो गए हो।

इधर-उधर करना- (टालमटोल करना)

इन्द्र का अखाड़ा-(ऐश-मौज की जगह)

AJAY KUMAR

( उ, ऊ )

उड़ती चिड़िया पहचानना (मन की या रहस्य की बात ताड़ना )- कोई मुझे धोखा नही दे सकता। मै उड़ती चिड़िया पहचान लेता हुँ।

उन्नीस बीस का अंतर होना (एक का दूसरे से कुछ अच्छा होना )- दोनों गाये बस उन्नीस-बीस है।

उलटी गंगा बहाना (अनहोनी हो जाना)- राम किसी से प्रेम से बात कर ले, तो उलटी गंगा बह जाए।

( ए, ऐ )

एक आँख से देखना (बराबर मानना )- प्रजातन्त्र वह शासन है जहाँ कानून मजदूरी अवसर इत्यादि सभी मामले में अपने सदस्यों को एक आँख से देखा जाता है।

एक लाठी से सबको हाँकना (उचित-अनुचित का बिना विचार किये व्यवहार)- समानता का अर्थ एक लाठी से सबको हाँकना नहीं है, बल्कि सबको समान अवसर और जीवन-मूल्य देना है।

एक से तीन बनाना- (खूब नफा करना)

एक आँख न भाना- (तनिक भी अच्छा न लगना)

एक न चलना- (कोई उपाय सफल न होना)

एँड़ी-चोटी का पसीना एक करना- (खूब परिश्रम करना)

(ओ, औ )

ओखली में सिर देना- इच्छापूर्वक किसी झंझट में पड़ना, कष्ट सहने पर उतारू होना)

ओस के मोती- (क्षणभंगुर)

( क )

कागजी घोड़े दौड़ाना (केवल लिखा-पढ़ी करना, पर कुछ काम की बात न होना)- आजकल सरकारी दफ्तर में सिर्फ कागजी घोड़े दौड़ते है; होता कुछ नही।

कान देना (ध्यान देना)- पिता की बातों पर कण दिया करो।

कान खोलना (सावधान होना)- कान खोलकर सुन लो तिम्हें जुआ नही खेलना है।

AJAY KUMAR

कण पकरना (बाज आना)- कान पकड़ो की फिर ऐसा काम न करोगे।

कमर कसना (तैयार होना)- शत्रुओं से लड़ने के लिए भारतीयों को कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिए

कलेजा मुँह का आना (भयभीत होना )- गुंडे को देख कर उसका कलेजा मुँह को आ गया

कलेजे पर साँप लोटना (डाह करना )- जो सब तरह से भरा पूरा है, दूसरे की उन्नति पर उसके कलेजे पर साँप क्यों लोटे।

कमर टूटना (बेसहारा होना )- जवान बेटे के मर जाने बाप की कमर ही टूट गयी।

किताब का कीड़ा होना (पढाई के अलावा कुछ न करना )- विद्यार्थी को केवल किताब का कीड़ा नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वस्थ शरीर और उन्नत मस्तिष्कवाला होनहार युवक होना है।

कलम तोड़ना (बढ़िया लिखना)- वाह ! क्या अच्छा लिखा है। तुमने तो कलम तोड़ दी।

कोसों दूर भागना (बहुत अलग रहना)- शराब की क्या बात, मै तो भाँग से कोसों दूर भागता हुँ।

कुआँ खोदना (हानि पहुँचाने के यत्न करना)- जो दूसरों के लिये कुआँ खोदता है उसमे वह खुद गिरता है।

कल पड़ना (चैन मिलना)- कल रात वर्षा हुई, तो थोड़ी कल पड़ी।

किरकिरा होना (विघ्न आना)- जलसे में उनके शरीक न होने से सारा मजा किरकिरा हो गया।

किस मर्ज की दवा (किस काम के)- चाहते हो चपरासीगीरी और साइकिल चलाओगे नहीं। आखिर तुम किस मर्ज की दवा हो?

कुत्ते की मौत मरना (बुरी तरह मरना)- कंस की किस्मत ही ऐसी थी। कुत्ते की मौत मरा तो क्या।

काँटा निकलना (बाधा दूर होना)- उस बेईमान से पल्ला छूटा। चलो, काँटा निकला।

कागज काला करना (बिना मतलब कुछ लिखना)- वारिसशाह ने अपनी 'हीर' के शुरू में ही प्रार्थना की है- रहस्य की बात लिखनेवालों का साथ दो, कागज काला करनेवालों का नहीं।

किस खेत की मूली (अधिकारहीन, शक्तिहीन)- मेरे सामने तो बड़ों-बड़ों को झुकना पड़ा है। तुम किस खेत की मूली हो ?

कलई खुलना- (भेद प्रकट होना)

कलेजा फटना- (दिल पर बेहद चोट पहुँचना)

करवटें बदलना- (अड़चन डालना)

काला अक्षर भैंस बराबर- (अनपढ़, निरा मूर्ख)

काँटे बोना- (बुराई करना)

काँटों में घसीटना- (संकट में डालना)

काठ मार जाना- (स्तब्ध हो जाना)

काम तमाम करना- (मार डालना)

किनारा करना- (अलग होना)

कौड़ी के मेल बिकना- (बहुत सस्ता बिकना)

कोदो देकर पढ़ना- (अधूरी शिक्षा पाना)

कपास ओटना- (सांसरिक काम-धन्धों में लगे रहना)

कीचड़ उछालना- (निन्दा करना)

कोल्हू का बैल- (खूब परिश्रमी)

कौड़ी का तीन समझना- (तुच्छ समझना)

कौड़ी काम का न होना- (किसी काम का न होना)

कौड़ी-कौड़ी जोड़ना- (छोटी-मोटी सभी आय को कंजूसी के साथ बचाकर रखना)

कचूमर निकालना- (खूब पीटना)

कटे पर नमक छिड़कना- विपत्ति के समय और दुःख देना)

कन्नी काटना- (आँख बचाकर भाग जाना)

कोहराम मचाना- (दुःखपूर्ण चीख -पुकार)

किस खेत की मूली- (अधिकारहीन, शक्तिहीन)

( ख )

ख़ाक छानना (भटकना)- नौकरी की खोज में वह खाक छानता रहा।

खून-पसीना एक करना (अधिक परिश्रम करना)- खून पसीना एक करके विद्यार्थी अपने जीवन में सफल होते है।

खरी-खोटी सुनाना (भला-बुरा कहना)- कितनी खरी-खोटी सुना चुका हुँ, मगर बेकहा माने तब तो ?

AJAY KUMAR

खून खौलना (क्रोधित होना)- झूठ बातें सुनते ही मेरा खून खौलने लगता है।

खून का प्यासा (जानी दुश्मन होना)- उसकी क्या बात कर रहे हो, वह तो मेरे खून का प्यासा हो गया है।

खेत रहना या आना (वीरगति पाना)- पानीपत की तीसरी लड़ाई में इतने मराठे आये कि मराठा-भूमि जवानों से खाली हो गयी।

खटाई में पड़ना (झमेले में पड़ना, रुक जाना)- बात तय थी, लेकिन ऐन मौके पर उसके मुकर जाने से सारा काम खटाई में पड़ गया।

खेल खेलाना (परेशान करना)- खेल खेलाना छोड़ो और साफ-साफ कहो कि तुम्हारा इरादा क्या है।

खून सूखना- (अधिक डर जाना)

खून सवार होना- (किसी को मार डालने के लिए तैयार होना)

खून पीना- (मार डालना, सताना )

खून सफेद हो जाना- (बहुत डर जाना)

खम खाना- (दबना, नष्ट होना)

खटिया सेना- (बीमार होना)

खाक में मिलना- (बर्बाद होना)

खार खाना- (डाह करना)

खा-पका जाना- (बर्बाद करना)

खेल खेलाना- (परेशान करना)

खुशामदी टट्टू- (मुँहदेखी करना)

खूँटे के बल कूदना- (किसी के भरोसे पर जोर या जोश दिखाना)

ख्याली पुलाव- (सिर्फ कल्पना करना)

( ग )

गले का हार होना(बहुत प्यारा)- लक्ष्मण राम के गले का हर थे।

गर्दन पर सवार होना (पीछा ना छोड़ना )- जब देखो, तुम मेरी गर्दन पर सवार रहते हो।

AJAY KUMAR

गला छूटना (पिंड छोड़ना)- उस कंजूस की दोस्ती टूट ही जाती, तो गला छूटता।

गर्दन पर छुरी चलाना (नुकसान पहुचाना)- मुझे पता चल गया कि विरोधियों से मिलकर किस तरह मेरे गले पर छुरी चला रहे थो।

गड़े मुर्दे उखाड़ना (दबी हुई बात फिर से उभारना)- जो हुआ सो हुआ, अब गड़े मुर्दे उखारने से क्या लाभ ?

गागर में सागर भरना (एक रंग -ढंग पर न रहना)- उसका क्या भरोसा वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

गुल खिलना (नयी बात का भेद खुलना, विचित्र बातें होना)- सुनते रहिये, देखिये अभी क्या गुल खिलेगा।

गिरगिट की तरह रंग बदलना (बातें बदलना)- गिरगिट की तरह रंग बदलने से तुम्हारी कोई इज्जत नहीं करेगा।

गाल बजाना (डींग हाँकना)- जो करता है, वही जानता है। गाल बजानेवाले क्या जानें ?

गिन-गिनकर पैर रखना (सुस्त चलना, हद से ज्यादा सावधानी बरतना)- माना कि थक गये हो, मगर गिन-गिनकर पैर क्या रख रहे हो ? शाम के पहले घर पहुँचना है या नहीं ?

गुस्सा पीना (क्रोध दबाना)- गुस्सा पीकर रह गया। चाचा का वह मुँहलगा न होता, तो उसकी गत बना छोड़ता।

गूलर का फूल होना (लापता होना)- वह तो ऐसा गूलर का फूल हो गया है कि उसके बारे में कुछ कहना मुश्किल है।

गुदड़ी का लाल (गरीब के घर में गुणवान का उत्पत्र होना)- अपने वंश में प्रेमचन्द सचमुच गुदड़ी के लाल थे।

गाँठ में बाँधना (खूब याद रखना )- यह बात गाँठ में बाँध लो, तन्दुरुस्ती रही तो सब रहेगा।

गाल बजाना- (डींग मारना)

काल के गाल में जाना- (मृत्यु के मुख में पड़ना)

गंगा लाभ होना- (मर जाना)

गीदड़भभकी- (मन में डरते हुए भी ऊपर से दिखावटी क्रोध करना)

गुड़ गोबर करना- (बनाया काम बिगाड़ना)

गुड़ियों का खेल- (सहज काम)

गुरुघंटाल- (बहुत चालाक)

गतालखाते में जाना-(नष्ट होना)

गज भर की छाती होना- (उत्साहित होना)

AJAY KUMAR

गाढ़े में पड़ना- (संकट में पड़ना)

गोटी लाल होना- (लाभ होना)

गढ़ा खोदना- (हानि पहुँचाने का उपाय करना)

गूलर का कीड़ा- (सीमित दायरे में भटकना)

( घ )

घर का न घाट का (कहीं का नहीं)- कोई काम आता नही और न लगन ही है कि कुछ सीखे-पढ़े। ऐसा घर का न घाट का जिये तो कैसे जिये।

घाव पर नमक छिड़कना (दुःख में दुःख देना)- राम वैसे ही दुखी है, तुम उसे परेशान करके घाव पर नमक छिड़क रहे हो।

घोड़े बेचकर सोना (बेफिक्र होना)- बेटी तो ब्याह दी। अब क्या, घोड़े बेचकर सोओ।

घड़ो पानी पड़ जाना (अत्यन्त लज्जित होना )- वह हमेशा फस्ट क्लास लेता था मगर इस बार परीक्षा में चोरी करते समय रँगे हाथ पकड़े जाने पर बच्चू पर घोड़े पड़ गया।

घी के दीए जलाना (अप्रत्याशित लाभ पर प्रसत्रता)- जिससे तुम्हारी बराबर ठनती रही, वह बेचारा कल शाम कूच कर गया। अब क्या है, घी के दीये जलाओ।

घर बसाना (विवाह करना)- उसने घर क्या बसाया, बाहर निकलता ही नहीं।

घात लगाना (मौका ताकना)- वह चोर दरवान इसी दिन के लिए तो घात लगाये था, वर्ना विश्वास का ऐसा रँगीला नाटक खेलकर सेठ की तिजोरी-चाबी तक कैसे समझे रहता ?

घर का उजाला- (कुलदीप)

घर का मर्द- (बाहर डरपोक)

घर का आदमी-(कुटुम्ब, इष्ट-मित्र)

घातपर चढ़ना- (तत्पर रहना)

घास खोदना- (व्यर्थ काम करना)

घाव हरा होना- (भूले हुए दुःख को याद करना)

घाट-घाट का पानी पीना- (अच्छे-बुरे अनुभव रखना)

( च )

चल बसना (मर जाना)- बेचारे का बेटा भरी जवानी में चल बसा।

चार चाँद लगाना (चौगुनी शोभा देना)- निबन्धों में मुहावरों का प्रयोग करने से चार चाँद लग जाता है।

चिकना घड़ा होना (बेशर्म होना)- तुम ऐसा चिकना घड़ा हो तुम्हारे ऊपर कहने सुनने का कोई असर नहीं पड़ता।

चिराग तले अँधेरा (पण्डित के घर में घोर मूर्खता आचरण )- पण्डितजी स्वयं तो बड़े विद्वान है, किन्तु उनके लड़के को चिराग तले अँधेरा ही जानो।

चैन की बंशी बजाना (मौज करना)- आजकल राम चैन की बंशी बजा रहा है।

चार दिन की चाँदनी (थोड़े दिन का सुख)- राजा बलि का सारा बल भी जब चार दिन की चाँदनी ही रहा, तो तुम किस खेत की मूली हो ?

चींटी के पर लगना या जमना (विनाश के लक्षण प्रकट होना)- इसे चींटी के पर जमना ही कहेंगे कि अवतारी राम से रावण बुरी तरह पेश आया।

चूँ न करना (सह जाना, जवाब न देना)- वह जीवनभर सारे दुःख सहता रहा, पर चूँ तक न की।

चादर से बाहर पैर पसारना (आय से अधिक व्यय करना)- डेढ़ सौ ही कमाते हो और इतनी खर्चीली लतें पाल रखी है। चादर के बाहर पैर पसारना कौन-सी अक्लमन्दी है ?

चाँद पर थूकना (व्यर्थ निन्दा या सम्माननीय का अनादर करना)- जिस भलेमानस ने कभी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, उसे ही तुम बुरा-भला कह रहे हो ?भला, चाँद पर भी थूका जाता है ?

चूड़ियाँ पहनना (स्त्री की-सी असमर्थता प्रकट करना)- इतने अपमान पर भी चुप बैठे हो! चूड़ियाँ तो नहीं पहन रखी है तुमने ?

चहरे पर हवाइयाँ उड़ना (डरना, घबराना)- साम्यवाद का नाम सुनते ही पूँजीपतियों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगती है।

चाँदी काटना (खूब आमदनी करना)- कार्यालय में बाबू लोग खूब चाँदी काट रहे है।

चलता-पुर्जा- (काफी चालाक)

चाँद का टुकड़ा- (बहुत सुन्दर)

चल निकलना- (प्रगति करना, बढ़ना)

चिकने घड़े पर पानी पड़ना- (उपदेश का कोई प्रभाव न पड़ना)

चोली-दामन का साथ- (काफी घनिष्ठता)

चुनौती देना- (ललकारना)

चुल्लू भर पानी में डूब मरना- (अत्यन्त लज्जित होना)

चैन की वंशी बजाना- (सुख से समय बिताना)

चोटी का पसीना एँड़ी तक बहना- (खूब परिश्रम करना)

चण्डूखाने की गप- (झूठी गप)

चम्पत हो जाना- (भाग जाना)

चींटी के पर जमना- (ऐसा काम करना जिससे हानि या मृत्यु हो

चकमा देना- (धोखा देना)

चाचा बनाना- (दण्ड देना)

चरबी छाना- (घमण्ड होना)

चाँदी का जूता- (रूपये का जोर)

( छ )

छक्के छूटना (बुरी तरह पराजित होना)- महाराजकुमार विजयनगरम की विकेट-कीपरी में अच्छे-अच्छे बॉलर के छक्के छूट चुके है।

छप्पर फाडकर देना (बिना मेहनत का अधिक धन पाना)- ईश्वर जिसे देता है, उसे छप्पर फाड़कर देता है।

छाती पर पत्थर रखना (कठोर ह्रदय)- उसने छाती पर पत्थर रखकर अपने पुत्र को विदेश भेजा था।

छाती पर सवार होना (आ जाना)- अभी वह बात कर रही थी कि बच्चे उसके छाती पर सवार हो गए।

छक्के छुडाना- (खूब परेशान करना)

छठी का दूध याद करना- (सुख भूल जाना)

छाती पर मूँग या कोदो दलना- (कष्ट देना)

छः पाँच करना- (आनाकानी करना)

छाती पर साँप लोटना- (किसी के प्रति डाह)

AJAY KUMAR

छोटी मुँह बड़ी बात- (योग्यता से बढ़कर बोलना)

( ज, झ )

जहर उगलना (द्वेषपूर्ण बात करना )- पडोसी देश चीन और पाकिस्तान हमारे देश के प्रति हमेशा जहर उगलते रहते है।

जलती आग में घी डालना (क्रोध बढ़ाना)- बहन ने भाई की शिकायत करके जलती आग में भी डाल दिया।

जमीन आसमान एक करना (बहुत प्रयन्त करना)- मै शहर में अच्छा मकान लेने के लिए जमीन आसमान एक कर दे रहा हूँ परन्तु सफलता नहीं मिल रही है।

जान पर खेलना (साहसिक कार्य )- हम जान पर खेलकर भी अपने देश की रक्षा करेंगे।

जूते चाटना (चापलूसी करना )- अफसरों के जूते चाटते -चाटते वह थक गया ,मगर कोई फल न निकला।

जड़ उखाड़ना- (पूर्ण नाश करना)

जंगल में मंगल करना- (शून्य स्थान को भी आनन्दमय कर देना)

जबान में लगाम न होना- (बिना सोचे-समझे बोलना)

जी का जंजाल होना- (अच्छा न लगना)

जमीन का पैरों तले से निकल जाना- (सन्नाटे में आना)

जमीन चूमने लगा- (धराशायी होना)

जान खाना- (तंग करना)

जी टूटना- (दिल टूटना)

जी लगना- (मन लगना)

जी खट्टा होना- (खराब अनुभव होना)

जीती मक्खी निगलना- (जान-बूझकर बेईमानी या कोई अशोभनीय कार्य करना)

जी चुराना- (कोशिश न करना)

झाड़ मारना- (घृणा करना)

झक मारना (विवश होना)- दूसरा कोई साधन नहीं है। झक मारकर तुम्हे साइकिल से जाना पड़ेगा।

AJAY KUMAR

( ट )

टाँग अड़ाना (अड़चन डालना)- हर बात में टाँग ही अड़ाते हो या कुछ आता भी है तुम्हे ?

टका सा जबाब देना ( साफ़ इनकार करना)- मै नौकरी के लिए मैनेज़र से मिला लेकिन उन्होंने टका सा जबाब दे दिया।

टस से मस न होना ( कुछ भी प्रभाव न पड़ना)- दवा लाने के लिए मै घंटों से कह रहा हूँ, परन्तु आप आप टस से मस नहीं हो रहे हैं।

टोपी उछालना (अपमान करना)- अपने घर को देखो ,दूसरों की टोपी उछालने से क्या लाभ ?

टका-सा मुँह लेकर रह जाना- (लज्जित हो जाना)

टट्टी की आड़ में शिकार खेलना- (छिपकर बुरा काम करना)

टाट उलटना- (व्यापारी का अपने को दिवालिया घोषित कर देना)

टेढ़ी खीर- (कठिन काम)

टें-टें-पों-पों - (व्यर्थ हल्ला करना)

टुकड़ों पर पलना- (दूसरों की कमाई पर गुजारा करना)

( ठ )

ठन-ठन गोपाल- (मूर्ख, गरीब, कुछ नहीं)

ठगा-सा- (भौंचक्का-सा)

ठठेरे-ठठेरे बदला- (समान बुद्धिवाले से काम पड़ना)

( ड )

डकार जाना ( हड़प जाना)- सियाराम अपने भाई की सारी संपत्ति डकार गया।

डूबते को तिनके का सहारा- (संकट में पड़े को थोड़ी मदद)

डींग हाँकना- (शेखी बघारना)

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना- (अलग-अलग होकर काम करना)

AJAY KUMAR

डोरी ढीली करना- (सँभालकर काम न करना)

( ढ )

ढील देना- (अधीनता में न रखना)

ढेर करना- (मारकर गिरा देना)

ढेर होना- (मर जाना)

ढोल पीटना- (जाहिर करना)

( त, थ )

तिल का ताड़ बनाना (बात को तूल देना)- सिर्फ बेहूदा, मगर मुहल्लेवालों ने यह तिल का तार कर दिया कि मैने उसे दुनयाभर गालियाँ दी।

तूती बोलना (प्रभाव जमाना )- आजकल तो आपकी ही तूती बोल रही है।

तह देना- (दवा देना)

तह-पर-तह देना- (खूब खाना)

तरह देना- (ख्याल न करना)

तंग करना- (हैरान करना)

तंग हाथ होना- (निर्धन होना)

तलवे चाटना या सहलाना- (खुशामद करना)

तिनके को पहाड़ करना- (छोटी बात को बड़ी बनाना)

तीन तरह करना या होना- (नष्ट करना, तितर बितर करना)

ताड़ जाना- (समझ जाना)

तुक में तुक मिलाना- (खुशामद करना)

तेवर बदलना- (क्रोध करना)

AJAY KUMAR

ताना मारना-(व्यंग्य वचन बोलना)

ताक में रहना- (खोज में रहना)

तारे गिनना- (दुर्दशाग्रस्त होना, काफी चोट पहुँचना)

तोते की तरह आँखें फेरना- (बेमुरौवत होना)

( थ )

थूक कर चाटना (बात देकर फिरना )- मै राम की तरह थूक कर चाटना वाला नहीं हूँ।

थाली का बैंगन होना- (जिसका विचार स्थिर न रहे)

थू-थू करना- (घृणा प्रकट करना)

( द,ध )

दम टूटना (मर जाना )- शेर ने एक ही गोली में दम तोड़ दिया।

दिन दूना रात चौगुना (खूब उनती )- योजनाओं के चलते ही देश का विकास दिन दूना रात चौगुना हुआ।

दाल में काला होना (संदेह होना ) - हम लोगों की ओट में ये जिस तरह धीरे -धीरे बातें कर रहें है, उससे मुझे दाल में काला लग रहा है।

दौड़-धूप करना (बड़ी कोशिश करना)- कौन बाप अपनी बेटी के ब्याह के लिए दौड़-धूप नहीं करता ?

दो कौड़ी का आदमी (तुच्छ या अविश्वसनीय व्यक्ति)- किस दो कौड़ी के आदमी की बात करते हो ?

दो टूक बात कहना (स्पष्ट कह देना)- अंगद ने रावण से दो टूक बात कही।

दो दिन का मेहमान (जल्द मरनेवाला)- किसी का क्या बिगाड़ेगा ? वह बेचारा खुद दो दिन का मेहमान है।

दूध के दाँत न टूटना (ज्ञानहीन या अनुभवहीन)- वह सभा में क्या बोलेगा ? अभी तो उसके दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं।

दम मारना- (विश्राम करना)

दम में दम आना- (राहत होना)

दाल गलना- (कामयाब होना, प्रयोजन सिद्ध होना)

AJAY KUMAR

दूज का चाँद होना- (कम दर्शन होना)

दाँव खेलना- (धोखा देना)

दिनों का फेर होना- (बुरे दिन आना)

दीदे का पानी ढल जाना- (बेशर्म होना)

दिमाग खाना- (बकवास करना)

दिल बढ़ाना- (साहस भरना)

दिल टूटना- (साहस टूटना)

दुकान बढ़ाना- (दूकान बंद करना)

दूध के दाँत न टूटना- (ज्ञान और अनुभव का न होना)

दूध का दूध पानी का पानी- (निष्पक्ष न्याय)

दायें-बायें देखना- (सावधान होना)

दिल दरिया होना- (उदार होना)

दो नाव पर पैर रखना- (इधर भी, उधर भी, दो पक्षों से मेल रखना)

( ध )

धज्जियाँ उड़ाना (किसी के दोषों को चुन-चुनकर गिनाना)- उसने उनलोगों की धज्जियाँ उड़ाना शुरू किया कि वे वहाँ से भाग खड़े हुए।

धता बताना- (टालना, भागना)

धरती पर पाँव न रखना- (घमंडी होना)

धाक जमाना- (रोब होना)

धुँआ-सा मुँह होना- (लज्जित होना)

धूप में बाल सफेद करना- (बिना अनुभव प्राप्त किये बूढा होना)

धूल छानना- (मारे-मारे फिरना)

AJAY KUMAR

धोबी का कुत्ता- (निकम्मा)

धोती ढीली होना- (डर जाना)

(न)

नौ-दो ग्यारह होना (चम्पत होना )- लोग दौड़े कि चोर नौ-दो ग्यारह हो गये।

न इधर का, न उधर का (कही का नही )- कमबख्त ने न पढ़ा, न बाप की दस्तकारी सीखी; न इधर रहा, न उधर का।

नाक का बल होना (बहुत प्यारा होना )- इन दिनों हरीश अपने प्रधानाध्यापक की नाक का बल बना हुआ है।

नाकों डीएम करना (परेशान करना )- पिछली लड़ाई में भारत ने पाकिस्तान को नाकों दम कर दिया।

नाक काटना (इज्जत जाना )- पोल खुलते ही सबके सामने उसकी नाक कट गयी।

नजर पर चढ़ना- (पसंद आ जाना)

नाच नचाना- (तंग करना)

नुक़्ताचीनी करना- (दोष दिखाना, आलोचना करना)

निन्यानबे के फेर में पड़ना- (धन जमा करने के चक्कर में पड़ना)

नजर चुराना- (आँख चुराना)

नमक अदा करना- (फर्ज पूरा करना, प्रत्युपकार करना)

नमक-मिर्चा लगाना- (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)

नशा उतरना- (घमण्ड उतरना)

नदी-नाव संयोग- (ऐसी भेंट/मुलाकात जो कभी इत्तिफाक से हो जाय)

नसीब चमकना- (भाग्य चमकना)

नींद हराम होना- (तंग आना, सो न सकना)

नेकी और पूछ-पूछ- (बिना कहे ही भलाई करना)

AJAY KUMAR

( प, फ )

पेट काटना (अपने भोजन तक में बचत )- अपना पेट काटकर वह अपने छोटे भाई को पढ़ा रहा है।

पानी उतरना (इज्जत लेना )- भरी सभा में द्रोपदी को पानी उतारने की कोशिश की गयी।

पेट में चूहे कूदना (जोर की भूख )- पेट में चूहे कूद रहे है। पहले कुछ खा लूँ, तब तुम्हारी सुनूँगा।

पहाड़ टूट पड़ना (भारी विपत्ति आना )- उस बेचारे पर तो दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

पट्टी पढ़ाना (बुरी राय देना)- तुमने मेरे बेटे को कैसी पट्टी पढ़ाई कि वह घर जाता ही नहीं ?

पौ बारह होना (खूब लाभ होना)- क्या पूछना है ! आजकल तुम व्यापारियों के ही तो पौ बारह हैं।

पाँचों उँगलियाँ घी में (पूरे लाभ में)- पिछड़े देशों में उद्योगियों और मेहनतकशों की हालत पतली रहती है तथा दलालों, कमीशन एजेण्टों और नौकरशाहों की ही पाँचों उँगलियाँ घी में रहता हैं।

पगड़ी रखना (इज्जत बचाना)- हल्दीघाटी में झाला सरदार ने राजपूतों की पगड़ी रख ली।

पगड़ी उतारना- (इज्जत उतारना)

पाकेट गरम करना- (घूस देना)

पहलू बचाना- (कतराकर निकल जाना)

पते की कहना- (रहस्य या चुभती हुई काम की बात कहना)

पानी का बुलबुला- (क्षणभंगुर वस्तु)

पानी देना- (तर्पण करना, सींचना)

पानी न माँगना- (तत्काल मर जाना)

पानी पर नींव डालना- (ऐसी वस्तु को आधार बनाना जो टिकाऊ न हो)

पानी-पानी होना- (अधिक लज्जित होना)

पानी-पानी करना- (लज्जित करना)

पानी पीकर जाति पूछना- (कोई काम कर चुकने के बाद उसके औचित्य का निर्णय करना)

पानी रखना- (मर्यादा की रक्षा करना)

AJAY KUMAR

पानी में आग लगाना- (असंभव कार्य करना)

पानी लगना (कहीं का)- (स्थान विशेष के बुरे वातावरण का असर होना )

पानी करना- (सरल कर देना)

पानी लेना- (अप्रतिष्ठित करना)

पानी की तरह बहना- (अन्धाधुन्ध करना)

पानी फिर जाना- (बर्बाद होना)

पापड़ बेलना- (दुःख से दिन काटना)

पोल खुलना- (रहस्य प्रकट करना)

पीठ ठोंकना- (साहस बँधाना)

पुरानी लकीर का फकीर होना/पुरानी लकीर पीटना- (पुरानी चाल मानना)

पैर पकड़ना- (क्षमा चाहना)

पीठ दिखलाना- (पलायन)

( फ )

फूलना-फलना (धनवान या कुलवान होना)- मेरा आशीर्वाद है; सदा फूलो-फलो।

फूला न समाना- (काफी खुश होना)

फूटी आँखों न भाना- (तनिक भी न सुहाना)

फफोले फोड़ना- (वैर साधना)

फबतियाँ कसना- (ताना मारना)

फूंक-फूंक कर कदम रखना- (सावधान होकर काम करना)

फूल झड़ना- (मधुर बोलना)

AJAY KUMAR

( ब )

बीड़ा उठना (दायित्व लेना)- गांधजी ने भारत को आजाद करने का बीड़ा उठाया था।

बाजी ले जाना या मारना (जीतना)- देखें, दौड़ में कौन बाजी ले जाता या मारता है।

बात बनाना (बहाना बनाना)- तुम हर काम में बात बनाना जानते है।

बगुला भगत-(कपटी)

बगलें झाँकना- (बचाव का रास्ता ढूँढना)

बन्दरघुडकी देना- (धमकाना)

बहती गंगा में हाथ धोना- (वह मौका हाथ से न जाने देना जिससे सभी लाभ उठाते हों)

बाग-बाग होना- (खुश होना)

बाँसो उछलना- (काफी खुश होना)

बाजार गर्म होना- (सरगर्मी होना, तेजी होना)

बात का धनी- (वादे का पक्का, दृढप्रतिज्ञ)

बात की बात में- (अतिशीघ्र)

बात चलाना- (चर्चा करना)

बात न पूछना- (निरादार करना)

बात पर न जाना- (विश्वास न करना)

बात बनाना- (बहाना करना)

बात रहना- (वचन पूरा करना)

बातों में उड़ाना- (हँसी-मजाक में उड़ा देना)

बात पी जाना-(बर्दाश्त करना, सुनकर भी ध्यान न देना)

बायें हाथ का खेल- (सरल होना)

बाल की खाल निकालना- (छिद्रान्वेषण करना)

AJAY KUMAR

बालू की भीत- (शीघ्र नष्ट होनेवाली चीज)

बेसिर-पैर की बात-(निराधार बात)

बोलबाला- (प्रसिद्ध)

( भ )

भीगी बिल्ली होना (डर से दबना)- वह अपने शिक्षक के सामने भीगी बिल्ली हो जाता है।

भाड़े का टट्टू- (गया-बीता)

भेड़ियाधसान होना-(देखा-देखी करना)

भाड़ झोंकना- (समय नष्ट करना)

भूत चढ़ना या सवार होना- (किसी बात की जिद पकड़ना, रंज के मारे आगा-पीछा भूल जाना)

भारी लगना- (असहय होना)

भनक पड़ना- (उड़ती हुई खबर सुनना)

( म )

मुँह धो रखना (आशा न रखना)- यह चीज अब मिलने को नही मुँह धो रखिए।

मुँह में पानी आना (लालच होना)- मिठाई देखते ही उसके मुँह में पानी भर आया।

मैदान मारना (बाजी जीतना)- पानीपत की लड़ाई में आखिर अब्दाली ही मैदान मारा।

मिट्टी के मोल बिकना(बहुत सस्ता)- यह मकान मिट्टी के मोल बिक गया

मुट्ठी गरम करना (घूस देना)- पुलिस की मुठ्ठी गरम करो ,तो काम होगा।

मुँह बंद कर देना (शांत कराना)- तुम धमकी देकर मेरा मुँह बंद कर देना चाहते हो

मर मिटना- (बर्बाद होना)

मांस नोचना- (तंग करना)

AJAY KUMAR

मोम हो जाना- (खूब नरम बन जाना)

मन फट जाना- (विराग होना, फीका पड़ना)

मिट्टी में मिलना- (नष्ट होना)

मन चलना- (इच्छा होना)

मन के लड्डू खाना- (व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना)

मैदान साफ होना- (मार्ग में बाधा न होना)

मीन-मेख करना- (व्यर्थ तर्क)

मन खट्टा होना- (मन फिर जाना)

मिट्टी पलीद करना- (जलील करना)

मोटा आसामी- (मालदार आदमी)

मुठभेड़ होना- (मुकाबला होना)

( य )

यश गाना- (प्रशंसा करना, एहसान मानना)

यश मानना- (कृतज्ञ होना)

युग-युग- (बहुत दिनों तक)

युगधर्म- (समय के अनुसार चाल या व्यवहार)

युगांतर उपस्थित करना- (किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना)

( र )

रंग जमना (धाक जमना)- तुम्हारा तो कल खूब रंग जमा।

रंग बदलना (परिवर्तन होना)- जमाने का रंग बदल गया है।

AJAY KUMAR

रंग उतरना (फीका होना)- सजा सुनते ही अपराधी के चेहरे का रंग उतर गया।

रंग में भंग होना- (आनन्द में बिघ्न पड़ना)

रंग लाना- (प्रभाव दिखाना)

रंगा सियार- (ढोंगी)

रफूचक्कर होना- (भाग जाना)

रसातल चला जाना- (एकदम नष्ट हो जाना)

राई से पर्वत होना- (छोटे से बड़ा होना)

रीढ़ टूटना- (आधार समाप्त होना)

रोटियाँ तोड़ना- (बैठे-बैठे खाना)

रोना रोना- (दुखड़ा सुनाना)

( ल )

लोहे के चने चबाना ( कठिनाई झेलना)- भारतीय सेना के सामने पाकिस्तानी सेना को लोहे के चने चबाने पड़े।

लकीर का फकीर होना (पुरानी प्रथा पर ही चलना)- ये अबतक लकीर के फकीर ही है। टेबुल पर नही, चौके में ही खायेंगे।

लोहा मानना (श्रेष्ठ समझना)- आज दुनिया भरतीय जवानों का लोहा मानती है।

लेने के देने पड़ना (लाभ के बदले हानि)- नया काम हैं। सोच-समझकर आगे बढ़ना। कहीं लेने के देने न पड़ जायें।

लँगोटी पर (में) फाग खेलना- (अल्पसाधन होते हुए भी विलासी होना)

लाख से लाख होना- (कुछ न रह जाना)

लाले पड़ना- (मुँहताज होना)

लुटिया डुबोना- (काम बिगाड़ना)

लोहा बजना- (युद्ध होना)

लँगोटिया यार- (बचपन का दोस्त)

AJAY KUMAR

लहू होना- (मुग्ध होना)

लग्गी से घास डालना- (दूसरों पर टालना)

लल्लो-चप्पो करना- (खुशामद करना, चिरौरी करना)

लहू का घूंट पीना- (बर्दाश्त करना)

लाल-पीला होना- (रंज होना)

( व )

वचन हारना- (जबान हारना)

वचन देना- (जबान देना)

वक़्त पर काम आना- (विपत्ति में मदद करना)

( श, ष )

शर्म से गड़ जाना- (अधिक लज्जित होना)

शर्म से पानी-पानी होना- (बहुत लजाना)

शान में बट्टा लगना- (इज्जत में धब्बा लगना)

शेखी बघारना- (डींग हाँकना)

शौतान की आँत- (बहुत बड़ा)

शौतान की खाला- (झगड़ालू स्त्री)

शिकार हाथ लगना- (असामी मिलना)

षटराग (खटराग) अलापना- (रोना-गाना, बखेड़ा शुरू करना, झंझट करना)

( स )

श्रीगणेश करना (शुभारम्भ करना)- कोई शुभ दिन देखकर किसी शुभ कर्म का श्रीगणेश करना चाहिए।

AJAY KUMAR

सर्द हो जाना (डरना, मरना)- बड़ा साहसी बनता था, पर भूत का नाम सुनते ही सर्द हो गया।

साँप-छछूंदर की हालत (दुविधा)- पिता अलग नाराज है, माँ अलग। किसे क्या कहकर मनाऊँ ?मेरी तो साँप-छछूंदर की हालत है इन दिनों।

समझ (अक्ल) पर पत्थर पड़ना (बुद्धि भ्रष्ट होना)- रावण की समझ पर पत्थर पड़ा था कि भला कहनेवालों को उसने लात मारी।

सिक्का जमना (प्रभाव जमना)- आज तुम्हारे भाषण का वह सिक्का जमा कि उसके बाद बाकी वक्ता जमे ही नहीं।

सवा सोलह आने सही (पूरे तौर पर ठीक)- राम की सेना में हनुमान इसलिए श्रेष्ठ माने जाते थे कि हर काम में वे ही सवा सोलह आने सही उतरते थे।

सिर पर आ जाना (बहुत नजदीक होना)- परीक्षा मेरे सिर पर आ गयी है, अब मुझे खूब पढ़ना चाहिए।

सिर खुजलाना (बहाना करना)- सिर न खुजलाओ, देना है तो दो।

सर धुनना (शोक करना)- राम परीक्षा में असफल होने पर सर धुनने लगी।

सर गंजा कर देना (खूब पीटना)- भागो यहाँ से, नही तो सर गंजा कर दूँगा।

सफेद झूठ (सरासर झुठ)- यह सफेद झूठ है कि मैंने उसे गाली दी।

सब्ज बाग दिखाना- (बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाना)

सितारा चमकना या बुलंद होना- (भाग्योदय होना)

सिप्पा भिड़ाना- (उपाय करना)

सात-पाँच करना- (आगे पीछे करना)

सुबह का चिराग होना- (समाप्ति पर आना)

सैकड़ों घड़े पानी पड़ना- (लज्जित होना)

सन्नाटे में आना/सकेत में आना- (स्तब्ध हो जाना)

सब धान बाईस पसेरी- (सबके साथ एक-सा व्यवहार, सब कुछ बराबर समझना)

( ह )

हाथ पैर मारना (काफी प्रयास )- राम कितना मेहनत क्या फिर भी वह परीक्षा में सफल नहीं हुआ।

हाथ मलना (पछताना )- समय बीतने पर हाथ मलने से क्या लाभ ?

हाथ देना (सहायता करना )- आपके हाथ दिये बिना यह काम न होगा।

हाथोहाथ (जल्दी )- यह काम हाथोहाथ होकर रहेगा।

हथियार डाल देना (हार मान लेना)- जब कुछ करते न बना तो उसने हथियार डाल दिये।

हाथ के तोते उड़ना- (अचानक शोक-समाचार सुनकर स्तब्ध हो जाना)

होश उड़ जाना- (घबड़ा जाना)

हक्क-बक्का रह जाना- (भौंचक रह जाना)

हजामत बनाना- (ठगना)

हवा लगना- (संगति का प्रभाव (बुरे अर्थ में)

हवा खिलाना- (कहीं भेजना)

हड्डी-पसली दुरुस्त करना- (खूब मारना)

हड़प जाना- (हजम कर जाना)

हल्का होना- (तुच्छ होना, कम होना)

हल्दी-गुड़ पिलाना- (खूब मारना)

हवा पर उड़ना- (इतराना)

हृदय पसीजना- (दयार्द्र होना, द्रवित होना)

## (शरीर के अंगो पर मुहावरे)

### (1)('आँख' पर मुहावरे)

आँखें खुलना (होश आना, सावधान होना)- जनजागरण से हमारे शासकों की आँखें अब खुलने लगी हैं।

आँखें चार होना (आमने-सामने होना)- जब आँखें चार होती है, मुहब्बत हो ही जाती है।

आँखें मूँदना (मर जाना)- आज सबेरे उसके पिता ने आँखें मूँद ली।

आँखें चुराना (नजर बचाना, अपने को छिपाना)- मुझे देखते ही वह आँखें चुराने लगा।

AJAY KUMAR

आखों में खून उतरना (अधिक क्रोध करना)- बेटे के कुकर्म की बात सुनकर पिता की आँखों में खून उतर आया।

आँखों में गड़ना (किसी वस्तु को पाने की उत्कट लालसा)- उसकी कलम मेरी आँखों में गड़ गयी है।

आँखें फेर लेना (उदासीन हो जाना)- मतलब निकल जाने के बाद उसने मेरी ओर से बिलकुल आँखें फेर ली है।

आँख मारना (इशारा करना)- उसने आँख मारकर मुझे बुलाया।

आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)- वह बड़ों-बड़ों की आँखों में धूल झोंक सकता है।

आँखें बिछाना (प्रेम से स्वागत करना)- मैंने उनके लिए अपनी आँखें बिछा दीं।

आँखों का काँटा होना (शत्रु होना)- वह मेरी आँखों का काँटा हो रहा है।

आँख उठाना- (हानि पहुँचाने की दृष्टि से देखना)

आँखें ठंढी होना- (इच्छा पूरी होना)

आँख दिखाना- (क्रोध प्रकट करना)

आँखों पर बिठाना- (आदर करना)

आँख भर आना- (आँसू आना)

आँखों में धूल डालना- (धोखा देना)

आँखें लड़ना- (देखादेखी होना, प्रेम होना)

आँखें लाल करना- (क्रोध की नजर से देखना)

आँखें थकना- (प्रतीक्षा में निराश होना)

आँखों में चर्बी छाना- (घमण्डी होना)

आँखों में खटकना- (बुरा लगना)

आँखें नीली-पीली करना- (नाराज होना)

आँख का अंधा, गाँठ का पूरा- (मूर्ख धनवान)

आँखों की किरकिरी होना- (शत्रु होना)

आँखों का प्यारा या पुतली होना- (बहुत प्यारा होना)

AJAY KUMAR

आँखों का पानी ढल जाना- (लज्जारहित हो जाना)

आँखें सेंकना- (किसी की सुन्दरता देख आँखें जुड़ाना)

आँखें आना- (आँख में एक प्रकार की बीमारी होना)

आँखें गड़ाना- (दिल लगाना, इच्छा करना)

आँख फड़कना- (सगुन उचरना)

आँखें लगना- (प्रेम करना, जरा-सी नींद आना)

आँख रखना- (ध्यान रखना)

आँख में पानी रखना- (मुरौवत रखना)

(2) (अँगूठा पर मुहावरे)

अँगूठा चूमना- (खुशामद करना)

अँगूठा दिखाना- (देने से इंकार करना)

अँगूठा नचाना- (चिढाना)

(3) (आँसू पर मुहावरे)

आँसू पोंछना- (धीरज बँधाना)

आँसू बहाना- (खूब रोना)

आँसू पी जाना- (दुःख को छिपा लेना)

(4)(ओठ पर मुहावरे)

ओठ चाटना- (स्वाद की इच्छा रखना)

ओठ मलना- (दण्ड देना)

ओठ चबाना- (क्रोध करना)

AJAY KUMAR

ओठ सूखना- (प्यास लगना)

(5)(ऊँगली पर मुहावरे)

ऊँगली उठना- (निन्दा होना)

ऊँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना- (थोड़ा-सा सहारा पाकर अधिक के लिए उत्साहित होना)

कानों में ऊँगली देना- (किसी बात को सुनने की चेष्टा न करना)

पाँचों उँगलियाँ घी में होना- (सब प्रकार से लाभ-ही-लाभ)

सीधी ऊँगली से घी न निकलना- (भलमनसाहत से काम न होना)

(6) ('कान' पर मुहावरे)

कान खोलना (सावधान करना)- मैंने उसके कान खोल दिये। अब वह किसी के चक्कर में नहीं आयेगा।

कान खड़े होना (होशियार होना)- दुश्मनों के रंग-ढंग देखकर मेरे कान खड़े हो गये।

कान फूंकना (दीक्षा देना, बहकाना)- मोहन के कान सोहन ने फूंके थे, फिर उसने किसी की कुछ न सुनी।

कान लगाना (ध्यान देना)- उसकी बातें कान लगाने योग्य हैं।

कान भरना (पीठ-पीछे शिकायत करना)- तुम बराबर मेरे खिलाफ अफसर के कान भरते हो।

कान में तेल डालना (कुछ न सुनना)- मैं कहते-कहते थक गया, पर ये कान में तेल डाले बैठे हैं।

कान पर जूँ न रेंगना (ध्यान न देना, अनसुनी करना)- सरकार तो बड़ी-बड़ी बातें कहती है, मगर अफसरों के कान पर जूँ नहीं रेंगती।

कान देना (ध्यान देना)- शिक्षकों की बातों पर कान दीजिए।

कान उमेठना- (शपथ लेना)

कान पकड़ना- (प्रतिज्ञा करना)

कानों कान खबर होना- (बात फैलना)

कान काटना- (बढ़कर काम करना)

AJAY KUMAR

(7) ( कलेजा पर मुहावरे )

कलेजे से लगाना- (प्यार करना, छाती से चिपका लेना)

कलेजा काँपना- (डरना)

कलेजा थामकर रह जाना- (अफसोस कर रह जाना)

कलेजा निकाल कर रख देना- (अतिप्रिय वस्तु अर्पित कर देना)

कलेजा ठंढा होना- (संतोष होना)

(8) ('नाक' पर मुहावरे)

नाक कट जाना (प्रतिष्ठा नष्ट होना)- पुत्र के कुकर्म से पिता की नाक कट गयी।

नाक काटना (बदनाम करना)- भरी सभा में उसने मेरी नाक काट ली।

नाक-भौं चढ़ाना (क्रोध अथवा घृणा करना)- तुम ज्यादा नाक-भौं चढ़ाओगे, तो ठीक न होगा।

नाक में दम करना (परेशान करना)- शहर में कुछ गुण्डों ने लोगों की नाक में दम कर रखा है।

नाक का बाल होना (अधिक प्यारा होना)- मैनेजर मुंशी की न सुनेगा तो किसकी सुनेगा ?वह तो आजकल उसकी नाक का बाल बना हुआ है।

नाक रगड़ना (दीनतापूर्वक प्रार्थना करना)- उसने मालिक के सामने बहुत नाक रगड़ी, पर सुनवाई न हुई।

नाकों चने चबवाना (तंग करना)- भारतीयों ने अंगरेजों को नाकों चने चबवा दिये।

नाक पर मक्खी न बैठने देना (निर्दोष बचे रहना)- उसने कभी नाक पर मक्खी बैठने ही न दी।

नाक पर गुस्सा (तुरन्त क्रोध)- गुस्सा तो उसकी नाक पर रहता है।

नाक रखना- (प्रतिष्ठा रखना)

(9) ('मुँह' पर मुहावरे)

मुँह छिपाना (लज्जित होना)- वह मुझसे मुँह छिपाये बैठा है।

मुँह पकड़ना (बोलने से रोकना)- लोकतन्त्र में कोई किसी का मुँह नहीं पकड़ सकता।

AJAY KUMAR

मुँह की खाना (बुरी तरह हारना)- अन्त में उसे मुँह की खानी पड़ी।

मुँह दिखाना (प्रत्यक्ष होना)- तुमने ऐसा कुकर्म किया है कि अब किसी के सामने मुँह दिखाने के लायक न रहे।

मुँह उतरना (उदास होना)- परीक्षा में असफल होने पर श्याम का मुँह उतर आया।

मुँह खुलना- (उदण्डतापूर्वक बातें करना, बोलने का साहस होना)

मुँह देना, या डालना- (किसी पशु का मुँह डालना)

मुँह बन्द होना- (चुप होना)

मुँह में पानी भर आना- (ललचना)

मुँह से लार टपकना- (बहुत लालची होना)

मुँह काला होना- (कलंक या दोष लगना)

मुँह धो रखना- (आशा न रखना)

मुँह पर (या चेहरे पर) हवाई उड़ना)- (घबराना)

मुँहफट हो जाना- (निर्लज्ज होना)

मुँह फुलाना- (रूठ जाना)

मुँह बनाना- (असंतुष्ट होना)

मुँह मोड़ना- (ध्यान न देना)

मुँह लगाना- (सिर चढ़ाना)

मुँह रखना- (लिहाज रखना)

मुँहदेखी करना- (पक्षपात करना)

मुँह चुराना- (संकोच करना)

मुँह में लगाम न होना- (जो मुँह में आवे सो कह देना)

मुँह चाटना- (खुशामद करना)

मुँह भरना- (घूस देना)

AJAY KUMAR

मुँह लटकना- (रंज होना)

मुँह आना- (मुँह की बीमारी होना)

मुँह की खाना- (परास्त होना)

मुँह सूखना- (भयभीत होना)

मुँह ताकना- (किसी का आसरा करना)

मुँह में खून लगना- (बुरी चाट पड़ना, चसका लगना)

मुँह फेरना- (अकृपा करना)

मुँह मीठा करना- (प्रसन्न करना)

मुँह से फूल झड़ना- (मधुर बोलना)

मुँह में घी-शक्कर- (किसी अच्छी भविष्यवाणी का अनुमोदन करना)

मुँह से मुँह मिलाना- (हाँ-में-हाँ मिलाना, बही-खाता आदि में हिसाब सही न लिखकर भी जमा-खर्च या उत्तर सही लिख देना )

(10) ('दाँत' पर मुहावरे)

दाँत दिखाना (खीस काढ़ना)- खुद ही देर की और अब दाँत दिखाते हो।

दाँत तले ऊँगली दबाना (चकित होना)- ढाके की मलमल देखकर इंगलैण्ड के जुलाहे दाँतों तले ऊँगली दबाते थे।

दाँत काटी रोटी (गहरी दोस्ती)- राम के पिता से श्याम के पिता की दाँत काटी रोटी है।

दाँत गिनना (उम्र पता लगाना)- कुछ लोग ऐसे है कि उनपर वृद्धावस्था का असर ही नहीं होता। ऐसे लोगों के दाँत गिनना आसान नहीं।

दाँत खट्टे करना- (पस्त करना)

तालू में दाँत जमना- (बुरे दिन आना)

दाँत जमाना- (अधिकार पाने के लिए दृढ़ता दिखाना)

दाँत गड़ाना- (किसी वस्तु को पाने के लिए गहरी)

दाँत गिनना- (उम्र बताना)

AJAY KUMAR

(11) ('बात' पर मुहावरे)

बात का धनी (वायदे का पक्का)- मैं जानता हूँ, वह बात का धनी है।

बात की बात में (अति शीघ्र)- बात की बात में वह चलता बना।

बात चलाना (चर्चा चलाना)- कृपया मेरी बेटी के ब्याह की बात चलाइएगा ।

बात तक न पूछना (निरादर करना)- मैं विवाह के अवसर पर उसके यहाँ गया, पर उसने बात तक न पूछी।

बात बढ़ाना (बहस छिड़ जाना)- देखो, बात बढाओगे तो ठीक न होगा।

बात बनाना (बहाना करना)- तुम्हें बात बनाने से फुर्सत कहाँ ?

(12) ('सिर' पर मुहावरे)

सिर उठाना (विरोध में खड़ा होना)- देखता हूँ, मेरे सामने कौन सिर उठाता है ?

सिर भारी होना (सिर में दर्द होना, शामत सवार होना)- मेरा सिर भारी हो रहा है। किसका सिर भारी हुआ है जो इसकी चर्चा करें ?

सिर पर सवार होना (पीछे पड़ना)- तुम कब तक मेरे सिर पर सवार रहोगे ?

सिर से पैर तक (आदि से अन्त तक)- तुम्हारी जिन्दगी सिर से पैर तक बुराइयों से भरी है।

सिर पीटना (शोक करना)- चोर उस बेचारे की पाई-पाई ले गये। सिर पीटकर रह गया वह।

सिर पर भूत सवार होना (एक ही रट लगाना, धुन सवार होना)- मालूम होता है कि घनश्याम के सिर पर भूत सवार हो गया है, जो वह जी-जान से इस काम में लगा है।

सिर फिर जाना (पागल हो जाना)- धन पाकर उसका सिर फिर गया है।

सिर चढ़ाना (शोख करना)- बच्चों को सिर चढ़ाना ठीक नहीं।

सिर आँखों पर होना- (सहर्ष स्वीकार होना)

सिर पर चढ़ना- (शेख होना)

सिर ऊँचा करना- (आदर का पात्र होना)

सिर खाना- (बकवास करना)

सिर झुकाना- (आत्मसमर्पण करना)

सिर पर पांव रखकर भागना- (बहुत जल्द भाग जाना)

सिर पड़ना- (नाम लगना)

सिर खुजलाना- (बहाना करना)

सिर धुनना- (शोक करना)

सिर चढ़कर बोलना- (छिपाये न छिपना)

सिर मारना- (प्रयत्न करना)

सिर पर खेलना- (प्राण दे देना)

सिर गंजा कर देना- (मारने का भय दिखाना)

सिर पर कफन बाँधना- (शहादत के लिए तैयार होना)

(13) ('गर्दन' पर मुहावरे)

गर्दन उठाना (प्रतिवाद करना)- सत्तारूढ़ सरकार के विरोध में गर्दन उठाना टेढ़ी खीर है।

गर्दन पर सवार होना (पीछा न छोड़ना)- जब देखो, तब मेरी गर्दन पर सवार रहते हो।

गर्दन काटना (जान से मारना, हानि पहुँचाना)- वह तो उनकी गर्दन काट डालेगा। झूठी शिकायत कर क्यों गरीब की गर्दन काटने पर तुले हो ?

गर्दन पर छुरी फेरना- (अत्याचार करना)

(14) ( हाथ पर मुहावरे)

हाथ आना- (अधिकार में आना)

हाथ खींचना- (अलग होना)

हाथ खुजलाना- (किसी को पीटने को जी चाहना

हाथ देना- (सहायता देना)

हाथ पसारना- (माँगना)

AJAY KUMAR

हाथ बँटाना- (मदद करना)

हाथ लगाना- (आरंभ करना)

हाथ मलना- (पछताना)

हाथ गरम करना- (घूस देना)

हाथ चूमना- (हर्ष व्यक्त करना)

हाथ धोकर पीछे पड़ना- (जी-जान से लग जाना)

हाथ पर हाथ धरे बैठना- (बेकार बैठे रहना)

हाथ फैलना- (याचना करना)

हाथ मारना- (उड़ा लेना, लाभ उठाना)

हाथ साफ करना- (मारना, उड़ा लेना, खूब खाना)

हाथ धो बैठना- (आशा खो देना)

हाथापाई करना- (मुठभेड़ होना)

हाथ पकड़ना- किसी स्त्री को पत्नी बनाना, आश्रय देना)

(15) ( मिथकीय/ऐतिहासिक नामों से संबद्ध मुहावरे )

अलाउदीन का चिराग- (आश्चर्यजनक वस्तु)

इन्द्र का अखाड़ा- (रास-रंग से भरी सभा)

इन्द्रासन की परी- (बहुत सुंदर स्त्री)

कर्ण का दान- (महादान)

कारूं का खजाना- (अतुल धनराशि)

कुबेर का धन/कोश- (अतुल धनराशि)

कुम्भकर्णी नींद- (बहुत गहरी, लापरवाही की नींद)

AJAY KUMAR

गोबर गणेश- (मूर्ख, बुद्धू, निकम्मा)

गोरख धंधा- (बखेड़ा, झंझट)

चाणक्य नीति- (कुटिल नीति)

छुपा रुस्तम- (असाधारण किन्तु अप्रसिद्ध गुणी)

तीसमार खां बनना- (अपने को बहुत शूरवीर समझना और शेखी बघारना)

तुगलकी फरमान- (जनता की सुविधा-असुविधा का ख्याल किये बिना जारी किया गया शासनादेश

दूर्वासा का रूप- (बहुत क्रोध करना)

दुर्वासा का शाप- (उग्र शाप)

धन-कुबेर- (अधिक धनवान)

नादिरशाही हुक्म- (मनमाना हुक्म)

नारद मुनि- (इधर-उधर की बातें कर कलह कराने वाला व्यक्ति)

परशुराम का कोप- (अत्यधिक क्रोध)

पांचाली चीर- (बड़ी लंबी, समाप्त न होनेवाली वस्तु)

ब्रह्म पाश/फांस- (अत्यधिक मजबूत फंदा)

भगीरथ प्रयत्न- (बहुत बड़ा प्रयत्न)

भीष्म प्रतिज्ञा- (कठोर प्रतिज्ञा)

महाभारत- (भयंकर झगड़ा, भयंकर युद्ध)

महाभारत मचना- (खूब लड़ाई-झगड़ा होना)

यमलोक भेजना- (मार डालना)

राम बाण- (तुरन्त प्रभाव दिखाने या कभी न चूकने वाली चीज)

राम राज्य- (ऐसा राज्य जिसमें बहुत सुख हो)

राम कहानी- (अपनी कहानी, आपबीती)

AJAY KUMAR

राम जाने- (मुझे नहीं मालूम, एक प्रकार की शपथ खाना)

राम नाम सत्त हो जाना- (मर जाना)

रामबाण औषध- (अचूक दवा)

राम राम करना- (नमस्कार करना, भगवान का नाम जपना)

लंका काण्ड- (भयंकर विनाश)

लंका ढहाना- (किसी का सत्यानाश कर देना)

लक्ष्मण रेखा- (अलंघ्य सीमा या मर्यादा)

विभीषण- (घर का भेदी/ भेदिया)

शेखचिल्ली के इरादे- (हवाई योजना, अमल में न आने वाले (कार्य रूप में परिणत न होने वाले) इरादे

सनीचर सवार होना- (दुर्भाग्य आना, बुरे दिन आना)

सुदामा की कुटिया- (गरीब की झोंपड़ी)

हम्मीर हठ-(अनूठी आन)

हातिमताई- (दानशील, परोपकारी)

.....

AJAY KUMAR

# लोकोक्तियाँ (proverbs)

किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को 'लोकोक्ति' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है। इसी को कहावत कहते है।

उदाहरण- 'उस दिन बात-ही-बात में राम ने कहा, हाँ, मैं अकेला ही कुँआ खोद लूँगा। इन पर सबों ने हँसकर कहा, व्यर्थ बकबक करते हो, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' । यहाँ 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है 'एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता' ।

लोकोक्ति किसी घटना पर आधारित होती है। इसके प्रयोग में कोई परिवर्तन नहीं होता है। ये भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि करती है। लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब 'लोकोक्ति' हो जाती है।

## मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

दोनों में अंतर इस प्रकार है-

(1) मुहावरा वाक्यांश होता है, जबकि लोकोक्ति एक पूरा वाक्य, दूसरे शब्दों में, मुहावरों में उद्देश्य और विधेय नहीं होता, जबकि लोकोक्ति में उद्देश्य और विधेय होता है।

(2) मुहावरा वाक्य का अंश होता है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव नहीं है; उनका प्रयोग वाक्यों के अंतर्गत ही संभव है। लोकोक्ति एक पूरे वाक्य के रूप में होती है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव है।

(3) मुहावरे शब्दों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं जबकि लोकोक्तियाँ वाक्यों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।

## यहाँ कुछ लोकोक्तियाँ व उनके अर्थ तथा प्रयोग दिये जा रहे हैं-

**अन्धों में काना राजा= (मूर्खो में कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति)**

प्रयोग- मेरे गाँव में कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति तो है नही; इसलिए गाँववाले पण्डित अनोखेराम को ही सब कुछ समझते हैं। ठीक ही कहा गया है, अन्धों में काना राजा।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता= (अकेला आदमी लाचार होता है।)

प्रयोग- माना कि तुम बलवान ही नहीं, बहादुर भी हो, पर अकेले डकैतों का सामना नहीं कर सकते। तुमने सुना ही होगा कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।

अधजल गगरी छलकत जाय= डींग हाँकना।

प्रयोग- इसके दो-चार लेख क्या छप गये कि वह अपने को साहित्य-सिरमौर समझने लगा है। ठीक ही कहा गया है, 'अधजल गगरी छलकत जाय।'

आँख का अन्धा नाम नयनसुख= (गुण के विरुद्ध नाम होना।)

प्रयोग- एक मियाँजी का नाम था शेरमार खाँ। वे अपने दोस्तों से गप मार रहे थे। इतने में घर के भीतर बिल्लियाँ म्याऊँ-म्याऊँ करती हुई लड़ पड़ी। सुनते ही शेरमार खाँ थर-थर काँपने लगे। यह देख एक दोस्त ठठाकर हँस पड़ा और बोला कि वाह जी शेरमार खाँ, आपके लिए तो यह कहावत बहुत ठीक है कि आँख का अन्धा नाम नयनमुख।

आँख के अन्धे गाँठ के पूरे= (मूर्ख धनवान)

प्रयोग- वकीलों की आमदनी के क्या कहने। उन्हें आँख के अन्धे गाँठ के पूरे रोज ही मिल जाते हैं।

आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकले सो लाभ= नुकसान होते-होते जो कुछ बच जाय, वही बहुत है।

प्रयोग- किसी के घर चोरी हुई। चोर नकद और जेवर कुल उठा ले गये। बरतनों पर जब हाथ साफ करने लगे, तब उनकी झनझनाहट सुनकर घर के लोग जाग उठे। देखा तो कीमती माल सब गायब। घर के मालिकों ने बरतनों पर आँखें डालकर अफसोस करते हुए कहा कि खैर हुई, जो ये बरतन बच गये। आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकले सो लाभ। यदि ये भी चले गये होते, तो कल पत्तों पर ही खाना पड़ता।

आगे नाथ न पीछे पगहा= (किसी तरह की जिम्मेवारी का न होना)

प्रयोग- अरे, तुम चक्कर न मारोगे तो और कौन मारेगा? आगे नाथ न पीछे पगहा। बस, मौज किये जाओ।

आम के आम गुठलियों के दाम= (अधिक लाभ)

प्रयोग- सब प्रकार की पुस्तकें 'साहित्य भवन' से खरीदें और पास होने पर आधे दामों पर बेचें। 'आम के आम गुठलियों के दाम' इसी को कहते हैं

ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डर= (काम करने पर उतारू होना)

प्रयोग- जब मैनें देशसेवा का व्रत ले लिया, तब जेल जाने से क्यों डरें? जब ओखली में सिर दिया, तब मूसलों से क्या डर।

आ बैल मुझे मार= (स्वयं मुसीबत मोल लेना)

प्रयोग- लोग तुम्हारी जान के पीछे पड़े हुए हैं और तुम आधी-आधी रात तक अकेले बाहर घूमते रहते हो। यह तो वही बात हुई- आ बैल मुझे मार।

आँखों के अन्धे नाम नयनसुख= (गुण के विरुद्ध नाम होना)

प्रयोग- उसका नाम तो करोड़ीमल है परन्तु वह पैसे-पैसे के लिए मारा-मारा फिरता है। इसे कहते है- आँखों के अन्धे नाम नयनसुख।

अन्धा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को दे= (अधिकार का नाजायज लाभ अपनों को देना)

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है= अपने स्थान पर निर्बल भी स्वयं को सबल समझता है।

अन्धा क्या चाहे दो आँख= अपनी मनपसन्द वस्तु को पा लेना।

अशर्फी की लूट और कोयले पर छाप= (मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट करना और तुच्छ को सँजोना)

अंधों के आगे रोना, अपना दीदा खोना= (निर्दयी या मूर्ख के आगे दुःखड़ा रोना बेकार होता है।)

अपनी करनी पार उतरनी= (किये का फल भोगना)

अपना ढेंढर न देखे और दूसरे की फूली निहारे= (अपना दोष न देखकर दूसरों का दोष देखना)

अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग=(परस्पर संगठन या मेल न रखना)

आप डूबे जग डूबा= (जो स्वयं बुरा होता है, दूसरों को भी बुरा समझता है।)

आग लगाकर जमालो दूर खड़ी= (झगड़ा लगाकर अलग हो जाना)

आगे कुआँ, पीछे पगहा= (अपना कोई न होना, घर का अकेला होना)

आँख का अंधा नाम नयनमुख= (गुण के विरुद्ध नाम)

आधा तीतर आधा बटेर= (बेमेल स्थिति)

आप भला तो जग भला= (स्वयं अच्छे तो संसार अच्छा)

आये थे हरि-भजन को ओटन लगे कपास= (करने को तो कुछ आये और करने लगे कुछ और)

ओछे की प्रीत बालू की भीत=(नीचों का प्रेम क्षणिक)

ओस चाटने से प्यास नहीं बूझती= (अधिक कंजूसी से काम नहीं चलता)

ऊँची दूकान फीके पकवान=(केवल ब्राह्य प्रदर्शन)

प्रयोग- जग्गू तेली शुद्ध सरसों तेल का विज्ञापन करता है, लेकिन उसकी दूकान पर बिकता है रेपसीड-मिला सरसों तेल। ठीक है ऊँची दूकान फीके पकवान।

AJAY KUMAR

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे= (अपराधी ही पकड़नेवाले को डाँट बताये)

उद्योगिन्न पुरुषसिंहनुपैति लक्ष्मी= (उद्योगी को ही धन मिलता है।)

ऊपर-ऊपर बाबाजी, भीतर दगाबाजी= (बाहर से अच्छा, भीतर से बुरा)

ऊँचे चढ़ के देखा, तो घर-घर एकै लेखा= (सभी एक समान)

ऊँट किस करवट बैठता है= (किसकी जीत होती है।)

ऊँट के मुँह में जीरा= (जरूरत से बहुत कम)

ऊँट बहे और गदहा पूछे कितना पानी= (जहाँ बड़ों का ठिकाना नहीं, वहाँ छोटों का क्या कहना)

ऊधो का लेना न माधो का देना=(लटपट से अलग रहना)

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया= (ईश्वर की बातें विचित्र हैं।)

प्रयोग- कई बेचारे फुटपाथ पर ही रातें गुजारते हैं और कई भव्य बंगलों में आनन्द करते हैं। सच है ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।

इतनी-सी जान, गज भर की जबान= (छोटा होना पर बढ़-बढ़कर बोलना)

ईंट का जवाब पत्थर= (दुष्ट के साथ दुष्टता करना)

इस हाथ दे, उस हाथ ले= (कर्मो का फल शीघ्र पाना)

ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया= (कहीं सुख, कहीं दुःख)

एक पन्थ दो काज= (एक काम से दूसरा काम हो जाना)

प्रयोग- दिल्ली जाने से एक पन्थ दो काज होंगे। कवि-सम्मेलन में कविता-पाठ भी करेंगे और साथ ही वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को भी देखेंगे।

एक और एक ग्यारह= एकता में शक्ति होती है।

एक हाथ से ताली नहीं बजती= झगड़ा एक ओर से नहीं होता।

एक तो करेला आप तीता दूजे नीम चढ़ा= (बुरे का और बुरे से संग होना)

एक अनार सौ बीमार= (एक वस्तु को सभी चाहनेवाले)

एक तो चोरी दूसरे सीनाज़ोरी= (दोष करके न मानना)

AJAY KUMAR

एक म्यान में दो तलवार= (एक स्थान पर दो उग्र विचार वाले)

कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली= (उच्च और साधारण की तुलना कैसी)

प्रयोग- तुम सेठ करोड़ीमल के बेटे हो। मैं एक मजदूर का बेटा। तुम्हारा हमारा और मेरा मेल कैसा ? कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली।

कंगाली में आटा गीला= परेशानी पर परेशानी आना।

कबीरदास की उलटी बानी, बरसे कंबल भींगे पानी= (प्रकृतीविरुद्ध काम)

कहे खेत की, सुने खलिहान की= (हुक्म कुछ और करना कुछ और)

कहीं का ईट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा= (इधर-उधर से सामान जुटाकर काम करना)

काला अक्षर भैंस बराबर=(निरा अनपढ़)

काबुल में क्या गदहे नहीं होते= (अच्छे बुरे सभी जगह हैं।)

का वर्षा जब कृषि सुखाने= (मौका बीत जाने पर कार्य करना व्यर्थ है।)

काठ की हाँड़ी दूसरी बार नहीं चढ़ती= (कपट का फल अच्छा नहीं होता)

किसी का घर जले, कोई तापे= (दूसरे का दुःख में देखकर अपने को सुखी मानना)

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है= एक का प्रभाव दूसरे पर अवश्य पड़ता है।

खरी मजूरी चोखा काम= (अच्छे मुआवजे में ही अच्छा फल प्राप्त होना)

खोदा पहाड़ निकली चुहिया= (कठिन परिश्रम, थोड़ा लाभ)

खेत खाये गदहा, मार खाये जोलहा= (अपराध करे कोई, दण्ड मिले किसी और को)

गाँव का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध= (बाहर के व्यक्तियों का सम्मान, पर अपने यहाँ के व्यक्तियों की कद्र नहीं)

गुड़ खाय गुलगुले से परहेज= (बनावटी परहेज)

गोद में छोरा नगर में ढिंढोरा= (पास की वस्तु का दूर जाकर ढूँढना)

गाछे कटहल, ओठे तेल= (काम होने के पहले ही फल पाने की इच्छा)

गरजेसो बरसे नहीं= (बकवादी कुछ नहीं करता)

गुड़ गुड़, चेला चीनी= (गुरु से शिष्य का ज्यादा काबिल हो जाना)

घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध= (निकट का गुणी व्यक्ति कम सम्मान पाता है, पर दूर का ज्यादा)

प्रयोग- जग्गू को लोग जगुआ कहकर पुकारते थे। घर त्यागकर सिद्ध पुरुष की संगति में रहकर उसने सिद्धि प्राप्त कर ली और उसका नाम हो गया- स्वामी जगदानन्द। गाँव लौटा, तो किसी ने उसके गुणों की ओर ध्यान नहीं दिया। ठीक ही कहा गया है: 'घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध।'

घड़ी में घर जले, नौ घड़ी भद्रा= (हानि के समय सुअवसर-कुअवसर पर ध्यान न देना)

घर पर फूस नहीं, नाम धनपत= (गुण कुछ नहीं, पर गुणी कहलाना)

घर का भेदी लंका ढाए= (आपस की फूट से हानि होती है।)

घर की मुर्गी दाल बराबर= (घर की वस्तु का कोई आदर नहीं करना)

घर में दिया जलाकर मसजिद में जलाना= (दूसरे को सुधारने के पहले अपने को सुधारना)

घी का लड्डू टेढ़ा भला = (लाभदायक वस्तु किसी तरह की क्यों न हो।)

चिराग तले अँधेरा= (अपनी बुराई नहीं दीखती)

प्रयोग- मेरे समधी सुरेशप्रसादजी तो तिलक-दहेज न लेने का उपदेश देते फिरते है; पर अपने बेटे के ब्याह में दहेज के लिए ठाने हुए हैं। उनके लिए यही कहावत लागू है कि 'चिराग तले अँधेरा।'

चोर की दाढ़ी में तिनका= अपराधी स्वयं ही पकड़ा जाता है।

चूहे घर में दण्ड पेलते हैं= (आभाव-ही-आभाव)

चमड़ी जाय, पर दमड़ी न जाय= (महा कंजूस)

जिन ढूँढा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ= (परिश्रम का फल अवश्य मिलता है)

प्रयोग- एक लड़का, जो बड़ा आलसी था, बार-बार फेल करता था और दूसरा, जो परिश्रमी था, पहली बार परीक्षा में उतीर्ण हो गया। जब आलसी ने उससे पूछा कि भाई, तुम कैसे एक ही बार में पास कर गये, तब उसने जवाब दिया कि 'जिन ढूँढा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ'।

जान बची तो लाखों पाये= जान बचने से बड़ा कोई लाभ नहीं है।

ठठेरे-ठठेरे बदलौअल= (चालाक को चालक से काम पड़ना)

ताड़ से गिरा तो खजूर पर अटका= (एक खतरे में से निकलकर दूसरे खतरे में पड़ना)

तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा= (जितने आदमी उतने विचार)

AJAY KUMAR

तेली का तेल जले और मशालची का सिर दुखे (छाती फाटे)= खर्च किसी का हो और बुरा किसी और को मालूम हो)

तन पर नहीं लत्ता पान खाय अलबत्ता= (शेखी बघारना)

तीन लोक से मथुरा न्यारी= (निराला ढंग)

तुम डाल-डाल तो हम पात-पात= (किसी की चाल को खूब समझते हुए चलना)

थोथा चना बाजे घना= कम जानकार में घमण्ड अधिक होता है।

थूक कर चाटना ठीक नहीं= (देकर लेना ठीक नहीं, वचन-भंग करना, अनुचित।)

दमड़ी की हाँड़ी गयी, कुत्ते की जात पहचानी गयी= (मामूली वस्तु में दूसरे की पहचान।)

दमड़ी की बुलबुल, नौ टका दलाली= ( काम साधारण, खर्च अधिक)

दाल-भात मेंमूसलचन्द= (बेकार दखल देना)

दुधारू गाय की दो लात भी भली= (जिससे लाभ होता हो, उसकी बातें भी सह लेनी चाहिए)

दूध का जला मट्ठा भी फूंक-फूंक कर पीता है= (एक बार धोखा खा जाने पर सावधान हो जाना)

दूर का ढोल सुहावना= (दूर से कोई चीज अच्छी लगती है।)

देशी मुर्गी, विलायती बोल= (बेमेल काम करना)

दूध का दूध पानी का पानी= सही निर्णय।

दूध का जला छाछ को फूंक मारकर पीता है= धोखा खाकर आदमी सतर्क हो जाता है।

दीवारों के भी कान होते हैं= गुप्त बात छिपी नहीं रहती।

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का= (निकम्मा, व्यर्थ इधर-उधर डालनेवाला)

नाच न जाने आँगन टेढ़= (काम न जानना और बहाना बनाना)

प्रयोग- सुधा से गाने के लिए कहा, तो उसने कहा- साज ही ठीक नहीं, गाऊँ क्या ?कहा है: 'नाच न जाने आँगन टेढ़।'

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी= (न कारण होगा, न कार्य होगा)

प्रयोग- सेठ माणिकचन्द के घर रोज लड़ाई-झगड़ा हुआ करता था। इस झगड़े की जड़ में था एक नौकर। वही इधर की बात उधर किया करता था। यह बात सेठ को मालूम हो गयी। उन्होंने उसे निकाल दिया। बहुतों ने उसकी ओर से सिफारिश की तो सेठ ने कहा- 'नहीं, वह झगड़ा लगाता है। 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।'

नक्कारखाने में तूती की आवाज= (सुनवाई न होना)

न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी= (न बड़ा प्रबंध होगा न काम होगा)

न देने के नौ बहाने= (न देने के बहुत-से बहाने)

नदी में रहकर मगर से वैर=(जिसके अधिकार में रहना, उसी से वैर करना)

नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च= काम साधारण, खर्च अधिक)

नौ नगद, न तेरह उधार= (अधिक उधार की अपेक्षा थोड़ा लाभ अच्छा)

नीम हकीम खतरे जान= (अयोग्य से हानि)

नाम बड़े, पर दर्शन थोड़े= (गुण से अधिक बड़ाई)

नाच कूदे तोड़े तान, ताको दुनिया राखे मान= आडम्बर दिखानेवाला मान पाता है।)

पढ़े फारसी बेचे तेल देखो यह किस्मत (या कुदरत) का खेल= (भाग्यहीन होना)

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं= (पराधीनता में सुख नहीं)

पहले भीतर तब देवता-पितर= (पेट-पूजा सबसे प्रधान)

पूछी न आछी, मैं दुलहिन की चाची= (जबरदस्ती किसी के सर पड़ना)

पराये धन पर लक्ष्मीनारायण= (दूसरे का धन पाकर अधिकार जमाना)

पानी पीकर जात पूछना= (कोई काम कर चुकने के बाद उसके औचित्य पर विचार करना)

पंच परमेश्वर= (पाँच पंचो की राय)

पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं= सभी व्यक्ति एक-से नहीं होते।

बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना= अचानक मनचाहा कार्य हो जाना।

बूड़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल= (श्रेष्ठ वंश में बुरे का पैदा होना)

बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद= (मूर्ख गुण की कद्र करना नहीं जानता)

बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा= (जिसको दुःख नहीं हुआ है वह दूसरे के दुःख को समझ नहीं सकता)

बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ से होय= (जैसी करनी, वैसी भरनी)

AJAY KUMAR

बैल का बैल गया नौ हाथ का पगहा भी गया= (बहुत बड़ा घाटा)

बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी= (भय की जगह पर कब तक रक्षा होगी)

बेकार से बेगार भली= (चुपचाप बैठे रहने की अपेक्षा कुछ काम करना)

बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्लाह= (बड़ा तो जैसा है, छोटा उससे बढ़कर है)

भागते चोर की लंगोटी ही सही= (सारा जाता देखकर थोड़े में ही सन्तोष करना)

प्रयोग- सेठ करोड़ीमल पर मेरे दस हजार रुपये थे। दिवाला निकलने के कारण वह केवल दो हजार रु० ही दे रहा है। मैंने सोचा, चलो भागते चोर की लंगोटी ही सही।

भइ गति साँप-छछूँदर केरी= (दुविधा में पड़ना)

भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस रही पगुराय= (मूर्ख को गुण सिखाना व्यर्थ है।)

भागते भूत की लँगोटी ही सही= (जाते हुए माल में से जो मिल जाय वही बहुत है।)

मुँह में राम बगल में छुरी= (कपटपूर्ण आचरण)

मियाँ की दौड़ मस्जिद तक= (किसी के कार्यक्षेत्र या विचार शक्ति का सिमित होना)

मन चंगा तो कठौती में गंगा= (हृदय पवित्र तो सब कुछ ठीक)

मान न मान मैं तेरा मेहामन= (जबरदस्ती किसी के गले पड़ना)

मेढक को भी जुकाम= (ओछे का इतराना)

मार-मार कर हकीम बनाना= (जबरदस्ती आगे बढ़ाना)

माले मुफ्त दिले बेरहम= (मुफ्त मिले पैसे को खर्च करने में ममता न होना)

मियाँ-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी= (जब दो व्यक्ति परस्पर किसी बात पर राजी हो तो दूसरे को इसमें क्या)

मोहरों की लूट, कोयले पर छाप= (मूल्यवान वस्तुओं को छोड़कर तुच्छ वस्तुओं पर ध्यान देना)

मानो तो देव, नहीं तो पत्थर= (विश्वास ही फलदायक)

मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते= (मुफ्त मिली चीज पर तर्क व्यर्थ)

रस्सी जल गयी पर ऐंठन न गयी= (बुरी हालत में पड़कर भी अभियान न त्यागना)

AJAY KUMAR

रोग का घर खाँसी, झगड़े घर हाँसी= (अधिक मजाक बुरा)

लश्कर में ऊँट बदनाम= (दोष किसी का, बदनामी किसी की)

लूट में चरखा नफा= (मुफ्त में जो हाथ लगे, वही अच्छा)

लेना-देना साढ़े बाईस= (सिर्फ मोल-तोल करना)

साँप मरे न लाठी टूटे= काम भी बन जाये और हानि भी न हो।

सब धन बाईस पसेरी= (अच्छे-बुरे सबको एक समझना)

सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हज को= (जन्म भर बुरा करके अन्त में धर्मात्मा बनना)

सीधी ऊँगली से घी नहीं निकलता= (सिधाई से काम नहीं होता)

सारी रामायण सुन गये, सीता किसकी जोय (जोरू)= (सारी बात सुन जाने पर साधारण सी बात का भी ज्ञान न होना)

होनहार बिरवान के होत चीकने पात= (होनहार के लक्षण पहले से ही दिखायी पड़ने लगते है।)

प्रयोग- वह लड़का जैसा सुन्दर है, वैसा ही सुशील, और जैसा बुद्धिमान है, वैसा ही चंचल। अभी बारह वर्ष भी पूरे नहीं हुए, पर भाषा और गणित में उसकी अच्छी पैठ है। अभी देखने पर स्पष्ट मालूम होता है कि समय पर वह सुप्रसिद्ध विद्वान होगा। कहावत भी है, 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'।

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और= (कहना कुछ और करना कुछ और)

प्रयोग- आजकल के नेताओं का विश्वास नहीं। इनके दाँत तो दिखाने के और होते हैं और खाने के और होते हैं।

हाथ कंगन को आरसी क्या= (प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्या)

हाथी चले बाजार, कुत्ता भूँके हजार= (उचित कार्य करने में दूसरों की निन्दा की परवाह नहीं करनी चाहिए)

हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और= (बोलना कुछ, करना कुछ और)

हँसुए के ब्याह में खुरपे का गीत= (बेमौका)

हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान= (नीच का सम्मान)

.....

# समास (Compound)

'समास' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– संक्षिप्त करना। सम्+आस् = 'सम्' का अर्थ है– अच्छी तरह पास एवं 'आस्' का अर्थ है– बैठना या मिलना। अर्थात् दो शब्दों को पास–पास मिलाना।

'जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के बीच की विभक्ति हटाकर, उन्हें मिलाकर जब एक नया स्वतन्त्र शब्द बनाया जाता है, तब इस मेल को समास कहते हैं।'

परस्पर मिले हुए शब्दों को समस्त–पद अर्थात् समास किया हुआ, या सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे– यथाशक्ति, त्रिभुवन, रामराज्य आदि।

समस्त पद के शब्दों (मिले हुए शब्दों) को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को 'समास–विग्रह' कहते हैं। जैसे– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार।

हिन्दी में समास प्रायः नए शब्द–निर्माण हेतु प्रयोग में लिए जाते हैं। भाषा में संक्षिप्तता, उत्कृष्टता, तीव्रता व गंभीरता लाने के लिए भी समास उपयोगी हैं। समास प्रकरण संस्कृत साहित्य में अति प्राचीन प्रतीत होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है— "मैं समासों में द्वन्द्व समास में हूँ।"

जिन दो मुख्य शब्दों के मेल से समास बनता है, उन शब्दों को खण्ड या अवयव या पद कहते हैं। समस्त पद या सामासिक पद का विग्रह करने पर समस्त पद के दो पद बन जाते हैं– पूर्व पद और उत्तर पद। जैसे– घनश्याम में 'घन' पूर्व पद और 'श्याम' उत्तर पद है।

दो या अधिक शब्दों (पदों) का परस्पर संबद्ध बतानेवाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतन्त शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते है और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह समास कहलाता है।

दूसरे अर्थ में- कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' कहलाता है।

समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है।

वे दो या अधिक पद एक पद हो जाते है: 'एकपदीभावः समासः'।

समास में समस्त होनेवाले पदों का विभक्ति-प्रत्यय लुप्त हो जाता है।

समस्त पदों के बीच सन्धि की स्थिति होने पर सन्धि अवश्य होती है। यह नियम संस्कृत तत्सम में अत्यावश्यक है।

## समास के भेद

समास के मुख्य सात भेद है:-

(1) तत्पुरुष समास ( Determinative Compound)

(2) कर्मधारय समास (Appositional Compound)

(3) द्विगु समास (Numeral Compound)

(4) बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)

(5) द्वन्द समास (Copulative Compound)

(6) अव्ययीभाव समास(Adverbial Compound)

(7) नञ समास

पदों की प्रधनता के आधार पर वर्गीकरण

पूर्वपद प्रधान- अव्ययीभाव

उत्तरपद प्रधान- तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु

दोनों पद प्रधान- द्वन्द

दोनों पद अप्रधान- बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है )

(1) तत्पुरुष समास :- जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है।

जैसे-

तुलसीकृत= तुलसी से कृत

शराहत= शर से आहत

राहखर्च= राह के लिए खर्च

राजकुमार= राजा का कुमार

AJAY KUMAR

तत्पुरुष समास में अन्तिम पद प्रधान होता है। इस समास में साधारणतः प्रथम पद विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य होता है। द्वितीय पद, अर्थात बादवाले पद के विशेष्य होने के कारण इस समास में उसकी प्रधानता रहती है।

## तत्पुरुष समास के भेद

तत्पुरुष समास के छह भेद होते है-

(i) कर्म तत्पुरुष
(ii) करण तत्पुरुष
(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष
(iv) अपादान तत्पुरुष
(v) सम्बन्ध तत्पुरुष
(vi) अधिकरण तत्पुरुष

(i)कर्म तत्पुरुष (द्वितीया तत्पुरुष)- इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है। जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| स्वर्गप्राप्त | स्वर्ग (को) प्राप्त | कष्टापन्न | कष्ट (को) आपन्न (प्राप्त) |
| आशातीत | आशा (को) अतीत | गृहागत | गृह (को) आगत |
| सिरतोड़ | सिर (को) तोड़नेवाला | चिड़ीमार | चिड़ियों (को) मारनेवाला |
| वयप्राप्त | वय (उम्र) को प्राप्त | गगनचुंबी | गगन को चूमने वाला |
| यशप्राप्त | यश को प्राप्त | ग्रामगत | ग्राम को गया हुआ |
| रथचालक | रथ को चलाने वाला | जेबकतरा | जेब को कतरने वाला |
| हस्तगत | हाथ को गत | जातिगत | जाति को गया हुआ |
| मुँहतोड़ | मुँह को तोड़ने वाला | दुःखहर | दुःख को हरने वाला |
| यशप्राप्त | यश को प्राप्त | पदप्राप्त | पद को प्राप्त |
| ग्रामगत | ग्राम को गत | कालातीत | काल को अतीत (परे) करके |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| देशगत | देश को गत | आशातीत | आशा को अतीत(से परे) |
| कठफोड़वा | काष्ठ को फोड़ने वाला | दिलतोड़ | दिल को तोड़ने वाला |
| जीतोड़ | जी को तोड़ने वाला | जीभर | जी को भरकर |
| लाभप्रद | लाभ को प्रदान करने वाला | शरणागत | शरण को आया हुआ |
| रोजगारोन्मुख | रोजगार को उन्मुख | सर्वज्ञ | सर्व को जानने वाला |
| गगनचुम्बी | गगन को चूमने वाला | परलोकगमन | परलोक को गमन |
| चित्तचोर | चित्त को चोरने वाला | ख्याति प्राप्त | ख्याति को प्राप्त |
| दिनकर | दिन को करने वाला | जितेन्द्रिय | इंद्रियों को जीतने वाला |
| चक्रधर | चक्र को धारण करने वाला | धरणीधर | धरणी (पृथ्वी) को धारण करने वाला |
| गिरिधर | गिरि को धारण करने वाला | हलधर | हल को धारण करने वाला |
| मरणातुर | मरने को आतुर | | |

(ii) करण तत्पुरुष (तृतीया तत्पुरुष)- इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है।

जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| वाग्युद्ध | वाक् (से) युद्ध | आचारकुशल | आचार (से) कुशल |
| तुलसीकृत | तुलसी (से) कृत | कपड़छना | कपड़े (से) छना हुआ |
| मुँहमाँगा | मुँह (से) माँगा | रसभरा | रस (से) भरा |
| करुणागत | करुणा से पूर्ण | भयाकुल | भय से आकुल |
| रेखांकित | रेखा से अंकित | शोकग्रस्त | शोक से ग्रस्त |
| मदांध | मद से अंधा | मनचाहा | मन से चाहा |
| सूररचित | सूर द्वारा रचित | तुलसीकृत | तुलसी द्वारा कृत |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| अकालपीड़ित | अकाल से पीड़ित | श्रमसाध्य | श्रम से साध्य |
| कष्टसाध्य | कष्ट से साध्य | ईश्वरदत्त | ईश्वर द्वारा दिया गया |
| रत्नजड़ित | रत्न से जड़ित | हस्तलिखित | हस्त से लिखित |
| अनुभव जन्य | अनुभव से जन्य | रेखांकित | रेखा से अंकित |
| गुरुदत्त | गुरु द्वारा दत्त | सूरकृत | सूर द्वारा कृत |
| दयार्द्र | दया से आर्द्र | आँखोंदेखा | आँखों से देखा |
| मदमत्त | मद (नशे) से मत्त | रोगातुर | रोग से आतुर |
| भुखमरा | भूख से मरा हुआ | शल्यचिकित्सा | शल्य (चीर-फाड़) से चिकित्सा |
| स्वयंसिद्ध | स्वयं से सिद्ध | शोकाकुल | शोक से आकुल |
| मेघाच्छन्न | मेघ से आच्छन्न | अश्रुपूर्ण | अश्रु से पूर्ण |
| वचनबद्ध | वचन से बद्ध | वाग्युद्ध | वाक् (वाणी) से युद्ध |
| क्षुधातुर | क्षुधा से आतुर | | |

(iii)सम्प्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) - इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है।

जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| देशभक्ति | देश (के लिए) भक्ति | विद्यालय | विद्या (के लिए) आलय |
| रसोईघर | रसोई (के लिए) घर | हथकड़ी | हाथ (के लिए) कड़ी |
| राहखर्च | राह (के लिए) खर्च | पुत्रशोक | पुत्र (के लिए) शोक |
| स्नानघर | स्नान के लिए घर | यज्ञशाला | यज्ञ के लिए शाला |
| डाकगाड़ी | डाक के लिए गाड़ी | गौशाला | गौ के लिए शाला |
| सभाभवन | सभा के लिए भवन | लोकहितकारी | लोक के लिए हितकारी |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| देवालय | देव के लिए आलय | गुरुदक्षिणा | गुरु के लिए दक्षिणा |
| भूतबलि | भूत के लिए बलि | प्रौढ़ शिक्षा | प्रौढ़ों के लिए शिक्षा |
| शपथपत्र | शपथ के लिए पत्र | स्नानागार | स्नान के लिए आगार |
| कृष्णार्पण | कृष्ण के लिए अर्पण | युद्धभूमि | युद्ध के लिए भूमि |
| बलिपशु | बलि के लिए पशु | पाठशाला | पाठ के लिए शाला |
| विद्यामंदिर | विद्या के लिए मंदिर | आवेदन पत्र | आवेदन के लिए पत्र |
| हवन सामग्री | हवन के लिए सामग्री | कारागृह | कैदियों के लिए गृह |
| परीक्षा भवन | परीक्षा के लिए भवन | सत्याग्रह | सत्य के लिए आग्रह |
| छात्रावास | छात्रों के लिए आवास | युववाणी | युवाओं के लिए वाणी |
| समाचार पत्र | समाचार के लिए पत्र | वाचनालय | वाचन के लिए आलय |
| चिकित्सालय | चिकित्सा के लिए आलय | बंदीगृह | बंदी के लिए गृह |

(iv)अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) - इसमे अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है।

जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| दूरागत | दूर से आगत | जन्मान्ध | जन्म से अन्ध |
| रणविमुख | रण से विमुख | देशनिकाला | देश से निकाला |
| कामचोर | काम से जी चुरानेवाला | नेत्रहीन | नेत्र (से) हीन |
| धनहीन | धन (से) हीन | पापमुक्त | पाप से मुक्त |
| जलहीन | जल से हीन | जातिभ्रष्ट | जाति से भ्रष्ट |
| रोगमुक्त | रोग से मुक्त | लोकभय | लोक से भय |
| राजद्रोह | राज से द्रोह | जलरिक्त | जल से रिक्त |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| नरकभय | नरक से भय | देशनिष्कासन | देश से निष्कासन |
| दोषमुक्त | दोष से मुक्त | बंधनमुक्त | बंधन से मुक्त |

(v)सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) - इसमें संबंधकारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है। जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| विद्याभ्यास | विद्या का अभ्यास | सेनापति | सेना का पति |
| पराधीन | पर के अधीन | राजदरबार | राजा का दरबार |
| श्रमदान | श्रम (का) दान | राजभवन | राजा (का) भवन |
| राजपुत्र | राजा (का) पुत्र | देशरक्षा | देश की रक्षा |
| शिवालय | शिव का आलय | गृहस्वामी | गृह का स्वामी |

(vi)अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) - इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त जो जाती है। जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| विद्याभ्यास | विद्या का अभ्यास | गृहप्रवेश | गृह में प्रवेश |
| नरोत्तम | नरों (में) उत्तम | पुरुषोत्तम | पुरुषों (में) उत्तम |
| दानवीर | दान (में) वीर | शोकमग्न | शोक में मग्न |
| लोकप्रिय | लोक में प्रिय | कलाश्रेष्ठ | कला में श्रेष्ठ |
| आनंदमग्न | आनंद में मग्न | | |

(2)कर्मधारय समास :- जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।

दूसरे शब्दों में-कर्ता-तत्पुरुष को ही कर्मधारय कहते हैं।

AJAY KUMAR

पहचान: विग्रह करने पर दोनों पद के मध्य में 'है जो', 'के समान' आदि आते है।

जिस तत्पुरुष समास के समस्त होनेवाले पद समानाधिकरण हों, अर्थात विशेष्य-विशेषण-भाव को प्राप्त हों, कर्ताकारक के हों और लिंग-वचन में समान हों, वहाँ 'कर्मधारयतत्पुरुष समास होता है।

| समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|
| नवयुवक | नव है जो युवक |
| पीतांबर | पीत है जो अंबर |
| परमेश्वर | परम है जो ईश्वर |
| नीलकमल | नील है जो कमल |
| महात्मा | महान है जो आत्मा |
| कनकलता | कनक की-सी लता |
| प्राणप्रिय | प्राणों के समान प्रिय |
| देहलता | देह रूपी लता |
| लालमणि | लाल है जो मणि |
| नीलकंठ | नीला है जो कंठ |
| महादेव | महान है जो देव |
| अधमरा | आधा है जो मरा |
| परमानंद | परम है जो आनंद |

## कर्मधारय तत्पुरुष के भेद

कर्मधारय तत्पुरुष के चार भेद है-

(i)विशेषणपूर्वपद

AJAY KUMAR

(ii) विशेष्यपूर्वपद

(iii) विशेषणोभयपद

(iv)विशेष्योभयपद

(i)विशेषणपूर्वपद :- इसमें पहला पद विशेषण होता है।

जैसे- पीत अम्बर= पीताम्बर

परम ईश्वर= परमेश्वर

नीली गाय= नीलगाय

प्रिय सखा= प्रियसखा

(ii) विशेष्यपूर्वपद :- इसमें पहला पद विशेष्य होता है और इस प्रकार के सामासिक पद अधिकतर संस्कृत में मिलते है।

जैसे- कुमारी (क्वाँरी लड़की)

श्रमणा (संन्यास ग्रहण की हुई )=कुमारश्रमणा।

(iii) विशेषणोभयपद :- इसमें दोनों पद विशेषण होते है।

जैसे- नील-पीत (नीला-पी-ला ); शीतोष्ण (ठण्डा-गरम ); लालपिला; भलाबुरा; दोचार कृताकृत (किया-बेकिया, अर्थात अधूरा छोड़ दिया गया); सुनी-अनसुनी; कहनी-अनकहनी।

(iv)विशेष्योभयपद:- इसमें दोनों पद विशेष्य होते है।

जैसे- आमगाछ या आम्रवृक्ष, वायस-दम्पति।

## कर्मधारयतत्पुरुष समास के उपभेद

कर्मधारयतत्पुरुष समास के अन्य उपभेद हैं- (i) उपमानकर्मधारय (ii) उपमितकर्मधारय (iii) रूपककर्मधारय

जिससे किसी की उपमा दी जाये, उसे 'उपमान' और जिसकी उपमा दी जाये, उसे 'उपमेय' कहा जाता है। घन की तरह श्याम =घनश्याम- यहाँ 'घन' उपमान है और 'श्याम' उपमेय।

AJAY KUMAR

(i) उपमानकर्मधारय - इसमें उपमानवाचक पद का उपमेयवाचक पद के साथ समास होता हैं। इस समास में दोनों शब्दों के बीच से 'इव' या 'जैसा' अव्यय का लोप हो जाता है और दोनों ही पद, चूँकि एक ही कर्ताविभक्ति, वचन और लिंग के होते है, इसलिए समस्त पद कर्मधारय-लक्षण का होता है। अन्य उदाहरण- विद्युत्-जैसी चंचला =विद्युच्चंचला।

(ii) उपमितकर्मधारय - यह उपमानकर्मधारय का उल्टा होता है, अर्थात इसमें उपमेय पहला पद होता है और उपमान दूसरा। जैसे- अधरपल्लव के समान = अधर-पल्लव; नर सिंह के समान =नरसिंह।

किन्तु, जहाँ उपमितकर्मधारय- जैसा 'नर सिंह के समान' या 'अधर पल्लव के समान' विग्रह न कर अगर 'नर ही सिंह या 'अधर ही पल्लव'- जैसा विग्रह किया जाये, अर्थात उपमान-उपमेय की तुलना न कर उपमेय को ही उपमान कर दिया जाय-

(iii) रूपककर्मधारय - जहाँ एक का दूसरे पर आरोप कर दिया जाये, वहाँ रूपककर्मधारय होगा। उपमितकर्मधारय और रूपककर्मधारय में विग्रह का यही अन्तर है। रूपककर्मधारय के अन्य उदाहरण- मुख ही है चन्द्र = मुखचन्द्र; विद्या ही है रत्न = विद्यारत्न भाष्य (व्याख्या) ही है अब्धि (समुद्र)= भाष्याब्धि।

कर्मधारय समास के कुछ उदाहरण

| | |
|---|---|
| महाराज – महान् है जो राजा | महापुरुष – महान् है जो पुरुष |
| नीलाकाश – नीला है जो आकाश | महाकवि – महान् है जो कवि |
| नीलोत्पल – नील है जो उत्पल (कमल) | महापुरुष – महान् है जो पुरुष |
| महर्षि – महान् है जो ऋषि | महासंयोग – महान् है जो संयोग |
| शुभागमन – शुभ है जो आगमन | सज्जन – सत् है जो जन |
| महात्मा – महान् है जो आत्मा | सद्बुद्धि – सत् है जो बुद्धि |
| मंदबुद्धि – मंद है जिसकी बुद्धि | मंदाग्नि – मंद है जो अग्नि |
| बहुमूल्य – बहुत है जिसका मूल्य | पूर्णांक – पूर्ण है जो अंक |
| भ्रष्टाचार – भ्रष्ट है जो आचार | शिष्टाचार – शिष्ट है जो आचार |
| अरुणाचल – अरुण है जो अचल | शीतोष्ण – जो शीत है जो उष्ण है |
| देवर्षि – देव है जो ऋषि है | परमात्मा – परम है जो आत्मा |
| अंधविश्वास – अंधा है जो विश्वास | कृतार्थ – कृत (पूर्ण) हो गया है जिसका अर्थ (उद्देश्य) |

AJAY KUMAR

दृढ़प्रतिज्ञ – दृढ़ है जिसकी प्रतिज्ञा

अंधकूप – अंधा है जो कूप

नीलगाय – नीली है जो गाय

महाजन – महान् है जो जन

श्वेताम्बर – श्वेत है जो अम्बर

अधपका – आधा है जो पका

लाल टोपी – लाल है जो टोपी

कालीमिर्च – काली है जो मिर्च

परमानन्द – परम है जो आनन्द

भलमानुष – भला है जो मनुष्य

महाकाल – महान् है जो काल

कापुरुष – कायर है जो पुरुष

कलमुँहा – काला है मुँह जिसका

जवाँ मर्द – जवान है जो मर्द

अधमरा – आधा मरा हुआ

महाप्रज्ञ – महान् है जिसकी प्रज्ञा

परकटा – पर हैं कटे जिसके

प्राणप्रिय – प्रिय है जो प्राणों को

पुच्छलतारा – पूँछ है जिस तारे की

वक्रतुण्ड – वक्र (टेढ़ी) है जो तुण्ड

अधजला – आधा है जो जला

महारानी – महान् है जो रानी

राजर्षि – राजा है जो ऋषि है

कृष्ण सर्प – कृष्ण (काला) है जो सर्प

नीलकमल – नीला है जो कमल

महादेव – महान् है जो देव

पीताम्बर – पीत है जो अम्बर

अधखिला – आधा है जो खिला

सद्धर्म – सत् है जो धर्म

महाविद्यालय – महान् है जो विद्यालय

दुरात्मा – दुर् (बुरी) है जो आत्मा

महासागर – महान् है जो सागर

महाद्वीप – महान् है जो द्वीप

बड़भागी – बड़ा है भाग्य जिसका

नकटा – नाक कटा है जो

दीर्घायु – दीर्घ है जिसकी आयु

निर्विवाद – विवाद से निवृत्त

नलकूप – नल से बना है जो कूप

दुमकटा – दुम है कटी जिसकी

अल्पसंख्यक – अल्प हैं जो संख्या में

नवागन्तुक – नया है जो आगन्तुक

चौसिँगा – चार हैं जिसके सींग

अतिवृष्टि – अति है जो वृष्टि

नराधम – नर है जो अधम (पापी)

AJAY KUMAR

नवदम्पत्ति – नया है जो दम्पत्ति

चंद्रवदन – चंद्रमा के समान वदन (मुख)

मुखारविँद – अरविँद रूपी मुख

मीनाक्षी – मीन के समान आँखों वाली

चन्द्रमुख – चन्द्र के समान मुख

चरणकमल – कमल रूपी चरण

कुसुमकोमल – कुसुम के समान कोमल

पाषाण हृदय – पाषाण के समान हृदय

कनकलता – कनक के समान लता

वचनामृत – अमृत रूपी वचन

विद्याधन – विद्या रूपी धन

संसार सागर – संसार रूपी सागर

बाहुदण्ड – बाहु है दण्ड समान

कमलनयन – कमल के समान नयन

मृगनयनी – मृग के समान नयनों वाली

चन्द्रमुखी – चन्द्रमा के समान मुख वाली

नरसिँह – सिँह रूपी नर

क्रोधाग्नि – अग्नि के समान क्रोध

ग्रन्थरत्न – रत्न रूपी ग्रन्थ

देहलता – देह रूपी लता

करकमल – कमल रूपी कर

अमृतवाणी – अमृत रूपी वाणी

वज्रदेह – वज्र के समान देह

(3)द्विगु समास :- जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु कर्मधारय समास कहलाता है।

जैसे-

| समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|
| ससिंधु | सात सिंधुओं का समूह |
| दोपहर | दो पहरों का समूह |
| त्रिलोक | तीनों लोको का समाहार |
| तिरंगा | तीन रंगों का समूह |
| दुअत्री | दो आनों का समाहार |

AJAY KUMAR

## द्विगु के भेद

इसके दो भेद होते है- (i)समाहारद्विगु और (ii)उत्तरपदप्रधानद्विगु।

(i)समाहारद्विगु :- समाहार का अर्थ है 'समुदाय' 'इकट्ठा होना' 'समेटना'।

जैसे- तीनों लोकों का समाहार= त्रिलोक

पाँचों वटों का समाहार= पंचवटी

पाँच सेरों का समाहार= पसेरी

तीनो भुवनों का समाहार= त्रिभुवन

(ii)उत्तरपदप्रधानद्विगु :- उत्तरपदप्रधान द्विगु के दो प्रकार है-

(a) बेटा या उत्पत्र के अर्थ में; जैसे -दो माँ का- द्वैमातुर या दुमाता; दो सूतों के मेल का- दुसूती;

(b) जहाँ सचमुच ही उत्तरपद पर जोर हो; जैसे- पाँच प्रमाण (नाम) =पंचप्रमाण; पाँच हत्थड़ (हैण्डिल)= पँचहत्थड़।

द्रष्टव्य- अनेक बहुव्रीहि समासों में भी पूर्वपद संख्यावाचक होता है। ऐसी हालत में विग्रह से ही जाना जा सकता है कि समास बहुव्रीहि है या द्विगु। यदि 'पाँच हत्थड़ है जिसमें वह =पँचहत्थड़' विग्रह करें, तो यह बहुव्रीहि है और 'पाँच हत्थड़' विग्रह करें, तो द्विगु।

तत्पुरुष समास के इन सभी प्रकारों में ये विशेषताएँ पायी जाती हैं-

(i) यह समास दो पदों के बीच होता है।

(ii) इसके समस्त पद का लिंग उत्तरपद के अनुसार हैं।

(iii) इस समास में उत्तरपद का ही अर्थ प्रधान होता हैं।

(4)बहुव्रीहि समास :- समास में आये पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पदार्थ की प्रधानता हो, तब उसे बहुव्रीहि समास कहते है।

जैसे- दशानन- दस मुहवाला- रावण।

AJAY KUMAR

जिस समस्त-पद में कोई पद प्रधान नहीं होता, दोनों पद मिल कर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते है, उसमें बहुव्रीहि समास होता है। 'नीलकंठ', नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव। यहाँ पर दोनों पदों ने मिल कर एक तीसरे पद 'शिव' का संकेत किया, इसलिए यह बहुव्रीहि समास है।

इस समास के समासगत पदों में कोई भी प्रधान नहीं होता, बल्कि पूरा समस्तपद ही किसी अन्य पद का विशेषण होता है।

| समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|
| प्रधानमंत्री | मंत्रियो में प्रधान है जो (प्रधानमंत्री) |
| पंकज | (पंक में पैदा हो जो (कमल) |
| अनहोनी | न होने वाली घटना (कोई विशेष घटना) |
| निशाचर | निशा में विचरण करने वाला (राक्षस) |
| चौलड़ी | चार है लड़ियाँ जिसमे (माला) |
| विषधर | (विष को धारण करने वाला (सर्प) |

तत्पुरुष और बहुव्रीहि में अन्तर- तत्पुरुष और बहुव्रीहि में यह भेद है कि तत्पुरुष में प्रथम पद द्वितीय पद का विशेषण होता है, जबकि बहुव्रीहि में प्रथम और द्वितीय दोनों पद मिलकर अपने से अलग किसी तीसरे के विशेषण होते है।

जैसे- 'पीत अम्बर =पीताम्बर (पीला कपड़ा )' कर्मधारय तत्पुरुष है तो 'पीत है अम्बर जिसका वह- पीताम्बर (विष्णु)' बहुव्रीहि। इस प्रकार, यह विग्रह के अन्तर से ही समझा जा सकता है कि कौन तत्पुरुष है और कौन बहुव्रीहि। विग्रह के अन्तर होने से समास का और उसके साथ ही अर्थ का भी अन्तर हो जाता है। 'पीताम्बर' का तत्पुरुष में विग्रह करने पर 'पीला कपड़ा' और बहुव्रीहि में विग्रह करने पर 'विष्णु' अर्थ होता है।

## बहुव्रीहि समास के भेद

बहुव्रीहि समास के चार भेद है-

(i) समानाधिकरणबहुव्रीहि

(ii) व्यधिकरणबहुव्रीहि

(iii) तुल्ययोगबहुव्रीहि

(iv) व्यतिहारबहुव्रीहि

AJAY KUMAR

(i) समानाधिकरणबहुव्रीहि :- इसमें सभी पद प्रथमा, अर्थात कर्ताकारक की विभक्ति के होते है; किन्तु समस्तपद द्वारा जो अन्य उक्त होता है, वह कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आदि विभक्ति-रूपों में भी उक्त हो सकता है।

जैसे-

प्राप्त है उदक जिसको =प्राप्तोदक (कर्म में उक्त);

जीती गयी इन्द्रियाँ है जिसके द्वारा =जितेन्द्रिय (करण में उक्त);

दत्त है भोजन जिसके लिए =दत्तभोजन (सम्प्रदान में उक्त);

निर्गत है धन जिससे =निर्धन (अपादान में उक्त);

पीत है अम्बर जिसका =पीताम्बर;

मीठी है बोली जिसकी =मिठबोला;

नेक है नाम जिसका =नेकनाम (सम्बन्ध में उक्त);

चार है लड़ियाँ जिसमें =चौलड़ी;

सात है खण्ड जिसमें =सतखण्डा (अधिकरण में उक्त)।

(ii) व्यधिकरणबहुव्रीहि :- समानाधिकरण में जहाँ दोनों पद प्रथमा या कर्ताकारक की विभक्ति के होते है, वहाँ पहला पद तो प्रथमा विभक्ति या कर्ताकारक की विभक्ति के रूप का ही होता है, जबकि बादवाला पद सम्बन्ध या अधिकरण कारक का हुआ करता है।

जैसे- शूल है पाणि (हाथ) में जिसके =शूलपाणि;

वीणा है पाणि में जिसके =वीणापाणि।

(iii) तुल्ययोगबहुव्रीहि:-- जिसमें पहला पद 'सह' हो, वह तुल्ययोगबहुव्रीहि या सहबहुव्रीहि कहलाता है।

'सह' का अर्थ है 'साथ' और समास होने पर 'सह' की जगह केवल 'स' रह जाता है। इस समास में यह ध्यान देने की बात है कि विग्रह करते समय जो 'सह' (साथ) बादवाला या दूसरा शब्द प्रतीत होता है, वह समास में पहला हो जाता है।

जैसे- जो बल के साथ है, वह=सबल; जो देह के साथ है, वह सदेह; जो परिवार के साथ है, वह सपरिवार; जो चेत (होश) के साथ है, वह =सचेत।

(iv)व्यतिहारबहुव्रीहि:- जिससे घात-प्रतिघात सूचित हो, उसे व्यतिहारबहुव्रीहि कहा जाता है।

इ समास के विग्रह से यह प्रतीत होता है कि 'इस चीज से और इस या उस चीज से जो लड़ाई हुई'।

जैसे- मुक्के-मुक्के से जो लड़ाई हुई =मुक्का-मुक्की; घूँसे-घूँसे से जो लड़ाई हुई =घूँसाघूँसी; बातों-बातों से जो लड़ाई हुई =बाताबाती। इसी प्रकार, खींचातानी, कहासुनी, मारामारी, डण्डाडण्डी, लाठालाठी आदि।

इन चार प्रमुख जातियों के बहुव्रीहि समास के अतिरिक्त इस समास का एक प्रकार और है।

जैसे-

प्रादिबहुव्रीहि- जिस बहुव्रीहि का पूर्वपद उपसर्ग हो, वह प्रादिबहुव्रीहि कहलाता है। जैसे- कुत्सित है रूप जिसका = कुरूप; नहीं है रहम जिसमें = बेरहम; नहीं है जन जहाँ = निर्जन।

तत्पुरुष के भेदों में भी 'प्रादि' एक भेद है, किन्तु उसके दोनों पदों का विग्रह विशेषण-विशेष्य-पदों की तरह होगा, न कि बहुव्रीहि के ढंग पर, अन्य पद की प्रधानता की तरह। जैसे- अति वृष्टि= अतिवृष्टि (प्रादितत्पुरुष) ।

द्रष्टव्य- (i) बहुव्रीहि के समस्त पद में दूसरा पद 'धर्म' या 'धनु' हो, तो वह आकारान्त हो जाता है; जैसे- प्रिय है धर्म जिसका = प्रियधर्मा; सुन्दर है धर्म जिसका = सुधर्मा; आलोक ही है धनु जिसका = आलोकधन्वा।

(ii) सकारान्त में विकल्प से 'आ' और 'क' किन्तु ईकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त समासान्त पदों के अन्त में निश्चितरूप से 'क' लग जाता है। जैसे- उदार है मन जिसका = उदारमनस, उदारमना या उदारमनस्क; अन्य में है मन जिसका = अन्यमना या अन्यमनस्क; ईश्वर है कर्ता जिसका = ईश्वरकर्तृक; साथ है पति जिसके; सपत्नीक; बिना है पति के जो = विपत्नीक।

## बहुव्रीहि समास की विशेषताएँ

बहुव्रीहि समास की निम्नलिखित विशेषताएँ है-

(i) यह दो या दो से अधिक पदों का समास होता है।

(ii) इसका विग्रह शब्दात्मक या पदात्मक न होकर वाक्यात्मक होता है।

(iii) इसमें अधिकतर पूर्वपद कर्ता कारक का होता है या विशेषण।

(iv) इस समास से बने पद विशेषण होते है। अतः उनका लिंग विशेष्य के अनुसार होता है।

(v) इसमें अन्य पदार्थ प्रधान होता है।

## बहुव्रीहि समास के कुछ उदाहरण

लम्बोदर सामास मेँ अन्य अर्थ होगा – लम्बा है उदर जिसका वह—गणेश।

अजानुबाहु – जानुओं (घुटनों) तक बाहुएँ हैं जिसकी वह—विष्णु

अजातशत्रु – नहीं पैदा हुआ शत्रु जिसका—कोई व्यक्ति विशेष

वज्रपाणि – वह जिसके पाणि (हाथ) में वज्र है—इन्द्र

मकरध्वज – जिसके मकर का ध्वज है वह—कामदेव

रतिकांत – वह जो रति का कांत (पति) है—कामदेव

आशुतोष – वह जो आशु (शीघ्र) तुष्ट हो जाते हैं—शिव

पंचानन – पाँच है आनन (मुँह) जिसके वह—शिव

वाग्देवी – वह जो वाक् (भाषा) की देवी है—सरस्वती

युधिष्ठिर – जो युद्ध में स्थिर रहता है—धर्मराज (ज्येष्ठ पाण्डव)

षडानन – वह जिसके छह आनन हैं—कार्तिकेय

सप्तऋषि – वे जो सात ऋषि हैं—सात ऋषि विशेष जिनके नाम निश्चित हैं

त्रिवेणी – तीन वेणियों (नदियों) का संगमस्थल—प्रयाग

पंचवटी – पाँच वटवृक्षों के समूह वाला स्थान—मध्य प्रदेश में स्थान विशेष

रामायण – राम का अयन (आश्रय)—वाल्मीकि रचित काव्य

पंचामृत – पाँच प्रकार का अमृत—दूध, दही, शक्कर, गोबर, गोमूत्र का रसायन विशेष

षड्दर्शन – षट् दर्शनों का समूह—छह विशिष्ट भारतीय दर्शन–न्याय, सांख्य, द्वैत आदि

चारपाई – चार पाए हों जिसके—खाट

विषधर – विष को धारण करने वाला—साँप

अष्टाध्यायी – आठ अध्यायों वाला—पाणिनि कृत व्याकरण

चक्रधर – चक्र धारण करने वाला—श्रीकृष्ण

पतझड़ – वह ऋतु जिसमें पत्ते झड़ते हैं—बसंत

दीर्घबाहु – दीर्घ हैं बाहु जिसके—विष्णु

AJAY KUMAR

पतिव्रता – एक पति का व्रत लेने वाली—वह स्त्री

तिरंगा – तीन रंगो वाला—राष्ट्रध्वज

अंशुमाली – अंशु है माला जिसकी—सूर्य

महात्मा – महान् है आत्मा जिसकी—ऋषि

वक्रतुण्ड – वक्र है तुण्ड जिसकी—गणेश

दिगम्बर – दिशाएँ ही हैं वस्त्र जिसके—शिव

घनश्याम – जो घन के समान श्याम है—कृष्ण

प्रफुल्लकमल – खिले हैं कमल जिसमें—वह तालाब

महावीर – महान् है जो वीर—हनुमान व भगवान महावीर

लोकनायक – लोक का नायक है जो—जयप्रकाश नारायण

महाकाव्य – महान् है जो काव्य—रामायण, महाभारत आदि

अनंग – वह जो बिना अंग का है—कामदेव

एकदन्त – एक दंत है जिसके—गणेश

नीलकण्ठ – नीला है कण्ठ जिनका—शिव

पीताम्बर – पीत (पीले) हैं वस्त्र जिसके—विष्णु

कपीश्वर – कपि (वानरों) का ईश्वर है जो—हनुमान

वीणापाणि – वीणा है जिसके पाणि में—सरस्वती

देवराज – देवों का राजा है जो—इन्द्र

हलधर – हल को धारण करने वाला

शशिधर – शशि को धारण करने वाला—शिव

दशमुख – दस हैं मुख जिसके—रावण

चक्रपाणि – चक्र है जिसके पाणि में – विष्णु

AJAY KUMAR

पंचानन – पाँच हैं आनन जिसके—शिव

पद्मासना – पद्म (कमल) है आसन जिसका—लक्ष्मी

मनोज – मन से जन्म लेने वाला—कामदेव

गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला—श्रीकृष्ण

वसुंधरा – वसु (धन, रत्न) को धारण करती है जो—धरती

त्रिलोचन – तीन हैं लोचन (आँखें) जिसके—शिव

वज्रांग – वज्र के समान अंग हैं जिसके—हनुमान

शूलपाणि – शूल (त्रिशूल) है पाणि में जिसके—शिव

चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसकी—विष्णु

लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका—गणेश

चन्द्रचूड – चन्द्रमा है चूड (ललाट) पर जिसके—शिव

पुण्डरीकाक्ष – पुण्डरीक (कमल) के समान अक्षि (आँखें) हैं जिसकी—विष्णु

रघुनन्दन – रघु का नन्दन है जो—राम

सूतपुत्र – सूत (सारथी) का पुत्र है जो—कर्ण

चन्द्रमौलि – चन्द्र है मौलि (मस्तक) पर जिसके—शिव

चतुरानन – चार हैं आनन (मुँह) जिसके—ब्रह्मा

अंजनिनन्दन – अंजनि का नन्दन (पुत्र) है जो—हनुमान

पंकज – पंक् (कीचड़) में जन्म लेता है जो—कमल

निशाचर – निशा (रात्रि) में चर (विचरण) करता है जो—राक्षस

मीनकेतु – मीन के समान केतु हैं जिसके—विष्णु

नाभिज – नाभि से जन्मा (उत्पन्न) है जो—ब्रह्मा

वीणावादिनी – वीणा बजाती है जो—सरस्वती

AJAY KUMAR

नगराज – नग (पहाड़ों) का राजा है जो—हिमालय

वज्रदन्ती – वज्र के समान दाँत हैं जिसके—हाथी

मारुतिनंदन – मारुति (पवन) का नंदन है जो—हनुमान

शचिपति – शचि का पति है जो—इन्द्र

वसन्तदूत – वसन्त का दूत है जो—कोयल

गजानन – गज (हाथी) जैसा मुख है जिसका—गणेश

गजवदन – गज जैसा वदन (मुख) है जिसका—गणेश

ब्रह्मपुत्र – ब्रह्मा का पुत्र है जो—नारद

भूतनाथ – भूतों का नाथ है जो—शिव

षटपद – छह पैर हैं जिसके—भौंरा

लंकेश – लंका का ईश (स्वामी) है जो—रावण

सिन्धुजा – सिन्धु में जन्मी है जो—लक्ष्मी

दिनकर – दिन को करता है जो—सूर्य

**(5) द्वन्द्व समास :-** जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता हो वह द्वन्द्व समास कहलाता है।

पहचान : दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न (Hyphen (-) का प्रयोग होता है।

द्वन्द्व समास में सभी पद प्रधान होते है। द्वन्द्व और तत्पुरुष से बने पदों का लिंग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है।

द्वन्द्व समास के भेद

द्वन्द्व समास के तीन भेद है-

(i) इतरेतर द्वन्द्व

(ii) समाहार द्वन्द्व

(iii) वैकल्पिक द्वन्द्व

**(i) इतरेतर द्वन्द्व-:** वह द्वन्द्व, जिसमें 'और' से सभी पद जुड़े हुए हो और पृथक् अस्तित्व रखते हों, 'इतरेतर द्वन्द्व' कहलता है।

इस समास से बने पद हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होते है; क्योंकि वे दो या दो से अधिक पदों के मेल से बने होते है।

जैसे- राम और कृष्ण =राम-कृष्ण, ऋषि और मुनि =ऋषि-मुनि, गाय और बैल =गाय-बैल, भाई और बहन =भाई-बहन, माँ और बाप =माँ-बाप, बेटा और बेटी =बेटा-बेटी इत्यादि।

यहाँ ध्यान रखना चाहिए कि इतरेतर द्वन्द्व में दोनों पद न केवल प्रधान होते है, बल्कि अपना अलग-अलग अस्तित्व भी रखते है।

**(ii) समाहार द्वन्द्व-** समाहार का अर्थ है समष्टि या समूह। जब द्वन्द्व समास के दोनों पद और समुच्चयबोधक से जुड़े होने पर भी पृथक-पृथक अस्तित्व न रखें, बल्कि समूह का बोध करायें, तब वह समाहार द्वन्द्व कहलाता है।

समाहार द्वन्द्व में दोनों पदों के अतिरिक्त अन्य पद भी छिपे रहते है और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते है।

जैसे- आहारनिद्रा =आहार और निद्रा (केवल आहार और निद्रा ही नहीं, बल्कि इसी तरह की और बातें भी); दालरोटी=दाल और रोटी (अर्थात भोजन के सभी मुख्य पदार्थ); हाथपाँव =हाथ और पाँव (अर्थात हाथ और पाँव तथा शरीर के दूसरे अंग भी )। इसी तरह नोन-तेल, कुरता-टोपी, साँप-बिच्छू, खाना-पीना इत्यादि।

कभी-कभी विपरीत अर्थवाले या सदा विरोध रखनेवाले पदों का भी योग हो जाता है। जैसे- चढ़ा-ऊपरी, लेन-देन, आगा-पीछा, चूहा-बिल्ली इत्यादि।

जब दो विशेषण-पदों का संज्ञा के अर्थ में समास हो, तो समाहार द्वन्द्व होता है।

जैसे- लंगड़ा-लूला, भूखा-प्यास, अन्धा-बहरा इत्यादि।

उदाहरण- लँगड़े-लूले यह काम नहीं क्र सकते; भूखे-प्यासे को निराश नहीं करना चाहिए; इस गाँव में बहुत-से अन्धे-बहरे है।

AJAY KUMAR

द्रष्टव्य- यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि जब दोनों पद विशेषण हों और विशेषण के ही अर्थ में आयें तब वहाँ द्वन्द्व समास नहीं होता, वहाँ कर्मधारय समास हो जाता है। जैसे- लँगड़ा-लूला आदमी यह काम नहीं कर सकता; भूखा-प्यासा लड़का सो गया; इस गाँव में बहुत-से लोग अन्धे-बहरे हैं- इन प्रयोगों में 'लँगड़ा-लूला', 'भूखा-प्यासा' और 'अन्धा-बहरा' द्वन्द्व समास नहीं हैं।

**(iii) वैकल्पिक द्वन्द्व :-** जिस द्वन्द्व समास में दो पदों के बीच 'या', 'अथवा' आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे हों, उसे वैकल्पिक द्वन्द्व कहते है।

इस समास में बहुधा दो विपरीतार्थक शब्दों का योग रहता है। जैसे- पाप-पुण्य, धर्माधर्म, भला-बुरा, थोड़ा-बहुत इत्यादि। यहाँ 'पाप-पुण्य' का अर्थ 'पाप' और 'पुण्य' भी प्रसंगानुसार हो सकता है।

अन्नजल – अन्न और जल

राम–लक्ष्मण – राम और लक्ष्मण

खट्टामीठा – खट्टा और मीठा

माता–पिता – माता और पिता

पढ़ा–लिखा – पढ़ा और लिखा

राधाकृष्ण – राधा और कृष्ण

सीताराम – सीता और राम

अड़सठ – आठ और साठ

छात्र–छात्राएँ – छात्र और छात्राएँ

गुरु–शिष्य – गुरु और शिष्य

एक–दो – एक या दो

लाख–दो–लाख – लाख या दो लाख

आर–पार – आर या पार

उल्टा–सीधा – उल्टा या सीधा

देश–विदेश – देश और विदेश

रात–दिन – रात और दिन

जला–भुना – जला और भुना

दूधरोटी – दूध और रोटी

हरि–हर – हरि और हर

राधेश्याम – राधे और श्याम

गौरीशंकर – गौरी और शंकर

पच्चीस – पाँच और बीस

कन्द–मूल–फल – कन्द और मूल और फल

राग–द्वेष – राग या द्वेष

दस–बारह – दस या बारह

पल–दो–पल – पल या दो पल

पाप–पुण्य – पाप या पुण्य

कर्तव्याकर्तव्य – कर्तव्य अथवा अकर्तव्य

AJAY KUMAR

सुख–दुख – सुख अथवा दुख

धर्माधर्म – धर्म अथवा अधर्म

यश–अपयश – यश अथवा अपयश

नोन–तेल – नोन, तेल आदि

आहार–निद्रा – आहार, निद्रा आदि

कपड़े–लत्ते – कपड़े, लत्ते आदि

पाला–पोसा – पाला, पोसा आदि

काम–काज – काम, काज आदि

लूट–मार – लूट, मार आदि

भला–बुरा – भला, बुरा आदि

ऊँच–नीच – ऊँच, नीच आदि

आगा–पीछा – आगा, पीछा आदि

भूल–चूक – भूल, चूक आदि

खरी–खोटी – खरी, खोटी आदि

जीवन–मरण – जीवन अथवा मरण

लाभ–हानि – लाभ अथवा हानि

हाथ–पाँव – हाथ, पाँव आदि

रुपया–पैसा – रुपया, पैसा आदि

जलवायु – जल, वायु आदि

बहू–बेटी – बहू, बेटी आदि

साग–पात – साग, पात आदि

खेत–खलिहान – खेत, खलिहान आदि

पेड़–पौधे – पेड़, पौधे आदि

दाल–रोटी – दाल, रोटी आदि

धन–दौलत – धन, दौलत आदि

चाय–पानी – चाय, पानी आदि

फल–फूल – फल, फूल आदि

**(6) अव्ययीभाव समास:-** अव्ययीभाव का लक्षण है- जिसमे पूर्वपद की प्रधानता हो और सामासिक या समास पद अव्यय हो जाय, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

सरल शब्दो में- जिस समास का पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

इस समास में समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता है। इसमें पहला पद उपसर्ग आदि जाति का अव्यय होता है और वही प्रधान होता है। जैसे- प्रतिदिन, यथासम्भव, यथाशक्ति, बेकाम, भरसक इत्यादि।

पहचान : पहला पद अनु, आ, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि होता है।

अव्ययीभाववाले पदों का विग्रह- ऐसे समस्तपदों को तोड़ने में, अर्थात उनका विग्रह करने में हिन्दी में बड़ी कठिनाई होती है, विशेषतः संस्कृत के समस्त पदों का विग्रह करने में हिन्दी में जिन समस्त पदों में द्विरुक्तिमात्र होती है, वहाँ विग्रह करने में केवल दोनों पदों को अलग कर दिया जाता है।

जैसे- (संस्कृत) प्रतिदिन- दिन-दिन

यथाविधि- विधि के अनुसार; यथाक्रम- क्रम के अनुसार; यथाशक्ति- शक्ति के अनुसार; आजन्म- जन्म तक

| पूर्वपद-अव्यय | + | उत्तरपद | = | समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रति | + | दिन | = | प्रतिदिन | प्रत्येक दिन |
| आ | + | जन्म | = | आजन्म | जन्म से लेकर |
| यथा | + | संभव | = | यथासंभव | जैसा संभव हो |
| अनु | + | रूप | = | अनुरूप | रूप के योग्य |
| भर | + | पेट | = | भरपेट | पेट भर के |
| हाथ | + | हाथ | = | हाथों-हाथ | हाथ ही हाथ में |

पद के क्रिया विशेषण अव्यय की भाँति प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास की निम्नांकित स्थितियाँ बन सकती हैं–

(1) अव्यय+अव्यय–ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, इधर-उधर, आस-पास, जैसे-तैसे, यथा-शक्ति, यत्र-तत्र।

(2) अव्ययों की पुनरुक्ति– धीरे-धीरे, पास-पास, जैसे-जैसे।

(3) संज्ञा+संज्ञा– नगर-डगर, गाँव-शहर, घर-द्वार।

(4) संज्ञाओं की पुनरुक्ति– दिन-दिन, रात-रात, घर-घर, गाँव-गाँव, वन-वन।

(5) संज्ञा+अव्यय– दिवसोपरान्त, क्रोध-वश।

(6) विशेषण संज्ञा– प्रतिदिवस, यथा अवसर।

(7) कृदन्त+कृदन्त– जाते-जाते, सोते-जागते।

(8) अव्यय+विशेषण– भरसक, यथासम्भव।

AJAY KUMAR

अव्ययीभाव समास के उदाहरण:

समस्त–पद — विग्रह

यथारूप – रूप के अनुसार

यथायोग्य – जितना योग्य हो

यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार

प्रतिक्षण – प्रत्येक क्षण

भरपूर – पूरा भरा हुआ

अत्यन्त – अन्त से अधिक

रातोँरात – रात ही रात में

अनुदिन – दिन पर दिन

निरन्ध्र – रन्ध्र से रहित

आमरण – मरने तक

आजन्म – जन्म से लेकर

आजीवन – जीवन पर्यन्त

प्रतिशत – प्रत्येक शत (सौ) पर

भरपेट – पेट भरकर

प्रत्यक्ष – अक्षि (आँखों) के सामने

दिनोँदिन – दिन पर दिन

सार्थक – अर्थ सहित

सप्रसंग – प्रसंग के साथ

प्रत्युत्तर – उत्तर के बदले उत्तर

यथार्थ – अर्थ के अनुसार

आकंठ – कंठ तक

घर–घर – हर घर/प्रत्येक घर

यथाशीघ्र – जितना शीघ्र हो

श्रद्धापूर्वक – श्रद्धा के साथ

अनुरूप – जैसा रूप है वैसा

अकारण – बिना कारण के

हाथोँ हाथ – हाथ ही हाथ में

बेधड़क – बिना धड़क के

प्रतिपल – हर पल

नीरोग – रोग रहित

यथाक्रम – जैसा क्रम है

साफ–साफ – बिल्कुल स्पष्ट

यथेच्छ – इच्छा के अनुसार

प्रतिवर्ष – प्रत्येक वर्ष

निर्विरोध – बिना विरोध के

नीरव – रव (ध्वनि) रहित

बेवजह – बिना वजह के

प्रतिबिँब – बिँब का बिँब

दानार्थ – दान के लिए

उपकूल – कूल के समीप की

क्रमानुसार – क्रम के अनुसार

AJAY KUMAR

कर्मानुसार – कर्म के अनुसार

अंतर्व्यथा – मन के अंदर की व्यथा

यथासंभव – जहाँ तक संभव हो

यथावत् – जैसा था, वैसा ही

यथास्थान – जो स्थान निर्धारित है

प्रत्युपकार – उपकार के बदले किया जाने वाला उपकार

मंद–मंद – मंद के बाद मंद, बहुत ही मंद

**(7) नञ समास :-** इसमे नहीं का बोध होता है। जैसे - अनपढ़, अनजान , अज्ञान ।

| समस्त-पद | विग्रह |
|---|---|
| अनाचार | न आचार |
| अनदेखा | न देखा हुआ |
| अन्याय | न न्याय |
| अनभिज्ञ | न अभिज्ञ |
| नालायक | नहीं लायक |
| अचल | न चल |
| नास्तिक | न आस्तिक |
| अनुचित | न उचित |

**समास-सम्बन्धी कुछ विशेष बातें-**

(1)एक समस्त पद में एक से अधिक प्रकार के समास हो सकते है। यह विग्रह करने पर स्पष्ट होता है। जिस समास के अनुसार विग्रह होगा, वही समास उस पद में माना जायेगा।

जैसे- पीताम्बर- (i) पीत है जो अम्बर (कर्मधारय), (ii)पीत है अम्बर जिसका (बहुव्रीहि); निडर- बिना डर का (अव्ययीभाव ); नहीं है डर जिसे (प्रादि का नञ बहुव्रीहि); सुरूप - सुन्दर है जो रूप (कर्मधारय), सुन्दर है रूप जिसका (बहुव्रीहि); चन्द्रमुख- चन्द्र के समान मुख (कर्मधारय); बुद्धिबल- बुद्धि ही है बल (कर्मधारय);

(2) समासों का विग्रह करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि यथासम्भव समास में आये पदों के अनुसार ही विग्रह हो।

AJAY KUMAR

जैसे- पीताम्बर का विग्रह- 'पीत है जो अम्बर' अथवा 'पीत है अम्बर जिसका' ऐसा होना चाहिए। बहुधा संस्कृत के समासों, विशेषकर अव्ययीभाव, बहुव्रीहि और उपपद समासों का विग्रह हिन्दी के अनुसार करने में कठिनाई होती है। ऐसे स्थानों पर हिन्दी के शब्दों से सहायता ली जा सकती है। जैसे- कुम्भकार =कुम्भ को बनानेवाला; खग=आकाश में जानेवाला; आमरण =मरण तक; व्यर्थ =बिना अर्थ का; विमल=मल से रहित; इत्यादि।

(3)अव्ययीभाव समास में दो ही पद होते है। बहुव्रीहि में भी साधारणतः दो ही पद रहते है। तत्पुरुष में दो से अधिक पद हो सकते है और द्वन्द्व में तो सभी समासों से अधिक पद रह सकते है।

जैसे- नोन-तेल-लकड़ी, आम-जामुन-कटहल-कचनार इत्यादि (द्वन्द्व)।

(4)यदि एक समस्त पद में अनेक समासवाले पदों का मेल हो तो अलग-अलग या एक साथ भी विग्रह किया जा सकता है।

जैसे- चक्रपाणिदर्शनार्थ-चक्र है पाणि में जिसके= चक्रपाणि (बहुव्रीहि); दर्शन के अर्थ =दर्शनार्थ (अव्ययीभाव ); चक्रपाणि के दर्शनार्थ =चक्रपाणिदर्शनार्थ (अव्ययीभाव ) । समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय है, इसलिए अव्ययीभाव है।

## प्रयोग की दृष्टि से समास के भेद-

प्रयोग की दृष्टि से समास के तीन भेद किये जा सकते है-

(1)संयोगमूलक समास

(2)आश्रयमूलक समास

(3)वर्णनमूलक समास

(1)संज्ञा-समास :- संयोगमूलक समास को संज्ञा-समास कहते है। इस प्रकार के समास में दोनों पद संज्ञा होते है।

दूसरे शब्दों में, इसमें दो संज्ञाओं का संयोग होता है।

जैसे- माँ-बाप, भाई-बहन, माँ-बेटी, सास-पतोहू, दिन-रात, रोटी-बेटी, माता-पिता, दही-बड़ा, दूध-दही, थाना-पुलिस, सूर्य-चन्द्र इत्यादि।

(2)विशेषण-समास:- यह आश्रयमूलक समास है। यह प्रायः कर्मधारय समास होता है। इस समास में प्रथम पद विशेषण होता है, किन्तु द्वितीय पद का अर्थ बलवान होता है। कर्मधारय का अर्थ है कर्म अथवा वृत्ति धारण करनेवाला। यह विशेषण-विशेष्य, विशेष्य-विशेषण, विशेषण तथा विशेष्य पदों द्वारा सम्पत्र होता है। जैसे-

AJAY KUMAR

(क) जहाँ पूर्वपद विशेषण हो; यथा- कच्चाकेला, शीशमहल, महरानी।

(ख)जहाँ उत्तरपद विशेषण हो; यथा- घनश्याम।

(ग़)जहाँ दोनों पद विशेषण हों; यथा- लाल-पीला, खट्टा-मीठा।

(घ) जहाँ दोनों पद विशेष्य हों; यथा- मौलवीसाहब, राजाबहादुर।

(3)अव्यय समास :- वर्णमूलक समास के अन्तर्गत बहुव्रीहि और अव्ययीभाव समास का निर्माण होता है। इस समास (अव्ययीभाव) में प्रथम पद साधारणतः अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा। जैसे- यथाशक्ति, यथासाध्य, प्रतिमास, यथासम्भव, घड़ी-घड़ी, प्रत्येक, भरपेट, यथाशीघ्र इत्यादि।

## सन्धि और समास में अन्तर

सन्धि और समास का अन्तर इस प्रकार है-

(i) समास में दो पदों का योग होता है; किन्तु सन्धि में दो वर्णो का।

(ii) समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते है। सन्धि के लिए दो वर्णों के मेल और विकार की गुंजाइश रहती है, जबकि समास को इस मेल या विकार से कोई मतलब नहीं।

(iii) सन्धि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते है, जबकि समास का 'विग्रह' होता है। जैसे- 'पीताम्बर' में दो पद है- 'पीत' और 'अम्बर' । सन्धिविच्छेद होगा- पीत+अम्बर;

जबकि समासविग्रह होगा- पीत है जो अम्बर या पीत है जिसका अम्बर = पीताम्बर। यहाँ ध्यान देने की बात है कि हिंदी में सन्धि केवल तत्सम पदों में होती है, जबकि समास संस्कृत तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में। यही कारण है कि हिंदी पदों के समास में सन्धि आवश्यक नहीं है।

संधि में वर्णो के योग से वर्ण परिवर्तन भी होता है जबकि समास में ऐसा नहीं होता।

## कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

इन दोनों समासों में अंतर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए। कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। जैसे-'नीलगगन' में 'नील' विशेषण है तथा 'गगन' विशेष्य है। इसी तरह 'चरणकमल' में 'चरण' उपमेय है और 'कमल' उपमान है। अतः ये दोनों उदाहरण कर्मधारय समास के है।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है। जैसे- 'चक्रधर' चक्र को धारण करता है जो अर्थात 'श्रीकृष्ण' ।

नीलकंठ- नीला है जो कंठ- कर्मधारय समास।

नीलकंठ- नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव- बहुव्रीहि समास।

लंबोदर- मोटे पेट वाला- कर्मधारय समास।

लंबोदर- लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश- बहुव्रीहि समास।

## द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है। जैसे-

चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह- द्विगु समास।

चतुर्भुज- चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात विष्णु- बहुव्रीहि समास।

पंचवटी- पाँच वटों का समाहार- द्विगु समास।

पंचवटी- पाँच वटों से घिरा एक निश्चित स्थल अर्थात दंडकारण्य में स्थित वह स्थान जहाँ वनवासी राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ निवास किया- बहुव्रीहि समास।

दशानन- दस आननों का समूह- द्विगु समास।

दशानन- दस आनन हैं जिसके अर्थात रावण- बहुव्रीहि समास।

## द्विगु और कर्मधारय में अंतर

(i) द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।

(ii) द्विगु का पहला पद ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है। जैसे-

नवरत्न- नौ रत्नों का समूह- द्विगु समास

चतुर्वर्ण- चार वर्णों का समूह- द्विगु समास

AJAY KUMAR

पुरुषोत्तम- पुरुषों में जो है उत्तम- कर्मधारय समास

रक्तोत्पल- रक्त है जो उत्पल- कर्मधारय समास

## सामासिक पदों की सूची

### तत्पुरुष समास (कर्मतत्पुरुष)

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| गगनचुम्बी | गगन (को) चूमनेवाला | पाकिटमार | पाकिट (को) मारनेवाला |
| चिड़ीमार | चिड़ियों (को) मारनेवाला | गृहागत | गृह को आगत |
| कठखोदवा | काठ (को) खोदनेवाला | गिरहकट | गिरह (को) काटनेवाला |
| मुँहतोड़ | मुँह (को) तोड़नेवाला | स्वर्गप्राप्त | स्वर्ग को प्राप्त |
| अनुभव जन्य | अनुभव से जन्य | आपबीती | आप पर बीती (सप्तमी तत्पुरुष) |
| उद्योगपति | उद्योग का पति (मालिक) | गुणहीन | गुणों से हीन |
| घुड़दौड़ | घोड़ों की दौड़ | जन्मांध | जन्म से अंधा |
| देशाटन | देश में अटन (भ्रमण) | दानवीर | दान में वीर |
| देशवासी | देश का वासी | अमृतधारा | अमृत की धारा |
| अछूतोद्धार | अछूतों का उद्धार | आत्मविश्वास | आत्मा पर विश्वास |
| ऋषिकन्या | ऋषि की कन्या | कष्टसाध्य | कष्ट से होने वाला |
| हरघड़ी | घड़ी-घड़ी या प्रत्येक घड़ी | गुरुदक्षिणा | गुरु के लिए दक्षिणा |
| गृहप्रवेश | गृह में प्रवेश | गोबर गणेश | गोबर से बना गणेश |
| दहीबड़ा | दही में डूबा हुआ बड़ा | अकाल पीड़ित | अकाल से पीड़ित |
| गोशाला | गौओं के लिए शाला | गंगाजल | गंगा का जल |
| घुड़सवार | घोड़े पर सवार | जीवनसाथी | जीवन का साथी |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| जलधारा | जल की धारा | देशभक्ति | देश की भक्ति |
| पूँजीपति | पूँजी का पति | भयभीत | भय से भीत (डरा) |
| हस्तलिखित | हाथ से लिखित | पथभ्रष्ट | पथ से भ्रष्ट |
| देशभक्त | देश का भक्त | चरित्रचित्रण | चरित्र का चित्रण |
| दानवीर | दान देने में वीर (सप्तमी तत्पुरुष) | युधिष्ठिर | युद्ध में स्थिर |
| पर्णशाला | पर्णनिर्मित शाला | पुरुषोत्तम | पुरुषों में उत्तम |
| कुम्भकार | कुम्भ को करने (बनाने)वाला (उपपद तत्पुरुष) | नेत्रहीन | नेत्र से हीन |
| राहखर्च | राह के लिए खर्च | शरणागत | शरण में आगत |
| विद्यासागर | विद्या का सागर | आकाशवाणी | आकाश से वाणी |
| आनन्दाश्रम | आनन्द का आश्रम | नराधम | नरों में अधम |
| कर्महीन | कर्म से हीन (पंचमी तत्पुरुष) | कर्मनिरत | कर्म से निरत (सप्तमी तत्पुरुष) |
| कविश्रेष्ठ | कवियों से श्रेष्ठ | विद्यार्थी | विद्या का अर्थी (ष० तत्पुरुष) |
| काव्यकार | काव्य की रचना करनेवाला (उपपद तत्पुरुष) | कृषिप्रधान | कृषि में प्रधान(सप्तमी तत्पुरुष) |
| क्षत्रियाधम | क्षत्रियों में अधम(सप्तमी तत्पुरुष) | कृष्णार्पण | कृष्ण के लिए अर्पण (चतुर्थी तत्पुरुष) |
| ग्रामोद्धार | ग्राम का उद्धार (ष० तत्पुरुष) | गिरहकट | गिरह को काटनेवाला (द्वि तत्पुरुष) |
| गृहस्थ | गृह में स्थित (उपपद तत्पुरुष) | चन्द्रोदय | चन्द्र का उदय (ष० तत्पुरुष) |
| जीवनमुक्त | जीवन से मुक्त (ष० तत्पुरुष) | ठाकुरसुहाती | ठाकुर (मालिक) के लिए रुचिकर बातें |
| तिलचट्टा | तिल को चाटनेवाला | दयासागर | दया का सागर |
| दुखसंतप्त | दुःख से संतप्त | देशगत | देश को गया हुआ |
| धनहीन | धन से हीन | धर्मविमुख | धर्म से विमुख |
| नरोत्तम | नरों में उत्तम | पददलित | पद से दलित |
| पदच्युत | पद से च्युत | परीक्षोपयोगी | परीक्षा के लिए उपयोगी |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| पादप | पैर से पीनेवाला (उपपद तत्पुरुष) | पुत्रशोक | पुत्र के लिए शोक |
| पुस्तकालय | पुस्तक के लिए आलय | मनमौजी | मन से मौजी |
| मनगढ़न्त | मन से गढ़ा हुआ (तृ० तत्पुरुष) | मदमाता | मद से माता (तृ० तत्पुरुष) |
| मालगोदाम | माल के लिए गोदाम | रसोईघर | रसोई के लिए घर |
| रामायण | राम का अयन (ष० तत्पुरुष) | राजकन्या | राजा की कन्या (ष० तत्पुरुष) |

## करणतत्पुरुष

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| प्रेमासिक्त | प्रेम से सिक्त | जलसिक्त | जल से सिक्त |
| रसभरा | रस से भरा | मदमाता | मद से माता |
| मेघाच्छन्न | मेघ से आच्छन्न | रोगपीड़ित | रोग से पीड़ित |
| रोगग्रस्त | रोग से ग्रस्त | मुँहमाँगा | मुँह से माँगा |
| दुःखार्त | दुःख से आर्त | मदान्ध | मद से अन्ध |
| देहचोर | देह से चोर | पददलित | पद से दलित |
| तुलसीकृत | तुलसी द्वारा कृत | दुःखसन्तप्त | दुःख से सन्तप्त |
| शोकाकुल | शोक से आकुल | करुणापूर्ण | करुणा से पूर्ण |
| अकालपीड़ित | अकाल से पीड़ित | शोकग्रस्त | शोक से ग्रस्त |
| शोकार्त | शोक से आर्त | श्रमजीवी | श्रम से जीनेवाला |
| कामचोर | काम से चोर | मुँहचोर | मुँह से चोर |

## सम्प्रदान तत्पुरुष

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिवार्पण | शिव के लिए अर्पण | रसोईघर | रसोई के लिए घर |
| सभाभवन | सभा के लिए भवन | लोकहितकारी | लोक के लिए हितकारी |
| मार्गव्यय | मार्ग के लिए व्यय | स्नानघर | स्नान के लिए घर |
| मालगोदाम | माल के लिए गोदाम | डाकमहसूल | डाक के लिए महसूल |
| साधुदक्षिणा | साधु के लिए दक्षिणा | देशभक्ति | देश के लिए भक्ति |
| पुत्रशोक | पुत्र के लिए शोक | ब्राह्मणदेय | ब्राह्मण के लिए देय |
| राहखर्च | राह के लिए खर्च | गोशाला | गो के लिए शाला |
| देवालय | देव के लिए आलय | विधानसभा | विधान के लिए सभा |
| परीक्षा भवन | परीक्षा के लिए भवन | | |

## अपादान तत्पुरुष

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| बलहीन | बल से हीन | धनहीन | धन से हीन |
| पदभ्रष्ट | पद से भ्रष्ट | स्थानभ्रष्ट | स्थान से भ्रष्ट |
| मायारिक्त | माया से रिक्त | पापमुक्त | पाप से मुक्त |
| ऋणमुक्त | ऋण से मुक्त | ईश्वरविमुख | ईश्वर से विमुख |
| स्थानच्युत | स्थान से च्युत | लोकोत्तर | लोक से उत्तर (परे) |
| नेत्रहीन | नेत्र से हीन | शक्तिहीन | शक्ति से हीन |
| पथभ्रष्ट | पथ से भ्रष्ट | जलरिक्त | जल से रिक्त |
| प्रेमरिक्त | प्रेम से रिक्त | व्ययमुक्त | व्यय से मुक्त |
| धर्मविमुख | धर्म से विमुख | पदच्युत | पद से च्युत |
| धर्मच्युत | धर्म से च्युत | मरणोत्तर | मरण से उत्तर |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| देश निकाला | देश से निकाला | जन्मांध | जन्म से अंधा |

## सम्बन्ध तत्पुरुष

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| अन्नदान | अन्न का दान | श्रमदान | श्रम का दान |
| वीरकन्या | वीर की कन्या | त्रिपुरारि | त्रिपुर का अरि |
| राजभवन | राजा का भवन | प्रेमोपासक | प्रेम का उपासक |
| आनन्दाश्रम | आनन्द का आश्रम | देवालय | देव का आलय |
| रामायण | राम का अयन | खरारि | खर का अरि |
| गंगाजल | गंगा का जल | रामोपासक | राम का उपासक |
| चन्द्रोदय | चन्द्र का उदय | देशसेवा | देश की सेवा |
| चरित्रचित्रण | चरित्र का चित्रण | राजगृह | राजा का गृह |
| आमरस | आम का रस | राजदरबार | राजा का दरबार |
| सभापति | सभा का पति | विद्यासागर | विद्या का सागर |
| गुरुसेवा | गुरु की सेवा | सेनानायक | सेना का नायक |
| ग्रामोद्धार | ग्राम का उद्धार | मृगछौना | मृग का छौना |
| राजपुत्र | राजा का पुत्र | पुस्तकालय | पुस्तक का आलय |
| राष्ट्रपति | राष्ट्र का पति | हिमालय | हिम का आलय |
| घुड़दौड़ | घोड़ों की दौड़ | सेनानायक | सेना के नायक |
| यथाशक्ति | शक्ति के अनुसार | राजपुरुष | राजा का पुरुष |
| राजमंत्री | राजा का मंत्री | | |

AJAY KUMAR

## अधिकरण तत्पुरुष

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| पुरुषोत्तम | पुरुषों में उत्तम | पुरुषसिंह | पुरुषों में सिंह |
| ग्रामवास | ग्राम में वास | शास्त्रप्रवीण | शास्त्रों में प्रवीण |
| आत्मनिर्भर | आत्म पर निर्भर | क्षत्रियाधम | क्षत्रियों में अधम |
| शरणागत | शरण में आगत | हरफनमौला | हर फन में मौला |
| मुनिश्रेष्ठ | मुनियों में श्रेष्ठ | नरोत्तम | नरों में उत्तम |
| ध्यानमग्न | ध्यान में मग्न | कविश्रेष्ठ | कवियों में श्रेष्ठ |
| दानवीर | दान में वीर | गृहप्रवेश | गृह में प्रवेश |
| नराधम | नरों में अधम | सर्वोत्तम | सर्व में उत्तम |
| रणशूर | रण में शूर | आनन्दमग्न | आनन्द में मग्न |
| आपबीती | आप पर बीती | | |

## कर्मधारय समास

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| नवयुवक | नव युवक | छुटभैये | छोटे भैये |
| कापुरुष | कुत्सित पुरुष | कदन्न | कुत्सित अन्न |
| निलोत्पल | नील उत्पल | महापुरुष | महान पुरुष |
| सन्मार्ग | सत् मार्ग | पीताम्बर | पीत अम्बर |
| परमेश्वर | परम् ईश्वर | सज्जन | सत् जन |
| महाकाव्य | महान् काव्य | वीरबाला | वीर बाला |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| महात्मा | महान् है जो आत्मा | महावीर | महान् वीर |
| अंधविश्वास | अंधा है जो विश्वास | अंधकूप | अंधा है जो कूप (कुआँ) |
| घनश्याम | घन के समान श्याम | नीलकंठ | नीला है जो कंठ |
| अधपका | आधा है जो पका | काली मिर्च | काली है जो मिर्च |
| दुरात्मा | दुर (बुरी) है जो आत्मा | नीलाम्बर | नीला है जो अंबर |
| अकाल मृत्यु | अकाल (असमय) है जो मृत्यु | नीलगाय | नीली है जो गाय |
| नील गगन | नीला है जो गगन | परमांनद | परम् है जो आनंद |
| महाराजा | महान है जो राजा | महादेव | महान है जो देव |
| शुभागमन | शुभ है जो आगमन | महाजन | महान है जो जन |
| नरसिंह | नर रूपी सिंह | चंद्रमुख | चंद्र के समान मुख |
| क्रोधाग्नि | क्रोध रूपी अग्नि | श्वेताम्बर | श्वेत है जो अम्बर |
| लाल टोपी | लाल है जो टोपी | सदधर्म | सत है जो धर्म |
| महाविद्यालय | महान है जो विद्यालय | विद्याधन | विद्या रूपी धन |
| करकमल | कमल के समान कर | मृगनयन | मृग जैसे नयन |
| खटमिट्ठा | खट्टा और मीठा है | नरोत्तम | नरों में उत्तम हैं जो |
| प्राणप्रिय | प्राण के समान प्रिय | घनश्याम | घन के समान श्याम |
| कमलनयन | कमल सरीखा नयन | परमांनद | परम आनंद |
| चन्द्रमुख | चाँद-सा सुन्दर मुख | चन्द्रवदन | चन्द्र के समान वदन (मुखड़ा) |
| घृतान्न | घृत मिश्रित अन्न | महाकाव्य | महान है काव्य जो |
| लौहपुरुष | लौह सदृश पुरुष | कुसुमकोमल | कुसुम के समान कोमल |
| कपोताग्रीवा | कपोत के समान ग्रीवा | गगनांगन | गगन रूपी आंगन |
| चरणकमल | कमल के समान चरण | तिलपापड़ी | तिल से बनी पापड़ी |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| दहीबड़ा | दही में भिंगोया बड़ा | पकौड़ी | पकी हुई बड़ी |
| परमेश्वर | परम ईश्वर | महाशय | महान आशय |
| महारानी | महती रानी | मृगनयन | मृग के समान नयन |

## विशेष्यपूर्वपदकर्मधारय

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| कुमारश्रवणा | कुमारी (क्वांरी) | मदनमनोहर | मदन जो मनोहर है |
| श्यामसुन्दर | श्याम जो सुन्दर है | जनकखेतिहर | जनक खेतिहर (खेती करनेवाला) |

## विशेषणोभयपदकर्मधारय

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| नीलपीत | नीला-पीला (दोनों मिले) | कृताकृत | किया-बेकिया |
| शीतोष्ण | शीत-उष्ण (दोनों मिले) | कहनी-अनकहनी | कहना-न-कहना |

## विशेष्योभयपदकर्मधारय

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| आम्रवृक्ष | आम्र है जो वृक्ष | वायसदम्पति | वायस है जो दम्पति |

## उपमानकर्मधारय

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| विद्युद्वेग | विद्युत के समान वेग | शैलोन्नत | शैल के समान उन्नत |
| कुसुमकोमल | कुसुम के समान कोमल | घनश्याम | घन-जैसा श्याम |
| लौहपुरुष | लोहे के समान पुरुष (कठोर) | | |

AJAY KUMAR

## उपमितकर्मधारय

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| चरणकमल | चरण कमल के समान | मुखचन्द्र | मुख चन्द्र के समान |
| अधरपल्लव | अधर पल्लव के समान | नरसिंह | नर सिंह के समान |
| पद पंकज | पद पंकज के समान | | |

## रूपकर्मधारय

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| पुरुषरत्न | पुरुष ही है रत्न | भाष्याब्धि | भाष्य ही है अब्धि |
| मुखचन्द्र | मुख ही है चन्द्र | पुत्ररत्न | पुत्र ही है रत्न |

## अव्ययीभाव समास

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| दिनानुदिन | दिन के बाद दिन | प्रत्यंग | अंग-अंग |
| भरपेट | पेट भरकर | यथाशक्ति | शक्ति के अनुसार |
| निर्भय | बिना भय का | उपकूल | कूल के समीप |
| प्रत्यक्ष | अक्षि के सामने | निधड़क | बिना धड़क के |
| बखूबी | खूबी के साथ | यथार्थ | अर्थ के अनुसार |
| प्रत्येक | एक-एक | मनमाना | मन के अनुसार |
| यथाशीघ्र | जितना शीघ्र हो | बेकाम | बिना काम का |
| बेलाग | बिना लाग का | आपादमस्तक | पाद से मस्तक तक |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रत्युपकार | उपकार के प्रति | परोक्ष | अक्षि के परे |
| बेफायदा | बिना फायदे का | बेरहम | बिना रहम के |
| प्रतिदिन | दिन दिन | आमरण | मरण तक |
| अनुरूप | रूप के योग्य | यथाक्रम | क्रम के अनुसार |
| बेखटके | बिना खटके वे (बिन) | यथासमय | समय के अनुसार |
| आजन्म | जन्म से लेकर | एकाएक | अचानक, अकस्मात |
| दिनोंदिन | कुछ (या दिन) ही दिन में | यथोचित | जितना उचित हो |
| रातोंरात | रात-ही-रात में | आजीवन | जीवन पर्यंत/तक |
| गली-गली | प्रत्येक गली | भरपूर | पूरा भरा हुआ |
| यथानियम | नियम के अनुसार | प्रतिवर्ष | वर्ष-वर्ष/हर वर्ष |
| बीचोंबीच | बीच ही बीच में | आजकल | आज और कल |
| यथाविधि | विधि के अनुसार | यथास्थान | स्थान के अनुसार |
| यथासंभव | संभावना के अनुसार | व्यर्थ | बिना अर्थ के |
| रातभर | भर रात | अनुकूल | कुल के अनुसार |
| अनुरूप | रूप के ऐसा | आसमुद्र | समुद्रपर्यन्त |
| पल-पल | हर पल | बार-बार | हर बार |

## द्विगु कर्मधारय (समाहारद्विगु)

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| त्रिभुवन | तीन भुवनों का समाहार | त्रिकाल | तीन कालों का समाहार |
| चवन्नी | चार आनों का समाहार | नवग्रह | नौ ग्रहों का समाहार |
| त्रिगुण | तीन गुणों का समूह | पसेरी | पाँच सेरों का समाहार |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| अष्टाध्यायी | अष्ट अध्यायों का समाहार | त्रिपाद | तीन पादों का समाहार |
| पंचवटी | पाँच वटों का समाहार | त्रिलोक, त्रिलोकी | तीन लोकों का समाहार |
| दुअन्नी | दो आनों का समाहार | चौराहा | चार राहों का समाहार |
| त्रिफला | तीन फलों का समाहार | नवरत्न | नव रत्नों का समाहार |
| सतसई | सात सौ का समाहार | पंचपात्र | पाँच पात्रों का समाहार |
| चतुर्भुज | चार भुजाओं का समूह | चारपाई | चार पैरों का समाहार |
| तिरंगा | तीन रंगों का समाहार | अष्टसिद्धि | आठ सिद्धियों का समाहार |
| चतुर्मुख | चार मुखों का समूह | त्रिवेणी | तीन वेणियों का समूह |
| नवनिधि | नौ निधियों का समाहार | चवन्नी | चार आनों का समाहार |
| दोपहर | दो पहरों का समाहार | पंचतंत्र | पाँच तंत्रो का समाहार |
| सप्ताह | सात दिनों का समूह | त्रिनेत्र | तीनों नेत्रों का समूह |
| दुराहा | दो राहों का समाहार | चतुर्वेद | चार वेदों का समाहार |

## उत्तरपदप्रधानद्विगु

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| दुपहर | दूसरा पहर | शतांश | शत (सौवाँ) अंश |
| पंचहत्थड़ | पाँच हत्थड़ (हैण्डिल) | पंचप्रमाण | पाँच प्रमाण (नाप) |
| दुसूती | दो सूतोंवाला | दुधारी | दो धारोंवाली (तलवार) |

## बहुव्रीहि (समानाधिकरणबहुव्रीहि)

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| प्राप्तोदक | प्राप्त है उदक जिसे | दत्तभोजन | दत्त है भोजन जिसे |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| पीताम्बर | पीत है अम्बर जिसका | जितेन्द्रिय | जीती है इन्द्रियाँ जिसने |
| निर्धन | निर्गत है धन जिससे | मिठबोला | मीठी है बोली जिसकी (वह पुरुष) |
| चौलड़ी | चार है लड़ियाँ जिसमें (वह माला) | चतुर्भुज | चार है भुजाएँ जिसकी |
| दिगम्बर | दिक् है अम्बर जिसका | सहस्त्रकर | सहस्त्र है कर जिसके |
| वज्रदेह | वज्र है देह जिसकी | लम्बोदर | लम्बा है उदर जिसका |
| दशमुख | दश है मुख जिसके | गोपाल | वह जो, गौ का पालन करे |
| घनश्याम | वह जो घन के समान श्याम है अर्थात श्रीकृष्ण | पंचपात्र | पाँच पात्रों का समाहार |
| गिरिधर | गिरि(पर्वत)को धारण करने वाला अर्थात श्रीकृष्ण | त्रिलोचन | तीन है लोचन जिसके अर्थात शिव |
| कमलनयन | कमल के समान है नयन जिसके अर्थात विष्णु | चतुर्वेद | चार वेदों का समाहार |
| गजानन | गज के समान आनन (मुख) वाला अर्थात गणेश | सतसई | सात सौ का समाहार |
| चक्रधर | चक्र धारण करने वाला अर्थात विष्णु | चतुर्मुख | चार है मुख जिसके,वह अर्थात ब्रह्मा |
| नीलकंठ | नीला है जो कंठ अर्थात शिव | पंचानन | पाँच है आनन (मुँह) जिसके अर्थात वह देवता |
| बारहसिंगा | बारह हैं सींग जिसके वह पशु | महेश | महान है जो ईश अर्थात शिव |
| लाठालाठी | लाठी से लड़ाई | सरसिज | सर से जन्म लेने वाला |
| कपीश | कपियों में है ईश जो- हनुमान | खगेश | खगों का ईश है जो वह गरुड़ |
| गोपाल | गो का पालन जो करे वह, श्रीकृष्ण | चक्रपाणि | चक्र हो पाणि (हाथ) में जिसके वह विष्णु |
| चतुरानन | चार है आनन जिनको वह, ब्रह्मा | जलज | जल में उत्पन्न होता है वह कमल |
| जलज | जल देता है जो वह बादल | नीलाम्बर | नीला अम्बर या नीला है अम्बर जिसका वह, बलराम |
| मुरलीधर | मुरली को धरे रहे (पकड़े रहे) वह, श्रीकृष्ण | वज्रायुध | वज्र है आयुध जिसका वह, इन्द्र |

व्यधिकरणबहुव्रीहि

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|

| | | | |
|---|---|---|---|
| शूलपाणि | शूल है पाणि में जिसके | चन्द्रभाल | चन्द्र है भाल पर जिसके |
| वीणापाणि | वीणा है पाणि में जिसके | चन्द्रवदन | चन्द्र है वदन पर जिसके |

## तुल्ययोग या सहबहुव्रीहि

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| सबल | बल के साथ है जो | सपरिवार | परिवार के साथ है जो |
| सदेह | देह के साथ है जो | सचेत | चेत (चेतना) के साथ है जो |

## व्यतिहारबहुव्रीहि

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| मुक्कामुक्की | मुक्के-मुक्के से जो लड़ाई हुई | लाठालाठी | लाठी-लाठी से जो लड़ाई हुई |
| डण्डाडण्डी | डण्डे-डण्डे से जो लड़ाई हुई | | |

## प्रादिबहुव्रीहि

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| बेरहम | नहीं है रहम जिसमें | निर्जन | नहीं है जन जहाँ |

## द्वन्द्व (इतरेतरद्वन्द्व)

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| धर्माधर्म | धर्म और अधर्म | भलाबुरा | भला और बुरा |
| गौरी-शंकर | गौरी और शंकर | सीता-राम | सीता और राम |
| लेनदेन | लेन और देन | देवासुर | देव और असुर |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिव-पार्वती | शिव और पार्वती | पापपुण्य | पाप और पुण्य |
| देश-विदेश | देश और विदेश | भाई-बहन | भाई और बहन |
| हरि-शंकर | हरि और शंकर | धनुर्बाण | धनुष और बाणा |
| अन्नजल | अन्न और जल | आटा-दाल | आटा और दाल |
| ऊँच-नीच | ऊँच और नीच | गंगा-यमुना | गंगा और यमुना |
| दूध-दही | दूध और दही | जीवन-मरण | जीवन और मरण |
| पति-पत्नी | पति और पत्नी | बच्चे-बूढे | बच्चे और बूढे |
| माता-पिता | माता और पिता | राजा-प्रजा | राजा और प्रजा |
| राजा-रानी | राजा और रानी | सुख-दुःख | सुख और दुःख |
| अपना-पराया | अपना और पराया | गुण-दोष | गुण और दोष |
| नर-नारी | नर और नारी | पृथ्वी-आकाश | पृथ्वी और आकाश |
| बाप-दादा | बाप और दादा | यश-अपयश | यश और अपयश |
| हार-जीत | हार और जीत | ऊपर-नीचे | ऊपर और नीचे |
| शीतोष्ण | शीत और उष्ण | इकतीस | एक और तीस |
| दम्पति | जाया-पति | राग-द्वेष | राग और द्वेष |
| लाभालाभ | लाभ और अलाभ | राधा-कृष्ण | राधा और कृष्ण |
| लोटा-डोरी | लोटा और डोरी | गाड़ी-घोड़ा | गाड़ी और घोड़ा |
| भात-दाल | भात और दाल | | |

समाहारद्वन्द्व

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| रुपया-पैसा | रुपया-पैसा वगैरह | घर-आँगन | घर-आँगन वगैरह (परिवार) |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| घर-द्वार | घर-द्वार वगैरह (परिवार) | नाक-कान | नाक-कान वगैरह |
| नहाया-धोया | नहाया और धोया आदि | कपड़ा-लत्ता | कपड़ा-लत्ता वगैरह |

## वैकल्पिकद्वन्द्व

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| पाप-पुण्य | पाप या पुण्य | भला-बुरा | भला या बुरा |
| लाभालाभ | लाभ या अलाभ | धर्माधर्म | धर्म या अधर्म |
| थोड़ा-बहुत | थोड़ा या बहुत | ठण्डा-गरम | ठण्डा या गरम |

## नञ समास

| पद | विग्रह | पद | विग्रह |
|---|---|---|---|
| अनाचार | न आचार | नास्तिक | न आस्तिक |
| अनदेखा | न देखा हुआ | अनुचित | न उचित |
| अन्याय | न न्याय | अज्ञान | न ज्ञान |
| अनभिज्ञ | न अभिज्ञ | अद्वितीय | जिसके समान दूसरा न हो |
| नालायक | नहीं लायक | अगोचर | न गोचर |
| अचल | न चल | अजन्मा | न जन्मा |
| अधर्म | न धर्म | अनन्त | न अन्त |
| अनेक | न एक | अनपढ़ | न पढ़ |
| अपवित्र | न पवित्र | अलौकिक | न लौकिक |

.....

AJAY KUMAR

# वचन(Number)

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, उसे हिन्दी व्याकरण में 'वचन' कहते है।

दूसरे शब्दों में- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते है।

वचन का शाब्दिक अर्थ है- 'संख्यावचन'। 'संख्यावचन' को ही संक्षेप में 'वचन' कहते है। वचन का अर्थ कहना भी है।

जैसे- लड़का= एक लड़का;

लड़के= अनेक लड़के।

## वचन के प्रकार

वचन के दो भेद होते है-

(1) एकवचन

(2) बहुवचन

(1)एकवचन :- संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्ति या एक वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते है।

जैसे- स्त्री, घोड़ा, नदी, रुपया, लड़का, गाय, सिपाही, बच्चा, कपड़ा, माता, माला, पुस्तक, टोपी, बंदर, मोर आदि।

(2)बहुवचन :- शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते है।

जैसे- स्त्रियाँ, घोड़े, नदियाँ, रूपये, लड़के, गायें, कपड़े, टोपियाँ, मालाएँ, माताएँ, पुस्तकें, वधुएँ, गुरुजन, रोटियाँ, लताएँ, बेटे आदि।

विशेष-(i) आदरणीय व्यक्तियों के लिए सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे -पापाजी कल मुंबई जायेंगे।

(ii)संबद्ध दर्शाने वाली कुछ संज्ञायें एकवचन और बहुवचन में एक समान रहती है। जैसे -ताई, मामा, दादा, नाना, चाचा आदि।

(iii)द्रव्यसूचक संज्ञायें एकवचन में प्रयोग होती है। जैसे -पानी, तेल, घी, दूध आदि।

(iv)कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किये जाते है जैसे -दाम, दर्शन, प्राण, आँसू आदि।

(v)पुल्लिंग ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्द दोनों वचनों में समान रहते है।

AJAY KUMAR

जैसे -एक मुनि -दस मुनि, एक डाकू -दस डाकू, एक आदमी -दस आदमी आदि।

(vi)बड़प्पन दिखाने के लिए कभी -कभी वक्ता अपने लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करता है

जैसे - 'हमें' याद नहीं कि हमने कभी 'आपसे' ऐसा कहा हो।

(vii)व्यवहार में 'तुम' के स्थान पर 'आप' का प्रयोग करते हैं। जैसे -'आप' कल कहाँ गये थे ?

(vii)जातिवाचक संज्ञायें दोनों ही वचनों में प्रयुक्त होती है।

जैसे - (i)'कुत्ता' भौंक रहा है। (ii) 'कुत्ते' भौंक रहे है।

परन्तु धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञायें एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। जैसे - 'सोना' महँगा है, 'चाँदी' सस्ती है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम-

विभिक्तिरहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम-

(1)आकारान्त पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाने से-

| एकवचन..... | बहुवचन |
|---|---|
| जूता..... | जूते |
| तारा..... | तारे |
| लड़का..... | लड़के |
| घोड़ा..... | घोडे |
| बेटा..... | बेटे |
| मुर्गा..... | मुर्गे |
| कपड़ा..... | कपड़े |

(2)अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'अ' के स्थान पर 'एे लगाने से-

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| कलम | कलमें |

AJAY KUMAR

बात बातें

रात रातें

आँख आखें

पुस्तक पुस्तकें

(3)जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'या' आता है, उनमें 'या' के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगाने से बहुवचन बनता है। जैसे-

एकवचन.....बहुवचन

बिंदिया ..... बिंदियाँ

चिडिया ..... चिडियाँ

डिबिया .....डिबियाँ

गुडिया ..... गुडियाँ

चुहिया .....चुहियाँ

(4)ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के 'इ' या 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' लगाने से-

एकवचन.....बहुवचन

तिथि ..... तिथियाँ

नारी ..... नारियाँ

गति .....गतियाँ

थाली ..... थालियाँ

(5)आकारांत स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा-शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है ।जैसे-

एकवचन.....बहुवचन

लता .....लताएँ

AJAY KUMAR

अध्यापिका .....अध्यापिकाएँ

कन्या .....कन्याएँ

माता .....माताएँ

भुजा .....भुजाएँ

पत्रिका .....पत्रिकाएँ

शाखा..... शाखाएँ

कामना..... ..कामनाए

कथा ..... कथाएँ

(6)इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ'लगाने से -

एकवचन.....बहुवचन

जाति.....जातियाँ

रीति .....रीतियाँ

नदी .....नदियाँ

लड़की.....लड़कियाँ

(7)उकारान्त व ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'एँ'लगाते है। 'ऊ' को 'उ' में बदल देते है-

एकवचन.....बहुवचन

वस्तु .....वस्तुएँ

गौ .....गौएँ

बहु .....बहुएँ

वधू ..... .वधुएँ

गऊ ..... गउएँ

AJAY KUMAR

(8) संज्ञा के पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग रूपों में 'गण' 'वर्ग' 'जन' 'लोग' 'वृन्द' 'दल'आदि शब्द जोड़कर भी शब्दों का बहुवचन बना देते हैं।

एकवचन.....बहुवचन

स्त्री..... स्त्रीजन

नारी..... नारीवृन्द

अधिकारी..... अधिकारीवर्ग

पाठक..... पाठकगण

अध्यापक..... अध्यापकवृंद

विद्यार्थी..... विद्यार्थीगण

आप..... आपलोग

श्रोता .....श्रोताजन

मित्र..... मित्रवर्ग

सेना..... सेनादल

गुरु .....गुरुजन

गरीब.....गरीब लोग

(9)कुछ शब्दों में गुण,वर्ण ,भाव आदि शब्द लगाकर बहुवचन बनाया जाता है।

एकवचन.....बहुवचन

व्यापारी .....व्यापारीगण

मित्र .....मित्रवर्ग

सुधी ..... सुधिजन

नोट - कुछ शब्द दोनों वचनों में एक जैसे रहते है। जैसे -पिता,योद्धा,चाचा ,मित्र, फल, बाज़ार, अध्यापक, फूल, छात्र, दादा, राजा, विद्यार्थी आदि।

AJAY KUMAR

## विभक्तिसहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम-

विभक्तियों से युक्त होने पर शब्दों के बहुवचन का रूप बनाने में लिंग के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

इसके कुछ सामान्य नियम निम्नलिखित है-

(1) अकारान्त, आकारान्त (संस्कृत-शब्दों को छोड़कर) तथा एकारान्त संज्ञाओं में अन्तिम 'अ', 'आ' या 'ए' के स्थान पर बहुवचन बनाने में 'ओं' कर दिया जाता है।

एकवचन..... बहुवचन

लडका..... लडकों

घर..... घरों

गधा..... गधों

घोड़ा..... घोड़ों

चोर..... . चोरों

(2) संस्कृत की आकारान्त तथा संस्कृत-हिन्दी की सभी उकारान्त, ऊकारान्त, अकारान्त, औकारान्त संज्ञाओं को बहुवचन का रूप देने के लिए अन्त में 'ओं' जोड़ना पड़ता है। उकारान्त शब्दों में 'ओं' जोड़ने के पूर्व 'ऊ' को 'उ' कर दिया जाता है।

एकवचन..... बहुवचन

लता..... लताओं

साधु..... साधुओं

वधू..... वधुओं

घर..... घरों

जौ..... जौओं

(3) सभी इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओं का बहुवचन बनाने के लिए अन्त में 'यों'जोड़ा जाता है।'इकारान्त' शब्दों में 'यों' जोड़ने के पहले 'ई' का इ' कर दिया जाता है।

AJAY KUMAR

एकवचन..... बहुवचन

मुनि..... मुनियों

गली ..... गलियों

नदी..... नदियों

साड़ी..... साड़ियों

श्रीमती..... श्रीमतियों

## वचन सम्बन्धी विशेष निर्देश

(1) 'प्रत्येक' तथा 'हरएक' का प्रयोग सदा एकवचन में होता है। जैसे- प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा;

हरएक कुआँ मीठे जल का नहीं होता।

(2) दूसरी भाषाओँ के तत्सम या तदभव शब्दों का प्रयोग हिन्दी व्याकरण के अनुसार होना चाहिए।

उदाहरणार्थ, अँगरेजी के 'फुट'(foot) का बहुवचन 'फीट' (feet) होता है किन्तु हिन्दी में इसका प्रयोग इस प्रकार होगा- दो फुट लम्बी दीवार है; न कि 'दो फीट लम्बी दीवार है'।

(3) प्राण, लोग, दर्शन, आँसू, ओठ, दाम, अक्षत इत्यादि शब्दों का प्रयोग हिन्दी में बहुवचन में होता है।

जैसे आपके ओठ खुले कि प्राण तृप्त हुए। आपलोग आये, आर्शीवाद के अक्षत बरसे, दर्शन हुए।

(4) द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे- उनके पास बहुत सोना है ; उनका बहुत-सा धन बरबाद हुआ; न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी। किन्तु, यदि द्रव्य के भिन्न-भिन्न प्रकारों का बोध हों, तो द्रव्यवाचक संज्ञा बहुवचन में प्रयुक्त होगी। जैसे- यहाँ बहुत तरह के लोहे मिलते है। चमेली, गुलाब, तिल इत्यादि के तेल अच्छे होते है।

.....

AJAY KUMAR

# अलंकार(Figure of speech)

जो किसी वस्तु को अलंकृत करे वह अलंकार कहलाता है।

दूसरे अर्थ में- काव्य अथवा भाषा को शोभा बनाने वाले मनोरंजक ढंग को अलंकार कहते है।

संकीर्ण अर्थ में- काव्यशरीर, अर्थात् भाषा को शब्दार्थ से सुसज्जित तथा सुन्दर बनानेवाले चमत्कारपूर्ण मनोरंजक ढंग को अलंकार कहते है।

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है 'आभूषण'। मानव समाज सौन्दर्योपासक है, उसकी इसी प्रवृत्ति ने अलंकारों को जन्म दिया है।

जिस प्रकार सुवर्ण आदि के आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार काव्य-अलंकारों से काव्य की।

संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में- 'काव्य शोभाकरान् धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते'- काव्य के शोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं।

रस की तरह अलंकार का भी ठीक-ठीक लक्षण बतलाना कठिन है। फिर भी, व्यापक और संकीर्ण अर्थों में इसकी परिभाषा निश्चित करने की चेष्टा की गयी है।

जिस प्रकार आभूषण स्वर्ण से बनते है, उसी प्रकार अलंकार भी सुवर्ण (सुन्दर वर्णों) से बनते है। काव्यशास्त्र के प्रारम्भिक काल में 'अलंकार' शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में हुआ है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन काल में इस शब्द का एक और अर्थ लिया जाता था। संस्कृत में, 'अलंकार' शब्द का व्यवहार साहित्य के शास्त्रपक्ष में हुआ है। पहले अलंकारशास्त्र कहने से रस, अलंकार, रीति, पिंगल इत्यादि समस्त काव्यांगों का बोध होता था। हिन्दी में संस्कृत के ही अनुसरण पर महाकवि केशवदास ने 'अलंकार' शब्द का प्रयोग अपनी 'कविप्रिया' में इसी व्यापक अर्थ में किया है।

## अलंकार के भेद

अलंकार के तीन भेद होते है:-

(1)शब्दालंकार

(2)अर्थालंकार

(3)उभयालंकार

AJAY KUMAR

(1)शब्दालंकार :- जिस अलंकार में शब्दों के प्रयोग के कारण कोई चमत्कार उत्पत्र हो जाता है वे 'शब्दालंकार' कहलाते है।

शब्दालंकार दो शब्द से मिलकर बना है। शब्द +अलंकार

शब्द के दो रूप है- ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टी होती है। इस अलंकार में वर्ण या शब्दों की लयात्मकता या संगीतात्मकता होती है, अर्थ का चमत्कार नहीं।

शब्दालंकार (i) कुछ वर्णगत, (ii) कुछ शब्दगत और (iii) कुछ वाक्यगत होते हैं। अनुप्रयास, यमक आदि अलंकार वर्णगत और शब्दगत है, तो लाटानुप्रयास वाक्यगत।

शब्दालंकार के प्रमुख भेद है - (i)अनुप्रास (ii)यमक (iii)श्लेष (iv) वक्रोक्ति आदि ।

(i)अनुप्रास अलंकार :- वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते है। आवृत्ति का अर्थ किसी वर्ण का एक से अधिक बार आना है।

अनुप्रास शब्द 'अनु' तथा 'प्रास' शब्दों के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है :- बार-बार तथा 'प्रास' का अर्थ है -वर्ण। जहाँ स्वर की समानता के बिना भी वर्णों की बार -बार आवृत्ति होती है ,वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है ।

इस अलंकार में एक ही वर्ण का बार -बार प्रयोग किया जाता है ।

जैसे -*जन रंजन मंजन दनुज मनुज रूप सुर भूप ।*

यहाँ पद में 'ज' वर्ण और 'न' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

जैसे- *मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्र बुलाए।*

यहाँ पहले पद में 'म' वर्ण की आवृत्ति और दूसरे में 'स' वर्ण की आवृत्ति हुई है। इस आवृत्ति से संगीतमयता आ गयी है।

<u>अनुप्रास के प्रकार</u>

अनुप्रास के कई प्रकार है- (क)छेकानुप्रास (ख) वृत्यनुप्रास (ग) लाटानुप्रास

<u>(क)छेकानुप्रास-</u> जहाँ स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो, वहाँ छेकानुप्रास होता है।

AJAY KUMAR

इसमें व्यंजनवर्णों का उसी क्रम में प्रयोग होता है। 'रस' और 'सर' में छेकानुप्रास नहीं है। 'सर'-'सर' में वर्णों की आवृत्ति उसी क्रम और स्वरूप में हुई है, अतएव यहाँ छेकानुप्रास है। महाकवि देव ने इसका एक सुन्दर उदाहरण इस प्रकार दिया है-

*रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै*

*साँसैं भरि आँसू भरि कहत दई दई।*

यहाँ 'रीझि रीझ', 'रहसि-रहसि', 'हँसि-हँसि' और 'दई-दई' में छेकानुप्रास है, क्योंकि व्यंजनवर्णों की आवृत्ति उसी क्रम और स्वरूप में हुई है।

दूसरा उदाहरण इस प्रकार है-

*बंदउँ गुरु पद पदुम परागा,*

*सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।*

यहाँ 'पद' और 'पदुम' में 'प' और 'द' की एकाकार आवृत्ति स्वरूपतः अर्थात् 'प' और 'प', 'द' और 'द' की आवृत्ति एक ही क्रम में, एक ही बार हुई है; क्योंकि 'पद' के 'प' के बाद 'द' की आवृत्ति 'पदुम' में भी 'प' के बाद 'द' के रूप में हुई है। 'छेक' का अर्थ चतुर है। चतुर व्यक्तियों को यह अलंकार विशेष प्रिय है।

(ख)वृत्यनुप्रास- वृत्यनुप्रास जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्यनुप्रास होता है। रसानुकूल वर्णों की योजना को वृत्ति कहते हैं।

उदाहरण इस प्रकार है-

(i) *सपने सुनहले मन भाये।*

यहाँ 'स' वर्ण की आवृत्ति एक बार हुई है।

(ii) *सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं।*

यहाँ 'स' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार हुई है।

छेकानुप्रास और वृत्यनुप्रास का अन्तर- छेकानुप्रास में अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूपतः और क्रमतः आवृत्ति होती है। इसके विपरीत, वृत्यनुप्रास में अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार केवल स्वरूपतः होती है, क्रमतः नहीं। यदि अनेक व्यंजनों की आवृत्ति स्वरूपतः और क्रमतः होती भी है, तो एक बार नहीं, अनेक बार भी हो सकती है। उदाहरण ऊपर दिये गये हैं।

AJAY KUMAR

(ग) लाटानुप्रास- जब एक शब्द या वाक्यखण्ड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो, पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो, तो वहाँ 'लाटानुप्रास' होता है।

यह यमक का ठीक उलटा है। इसमें मात्र शब्दों की आवृत्ति न होकर तात्पर्यमात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की आवृत्ति होती है।उदाहरण-

*तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु* - पदवी के पात्र समर्थ,

*तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु*- पदवी थी जिनके अर्थ।

इन दो पंक्तियो में शब्द प्रायः एक-से हैं और अर्थ भी एक ही हैं।

प्रथम पंक्ति के 'के पात्र समर्थ' का स्थान दूसरी पंक्ति में 'थी जिनके अर्थ' शब्दों ने ले लिया है। शेष शब्द ज्यों-के-त्यों हैं।

दोनों पंक्तियों में तेगबहादुर के चरित्र में गुरुपदवी की उपयुक्तता बतायी गयी है। यहाँ शब्दों की आवृत्ति के साथ-साथ अर्थ की भी आवृत्ति हुई है।

दूसरा उदाहरण इस प्रकार है-

*वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।*

इसमें 'मनुष्य' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। दोनों का अर्थ 'आदमी' है। पर तात्पर्य या अन्वय में भेद है। पहला मनुष्य कर्ता है और दूसरा सम्प्रदान।

(ii) यमक अलंकार :- जहाँ एक ही शब्द अधिक बार प्रयुक्त हो, लेकिन उसके अर्थ अलग अलग हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण-

*कनक कनक ते सौगुनी ,मादकता अधिकाय।*

*वा खाये बौराय नर ,वा पाये बौराय।।*

यहाँ कनक शब्द की दो बार आवृत्ति हुई है जिसमे एक कनक का अर्थ है - धतूरा और दूसरे का स्वर्ण है।

(iii)श्लेष अलंकार :- श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों के कथन को 'श्लेष' कहते है।

इनमें दो बातें आवश्यक है-(क ) एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हो, (ख )एक से अधिक अर्थ प्रकरण में अपेक्षित हों। उदाहरण-

*माया महाठगिनि हम जानी।*

*तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।*

यहाँ 'तिरगुन' शब्द में शब्द श्लेष की योजना हुई है। इसके दो अर्थ है- तीन गुण-सत्त्व, रजस्, तमस्। दूसरा अर्थ है- तीन धागोंवाली रस्सी।

ये दोनों अर्थ प्रकरण के अनुसार ठीक बैठते है, क्योंकि इनकी अर्थसंगति 'महाठगिनि माया' से बैठायी गयी है।

दूसरा उदाहरण-

*चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर।*

*को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।*

यहाँ 'वृषभानुजा' और 'हलधर' श्लिष्ट शब्द हैं, जिनसे बिना आवृत्ति के ही भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हैं। 'वृषभानुजा' से 'वृषभानु की बेटी' (राधा) और 'वृषभ की बहन' (गाय) का तथा 'हलधर के बीर' से कृष्ण (बलदेव के भाई) और साँड़ (बैल के भाई) का अर्थ निकलता है।

अर्थ और शब्द दोनों पक्षों पर 'श्लेष' के लागू होने के कारण आचार्यो में विवाद है कि इसे शब्दलंकार में रखा जाय या अर्थालंकार में।

(iv) वक्रोक्ति- किसी अन्य अभिप्राय से कहे हुए वाक्य का दूसरे व्यक्ति द्वारा श्लेष अथवा काकु-उक्ति से अन्य अर्थ कल्पित किया जाना।

जयदेव ने इसे अर्थालंकार में स्थान दिया है- यह श्लेष तथा काकु से वाच्यार्थ बदलने की कल्पना है। 'काकु' और 'श्लेष' शब्दशक्ति के ही अंग हैं। अतः इस अलंकार को अधिकतर आचार्यो ने शब्दालंकार में ही रखा है।

भामह ने वक्र शब्द और अर्थ की उक्ति को काम्य अलंकार मानकर और कुन्तक ने वक्रोक्ति को काव्य का जीवन मानकर इस अलंकार को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। 'शब्द' और 'अर्थ' दोनों में 'वक्रोक्ति होने के कारण 'श्लेष' की तरह यहाँ भी विवाद है कि यह शब्दालंकार में परिगणित हो या अर्थालंकार में।

रुद्रट ने इसे शब्दालंकार के रूप में स्वीकार कर इसके दो भेद किये है- (1) श्लेषवक्रोक्ति (2) काकुवक्रोक्ति

श्लेषवक्रोक्ति दो प्रकार के होते है- (i) भंगपद श्लेषवक्रोक्ति (ii) अभंगपद श्लेषवक्रोक्ति

(i) भंगपद श्लेषवक्रोक्ति का उदाहरण इस प्रकार है-

पश्न- *अयि गौरवशालिनी, मानिनि, आज*

*सुधास्मित क्यों बरसाती नहीं ?*

उत्तर- *निज कामिनी को प्रिय, गौ, अवशा,*

*अलिनी भी कभी कहि जाती कहीं ?*

यहाँ नायिका को नायक ने 'गौरवशालिनी' कहकर मनाना चाहा है। नायिका नायक से इतनी तंग और चिढी थी कि अपने प्रति इस 'गौरवशालिनी' सम्बोधन से चिढ़ गयी; क्योंकि नायक ने उसे एक नायिका का 'गौरव' देने के बजाय 'गौ' (सीधी-सादी गाय,जिसे जब चाहो चुमकारकर मतलब गाँठ लो), 'अवशा' (लाचार), 'अलिनी' (यों ही मँडरानेवाली मधुपी) समझकर लगातार तिरस्कृत किया था। नायिका ने नायक के प्रश्न का उत्तर न देकर प्रकारान्तर से वक्रोक्ति या टेढ़े ढंग की उक्ति से यह कहा, "हाँ, तुम तो मुझे 'गौरवशालिनी' ही समझते हो !" अर्थात, 'गौः+अवशा+अलिनी=गौरवशालिनी' । "जब यही समझते हो, तो तुम्हारा मुझे 'गौरवशालिनी' कहकर पुकारना मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखता"- नायिका के उत्तर में यही दूसरा अर्थ वक्रता से छिपा हुआ है, जिसे नायक को अवश्य समझना पड़ा होगा। कहा कुछ जाय और समझनेवाले उसका अर्थ कुछ ग्रहण करें- इस नाते यह वक्रोक्ति है। इस वक्रोक्ति को प्रकट करनेवाले पद 'गौरवशालिनी' में दो अर्थ (एक 'हे गौरवशालिनी' और दूसरा 'गौः, अवशा, अलिनी') श्लिष्ट होने के कारण यह श्लेषवक्रोक्ति है। और, इस 'गौरवशालिनी' पद को 'गौः+अवशा+अलिनी' में तोड़कर दूसरा श्लिष्ट अर्थ लेने के कारण यहाँ भंगपद श्लेषवक्रोक्ति अलंकार है।

(ii) अभंगपद श्लेषवक्रोक्ति का उदाहरण इस प्रकार है-

एक कबूतर देख हाथ में पूछा, कहाँ अपर है ?

उसने कहा, 'अपर' कैसा ?वह उड़ गया, सपर है।

यहाँ जहाँगीर ने नूरजहाँ से पूछा: एक ही कबूतर तुम्हारे पास है, अपर (दूसरा) कहाँ गया ! नूरजहाँ ने दूसरे कबूतर को भी उड़ाते हुए कहा: अपर (बे-पर) कैसा, वह तो इसी कबूतर की तरह सपर (पर वाला) था, सो उड़ गया।

अपने प्यारे कबूतर के उड़ जाने पर जहाँगीर की चिन्ता का मख़ौल नूरजहाँ ने उसके 'अपर' (दूसरे) कबूतर को 'अपर' (बे-पर) के बजाय 'सपर' (परवाला) सिद्ध कर वक्रोक्ति के द्वारा उड़ाया। यहाँ 'अपर' शब्द को बिना तोड़े ही 'दूसरा' और 'बेपरवाला' दो अर्थ लगने से अभंगश्लेष हुआ।

(2)काकुवक्रोक्ति- कण्ठध्वनि की विशेषता से अन्य अर्थ कल्पित हो जाना ही काकुवक्रोक्ति है। यहाँ अर्थपरिवर्तन मात्र कण्ठध्वनि के कारण होता है, शब्द के कारण नहीं। अतः यह अर्थालंकार है। किन्तु मम्मट ने इसे कथन-शौली के कारण शब्दालंकार माना है।

काकुवक्रोक्ति का उदाहरण है-

*लिखन बैठि जाकी सबिहि, गहि गहि गरब गरूर।*

*भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।*

यहाँ उच्चारण के ढंग अर्थात काकु के कारण 'भए न केते' (कितने न हुए) का अर्थ 'सभी हो गए' हो जाता है।

इस प्रकार वक्रोक्ति में चार बातें होनी आवश्यक हैं-

(क) वक्ता की उक्ति।

(ख) उक्ति का अभिप्रेत अर्थ।

(ग़) श्रोता द्वारा उसका अन्य अर्थ लगाया जाना।

(घ) श्रोता द्वारा लगाए अर्थ का प्रकट भी होना।

वक्रोक्ति और श्लेष में भेद- दोनों में अर्थचमत्कार दिखाया जाता है। श्लेष में चमत्कार का आधार एक शब्द के दो अर्थ है;

वक्रोक्ति में यह चमत्कार कथन के तोड़मरोड़ या उक्ति ध्वन्यर्थ द्वारा प्रकट होता है। मुख्य अन्तर इतना ही है।

(2) अर्थालंकार :- जिस अलंकार में अर्थ के प्रयोग करने से कोई चमत्कार उत्पत्र होता है वे अर्थालंकार कहलाते है।

दूसरे अर्थ में- अर्थ को चमत्कृत या अलंकृत करनेवाले अलंकार अर्थालंकार है।

जिस शब्द से जो अर्थालंकार सधता है, उस शब्द के स्थान पर दूसरा पर्याय रख देने पर भी वही अलंकार सधेगा, क्योंकि इस जाति के अलंकारों का सम्बन्ध शब्द से न होकर अर्थ से होता है। केशव (९६०० ई०) ने 'कविप्रिया' में दण्डी (७०० ई०)के आदर्श पर ३५ अर्थलंकार गिनाये हैं। जसवन्तसिंह (९६४३ ई०) ने 'भाषाभूषण' में ९०९अर्थलंकारों की चर्चा की है। दूल्ह (९७४३ ई०) के 'कविकुलकण्ठाभरण' जयदेव (९३ वीं शताब्दी) के 'चन्द्रालोक' और अप्पय दीक्षित (९७वीं शताब्दी) के 'कुवलयानन्द' में ९९५ अर्थलंकारों का विवेचन है।

AJAY KUMAR

## अर्थालंकार के भेद

इसके प्रमुख भेद है-(i)उपमा (ii)रूपक (iii)उत्प्रेक्षा (iv) अतिशयोक्ति (v) दृष्टान्त (vi)उपमेयोपमा (vii)प्रतिवस्तूपमा (viii)अर्थान्तरन्यास (ix)काव्यलिंग (x)उल्लेख (xi)विरोधाभास (xii) स्वभावोक्ति अलंकार

**(i)उपमा अलंकार :-** दो वस्तुओं में समानधर्म के प्रतिपादन को 'उपमा' कहते है।

उपमा का अर्थ है -समता, तुलना, या बराबरी। उपमा के लिए चार बातें आवश्यक है-

(क )उपमेय - जिसकी उपमा दी जाय,अर्थात जिसका वर्णन हो रहा हो; (ख)उपमान -जिससे उपमा दी जाय; (ग)समानतावाचक पद -जैसे -ज्यों, सम, सा, सी, तुल्य, नाई इत्यादि; (घ)समानधर्म -उपमेय और उपमान के समानधर्मको व्यक्त करनेवाला शब्द।

उदाहरणार्थ-

*नवल सुन्दर श्याम -शरीर की,*

*सजल नीरद -सी कल कान्ति थी।*

इस उदाहरण का विश्लेषण इस प्रकार होगा -

कान्ति -उपमेय;

नीरद -उपमान,

सी -समानतावाचक पद;

कल-समान धर्म।

**(ii) रूपक अलंकार :-** उपमेय पर उपमान का आरोप या उपमान और उपमेय का अभेद ही 'रूपक' है।

इसके लिए तीन बातों का होना आवश्यक है -(क)उपमेय को उपमान का रूप देना; (ख)वाचक पद का लोप; (ग)उपमेय का भी साथ -साथ वर्णन।

उदाहरणार्थ- *बीती विभावरी जाग री,*

*अम्बर -पनघट में डुबो रही तारा -घट उषा -नागरी।* - प्रसाद

AJAY KUMAR

यहाँ अम्बर, तारा और ऊषा (जो उपमेय है ) पर क्रमशः पनघट, घट और नागरी (जो उपमान है ) का आरोप हुआ है। वाचक पद नहीं आये है और उपमेय (प्रस्तुत)तथा उपमान (अप्रस्तुत) दोनों का साथ -साथ वर्णन हुआ है।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार :- उपमेय (प्रस्तुत) में कल्पित उपमान (अप्रस्तुत) की सम्भावना को 'उत्प्रेक्षा' कहते है।

उत्प्रेक्षा का अर्थ है, किसी वस्तु को सम्भावित रूप में देखना।

दूसरे अर्थ में- उपमेय में उपमान को प्रबल रूप में कल्पना की आँखों से देखने की प्रक्रिया को उत्प्रेक्षा कहते है। इसमें वाचक पदों का प्रयोग होता है।

सम्भावना सन्देह से कुछ ऊपर और निश्चय से कुछ निचे होती है। इसमें न तो पूरा सन्देह होता है और न पूरा निश्चय। उसमें कवि की कल्पना साधारण कोटि की न होकर विलक्षण होती है। अर्थ में चमत्कार लाने के लिए ऐसा किया जाता है। इसमें वाचक पदों का प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ- *फूले कास सकल महि छाई।*

*जनु बरसा रितु प्रकट बुढाई।।*

यहाँ वर्षाऋतु के बाद शरद् के आगमन का वर्णन हुआ है। शरद् में कास के खिले हुए फूल ऐसे मालूम होते है जैसे वर्षाऋतु का बुढापा प्रकट हो गया हो। यहाँ 'कास के फूल' (उपमेय) में 'वर्षाऋतु के बुढापे' (उपमान ) की सम्भावित कल्पना की गयी है। इस कल्पना से अर्थ का चमत्कार प्रकट होता है। वस्तुतः अन्त में वर्षाऋतु की गति और शक्ति बुढापे की तरह शिथिल पड़ जाती है।

उपमा में जहाँ 'सा' 'तरह' आदि वाचक पद रहते है, वहाँ उत्प्रेक्षा में 'मानों' 'जानो' आदि शब्दों द्वारा सम्भावना पर जोर दिया जाता है। जैसे- 'आकाश मानो अंजन बरसा रहा है' (उत्प्रेक्षा) 'अंजन -सा अँधेरा' (उपमा) से अधिक जोरदार है।

(iv)अतिशयोक्ति अलंकार :- जहाँ किसी का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाये कि सीमा या मर्यादा का उल्लंघन हो जाय, वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।

दूसरे शब्दों में- उपमेय को उपमान जहाँ बिलकुल ग्रस ले, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

अतिशयोक्ति का अर्थ होता है, उक्ति में अतिशयता का समावेश। यहाँ उपमेय और उपमान का समान कथन न होकर सिर्फ उपमान का वर्णन होता है।

AJAY KUMAR

उदाहरण -

*बाँधा था विधु को किसने, इन काली जंजीरों से,*

*मणिवाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।*

यहाँ मोतियों से भरी हुई प्रिया की माँग का कवि ने वर्णन किया है। विधु या चन्द्र-से मुख का, काली जंजीरों से केश और मणिवाले फणियों से मोती भरी माँग का बोध होता है।

(v)दृष्टान्त अलंकार :- जहाँ उपमेय और उपमान तथा उनके साधारण धर्मों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव हो, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है।

जैसे- *सुख-दुख के मधुर मिलन से यह जीवन हो परिपूरन।*

*फिर धन में ओझल हो शशि, फिर शशि में ओझल हो धन।*

यहाँ सुख-दुख और शशि तथा धन में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव है

(vi)उपमेयोपमा अलंकार :- उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय बनाने की प्रक्रिया को 'उपमेयोपमा' कहते है।

इसमें दो तरह की भिन्न उपमाएँ होती है।

उदाहरणार्थ- *राम के समान शम्भु सम राम है।*

यहाँ दो उपमाएँ एक साथ आयी है, पर दोनों उपमाओं के उपमेय और उपमान क्रमशः उपमान और उपमेय में परिवर्तित हो गये है।

(vii)प्रतिवस्तूपमा अलंकार :- जहाँ उपमेय और उपमान के पृथक-पृथक वाक्यों में एक ही समानधर्म दो भिन्न-भिन्न शब्दों द्वारा कहा जाय, वहाँ 'प्रतिवस्तूपमा अलंकार' होता है।

उदाहरणार्थ- *सिंहसुता क्या कभी स्यार से प्यार करेगी ?*

*क्या परनर का हाथ कुलस्त्री कभी धरेगी ?*

यहाँ दोनों वाक्यों में पूर्वार्द्ध (उपमानवाक्य) का धर्म 'प्यार करना' उत्तरार्द्ध (उपमेय-वाक्य) में 'हाथ धरना' के रूप में कथित है। वस्तुतः दोनों का अर्थ एक ही है। एक ही समानधर्म सिर्फ शब्दभेद से दो बार कहा गया है।

AJAY KUMAR

प्रतिवस्तूपमा और दृष्टान्त में भेद- मुख्य भेद इस प्रकार है-

(क) प्रतिवस्तूपमा में समान धर्म एक ही रहता है, जिसे दो भिन्न शब्दों के प्रयोग से कहा जाता है; किन्तु दृष्टान्त में समानधर्म दो होते है, जो दो शब्दों के प्रयोग से कहे जाते है।

(ख) प्रतिवस्तूपमा के दोनों वाक्यों में एक ही बात रहती है, जिसे दो वाक्यों द्वारा कहा जाता है। दृष्टान्त में एक वाक्य का धर्म दूसरे में एक समान नहीं होता।

इन दो अलंकारों में इतनी समानता है कि पण्डितराज जगन्नाथ ने इन्हें एक ही अलंकार का भेद माना है।

(viii)अर्थान्तरन्यास अलंकार :- जब किसी सामान्य कथन से विशेष कथन का अथवा विशेष कथन से सामान्य कथन का समर्थन किया जाय, तो 'अर्थान्तरन्यास अलंकार' होता है।

उदाहरणार्थ- *बड़े न हूजे गुनन बिनु, बिरद बड़ाई पाय।*

*कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाय।*

यहाँ सामान्य कथन का समर्थन विशेष बात से किया गया है। पूर्वार्द्ध में सामान्य बात कही गयी है और उसका समर्थन विशेष बात कहकर किया गया है।

(ix)काव्यलिंग अलंकार :- किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात को 'काव्यलिंग अलंकार' कहते है।

यहाँ किसी बात के समर्थन में कोई-न कोई युक्ति या कारण अवश्य दिया जाता है। बिना ऐसा किये वाक्य की बातें अधूरी रह जायेंगी।

एक उदाहरण - *कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।*

*उहि खाए बौरात नर, इहि पाए बौराय।*

धतूरा खाने से नशा होता है, पर सुवर्ण पाने से ही नशा होता है। यह एक अजीब बात है।

यहाँ इसी बात का समर्थन किया गया है कि सुवर्ण में धतूरे से अधिक मादकता है। दोहे के उत्तरार्द्ध में इस कथन की युक्ति पुष्टि हुई है। धतूरा खाने से नशा चढ़ता है, किन्तु सुवर्ण पाने से ही मद की वृद्धि होती है, यह कारण देकर पूर्वार्द्ध की समर्थनीय बात की पुष्टि की गयी है।

AJAY KUMAR

(x)उल्लेख अलंकार :- जहाँ एक वस्तु का वर्णन अनेक प्रकार से किया जाये, वहाँ 'उल्लेख अलंकार' होता है।

जैसे- *तू रूप है किरण में, सौन्दर्य है सुमन में,*

*तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।*

(xi)विरोधाभास अलंकार :- जहाँ विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास दिया जाय, वहाँ 'विरोधाभास अलंकार' होता है।

जैसे- *बैन सुन्या जबतें मधुर, तबतें सुनत न बैन।*

यहाँ 'बैन सुन्यों' और 'सुनत न बैन' में विरोध दिखाई पड़ता है। सच तो यह है कि दोनों में वास्तविक विरोध नहीं है। यह विरोध तो प्रेम की तन्मयता का सूचक है।

(xii) स्वभावोक्ति अलंकार :- किसी वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को ' स्वभावोक्ति अलंकार' कहते है। यहाँ सादगी में चमत्कार रहता हैं।

उदाहरण- *चितवनि भोरे भाय की, गोरे मुख मुसकानि।*

*लगनि लटकि आली गरे, चित खटकति नित आनि।।*

नायक नायिका की सखी से कहता है कि उस नायिका की वह भोलेपन की चितवन, वह गोरे मुख की हँसी और वह लटक-लटककर सखी के गले लिपटना- ये चेष्टाएँ नित्य मेरे चित्त में खटका करती हैं। यहाँ नायिका के जिन आंगिक व्यापारों का चित्रण हुआ है, वे सभी स्वाभाविक हैं। कहीं भी अतिशयोक्ति से काम नहीं लिया गया। इसमें वस्तु, दृश्य अथवा व्यक्ति की अवस्थाओं या स्थितियों का यथार्थ अंकन हुआ है।

(3)उभयालंकार :- जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनों को चमत्कृत करते है, वे 'उभयालंकार' कहलाते है।

उदाहरण - *'कजरारी अंखियन में कजरारी न लखाय।'*

इस अलंकार में शब्द और अर्थ दोनों है।

.....

AJAY KUMAR

# विलोम (Antonyms)

एक-दूसरे के विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले शब्द विलोम कहलाते है।

सरल शब्दों में- जो शब्द किसी दूसरे शब्द का उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहते है। जैसे- अपेक्षा- नगद, आय- व्यय, आजादी-गुलाम, नवीन- प्राचीन शब्द एक दूसरे के उलटे अर्थ वाले शब्द है। अतः इन्हें 'विलोम शब्द' कहते हैं।

अत: विलोम का अर्थ है- उल्टा या विरोधी अर्थ देने वाला।

विलोम शब्द अपने सामनेवाले शब्द के सर्वदा विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं।

कुछ विलोम शब्दों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे है-

(अ, आ)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| अमृत | विष | अथ | इति |
| अन्धकार | प्रकाश | अल्पायु | दीर्घायु |
| अनुराग | विराग | आदि | अंत |
| आगामी | गत | आग्रह | दुराग्रह |
| अनुज | अग्रज | आकर्षण | विकर्षण |
| अधिक | न्यून | आदान | प्रदान |
| आलस्य | स्फूर्ति | अर्थ | अनर्थ |
| अपेक्षा | नगद | अतिवृष्टि | अनावृष्टि |
| आदर्श | यथार्थ | आय | व्यय |
| आहार | निराहार | आविर्भाव | तिरोभाव |
| आमिष | निरामिष | अभिज्ञ | अनभिज्ञ |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| आजादी | गुलामी | अनुकूल | प्रतिकूल |
| आर्द्र | शुष्क | अल्प | अधिक |
| अनिवार्य | वैकल्पिक | अमृत | विष |
| अगम | सुगम | अभिमान | नम्रता |
| आकाश | पाताल | आशा | निराशा |
| अनुग्रह | विग्रह | अपमान | सम्मान |
| आश्रित | निराश्रित | अनुज | अग्रज |
| अरुचि | रुचि | आदि | अंत |
| आदान | प्रदान | आरंभ | अंत |
| आय | व्यय | अर्वाचीन | प्राचीन |
| अवनति | उन्नति | आदर | अनादर |
| आयात | निर्यात | अनुपस्थित | उपस्थित |
| आलस्य | स्फूर्ति | अतिवृष्टि | अनावृष्टि |
| आस्तिक | नास्तिक | आलस्य | स्फूर्ति |
| आदर्श | यथार्थ | अजीब | अनोखा |
| अक्सर | कभी कभार | अनुमति देना | मना करना |
| अमावस्या | पूर्णिमा | अस्त | उदय |
| अनुलोम | प्रतिलोम | अनुरक्ति | विरक्ति |
| अमर | मर्त्य | अग्नि | जल |
| अल्पसंख्यक | बहुसंख्यक | | |
| आधुनिक | प्राचीन | आगामी | विगत |
| आचार | अनाचार | आत्मा | पपरमात्मा |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| आदान | प्रदान | आयात | निर्यात |
| आकाश | पाताल | आग्रह | अनाग्रह |
| आकीर्ण | विकीर्ण | आधार | आधेय |
| आसक्त | अनासक्त | आभ्यन्तर | बाह्य |
| अतिथि | आतिथेय | आदत्त | प्रदत्त |
| आना | जाना | आहान | विसर्जन |
| अदोष | सदोष | अनाथ | सनाथ |
| अनुरक्ति | विरक्ति | अराग | सुराग |
| अस्वस्थ | स्वस्थ | अगला | पिछला |
| अवनि | अम्बर | अनाहूत | आहूत |
| अतुकान्त | तुकान्त | अत्यधिक | अत्यल्प |
| अधः | ऊपरि | अधुनातन | पुरातन |
| अनुग्रह | विग्रह | अर्पित | गृहीत |
| अर्जन | वर्जन | अपेक्षा | उपेक्षा |
| अधम | उत्तम | अंगीकार | अस्वीकार |
| अज्ञ | विज्ञ | अघ | अनघ |
| अकाल | सुकाल | अर्थी | प्रत्यर्थी |
| अनैक्य | ऐक्य | अंत | अनंत |
| अचर | चर | अर्वाचीन | प्राचीन |
| आवश्यक | अनावश्यक | आधुनिक | प्राचीन |
| आदि | अनादि | आगत | अनागत |
| आश्रित | निराश्रित | आरोह | अवरोह |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| आवृत | अनावृत | आस्था | अनास्था |
| आकुंचन | प्रसारण | अवर | प्रवर |
| अकाम | सुकाम | अन्तरंग | बहिरंग |
| अर्पण | ग्रहण | अवनति | उन्नति |
| अति | अल्प | अनेकता | एकता |
| अनित्य | नित्य | अतल | वितल |
| अधिकारी | अनाधिकारी | अंतर्मुखी | वहिर्मुखी |
| अश्रु | हास | अभिज्ञ | अनभिज्ञ |
| अग्र | पश्च | अपमान | सम्मान |
| अथ | इति | अन्तर्द्वन्द्व | बहिर्द्वन्द्व |
| अपना | पराया | अनेक | एक |
| अवनत | उन्नत | अजेय | जेय |
| अदेय | देय | आशा | निराशा |
| आग्रही | दुराग्रही | आतुर | अनातुर |
| आकर्षण | विकर्षण | आधार | निराधार |
| आच्छादित | अनाच्छादित | आभ्यन्तर | बाह्य |
| आगम | लोप | आगामी | विगत |
| आदिष्ट | निषिद्ध | आलोक | अंधकार |

(इ, ई)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| इच्छा | अनिच्छा | इष्ट | अनिष्ट |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| ईद | मुहर्रम | ईश्वर | जीव |
| इच्छित | अनिच्छित | इहलोक | परलोक |
| इति | अथ | इसका | उसका |
| ईषत | अलम | इकट्ठा | अलग |
| ईश | अनीश | | |

(उ, ऊ,)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| उदात्त | अनुदात्त | उधार | नकद |
| उन्नति | अवनति | उदघाटन | समापन |
| उन्मीलन | निमीलन | उत्तरायण | दक्षिणायन |
| उर्ध्व | निम्न | उऋण | ऋण |
| उन्मुख | विमुख | उद्यम | निरुद्यम |
| उपस्थित | अनुपस्थित | उर्ध्व | अधो |
| ऊपर | नीचे | उत्तीर्ण | अनुत्तीर्ण |
| उपचार | अपचार | उपमेय | अनुपमेय |
| उपमा | अनुपमा | उपाय | निरुपाय |
| उपयोग | दुरूपयोग | उत्तम | अधम |
| उग्र | सौम्य | उपसर्ग | प्रत्यय |
| उर्ध्वगामी | अधोगामी | ऊँच | नीच |
| उपकार | अपकार | उदार | अनुदार |
| उदय | अस्त | उत्तीर्ण | अनुत्तीर्ण |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| उधार | नकद | उत्थान | पतन |
| उत्कर्ष | अपकर्ष | उत्तर | दक्षिण |
| उद्यमी | आलसी | उर्वर | ऊसर |
| उत्तम | अधम | उपसर्ग | प्रत्यय |
| उदार | कृपण | उत्कृष्ट | निकृष्ट |
| उपयोग | दुरूपयोग | उत्कर्ष | अपकर्ष |
| उत्साह | निरुसाह | उद्यमी | निरुद्यम |
| उपयुक्त | अनुपयुक्त | उच्च | निम्न |
| उद्धत | विनीत | उदयाचल | उस्ताचल |
| उपभुक्त | अनुपभुक्त | उधार | नकद |

( ए, ऐ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| एड़ी | चोटी | ऐतिहासिक | अनैतिहासिक |
| एकता | अनेकता | एकत्र | विकर्ण |
| एक | अनेक | ऐसा | वैसा |
| एकल | बहुल | ऐहिक | पारलौकिक |
| ऐश्वर्य | अनैश्वर्य | एकाग्र | चंचल |
| ऐक्य | अनैक्य | | |

( ओ, औ )

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| ओजस्वी | निस्तेज |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| औपचारिक | अनौपचारिक |
| औचित्य | अनौचित्य |
| औपन्यासिक | अनौपन्यासिक |

(क)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| कल | आज | क्रम | व्यक्तिक्रम |
| कनीय | वरीय | कार्य | अकार्य |
| कठिन | सरल | क्रूर | अक्रूर |
| कुकृति | सुकृत्य | कलुष | निष्कलुष |
| कुख्यात | विख्यात | कनिष्ठ | ज्येष्ठ |
| कपूत | सपूत | कृष्ण | शुक्ल |
| कुसुम | वज्र | कलंक | निष्कलंक |
| कदाचार | सदाचार | कर्कश | सुशील |
| कसूरवार | बेकसूर | कटु | मधुर |
| क्रिया | प्रतिक्रिया | कृतज्ञ | कृतघ्न |
| कड़वा | मीठा | क्रुद्ध | शान्त |
| क्रय | विक्रय | कर्म | निष्कर्म |
| कीर्ति | अपकीर्ति | कुरूप | सुरूप |
| करुण | निष्ठुर | कायर | निडर |
| क्रूर | अक्रूर | कृत्रिम | प्रकृत |
| कर्मण्य | अकर्मण्य | कोप | कृपा |
| कठोर | कोमल | कृष्ण | शुक्ल |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| कनिष्ठ | ज्येष्ठ | कपटी | निष्कपट |
| कुटिल | सरल | क्रोध | क्षमा |
| कृपण | दाता | कर्मठ | अकर्ममण्य |

( ख )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| खिलना | मुरझाना | खुशी | दुख |
| खेद | प्रसन्नता | ख्यात | कुख्यात |
| खगोल | भूगोल | खुला | बन्द |
| खंडन | मंडन | खल | सज्जन |
| खाद्य | अखाद्य | खीझना | रीझना |
| खरा | खोटा | | |

( ग )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| गोचर | अगोचर | गमन | आगमन |
| गद्य | पद्य | ग्राम्य | शिष्ट |
| गम्भीर | वाचाल | गृहीत | त्यक्त |
| गणतन्त्र | राजतन्त्र | गृही | त्यागी |
| गेय | अगेय | गर्मी | सर्दी |
| गीला | सूखा | गहरा | छिछला |
| गुण | दोष | गरीब | अमीर |
| गुप्त | प्रकट | गुरु | शिष्य |
| ग्रस्त | मुक्त | ग्राह्य | त्याज्य |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| गगन | पृथ्वी | गरल | सुधा |
| गृहस्थ | संन्यासी | गत | आगत |
| गुण | दोष | गमन | आगमन |

( घ )

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| घर | बाहर |
| घृणा | प्रेम |
| घात | प्रतिघात |
| घरेलू | बाहरी |
| घटना | बढ़ना |
| घन | तरल |

( च, छ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| चर | अचर | चाह | अनचाह |
| चोर | साधु | चिन्मय | जड़ |
| चल | अचल | चीर | साधु |
| चिरन्तन | नश्वर | चेतन | अचेतन |
| चढाव | उतार | चंचल | स्थिर |
| चतुर | मूढ | चिर | अचिर |
| छाँह | धूप | छली | निश्छल |
| छूत | अछूत | | |

(ज, झ )

AJAY KUMAR

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| जीवन | मरण | जड़ | चेतन |
| जंगम | स्थावर | जटिल | सरस |
| जय | पराजय | जन्म | मृत्यु |
| ज्येष्ठ | कनिष्ठ | जागरण | निद्रा |
| ज्योति | तम | जल | स्थल |
| जीवित | मृत | जातीय | विजातीय |
| ज्वार | भाटा | जल्द | देर |
| ज्योतिर्मय | तमोमय | जागृति | सुषुप्ति |
| जोड़ | घटाव | जेय | अजेय |
| जीत | हार | जवानी | बुढापा |
| जाग्रत | सुषुप्त | जाड़ा | गर्मी |
| जंगम | स्थावर | जाति | कुजाति |
| झूठ | सच | झोपड़ी | महल |

( त, थ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| तुच्छ | महान | ताप | शीत |
| तम | आलोक | तीव्र | मन्द |
| तुच्छ | महान् | तिमिर | प्रकाश |
| तामसिक | सात्त्विक | तुकान्त | अतुकान्त |
| तरल | ठोस | ताना | भरनी |
| तारीफ | शिकायत | तरुण | वृद्ध |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| तृषा | तृप्ति | तृष्णा | वितृष्णा |
| तिक्त | मधुर | तीक्ष्ण | कुंठित |
| त्याज्य | ग्राह्य | तुल | अतुल |
| तृप्त | अतृप्त | थलचर | जलचर |
| थोड़ा | बहुत | थोक | फुटकर |

(द)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| दिवा | रात्रि | देय | अदेय |
| दीर्घकाय | कृशकाय | दूषित | स्वच्छ |
| दुर्बल | सबल | दक्षिण | वाम |
| दाता | याचक | दिन | रात |
| देव | दानव | दुराचारी | सदाचारी |
| दुष्ट | सज्जन | दास | स्वामी |
| दोषी | निर्दोषी | दानी | कंजूस |
| दुरुप्रयोग | सदुप्रयोग | दुर्जन | सज्जन |
| दयालु | निर्दय | दुर्दान्त | शांत |
| दानव | देव | दुर्गन्ध | सुगन्ध |
| दिन | रात | दृढ | विचलित |
| दोष | गुण | दुराशय | सदाशय |
| दृश्य | अदृश्य | दुःशील | सुशील |

(ध)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| धनी | निर्धन | ध्वंस | निर्माण |
| धर्म | अधर्म | धीर | अधीर |
| धूप | छाँव | धनी | निर्धन |
| धरा | गगन | धृष्ट | विनीत |

(न)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| नूतन | पुरातन | नकली | असली |
| निर्माण | विनाश | निकट | दूर |
| निरक्षर | साक्षर | न्यून | अधिक |
| निन्दा | स्तुति | नागरिक | ग्रामीण |
| निर्मल | मलिन | निरामिष | सामिष |
| निर्लज्ज | सलज्ज | निर्दोष | सदोष |
| नगर | ग्राम | निर्दय | सदय |
| निष्काम | सकाम | निन्द्य | वन्द्य |
| नख | शिख | निषिद्ध | विहित |
| निद्रा | जागरण | निराकार | साकार |
| निश्छल | छली | नमक हराम | नमक हलाल |
| निषेध | विधि | निश्चेष्ट | सचेष्ट |
| नर | नारी | नैसर्गिक | कृत्रिम |
| नगद | उधार | नीरस | सरस |
| निर्गुण | सगुन | निर्जीव | सजीव |
| न्याय | अन्याय | नाम | अनाम |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| निरर्थक | सार्थक | नेक | बद |
| नैतिक | अनैतिक | निराशा | आशा |
| नया | पुराना | नित्य | अनित्य |
| नश्वर | शाश्वत | निर्दोष | सदोष |
| निन्दा | स्तुति | निरक्षर | साक्षर |
| निडर | कायर | नरक | स्वर्ग |
| निर्धन | धनी | नकल | असल |
| नास्तिक | आस्तिक | नकरात्मक | सकरात्मक |
| नेकी | बदी | | |

( प, फ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| पतिव्रता | कुलटा | पाप | पुण्य |
| प्रलय | सृष्टि | पवित्र | अपवित्र |
| प्रेम | घृणा | प्रश्न | उत्तर |
| पूर्ण | अपूर्ण | परतंत्र | स्वतंत्र |
| प्रत्यक्ष | परोक्ष | पूर्व | अपूर्व |
| प्रात | साय | प्रकाश | अंधकार |
| पण्डित | मुर्ख | पक्ष | विपक्ष |
| प्रमुख | सामान्य | प्रारम्भिक | अन्तिम |
| प्रशंसा | निन्दा | परार्थ | स्वार्थ |
| पुरस्कार | दण्ड | पूर्ववर्ती | परवर्ती |
| परमार्थ | स्वार्थ | पुरुष | कोमल |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रधान | गौण | प्रवृत्ति | निवृत्ति |
| प्राचीन | नवीन | प्राकृतिक | कृत्रिम |
| पुष्ट | अपुष्ट | परिश्रम | विश्राम |
| पूर्णता | अपूर्णता | प्रयोग | अप्रयोग |
| पठित | अपठित | पाश्चात्य | पौर्वात्य |
| प्रसाद | विषाद | पुण्य | पाप |
| परमार्थ | स्वार्थ | पात्र | कुपात्र |
| पतन | उत्थान | पराया | अपना |
| प्रज्ञ | मूढ | प्रशंसा | निंदा |
| पानी | आग | पुरातन | नवीन |
| पूर्ववत | नूतनवत | परार्थ | स्वार्थ |
| प्रजा | राजा | पुरुष | स्त्री |
| पराजय | जय | पता | खोज |
| पवित्र | अपवित्र | प्रख्यात | अख्यात |
| प्रतिकूल | अनुकूल | प्रलय | सृष्टि |
| प्रकट | गुप्त | पालक | संहारक |
| पूर्व | उत्तर | पूर्णिमा | अमावस्या |
| पूर्ण | अपूर्ण | परकीय | स्वकीय |
| पतनोन्मुख | विकासोन्मुख | प्रमुख | गौण |
| प्राची | प्रतीची | फूट | मेल |
| फायदा | नुकसान | फल | निष्फल |
| फूलना | मुरझाना | | |

AJAY KUMAR

( ब, भ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| बाढ़ | सूखा | बुराई | भलाई |
| बन्धन | मुक्ति | बर्बर | सभ्य |
| बाह्य | अभ्यन्तर | बहिरंग | अन्तरंग |
| बलवान् | बलहीन | बढ़िया | घटिया |
| बैर | प्रीति | बद | नेक |
| बद्ध | मुक्त | बाढ़ग्रस्त | सूखाग्रस्त |
| बुरा | अच्छा | भूत | भविष्य |
| भोगी | योगी | भौतिक | आध्यात्मिक |
| भद्र | अभद्र | भाव | अभाव |
| भय | निर्भय | भूगोल | खगोल |
| भूलोक | द्युलोक | भेद | अभेद |
| भोग्य | अभोग्य | भला | बुरा |
| भिखारी | दाता | भारी | हल्का |

(म)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| मानवता | दानवता | मृदुल | कठोर |
| मानव | दानव | मुख | पृष्ठ |
| मिलन | विरह | मृत | जीवित |
| मुनाफा | नुकसान | महात्मा | दुरात्मा |
| मान | अपमान | मित्र | शत्रु |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| मधुर | कटु | मिथ्या | सत्य |
| मौखिक | लिखित | मोक्ष | बंधन |
| मंगल | अमंगल | मितव्यय | अपव्यय |
| मूक | वाचाल | मसृण | अमानवीय |
| मीठा | कड़ुवा | मृदुल | रुक्ष |
| मालिक | नौकर | मलिन | निर्मल |
| मनुज | दनुज | मर्त्य | अमर |
| माता | पिता | मानक | अमानक |
| मूक | वाचाल | मरण | जीवन |
| मेहनती | आलसी | | |

(य, र, ल)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| यश | अपयश | योग | वियोग |
| योगी | भोगी | यथार्थ | कल्पित |
| राजतन्त्र | जनतन्त्र | रत | विरत |
| रागी | विरागी | रचना | ध्वंस |
| रक्षक | भक्षक | राजा | रंक |
| राग | द्वेष | रूपवान् | कुरूप |
| रिक्त | पूर्ण | रात्रि | दिवस |
| रात | दिन | राम | रावण |
| रंगीन | बेरंग | रुग्ण | स्वस्थ |
| लघु | गुरु | लौकिक | अलौकिक |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| लिप्त | अलिप्त | लुप्त | व्यक्त |
| लायक | नालायक | लाभ | हानि |
| लिखित | अलिखित | लेन | देन |
| लौह | स्वर्ण | | |

(व)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| विधवा | सधवा | विजय | पराजय |
| वसंत | पतझर | विरोध | समर्थन |
| विशुद्ध | दूषित | विषम | सम |
| विद्वान | मूर्ख | विवाद | निर्विवाद |
| विशिष्ट | साधारण | विस्तृत | संक्षिप्त |
| विशेष | सामान्य | बहिष्कार | स्वीकार |
| वृद्धि | ह्रास | विमुख | सम्मुख |
| वैतनिक | अवैतनिक | विशालकाय | क्षीणकाय |
| वीर | कायर | वृहत | लघु |
| व्यस्त | अव्यस्त | व्यवहारिक | अव्यावहारिक |
| विपत्ति | सम्पत्ति | वृष्टि | अनावृष्टि |
| वक्र | सरल | विशिष्ट | सामान्य |
| वियोग | मिलन | विधि | निषेध |
| वरदान | अभिशाप | विपन्न | सम्पन्न |
| विस्तार | संक्षेप | वृद्ध | तरुण |
| वादी | प्रतिवादी | विकास | ह्रास |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| विरह | मिलन | विष | अमृत |
| विरत | निरत | विकीर्ण | संकीर्ण |
| वैमनस्य | सौमनस्य | व्यस्त | अकर्मण्य |
| विक्रय | क्रय | विधवा | सधवा |
| व्यास | समास | विश्लेषण | संश्लेषण |
| विसर्जन | अहान | वैतनिक | अवैतनिक |
| विजय | पराजय | वन | मरु |
| विश्वास | अविश्वास | व्यर्थ | अव्यर्थ |
| विनीत | उद्धत | विपद | सम्पद |
| विशिष्ठ | साधारण | व्यय | आय |
| विस्तृत | संक्षिप्त | विख्यात | कुख्यात |
| विषाद | आह्द | वन्य | पालित |
| विकर्ष | आकर्ष | वियोग | संयोग |
| विशेष | सामान्य | वक्र | ऋजु |
| विनाश | निर्माण | विशालकाय | लघुकाय |
| विसर्जन | सर्जन | | |

(व)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| विधवा | सधवा | विजय | पराजय |
| वसंत | पतझर | विरोध | समर्थन |
| विशुद्ध | दूषित | विषम | सम |
| विद्वान | मूर्ख | विवाद | निर्विवाद |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| विशिष्ट | साधारण | विस्तृत | संक्षिप्त |
| विशेष | सामान्य | बहिष्कार | स्वीकार |
| वृद्धि | ह्रास | विमुख | सम्मुख |
| वैतनिक | अवैतनिक | विशालकाय | क्षीणकाय |
| वीर | कायर | वृहत | लघु |
| व्यस्त | अव्यस्त | व्यवहारिक | अव्यावहारिक |
| विपत्ति | सम्पत्ति | वृष्टि | अनावृष्टि |
| वक्र | सरल | विशिष्ट | सामान्य |
| वियोग | मिलन | विधि | निषेध |
| वरदान | अभिशाप | विपन्न | सम्पन्न |
| विस्तार | संक्षेप | वृद्ध | तरुण |
| वादी | प्रतिवादी | विकास | ह्रास |
| विरह | मिलन | विष | अमृत |
| विरत | निरत | विकीर्ण | संकीर्ण |
| वैमनस्य | सौमनस्य | व्यस्त | अकर्मण्य |
| विक्रय | क्रय | विधवा | सधवा |
| व्यास | समास | विश्लेषण | संश्लेषण |
| विसर्जन | अहान | विसर्जन | सर्जन |
| विजय | पराजय | वन | मरु |
| विश्वास | अविश्वास | व्यर्थ | अव्यर्थ |
| विनीत | उद्धत | विपद | सम्पद |
| विशिष्ठ | साधारण | व्यय | आय |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| विस्तृत | संक्षिप्त | विख्यात | कुख्यात |
| विषाद | आह्लद | वन्य | पालित |
| विकर्ष | आकर्ष | वियोग | संयोग |
| विशेष | सामान्य | वक्र | ऋजु |
| विनाश | निर्माण | | |

(स)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| सौभाग्य | दुर्भाग्य | साक्षर | निरक्षर |
| साधु | असाधु | सुजन | दुर्जन |
| सुपुत्र | कुपुत्र | सुमति | कुमति |
| सरस | नीरस | सच | झूठ |
| साकार | निराकार | सजीव | निर्जीव |
| सुर | असुर | संक्षेप | विस्तार |
| सुगंध | दुर्गन्ध | सगुण | निर्गुण |
| सक्रिय | निष्क्रय | सफल | असफल |
| सज्जन | दुर्जन | संतोष | असंतोष |
| सावधान | असावधान | सबल | निर्बल |
| संधि | विच्छेद | स्वस्थ | अस्वस्थ |
| सुख | दुःख | सरल | कठिन |
| सुन्दर | असुंदर | स्वदेश | विदेश |
| शिक्षित | अशिक्षित | संजीव | निर्जीव |
| सदाचार | दुराचार | सम | विषम |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| सफल | विफल | सजल | निर्जल |
| स्वजाति | विजाति | सम्मुख | विमुख |
| सार्थक | निरर्थक | सकर्म | निष्कर्म |
| सुकर्म | कुकर्म | सगुण | निर्गुण |
| सबल | दुर्बल | सनाथ | अनाथ |
| सहयोगी | प्रतियोगी | स्वतन्त्रा | परतन्त्रा |
| संयोग | वियोग | सम्मान | अपमान |
| सकाम | निष्काम | साकार | निराकार |
| सुलभ | दुर्लभ | सुपथ | कुपथ |
| स्तुति | निन्द | स्मरण | विस्मरण |
| सशंक | निश्शंक | सन्तोष | असन्तोष |
| सुधा | गर्ल | संकल्प | विकल्प |
| संन्यासी | गृहस्थ | स्वधर्म | विधर्म |
| समष्टि | व्यष्टि | संघटन | विघटन |
| समूल | निर्मल | सत्कर्म | दुष्कर्म |
| सुमति | कुमति | संकीर्णि | विस्तीर्ण |
| सदाशय | दुराशय | समास | व्यास |
| स्वल्पायु | चिरायु | सुसंसगति | कुसंगति |
| सुपरिणाम | दुष्परिणाम | सखा | शत्रु |
| सौम्य | असौम्य | सुगम | दुर्गम |
| सुशील | दुःशील | स्थूल | सूक्ष्म |
| स्वामी | सेवक | सृष्टि | प्रलय |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| सन्धि | विग्रह | स्थिर | चंचल |
| सबाध | निर्बाध | सत्कार | तिरस्कार |
| स्वार्थ | निस्वार्थ | सापेक्ष | निरपेक्ष |
| सक्षम | अक्षम | सादर | निरादर |
| सलज्ज | निर्लज्ज | सदय | निर्दय |
| सुलभ | दुर्लभ | संकोच | असंकोच |
| सभ्य | असभ्य | सुदूर | अदूर |
| सभय | निर्भय | सामान्य | विशिष्ट |
| सुकाल | अकाल | सविकार | निर्विकार |
| सुबह | शाम | सामान्य | विशिष्ट |
| स्मरण | विस्मरण | संगत | असंगत |
| स्वदेशी | परदेशी | सुभग | दुभग |
| समाज | व्यक्ति | संग | निःसंग |
| स्वकीया | परकीया | स्तुति | निंदा |
| स्वर्ग | नरक | स्वीकृत | अस्वीकृत |
| स्वदेश | विदेश | स्वाधीन | पराधीन |

( श, ह, क्ष, ज्ञ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| शूर | कायर | शयन | जागरण |
| शीत | उष्ण | शुभ | अशुभ |
| शुष्क | आर्द्र | शकुन | अपशकुन |
| शुक्ल | कृष्ण | श्वेत | श्याम |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| शासक | शासित | शिव | अशिव |
| श्रव्य | दृश्य | शोषक | पोषक |
| श्लील | अश्लील | शान्ति | क्रान्ति |
| शत्रु | मित्र | श्रीगणेश | इतिश्री |
| श्रद्धा | घृणा | श्यामा | गौरी |
| शरण | अशरण | शासक | शासित |
| षंड | मर्द | षंडत्व | पुंसत्व |
| ह्रस्व | दीर्घ | हित | अहित |
| हर्ष | शोक | हिंसा | अहिंसा |
| हँसना | रोना | हास | रुदन |
| क्षर | अक्षर | क्षम्य | अक्षम्य |
| क्षुद्र | विशाल | क्षणिक | शाश्वत |
| क्षमा | क्रोध | क्षुद्र | महत |
| क्षमा | दण्ड | ज्ञान | अज्ञान |
| हार | जीत | | |

AJAY KUMAR

# अनेकार्थी शब्द

ऐसे शब्द, जिनके अनेक अर्थ होते है, अनेकार्थी शब्द कहलाते है।

दूसरे शब्दों में- जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते है।

अनेकार्थी का अर्थ है – एक से अधिक अर्थ देने वाला।

यहाँ कुछ प्रमुख अनेकार्थी शब्द दिया जा रहा है।

( अ, ऊ )

अपवाद- कलंक, वह प्रचलित प्रसंग, जो नियम के विरुद्ध हो।

अतिथि- मेहमान, साधु, यात्री, अपरिचित व्यक्ति, यज्ञ में सोमलता लाने वाला, अग्नि, राम का पोता या कुश का बेटा।

अरुण- लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी, इत्यादि ।

आपत्ति- विपत्ति,एतराज।

अपेक्षा- इच्छा, आवश्यकता, आशा, इत्यादि।

आराम- बाग, विश्राम, रोग का दूर होना।

अंक- भाग्य, गिनती के अंक, नाटक के अंक, चिन्ह संख्या, गोद।

अंबर- आकाश,अमृत, वस्त्र।

अनंत- आकाश, ईश्वर, विष्णु, अंतहीन, शेष नाग।

अर्थ- मतलब, कारण, लिए, भाव, अभिप्राय, धन, आशय, प्रयोजन।

अवकाश- छुटटी, अवसर, अंतराल

आम- आम का फल, सर्वसाधारण, मामूली, सामान्य।

अन्तर- शेष, दूरी, हृदय, भेद।

अधर- धरती (आकाश के बीच का स्थान), पाताल, नीचा, होंठ।

आराम- विश्राम, निरोग होना।

AJAY KUMAR

उत्तर- उत्तर दिशा, जवाब, हल, अतीत, पिछला, बाद का इत्यादि।

( क )

कर- हाथ, टैक्स, किरण, सूँड ।

काल- समय, मृत्यु, यमराज।

कला- अंश, किसी कार्य को अच्छी तरह करने का कौशल।

कर्ण- कर्ण (नाम), कान।

कुशल- खैरियत, चतुर ।

कल- बीता हुआ दिन, आने वाला दिन, मशीन।

कर्ण- कर्ण (नाम), कान।

काम- वासना, कामदेव, कार्य, पेशा, धंधा।

कनक- सोना, धतूरा, गेंहूँ।

कुशल- खैरियत, चतुर ।

( ख, ग )

खग- पक्षी, तारा, गन्धर्व, बाण।

खर- दुष्ट, गधा, तिनका, एक राक्षस।

खल- दुष्ट, धतूरा, दवा कूटने का खरल।

गण- समूह, मनुष्य, भूतप्रेतादि, शिव के गण, पिंगल के गण।

गुरु- शिक्षक, ग्रहविशेष, श्रेष्ठ, बृहस्पति, भारी, बड़ा, भार।

गो- बाण, आँख, वज्र, गाय, स्वर्ग, पृथ्वी, सरस्वती, सूर्य, बैल, इत्यादि।

गुण- कौशल, शील, रस्सी, स्वभाव, धनुष की डोरी।

AJAY KUMAR

गति- चाल, दशा, मोक्ष, हालत।

( घ, ज )

घन- बादल, अधिक, घना, गणित का घन, पिण्ड, हथौड़ा ।

जलज- कमल, मोती, शंख, मछली, चन्द्रमा, सेवार।

जाल- फरेब, बुनावट, जाला।

जीवन- जल, प्राण, जीवित।

जलधर- बादल, समुद्र।

जड़- मूल, मूर्ख।

ज्येष्ठ (जेठ)- पति का बड़ा भाई, बड़ा, हिन्दी महीना।

( त, द )

तीर- बाण, किनारा, तट।

तारा- आँख की पुतली, नक्षत्र, बालि की स्त्री, बृहस्पति की स्त्री।

दंड- सज़ा, डंडा, एक व्यायाम।

दल- समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, पक्ष, भाग, चिड़ी।

द्रव्य- वस्तु, धन।

( घ, न )

धन- सम्पति, योग।

धर्म- प्रकृति, स्वभाव, कर्तव्य, सम्प्रदाय।

नाग- हाथी, साँप।

नग- पर्वत, वृक्ष, नगीना।

AJAY KUMAR

निशाचर- राक्षस, प्रेत, उल्लू, चोर।

( प, फ, ब, म )

पद- चरण, शब्द, पैर, स्थान, ओहदा, कविता का चरण।

पानी- जल, चमक, इज्जत ।

पक्ष- पन्द्रह दिन का समय, ओर, पंख, बल, सहाय, पार्टी।

पत्र- पत्ता, चिठ्ठी, पंख।

पृष्ठ- पीठ, पत्रा, पीछे का भाग।

प्रभाव- सामर्थ्य, असर, महिमा, दबाव।

पतंग- सूर्य, पक्षी, टिड्डी, फतिंगा, गुड्डी।

पय- दूध, पानी।

फल- लाभ, मेवा, नतीजा, भाले की नोक।

बल- सेना, शक्ति।

बलि- राजा बलि, बलिदान, उपहार, कर इत्यादि।

मुद्रा- मुहर, आकृति, धन।

( भ, म )

भाग- हिस्सा, विभाजन, भाग्य।

मान- इज्जत, अभिमान, नाप-तौल।

मत- राय, वोट, नही।

मधु- शहद, शराब, मीठा, वसन्तऋतु।

मित्र- सूर्य, दोस्त।

AJAY KUMAR

महावीर- हनुमान, बहुत बलवान्, जैन तीर्थकर।

मूक- गूँगा, चुप, विवश।

( य, र, ल, व )

योग- नियम, उपाय, मिलन, जोड़। राशि- समूह, मेष, कर्क, आदि राशियाँ।

रस- प्रेम, काव्य के नौ रस, स्वाद, सार।

लक्ष्य- निशाना, उद्देश्य।

वर- दूल्हा, वरदान, श्रेष्ट।

वर्ण- जाति, रंग, अक्षर।

विग्रह- लड़ाई, शरीर, देवता की मूर्ति।

विषम- जो सम न हो, भीषण, बहुत कठिन।

वन- जंगल, जल।

विरोध- वैर, विपरीत भाव।

विधि- कानून, रीति, ईश्वर, भाग्य, ढंग।

विजया- दुर्गा, भाँग।

वार- प्रहार, बारी, दिन।

( श, स )

शिव- मंगल, महादेव, भागयशाली।

शुद्ध- पवित्र, ठीक, जिसमें मिलावट न हो।

सर- तालाब, सिर, पराजित।

सेहत- सुख, स्वास्थ्य। रोग से छुटकारा।

AJAY KUMAR

सुधा- अमृत, पानी।

संज्ञा- नाम, चेतना।

शक्ति- देवी, योग्यता, प्रभाव, बल।

सारंग- हाथी, कोयल, कामदेव, सिंह, धनुष भौंरा, मधुमक्खी, कमल।

स्थूल- मोटा, सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य।

स्नेह- प्रेम, तेल, चिकनाई।

( ह )

हार- आभूषण, पराजय।

हंस- प्राण, पक्षिविशेष।

हस्ती- हाथी, अस्तित्व।

हरकत- गति, चेष्टा, नटखटपन।

हीन- रहित, दीन, निकृष्ट।

हरि- हाथी, विष्णु, पहाड़, सिंह, इन्द्र, घोड़ा, सर्प, बन्दर, वानर, मेढ़क, यमराज, शिव, कृष्ण, किरण, कोयल, हंस।

यहाँ कुछ प्रमुख एकार्थक शब्द दिया जा रहा है।

अहंकार- मन का गर्व। झूठे अपनेपन का बोध।

दर्प- नियम के विरुद्ध काम करने पर भी घमण्ड करना।

अभिमान- प्रतिष्ठा में अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना।

घमण्ड- सभी स्थितियों में अपने को बड़ा और दूसरे को हीन समझना।

अनुग्रह- कृपा। किसी छोटे से प्रसन्न होकर उसका कुछ उपकार या भलाई करना।

अनुकम्पा- बहुत कृपा। किसी के दुःख से दुखी होकर उसपर की गयी दया।

अनुरोध- अनुरोध बराबरवालों से किया जाता है।

प्रार्थना- ईश्वर या अपने से बड़ों के प्रति इच्छापूर्ति के लिए प्रार्थना की जाती है।

अस्त्र- वह हथियार, जो फेंककर चलाया जाता है। जैसे- तीर, बर्छी आदि।

शस्त्र- वह हथियार जो हाथ में थामकर चलाया जाता है। जैसे- तलवार।

अपराध- सामाजिक कानून का उल्लंघन अपराध है। जैसे- हत्या।

पाप- नैतिक नियमों का उल्लंघन 'पाप' है। जैसे- झूठ बोलना।

अवस्था- जीवन के कुछ बीते हुए काल या स्थिति को 'अवस्था' कहते है। जैसे- आपको अवस्था क्या होगी ? रोगी की अवस्था कैसी है ?

आयु- सम्पूर्ण जीवन की अवधि को 'आयु' कहते है। जैसे -आप दीर्घायु हों। आपकी आयु लम्बी हो।

अपयश- स्थायी रूप से दोषी होना।

कलंक- कुसंगति के कारण चरित्र पर दोष लगाना।

अधिक-आवश्यकता से ज्यादा। जैसे- बाढ़ में गंगा में जल अधिक हो जाता है।

काफी- आवश्यकता से अधिक। जैसे- गर्मी में भी गंगा में काफी पानी रहता है।

अनुराग- किसी विषय या व्यक्ति पर शुद्धभाव से मन केन्द्रित करना।

आसक्ति- मोहजनित प्रेम को 'आसक्ति' कहते है।

अन्तःकरण- विशुद्ध मन की विवेकपूर्ण शक्ति।

आत्मा- जीवों में चेतन, अतीन्द्रिय और अभौतिक तत्व, जिसका कभी नाश नहीं होता।

अध्यक्ष- किसी गोष्ठी, समिति, परिषद् या संस्था के स्थायी प्रधान को अध्यक्ष कहते है।

सभापति- किसी आयोजित बड़ी अस्थायी सभा के प्रधान को 'सभापति' कहते है।

अर्चना- धूप, दीप, फूल, इत्यादि, से देवता की पूजा।

अभिनन्दन- किसी श्रेष्ठ का मान या स्वागत।

स्वागत- अपनी सभ्यता और प्रथा के वश किसी को सम्मान देना।

आदि- साधारणतः एक या दो उदाहरण के बाद 'आदि' का प्रयोग होता है।

AJAY KUMAR

इत्यादि- साधारणतः दो से अधिक उदाहरण के बाद 'इत्यादि' का प्रयोग होता है।

आज्ञा-आदरणीय या पूज्य व्यक्ति द्वारा किया गया कार्यनिर्देश। जैसे- पिताजी की आज्ञा है कि मैं धूप में बाहर न जाऊँ।

आदेश- किसी अधिकारी व्यक्ति द्वारा दिया गया कार्यनिर्देश। जैसे- जिलाधीश का आदेश है कि नगर में सर्वत्र शान्ति बनी रहे।

आदरणीय- अपने से बड़ों या महान् व्यक्तियों के प्रति सम्मानसूचक शब्द।

पूजनीय- पिता, गुरु या महापुरुषों के प्रति सम्मानसूचक शब्द।

इच्छा- किसी भी वस्तु की साधारण चाह।

अभिलाषा- किसी विशेष वस्तु की हार्दिक इच्छा।

उत्साह- काम करने की बढ़ती हुई रुचि।

साहस- भय पर विजय प्राप्त करना।

कष्ट- आभाव या असमर्थता के कारण मानसिक और शारीरिक कष्ट होता है।

क्लेश- यह मानसिक अप्रिय भावों या अवस्थाओं का सूचक है।

पीड़ा- रोग-चोट आदि के कारण शारीरिक 'पीड़ा' होती है।

कृपा- दूसरे के कष्ट दूर करने की साधरण चेष्टा।

दया- दूसरे के दुःख को दूर करने की स्वाभाविक इच्छा।

कंगाल-जिसे पेट पालने के लिए भीख माँगनी पड़े।

दीन- निर्धनता के कारण जो दयापात्र हो चुका है।

खेद- किसी गलती पर दुःखी होना। जैसे- मुझे खेद है कि मैं समय पर न पहुँच सका।

शोक- किसी की मृत्यु पर दुःखी होना। जैसे- गाँधी की मृत्यु से सर्वत्र शोक छा गया।

क्षोभ- सफलता न मिलने या असामाजिक स्थिति पर दुखी होना।

दुःख- साधारण कष्ट या मानसिक पीड़ा।

ग्रन्थ-इससे पुस्तक के आकर की गुरुता और विषय के गाम्भीर्य का बोध होता है।

पुस्तक- साधारणतः सभी प्रकार की छपी किताब को 'पुस्तक' कहते है।

AJAY KUMAR

दक्ष-जो हाथ से किए जानेवाले काम अच्छी तरह और जल्दी करता है। जैसे- वह कपड़ा सीने में दक्ष है।

निपुण-जो अपने कार्य या विषय का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त कर उसका अच्छा जानकार बन चुका है।

कुशल- जो हर काम में मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों का अच्छा प्रयोग करना जानता है।

कर्मठ- जिस काम पर लगाया जाय उसपर लगा रहनेवाला।

निबन्ध- ऐसी गद्यरचना, जिसमें विषय गौण हो और लेखक का व्यक्तित्व और उसकी शैली प्रधान हो।

लेख- ऐसी गद्यरचना, जिसमें वस्तु या विषय की प्रधानता हो।

निधन- महान् और लोकप्रिय व्यक्ति की मृत्यु को 'निधन' कहा जाता है।

मृत्यु- सामान्य शरीरान्त को 'मृत्यु' कहते है।

निकट- सामीप्य का बोध। जैसे- मेरे गाँव के निकट एक स्कूल है।

पास- अधिकार के सामीप्य का बोध। जैसे- धनिकों के पास पर्याप्त धन है।

प्रेम- व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे- ईश्वर से प्रेम, स्त्री से प्रेम आदि।

स्नेह- अपने से छोटों के प्रति 'स्नेह' होता है। जैसे- पुत्र से स्नेह।

प्रणय- सख्यभावमिश्रित अनुराग। जैसे- राधा-माधव का प्रणय।

प्रणाम- बड़ों को 'प्रणाम' किया जाता है।

नमस्कार- बराबरवालों को 'नमस्कार' या 'नमस्ते' किया जाता है।

पारितोषिक- किसी प्रतियोगिता में विजयी होने पर पारितोषिक दिया जाता है।

पुरस्कार- किसी व्यक्ति के अच्छे काम या सेवा से प्रसन्न होकर 'पुरस्कार' दिया जाता है।

पति-किसी की विवाहिता स्त्री।

महिला- भले घर की स्त्री।

स्त्री- कोई भी औरत।

पुत्र- अपना बेटा।

बालक- कोई भी लड़का।

AJAY KUMAR

बड़ा- आकार का बोधक। जैसे- हमारा मकान बड़ा है।

बहुत- परिमाण का बोधक। जैसे- आज उसने बहुत खाया।

बुद्धि- कर्तव्य का निश्रय करती है।

ज्ञान- इन्द्रियों द्वारा प्राप्त हर अनुभव।

बहुमूल्य- बहुत कीमती वस्तु, पर जिसका मूल्य-निर्धारण किया जा सके।

अमूल्य- जिसका मूल्य न लगाया जा सके।

मित्र- वह पराया व्यक्ति, जिसके साथ आत्मीयता हो।

बन्धु- आत्मीय मित्र। सम्बन्धी।

मन- मन में संकल्प-विकल्प होता है।

चित्त- चित्त में बातों का स्मरण-विस्मरण होता है।

महाशय- सामान्य लोगों के लिए 'महाशय' का प्रयोग होता है।

महोदय- अपने से बड़ों को या अधिकारियों को 'महोदय' लिखा जाता है।

यातना- आघात में उत्पत्र कष्टों की अनुभूति (शारीरिक) ।

विश्वास- सामने हुई बात पर भरोसा करना, बिलकुल ठीक मानना।

विषाद- अतिशय दुःखी होने के कारण किंकर्तव्यविमूढ होना।

व्यथा- किसी आघात के कारण मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट या पीड़ा।

सेवा- गुरुजनों की टहल।

शुश्रूषा- दीन-दुखियों और रोगियों की सेवा।

साधारण- जो वस्तु या व्यक्ति एक ही आधार पर आश्रित हो। जिसमें कोई विशिष्ट गुण या चमत्कार न हो।

सामान्य- जो बात दो अथवा कई वस्तुओं तथा व्यक्तियों आदि में समान रूप से पायी जाती हो, उसे 'सामान्य' कहते है। स्वतंत्रा- 'स्वतंत्रा' का प्रयोग व्यक्तियों के लिए होता है। जैसे- भारतीयों को स्वतंत्रा मिली है।

स्वाधीनता- 'स्वाधीनता' देश या राष्ट के लिए प्रयुक्त होती है।

AJAY KUMAR

सखा- जो आपस में एकप्राण, एकमन, किन्तु दो शरीर है।

सुहृद्- अच्छा हृदय रखनेवाला।

सहानुभूति- दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझना।

स्नेह-छोटों के प्रति प्रेमभाव रखना।

सम्राट- राजाओं का राजा।

राजा-एक साधारण भूपति।

.....

AJAY KUMAR

# अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

भाषा की सुदृढ़ता, भावों की गम्भीरता और चुस्त शैली के लिए यह आवश्यक है कि लेखक शब्दों (पदों) के प्रयोग में संयम से काम ले, ताकि वह विस्तृत विचारों या भावों को थोड़े-से-थोड़े शब्दों में व्यक्त कर सके। समास, तद्धित और कृदन्त वाक्यांश या वाक्य एक शब्द या पद के रूप में संक्षिप्त किये जा सकते है। ऐसी हालत में मूल वाक्यांश या वाक्य के शब्दों के अनुसार ही एक शब्द या पद का निर्माण होना चाहिए।

दूसरी बात यह कि वाक्यांश को संक्षेप में सामासिक पद का भी रूप दिया जाता है। कुछ ऐसे लाक्षणिक पद या शब्द भी है, जो अपने में पूरे एक वाक्य या वाक्यांश का अर्थ रखते है। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते है।

जैसे- राम कविता लिखता है, अनेक शब्दों के स्थान पर हम एक ही शब्द 'कवि' का प्रयोग कर सकते है।

दूसरा उदाहरण- 'जिस स्त्री का पति मर चुका हो' शब्द-समूह के स्थान पर 'विधवा' शब्द अच्छा लगेगा।

इसी प्रकार, अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर सकते है।

यहाँ पर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण दिए जा रहे है:-

( अ )

अनुचित बात के लिए आग्रह- (दुराग्रह)

अण्डे से जन्म लेने वाला- (अण्डज)

आकाश को चूमनेवाला- (आकाशचुंबी)

अपने देश से दुसरे देश में समान जाना- (निर्यात)

अपनी हत्या स्वयं करना- (आत्महत्या)

अपनी ही इच्छानुसार पति का वरण करने वाली— स्वयंवरा

अनुसंधान के लिए दिया जाने वाला अनुदान— शोधवृत्ति

AJAY KUMAR

अवसर के अनुसार बदल जाने वाला- (अवसरवादी)

अच्छे चरित्र वाला- (सच्चरित्र)

आज्ञा का पालन करने वाला- (आज्ञाकारी)

अपने देश से दुसरे देश में समान जाना- (निर्यात)

अपनी हत्या स्वयं करना- (आत्महत्या)

अत्यंत सुन्दर स्त्री- (रूपसी)

आकाश को चूमने वाला- (गगनचुंबी)

आकाश में उड़ने वाला- (नभचर)

आलोचना करने वाला- (आलोचक)

आशा से अधिक- (आशातीत)

आगे होनेवाला- (भावी)

अपना हित–अहित सोचने में समर्थ— विवेकी

अपनी जगह से अलग किया हुआ— विस्थापित

आगे आने वाला— आगामी

आगे का विचार न कर सकने वाला— अदूरदर्शी

अत्यधिक बढ़ा–चढ़ा कर कही गई बात— अतिशयोक्ति

आँखों के सामने- (प्रत्यक्ष)

आँखों से परे- (परोक्ष)

आदेश जो निश्चित अवधि तक लागू हो— अध्यादेश

अपने परिवार के साथ- (सपरिवार)

आशा से अतीत (अधिक)- (आशातीत)

आकाश या गगन चुमनेवाला- (आकाशचुम्बी, गगनचुम्बी)

AJAY KUMAR

आलोचना करनेवाला- (आलोचक)

आलोचना के योग्य- (आलोच्य)

आया हुआ- (आगत)

अवश्य होनेवाला- (अवश्यम्भावी)

अत्यधिक वृष्टि- (अतिवृष्टि)

अपने बल पर निर्भर रहने वाला- (स्वावलम्बी)

अचानक हो जाने वाला- (आकस्मिक)

आदि से अन्त तक- (आद्योपान्त)

आगे का विचार करने वाला- (अग्रसोची)

आढ़त का व्यापर करने वाला- (आढ़तिया)

आवश्यकता से अधिक वर्षा- (अतिवृष्टि)

आवश्यकता से अधिक धन का संचय न करना— अपरिग्रह

अधिकार या कब्जे में आया हुआ- (अधिकृत)

अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला- (अनन्य)

अभिनय करने वाला पुरुष- (अभिनेता)

अभिनय करने वाली स्त्री- (अभिनेत्री)

अच्छा-बुरा समझने की शक्ति का अभाव- (अविवेक)

अपने हिस्से या अंश के रूप में कुछ देना- (अंशदान)

अनुकरण करने योग्य- (अनुकरणीय)

आत्मा व परमात्मा का द्वैत (अलग-अलग होना) न माननेवाला- (अद्वैतवादी)

अल्प (कम) वेतन भोगनेवाला (पानेवाला)- (अल्पवेतनभोगी)

अध्ययन (पढ़ना) का काम करनेवाला- (अध्येता)

AJAY KUMAR

अध्यापन (पढ़ाने) का काम करनेवाला- (अध्यापक)

आग से झुलसा हुआ- (अनलदग्ध)

अपने प्राण आप लेने वाला- (आत्मघाती)

अर्थ या धन से सम्बन्ध रखने वाला- (आर्थिक)

आदि से अन्त तक- (आद्योपान्त)

आशा से अतीत (परे)- (आशातीत)

आयोजन करने वाला व्यक्ति- (आयोजक)

आशुलिपि (शार्ट हैण्ड) जाननेवाला लिपिक- (आशुलिपिक)

अपनी इच्छा के अनुसार काम करनेवाला- (इच्छाचारी)

आड़ या परदे के लिये रथ या पालकी को ढकनेवाला कपड़ा- (ओहार)

अपनी विवाहित पत्नी से उत्पत्र (पुत्र)- (औरस (पुत्र)

अपने कर्तव्य का निर्णय न कर सकने वाला- (किंकर्तव्यविमूढ)

अधिक दिनों तक जीने वाला- (चिरंजीवी)

अन्न को पचाने वाली जठर (पेट) की अग्नि- (जठराग्नि)

अपनी झक (धुन) में मस्त रहने वाला- (झक्की)

आँवला, हर्र व बहेड़ा- (त्रिफला)

अनुचित या बुरा आचरण करने वाला- (दुराचारी)

अपराध और उन पर दण्ड देने के नियम निर्धारित करने वाला प्रश्न - (दण्डसंहिता)

अभी-अभी जन्म लेने वाला- (नवजात)

आधे से अधिक लोगों की सम्मिलित एक राय- (बहुमत)

अपना हित चाहने वाला- (स्वार्थी)

अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला- (स्वयंसेवक)

AJAY KUMAR

अपने देश से प्यार करने वाला- (देशभक्त)

अपने देश के साथ विश्वासघात करने वाला- (देशद्रोही)

अनुचित बात के लिये आग्रह- (दुराग्रह)

आँख की बीमारी- (दृष्टिदोष)

अपने पति के प्रति अनन्य अनुराग रखने वाली- (पतिव्रता)

अपने पद से हटाया हुआ- (पदच्युत)

अपने को पंडित माननेवाला- (पंडितम्मन्य)

आटा पीसने वाली स्त्री-(पिसनहारी)

आँखों के समक्ष- (प्रत्यक्ष)

आकार से युक्त (मूर्तिमान)— साकार

आय से अधिक व्यर्थ खर्च करने वाला- (फिजूलखर्ची)

आय-व्यय, लेन-देन का लेखा करने वाला- (लेखाकार)

अपने परिवार के साथ है जो- (सपरिवार)

अपने ही बल पर निर्भर रहने वाला- (स्वावलम्बी)

अविवाहित लड़की- (कुमारी)

अविवाहित महिला— अनूढा

अगहन और पूस में पड़ने वाली ऋतु- (हेमन्त)

अधिक बोलने वाला— वाचाल

( ऊ )

ऊपर कहा हुआ- (उपर्युक्त)

ऊपर आने वाला श्वास- (उच्छवास)

ऊपर की ओर जानेवाला-(ऊर्ध्वगामी)

AJAY KUMAR

ऊपर की ओर बढ़ती हुई साँस- (उध्र्वश्वास)

उपचार या ऊपरी दिखावे के रूप में होने वाला- (औपचारिक)

उच्च न्यायालय का न्यायाधीश- (न्यायमूर्ति)

उपकार के प्रति किया गया उपकार- (प्रत्युपकार)

ऊपर कहा हुआ- (उपर्युक्त)

ऊपर लिखा गया- (उपरिलिखित)

उसी समय का- (तत्कालीन)

( इ, ई )

ईश्वर में आस्था रखने वाला- (आस्तिक)

ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला- (नास्तिक)

इतिहास का ज्ञाता- (अतिहासज्ञ)

इन्द्रियों को जीतनेवाला- (जितेन्द्रिय)

इन्द्रियों की पहुँच से बाहर- (अतीन्द्रिय)

इतिहास से सम्बन्ध रखने वाला- (ऐतिहासिक)

ईश्वर में विश्वास रखने वाला- (आस्तिक)

इन्द्रियों को वश में करने वाला- (इन्द्रियजित)

इंद्रियों पर किया जानेवाला वश- (इंद्रियाविग्रह)

इतिहास को जानने वाला- (इतिहासज्ञ)

इस लोक से सम्बन्धित- (ऐहिक)

इन्द्रजाल करने वाला- (ऐन्द्रजालिक)

इंद्रियों से संबंधित- (ऐंद्रिक)

AJAY KUMAR

इस लोक से संबंध रखनेवाला- (ऐहलौकिक)

इतिहास से संबंधित- (ऐतिहासिक)

( ऐ )

एक ही समय में वर्तमान- (समसामयिक)

एक स्थान से दूसरे स्थान को हटाया हुआ- (स्थानान्तरित)

एक भाषा की लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में लिखना या कहना- (अनुवाद)

ऐसा व्रत, जो मरने पर ही समाप्त हो-(आमरणव्रत)

ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढँक जाय- (खग्रास)

ऐसा जो अंदर से खाली हो- (खोखला)

ऐसा तर्क जो देखने पर ठीक प्रतीत होता हो, किन्तु वैसा न हो- (तर्काभास)

एक व्यक्ति द्वारा चलायी जाने वाली शासन प्रणाली- (तानाशाही)

एक राजनीतिक दल को छोड़कर दूसरे दल में शामिल होने वाला- (दलबदलू)

एक देश से माल दूसरे देश में जाने की क्रिया- (निर्यात)

ऐतिहासिक युग के पूर्व का- (प्रागैतिहासिक)

एक महीने में होने वाला- (मासिक)

एक ही जाति का- (सजातीय)

एक ही समय में उत्पन्न होने वाला- (समकालीन)

एक ही समय में वर्तमान- (समसामयिक)

एक सप्ताह में होने वाला- (साप्ताहिक)

( क )

AJAY KUMAR

किसी पद का उम्मीदवार- (प्रत्याशी)

कीर्तिमान पुरुष- (यशस्वी

कम खर्च करने वाला- (मितव्ययी)

कम जानने वाला- (अल्पज्ञ)

कम बोलनेवाला- (मितभाषी)

कठिनाई से समझने योग्य- (दुर्बोध)

कल्पना से परे हो- (कल्पनातीत)

किसी की हँसी उड़ाना- (उपहास)

कुछ दिनों तक बने रहने वाला- (टिकाऊ)

किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना- (अतिशयोक्ति)

कठिनता से प्राप्त होने वाला- (दुर्लभ)

किसी पद का उम्मीदवार- (प्रत्याशी)

किसी विषय को विशेषरूप से जाननेवाला- (विशेषज्ञ)

किसी काम में दूसरे से बढ़ने की इच्छा या उद्योग- (स्पर्द्धा)

क्रम के अनुसार- (यथाक्रम)

कार्य करनेवाला- (कार्यकर्त्ता)

करने योग्य- (करणीय, कर्तव्य)

किसी कथा के अंतर्गत आने वाली दूसरी कथा- (अन्तःकथा)

कर या शुल्क का वह अंश जो किसी कारणवश अधिक से अधिक लिया जाता है- (अधिभार)

किसी पक्ष का समर्थन करने वाला- (अधिवक्ता)

किसी कार्यालय या विभाग का वह अधिकारी जो अपने अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों की निगरानी रखे- (अधीक्षक)

किसी सभा, संस्था का प्रधान- (अध्यक्ष)

AJAY KUMAR

किसी कार्य के लिए दी जाने वाली सहायता- (अनुदान)

किसी मत या प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया- (अनुमोदन)

किसी व्यक्ति या सिद्धान्त का समर्थन करने वाला- (अनुयायी)

किसी कार्य को बार-बार करना- (अभ्यास)

किसी वस्तु का भीतरी भाग- (अभ्यन्तर)

किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा- (अभीप्सा)

किसी प्राणी को न मारना- (अहिंसा)

किसी बात पर बार-बार जोर देना- (आग्रह)

किसी पात्र आदि के अन्दर का स्थान, जिसमें कोई चीज आ सके-(आयतन)

किसी अवधि से संबंध रखने वाला- (आवधिक)

किसी देश के वे निवासी जो पहले से वहाँ रहते रहे हैं- (आदिवासी)

किसी चीज या बात की इच्छा रखनेवाला- (इच्छुक)

किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत- (इतिवृत)

किसी नई चीज का बनाना- (ईजाद, अविष्कार)

किसी के बाद उसकी संपत्ति प्राप्त करने वाला- (उत्तराधिकारी)

किसी एक पक्ष से संबंधित- (एकपक्षीय)

कष्टों या काँटों से भरा हुआ- (कंटकाकीर्ण)

किसी के उपकार को न मानने वाला- (कृतघ्न)

किसी की कृपा से पूरी तरह संतुष्ट- (कृतार्थ)

कारागार से संबंध रखने वाला- (कारागारिक)

कार्य करने वाला व्यक्ति- (कार्यकर्ता)

किन्हीं निश्चित कार्यों के लिए बनायी गयी समिति- (कार्यसमिति)

AJAY KUMAR

क्रम के अनुसार- (क्रमानुसार)

किसी विचार/निर्णय को कार्यरूप देना- (कार्यान्वयन)

कुंती का पुत्र- (कौंतेय)

किसी के घर की होनेवाली तलाशी- (खानातलाशी)

किसी के इर्द-गिर्द घेरा डालने की क्रिया- (घेराबन्दी)

करुण स्वर में चिल्लाना- (चीत्कार)

किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात- (चेतावनी)

किसी वस्तु का चौथा भाग- (चतुर्थांश)

किसी काम या व्यक्ति में छिद्र या दोष निकालने का कार्य- (छिद्रान्वेषण)

कर्मचारियों आदि को छाँटकर निकालने की क्रिया- (छँटनी)

किसी भी बात को जानने की इच्छा- (जिज्ञासा)

कुछ जानने या ज्ञान प्राप्त करने की चाह- (जिज्ञासा)

किसी के सम्पूर्ण जीवन के कार्यों का विवरण- (जीवनचरित)

काँटेदार झाड़ियों का समूह- (झाड़झंखाड़)

किसी ग्रंथ या रचना की टीका करनेवाला- (टीकाकार)

किराए पर चलनेवाली मोटर गाड़ी- (टैक्सी)

किसी पद अथवा सेवा से मुक्ति का पत्र- (त्यागपत्र)

किसी भी पक्ष का समर्थन न करने वाला- (तटस्थ)

कोई काम या पद छोड़ देने के लिये लिखा गया पत्र- (त्यागपत्र)

कुछ निश्चित लम्बाई का कपड़ा- (थान)

किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु- (थाती/धरोहर/अमानत)

कपड़ा साइन का व्यवसाय करने वाला- (दर्जी)

AJAY KUMAR

किसी के साथ सम्बन्ध न रखने वाला- (निःसंग)

कही हुई बात को बार-बार कहना- (पिष्टपेषण)

किसी आरोप के उत्तर में किया जाने वाला आरोप- (प्रत्यारोप)

किसी टूटी-फूटी वस्तु का पुनर्निर्माण- (पुनर्निर्माण)

किसी देवता पर चढ़ाने के लिए मारा जाने वाला पशु- (बलि)

(किसी पद पर) जो पहले रहा हो- (भूतपूर्व)

किसी बात का गूढ रहस्य जानने वाला- (मर्मज्ञ)

किसी मत को मानने वाला- (मतानुयायी)

कम खर्च करने वाला- (मितव्ययी)

क्रम के अनुसार- (यथाक्रम)

किसी विषय को विशेष रूप से जाननेवाला- (विशेषज्ञ)

किसी काम में दूसरों से बढ़ने की इच्छा- (स्पर्द्धा)

कुछ खास शर्तों द्वारा कोई कार्य कराने का समझौता- (संविदा)

( ख )

खाने से बचा हुआ जूठा भोजन- (उच्छिष्ट)

खाने योग्य पदार्थ- (खाद्य)

खाने की इच्छा- (बुभुक्षा)

खून से रँगा हुआ- (रक्तरंजित)

खेलना का मैदान- (क्रीड़ास्थल)

( ग )

AJAY KUMAR

गिरा हुआ- (पतित)

गृह (घर) बसाकर स्थित (रहनेवाला)- (गृहस्थ)

ग्राम का रहनेवाला- (ग्रामीण)

गोद लिया हुआ पुत्र- (दत्तक (पुत्र) )

गोपों को घेरा बाँधकर नाचने की क्रिया- (रास)

गुरु के समीप रहनेवाला विद्यार्थी- (अन्तेवासी)

गुण-दोषों का विवेचन करने वाला- (आलोचक)

गणित शास्त्र के जानकार- (गणितज्ञ)

गंगा का पुत्र- (गांगेय)

गृह (घर) बसा कर रहने वाला- (गृहस्थ)

गगन (आकाश) चूमने वाला- (गगनचुम्बी)

( घ )

घास छीलने वाला- (घसियारा)

घूस लेने वाला/रिश्वत लेने वाला- (घूसखोर/रिश्वतखोर)

घुलने योग्य पदार्थ- (घुलनशील)

घृणा करने योग्य- (घृणास्पद)

घूम-फिरकर सौदा बेचने वाला- (फेरीवाला)

( च )

चार वेदों को जानने वाला- (चतुर्वेदी)

चार राहों वाला- (चौराहा)

AJAY KUMAR

चेतन स्वरूप की माया- (चिद्विलास)

चूहे फँसाने का पिंजड़ा- (चूहेदानी)

चौथे दिन आने वाला ज्वर- (चौथिया)

चारों ओर की सीमा- (चौहद्दी)

चारों ओर जल से घिरा हुआ भू-भाग- (टापू)

चोरी छिपे चुंगी शुल्क आदि दिये बिना माल लाकर बेचनेवाला- (तस्कर)

चौपायों के बाँधने का स्थान- (थान)

चार मुखों वाला - (चतुरानन)

चिंता में डूबा हुआ- (चिंतित)

चुनाव में अपना मत देने की क्रिया- (मतदान)

( छ )

छिपे वेश में रहना- (छद्मवेश)

छात्रों के रहने का स्थान- (छात्रावास)

छः महीने के समय से सम्बन्धित- (छमाही)

छत में टाँगने का शीशे का कमल या गिलास, जिसमें मोमबत्तियाँ जलती हों- (फानूस)

छोटे कद का आदमी- (बौना)

छह कोने वाली आकृति- (षट्कोण)

छह-छह महीने पर होने वाला- (षाण्मासिक)

छूत से फैलने वाला रोग- (संक्रामक)

छः मुँहों वाला- (षण्मुख/षडानन)

AJAY KUMAR

( ज )

जो कभी न मरे- (अमर)

जो पढ़ा-लिखा न हो- (अपढ़, अनपढ़)

जो अक्षर (पढ़ना-लिखना) जानता है- (साक्षर)

जो दूसरों पर अत्याचार करें- (अत्याचारी)

जो दिखाई न दे- (अदृश्य)

जो कभी नष्ट न हो- (अनश्वर)

जो उच्च कुल में उत्पन्न हुआ हो- (कुलीन)

जो क्षमा के योग्य हो- (क्षम्य)

जो कम बोलता हो- (मितभाषी)

जो अधिक बोलता हो- (वाचाल)

जो सब जगह व्याप्त हो- (सर्वव्यापक)

जो देखने योग्य हो- (दर्शनीय)

जो कुछ न करता हो-(अकर्मण्य)

जो पुत्र गोद लिया हो- (दत्तक)

जो मान-सम्मान के योग्य हो- (माननीय)

जो नष्ट न होने वाला हो- (अविनाशी)

जो किसी का पक्ष न ले- (तटस्थ)

जो परिचित न हो- (अपरिचित)

जो स्थिर रहे- (स्थावर)

जो वन में घूमता हो- (वनचर)

जो इस लोक से बाहर की बात हो- (अलौकिक)

AJAY KUMAR

जो धन का दुरुपयोग करता है- (अपव्ययी)

जो कानून के विरुद्ध हो- (अवैध)

जो कानून के अनुसार हो- (वैध)

जो पहले न पढ़ा हो- (अपठित)

जो आँखों के सामने न हो- (अप्रत्यक्ष)

जो आँखों के सामने हो- (प्रत्यक्ष)

जो दो भाषाएँ जानता हो- (दुभाषिया)

जो धर्म का काम करे- (धर्मात्मा)

जो अभी - अभी पैदा हुआ हो- (नवजात)

जो कठिनाई से प्राप्त हो- (दुर्लभ)

जो स्वयं पैदा हुआ हो- (स्वयंभू)

जो शरण में आया हो- (शरणागत)

जो क्षमा करने के योग्य हो- (क्षम्य)

जो बहुत समय कर ठहरे- (चिरस्थायी)

जो उच्च कुल में उत्पन्न हुआ हो- (कुलीन)

जो कभी नष्ट न हो- (अनश्वर)

जो उदार न हो- (अनुदार)

जो चित्र बनाता हो- (चित्रकार)

जो बूढा न हो- (अजर)

जो नहीं हो सकता- (असंभव)

जो हो सकता- (संभव)

जो आमिष (मांस) नहीं खाता- (निरामिष)

AJAY KUMAR

जो पहरा देता है- (प्रहरी)

जो दूसरों पर अत्याचार करें- (अत्याचारी)

जो किसी पक्ष में न हो- (तटस्थ)

जो कभी न मरे- (अमर)

जो कहा न जा सके- (अकथनीय)

जो गिना न जा सके- (अगणित)

जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो- (नवजात)

जो जन्म से अंधा हो- (जन्मांध)

जो किये गये उपकारों को जानता या (मानता) है- ( कृतज्ञ)

जो किये गये उपकारों को नहीं मानता है- (कृतघ्न)

जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो- (खंडित)

जो क्षमा के योग्य हो- (क्षम्य)

जो सब जगह व्याप्त हो-(सर्वव्यापक)

जो परिचित न हो- (अपरिचित)

जो सब कुछ जानता है- (सर्वज्ञ)

जो किसी की ओर से है- (प्रतिनिधि)

जो बहुत जानता है- (बहुज्ञ)

जो स्त्री कविता लिखती है- (कवयित्री)

जो पुरुष कविता रचता है- (कवि)

जो शत्रु की हत्या करता है- (शत्रुघ्न)

जो मांस का आहार करता है- (मांसाहारी)

जो शाक का आहार करता है-(शाकाहारी)

AJAY KUMAR

जो फल का आहार करता है- (फलाहारी)

जो विज्ञान जनता है- (वैज्ञानिक)

जो व्याकरण जानता है- (वैयाकरण)

जो लोक में संभव न हो- (अलौकिक)

जो स्वार्थ (अपनी ही भलाई) चाहता है- (स्वार्थी)

जो परमार्थ( दूसरों की भलाई) चाहता है-(परमार्थी)

जो देखने में प्रिय लगता है- (प्रियदर्शी)

जो आसानी से लब्ध (प्राप्य) है- (सुलभ)

जो पर (दूसरों) के अधीन है- (पराधीन)

जो मन को हर ले- (मनोहर)

जो धर्म करता है- (धर्मात्मा)

जो साँप पकड़ता है- (सँपेरा)

जो पीने योग्य हो- (पेय)

जो नाचता है- (नर्तक, नृत्यकार)

जो अभिनय करता है- (अभिनेता)

जो कुछ नहीं जानता है- (अज्ञ)

जो अग्र (आगे) की बात सोचता है- (अग्रशोची)

जो नया आया हुआ हो- (नवागन्तुक)

जो भू के गर्भ (भीतर) का हाल जानता हो- (भूगर्भवेत्ता)

जो कहा न जा सके- (अकथनीय)

जो भू को धारण करता है- (भूधर)

जो सर्वशक्तिसम्पत्र है- (सर्वशक्तिमान्)

AJAY KUMAR

जो कर्त्तव्य से च्युत हो गया है- (कर्त्तव्यच्युत)

जो (बात) वर्णन के अतीत (बाहर) है- (वर्णनातीत)

जो स्त्री सूर्य भी न देख सके- (असूर्यम्पाश्या)

जो अत्यन्त कष्ट से निवारित किया जा सके- (दुर्निवार)

जो आग्रह सत्य हो- (सत्याग्रह)

जो मुकदमा दायर करता है- (वादी)

जो अश्व (घोड़े) का आरोही (सवार) है- (अश्वारोही)

जो संगीत जानता है- (संगीतज्ञ)

जो कला जानता है या कला की रचना करता है- (कलाकार)

जो सरों में जनमता है- (सरसिज)

जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है- (कुलीन)

जो सबमें व्याप्त है- (सर्वव्यापी)

जो किसी की ओर (प्रति) से है- (प्रतिनिधि)

जो मुकदमा लड़ता रहता है- (मुकदमेबाज)

जो देने योग्य है- (देय)

जो देखा नहीं जा सकता- (अदृश्य)

जो वचन से परे हो-(वचनातीत)

जो कहा गया है-(कथित)

जो स्त्री के वशीभूत या उसके स्वभाव का है- (स्त्रैण)

जो बहुत बोलता है- (वाचाल)

जो स्त्री अभिनय करे- (अभिनेत्री)

जो पुरुष अभिनय करे- (अभिनेता)

AJAY KUMAR

जो दूसरे से ईर्ष्या करता है- (ईर्ष्यालु)

जो शत्रु की हत्या करता है- (शत्रुघ)

जो पिता की हत्या कर चुका- (पितृहन्ता)

जो माता की हत्या कर चुका- (मातृहन्ता)

जो अपनी हत्या करता है- (आत्मघाती)

जो पर के अधीन है- (पराधीन)

जो देखने में प्रिय लगता है- (प्रियदर्शी)

जो नभ या ख (आकाश) में चलता है- (नभचर, खेचर)

जो द्वार का पालन (रक्षा) करता है- (द्वारपाल)

जो शास्त्र जानता है- (शास्त्रज्ञ)

जो कोई वस्तु वहन करता है- (वाहक)

जो पोत (जहाज) युद्ध का है- (युद्धपोत)

जो चक्र धारण करता है- (चक्रधर)

जो नष्ट होनेवाला है- (नश्वर)

जो सबको समान भाव से देखे- (समदर्शी)

जो भेदा या तोड़ा न जा सके- (अभेद्य)

जो कठिनाई (दुर ) से भेदा या तोड़ा जा सके- (दुर्भेद्य)

जो मापा न जा सके- (अपरिमेय)

जो प्रमेय (प्रमाण से सिद्ध) न हो- (अप्रमेय)

जो इच्छा के अधीन है- (इच्छाधीन)

जो दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करे- (स्थानापत्र)

जो विधि या कानून के विरुद्ध है- (अवैध, गैरकानूनी)

AJAY KUMAR

जो लोक में सम्भव न हो- (अलौकिक)

जो मन को हर ले- (मनोहर)

जो अनुकरण करने योग्य हो- (अनुकरणीय)

जो दायर मुकदमे का प्रतिवाद (बचाव या काट) करे- (प्रतिवादी)

जो राजगद्दी का अधिकारी हो- (युवराज)

जो धर्माचरण करता है- (धर्मात्मा)

जो पुस्तकों की आलोचना या समीक्षा करता है- (आलोचक, समीक्षक)

जो व्याख्या करता है- (व्याख्याता)

जो साँप पकड़ता और उसका खेल करता है- (सँपेरा)

जो मोक्ष चाहता हो- (मुमुक्षु)

जो स्मरण रखने योग्य है- (स्मरणीय)

जो पांचाल देश की है - (पांचाली)

जो किसी का पक्ष न ले- (निष्पक्ष)

जो यान (सवारी) जल में चलता है- (जलयान)

जो पुरुष लोहे की तरह बलिष्ठ है- (लौहपुरुष)

जो खाया न जा सके- अखाद्य

जो सबके आगे रहता हो- (अग्रणी)

जो नेत्रों से दिखाई न दे- (अगोचर)

जो खाली न जाय- (अचूक)

जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके- (अच्युत)

जो छूने योग्य न हो- (अछूत)

जो छुआ न गया हो- (अछूता)

AJAY KUMAR

जो बूढा न हो- (अजर)

जो न जाना गया हो- (अज्ञात)

जो अपनी बात से न टले- (अटल)

जो अपनी जगह से न डिगे- (अडिग)

जो सबके मन की जनता हो- (अंतर्यामी)

जो बीत गया है- (अतीत)

जो दबाया न जा सके- (अदम्य)

जो देखा न जा सके- (अदृश्य)

जो देखने योग्य न हो-(अदर्शनीय)

जो पहले न देखा गया हो- (अदृष्टपूर्व)

जो किसी विशेष समय तक ही लागू हो- (अध्यादेश)

जो परीक्षा में परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो- (अनुत्तीर्ण)

जो मापा न जा सके- (अपरिमेय)

जो आँखों के सामने न हो- (अप्रत्यक्ष/परोक्ष)

जो पूरा या भरा हुआ न हो- (अपूर्ण)

जो किसी की ओर मुँह किये हुए हो- (अभिमुख)

जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो- (अमर)

जो काव्य, संगीत आदि का रस न ले- (अरसिक)

जो इस लोक का न हो- (अलौकिक)

जो साधा (ठीक किया) न जा सके- (असाध्य)

जो शोक करने योग्य नहीं है- (अशोच्य)

जो स्त्री (ऐसी पर्दानशीन है कि) सूर्य को भी न देख सके- (असूर्यम्पश्या)

AJAY KUMAR

जो विधान या नियम के विरुद्ध हो- (असंवैधानिक)

जो पहले कभी न हुआ हो- (अभूतपूर्व)

जो सदा से चलता आ रहा है- (अनवरत)

जो आगे की न सोचता हो- (अदूरदर्शी)

जो समय पर न हो- (असामयिक)

जो दिया न जा सके- (अदेय)

जो मानव के योग्य न हो- (अमानुषिक)

जो हिसाब-किताब की जाँच करता हो- (अंकेक्षक)

जो पहले कभी घटित न हुआ हो- (अघटित)

जो पहले कभी नहीं सुना गया- (अश्रुतपूर्व)

जो जन्म लेते ही गिर या मर गया हो- (आदण्डपात)

जो आलोचना के योग्य हो- (आलोच्य)

जो इंद्रियों के ज्ञान के बाहर है- (इंद्रियातीत)

जो छाती के बल चलता हो- (उदग (सर्प)

जो धरती फोड़ कर जनमता है- (उदभिज)

जो उद्धार करता है- (उद्धारक)

जो किसी नियम को न माने- (उच्छृंखल)

जो भूमि उपजाऊ हो- (उर्वरा)

जो दिन में एक बार भोजन करता है- (एकाहारी)

जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो- (ऐच्छिक)

जो कान को कटु लगे- (कर्णकटु)

जो कटु बोलता है- (कटुभाषी)

AJAY KUMAR

जो कष्ट को सहन कर सके- (कष्टसहिष्णु)

जो काम से जी चुराता है- (कामचोर)

जो कर्तव्य से च्युत हो गया है- (कर्तव्यच्युत)

जो पुरुष कविता रचता है- (कवि)

जो स्त्री कविता रचती है- (कवियित्री)

जो कल्पना से परे हो- (कल्पनातीत)

जो केन्द्र की ओर उन्मुख होता हो- (केन्द्राभिमुख)

जो सदैव हाथ में खड्ग लिए रहता हो- (खड़गहस्त)

जो गाँव से सम्बन्धित हो- (ग्रामीण)

जो कठिनाइयों से पचता है- (गरिष्ठ/गुरुपक)

जो गिरि (पहाड़) को धारण करता हो- (गिरधारी)

जो छिपाने योग्य हो- (गोपनीय)

जो चक्र धारण करता हो- (चक्रधारी/चक्रधर)

जो चंद्र धारण करता हो- (चंद्रधारी)

जो चिरकाल तक बना रहे- (चिरस्थायी)

जो चर्चा का विषय हो- (चर्चित)

जो अपने स्थान से डिग गया हो- (च्युत)

जो जरायु (गर्भ की थैली) से जनमता है- (जरायुज)

जो यान जल में चलता हो- (जलयान)

जो तर्क योग्य हो- (तार्किक)

जो तर्क के आधार पर सही सिद्ध हो- (तर्कसंगत)

जो तीन गुणों (सत्व, रज, व तम) से परे हो- (त्रिगुणातीत)

AJAY KUMAR

जो दर्शन-शास्त्र का ज्ञाता हो- (दार्शनिक)

जो द्वार का पालन (रक्षा) करता है- (द्वारपाल)

जो मुश्किल से प्राप्त हो- (दुष्प्राप्य)

जो विलंब या टालमटोल से काम करे- (दीर्घसूत्री)

जो वस्तु दूसरे के यहाँ रखी हो- (धरोहर)

जो एक अक्षर भी न जानता हो- (निरक्षर)

जो तेजहीन हो- (निस्तेज)

जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो- (निःस्वार्थ)

जो कामना रहित हो- (निष्काम)

जो चिन्ता से रहित हो- (निश्चिंत)

जो उत्तर न दे सके- (निरुत्तर)

जो न्याय जनता हो- (नैयायिक)

जो अति (बहुत) लघु (छोटा) नहीं है- (नातिलघु)

जो अति (बहुत) दीर्घ (बड़ा) नहीं है- (नातिदीर्घ)

जो नृत्य करता है- (नृत्यकार/नर्तक)

जो नीचे लिखा गया है- (निम्नलिखित)

जो दृष्टि के क्षेत्र से परे हो- (परोक्ष)

जो परायों का अर्थ (हित) चाहता है- (परमार्थी)

जो अपने पथ से भटक गया हो- (पथभ्रष्ट)

जो दूसरों का भला चाहने वाला हो- (परार्थी)

जो दूसरों का उपकार करने वाला हो)- (परोपकारी)

जो पृथ्वी से सम्बन्धित हो- (पार्थिव)

AJAY KUMAR

जो पिंड से जनमता है- (पिंडज)

जो उक्ति बार-बार कही जाय- (पुनरुक्ति)

जो किसी का प्रतिनिधित्व (किसी की जगह काम) करता है- (प्रतिनिधि)

जो शीघ्र किसी बात या युक्ति को सोच ले- (प्रत्युत्पन्नमति)

जो प्रणाम करने योग्य हो- (प्रणम्य)

जो मुकदमे का प्रतिवाद करे- (प्रतिवादी)

जो पहरा देने वाला हो- (प्रहरी)

जो पूछने योग्य हो- (प्रष्टव्य)

जो प्रिय बोलता हो- (प्रियवादी)

जो दूसरे के अधीन हो- (पराधीन)

जो प्रशंसा के योग्य हो- (प्रशंसनीय)

जो अपने मातृभूमि छोड़ विदेश में रहता हो- (प्रवासी)

जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो- (फलाहारी)

जो बुद्धि द्वारा जाना जा सके- (बुद्धिजीवी)

जो भाग्य की धनी हो- (भाग्यवान)

जो भू धारण करता है- (भूतेश)

जो पृथ्वी के गर्भ (भीतर) के हाल/शास्त्र जानता हो- (भूगर्भवेत्ता/भूगर्भशास्त्री)

जो पूर्व में था या हुआ पर अभी नही है - (भूतपूर्व)

जो मछली का आहार करता है- (मत्स्याहारी)

जो हाथों से मुक्त है अर्थात अधिक देने वाला- (मुक्तहस्त)

जो एक स्थान पर टिक कर नहीं रहता- (यायावर)

जो युद्ध में स्थिर रहता है- (युधिष्ठिर)

AJAY KUMAR

जो क्रम के अनुसार हो- (यथाक्रम)

जो रंग (नाट्य) का मंच (स्टेज) है- (रंगमंच)

जो रथ पर सवार है- (रथी)

जो राज्य या राजा से द्रोह करे- (राजद्रोही)

जो राजनीति जानता है- (राजनीतिज्ञ)

जो भूमि का हिसाब-किताब रखता हो- (लेखपाल)

जो आसानी से पचता हो- (लघुपाक)

जो वर्णन के बाहर हो- (वर्णनातीत)

जो पूर्ण रूप से बहरा हो- (वज्रबधिर)

जो मुकदमा दायर करता है- (वादी /मुदई)

जो कोई वस्तु वहन करता है- (वाहक)

जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो- (विधर्मी)

जो विश्व भर का बंधु है- (विश्वबंधु)

जो विषयों में आसक्त है- (विषयासक्त)

जो विषय विचार में आ सकता है- (विचारगम्य)

जो विश्वास करने योग्य हो- (विश्वसनीय)

जो विश्व का हित चाहता है- (विश्वहितैषी)

जो व्याख्या करता हो- (व्याख्याता)

जो शक्ति का उपासक हो- (शाक्त)

जो अन्न और साग-सब्जी खाता हो- (शाकाहारी)

जो तेज चलता हो- (शीघ्रगामी)

जो सुनने योग्य हो- (श्रोतव्य/श्रवणीय)

AJAY KUMAR

जो सुनने में मधुर हो- (श्रुतिमधुर)

जो संगीत जनता हो- (संगीतज्ञ)

जो सबको एकसमान देखता है- (समदर्शी)

जो किसी सभा का सदस्य हो- (सभासद)

जो सबको प्यारा है- (सर्वप्रिय)

जो सव्य (बायें हाथ से हथियार आदि चलाने में) सध हुआ हो- (सव्यसाची)

जो नाटक का सूत्र धारण (संचालन) करता है- (सूत्रधार)

जो दया के साथ (दयालु) है- (सदय)

जो सरलता से बोध्य (समझने योग्य) हो- (सुबोध)

जो सर्वशक्तिसंपन्न है- (सर्वशक्तिमान)

जो स्मरण करने योग्य है- (स्मरणीय)

जो स्त्री के वशीभूत या उसके स्वभाव का हो- (स्त्रैण)

जो स्वयं ही सिद्ध (ठीक) हो- (स्वयंसिद्ध)

जो दूसरे की हत्या करता है- (हत्यारा)

जिसके पाणि (हाथ) में चक्र है- (चक्रपाणि (विष्णु))

जिसके पाणि में वज्र है- ( वज्रपाणि (इन्द्र) )

जिसके पाणि में वीणा है- ( वीणापाणि (सरस्वती) )

जिसके आने की तिथि (मालूम) न हो- (अतिथि)

जिसके शेखर पर चन्द्र हो- ( चन्द्रशेखर (शिव) )

जिसके पार देखा जा सके- (पारदर्शक)

जिसके पार देखा न जा सके- (आपारदर्शक)

जिसके भीतर का तापमान समान स्थिति में रहे- (वातानुकूलित)

AJAY KUMAR

जिसके हृदय में ममता नहीं है- (निर्मम)

जिसके हृदय में दया नहीं है- (निर्दय)

जिसके कुल का पता ज्ञात न हो- (अज्ञातकुल)

जिसके चूड़ा पर चन्द्र रहे- (चन्द्रचूड़)

जिसके हाथ में चक्र हो- (चक्रपाणि)

जिसके विषय में उल्लेख करना आवश्यक हो- (उल्लेखनीय)

जिसके पास करोड़ों रूपये हों- (करोड़पति)

जिसके लम्बे-लम्बे बिखरे बाल हों- (झबरा)

जिसके हृदय में ममता न हो- (निर्मम)

जिसके हृदय में दया न हो- (निर्दय)

जिसके बिना कार्य न चल सके- (अपरिहार्य)

जिसके विषय में विवाद हो- (विवादास्पद)

जिसके नख सूप के समान हो- (शूर्पणखा)

जिसके हाथ में शूल हो- (शूलपाणि) (शिव)

जिसके पास शक्ति न हो- (निर्बल)

जिसके हृदय में पाप न हो- (निष्पाप)

जिसके बारे में मतभेद न हो- (निर्विवाद)

जिसके पास कोई रोजगार न हो- (बेरोजगार)

जिसके लोचन (आँखें) सुंदर हों- (सुलोचन)

जिसके भीतर की हवा का तापमान सम स्थिति में रखा गया हो- (वातानुकूलित)

जिसके चार पद है- (चतुष्पद)

जिसके आने की तिथि न हो- (अतिथि)

AJAY KUMAR

जिसके दो पद (पैर) हैं- (द्विपद)

जिसके पास कुछ भी न हो- (अकिंचन)

जिसके ह्रदय में दया हो- (दयावान)

जिसके समान कोई दूसरा न हो- (अद्वितीय)

जिसके आने की तिथि न हो- (अतिथि)

जिसके कोई संतान न हो- (निसंतान)

जिसके समान दूसरा न हो- (अद्वितीय)

जिसके पास कुछ भी न हो- (अकिंचन)

जिसके नीचे रेखा हो- (रेखांकित)

जिसके मन में कोई कपट न हो- (निष्कपट)

जिसके कोई संतान न हो- (निस्संतान)

जिसके पास लाख रूपये की सम्पत्ति हो- (लखपति)

जिसका तेज निकल गया है- (निस्तेज)

जिसका आकार न हो- (निराकार)

जिसका पति जीवित हो- (सधवा)

जिसका अंत न हो- (अनन्त)

जिसका कारण पृथ्वी है या जो पृथ्वी से सम्बद्ध है- (पार्थिव)

जिसका उदर लंबा हो- (लंबोदर)

जिसका निवारण नहीं किया जा सके- (अनिवार्य)

जिसका इलाज न हो सके- (असाध्य)

जिसका विश्वास न किया जा सके- (अविश्वसनीय)

जिसका मूल्य न आँका जा सके- (अमूल्य)

AJAY KUMAR

जिसका कोई अर्थ न हो- (निरर्थक)

जिसका वर्णन न किया जा सके- (वर्णनातीत)

जिसका पार न पाया जाए-(अपार)

जिसका संबंध पश्चिम से हो- (पाश्चात्य)

जिसका आचरण अच्छा न हो- (दुराचारी)

जिसका कोई मूल्य न हो- (अमूल्य)

जिसका जन्म न हो - (अजन्मा)

जिसका कोई आधार न हो- (निराधार)

जिसका पति जीवित हो- (सधवा)

जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो- (अजातशत्रु)

जिसका कोई नाथ न हो- (अनाथ)

जिसका जन्म अनु (पीछे) हुआ हो- (अनुज)

जिसका जन्म पहले हुआ हो- (अग्रज)

जिसका ज्ञान इन्द्रियों से परे हो- (अगोचर)

जिसका कोई दूसरा उपाय न हो- (अनन्योपाय)

जिसका आदर न किया गया हो- (अनादृत)

जिसका वचन द्वारा वर्णन न किया जा सके- (अनिवर्चनीय)

जिसका निवारण न किया जा सके- (अनिवार्य)

जिसका उच्चारण न किया जा सके- (अनुच्चरित)

जिसका अनुभव किया गया हो- (अनुभूत)

जिसका मन किसी दूसरी ओर हो- (अन्यमनस्यक/अनमना)

जिसका कोई निश्चित घर न हो- (अनिकेत)

AJAY KUMAR

जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो- (अभिजात)

जिसका विभाजन न किया जा सके- (अविभाजित)

जिसका मन उदार हो- (उदारमना)

जिसका मन महान हो- (महामना

जिसका हृदय उदार हो- (उदारहृदय)

जिसका उल्लेखित किया गया हो- (उल्लिखित)

जिसका चित्त एक जगह स्थिर हो- (एकाग्रचित)

जिसका सँबन्ध किसी एक देश से हो- (एकदेशीय)

जिसका उच्चारण ओष्ठ (औंठ) से हो- (ओष्ठ्य)

जिसका संबंध उपनिवेश या उपनिवेशों से हो- (औपनिवेशिक)

जिसका संबंध उपन्यास से हो- (औपन्यासिक)

जिसका जन्म छोटी (अन्त्य) जाति में हुआ हो- (अन्त्यज)

जिसका जन्म अनु (पीछे) हुआ हो- (अनुज)

जिसका खण्डन न हो सके- (अकाट्य)

जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो- (क्षिप्रहस्त)

जिसका कोई शुल्क न लिया जाय- (निःशुल्क)

जिसका कोई आकार न हो- (निराकार)

जिसका कोई भय न हो- (निर्भय)

जिसका दमन कठिन हो- (दुर्दम्य/दुर्दात)

जिसका कोई आधार न हो- (निराधार)

जिसका कोई आश्रय न हो- (निराश्रय)

जिसका उदर लम्बा (बड़ा) हो- (लम्बोदर)

AJAY KUMAR

जिसका मूल नहीं है- (निर्मूल)

जिसका कोई अंग बेकार हो- (विकलांग)

जिसका आचार अच्छा हो- (सदाचारी)

जिसका कोई आकार हो- (साकार)

जिसका हृदय भग्न हो- (भग्नहृदय)

जिसका चिंतन किया जाना चाहिए- (चिंतनीय)

जिसकी चिकित्सा की जा सके- (चिकित्स्य)

जिसकी थाह न हो- (अथाह)

जिसकी सब जगह बदनामी- (कुख्यात)

जिसकी कोई उपमा न हो- (अनुपम)

जिसकी तीन भुजाएँ हो- (त्रिभुज)

जिसकी आयु बड़ी लम्बी हो- (दीर्घायु)

जिसको टाला न जा सके- (अनिवार्य, अटल)

जिसकी धर्म में निष्ठा हो- (धर्मनिष्ठ)

जिसकी पत्नी मर गई हो- (विधुर)

जिसका पति मर गया हो- (विधवा)

जिसकी सब जगह बदनामी- (कुख्यात)

जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो- (बहुचर्चित)

जिसकी कोई उपमा न हो- (अनुपम)

जिसकी चार भुजाएँ हों- (चतुर्भुज)

जिसकी कल्पना की जा सके- अकल्पनीय

जिसकी चिन्ता नहीं हो सकती- (अचिन्त्य)

AJAY KUMAR

जिसकी अपेक्षा (उम्मीद) हो- (अपेक्षित)

जिसकी गहराई की थाह न लग सके- (अथाह)

जिसकी परिभाषा देना संभव न हो- (अपरिभाषित)

जिसकी आशा न की जाय- (अप्रत्याशित)

जिसका कोई हिस्सा टूटकर अलग हो गया हो- (खंडित)

जिसकी बुद्धि कुश के अग्र (नोक) की तरह तेज हो- (कुशाग्रबुद्धि)

जिसकी घोषणा की गयी हो- (घोषित)

जिसकी बाँहें जानु (घुटने) तक पहुँचती हो- (आजानुबाहु)

जिसकी बाँहें अधिक लंबी हो- (प्रलंबबाहु)

जिसकी उपमा न दी जा सके- (निरुपम)

जिसकी आत्मा महान हो- (महात्मा)

जिसकी भुजाएँ बड़ी हो- (महाबाहु)

जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो- (सुग्रीव)

जिसकी कल्पनान की जा सके- (अकल्पनीय)

जिसकी चिन्ता नहीं हो सकती- (अचिन्तनीय)

जिसकी आशा न की गई हो- (अप्रत्याशित)

जिसकी बाहुएँ दीर्घ है- (दीर्घबाहु)

जिसकी सीमा न हो- (असीम)

जिसकी पत्नी साथ में न हो- (विपत्नीक)

जिसकी सूचना राजपत्र में दी गयी हो- (राजपत्रित)

जिसकी जीविका बुद्धि के बल पर चलती हो- (बुद्धिजीवी)

जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो- (जितेंद्रिय)

AJAY KUMAR

जिसने चित्त किसी विषय में दिया (लगाया) है- (दत्तचित)

जिसने ऋण चुका दिया हो- (उऋण) जिसने किसी विषय में मन लगा लिया हो- (दत्तचित)

जिसने गुरु से दीक्षा ली हो- (दीक्षित)

जिसने बहुत कुछ सुन रखा हो- (बहुश्रुत)

जिसने बहुत कुछ देखा हो- (बहुदर्शी)

जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त की है- (लब्धप्रतिष्ठ)

जिसने मृत्यु को जीत लिया है- (मृत्युंजय)

जिसको प्राप्त करना बहुत कठिन हो- (दुर्लभ)

जिसको लाँघना कठिन हो- (दुर्लघ्य)

जिसको रोकना या निवारण करना कठिन हो- (दुर्निवार)

जिसमे दया हो- (दयालु)

जिसमे धैर्य न हो- (अधीर)

जिसमे सहन शक्ति हो- (सहिष्णु)

जिसमे रस हो- (सरस)

जिसमे रस न हो- (नीरस)

जिसमे दया न हो- (निर्दय)

जिसमे शक्ति न हो- (अशक्त)

जिसमे शक्ति नहीं है- (अशक्त)

जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो- (अक्षम)

जिसमें सामर्थ्य नहीं है- (असमर्थ)

जिसमें ढाल हो- (ढालू/ढालवाँ)

जिसमें कोई दोष न हो- (निर्दोष)

AJAY KUMAR

जिसमें हानि या अनर्थ का भय न हो- (निरापद)

जिसमें तेज नहीं है- (निस्तेज)

जिसमें मल (गंदगी) न हो- (निर्मल)

जिसमें पाँच कोने हों- (पंचकोण)

जिसमें प्रतिभा है- (प्रतिभा)

जिसमें जाना या समझना कठिन हो- (दुर्गम)

जिसमें मल (गंदगी) हो- (मलिन)

जिसमें किसी प्रकार का विकार हो- (विकृत)

जिसमें सात रंग हो- (सतरंगा)

जिसपर विश्वास किया गया है- (विश्वस्त)

जिससे घृणा की जाए- (घृणित)

जिस हँसी से अट्टालिका तक हिल जाय- (अट्टहास)

जिस पर विचार न किया गया हो- (अविचारित)

जिस पर आक्रमण न किया गया हो- (अनाक्रांत)

जिस पर मुकदमा चल रहा हो-(अभियुक्त)

जिस पर कोई नियंत्रण न हो- (अनियंत्रित)

जिसे अधिकार दिया गया हो- (अधिकृत)

जिस पर निर्णय न हुआ हो- (अनिर्णीत)

जिस पर अनुग्रह किया गया हो- (अनुग्रहीत)

जिस पर किसी अन्य को कुछ अधिकार न हो- (एकाधिकार)

जिस लड़की का विवाह न हुआ हो- (कुमारी)

जिस भूमि में कुछ पैदा न होता हो- (ऊसर)

AJAY KUMAR

जिस पर किसी काम का उत्तरदायित्व हो- (उत्तरदायी)

जिस पर चिह्न लगाया गया हो- (चिह्नित)

जिस स्त्री के कभी संतान न हुई हो- (वंध्या (बाँझ))

जिस पर विश्वास न किया जा सके- (अविश्वनीय)

जिस स्त्री का धव (पति) मर गया है- (विधवा)

जिस पर विश्वास न किया जा सके- (अविश्वनीय)

जिस भूमि पर कुछ न उग सके- (ऊसर)

जिस पर अभियोग लगाया गया हो- (अभियुक्त)

जिस पर उपकार किया गया हो- (उपकृत)

जिस पुरुष की स्त्री मर गयी है- (विधुर)

जिस स्त्री को कोई सन्तान न हो- (वन्ध्या, बाँझ)

जिस पर लम्बी-लम्बी धारियाँ हों- (धारीदार)

जिस समय बड़ी मुश्किल से भिक्षा मिलती है- (दुर्भिक्ष)

जिस पर दिनांक (तारीख का अंक) लगाया गया हो- (दिनांकित)

जिस पर किसी प्रकार का अंकुश (नियंत्रण) न हो- (निरंकुश)

जिस स्थान पर अभिनेता अपना वेश-विन्यास करते हैं- (नेपथ्य)

जिस स्थान पर बैठकर माल खरीदा और बेचा जाता हो- (फड़)

जिस कागज पर मानचित्र, विवरण या कोष्ठक अंकित हो- (फलक)

जिस पर विश्वास न किया जा सके- (विश्वासघाती)

जिस पर विश्वास किया गया है- (विश्वस्त)

जिस स्त्री का पति जीवित हो- (सधवा)

जिसे क्षमा न किया जा सके- (अक्षम्य)

AJAY KUMAR

जिसे दंड का भय न हो- (उदंड)

जिसे गुप्त रखा जाए- (गोपनीय)

जिसे दस आनन (मुख) हैं- (दशानन (रावण))

जिसे बहुत कम ज्ञान हो, थोड़ा जानने वाला- (अल्पज)

जिसे जीता न जा सके- (अजेय)

जिसे देखकर डर (भय) लगे- (डरावना, भयानक)

जिसे क्षमा न किया जा सके- (अक्षम्य)

जिसे कभी बुढापा न आये- (अजर)

जिसे कोई जीत न सके- (अजेय)

जिसे दंड का भय न हो- (उदंड)

जिस भूमि पर कुछ न उग सके- (ऊसर)

जिसे ईश्वर या वेद में विश्वास न हो- (नास्तिक)

जिसे ईश्वर या वेद में विश्वास हो- (आस्तिक)

जिसे भय नहीं है- (निर्भीक, निर्भय)

जिसे नहीं जीता जा सके- (अजेय)

जिसे या जिसका मूल नहीं है- (निर्मूल)

जिसे जानना चाहिए- (ज्ञातव्य)

जिसे पढ़ा न जा सके- (अपाठ्य)

जिसे भेदा (तोड़ा) न जा सके- (अभेद्य)

जिसे आश्वासन दिया गया हो- (आश्वस्त)

जिसे वाह्य जगत का ज्ञान न हो- (कुपमण्डूक)

जिसे त्याग देना उचित हो- (त्याज्य)

AJAY KUMAR

जिसे क्रय किया गया हो- (क्रीत)

जिसे समझना बहुत कठिन हो- (दुष्कर)

जिसे भेदना या तोड़ना कठिन हो- (दुर्भेद्य)

जिसे देश से निकाला गया हो- (निर्वासित)

जिसे कोई भ्रम या सन्देह न हो- ( निर्भ्रन्त)

जिसे कोई आकांक्षा न हो- (निःस्पृह)

जिसे मोक्ष की कामना हो- (मुमुक्षु)

जिसे देख या सुनकर रोम (रोंगटे) खड़े हो जायें- (रोमांचकारी)

जिसे सरलता से पढ़ा जा सके- (सुपाठ्य)

जिसे सताया गया हो- (दलित)

जहाँ पहुँचा न जा सके- (अगम्य)

जहाँ पहुँचना कठिन हो- (दुर्गम)

जहाँ लोगों का मिलन हो- (सम्मेलन)

जानने की इच्छा रखने वाला- (जिज्ञासु)

जहाँ नदियों का मिलन हो- (संगम)

जन्म भर- (आजन्म)

जहाँ जाना संभव न हो- (अगम)

जहाँ तक सध सके- (यथासाध्य)

जहाँ खाना मुफ्त मिलता है- (सदाव्रत)

जहाँ गमन (जाया) न किया जा सके- (अगम्य)

जहाँ तक हो सके- (यथासंभव)

जहाँ तक सध सके- (यथासाध्य)

AJAY KUMAR

जहाँ औषधि दानस्वरूप मिलती है- (दातव्य, औषधालय)

जीने की इच्छा- (जिजीविषा)

जानने की इच्छा-(जिज्ञासा)

जल में जन्म लेने वाला- (जलज)

जल में रहने वाले जीव-जन्तु- (जलचर)

जान से मारने की इच्छा- (जिघांसा)

जीतने की इच्छा- (जिगीषा)

जोतने का काम- (जुताई)

जेठ का पुत्र- (जेठौत)

जनता द्वारा संचालित शासन- (जनतन्त्र)

जन्म से सौ वर्ष का समय- (जन्मशती)

जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह- (थक्का)

जल में लगने वाली आग- (बड़वाग्नि)

जिनकी ग्रीवा (गर्दन) सुन्दर हो- (सुग्रीव)

जैसा चाहिए वैसा- (यथोचित)

युद्ध की इच्छा रखने वाला- (युयुत्सा)

यथार्थ (सच) कहनेवाला-( यथार्थवादी)

यात्रा करनेवाला- (यात्री)

जीवन भर- (आजीवन)

जीतने की इच्छा- (जिगीषा)

जारी किया गया आधिकारिक आदेश- (अध्यादेश)

जुआ खेलने का स्थान- (फड़)

AJAY KUMAR

जनता में प्रचलित सुनी-सुनाई बात- (किंवदंती)

जानने की इच्छा रखने वाला- (जिज्ञासु)

जनता द्वारा चलाया जाने वाला राज- (जनतंत्र)

जल में जनमनेवाला- (जलज)

( झ )

झूठ बोलने वाला-(झूठा)

झमेला करनेवाला- (झमेलिया)

झीं-झीं की तेज आवाज करने वाला कीड़ा- (झींगुर)

( त )

तप करने वाला- (तपस्वी)

तीनों लोकों का स्वामी- (त्रिलोकी)

तेजवाला- (तेजस्वी)

तीन कालों की बात जानने वाला- (त्रिकालज्ञ)

तीन युगों में होने वाला- (त्रियुगी)

तीन नदियों का संगम- (त्रिवेणी)

तीन लोको का समूह- (त्रिलोक)

तैरने की इच्छा- (तितीर्षा)

तर्क के द्वारा जो माना गया हो- (तर्कसंगत)

तीन वेदों को जाननेवाला- (त्रिवेदी)

तीन कालों को देखने वाला- (त्रिकालदर्शी)

तीन माह में एक बार होने वाला- (त्रैमासिक)

AJAY KUMAR

तर्क के द्वारा जो सम्मत(माना जा चुका) है- (तर्कसम्मत)

तेज गति से चलने वाला- (द्रुतगामी/तीव्रगामी)

(द)

दूर की सोचने वाला- (दूरदर्शी)

दुसरे देश से अपने देश में समान आना- (आयात)

दूसरों की बातों में दखल देना- (हस्तक्षेप)

दिल से होने वाला- (हार्दिक)

दया करने वाला- (दयालु)

दूसरों पर उपकार करने वाला- (उपकारी)

दूसरों के दोष को खोजने वाला- (छिद्रान्वेसी)

दूसरे के पीछे चलने वाला- (अनुचर)

दुखांत नाटक- (त्रासदी)

दर्द से भरा हुआ- (दर्दनाक)

देखने योग्य- (दर्शनीय)

दूसरों की बातों में दखल देना- (हस्तक्षेप)

दिल से होने वाला- (हार्दिक)

दो बार जन्म लेनेवाला- (द्विज)

दुःख देनेवाला- (दुःखद)

दर्शन के योग्य- (दर्शनीय)

दिन पर दिन- (दिनानुदिन)

द्रुपद की पुत्री- (द्रौपदी)

AJAY KUMAR

देखने योग्य- (दर्शनीय)

द्रुत गमन करनेवाला- (द्रुतगामी)

दाव (जंगल) का अनल (आग)- (दावानल)

दूसरों के गुणों में दोष ढूँढने की वृति का न होना- (अनसूया)

दोपहर के बाद का समय- (अपराह)

देश के लिए अपने प्राण देने वाला- (शहीद)

द्वार या आँगन के फर्श पर रंगों से चित्र बनाने या चौक पूरने की कला- (अल्पना)

दूसरे के हित में अपने आप को संकट में डालना- (आत्मोत्सर्ग)

देश में विदेश से माल आने की क्रिया- (आयात)

दूसरों की उन्नति को न देख सकना- (ईर्ष्या)

दूसरों के दोषों को खोजना- (छिद्रान्वेषण)

दूसरों के दोषों को ढूँढने वाला- (छिद्रान्वेषी)

दिन रात ठाढ़े (खड़े) रहने वाले साधु- (ठाढ़ेश्वरी)

दस वर्षो का समय- (दशक)

दाव (जंगल) में लगने वाली आग- (दावानल)

दिन पर दिन- (दिनोंदिन)

दो बार जन्म लेने वाला- (द्विज)

देने की इच्छा- (दित्सा)

दैव या प्रारब्ध सम्बन्धी बातें जानने वाला- (देवज्ञ)

दिन के समय अपने प्रिय से मिलने जाने वाली नायिका- (दिवाभिसारिका)

दशरथ का पुत्र- (दशरथि)

देखने की इच्छा- (दिदृक्ष)

AJAY KUMAR

दण्ड दिये जाने योग्य- (दण्डनीय)

दो भाषायें बोलने वाला- (द्विभाषी)

दो वेदों को जाननेवाला- (द्विवेदी)

देवताओं पर चढ़ाने हेतु बनाया गया दही, घी, जल, चीनी, और शहद का मिश्रण- (मधुपर्क)

दूसरे के स्थान पर काम करने वाला- (स्थानापन्न)

दोपहर के बाद का समय- (अपराह्न)

दैहिक, दैविक व भौतिक ताप या कष्ट- (त्रिताप)

दीवार पर बने हुए चित्र- (भित्तिचित्र)

दूसरे के हाथ में गया हुआ- (हस्तान्तरित)

( ध )

धरती और आकाश के बीच का स्थान- (अंतरिक्ष)

धन से संबंध रखने वाला- (आर्थिक)

धन के देवता- (कुबेर)

धर्म में रूचि रखने वाला- (धर्मात्मा)

ध्यान करने योग्य या लक्ष्य- (ध्येय)

धन देनेवाला (व्यक्ति या देवता)- (धनद, कुबेर)

धर्म में रूचि रखने वाला- (धर्मात्मा)

धर्म या शास्त्र के विरुद्ध कार्य- (अधर्म)

( न )

नापाक इरादे से की जाने वाली मन्त्रणा या साजिश- (दुरभिसन्धि)

AJAY KUMAR

नहीं मरनेवाला- (अमर)

नहीं खाने योग्य- (अखाद्य)

नव (अभी-अभी) जनमा हुआ- (नवजात)

न टूटने वाला- (अटूट)

नीचे की ओर मुख किये हुए- (अधोमुख)

नीचे की ओर लाना या खींचना- (अपकर्ष)

नाक से रक्त बहने का रोग- (नकसीर)

नख से शिखा तक के सब अंग- (नखशिख)

नष्ट होने वाला- (नश्वर)

नभ (आकाश) में विचरण करने वाला- (नभचर/खेचर)

नया उदित होने वाला- (नवोदित)

नदी से सींचा जानेवाला प्रदेश- (नदीमातृक)

नया-नया आया हुआ- (नवागन्तुक)

नगर में जन्म लेने वाला- (नागरिक)

निशि में विचरण करने वाला- (निशाचर)

निर्वाचन में अपना मत देने वाला- (निर्वाचक)

नए युग या प्रवृत्ति का निर्माण करने वाला- (युगनिर्माता)

नए युग या प्रवृत्ति का प्रवर्तन (लागू करने) वाला- (युगप्रवर्तक)

न बहुत शीत (ठंडा) न बहुत उष्ण (गर्म)- (समशीतोष्ण)

न हो सकने वाला- (अशक्य/असंभव)

नगर में रहनेवाला- (नागरिक)

नगर का रहनेवाला- (नागरिक, नागर)

AJAY KUMAR

नया (तुरंत का) जनमा हुआ- (नवजात)

निशा में विचरण करनेवाला- (निशाचर)

निन्दा करने योग्य- (निन्दनीय)

न्याय करने वाला- (न्यायाधीश)

नियम विरुद्ध या निन्दनीय कार्य करने वालों की सूची- (काली सूचि/ब्लैक लिस्ट)

( ट, ठ )

टाइप करने की कला- ( टंकण)

ठीक अपने क्रम से आया हुआ- (क्रमागत)

ठगों का मोदक/लड्डू जिसमें बेहोश करने वाली- (ठगमोदक/ठगलड्डू)

ठकठक करके बर्तन बनानेवाला- (ठठेरा)

ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे- (ठठेरमंजारिका)

ठन ठन की आवाज- (ठनकार)

ठूसकर भरा हुआ- (ठसाठस)

ठीका लेनेवाला- (ठीकेदार)

( ड )

डंडी मारनेवाला- (डंडीमार)

डाका मारनेवाला- (डकैत)

डफली बजानेवाला- (डफालची /डफाली)

डाका मारने का काम- (डकैती)

ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार- (ड्योढ़ीदार)

AJAY KUMAR

( ढ )

ढिंढोरा पिटने वाला- (ढिंढोरिया)

ढालने का काम- (ढलाई)

ढीला होने का भाव- (ढिलाई)

ढोंग रचनेवाला- (ढोंगी)

ढोलक बजानेवाला- (ढोलकिया)

( प )

पंद्रह दिन में एक बार होने वाला- (पाक्षिक)

पुत्र की वधू- (पुत्रवधू)

पुत्र का पुत्र- (पौत्र)

पढ़ने योग्य- (पठनीय)

पति-पत्नी का जोड़ा- (दम्पति)

प्रतिदिन होने वाला-(प्रतिदिन)

पथ का प्रदर्शन करनेवाला- (पथप्रदर्शक)

प्रिय बोलने वाली स्त्री- (प्रियंवदा)

पूजने योग्य- (पूजनीय, पूज्य)

पुत्र की वधू- (पुत्रवधू)

पुत्र का पुत्र- (पौत्र)

पढ़ने योग्य- (पठनीय)

पाद (पैर) से मस्तक (सिर) तक- (आपादमस्तक)

पूछने योग्य- (प्रष्टव्य)

AJAY KUMAR

पर्ण (पत्ते) की बनी हुई कुटी- (पर्णकुटी)

प्रकृतिसम्बन्धी- (प्राकृतिक)

पंक्ति में सबसे आगे खड़ा होने वाला- (अग्रसर)

परलोक का- (पारलौकिक)

परम्परा से चली आई हुई बात, उक्ति या कला- (अनुश्रुति)

पदार्थ का सबसे छोटा इन्द्रिय-ग्राह्य विभाग या मात्रा- (अणु)

पैर से लेकर सिर तक- (आपादमस्तक)

पूरब और उत्तर के बीच की दिशा- (ईशान)

पर्वत के पास की भूमि- (उपत्यका)

परब्रह्म का सूचक 'ओं' शब्द- (ओंकार)

पद, उम्र आदि के विचार से औरों से अपेक्षाकृत छोटा- (कनिष्ठ)

प्राचीन आदर्श के अनुकूल चलने वाला- (गतानुगतिका)

पृथ्वी की वह शक्ति जो सभी चीजों की अपनी ओर खींचती हो- (गुरुत्वाकर्षण)

पत्रों आदि को दूरस्थ स्थानों पर पहुँचाने वाली सेवा- (डाक सेवा)

पुलिस की बड़ी चौकी- (थाना)

पति-पत्नी का जोड़ा- (दम्पती)

पति के छोटे भाई की स्त्री- (देवरानी)

पंडितों में पंडित- (पंडितरा)

पथ का प्रदर्शन करने वाला- (पथ-प्रदर्शक)

पानी में डूबकर चलने वाली नाव- (पनडुब्बी)

पन्द्रह दिन में होने वाला- (पाक्षिक)

पीने की इच्छा- (पिपासा)

AJAY KUMAR

पिता की हत्या करनेवाला- (पितृहंता)

पिता की पिता- (पितामह)

पिता के पिता का पिता- (प्रपितामह)

प्राण देनेवाली औषधि- (प्राणदा)

पाप या अपराध करने पर दोषमुक्त होने के लिए किया जाने वाला धार्मिक या शुभ कार्य- (प्रायश्चित)

प्रिय बोलनेवाली स्त्री- (प्रियंवदा)

पिता से प्राप्त की हुई (सम्पत्ति)- (पैतृक)

प्रयोग में लाने योग्य- (प्रयोजनीय)

पर्वत की कन्या- (पार्वती)

पाने की इच्छा- (लिप्सा)

प्रतिकूल पक्ष का- (विपक्षी)

प्रतिदिन होने वाला- (दैनिक)

पर्वत पर चढ़ने वाला- (पर्वतारोही)

परीक्षा देने वाला- (परीक्षार्थी)

प्राणों पर संकट लाने वाला- (सांघातिक)

( फ )

फलनेवाला या फल (ठीक परिणाम) देनेवाला- (फलदायी)

फल-फूल खाने वाला- (शाकाहारी)

फेन से भरा हुआ- (फेनिल)

फेंककर चलाया जाने वाला हथियार- (अस्त्र)

( ब )

AJAY KUMAR

बुरा (दुर्) आग्रह- (दुराग्रह)

बुरे आचरण वाला- (दुराचारी)

बुरे चरित्र वाला- (दुश्चरित्र)

बच्चों के लिए काम की वस्तु- (बालोपयोगी)

बिलकुल बरबाद हो गया हो- (ध्वस्त)

बहुत तेज चलने वाला- (द्रुतगामी)

बिना वेतन का- (अवैतनिक)

बीता हुआ- (अतीत)

बेचनेवाला- (विक्रेता)

बिना आयास (परिश्रम) के- (अनायास)

बिना पलक गिराये- (एकटक)

बिना अंकुश का- (निरंकुश)

बिना पलक गिराये हुए- (अनिमेष)

बिना वेतन के कार्य करने वाला- (अवैतनिक)

बालक से वृद्ध तक- (आबालवृद्ध)

बेलों आदि से घिरा हुआ सुरम्य स्थान- (कुंज)

बहुत गप्पे हाँकनेवाला-(गपोड़िया)

बहुत सी घटनाओं का सिलसिला- (घटनावली, घटनाक्रम)

बरसात के चार महीने- (चतुर्मास)

बहुत डरनेवाला- (डरपोक)

बहुत दूर की बात पहले से ही सोच लेने वाला- (दूरदर्शी)

बहुत चंचल, दुष्ट और अपनी प्रशंसा करने वाला नायक- (धीरोद्धत)

AJAY KUMAR

बिना पलक गिराये हुए- (निर्निमेष)

बच्चा जनने वाली स्त्री- (प्रसूत)

बहुत-सी भाषाओं को बोलने वाला- (बहुभाषाभाषी)

बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला- (बहुभाषाविद)

बहुत से रूप धारण करने वाला- (बहुरूपिया)

बहुत बोलने वाला- (बहुभाषी)

बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाने वाला गीत- (लोरी)

बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का समय- (वयः सन्धि)

बिक्री करनेवाला- (विक्रेता)

बोलने की इच्छा- (विवाक्षा)

बिजली की तरह तीव्र वेग वाला- (विघुतवेग)

बिना माता-पिता का- (अनाथ)

बिजली की तरह कान्ति (चमक) वाला-(विधुत्प्रभ)

( भ )

भली प्रकार से सीखा हुआ- (अभ्यस्त)

भलाई चाहने वाला- (हितैषी)

भविष्य में होनेवाला- (भावी)

भौहों के बीच का ऊपरी भाग- (त्रिकुटी)

भोजन करने की इच्छा- (बुभुक्षा)

भविष्य में होनेवाला- (भावी)

भूतों का ईश्वर- (भूतेश)

भेड़ का बच्चा- (मेमना)

AJAY KUMAR

भलाई की इच्छा रखने वाला- (हितैषी)

भूत-वर्तमान-भविष्य को देखने (जानने) वाले- (त्रिकालदर्शी)

भूख से व्याकुल- (क्षुधातुर)

( म )

मास में एक बार आने वाला- (मासिक)

मांस न खाने वाला- (निरामिष)

मांस खाने वाला - (मांसाहारी)

मछली की तरह आँखों वाली- (मीनाक्षी)

मयूर की तरह आँखों वाली- (मयूराक्षी)

मिष्ट या मधुर भाषण करनेवाला- (मिष्टभाषी, मधुरभाषी)

मन की वृत्ति (अवस्था)- (मनोवृत्ति)

मरण तक- आमरण

मेघ की तरह नाद करनेवाला- (मेघनाद)

महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि- (चतुर्थी)

मूल बातों को संक्षेप में लिखना- (टिप्पणी)

मछली पकड़ने या बेचने वाली जाति विशेष- (धीवर)

मनन करने योग्य- (मननीय)

मित (कम)बोलने वाला- (मितभाषी)

माता की हत्या करनेवाला- (मातृहंता/मातृघाती)

मरने की इच्छा- (मुमूर्षा)

मुँह पर निकलने वाली फुंसियाँ- (मुँहासे)

मेघ की तरह नाद करनेवाला- (मेघनाद)

AJAY KUMAR

महल का भीतरी भाग- (अन्तःपुर)

मनपसन्द या नामांकित- (मनोनीत)

मांस आहार या भोजन करनेवाला- (मांसाहारी/मांसभोजी)

मिठाई बनाने और बेचने वाला- (हलवाई)

( य )

यात्रा करनेवाला- (यात्री)

यशवाला- (यशस्वी)

युद्ध में स्थिर रहता है- (युधिष्ठिर)

याचना करनेवाला- (याचक)

युग का निर्माण करनेवाला- (युगनिर्माता)

यात्रियों के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर- (धर्मशाला)

यश वाला- (यशस्वी)

युद्ध का जहाज- (युद्धपोत)

युद्ध की इच्छा रखने वाला- (युयुत्सा)

यथार्थ (सच) कहनेवाला- (यथार्थवादी)

( र )

राज्य के अधिपति द्वारा जारी किया गया वो आधिकारिक आदेश जो किसी विशेष समय तक ही लागू हो- (अध्यादेश)

रोगी की चिकित्सा करने वाला- (चिकित्सक)

रचना करने वाला- (रचयिता)

रात में घूमने वाला- (निशाचर)

रात और सन्ध्या के बीच की वेला- (गोधूलि)

राजनीतिज्ञों एवं राजदूतों की कला- (कूटनीति)

AJAY KUMAR

रात और सन्ध्या के बीच का समय- (गोधूलि)

रोगियों की चिकित्सा करने का स्थान- (चिकित्सालय)

रक्त में रँगा हुआ या भरा हुआ- (रक्तरंजित)

रात को दिखाई न देनेवाला रोग- (रतौंधी)

राष्ट्र का प्रमुख- (राष्ट्रपति)

राजा या राज्य के प्रति किया जाने वाला विद्रोह- (राजद्रोह)

( ल )

लौटकर आया हुआ- (प्रत्यागत)

लोक का- (लौकिक)

लेखक द्वारा लिखित अपनी जीवनी- (आत्मकथा)

लाभ की इच्छा- (लिप्सा)

लगातार घंटा बजने से होनेवाला शब्द- (टनाटन)

( व )

विधानमंडल द्वारा पारित या स्वीकृत नियम- (अधिनियम)

वह पत्र, जिसमें किसी को कोई काम करने का अधिकार दिया जाय- (अधिपत्र)

वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला शुल्क- (अधिशुल्क)

वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले- (अध्गूढा)

विद्या की देवी- (सरस्वती)

वर्षा का अभाव- (अनावृष्टि)

वह पत्र जिसमें किसी को कुछ करने का अधिकार दिया गया हो- (अधिपत्र)

वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो- (आगतपतिक)

वह स्त्री जिसका पति आने वाला है- (आगमिस्यतपतिका)

AJAY KUMAR

वह जो अपने आचार से पवित्र है- (आचारपूत)

जहाँ गमन (जाया) न किया जा सके- (अगम्य)

वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके- (आशुकवि)

वह वस्तु जिसका उत्पादन हुआ हो- (उत्पाद)

वह व्यक्ति जो हाथ उठाए हो- (उर्ध्वबाहु)

वह बात जो जनसाधरण में चलती आ रही है- (किंवदन्ती)

वह नायिका जो कृष्ण पक्ष में अपने प्रेमी से मिलने जाती हो- (कृष्णाभिसारिका)

वह नायिका जिसका पति रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर प्रातः उसके पास आता हो- (खंडिता)

वह नाटक जिसमें गीत अधिक हों- (गीतरूपक)

वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाय- (झाड़न)

वात, पित्त व कफ- (त्रिदोष)

विवाद या गुटबन्दी से अलग रहने वाला- (तटस्थ/गुटनिरपेक्ष)

विवाह के पश्चात वधू का ससुराल में दूसरी बार आना- (द्विरागमन)

वह स्त्री जिसके पति ने त्याग (छोड़) दिया हो- (परित्यक्ता)

वह शासन प्रणाली जिसमें जन साधारण का शासन हो- (प्रत्युत्पन्नमति)

वह जिससे प्रेम किया जाय- (प्रेमपात्र)

वह नायिका जिसका पति विदेश जाने को है- (प्रवत्स्यपतिका)

वह स्त्री जिसका पति प्रोषित (परदेश गया) हो- (प्रोषितपतिका)

वह पात्र जिसमें शोभा के लिए फूल लगाकर रखे जाते है- (फूलदान)

वह स्त्री जिसमें पृथ्वी के स्वरूप का वर्णन हो- (भूगोल)

वें बातें जो पुस्तक के आरंभ में लिखी जाय- (भूमिका/प्राक्कथन)

वह स्थिति जब मुद्रा का चलन अधिक हो- (मुद्रास्फीति)

AJAY KUMAR

वह पूँजी जो सम्पत्ति आदि के रूप में हो- (रिक्थ)

वह काव्य जिसका अभिनय किया जाय- (रूपक)

वह शासन प्रणाली जो जनता द्वारा जनता के हित के लिए हो- (लोकतंत्र)

वसुदेव के पुत्र- (वासुदेव)

वाडव (सागर) का अनल (आग)- (वाडवानल)

विश्व का पर्यटन करनेवाला- (विश्वपर्यटक)

विधि (कानून) के द्वारा प्राप्त- (विधिप्रदत)

वेतन पर काम करने वाला- (वैतनिक)

विष्णु का भक्त या विष्णु संबंधी- (वैष्णव)

वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते है- (श्मशान)

वह पुरुष जिसकी पत्नी साथ है- (सपत्नीक) विष्णु का उपासक या विष्णु से सम्बद्ध- (वैष्णव)

(विदेश में) प्रवास करनेवाला- (प्रवासी)

वह जिसकी दृष्टि दूर तक जाय- (दूरदर्शी)

वह जिसकी प्रतिज्ञा दृढ हो- (दृढ़प्रतिज्ञ)

विधि (कानून ) द्वारा प्रदत्त (प्राप्त)- (विधिप्रदत्त)

वृष्टि का अभाव- (अनावृष्टि)

विश्वास के योग्य - (विश्वसनीय)

विद्या की चाह रखने वाला- (विद्यार्थी)

वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते है- (श्मशान)

(वह पुरुष) जिसकी पति साथ है- (सपतीक)

(वह स्त्री) जिसे पति छोड़ दे- (परित्यक्ता)

वह पहाड़ जिससे आग निकलती हो- (ज्वालामुखी)

AJAY KUMAR

विदेश से वस्तुयें मँगाना- (आयात)

व्याकरण जाननेवाला- (वैयाकरण)

( श, स )

शीघ्र नष्ट होने वाला- (क्षणभंगुर)

सब कुछ जानने वाला- (सर्वज्ञ)

सौतेली माँ- (विमाता)

सब कुछ भक्षण करनेवाला- (सर्वभक्षी)

सप्ताह में एक बार होने वाला- (साप्ताहिक)

साहित्य से सम्बन्ध रखने वाला- (साहित्यिक)

सत्य बोलने वाला- (सत्यवादी)

सुख देनेवाला- (सुखद)

समान उदर से जन्म लेनेवाला- (सहोदर)

सेवा से सम्बद्ध- (साहित्यिक)

शक्ति के अनुसार- (यथाशक्ति)

सबसे प्रिय- (प्रियतम)

सुनने योग्य- (श्रवणीय)

समान (एक ही)उदर से जन्म लेनेवाला- (सहोदर)

सुन्दर हृदयवाला- (सुहृद)

स्त्री-पुरुष का जोड़ा- (दम्पति)

स्वेद से उत्पत्र होनेवाला- (स्वेदज)

शिव का उपासक या शिव से सम्बद्ध- (शैव)

शक्ति का उपासक या शक्ति से सम्बद्ध- (शाक्त)

AJAY KUMAR

समाचार पत्र का मुख्य (सम्पादकीय) लेख- (अग्रलेख)

सीमा का अनुचित उल्लंघन- (अतिक्रमण)

सर्वाधिकार सम्पन्न शासक या अधिकारी- (अधिनायक)

सरकार द्वारा प्रकाशित या सरकारी बजट में छपी सूचना- (अधिसूचना)

संसार में सबका प्रिय- (लोकप्रिय)

शरीर के लिए जितना धन आवश्यक हो उससे अधिक न लेना- (अपरिग्रह)

शरीर का कोई भाग- (अवयव)

सरकार द्वारा दूसरे देश की तुलना में अपने देश की मुद्रा का मूल्य कम कर देना- (अवमूल्यन)

सीमा का उल्लंघन करना- (अतिक्रमण)

सामाजिक एवं प्रशासनिक अनुशासन की क्रूरता से उत्पत्र स्थिति- (आतंक)

सर्वप्रथम मत को प्रवर्तित करने वाला- (आदिप्रवर्तक)

सेतुबंध रामेश्वरम से हिमालय तक- (आसेतुहिमालय)

सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है- (उदयाचल)

सूर्योदय से पहले का समय- (उषाकाल)

सारे संसार के देशों की खेल प्रतियोगितायें- (ओलम्पिक)

सेना में रहने का स्थान- (छावनी)

सहसा छिपकर आक्रमण करने वाला- (छापामार)

सिक्के ढालने का कारखाना- (टकसाल)

स्थल या जल का वह तंग या पतला भाग जो स्थल या जल के दो बड़े खंडों को मिलाता है- (डमरूमध्य)

सत्व, रज व तम- (त्रिगुण)

स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताललोक- (त्रिभुवन/त्रिलोक)

शीतल, मन्द व सुगन्धित वायु- (त्रिविधवायु)

AJAY KUMAR

स्त्री-पुरुष का जोड़ा/पति-पत्नी का जोड़ा- (दम्पती)

सदा प्रसन्न रहने वाली या कला-प्रेमी नायक- (धीरललित)

शक्तिशाली, दयालु और योद्धा नायक- (धीरोदात्त)

शासकीय अधिकारियों का शासन- (नौकरशाही)

शरीर के एक पार्श्व का लकवा- (पक्षाघात)

समान रूप से आगे बढ़ने की चेष्टा- (प्रतिस्पर्द्धा)

शक्ति के अनुसार- (यथाशक्ति)

स्पष्टीकरण के लिए दिया जाने वाला वक्तव्य- (विवृति)

सौ वर्ष का समय- (शताब्दी)

शत्रु का नाश करने वाला- (शत्रुघ्न)

सौ में सौ- (शतप्रतिशत)

शयन (सोने) का आगार (कमरा)- (शयनागार)

शरण में आया हुआ- (शरणागत)

सदैव रहने वाला- (शाश्वत)

सिर पर धारण करने योग्य- (शिरोधार्य)

संगीत के छः राग- (षटराग)

सोलह वर्ष की लड़की- (षोडशी)

सड़ी हुई वस्तु की गन्ध- (सराँध)

सहन करना जिसका स्वभाव है- (सहनशील)

सबको जीतने वाला- (सर्वजीत)

सब कुछ खाने वाला- (सर्वभक्षी)

सत्य के प्रति आग्रह- (सत्याग्रह)

AJAY KUMAR

समान वयवाला- (समवयस्क)

समान (एक ही) उदर से जन्म लेनेवाला- (सहोदर)

सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला- (सार्वजनिक)

सरस्वती का भक्त या सरस्वती से संबद्ध- (सारस्वत)

सब कालों में होनेवाला- (सार्वकालिक)

सब देशों से सम्बद्ध- (सार्वदेशिक)

समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला- (सार्वभौमिक)

साहित्य से सम्बन्धित- (साहित्यिक)

सिंह का बच्चा- (सिंहशावक)

सुन्दर हृदय वाला- (सुहृदय)

स्वेद (पसीने) से उत्पन्न होने वाला- (स्वेदज)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद का- (स्वातन्त्र्योत्तर)

समय से संबंधित- (सामयिक)

शीघ्र चलने वाला- (द्रुतगामी)

शयन करने की इच्छा- (सुषुप्सा)

( ह )

हाथी को हाँकने का लोहे का हुक- (अंकुश)

हिंसा करने वाला- (हिंसक)

हित चाहने वाला- (हितैषी)

हाथ से लिखा हुआ- (हस्तलिखित)

हमेशा सत्य बोलने वाला- (सत्यवादी)

हाथ में चक्र धारण करनेवाला- (चक्रपाणि)

AJAY KUMAR

हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होने वाला अँधेरा- (धुन्ध)

हाथ का लिखा हुआ- (हस्तलिखित)

हृदय को विदीर्ण करने वाला- (हृदयविदारक)

हंस के समान सुंदर मंद गति से चलने वाली स्त्री- (हंसगामिनी)

हत्या करनेवाला- (हत्यारा)

हिन्द की भाषा- (हिन्दी)

( क्ष त्र ज्ञ )

क्षमा पाने योग्य- (क्षम्य)

क्षण भर में नष्ट होने वाला- (क्षणभंगुर)

क्षण भर में भंग (नष्ट) होनेवाला- (क्षणभंगुर)

क्षुधा से आतुर- (क्षुधातुर)

ऋषियों के रहने का स्थान- (आश्रम)

ऋण के रूप में आर्थिक सहायता-(तकावी)

ज्ञान देने वाली- (ज्ञानदा)

ज्ञान देनेवाला- (ज्ञातव्य)

.....

AJAY KUMAR

## पत्र-लेखन (Letter-writing)

दूर रहने वाले अपने सबन्धियों अथवा मित्रों की कुशलता जानने के लिए तथा अपनी कुशलता का समाचार देने के लिए पत्र एक साधन है। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए भी पत्र लिखे जाते है।

### पत्र का महत्व

As keys do open chests.

So letters open breasts .

उक्त अँगरेजी विद्वान् के कथन का आशय यह है कि जिस प्रकार कुंजियाँ बक्स खोलती हैं, उसी प्रकार पत्र (letters) ह्रदय के विभित्र पटलों को खोलते हैं। मनुष्य की भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति पत्राचार से भी होती हैं। निश्छल भावों और विचारों का आदान-प्रदान पत्रों द्वारा ही सम्भव है। पत्रलेखन दो व्यक्तियों के बीच होता है। इसके द्वारा दो ह्रदयों का सम्बन्ध दृढ़ होता है। अतः पत्राचार ही एक ऐसा साधन है, जो दूरस्थ व्यक्तियों को भावना की एक संगमभूमि पर ला खड़ा करता है और दोनों में आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करता है। पति-पत्नी, भाई-बहन, पिता-पुत्र- इस प्रकार के हजारों सम्बन्धों की नींव यह सुदृढ़ करता है। व्यावहारिक जीवन में यह वह सेतु है, जिससे मानवीय सम्बन्धों की परस्परता सिद्ध होती है। अतएव पत्राचार का बड़ा महत्व है।

### पत्रलेखन एक कला है

आधुनिक युग में पत्रलेखन को 'कला' की संज्ञा दी गयी है। पत्रों में आज कलात्मक अभिव्यक्तियाँ हो रही है। साहित्य में भी इनका उपयोग होने लगा है। जिस पत्र में जितनी स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही प्रभावकारी होगा। एक अच्छे पत्र के लिए कलात्मक सौन्दर्यबोध और अन्तरंग भावनाओं का अभिव्यंजन आवश्यक है। एक पत्र में उसके लेखक की भावनाएँ ही व्यक्त नहीं होती, बल्कि उसका व्यक्तित्व (personality) भी उभरता है। इससे लेखक के चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कार, मानसिक स्थिति, आचरण इत्यादि सभी एक साथ झलकते हैं। अतः पत्रलेखन एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति है। लेकिन, इस प्रकार की अभिव्यक्ति व्यवसायिक पत्रों की अपेक्षा सामाजिक तथा साहित्यिक पत्रों में अधिक होती है।

### अच्छे पत्र की विशेषताएँ

एक अच्छे पत्र की पाँच विशेषताएँ है-

(1)सरल भाषाशैली

(2)विचारों की सुस्पष्ठता

AJAY KUMAR

(3)संक्षेप और सम्पूर्णता

(4)प्रभावान्विति

(5)बाहरी सजावट

(1 )सरल भाषाशैली :- पत्र की भाषा साधारणतः सरल और बोलचाल की होनी चाहिए। शब्दों के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए। ये उपयुक्त, सटीक, सरल और मधुर हों। सारी बात सीधे-सादे ढंग से स्पष्ट और प्रत्यक्ष लिखनी चाहिए। बातों को घुमा-फिराकर लिखना उचित नहीं।

(2)विचारों की सुस्पष्ठता :-- पत्र में लेखक के विचार सुस्पष्ट और सुलझे होने चाहिए। कहीं भी पाण्डित्य-प्रदर्शन की चेष्टा नहीं होनी चाहिए। बनावटीपन नहीं होना चाहिए। दिमाग पर बल देनेवाली बातें नहीं लिखी जानी चाहिए।

(3)संक्षेप और सम्पूर्णता :-- पत्र अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए। वह अपने में सम्पूर्ण और संक्षिप्त हो। उसमें अतिशयोक्ति, वाग्जाल और विस्तृत विवरण के लिए स्थान नहीं है। इसके अतिरिक्त, पत्र में एक ही बात को बार-बार दुहराना एक दोष है। पत्र में मुख्य बातें आरम्भ में लिखी जानी चाहिए। सारी बातें एक क्रम में लिखनी चाहिए। इसमें कोई भी आवश्यक तथ्य छूटने न पाय। पत्र अपने में सम्पूर्ण हो, अधूरा नहीं। पत्रलेखन का सारा आशय पाठक के दिमाग पर पूरी तरह बैठ जाना चाहिए। पाठक को किसी प्रकार की लझन में छोड़ना ठीक नहीं।

(4)प्रभावान्वित :-- पत्र का पूरा असर पढ़नेवाले पर पड़ना चाहिए। आरम्भ और अन्त में नम्रता और सौहार्द के भाव होने चाहिए।

(5)बाहरी सजावट :-- पत्र की बाहरी सजावट से हमारा तात्पर्य यह है कि

(i) उसका कागज सम्भवतः अच्छा-से-अच्छा होना चाहिए;

(ii) लिखावट सुन्दर, साफ और पुष्ट हो;

(iii) विरामादि चिह्नों का प्रयोग यथास्थान किया जाय;

(iv) शीर्षक, तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद और अन्त अपने-अपने स्थान पर क्रमानुसार होने चाहिए;

(v) पत्र की पंक्तियाँ सटाकर न लिखी जायँ और

(vi) विषय-वस्तु के अनुपात से पत्र का कागज लम्बा-चौड़ा होना चाहिए।

## पत्रों के प्रकार

(1)सामाजिक पत्र (Social letters)

(2)व्यापारिक पत्र (Commercial letters)

(3)सरकारी पत्र (Official letters)

(1 )सामाजिक पत्र (Social letters) :- ये पत्र अपने मित्रों,सगे-सम्बन्धियों एवं परिचितों को लिखे जाते है। इसके अतिरिक्त सुख-दुःख, शोक, विदाई तथा निमन्त्रण आदि के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, वे भी 'सामाजिक पत्र' कहलाते हैं।

पत्रलेखन सभ्य समाज की एक कलात्मक देन है। मनुष्य चूँकि सामाजिक प्राणी है इसलिए वह दूसरों के साथ अपना सम्बन्ध किसी-न-किसी माध्यम से बनाये रखना चाहता है। मिलते-जुलते रहने पर पत्रलेखन की तो आवश्यकता नहीं होती, पर एक-दूसरे से दूर रहने पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पास पत्र लिखता है। सरकारी पत्रों की अपेक्षा सामाजिक पत्रों में कलात्मकता अधिक रहती है; क्योंकि इनमें मनुष्य के ह्रदय के सहज उद्गार व्यक्त होते है। इन पत्रों को पढ़कर हम किसी भी व्यक्ति के अच्छे या बुरे स्वभाव या मनोवृति का परिचय आसानी से पा सकते है।

(2)व्यापारिक पत्र (Commercial letters) :-- व्यापार में सामान खरीदने व बेचने अथवा रुपयों के लेन-देन के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, उन्हें 'व्यापारिक पत्र' कहते हैं।

(3)सरकारी पत्र (Official letters) :-- जिन पत्रों में निवेदन अथवा प्रार्थना की जाती है, वे 'प्रार्थना-पत्र' कहलाते हैं। इस सम्बन्ध में जो पत्र सरकारी काम-काज के लिए लिखे जाते हैं, वे ' सरकारी पत्र' कहलाते हैं।

ये सरकारी अफसरों या अधिकारियों, स्कूल और कॉलेज के प्रधानाध्यापकों और प्राचार्यों को लिखे जाते हैं।

एक अच्छे सामाजिक पत्र में सौजन्य, सहृदयता और शिष्टता का होना आवश्यक है। तभी इस प्रकार के पत्रों का अभीष्ट प्रभाव ह्रदय पर पड़ता है।

इसके कुछ औपचारिक नियमों का निर्वाह करना चाहिए।

(i) पहली बात यह कि पत्र के ऊपर दाहिनी ओर पत्रप्रेषक का पता और दिनांक होना चाहिए।

AJAY KUMAR

(ii) दूसरी बात यह कि पत्र जिस व्यक्ति को लिखा जा रहा हो- जिसे 'प्रेषिती' भी कहते हैं- उसके प्रति, सम्बन्ध के अनुसार ही समुचित अभिवादन या सम्बोधन के शब्द लिखने चाहिए।

(iv) यह पत्रप्रेषक और प्रेषिती के सम्बन्ध पर निर्भर है कि अभिवादन का प्रयोग कहाँ, किसके लिए, किस तरह किया जाय।

(v) अँगरेजी में प्रायः छोटे-बड़े सबके लिए 'My dear' का प्रयोग होता है, किन्तु हिन्दी में ऐसा नहीं होता।

(vi) पिता को पत्र लिखते समय हम प्रायः 'पूज्य पिताजी' लिखते हैं।

(vii) शिक्षक अथवा गुरुजन को पत्र लिखते समय उनके प्रति आदरभाव सूचित करने के लिए 'आदरणीय' या 'श्रद्धेय'-जैसे शब्दों का व्यवहार करते हैं।

(viii) यह अपने-अपने देश के शिष्टाचार और संस्कृति के अनुसार चलता है।

(ix) अपने से छोटे के लिए हम प्रायः 'प्रियवर', 'चिरंजीव'-जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं।

इस प्रकार, पत्र में वक्तव्य के पूर्व (1) सम्बोधन, (2)अभिवादन औरवक्तव्य के अन्त में (3) अभिनिवेदन का, सम्बन्ध के आधार अलग-अलग ढंग होता है। इनके रूप इस प्रकार हैं-

| सम्बन्ध | सम्बोधन | अभिवादन | अभिनिवेदन |
|---|---|---|---|
| पिता-पुत्र | प्रिय अनिल | शुभाशीर्वाद | तुम्हारा शुभाकांक्षी |
| पुत्र-पिता | पूज्य पिताजी | सादर प्रणाम | आपका स्नेहाकांक्षी |
| माता-पुत्र | प्रिय पुत्र | शुभाशीष | तुम्हारी शुभाकांक्षिणी |
| पुत्र-माता | पूजनीया माताजी | सादर प्रणाम | आपका स्नेहाकांक्षी |
| मित्र-मित्र | प्रिय भाई या मित्र या प्रिय रमेश आदि | प्रसत्र रहो आदि | तुम्हारा..... |
| गुरु-शिष्य | प्रिय कुमार या चि० कुमार | शुभाशीर्वाद | तुम्हारा सत्यैषी या शुभचिन्तक |
| शिष्य-गुरु | श्रद्धेय या आदरणीय गुरुदेव | सादर प्रणाम | आपका शिष्य |
| दो अपरिचित व्यक्ति | प्रिय महोदय | सप्रेम नमस्कार | भवदीय |
| अग्रज-अनुज | प्रिय सुरेश | शुभाशीर्वाद | तुम्हारा शुभाकांक्षी |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनुज-अग्रज | पूज्य भैया या भ्राता जी | प्रणाम | आपका स्नेहाकांक्षी |
| स्त्री-पुरुष (अनजान) | प्रिय महाशय | ..... | भवदीया |
| पुरुष-स्त्री (अनजान) | प्रिय महाशया | ..... | भवदीय |
| पुरुष-स्त्री (परिचित) | कुमारी कमलाजी | ..... | भवदीय |
| स्त्री-पुरुष (परिचित) | भाई कमलजी | ..... | भवदीया |
| पति-पत्नी | प्रिये या प्राणाधिके | शुभाशीर्वाद | तुम्हारा सत्यैषी |
| पत्नी-पति | मेरे सर्वस्व,प्राणाधान | सादर प्रणाम | आपकी स्नेहाकांक्षिणी |
| छात्र-प्रधानाध्यापक | मान्य महोदय | प्रणाम | आपका आज्ञाकारी छात्र |

## पत्र लिखने के लिए कुछ आवश्यक बातें

(1) जिसके लिए पत्र लिखा जाये, उसके लिए पद के अनुसार शिष्टाचारपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

(2) पत्र में हृदय के भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त होने चाहिए।

(3) पत्र की भाषा सरल एवं शिष्ट होनी चाहिए।

(4) पत्र में बेकार की बातें नहीं लिखनी चाहिए। उसमें केवल मुख्य विषय के बारे में ही लिखना चाहिए।

(5) पत्र में आशय व्यक्त करने के लिए छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

(6) पत्र लिखने के पश्चात उसे एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

## (1)सामाजिक पत्रों के नमूने

### (i) रुपये की सहायता के लिए मित्र को लिखा गया पत्र-

..... जॉर्ज टाउन,

..... इलाहाबाद

..... 12-11-1992

प्रिय मित्र,

नमस्कार।

मैंने अपने पिताजी को 4 नवंबर तक मासिक खर्च भेज देने को लिखा था, किंतु वह मुझे अभी तक नहीं मिला है। ऐसा लगता है कि पिताजी घर पर नहीं है, अवश्य कहीं दौरे पर गये हुए हैं। संभव है, मेरे रुपये एक सप्ताह बाद आयें।

अतः अनुरोध है कि काम चलाने के लिए कम-से-कम दस रुपये मुझे भेजकर तुम मेरी सहायता करो। मेरे रुपये ज्यों ही आ जायेंगे, तुम्हें लौटा दूँगा। आशा है, इस मौके पर तुम मेरी अवश्य ही सहायता करोगे। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में हूँ।

भवदीय,

अनिल कुमार

पता-

श्री सुरेश गणपति,

रायगढ़, वाराणसी

(ii) परीक्षा की तैयारी के संबंध में मित्र को लिखा गया पत्र-

..... मयूर बिहार,

..... दिल्ली

..... 12-11-1999

प्रिय सुंदर,

नमस्ते।

AJAY KUMAR

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र मुझे नहीं मिला। आशा है, तुम मजे में हो। यहाँ मैं इन दिनों परीक्षा की तैयारी में हूँ। दस दिन बाद वार्षिक परीक्षा आरंभ होने जा रही है। घूमना-फिरना बंद है। मित्रों से भी भेंट नहीं होती। मुझे खासकर अँगरेजी से डर लगता है। इसलिए इस विषय की तैयारी में मुझे अधिक समय लगाना पड़ता है। इसके बाद अंकगणित को अधिक समय देता हूँ। मेरा गणित भी बहुत अच्छा नहीं है। फिर भी, इसमें पास कर जाने की पूरी उम्मीद है। देखें, क्या फल निकलता है। तुम्हारी तैयारी कैसी है, लिखना। अपने माता-पितजी को मेरा सादर प्रणाम।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

रमेश कुमार

पता-

श्री सुंदरराम,

पुनाईचक,पटना-1

(2)व्यावसायिक पत्र का नमूना

(i)पुस्तक मँगाने के लिए प्रकाशक को लिखा गया पत्र-

..... वासुदेवपुर,

..... मुँगेर

..... 22-2-2001

सेवा में,

महोदय,

मुझे मालूम हुआ है कि आपके यहाँ से 'सरल हिंदी लेख' नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। मुझे इसकी एक प्रति चाहिए। बड़ी कृपा होगी यदि इस पुस्तक की एक प्रति वी० पी० पी० से मेरे नाम भेज देने का कष्ट करें। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं वी० पी० पी० अवश्य छुड़ा लूँगा। धन्यवाद।

AJAY KUMAR

आपका विश्वासी,

अशोक कुमार

मेरा पता-

अशोक कुमार ,

स्थान-पोस्ट-वासुदेवपुर

रेलवे-स्टेशन-पूरब सराय (मुँगेर)

## (3)आधिकारिक पत्र का नमूना

### (i)स्कूल फीस माफ कराने के लिए प्रधानाध्यापक को लिखा गया पत्र -

श्रीमान् प्रधानाध्यापकजी,

न्यू मिड्ल स्कूल,रायपुर।

मान्य महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके स्कूल में सातवें वर्ग का एक बहुत ही निर्धन छात्र हूँ। मेरे पिताजी की मासिक आमदनी इतनी भी नहीं कि घर का सारा खर्च चल सके; स्कूल फीस देना तो दूर की बात है। मेरे पिताजी एक अपर प्राइमरी स्कूल में शिक्षक का काम करते हैं। मेरे अलावा घर में पाँच भाई-बहन भी है, जिनकी पढ़ाई का सारा भार मेरे पिताजी पर ही है। ऐसी हालत में उनके लिए मेरी पढ़ाई का बोझ उठाना कठिन है। महँगाई से तो हम और परेशान हैं। अतः सादर प्रार्थना है कि आप मेरी, मेरे पिताजी की और परिवार की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर मेरी स्कूल फीस माफ कर दें ताकि मैं निश्चित होकर पढ़ाई जारी रख सकूँ। इस कृपा के लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र,

विवेक कुमार

AJAY KUMAR

(ii)विवाह पर अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र -

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

नवशान्ति पब्लिक स्कूल

दिल्ली रोड, मुरादाबाद

मान्यवर महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मेरी बड़ी बहिन का विवाह। ..... को होना निश्चित हुआ है। काम करने के लिए मेरा रहना आवश्यक है। इसलिए मुझे दिनांक..... से..... तक का तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

लोकेश

कक्षा-चतुर्थ-बी

दिनांक: .....

*नीचे कुछ विशिष्ट पत्र लेखन दिया जा रहा है-*

अपने पिता को एक पत्र लिखिए जिसमें पूरे परिवार के व्यवहार के लिए एक टीवी खरीदने के लिए अनुरोध कीजिए

स्टेशन रोड,

भागलपुर

AJAY KUMAR

15 फरवरी, 1988

पूज्यवर पिताजी,

मुझे आपका पत्र अभी-अभी मिला। मुझे यह जानकर ख़ुशी है कि आप अगले महीने में घर आ रहे हैं। मैं आपको कुछ कष्ट देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हमारे घर में एक टीवी रहे। गत वर्ष मैंने आपसे टीवी खरीदने के लिए अनुरोध किया था, लेकिन आपने उसे स्वीकार नहीं किया। आप मुझसे सहमत होंगे कि टीवी एक बहुत उपयोगी चीज है। यदि हमारे घर में टीवी हो तो हम समाचार, फ़िल्म, क्रिकेट और कई प्रकार के मनोरंजन कर सकते हैं।

टीवी मनोरंजन का एक अच्छा साधन है। इससे हमारा बहुत मनोरंजन होगा। इसका शिक्षाणात्मक महत्त्व भी है। विभिन्न कार्यक्रमों को देखकर मैं बहुत बातें सीख सकता हूँ। यदि हमारे पास टीवी हो तो वह पुरे परिवार के लिए उपयोगी होगा। माताजी औरतों के कार्यक्रम को पसंद करेंगी। वे भागवत देखना चाहेंगी। मैं टीवी देखकर बहुत-कुछ सीखूँगा। मनोज बच्चों के कार्यक्रम देखकर खुश होगा।

आप देख सकते है कि टीवी हमारे परिवार के लिए आवश्यक है। क्या आप जब घर आएँगे तब कृपा करके एक टीवी खरीद देंगे ?अब टीवी की कीमत अधिक नहीं रही। सस्ते टीवी से भी काम चल जाएगा। मुझे विश्वास है कि आप परिवार के व्यवहार के लिए एक टीवी खरीद देंगे।

अत्यंत आदर के साथ,

आपका स्नेही

प्रकाश

पता-श्री देवेंद्र प्रसाद सिंह,

15 पार्क स्ट्रीट,

कलकत्ता-8

आप एक साइकिल खरीदना चाहते हैं। अपने पिता को एक पत्र लिखिए जिसमें साइकिल खरीदने के लिए कुछ रुपए भेजने के लिए उनसे अनुरोध कीजिए।

AJAY KUMAR

महात्मा गाँधी रोड,

जमालपुर

27 फरवरी, 1988

पूज्यवर पिताजी,

करीब एक महीने से मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला है। मुझे डर है कि आप मुझ पर रंज हैं।

आप जानते है कि मुझे पैदल स्कूल जाना पड़ता है। मुझे प्रतिदिन चार मील पैदल चलना पड़ता है। मुझे प्रातः काल 9 बजकर 15 मिनट पर स्कूल के लिए रवाना होना पड़ता है। मुझे सुबह में अध्ययन के लिए अधिक समय नहीं मिलता। जब मैं स्कूल से लौटता हूँ तब मैं बहुत थका हुआ रहता हूँ। इसलिए मैं शाम में मन लगाकर नहीं पढ़ सकता।

यदि मेरे पास एक साइकिल रहे तो मैं काफी समय और शक्ति बचा सकता हूँ। मैं साइकिल चलाना अच्छी तरह जानता हूँ। मैं भीड़वाली सड़कों पर भी साइकिल चला सकता हूँ। क्या आप कृपा करके मुझे एक साइकिल खरीद देंगे ? आप मुझसे सहमत होंगे कि मेरे लिए साइकिल आवश्यक है। मैं कीमती साइकिल लेना नहीं चाहता। सस्ती साइकिल से भी काम चल जाएगा।

कृपा करके मुझे पाँच सौ रुपए भेज दें जिससे मैं एक साइकिल खरीद सकूँ।

माँ को मेरा प्यार। अत्यंत आदर के साथ,

आपका स्नेही,

मोहन

पता- श्री महेंद्र प्रसाद,

जलकघरबाग,

पटना-8

आपके पिता ने आपके जन्म-दिन के अवसर पर आपको 3000 रुपए का उपहार भेजा है। उपहार के लिए धन्यवाद देते हुए उनको पत्र लिखिए जिसमें उनको बतलाइए कि आप रुपए को कैसे खर्च करना चाहते हैं।

कलमबाग रोड,

मुजफ्फरपुर,

17 जनवरी, 1998

पूज्यवर पिताजी,

मेरे जन्म-दिन के अवसर पर मुझे उपहार में 3000 रुपए भेजने के लिए आपको धन्यवाद। आपका अच्छा उपहार पाकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

आप जानना चाहेंगे कि मैं आपके द्वारा भेजे गए रुपए को कैसे खर्च करना चाहता हूँ। आप जानते है कि मुझे फोटोग्राफी में रूचि है। गत वर्ष मैंने आपसे एक कैमरा के लिए अनुरोध किया था, लेकिन आपने मेरे अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। अब मैं कैमरा खरीद सकूँगा। मुझे कुछ दिनों से कैमरा की बहुत चाह रही है। मैं जब फोटो खींचना चाहता था, तब मुझे अपने मित्र का कैमरा माँगना पड़ता था। मैं बहुत दिनों से कैमरा रखना चाहता हूँ, लेकिन मैं उसे खरीद नहीं सकता था।

अच्छे कैमरे की कीमत बहुत होती है। मैं 3000 रुपए में एक साधारण कैमरा खरीद सकूँगा। मैं सोचता हूँ कि सस्ते कैमरे से भी मेरा काम चल जाएगा।

क्या आप मेरे विचार को पसंद करते है ? मेरा विश्वास है कि आप मुझे अपना उपहार मेरी इच्छा के अनुसार खर्च करने देंगे। यदि मेरे पास एक कैमरा रहे तो मैं फोटोग्राफी की कला सीख सकता हूँ। आप मुझसे सहमत होंगे कि फोटोग्राफी एक आनंददायक शौक है।

आपके प्रति अत्यंत आदर और माताजी के प्रति प्रेम के साथ,

AJAY KUMAR

आपका प्रिय पुत्र,

संजय

पता- श्री अरुण कुमार सिंह,

चर्च रोड,

राँची

एक पत्र में अपने पिता को टेस्ट परीक्षा में अपनी सफलता और बोर्ड परीक्षा के लिए अपनी तैयारी के बारे में लिखिए।

गोविंद मित्र रोड

पटना-4

5 दिसंबर, 1987

पूज्यवर पिताजी,

आपके लिए एक खुशखबरी है। आपको यह जानकर ख़ुशी होगी कि मैं टेस्ट परीक्षा में अपने वर्ग में प्रथम हुआ।

मेरी बोर्ड परीक्षा 9 मार्च 1998 से प्रारंभ होगी। बोर्ड परीक्षा की तैयारी करने के लिए मेरे पास काफी समय है। मैं अपने समय का अच्छी तरह उपयोग करना चाहता हूँ। मैंने अपनी पाठ्यपुस्तकों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। अब मैं प्रत्येक विषय में कुछ संभावित प्रश्न तैयार कर रहा हूँ। मैंने अपने अध्ययन के लिए एक कार्यक्रम बना लिया है। मैं प्रत्येक विषय को अच्छी तरह तैयार कर रहा हूँ। मैं लिखने के काम में काफी समय लगाता हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि जनवरी के अंत तक मैं अपनी तैयारी खत्म कर लूँगा। तब मैं अपनी पाठ्यपुस्तकों को दुहराऊँगा।

AJAY KUMAR

मेरे शिक्षक को उम्मीद है कि मैं बोर्ड परीक्षा में अच्छा स्थान प्राप्त करूँगा। मैं आशा करता हूँ कि मेरा परीक्षाफल उनकी उम्मीद के अनुसार होगा।

कृपया माताजी को मेरा प्रणाम कह देंगे।

आपका स्नेही,

अशोक

पता- श्री विनोद कुमार शर्मा

स्टेशन रोड,

दरभंगा

आप परीक्षा समाप्त होने के बाद एक मित्र के घर जाना चाहते हैं। इसके लिए अनुमति माँगने के लिए अपने पिता को एक पत्र लिखिए।

गर्दनीबाग,

पटना-1

22 फरवरी, 1998

पूज्यवर पिताजी,

मुझे आपका पत्र अभी मिला है। आपने मुझे परीक्षा के बाद घर आने को कहा है। मुझे आपको यह कहने में दुःख है कि मैं तुरन्त ही घर जाना नहीं चाहता।

AJAY KUMAR

मेरे एक मित्र ने मुझे परीक्षा के बाद अपने घर जाने को कहा है। उनके पिता बरौनी में रहते है। मैं अपने मित्र के घर जाना चाहता हूँ। मैं कभी भी बरौनी नहीं गया हूँ। मैं तेलशोधक कारखाना देखना चाहता हूँ। मेरे मित्र ने मुझे विश्वास दिलाया है कि वह मुझे तेलशोधक कारखाना दिखलाएगा।

परीक्षा समाप्त होने के बाद मैं बहुत थका रहूँगा। मैं सोचता हूँ कि अपने मित्र के घर जाने से मेरा मनोरंजन होगा। मैं अपने मित्र के घर पर तीन या चार दिनों तक रहूँगा। तब मैं घर जाऊँगा।

कृपया परीक्षा समाप्त होने के बाद मुझे अपने मित्र के घर जाने की अनुमति अवश्य दें। यदि आप मुझे अपनी अनुमति नहीं देंगे तो मेरा मित्र निराश हो जाएगा।

आपका प्रिय पुत्र,

योगेंद्र

पता- श्री महेंद्र शर्मा

15 सिविल लाइंस

गया

एक पत्र में अपने पिता को बताइए कि आप माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद क्या करना चाहते हैं।

राजेंद्रनगर,

पटना- 16

2 मार्च, 1998

पूज्यवर पिताजी,

AJAY KUMAR

मुझे आपका पत्र अभी मिला है। आपने मुझे यह बतलाने को कहा है कि मैं माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद क्या करना चाहता हूँ।

अब बोर्ड परीक्षा होने में आधा महीना ही बाकी है। मैं परीक्षा के लिए कठिन परिश्रम कर रहा हूँ। आप चाहते है कि मैं बोर्ड परीक्षा में अच्छा करूँ और मैं सोचता हूँ कि मेरा परीक्षाफल आपकी उम्मीद के अनुकूल होगा। मैं जानता हूँ कि इस परीक्षा में मेरी सफलता पर ही मेरा भविष्य निर्भर करता है। इसलिए मैं लगातार परिश्रम कर रहा हूँ।

मैं माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद पटना विज्ञान महाविद्यालय में प्रवेश करना चाहता हूँ। आप जानते है कि यह हमारे राज्य में सबसे अच्छा महाविद्यालय है। मैंने अपने एक मित्र से सुना है कि इसमें अच्छी प्रयोगशालाएँ हैं। इस महाविद्यालय में अनेक विख्यात प्राध्यापक हैं। मैं जानता हूँ कि इस महाविद्यालय में केवल तेज छात्रों का ही नाम लिखा जाता है। मुझे उम्मीद है कि इस महाविद्यालय में मेरा नाम लिखा जाएगा।

आप जानते है कि मैंने माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में जीवविज्ञान लिया है। मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ, लेकिन मेडिकल कॉलेज में प्रवेश करने के पहले मुझे आई० एस० सी० की परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ेगा। मैं सोचता हूँ कि माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद पटना विज्ञान महाविद्यालय में प्रवेश करना मेरे लिए अच्छा होगा।

क्या आप मेरे विचार को पसंद करते हैं ? यदि आप इसे पसंद नहीं करते तो कृपया लिखें।

आपका स्नेही,

अजय

पता- श्री अजय कुमार बोस,

तातारपुर,

भागलपुर-2

AJAY KUMAR

आपकी परीक्षा कुछ ही दिनों में होनेवाली है, लेकिन आपकी तैयारी अच्छी नहीं है। अपने पिता को एक पत्र लिखिए जिसमे अगले वर्ष परीक्षा में शरीक होने की अनुमति के लिए उनसे अनुरोध कीजिए।

मीठापुर,

पटना-1

5 मार्च, 1988

पूज्यवर पिताजी,

मेरी बोर्ड परीक्षा 9 मार्च से शुरू होगी। आपको यह जानकर अत्यंत दुःख होगा कि परीक्षा के लिए मेरी तैयारी अच्छी नहीं है।

यद्यपि परीक्षा के लिए मैं कठिन परिश्रम करता रहा हूँ, फिर भी मैंने सभी विषयों को अच्छी तरह तैयार नहीं किया है। मैं अँगरेजी और भौतिक विज्ञान में बहुत कमजोर हूँ। मुझे भय है कि यदि परीक्षा में शरीक होऊँगा तो इन विषयों में अवश्य असफल हो जाऊँगा। यदि मैं इस वर्ष परीक्षा में नहीं बैठूँगा तो अच्छा होगा।

इस दुःखद समाचार से आप तथा माँ अवश्य चिंतित होंगे, लेकिन मैं बिलकुल मजबूर हूँ। आपको यह कहने में मुझे अत्यंत दुःख हो रहा है कि मैं परीक्षा में सफल नहीं हो सकता। कृपया मुझे अगले वर्ष परीक्षा में शरीक होने की अनुमति दें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं कठिन परिश्रम करूँगा और कमजोरी को पूरा कर लूँगा। मुझे सभी विषयों को अच्छी तरह तैयार करने के लिए काफी समय मिलेगा।

अत्यंत आदर के साथ,

आपका स्नेही,

गिरींद्र

पता- श्री सुरेंद्र प्रसाद,

न्यू एरिया

AJAY KUMAR

आरा

अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिए जो अब कॉलेज में हैं। उनसे पूछिए कि आपको इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद क्या करना चाहिए।

जिला स्कूल छात्रावास,

भागलपुर

9 फरवरी, 1988

पूज्यवर भैया,

मुझे एक महीने से आपका कोई पत्र नहीं मिला है। मुझे लगता है कि आप अपने अध्ययन में इतने व्यस्त हैं कि आप मुझे पत्र नहीं लिख पाते। मेरी बोर्ड परीक्षा 9 मार्च से शुरू होगी। आप चाहते हैं कि मैं परीक्षा में अच्छा करूँ और मुझे उम्मीद है कि मेरा परीक्षाफल आपकी आशा के अनुकूल होगा। मैंने सभी विषयों को अच्छी तरह तैयार कर लिया है। अब मैं उनमें से अधिकतर विषयों को दुहरा रहा हूँ। मुझे बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक अवश्य आएँगे।

मैंने निश्चय नहीं किया है कि मुझे बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद क्या करना चाहिए। आप जानते है कि मैंने विज्ञान लिया है। मुझे जीवविज्ञान में बहुत रूचि है। मैं डॉक्टर बनना पसंद करूँगा।

कृपया मुझे बतलाइए कि मुझे बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद क्या करना चाहिए।

आपका स्नेहभाजन,

सुशील

पता- श्री मोहन बनर्जी,

कमरा न० 5,

AJAY KUMAR

न्यूटन छात्रावास,

पटना-5

अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें अध्ययन की उपेक्षा करने के लिए उसे डाँटिए।

जिला स्कूल छात्रावास,

राँची

7 जनवरी, 1988

प्रिय अजय,

मुझे अभी पिताजी का एक पत्र मिला है। उनके पत्र से यह जानकर कि तुम गत वार्षिक परीक्षा में असफल हो गए हो मुझे बहुत दुःख है। मैंने तुम्हें दुर्गापूजा की छुट्टी में कहा था कि तुम्हें कठिन परिश्रम करना चाहिए। तुमने मेरी राय पर ध्यान नहीं दिया। तुमने अध्ययन की उपेक्षा की है। इसलिए तुम परीक्षा में असफल हो गए हो।

तुम्हें स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया है। अब तुम बच्चे नहीं हो। तुम्हें यह जानना चाहिए कि तुम्हें क्या करना है। यदि तुम इस प्रकार अध्ययन की उपेक्षा करोगे तो बाद में तुम्हें दुखी होना पड़ेगा, जब तुम कुछ नहीं कर सकोगे। अपना समय बरबाद नहीं करो। तुम एक वर्ष खो चुके हो, क्योंकि तुमने अध्ययन की उपेक्षा की है। परीक्षा में असफल होना तुम्हारे लिए लज्जाजनक हैं। यदि तुम पढ़ाई पर ध्यान नहीं दोगे तो तुम्हें भविष्य में पछताना पड़ेगा।

तुम्हारी असफलता से पिताजी और माताजी दोनों को अत्यंत दुःख है। तुम्हें अपना सुधार अवश्य करना चाहिए। अच्छा लड़का बनो और पढ़ने में लग जाओ। आशा है, तुम अपनी गलती महसूस करोगे।

शुभकामनाओं के साथ-

तुम्हारा प्रिय भाई,

AJAY KUMAR

उमेश

पता- श्री अजय कुमार,

नवम वर्ग,

एस० एच० ई० स्कूल, सुरसंड,

पो० ऑ०- सुरसंड,

जिला- सीतामढ़ी

एक पत्र में अपने चचेरे भाई से अनुरोध कीजिए कि वे छुट्टी में आपको अपना कैमरा दें।

कदमकुआँ,

पटना -3

15 दिसंबर, 1988

पूज्यवर भ्राताजी,

बहुत दिनों से आपका कोई पत्र मुझे नहीं मिला है। मेरी वार्षिक परीक्षा खत्म हो गई है और मैं बड़े दिन की छुट्टी का इंतजार कर रहा हूँ। मैंने छुट्टी में दिल्ली और आगरा जाने का निश्चय किया है।

मैं आपको कुछ कष्ट देना चाहता हूँ। मैं छुट्टी में आपका कैमरा लेना चाहूँगा। यदि मुझे आपका कैमरा मिल जाए तो मैं दिल्ली और आगरे की अपनी यात्रा में कुछ मनोरंजक फोटो खीचूँगा। आप जानते है कि मैं आपके कैमरे का प्रयोग अच्छी तरह कर सकता हूँ।

कृपया अपना कैमरा मुझे एक सप्ताह के लिए दें। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि आपके कैमरे को अच्छी तरह रखूँगा। ज्योंही मैं यहाँ लौटकर आऊँगा, त्योंही मैं आपको यह लौटा दूँगा।

AJAY KUMAR

कृपया मेरा प्रणाम चाचाजी और चाचाजी को कह देंगे।

आपका स्नेह भाजन

उदय

पता- श्री श्याम कुमार,

कोर्ट रोड, बाढ़

जिला-पटना

अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें उसे स्कूल में अच्छा व्यवहार करने की राय दीजिए।

स्टेशन रोड,

सीतामढ़ी

10 जनवरी, 1988

प्रिय नरेंद्र,

आज तुम्हारा पत्र पाकर और यह जानकर कि तुम जिला स्कूल में भरती हो गए हो, मैं बहुत खुश हूँ। मुझे आशा है कि स्कूल के प्रथम दिन का तुम्हारा अनुभव बड़ा मधुर होगा। फिर भी, मैं तुम्हें खतरों से सचेत करने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ। स्कूल में जिस तरह बहुत-से अच्छे लड़के है, उसी तरह बहुत-से बुरे लड़के हैं। केवल अच्छे लड़कों के साथ तुम्हें रहना चाहिए। इस कार्य में तुम्हारे शिक्षक तुम्हारी सहायता करेंगे। दुष्ट और आलसी लड़कों की संगति से हमेशा दूर रहने की चेष्टा करोगे। अपने पाठ के संबंध में भी तुम्हें सचेत और समयनिष्ठ रहना चाहिए। तुम्हें अपने शिक्षकों को सबसे अधिक सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए अन्यथा तुम कुछ सीख नहीं सकोगे। अपने साथियों के साथ तुम्हारा व्यवहार भी भाई की तरह होना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरी हिदायतों पर ध्यान दोगे। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम बहुत अच्छे लड़के बनोगे।

AJAY KUMAR

तुम्हारा शुभेच्छुक,

सुरेश मोहन

पता- नरेंद्र मोहन सिन्हा,

वर्ग 10, जिला स्कूल,

मुजफ्फरपुर

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें मेला देखने का वर्णन कीजिए।

बाँकीपुर,

पटना-4

15 नवंबर, 1987

प्रिय शेखर,

पिछले कई दिनों से मैं तुम्हें पत्र लिखने के लिए सोच रहा था। पर, मुझे सोनपुर मेला देखने की इच्छा थी। इसलिए मैंने जान-बूझकर पत्र लिखने में देर की। मैंने सोचा कि सोनपुर मेले से लौटकर पत्र देना अच्छा होगा ताकि मैं वहाँ के अनुभव का वर्णन कर सकूँ।

सोनपुर का मेला एक बहुत बड़े क्षेत्र में लगता है। मैं समझता हूँ कि यह दुनिया का सबसे बड़ा मेला है। यहाँ सभी तरह के पशु और पक्षी- सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक- बेचे जाते है। यहाँ पर अनगिनत दूकानें रहती है और चीजों की अत्यधिक खरीद-बिक्री होती है। सबसे बड़ा बाजार जानवरों का है जहाँ गाय, भैंस, घोड़ा, ऊँट, हाथी इत्यादि बिकते हैं। मेले में बहुत-से होटल, नाटक-मंडली, सर्कस-मंडली इत्यादि रहते है। मेले में बहुत अधिक भीड़ रहती है और हरिहरनाथ के मंदिर में सबसे अधिक भीड़ रहती है।

AJAY KUMAR

मेले में संध्या का समय बड़ा दुःखदायी रहता है। बहुत-से लोग एक साथ भोजन बनाते है, इसलिए धुआँ बहुत उठता है। खासकर मैंने पक्षियों के बाजार का अधिक आनंद उठाया; क्योंकि एक ही जगह मैंने हजारों तरह के पक्षियों को देखा। उनमें से बहुतों का मिलना दुर्लभ था और वे बहुत दूर से लाए गए थे।

मेला जाने से मुझे बहुत आनंद हुआ, लेकिन तुम्हारी अनुपस्थिति से दुःख हुआ।

तुम्हारा शुभचिंतक,

रामानुज

पता- श्री शेखर प्रसाद,

मारफत: बाबू नंदकिशोर लाल, वकील

महाजनटोली, आरा।

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें उसे उसकी सफलता पर बधाई दीजिए।

अशोक रोड,

गया

15 जून, 1988

प्रिय राजीव,

मैंने माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में तुम्हारी सफलता के बारे में अभी सुना है। अपनी सफलता पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

तुमने दुर्लभ विशिष्टता प्राप्त की है। सभी सफल छात्रों में प्रथम प्राप्त करना सरल काम नहीं है। मुझे विश्वास था कि तुम यह विशिष्टता अवश्य प्राप्त करोगे। तुम्हें नियमित रूप से और धैर्यपूर्वक परिश्रम करने के कारण सफलता मिली है। तुमने केवल अपने ही लिए नहीं,

AJAY KUMAR

बल्कि अपने सभी मित्रों के लिए सम्मान प्राप्त किया है। तुम्हारी सफलता से मुझे प्रेरणा मिलती है। मैं आशा करता हूँ कि तुम भविष्य में इसी प्रकार विशिष्टता प्राप्त करोगे।

अपनी सफलता के उपलक्ष्य में भोज का प्रबंध कब करोगे ? भोज के लिए मुझे निमंत्रण देना नहीं भूलना।

शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा शुभचिंतक,

रवींद्र

पता- श्री राजीव सिंह,

15 पाटलिपुट कोलोनी,

पटना

आपका मित्र बीमार है। उसे खुश रहने के लिए एक पत्र लिखिए।

गोलकपुर,

पटना-6

16 जनवरी, 1988

प्रिय सुरेश,

तुम्हारी बीमारी के बारे में सुनकर मैं बहुत दुखी हूँ। आज मुझे उमेश का एक पत्र मिला है। उसी से मुझे तुम्हारी बीमारी की जानकारी हुई। मैं वास्तव में तुम्हारे लिए बहुत दुखी हूँ।

AJAY KUMAR

उसका कहना है कि तुम बहुत घबरा गए हो। तुम्हें अपने छात्रावास में अकेलापन महसूस होता होगा। मुझे लगता है कि तुम्हारे मित्र तुम्हारी देखभाल अवश्य करते होंगे। अच्छा होता कि तुम्हें अस्पताल में ले जाया जाता।

निराश नहीं होओ। खुश हो जाओ। तुम्हारी बीमारी खतरनाक नहीं है। तुम कुछ ही दिनों में अच्छे हो जाओगे। उदासी का त्याग कर दो। तुम्हें पूरा आराम करना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारे अच्छे होने की खबर जल्दी सुनूँगा।

शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा प्रिय मित्र,

सतीश

पता- श्री सुरेश कुमार,

कमरा नं० 6,

जिला स्कूल छात्रावास

मुंगेर

अपनी बहन को एक पत्र लिखिए जिसमें अपने स्कूल में गणतंत्र दिवस के समारोह का वर्णन कीजिए।

बाकरगंज,

पटना-4

31 जनवरी, 2005

प्रिय रतन,

AJAY KUMAR

बहुत दिनों से मुझे तुम्हारा पत्र नहीं मिला है। मुझे दुःख है कि मैं तुम्हें पहले पत्र नहीं लिख सका, क्योंकि मैं अपने स्कूल के गणतंत्र-दिवस-समारोह की तैयारी में व्यस्त था। मैं सोचता हूँ कि तुम जानना चाहोगी कि हमलोगों ने अपने स्कूल में गणतंत्र दिवस कैसे मनाया।

गणतंत्र दिवस को सभी शिक्षक और छात्र सुबह में स्कूल के अहाते में एकत्र हुए। हमारे स्कूल के प्रधानाध्यापक ने 8 बजे सुबह में राष्ट्रीय झंडा फहराया। हमलोगों ने राष्ट्रीय गीत गाया। तब एन०सी० के लड़कों ने राष्ट्रीय झंडा को सलामी दी। हमारे प्रधानाध्यापक और अन्य शिक्षकों ने गणतंत्र दिवस के महत्त्व पर भाषण दिया।

रात में हमलोगों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्कूल के मकान को प्रकाशित किया गया। वह बहुत सुंदर लगता था। हमलोगों ने एक नाटक प्रस्तुत किया। दर्शकों ने इसकी प्रशंसा की। हमारा सांस्कृतिक कार्यक्रम वस्तुतः बहुत सफल हुआ। इस प्रकार हमलोगों ने अत्यंत उत्साह के साथ अपने स्कूल में गणतंत्र दिवस मनाया।

शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा शुभचिंतक,

मुकुल

पता- सुश्री सुभाषिनी शरण,

मारफत- श्री प्रमोद शरण,

लालगंज,

आरा।

अपने मित्र को एक पत्र में अपने स्कूल में हुए एक आनंददायक उत्सव के बारे में लिखिए।

पार्क रोड,

जमशेदपुर,

AJAY KUMAR

17 फरवरी, 1999

प्रिय प्रभात,

मुझे एक महीने से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला है। हाल में मेरे स्कूल में एक आनंददायक उत्सव हुआ था। मैं सोचता हूँ कि तुम उसके बारे में सुनना चाहोगे।

इस वर्ष मेरे स्कूल में पारितोषिक-वितरण समारोह 15 फरवरी को हुआ था। एक सप्ताह पहले ही इसकी तैयारियाँ शुरू हो गई। हमलोगों ने गाने के लिए कुछ कविताओं और गीतों को चुना। हमलोगों ने एक नाटक खेलने का निश्चय किया। नाटक में भाग लेने के लिए कुछ लड़कों को चुना गया। छात्रों के अभिभावकों और शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निमंत्रणपत्र भेजे गए।

पारितोषिक-वितरण के दिन स्कूल के मकान को सजाया गया। स्कूल के प्रांगण में एक बड़ा शामियाना लगाया गया। उत्सव 3 बजे अपराह्न से शुरू होनेवाला था, लेकिन छात्र समय से बहुत पहले जमा होने लगे। मुख्य द्वार पर मुख्य अतिथि का हार्दिक स्वागत किया गया। उनको मंच पर ले जाया गया। तब एक गीत से उत्सव शुरू हुआ। हमारे स्कूल के प्रधानाध्यापक ने स्कूल की प्रगति के बारे में एक रिपोर्ट पढ़ी। उनके भाषण के बाद कविताएँ और गीत गाए गए। तब एक छोटा नाटक प्रस्तुत किया गया।

जब नाटक समाप्त हो गया, तब मुख्य अतिथि ने पारितोषिक बाँटा। तत्पश्चात उन्होंने एक संक्षिप्त भाषण दिया जिसमें उन्होंने हमलोगों को बहुत अच्छे सुझाव दिए। धन्यवाद-ज्ञापन के साथ उत्सव समाप्त हो गया।

हमलोगों ने उत्सव से बहुत आनन्द उठाया। तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मुझे कई पारितोषिक मिले।

तुम्हारा शुभचिंतक,

राकेश

पता- श्री प्रभात कुमार,

54 गर्दनीबाग,

पटना

AJAY KUMAR

आपका मित्र बराबर अध्ययन में लगा रहता है। उसे एक पत्र लिखिए जिसमें उसे खेलकूद में भाग लेने की राय दीजिए।

जिला स्कूल छात्रावास,

आरा

24 फरवरी, 1998

प्रिय अरुण,

बहुत दिनों से मुझे तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला है। मुझे लगता है कि तुम अध्ययन में इतना व्यस्त हो कि तुम पत्र नहीं लिख पाते। मैं जानता हूँ कि तुम अपनी किताबों को पढ़ने में इतना व्यस्त रहते हो कि खेल-कूद में भाग नहीं लेते। यह बहुत खराब है।

क्या तुमने इस कहावत को सुना है, "बराबर काम करना और कभी नहीं खेलना लड़के को सुस्त बना देता है ?" इस कहावत में बहुत सचाई है। यदि तुम्हारा स्वास्थ्य खराब रहे तो तुम कोई काम नहीं कर सकते। स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। यदि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नहीं, तो तुम जीवन का आनंद नहीं उठा सकते।

इसलिए मैं तुम्हें खेल-कूद में नियमित रूप से भाग लेने की राय दूँगा। वे बहुत उपयोगी हैं। यदि तुम खेलना शुरू कर दो तो तुम जल्दी ही इसका लाभ महसूस करोगे। तुम कह सकते हो कि खेल-कूद में बहुत समय लगेगा जो तुम अध्ययन में लगा सकते हो। नहीं, तुम गलती कर रहे हो। खेलने में तुम्हारा जो समय लगेगा उससे तुम्हें लाभ होगा।

मैं आशा करता हूँ कि तुम जल्दी ही खेलना शुरू कर दोगे। यदि तुम मेरी राय पर ध्यान नहीं दोगे तो बाद में दुखी होओगे।

शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा प्रिय मित्र,

मोहन

AJAY KUMAR

पता- श्री अरुण कुमार,

सुलतानगंज,

पटना-6

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें उसे अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में बताइए।

स्टेशन रोड,

वैद्यनाथधाम

15 मार्च, 1988

प्रिय राकेश,

मैंने आज तुम्हारा पत्र पाया और मैं इसे पढ़कर बहुत खुश हूँ। तुमने मुझसे पूछा है कि मैं अपने जीवन में क्या करना चाहता हूँ। तुम सोचते हो कि मनुष्य पैसा प्राप्त करने की मशीन है और यही उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। मैं साफ-साफ अवश्य कहूँगा कि मैं तुमसे असहमत हूँ।

मैं समझता हूँ कि जीवन की सार्थकता दूसरे की भलाई करने में है। सच्ची सेवा से दूसरे की भलाई होती है और साथ-ही-साथ सेवा करनेवाले को आंतरिक संतोष भी होता है। उपयोगी सेवा के लिए शिक्षा आवश्यक है। अशिक्षित व्यक्ति थोड़े ही व्यक्तियों की सेवा कर सकता है, परन्तु एक शिक्षित व्यक्ति अपने विचारों एवं आविष्कारों से सारे देश की सेवा कर सकता है। यह सत्य है कि जीवन की सबसे अधिक आवश्यक वस्तु रुपया है, परन्तु अपनी आवश्यकता की पूर्ति ही से काम नहीं चलेगा। अपनी आवश्यकता की पूर्ति तो जानवर भी कर लेते है। मनुष्य जानवर से अच्छा है, इसलिए उससे कुछ अच्छी चीज की आशा की जाती है। अतः, मेरे जीवन का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना और समाज की भलाई के लिए इसका उपयोग करना है।

मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरे विचार को पसंद करोगे।

तुम्हारा शुभचिंतक,

रमन

पता- श्री अशोक कुमार

त्रिपोलिया,

पटना-7

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें एक वनभोज का वर्णन कीजिए जिसमें आपने भाग लिया हो।

पुनपुन,

15 जनवरी, 1988

प्रिय रमेश,

तुम्हारा पत्र पाकर मैं बहुत खुश हूँ। तुमने उस वनभोज के संबंध में कुछ लिखने का अनुरोध किया है जिसमें कुछ दिन पूर्व मैंने हाथ बंटाया था।

पिछली बार बड़े दिन की छुट्टी में मेरे कुछ मित्रों ने एक वनभोज का प्रबंध किया। यह तय किया गया कि बराबर पहाड़ी जाना चाहिए। 25 दिसंबर को लगभग नौ बजे सुबह हमलोगों ने बेला के लिए प्रस्थान किया। जाड़े का मौसम था। सूर्य तेजी से चमक रहा था। सूर्य की धूप में टहलना बड़ा आनंददायक था। दो मील की दूरी हमलोगों ने पैदल तय की और पहाड़ी के किनारे पहुँचे। पहाड़ी के तल के निकट पातालगंगा नाम की एक धारा है।

यहाँ से हमलोगों ने थोड़ा पानी अपने साथ ले लिया। ऊपर चढ़ने में लगभग एक घँटा समय लगा। हमलोगों को कुछ समय गुफाओं को देखने में लगा। गुफाएँ बहुत पुरानी है। इनकी दीवालें बहुत चमकदार है, मानों उनपर पालिश कर दी गई हो। उनमें से एक से मांस की दुर्गन्ध आ रही थी। कोई जंगली जानवर वहाँ आया होगा। पहाड़ी के बीच में एक बहुत सुंदर स्थान है। यह एक बहुत बड़ा खुला हुआ स्थान है, जिसके चरों ओर पहाड़ियाँ है।

AJAY KUMAR

यह आँगन की तरह दिखलाई पड़ता है। हमलोगों ने वहीं डेरा डाल दिया। हमलोग भोजन बनाने का प्रबंध करने लगे। लगभग दो घण्टे में भोजन तैयार हो गया। काफी मेहनत हो चुकी थी, इसलिए हमलोगों को जोरों की भूख लगी थी। यहाँ तक कि भोजन परोसे जाने के पहले ही हमलोग भूखे भेड़िए की तरह उसपर टूट पड़े। भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। शायद ऐसा थकान और भूख के कारण हुआ। भोजन समाप्त करने के बाद हमलोग कहानी कहने के लिए बैठे।

हमलोगों में से प्रत्येक ने एक छोटी हास्यपूर्ण कहानी कही। हमलोग इच्छा-भर हँसे। उस समय चार बज गए थे। हमलोगों को पौने छह बजे गाड़ी पकड़नी थी। इसलिए हमलोगों ने प्रस्थान किया और आधा घण्टा पहले बेला स्टेशन पहुँच गए। गाड़ी ठीक समय पर आई। वनभोज का पूरा आनंद उठाकर हमलोग आठ बजे रात में घर पहुँच गए।

तुम्हारा शुभचिंतक,

मनोहर

पता- श्री रमेश तिवारी,

वर्ग 10,

जिला स्कूल,

मुंगेर

निर्धन-छात्र-कोष से सहायता के लिए अपने स्कूल के प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदनपत्र लिखिए।

सेवा में,

प्रधानाध्यापक,

मुस्लिम एच० ई० स्कूल,

लहेरियासराय।

द्वारा: वर्गाध्यापक महोदय

महाशय,

AJAY KUMAR

सविनय निवेदन है कि मैं आपके स्कूल के दसवें वर्ग का एक गरीब विद्यार्थी हूँ। मेरे पिताजी मेरी शिक्षा का व्यय नहीं जुटा सकते। इसी कारण यहाँ मेरी पूरी फीस माफ है।

मैं पुस्तकें भी नहीं खरीद सकता हूँ। अतः, आपसे अनुरोध करता हूँ कि दीन-छात्र-कोष से मुझे पंद्रह रुपए का अनुदान पुस्तक खरीदने के लिए दिया जाए। इस दयापूर्ण कार्य के लिए मैं हमेशा आपका कृतज्ञ रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

शेख रजा हुसेन,

वर्ग 10,

क्रमांक- 12

15 फरवरी, 1998

एक पद के लिए आवेदन-पत्र

सेवा में,

जिलाधीश,

पटना।

द्वारा: उचित माध्यम

महाशय,

यह जानकर कि आपके अधीन रेकार्ड-कीपर का एक पद रिक्त हुआ है, मैं इसके लिए अपने को एक उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करता हूँ।

AJAY KUMAR

अपनी योग्यता के संबंध में मुझे यह कहना है कि मैंने पिछले साल, मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की है। अँगरेजी के अलावा मैं हिंदी और उर्दू भी अच्छी तरह से जानता हूँ और दोनों लिपियाँ तेजी से लिख सकता हूँ।

अभी मैं बिहार काँटेज इंडस्ट्रीज इंस्ट्रीच्यूट में 'स्टोर-कीपर' हूँ और पिछले दस महीने से अपने उच्च पदाधिकारियों को अपने कार्यो से पूर्ण संतोष प्रदान करता रहा हूँ जो मेरे आवेदन-पत्र पर अधीक्षक द्वारा दिए गए सिफारिश से स्पष्ट हो जाएगा। मेरी वर्तमान उम्र 23 वर्ष और कुछ महीने है।

अतः, आपसे अनुरोध करता हूँ कि कृपया उस पद पर मुझे नियुक्त कर लिया जाए। मैं इसके योग्य अपने को प्रमाणित करने की चेष्टा करूँगा।

मैं इस आवेदन-पत्र के साथ सेकेंडरी स्कूल प्रमाणपत्र एवं प्रधानाध्यापक तथा अन्य सहायक शिक्षकों के द्वारा दिए गए तीन प्रशंसापत्र भेज रहा हूँ।

विश्र्चासभाजन,

रामकुमार वर्मा,

स्टोर-कीपर

बिहार काँटेज इंडस्ट्रीज इंस्ट्रीच्यूट,

गुलजारबाग, पटना

20 जनवरी, 1998

## विवाह के लिए निमंत्रण

अधोहस्ताक्षरी अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर श्री बदरीनारायण सिन्हा की उपस्थिति का अनुरोध करते हैं। विवाह 20 फरवरी, 1988 को संध्या साढ़े आठ बजे होगा।

AJAY KUMAR

महेश चन्द्र दास

कार्यक्रम:

बारात- साढ़े पाँच बजे संध्या

भोजन- साढ़े सात बजे रात्रि

विवाह- साढ़े आठ बजे रात्रि

पर्ण कुटी, गया

## भोजन के लिए निमंत्रण

श्री आर० एल० सामंत बुधवार दिनांक 11 फरवरी, 1988 के आठ बजे रात्रि के समय भोज के अवसर पर श्री एस० के० बनर्जी की उपस्थिति का अनुरोध करते हैं।

फ्रेजर रोड,

पटना-1

## निमंत्रण स्वीकार करने का उत्तर

श्री एस० के० बनर्जी बड़े हर्ष के साथ श्री आर० एल० सामंत द्वारा 11 फरवरी, 1988 के आठ बजे रात्रि के समय भोजन का निमंत्रण स्वीकार करते हैं।

एक्जीबीशन रोड

पटना-1

9 फरवरी, 1988

AJAY KUMAR

## निमंत्रण अस्वीकार करने का उत्तर

श्री एस० के० बनर्जी को खेद है कि वे बुधवार, दिनांक 11 फरवरी, 1988 के आठ बजे रात्रि के समय के भोज का निमंत्रण दूसरी जगह व्यस्तता के कारण स्वीकार नहीं कर सकते।

एक्जीबीशन रोड,

पटना-1

9 फरवरी, 1988

## एक पुस्तक-विक्रेता को कुछ किताबें भेजने के लिए एक पत्र लिखिए।

सेवा में,

व्यवस्थापक

भारती भवन

गोविन्द मित्र रोड,

पटना-4

प्रिय महाशय,

यदि आप कृपया वी० पी ० पी० द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें यथाशीघ्र मेरे पास भेज दें तो मैं आपका बड़ा आभारी रहूँगा।

1. सेलेक्ट यंग एसेज एंड लेटर्स- 3 प्रतियाँ।

2. हाउ टु राइट करेक्ट इंगलिश - 3 प्रतियाँ।

3. हाउ टु ट्रांस्लेट इंटु इंगलिश- 3 प्रतियाँ।

AJAY KUMAR

आपका विश्श्वासी,

सुरेश प्रसाद

व्यवस्थापक,

भारती भवन,

गोविन्द मित्र रोड

पटना-4

AJAY KUMAR

# विराम चिह्न (Punctuation Mark)

भिन्न-भिन्न प्रकार के भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच या अंत में किया जाता है, उन्हें 'विराम चिह्न' कहते है।

दूसरे शब्दों में- विराम का अर्थ है - 'रुकना' या 'ठहरना' । वाक्य को लिखते अथवा बोलते समय बीच में कहीं थोड़ा-बहुत रुकना पड़ता है जिससे भाषा स्पष्ट, अर्थवान एवं भावपूर्ण हो जाती है। लिखित भाषा में इस ठहराव को दिखाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्हें ही विराम-चिह्न कहा जाता है।

सरल शब्दों में- अपने भावों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए या एक विचार और उसके प्रसंगों को प्रकट करने के लिए हम रुकते हैं। इसी को विराम कहते है।

इन्हीं विरामों को प्रकट करने के लिए हम जिन चिह्नों का प्रयोग करते है, उन्हें 'विराम चिह्न' कहते है।

यदि विराम-चिह्न का प्रयोग न किया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

जैसे- (1)रोको मत जाने दो।

(2)रोको, मत जाने दो।

(3)रोको मत, जाने दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले वाक्य में अर्थ स्पष्ट नहीं होता, जबकि दूसरे और तीसरे वाक्य में अर्थ तो स्पष्ट हो जाता है लेकिन एक-दूसरे का उल्टा अर्थ मिलता है जबकि तीनो वाक्यों में वही शब्द है। दूसरे वाक्य में 'रोको' के बाद अल्पविराम लगाने से रोकने के लिए कहा गया है जबकि तीसरे वाक्य में 'रोको मत' के बाद अल्पविराम लगाने से किसी को न रोक कर जाने के लिए कहा गया हैं। इस प्रकार विराम-चिह्न लगाने से दूसरे और तीसरे वाक्य को पढ़ने में तथा अर्थ स्पष्ट करने में जितनी सुविधा होती है उतनी पहले वाक्य में नहीं होती।

अतएव विराम-चिह्नों के विषय में पूरा ज्ञान होना आवश्यक है।

## विराम चिह्न की आवश्यकता-

'विराम' का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव। जीवन की दौड़ में मनुष्य को कहीं-न-कहीं रुकना या ठहरना भी पड़ता है। विराम की आवश्यकता हर व्यक्ति को होती है। जब हम करते-करते थक जाते है, तब मन आराम करना चाहता है। यह आराम विराम का ही दूसरा नाम है। पहले विराम होता है, फिर आराम। स्पष्ट है कि साधारण जीवन में भी विराम की आवश्यकता है।

AJAY KUMAR

लेखन मनुष्य के जीवन की एक विशेष मानसिक अवस्था है। लिखते समय लेखक यों ही नहीं दौड़ता, बल्कि कहीं थोड़ी देर के लिए रुकता है, ठहरता है और पूरा (पूर्ण) विराम लेता है। ऐसा इसलिए होता है कि हमारी मानसिक दशा की गति सदा एक-जैसी नहीं होती। यही कारण है कि लेखनकार्य में भी विरामचिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है।

यदि इन चिन्हों का उपयोग न किया जाय, तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और वाक्य एक-दूसरे से उलझ जायेंगे और तब पाठक को व्यर्थ ही माथापच्ची करनी पड़ेगी।

पाठक के भाव-बोध को सरल और सुबोध बनाने के लिए विरामचिन्हों का प्रयोग होता है। सारांश यह कि वाक्य के सुन्दर गठन और भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए इन विरामचिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता मानी गयी है।

हिन्दी में प्रयुक्त विराम चिह्न- हिन्दी में निम्नलिखित विरामचिह्नों का प्रयोग अधिक होता है-

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित है-

(1) अल्प विराम (Comma)( , )

(2) अर्द्ध विराम (Semi colon) ( ; )

(3 ) पूर्ण विराम(Full-Stop) ( । )

(4) विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Interjection)( ! )

(5) प्रश्नवाचक चिह्न (Question mark) ( ? )

(6) कोष्ठक (Bracket) ( () )

(7) योजक चिह्न (Hyphen) ( - )

(8) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न (Inverted Comma) ( ''... '' )

(9) लाघव चिह्न (Abbreviation sign) ( o )

(10) आदेश चिह्न (Sign of following) ( :- )

(11) रेखांकन चिह्न (Underline) (_)

(12) लोप चिह्न (Mark of Omission)(...)

AJAY KUMAR

(1)अल्प विराम (Comma) **(,)** - वाक्य में जहाँ थोड़ा रुकना हो या अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों आदि को अलग करना हो वहाँ अल्प विराम ( , ) चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

इसका अर्थ है, थोड़ी देर के लिए ठहरना या रुकना। हिंदी में इस विरामचिह्न का प्रयोग सबसे अधिक होता है। इसके प्रयोग की अनेक स्थितियाँ हैं।

इसके कुछ मुख्य नियम इस प्रकार हैं।-

(i) वाक्य में जब दो से अधिक समान पदों और वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' आये, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे-

पदों में- राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न राजमहल में पधारे।

वाक्यों में- वह जो रोज आता है, काम करता है और चला जाता है।

(ii) जहाँ शब्दों को दो या तीन बार दुहराया जाय, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है।

जैसे- वह दूर से, बहुत दूर से आ रहा है।

सुनो, सुनो, वह क्या कह रही है।

नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।

(iii) जहाँ किसी व्यक्ति को संबोधित किया जाय, वहाँ अल्पविराम का चिह्न लगता है।

जैसे- भाइयो, समय आ गया है, सावधान हो जायँ।

प्रिय महराज, मैं आपका आभारी हूँ।

सुरेश, कल तुम कहाँ गये थे ?

देवियो, आप हमारे देश की आशाएँ है।

(iv)जिस वाक्य में 'वह', 'तो', 'या', 'अब', इत्यादि लुप्त हों, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है।

जैसे- मैं जो कहता हूँ, कान लगाकर सुनो। ('वह' लुप्त है।)

AJAY KUMAR

वह कब लौटेगा, कह नहीं सकता। ('यह' लुप्त है। )

वह जहाँ जाता है, बैठ जाता है। ('वहाँ' लुप्त है। )

कहना था सो कह दिया, तुम जानो। ('अब' लुप्त है।)

(v)यदि वाक्य में प्रयुक्त किसी व्यक्ति या वस्तु की विशिष्टता किसी सम्बन्धवाचक सर्वनाम के माध्यम से बतानी हो, तो वहाँ अल्पविराम का प्रयोग निम्नलिखित रीति से किया जा सकता है-

मेरा भाई, जो एक इंजीनियर है, इंगलैण्ड गया है

दो यात्री, जो रेल-दुर्घटना के शिकार हुए थे, अब अच्छे है।

यह कहानी, जो किसी मजदूर के जीवन से सम्बद्ध है, बड़ी मार्मिक है।

(vi) अँगरेजी में दो समान वैकल्पिक वस्तुओं तथा स्थानों की 'अथवा', 'या' आदि से सम्बद्ध करने पर उनके पहले अल्पविराम लगाया जाता है।

जैसे- Constantinople, or Istanbul, was the former capital of Turkey.

Nitre,or salt petre,is dug from the earth.

(vii)इसके ठीक विपरीत, दो भित्र वैकल्पिक वस्तुओं तथा स्थानों को 'अथवा', 'या' आदि से जोड़ने की स्थिति में 'अथवा', 'या' आदि के पहले अल्पविराम नहीं लगाया जाता है।

जैसे- I should like to live in Devon or Cornwall .

He came from kent or sussex.

(viii)हिन्दी में उक्त नियमों का पालन, खेद है, कड़ाई से नहीं होता। हिन्दी भाषा में सामान्यतः 'अथवा', 'या' आदि के पहले अल्पविराम का चिह्न नहीं लगता।

जैसे - पाटलिपुत्र या कुसुमपुर भारत की पुरानी राजधानी था।

कल मोहन अथवा हरि कलकत्ता जायेगा।

(ix) किसी व्यक्ति की उक्ति के पहले अल्पविराम का प्रयोग होता है।

जैसे- मोहन ने कहा, ''मैं कल पटना जाऊँगा। ''

इस वाक्य को इस प्रकार भी लिखा जा सकता है- 'मोहन ने कहा कि मैं कल पटना जाऊँगा।' कुछ लोग 'कि' के बाद अल्पविराम लगाते है, लेकिन ऐसा करना ठीक नहीं है। यथा-

राम ने कहा कि, मैं कल पटना जाऊँगा।

ऐसा लिखना भद्दा है। 'कि' स्वयं अल्पविराम है; अतः इसके बाद एक और अल्पविराम लगाना कोई अर्थ नहीं रखता। इसलिए उचित तो यह होगा कि चाहे तो हम लिखें- 'राम ने कहा, 'मैं कल पटना जाऊँगा', अथवा लिखें- 'राम ने कहा कि मैं कल पटना जाऊँगा' ।दोनों शुद्ध होंगे।

(x) बस, हाँ, नहीं, सचमुच, अतः, वस्तुतः, अच्छा-जैसे शब्दों से आरम्भ होनेवाले वाक्यों में इन शब्दों के बाद अल्पविराम लगता है।

जैसे- बस, हो गया, रहने दीजिए।

हाँ, तुम ऐसा कह सकते हो।

नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

सचमुच, तुम बड़े नादान हो।

अतः, तुम्हे ऐसा नहीं कहना चाहिए।

वस्तुतः, वह पागल है।

अच्छा, तो लीजिए, चलिए।

(xi) शब्द युग्मों में अलगाव दिखाने के लिए; जैसे- पाप और पुण्य, सच और झूठ, कल और आज। पत्र में संबोधन के बाद;

जैसे- पूज्य पिताजी, मान्यवर, महोदय आदि। ध्यान रहे कि पत्र के अंत में भवदीय, आज्ञाकारी आदि के बाद अल्पविराम नहीं लगता।

(xii) क्रियाविशेषण वाक्यांशों के बाद भी अल्पविराम आता है। जैसे- महात्मा बुद्ध ने, मायावी जगत के दुःख को देख कर, तप प्रारंभ किया।

(xiii) किन्तु, परन्तु, क्योंकि, इसलिए आदि समुच्चयबोधक शब्दों से पूर्व भी अल्पविराम लगाया जाता है;

जैसे- आज मैं बहुत थका हूँ, इसलिए विश्राम करना चाहता हूँ।

मैंने बहुत परिश्रम किया, परंतु फल कुछ नहीं मिला।

(xiv) तारीख के साथ महीने का नाम लिखने के बाद तथा सन्, संवत् के पहले अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- 2 अक्टूबर, सन् 1869 ई० को गाँधीजी का जन्म हुआ।

(xv) उद्धरण से पूर्व 'कि' के बदले में अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे- नेता जी ने कहा, "दिल्ली चलो"। ('कि' लगने पर- नेताजी ने कहा कि "दिल्ली चलो" ।)

(xvi) अंको को लिखते समय भी अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे- 5, 6, 7, 8, 9, 10, 15, 20, 60, 70, 100 आदि।

(2)अर्द्ध विराम (Semi colon) **( ; )** - जहाँ अल्प विराम से कुछ अधिक ठहरते है तथा पूर्ण विराम से कम ठहरते है, वहाँ अर्द्ध विराम का चिह्न ( ; ) लगाया जाता है।

यदि एक वाक्य या वाक्यांश के साथ दूसरे वाक्य या वाक्यांश का संबंध बताना हो तो वहाँ अर्द्धविराम का प्रयोग होता है। इस प्रकार के वाक्यों में वाक्यांश दूसरे से अलग होते हुए भी दोनों का कुछ-न कुछ संबंध रहता है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

(a)आम तौर पर अर्द्धविराम दो उपवाक्यों को जोड़ता है जो थोड़े से असंबद्ध होते है एवं जिन्हें 'और' से नहीं जोड़ा जा सकता है। जैसे-

फलों में आम को सर्वश्रेष्ठ फल मन गया है; किन्तु श्रीनगर में और ही किस्म के फल विशेष रूप से पैदा होते है।

(b) दो या दो से अधिक उपाधियों के बीच अर्द्धविराम का प्रयोग होता है; जैसे- एम. ए.; बी, एड. । एम. ए.; पी. एच. डी. । एम. एस-सी.; डी. एस-सी. ।

वह एक धूर्त आदमी है; ऐसा उसके मित्र भी मानते हैं।

यह घड़ी ज्यादा दिनों तक नहीं चलेगी; यह बहुत सस्ती है।

हमारी चिट्ठी उड़ा ले गये; बोले तक नहीं।

काम बंद है; कारोबार ठप है; बेकारी फैली है; चारों ओर हाहाकार है।

कल रविवार है; छुट्टी का दिन है; आराम मिलेगा।

(3) पूर्ण विराम (Full-Stop) **( । )** - जहाँ एक बात पूरी हो जाये या वाक्य समाप्त हो जाये वहाँ पूर्ण विराम ( । ) चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- पढ़ रहा हूँ।

हिन्दी में पूर्ण विराम चिह्न का प्रयोग सबसे अधिक होता है। यह चिह्न हिन्दी का प्राचीनतम विराम चिह्न है।

(i)पूर्णविराम का अर्थ है, पूरी तरह रुकना या ठहरना। सामान्यतः जहाँ वाक्य की गतिअन्तिम रूप ले ले, विचार के तार एकदम टूट जायें, वहाँ पूर्णविराम का प्रयोग होता है।

जैसे-

यह हाथी है। वह लड़का है। मैं आदमी हूँ। तुम जा रहे हो।

इन वाक्यों में सभी एक-दूसरे से स्वतंत्र हैं। सबके विचार अपने में पूर्ण है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक वाक्य के अंत में पूर्णविराम लगना चाहिए। संक्षेप में, प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्णविराम का प्रयोग होता है।

(ii) कभी कभी किसी व्यक्ति या वस्तु का सजीव वर्णन करते समय वाक्यांशों के अन्त में पूर्णविराम का प्रयोग होता है।

जैसे- गोरा रंग।

(a) गालों पर कश्मीरी सेब की झलक। नाक की सीध में ऊपर के ओंठ पर मक्खी की तरह कुछ काले बाल। सिर के बाल न अधिक बड़े, न अधिक छोटे।

(b) कानों के पास बालों में कुछ सफेदी। पानीदार बड़ी-बड़ी आँखें। चौड़ा माथा। बाहर बन्द गले का लम्बा कोट।

यहाँ व्यक्ति की मुखमुद्रा का बड़ा ही सजीव चित्र कुछ चुने हुए शब्दों तथा वाक्यांशों में खींचा गया है। प्रत्येक वाक्यांश अपने में पूर्ण और स्वतंत्र है। ऐसी स्थिति में पूर्णविराम का प्रयोग उचित ही है।

(iii) इस चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में किया जाता है।

AJAY KUMAR

जैसे- राम स्कूल से आ रहा है। वह उसकी सौंदर्यता पर मुग्ध हो गया। वह छत से गिर गया।

(iv) दोहा, श्लोक, चौपाई आदि की पहली पंक्ति के अंत में एक पूर्ण विराम (।) तथा दूसरी पंक्ति के अंत में दो पूर्ण विराम (।।) लगाने की प्रथा है। जैसे-

रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे मोती, मानुस, चून।।

पूर्णविराम का दुष्प्रयोग- पूर्णविराम के प्रयोग में सावधानी न रखने के कारण निम्नलिखित उदाहरण में अल्पविराम लगाया गया है-

आप मुझे नहीं जानते, महीने में दो ही दिन व्यस्त रहा हूँ।

यहाँ 'जानते' के बाद अल्पविराम के स्थान पर पूर्णविराम का चिह्न लगाना चाहिए, क्योंकि यहाँ वाक्य पूरा हो गया है। दूसरा वाक्य पहले से बिलकुल स्वतंत्र है।

(4) विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Interjection) **( ! )** - इसका प्रयोग हर्ष, विवाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि का बोध कराने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- वाह ! आप यहाँ कैसे पधारे ? हाय ! बेचारा व्यर्थ में मारा गया।

(i) आह्लादसूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में इसका प्रयोग होता है। जैसे- वाह! तुम्हारे क्या कहने!

(ii)अपने से बड़े को सादर सम्बोधित करने में इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे- हे राम! तुम मेरा दुःख दूर करो। हे ईश्वर ! सबका कल्याण हो।

(iii) जहाँ अपने से छोटों के प्रति शुभकामनाएँ और सदभावनाएँ प्रकट की जाये। जैसे- भगवान तुम्हारा भला करे ! यशस्वी होओ !उसका पुत्र चिरंजीवी हो ! प्रिय किशोर, स्नेहाशीर्वाद !

(iv) जहाँ मन की हँसी-खुशी व्यक्त की जाय।

जैसे- कैसा निखरा रूप है ! तुम्हारी जीत होकर रही, शाबाश ! वाह ! वाह ! कितना अच्छा गीत गाया तुमने !

(विस्मयादिबोधक चिह्न में प्रश्नकर्ता उत्तर की अपेक्षा नहीं करता।

(v) संबोधनसूचक शब्द के बाद; जैसे-

मित्रो ! अभी मैं जो कहने जा रहा हूँ।

साथियो ! आज देश के लिए कुछ करने का समय आ गया है।

(vi) अतिशयता को प्रकट करने के लिए कभी-कभी दो-तीन विस्मयादिबोधक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

अरे, वह मर गया ! शोक !! महाशोक !!!

(5)प्रश्नवाचक चिह्न (Question mark) **( ? )** - प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे- तुम कहाँ जा रहे हो ? वहाँ क्या रखा है ?

इसका प्रयोग निम्नलिखित अवस्थाओं में होता है-

(i) जहाँ प्रश्न करने या पूछे जाने का बोध हो।

जैसे- क्या आप गया से आ रहे है ?

(ii) जहाँ स्थिति निश्चित न हो।

जैसे- आप शायद पटना के रहनेवाले है ?

(iii) जहाँ व्यंग्य किया जाय।

जैसे- भ्रष्टाचार इस युग का सबसे बड़ा शिष्टाचार है, है न ?

जहाँ घूसखोरी का बाजार गर्म है, वहाँ ईमानदारी कैसे टिक सकती है ?

AJAY KUMAR

(iv) इस चिह्न का प्रयोग संदेह प्रकट करने के लिए भी उपयोग किया जाता है; जैसे- क्या कहा, वह निष्ठावान (?) है।

(6) कोष्ठक (Bracket) **( () )** - किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए ( )का चिह्न लगाते है।

जैसे- उच्चारण (बोलना) जीभ एवं कण्ठ से होता है।

(7) योजक चिह्न (Hyphen) **( - )** - हिंदी में अल्पविराम के बाद योजक चिह्न का प्रयोग अधिक होता है। वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ और उनके उच्चारण की स्पष्टता के लिए योजक चिह्न का प्रयोग होता है। शब्दों के निर्माण में भी इसकी उपयोगिता है।

भाषाविज्ञान की दृष्टि से हिन्दी भाषा की प्रकृति विश्लेषणात्मक है, संस्कृत की तरह संश्लेषणात्मक नहीं। संस्कृत में योजक चिह्न का प्रयोग नहीं होता।

एक उदाहरण इस प्रकार है- गायन्ति रमनामानि सततं ये जना भुवि।

नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्योपुनः पुनः।।

हिन्दी में इसका अनुवाद इस प्रकार होगा- पृथ्वी पर जो सदा राम-नाम गाते है, मै उन्हें बार-बार प्रणाम करता हूँ।

यहाँ संस्कृत में 'रमनामानि' लिखा गया और हिन्दी में 'राम-नाम', संस्कृत में 'पुनः पुनः' लिखा गया और हिन्दी में 'बार-बार' । अतः, संस्कृत और हिन्दी का अन्तर स्पष्ट है।

योजक चिह्न की आवश्यकता

अब प्रश्न आता है कि योजक चिह्न लगाने की आवश्यकता क्यों होता है-

योजक चिह्न लगाने की आवश्यकता इसलिए होता है क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त शब्द और उनके अर्थ को योजक चिह्न चमका देता है। यह किसी शब्द के उच्चारण अथवा वर्तनी को भी स्पष्ट करता है।

श्रीयुत रामचन्द्र वर्मा का ठीक ही कहना है कि यदि योजक चिह्न का ठीक-ठीक ध्यान न रखा जाय, तो अर्थ और उच्चारण से सम्बद्ध अनेक प्रकार के भ्रम हो सकते हैं।

इस सम्बन्ध में वर्माजी ने 'भ्रम' के कुछ उदाहरण इस प्रकार दिये हैं-

(क) 'उपमाता' का अर्थ 'उपमा देनेवाला' भी है और 'सौतेली माँ' भी। यदि लेखक को दूसरा अर्थ अभीष्ट है, तो 'उप' और 'माता' के बीच योजक चिह्न लगाना आवश्यक है, नहीं तो अर्थ स्पष्ट नहीं होगा और पाठक को व्यर्थ ही मुसीबत मोल लेनी होगी।

(ख) 'भू-तत्व' का अर्थ होगा- भूमि या पृथ्वी से सम्बद्ध तत्व ; पर यदि 'भूतत्तव' लिखा जाय, तो 'भूत' शब्द का भाववाचक संज्ञारूप ही माना और समझा जायेगा।

(ग) इसी तरह, 'कुशासन' का अर्थ 'बुरा शासन' भी होगा और 'कुश से बना हुआ आसन' भी। यदि पहला अर्थ अभीष्ट है, तो 'कु' के बाद योजक चिह्न लगाना आवश्यक है।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि योजक चिह्न की अपनी उपयोगिता है और शब्दों के निर्माण में इसका बड़ा महत्त्व है। किन्तु, हिन्दी में इसके प्रयोग के नियम निर्धारित नहीं है, इसलिए हिन्दी के लेखक इस ओर पूरे स्वच्छन्द हैं।

योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित अवस्था में होता है-

(i) योजक चिह्न प्रायः दो शब्दों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है, किंतु दोनों का स्वतंत्र रूप बना रहता है। इस संबंध में नियम यह है कि जिन शब्दों या पदों के दोनों खंड प्रधान हों और जिनमें और अनुक्त या लुप्त हो, वहाँ योजक चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे- दाल-रोटी, दही-बड़ा, सीता-राम, फल-फूल ।

(ii) दो विपरीत अर्थवाले शब्दों के बीच योजक चिह्न लगता है।

जैसे- ऊपर-नीचे, राजा-रानी, रात-दिन, पाप-पुण्य, आकाश-पाताल, स्त्री-पुरुष, माता-पिता, स्वर्ग-नरक।

(iii) एक अर्थवाले सहचर शब्दों के बीच भी योजक चिह्न का व्यवहार होता है।

जैसे- दीन-दुःखी, हाट-बाजार, रुपया-पैसा, मान-मर्यादा, कपड़ा-लत्ता, हिसाब-किताब, भूत-प्रेत।

(iv) जब दो विशेषणों का प्रयोग संज्ञा के अर्थ में हो, वहाँ भी योजक चिह्न का व्यवहार होता है।

जैसे- अंधा-बहरा, भूखा-प्यासा, लूला-लँगड़ा।

(v) जब दो शब्दों में एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो तो वहाँ भी योजक चिह्न लगता है।

जैसे- परमात्मा-वरमात्मा, उलटा -पुलटा, अनाप-शनाप, खाना-वाना, पानी-वानी ।

(vi) जब एक ही संज्ञा दो बार लिखी जाय तो दोनों संज्ञाओं के बीच योजक चिह्न लगता है।

जैसे- नगर-नगर, गली-गली, घर-घर, चम्पा-चम्पा, वन-वन, बच्चा-बच्चा, रोम-रोम ।

(vii) निश्चित संख्यावाचक विशेषण के दो पद जब एक साथ प्रयोग में आयें तो दोनों के बीच योजक चिह्न लगेगा।

जैसे- एक-दो, दस-बारह, नहला-दहला, छह-पाँच, नौ-दो, दो-दो, चार-चार।

(viii) जब दो शुद्ध संयुक्त क्रियाएँ एक साथ प्रयुक्त हों,तब दोनों के बीच योजक चिह्न लगता है।

जैसे- पढ़ना-लिखना, उठना-बैठना, मिलना-जुलना, मारना-पीटना, खाना-पीना, आना-जाना, करना-धरना, दौड़ना-धूपना, मरना-जीना, कहना-सुनना, समझना-बुझना, उठना-गिरना, रहना-सहना, सोना-जगना।

(ix) क्रिया की मूलधातु के साथ आयी प्रेरणार्थक क्रियाओं के बीच भी योजक चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे- उड़ना-उड़ाना, चलना-चलाना, गिरना-गिराना, फैलना-फैलाना, पीना-पिलाना, ओढ़ना-उढ़ाना, सोना-सुलाना, सीखना-सिखाना, लेटना-लिटाना।

(x) दो प्रेरणार्थक क्रियाओं के बीच भी योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- डराना-डरवाना, भिंगाना-भिंगवाना, जिताना-जितवाना, चलाना-चलवाना, कटाना-कटवाना, कराना-करवाना।

(xi) परिमाणवाचक और रीतिवाचक क्रियाविशेषण में प्रयुक्त दो अव्ययों तथा 'ही', 'से', 'का', 'न', आदि के बीच योजक चिह्न का व्यवहार होता है।

जैसे- बहुत-बहुत, थोड़ा-थोड़ा, थोड़ा-बहुत, कम-कम, कम-बेश, धीरे-धीरे, जैसे-तैसे, आप-ही आप, बाहर-भीतर, आगे-पीछे, यहाँ-वहाँ, अभी-अभी, जहाँ-तहाँ, आप-से-आप, ज्यों-का-त्यों, कुछ-न-कुछ, ऐंसा-वैसा, जब-तब, तब-तब, किसी-न-किसी, साथ-साथ।

(xii ) गुणवाचक विशेषण में भी 'सा' जोड़कर योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- बड़ा-सा पेड़, बड़े-से-बड़े लोग, ठिंगना-सा आदमी।

(xiii ) जब किसी पद का विशेषण नहीं बनता, तब उस पद के साथ 'सम्बन्धी' पद जोड़कर दोनों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- भाषा-सम्बन्धी चर्चा, पृथ्वी-सम्बन्धी तत्व, विद्यालय-सम्बन्धी बातें, सीता-सम्बन्धी वार्त्ता।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि जिन शब्दों के विशेषणपद बन चुके हैं या बन सकते है, वैसे शब्दों के साथ 'सम्बन्धी' जोड़ना उचित नहीं। यहाँ 'भाषा-सम्बन्धी' के स्थान पर 'भाषागत' या 'भाषिक' या 'भाषाई' विशेषण लिखा जाना चाहिए।

इसी तरह, 'पृथ्वी-सम्बन्धी' के लिए 'पार्थिव' विशेषण लिखा जाना चाहिए। हाँ, 'विद्यालय' और 'सीता' के साथ 'सम्बन्धी' का प्रयोग किया जा सकता है, क्योंकि इन दो शब्दों के विशेषणरूप प्रचलित नहीं हैं। आशय यह कि सभी प्रकार के शब्दों के साथ 'सम्बन्धी' जोड़ना ठीक नहीं।

(xiv ) जब दो शब्दों के बीच सम्बन्धकारक के चिह्न- का, के और की- लुप्त या अनुक्त हों, तब दोनों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। ऐसे शब्दों को हम सन्धि या समास के नियमों से अनुशासित नहीं कर सकते। इनके दोनों पद स्वतंत्र होते हैं।

जैसे-शब्द-सागर, लेखन-कला, शब्द-भेद, सन्त-मत, मानव-जीवन, मानव-शरीर, लीला-भूमि, कृष्ण-लीला, विचार-श्रृंखला, रावण-वध, राम-नाम, प्रकाश-स्तम्भ।

(xv ) लिखते समय यदि कोई शब्द पंक्ति के अन्त में पूरा न लिखा जा सके, तो उसके पहले आधे खण्ड को पंक्ति के अन्त में रखकर उसके बाद योजक चिह्न लगाया जाता है। ऐसी हालत में शब्द को 'शब्दखण्ड' या 'सिलेबुल' या पूरे 'पद' पर तोड़ना चाहिए। जिन शब्दों के योग में योजक चिह्न आवश्यक है, उन शब्दों को पंक्ति में तोड़ना हो तो शब्द के प्रथम अंश के बाद योजक चिह्न देकर दूसरी पंक्ति दूसरे अंश के पहले योजक देकर जारी करनी चाहिए।

(xvi)अनिश्चित संख्यावाचकविशेषण में जब 'सा', 'से' आदि जोड़े जायें, तब दोनों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- बहुत-सी बातें, कम-से-कम, बहुत-से लोग, बहुत-सा रुपया, अधिक-से-अधिक, थोड़ा-सा काम।

(8) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न (Inverted Comma) **("...")** - किसी की कही हुई बात को उसी तरह प्रकट करने के लिए अवतरण चिह्न

( "... " ) का प्रयोग होता है।

जैसे- राम ने कहा, "सत्य बोलना सबसे बड़ा धर्म है।"

उद्धरणचिह्न के दो रूप है- इकहरा ( ' ' ) और दुहरा ( " " )।

(i) जहाँ किसी पुस्तक से कोई वाक्य या अवतरण ज्यों-का-त्यों उद्धृत किया जाए, वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है और जहाँ कोई विशेष शब्द, पद, वाक्य-खण्ड इत्यादि उद्धृत किये जायें वहाँ इकहरे उद्धरण लगते हैं। जैसे-

"जीवन विश्व की सम्पत्ति है। "- जयशंकर प्रसाद

"कामायनी' की कथा संक्षेप में लिखिए।

(ii) पुस्तक, समाचारपत्र, लेखक का उपनाम, लेख का शीर्षक इत्यादि उद्धृतकरते समय इकहरे उद्धरणचिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे- 'निराला' पागल नहीं थे।

'किशोर-भारती' का प्रकाशन हर महीने होता है।

'जुही की कली' का सारांश अपनी भाषा में लिखो।

सिद्धराज 'पागल' एक अच्छे कवि हैं।

'प्रदीप' एक हिन्दी दैनिक पत्र है।

(iii) महत्त्वपूर्ण कथन, कहावत, सन्धि आदि को उद्धत करने में दुहरे उद्धरणचिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे- भारतेन्दु ने कहा था- "देश को राष्ट्रीय साहित्य चाहिए।"

(9) लाघव चिह्न (Abbreviation sign) **( o )** - किसी शब्द को संक्षेप में प्रकट करने के लिए लाघव चिह्न

AJAY KUMAR

( o ) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- पंडित =पं०, डॉक़्टर =डॉ०।

(10) आदेश चिह्न (Sign of following) **(:-)** - किसी विषय को क्रम से लिखना हो तो विषय-क्रम व्यक्त करने से पूर्व आदेश चिह्न ( :- ) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- वचन के दो भेद है :- 1. एकवचन, 2. बहुवचन।

(11) रेखांकन चिह्न (Underline) **(_)** - वाक्य में महत्त्वपूर्ण शब्द, पद, वाक्य रेखांकित कर दिया जाता है; जैसे-

गोदान उपन्यास, प्रेमचंद द्वारा लिखित सर्वश्रेष्ठ कृति है।

(12) लोप चिह्न (Mark of Omission) **(...)** - जब वाक्य या अनुच्छेद में कुछ अंश छोड़ कर लिखना हो तो लोप चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

गाँधीजी ने कहा, "परीक्षा की घड़ी आ गई है .... हम करेंगे या मरेंगे" ।

.....

AJAY KUMAR

# युग्म-शब्द

हिंदी के अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनका उच्चारण प्रायः समान होता हैं। किंतु, उनके अर्थ भिन्न होते है। इन्हे 'युग्म शब्द' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग गद्य की अपेक्षा पद्य में अधिक होता है। इन्हें 'युग्म शब्द' या 'समोच्चरितप्राय भित्रार्थक शब्द' कहते हैं।

यहाँ ऐसे युग्म शब्दों की सूची उनके अर्थो के साथ दी जा रही है-

## ( अ, अं, अँ )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| अंस | कंधा | अंश | हिस्सा |
| अँगना | घर का आँगन | अंगना | स्त्री |
| अन्न | अनाज | अन्य | दूसरा |
| अनिल | हवा | अनल | आग |
| अम्बु | जल | अम्ब | माता, आम |
| अथक | बिना थके हुए | अकथ | जो कहा न जाय |
| अध्ययन | पढ़ना | अध्यापन | पढ़ाना |
| अधम | नीच | अधर्म | पाप |
| अली | सखी | अलि | भौंरा |
| अन्त | समाप्ति | अन्त्य | नीच, अन्तिम |
| अम्बुज | कमल | अम्बुधि | सागर |
| असन | भोजन | आसन | बैठने की वस्तु |
| अणु | कण | अनु | एक उपसर्ग, पीछे |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| अभिराम | सुन्दर | अविराम | लगातार, निरन्तर |
| अपेक्षा | इच्छा,आवश्यकता,तुलना में | उपेक्षा | निरादर |
| अवलम्ब | सहारा | अविलम्ब | शीघ्र |
| अतुल | जिसकी तुलना न हो सके | अतल | तलहीन |
| अचर | न चलनेवाला | अनुचर | दास, नौकर |
| अशक्त | असमर्थ, शक्तिहीन | असक्त | विरक्त |
| अगम | दुर्लभ, अगम्य | आगम | प्राप्ति, शास्त्र |
| अभय | निर्भय | उभय | दोनों |
| अब्ज | कमल | अब्द | बादल, वर्ष |
| अरि | शत्रु | अरी | सम्बोधन (स्त्री के लिए) |
| अभिज्ञ | जाननेवाला | अनभिज्ञ | अनजान |
| अक्ष | धुरी | यक्ष | एक देवयोनि |
| अवधि | काल, समय | अवधी | अवध देश की भाषा |

**(आ)**

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| आवास | रहने का स्थान | आभास | झलक, संकेत |
| आकर | खान | आकार | रूप, सूरत |
| आदि | आरम्भ, इत्यादि | आदी | अभ्यस्त, अदरक |
| आरति | विरक्ति, दुःख | आरती | धूप-दीप दिखाना |
| आभरण | गहना | आमरण | मरण तक |
| आयत | समकोण चतुर्भुज | आयात | बाहर से आना |
| आर्त | दुःखी | आर्द्र | गीला |

AJAY KUMAR

## ( इ, ई, उ, ऊ, ऋ )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| इत्र | सुगंध | इतर | दूसरा |
| उपल | पत्थर | उत्पल | कमल |
| उपकार | भलाई | अपकार | बुराई |
| उद्धत | उद्दण्ड | उद्दत | तैयार |
| ऋत | सत्य | ऋतु | मौसम |

## ( क )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| कुल | वंश, सब | कूल | किनारा |
| कंगाल | भिखारी | कंकाल | ठठरी |
| कर्म | काम | क्रम | सिलसिला |
| कृपण | कंजूस | कृपाण | कटार |
| कर | हाथ | कारा | जेल |
| कपि | बंदर | कपी | घिरनी |
| किला | गढ़ | कीला | खूँटा, गड़ा हुआ |
| कृति | रचना | कृती | निपुण, पुण्यात्मा |
| कृत्ति | मृगचर्म | कीर्ति | यश |
| कृत | किया हुआ | क्रीत | खरीदा हुआ |
| क्रान्ति | उलटफेर | क्लान्ति | थकावट |
| कान्ति | चमक, चाँदनी | | |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| कली | अधखिला फूल | कलि | कलियुग |
| करण | एक कारक, इन्द्रियाँ | कर्ण | कान, एक नाम |
| कुण्डल | कान का एक आभूषण | कुन्तल | सिर के बाल |
| कपीश | हनुमान, सुग्रीव | कपिश | मटमैला |
| कूट | पहाड़ की चोटी, दफ्ती | कुट | किला, घर |
| करकट | कूड़ा | कर्कट | केंकड़ा |
| कटिबद्ध | तैयार, कमर बाँधे | कटिबन्ध | कमरबन्द, करधनी |
| कृशानु | आग | कृषाण | किसान |
| कटीली | तीक्ष्ण, धारदार | कँटीली | काँटेदार |
| कोष | खजाना | कोश | शब्द-संग्रह (डिक्शनरी) |

## ( ख, ग )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| खोआ | दूध का बना ठोस पदार्थ | खोया | भूल गया, खो गया |
| गण | समूह | गण्य | गिनने योग्य |
| गुड़ | शक्कर | गुड | गम्भीर |
| ग्रह | सूर्य, चन्द्र आदि | गृह | घर |

## ( च, छ, ज )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| चिर | पुराना | चीर | कपड़ा |
| चिता | लाश जलाने के लिए लकड़ियों का ढेर | चीता | बाघ की एक जाति |
| चूर | कण, चूर्ण | चूड़ | चोटी, सिर |
| चतुष्पद | चौपाया, जानवर | चतुष्पथ | चौराहा |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| चार | चार संख्या, जासूस | चारु | सुन्दर |
| चर | नौकर, दूत, जासूस | | |
| चक्रवात | बवण्डर | चक्रवाक | चकवा पक्षी |
| छत्र | छाता | क्षत्र | क्षत्रिय |
| छात्र | विद्यार्थी | क्षात्र | क्षत्रिय-संबंधी |
| जलज | कमल | जलद | बादल |
| जघन्य | गर्हित, शूद्र | जघन | नितम्ब |
| जगत | कुएँ का चौतरा | जगत् | संसार |

## ( ट, ड, ढ )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| टुक | थोड़ा | टूक | टुकड़ा |
| टोटा | घाटा | टोंटा | बन्दूक का कारतूस |
| डीठ | दृष्टि | ढीठ | निडर |

## ( त )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| तड़ाक | जल्दी | तड़ाग | तालाब |
| तरणि | सूर्य | तरणी | नाव |
| तरुणी | युवती | | |
| तक्र | मटठा | तर्क | बहस |
| तरी | गीलापन | तरि | नाव |
| तरंग | लहर | तुरंग | घोड़ा |

AJAY KUMAR

## ( द, ध )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| दूत | सन्देशवाहक | द्यूत | जुआ |
| दारु | लकड़ी | दारू | शराब |
| द्विप | हाथी | द्वीप | टापू |
| दमन | दबाना | दामन | आँचल, छोर |
| दाँत | दशन | दात | दान, दाता |
| दशन | दाँत | दंशन | दाँत से काटना |
| दिवा | दिन | दीवा | दीया, दीपक |
| दंश | डंक, काट | दश | दश अंक |
| दार | पत्नी, भार्या | द्वार | दरवाजा |
| दिन | दिवस | दीन | गरीब |
| दायी | देनेवाला, जबाबदेह | दाई | नौकरानी |
| देव | देवता | दैव | भाग्य |
| द्रव | रस, पिघला हुआ | द्रव्य | पदार्थ |

## ( न )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| निहत | मरा हुआ | निहित | छिपा हुआ, संलग्न |
| नियत | निश्चित | नियति | भाग्य |
| नीयत | मंशा, इरादा | | |
| निश्छल | छलरहित | निश्चल | अटल |
| नान्दी | मंगलाचरण (नाटक का) | नंदी | शिव का बैल |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| निमित्त | हेतु | नमित | झुका हुआ |
| नीरज | कमल | नीरद | बादल |
| निर्झर | झरना | निर्जर | देवता |
| निशाकर | चन्द्रमा | निशाचर | राक्षस |
| नाई | तरह, समान | नाई | हजाम |
| नीड़ | घोंसला, खोंता | नीर | पानी |
| नगर | शहर | नागर | चतुर व्यक्ति, शहरी |
| नशा | बेहोशी, मद | निशा | रात |
| नाहर | सिंह | नहर | सिंचाई के लिए निकाली गयी कृत्रिम नदी |
| नारी | स्त्री | नाड़ी | नब्ज |
| निसान | झंडा | निशान | चिह्न |

## ( प )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| परुष | कठोर | पुरुष | मर्द, नर |
| प्रदीप | दीपक | प्रतीप | उलटा, विशेष, काव्यालंकार |
| प्रसाद | कृपा, भोग | प्रासाद | महल |
| प्रणय | प्रेम | परिणय | विवाह |
| प्रबल | शक्तिशाली | प्रवर | श्रेष्ठ, गोत्र |
| परिणाम | नतीजा, फल | परिमाण | मात्रा |
| पास | नजदीक | पाश | बन्धन |
| पीक | पान आदि का थूक | पिक | कोयल |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्राकार | घेरा, चहारदीवारी | प्रकार | किस्म, तरह |
| परिताप | दुःख, सन्ताप | प्रताप | ऐश्वर्य, पराक्रम |
| पति | स्वामी | पत | सम्मान, सतीत्व |
| पांशु | धूलि, बाल | पशु | जानवर |
| परीक्षा | इम्तहान | परिक्षा | कीचड़ |
| प्रतिषेध | निषेध, मनाही | प्रतिशोध | बदला |
| पूर | बाढ़, आधिक्य | पुर | नगर |
| पार्श्व | बगल | पाश | बन्धन |
| प्रहर | पहर (समय) | प्रहार | चोट, आघात |
| परवाह | चिन्ता | प्रवाह | बहाव (नदी का) |
| पट्ट | तख्ता, उल्टा | पट | कपड़ा |
| पानी | जल | पाणि | हाथ |
| प्रणाम | नमस्कार | प्रमाण | सबूत, नाप |
| पवन | हवा | पावन | पवित्र |
| पथ | रास्ता | पथ्य | आहार (रोगी के लिए) |
| पौत्र | पोता | पोत | जहाज |
| प्रण | प्रतिज्ञा | प्राण | जान |

**( फ )**

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| फुट | अकेला, इकहरा | फूट | खरबूजा-जाति का फल |
| फण | साँप का फण | फन | कला, कारीगर |

**( ब )**

AJAY KUMAR

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| बलि | बलिदान | बली | वीर |
| बास | महक, गन्ध | वास | निवास |
| बहन | भगिनी | वहन | ढोना |
| बल | ताकत | वल | मेघ |
| बन्दी | कैदी | वन्दी | भाट, चारण |
| बात | वचन | वात | हवा |
| बुरा | खराब | बूरा | शक्कर |
| बन | बनना, मजदूरी | वन | जंगल |
| बहु | बहुत | बहू | पुत्रवधू, ब्याही स्त्री |
| बार | दफा | वार | चोट, दिन |
| बान | आदत, चमक | बाण | तीर |
| व्रण | घाव | वर्ण | रंग, अक्षर |

**( भ )**

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| भंगि | लहर, टेढ़ापन | भंगी | मेहतर, भंग करनेवाला |
| भिड़ | बरें | भीड़ | जनसमूह |
| भित्ति | दीवार, आधार | भीत | डरा हुआ |
| भवन | महल | भुवन | संसार |
| भारतीय | भारत का | भारती | सरस्वती |

**( म )**

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| मनुज | मनुष्य | मनोज | कामदेव |
| मल | गन्दगी | मल्ल | पहलवान, योद्धा |
| मेघ | बादल | मेध | यज्ञ |
| मांस | गोश्त | मास | महीना |
| मूल | जड़ | मूल्य | कीमत |
| मद | आनंद | मद्य | शराब |
| मणि | एक रत्न | मणी | साँप |

## ( र, ल )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| रंक | गरीब | रंग | वर्ण |
| रग | नस | राग | लय |
| रत | लीन | रति | कामदेव की पत्नी, प्रेम |
| रोचक | रुचनेवाला | रेचक | दस्तावर |
| लवण | नमक | लवन | खेती की कटाई |
| लुटना | लूटा जाना, बरबाद होना | लूटना | लूट लेना |
| लक्ष्य | उद्देश्य | लक्ष | लाख |

## ( व )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| वित्त | धन | वृत्त | गोलाकार, छन्द |
| वाद | तर्क, विचार | वाद्य | बाजा |
| वस्तु | चीज | वास्तु | मकान, इमारत |
| व्यंग | विकलांग | व्यंग्य | ताना, उपालम्भ |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| वसन | कपड़ा | व्यसन | बुरी आदत |

## ( श )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| शुल्क | फीस, टैक्स | शुक्ल | उजला |
| शूर | वीर | सुर | देवता, लय |
| शम | संयम, इन्द्रियनिग्रह | सम | समान |
| शर्व | शिव | सर्व | सब |
| शप्त | शाप पाया हुआ | सप्त | सात |
| शहर | नगर | सहर | सबेरा |
| शाला | घर, मकान | साला | पति का भाई |
| शीशा | काँच | सीसा | एक धातु |
| श्याम | श्रीकृष्ण, काला | स्याम | एशिया का एक देश |
| शती | सैकड़ा | सती | पतिव्रता स्त्री |
| शय्या | बिछावन | सज्जा | सजावट |
| शान | इज्जत, तड़क-भड़क | शाण | धार तेज करने का पत्थर |
| शराव | मिट्टी का प्याला | शराब | मदिरा |
| शब | रात | शव | लाश |
| शूक | जौ | शुक | सुग्गा |
| शिखर | चोटी | शेखर | सिर |
| शास्त्र | सैद्धान्तिक विषय | शस्त्र | हथियार |

## ( स )

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर | तालाब | शर | तीर |
| सूर | अंधा, सूर्य | शूर | वीर |
| सूत | धागा | सुत | बेटा |
| सन् | साल | सन | पटुआ |
| समान | तरह, बराबर | सामान | सामग्री |
| स्वर | आवाज | स्वर्ण | सोना |
| संकर | मिश्रित, दोगला, एक काव्यालंकार | शंकर | महादेव |
| सूचि | शूची | सूची | विषयक्रम |
| सुमन | फूल | सुअन | पुत्र |
| स्वर्ग | तीसरा लोक | सर्ग | अध्याय |
| सुखी | आनन्दित | सखी | सहेली |
| सागर | शराब का प्याला | सागर | समुद्र |
| सुधी | विद्वान, बुद्धिमान | सुधि | स्मरण |
| सिता | चीनी | सीता | जानकी |
| साप | शाप का अपभ्रंश | साँप | एक विषैला जन्तु |
| सास | पति या पत्नी की माँ | साँस | नाक या मुँह से हवा लेना |
| श्वेत | उजला | स्वेद | पसीना |
| संग | साथ | संघ | समिति |
| सन्देह | शक | सदेह | देह के साथ |
| स्वक्ष | सुन्दर आँख | स्वच्छ | साफ |
| श्वजन | कुत्ते | स्वजन | अपना आदमी |

**( ह )**

AJAY KUMAR

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| हुंकार | ललकार, गर्जन | हुंकार | पुकार |
| हल् | शुद्ध व्यंजन | हल | खेत जोतने का औजार |
| हरि | विष्णु | हरी | हरे रंग की |

.....

AJAY KUMAR

# अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing)

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गये सम्बद्ध और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है, जिसके सभी वाक्य एक-दूसरे से बंधे होते हैं। एक भी वाक्य अनावश्यक और बेकार नहीं होना चाहिए।

कार्य- अनुच्छेद अपने-आप में स्वतन्त्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव की कुंजी या तो आरम्भ में रहती है या अन्त में। उच्च कोटि के अनुच्छेद-लेखन में मुख्य विचार अन्त में दिया जाता है।

## अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है-

(1) अनुच्छेद किसी एक भाव या विचार या तथ्य को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है। इसमें अन्य विचार नहीं रहते।

(2) अनुच्छेद के वाक्य-समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।

(3) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से गठित और सम्बद्ध होते है।

(4) अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

(5) उच्च कोटि के अनुच्छेद-लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरम्भ, मध्य और अन्त आसानी से व्यक्त हो जाय।

(6) अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।

(7) अनुच्छेद की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

## अनुच्छेद के उदाहरण

यहाँ कुछ अनुच्छेद की उदाहरण दिया जा रहा है-

AJAY KUMAR

(1) शेरशाह ने प्रजा की भलाई के लिए बहुत-से-काम किये। उसने बंगाल से पंजाब तक ग्रैण्ड ट्रंक रोड बनवाकर दोनों तरफ पेड़ लगवाये; कुएँ खुदवाये और सरायें बनवायीं। जमीन की पैमाइश कराकर नये सिरे से मालगुजारी स्थिर की। डाक-पद्धति बदली और घोड़ें की डाक चलायी।

ऊपर दिये गये उदाहरण का अनुच्छेद इस प्रकार लिखा जायेगा-

शेरशाह ने प्रजा की भलाई के लिए बहुत-से-काम किये। यह वाक्य इस अनुच्छेद में आये समस्त विचारों की कुंजी है। यहाँ कोई भी वाक्य बेकार और अप्रासंगिक नहीं है। यहाँ मुख्य विचार आरम्भ में आया है।

(2) संसार के बड़े-बड़े कवियों ने वर्षाऋतु की बड़ी प्रशंसा की है और इसपर अच्छी-अच्छी कविताएँ लिखी हैं। यह संसार को जीवन देती है, प्यासों को पानी और माँ की तरह मनुष्य का लालन-पालन करती है। अतः वर्षा ऋतुओं की रानी है।

इस उदाहरण का अनुच्छेद इस प्रकार लिखा जाएगा-

वर्षा ऋतुओं की रानी है। यहाँ यही मुख्य विचार है, जो अन्त में आया है। एक बात और। लम्बे अवतरण में अनेक विचार या भाव समाये रहते हैं। जब लम्बे अवतरण का अनुच्छेद लिखना हो, तो उसके अनेक खण्ड हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में अनुच्छेद खण्डों में बाँटकर लिखना चाहिए।

.....

AJAY KUMAR

# कहानी-लेखन (Story-Writing)

जीवन की किसी एक घटना के रोचक वर्णन को 'कहानी' कहते हैं।

कहानी सुनने, पढ़ने और लिखने की एक लम्बी परम्परा हर देश में रही है; क्योंकि क्योंकि यह मन को रमाती है और सबके लिए मनोरंजक होती है। आज हर उम्र का व्यक्ति कहानी सुनना या पढ़ना चाहता है यही कारण है कि कहानी का महत्त्व दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। बालक कहानी प्रिय होते है। बालकों का स्वभाव कहानियाँ सुनने और सुनाने का होता है। इसलिए बड़े चाव से बच्चे अच्छी कहानियाँ पढ़ते हैं। बालक कहानी लिख भी सकते हैं। कहानी छोटे और सरल वाक्यों में लिखी जाती है।

बच्चे अपनी दादी, नानी और माँ से तरह-तरह की कहानियाँ बड़ी रुचि से सुनते हैं। छोटी-छोटी कहानी लिखने में अभ्यास और कल्पना की आवश्यकता है। निम्नवर्ग के विद्यार्थियों को पहले चित्र देखकर और कहानी के संकेत पढ़कर कहानी लिखने का अभ्यास करना चाहिए। यहाँ ध्यान देने की बात है कि कहानी रोचक और स्वाभाविक हो। घटनाओं का पारस्परिक संबंध हो, भाषा सरल हो और कहानी से कोई-न-कोई उपदेश मिलता हो। अंत में, कहानी का एक अच्छा शीर्षक या नाम दे देना चाहिए।

परिभाषा- कहानी को परिभाषा के चौखटे में बाँधना एक कठिन कार्य है। फिर भी, विद्वानों तथा कहानी-लेखकों ने इसकी परिभाषा अपने ढंग से गढ़ी है। मुझे सबसे अच्छी परिभाषा सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द की लगती है। उन्होंने लिखा है : "कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास- सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। वह एक ऐसा रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुत्रत रूप में दृष्टिगोचर होता है।" हिन्दी के एक दूसरे कहानीकार अज्ञेय ने कहानी की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, एक शिक्षा है, जो उम्रभर मिलती है और समाप्त नहीं होती।"

## कहानी की प्रमुख विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ है-

(1) आज कहानी का मुख्य विषय मनुष्य है, देव या दानव नहीं। पशुओं के लिए भी कहानी में अब कोई जगह नहीं रही। हाँ, बच्चों के लिए लिखी गयी कहानियों में देव, दानव, पशु-पक्षी, मनुष्य सभी आते हैं। लेकिन श्रेष्ठ कहानी उसी को कहते है, जिसमें मनुष्य के जीवन की कोई समस्या या संवेदना व्यक्त होती है। देवी, देवताओं, दानवों और पशु-पक्षियों का समय अब समाप्त हो गया।

(2) पहले कहानी शिक्षा और मनोरंजन के लिए लिखी जाती थी, आज इन दोनों के स्थान पर कौतूहल जगाने में जो कहानी सक्षम हो, वही सफल समझी जाती है। फिर भी, मनोरंजन आज भी साधारण पाठकों की माँग है। कौतूहल और मनोरंजन से अधिक हम कहानियों में मनुष्य की नयी संवेदनाओं की खोज करते हैं।

(3) आज की कहानियों में भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक बल दिया जाता है। आज का मनुष्य यह जानने लगा है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है, वह किसी के हाथ का खिलौना नहीं। अतएव, आज की कहानियों का आधार जीवन का संघर्ष है।

(4) प्राचीन कहानियों का उद्देश्य रस का परिपाक था। आज की कहानी का लक्ष्य विविध प्रकार के चरित्रों की सृष्टि करना है। व्यक्ति-वैचित्र्य दिखाना उसका मुख्य उद्देश्य है। यही कारण है कि आज कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व अधिक बढ़ा है।

(5) पहले जहाँ कहानी का लक्ष्य घटनाओं का जमघट लगाना होता था, वहाँ आज घटनाओं को महत्त्व न देकर मानव-मन के किसी एक भाव, विचार और अनुभूति को व्यक्त करना है। प्रेमचन्द ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट लिखा है, "कहानी का आधार अब घटना नहीं, अनुभूति है।"

(6) प्राचीन कहानी समष्टिवादी थी। सबके हितों को ध्यान में रखकर लिखी जाती थी। आज की कहानी व्यक्तिवादी है, जो व्यक्ति के 'मनोवैज्ञानिक सत्य' का उद्घाटन करती है। मनोवैज्ञानिकों ने मानव-मन के जिन स्तरों की खोज की है, उन स्तरों की गहराई में उतरकर मानवीय सत्य को खोलकर उपस्थित करना आज के कहानीकार का मुख्य लक्ष्य हो गया है।

(7) पहले की उपेक्षा आज की कहानी भाषा की सरलता पर अधिक बल देती है; क्योंकि उसका उद्देश्य जीवन की गाँठों को खोलना है।

(8) पुरानी कहानियाँ अधिकतर सुखान्त होती थीं, किन्तु आज की कहानियाँ मनुष्य की दुःखान्तक कथा को, उसकी जीवनगत समस्याओं और अन्तहीन संघर्षों को अधिक-से-अधिक प्रकाशित करती हैं।

सारांश यह है कि आज कहानी जीवन की प्रतिच्छाया के रूप में लिखी जा रही है। यह सब कुछ होते हुए भी सामान्य पाठक कहानी में मनोरंजन के तत्त्वों को भी ढूँढता है।

कहानी-लेखन की विधियाँ

कहानी का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार होने के कारण छात्रों से भी आशा की जाती है कि वे भी इस ओर ध्यान दें और कहानी लिखने का अभ्यास करें; क्योंकि इससे उनमें सर्जनात्मक शक्ति जगती है। इसके लिए उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे चार विधियों से कहानी लिखने का अभ्यास करें

(1) कहानी की सहायता या आधार पर कहानी लिखना, (2) रूपरेखा के सहारे कहानी लिखना, (3) अधूरी या अपूर्ण कहानी को पूर्ण करना, (4) चित्रों की सहायता से कहानी का अभ्यास करना।

## (1) कहानी की सहायता या आधार पर कहानी लिखना

मूल कहानी को ध्यान से पढ़कर कहानी लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि कहानी को खूब ध्यान से पढ़ा जाय, उसकी प्रमुख बातों या चरित्रों या घटनाओं को अलग कागज पर संकेत-रूप में लिख लिया जाय और फिर अपनी भाषा में मूल कहानी को इस तरह लिखा जाय कि कोई भी महत्त्वपूर्ण बात या घटना या प्रसंग छूटने न पाय। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि मूल कहानी के आधार पर लिखी गयी कहानी उससे अधिक बड़ी या लम्बी न हो, उससे छोटी हो सकती है। इस प्रकार की कहानी लिखते समय छात्रों को अग्रंकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

(i) कहानी का आरम्भ आकर्षक ढंग से हो (ii) संवाद छोटे-छोटे हों (iii) कहानी का क्रमिक विकास हो (iv) उसका अन्त स्वाभाविक हो (v) कहानी का शीर्षक मूल कहानी का शीर्षक हो, (vi) भाषा सरल और सुबोध हो।

इनके आधार पर छात्रों से कहानी लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

## (2) रूपरेखा (संकेतों) के सहारे कहानी लिखना

रूपरेखा या दिये गये संकेतों के आधार पर कहानी लिखना कठिन भी है, सरल भी। कठिन इसलिए कि संकेत अधूरे होते हैं। इसके लिए कल्पना और मानसिक व्यायाम करने की आवश्यकता पड़ती है। सरल इसलिए कि कहानी के संकेत पहले से दिये रहते हैं। यहाँ केवल खानापुरी करनी होती है। लेकिन, इस प्रकार की कहानी लिखने के लिए कल्पना से अधिक काम लेना पड़ता है। ऐसी कहानी लिखने में वे ही छात्र अपनी क्षमता का परिचय दे सकते है, जिनमें सर्जनात्मक और कल्पनात्मक शक्ति अधिक होती है। इसके लिए छात्र को संवेदनशील और कल्पनाप्रवण होना चाहिए। एक उदाहरण इस प्रकार है-

संकेत

एक किसान के लड़के लड़ते- किसान मरने के निकट- सबको बुलाया- लकड़ियों को तोड़ने को दिया- किसी से न टूटा- एक-एक कर लकड़ियों तोड़ी- शिक्षा। उपर्युक्त संकेतों को पढ़ने और थोड़ी कल्पना से काम लेने पर पूरी कहानी इस प्रकार बन जायेगी-

एकता

एक था किसान। उसके चार लड़के थे। पर, उन लड़कों में मेल नहीं था। वे आपस में बराबर लड़ते-झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ा। जब वह मृत्यु के निकट पहुँच गया, तब उसने अपने चारों लड़कों को बुलाया और मिल-जुलकर रहने की शिक्षा दी। किन्तु लड़कों पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब किसान ने लकड़ियों का गट्ठर माँगाया और लड़कों को तोड़ने को कहा। किसी से वह गट्ठर न टूटा। फिर, लकड़ियाँ गट्ठर से अलग की गयीं। किसान ने अपने सभी लड़कों को बारी-बारी से बुलाया और लकड़ियों को अलग-अलग तोड़ने को कहा। सबने आसानी से ऐसा किया और लकड़ियाँ एक-एक कर टूटती गयीं। अब लड़कों की आँखें खुलीं। तभी उन्होंने समझा कि आपस में मिल-जुलकर रहने में कितना बल है।

### (3) अपूर्ण कहानी को पूर्ण करना

छात्रों में कल्पना-शक्ति जगाने के लिए ऐसी कहानी लिखने का भी अभ्यास कराया जाता है, जो अधूरी या अपूर्ण है। उसको पूरा करना है। इसके लिए आवश्यक है कि अपूर्ण कहानी को ध्यान से पढ़ाया जाय, उसके क्रमों को समझाया जाय और उनमें परस्पर सम्बन्ध बनाते हुए सर्जनात्मक कल्पना के सहारे अधूरी कहानी को पूरा करने का अभ्यास कराया जाय। एक उदाहरण इस प्रकार है-

कौए ने गाना सुनाने के लिए ज्योंही अपनी चोंच खोली, रोटी का टुकड़ा उसके मुँह से गिर गया। रोटी का टुकड़ा ले लोमड़ी हँस-हँसकर खाने लगी और कौआ अपनी मूर्खता पर पछताने लगा। अब अगर दूसरी बार कौआ मांस का टुकड़ा ले आये, तो लोमड़ी क्या करेगी ? इस अपूर्ण कहानी को पूरा करें। यहाँ छात्र को कल्पना-शक्ति के सहारे शेष कहानी को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। शेष कहानी के अनेक रूप हो सकते है। इन्हें मैं छात्रों की कल्पना पर छोड़ता हूँ।

### (4) चित्रों की सहायता से कहानी लिखना

चित्र भाव या विचार को जगाते हैं इनसे हमारी कल्पना-शक्ति जगती है। छात्रों में भाव और कल्पना-शक्ति को जगाने के लिए दिये गये चित्रों की सहायता से पूरी कहानी तैयार करने का अभ्यास कराया जाना चाहिए। एक उदाहरण इस प्रकार है-

मूर्ख बन्दर

एक था सेठ। उसने एक बन्दर पाला था। बन्दर सेठ से बड़ा हिला-मिला था। सेठ बन्दर को बहुत बुद्धिमान समझता था, पर बन्दर तो बन्दर ही ठहरा। एक दिन की बात है। गर्मी के दिन में सेठ गहरी नींद सो रहा था। बन्दर उसे पंखा झल रहा था। एक मक्खी उड़कर आयी और सेठ के शरीर पर बैठ गयी। बन्दर बार-बार उस मक्खी को पंखे से उड़ाता, पर मक्खी बार-बार सेठ के शरीर पर बैठ जाती।

अन्त में बन्दर से नहीं रहा गया। बाहर से वह पत्थर का एक बड़ा-सा टुकड़ा ले आया। इस बार मक्खी सेठ की नाक पर बैठी। बन्दर ने उसी समय पत्थर के टुकड़े से उसे जोर से मारा। मक्खी तो उड़ गयी, पर बेचारे सेठ की नाक टूट गयी। उनका एक दाँत भी टूट गया और वे बेहोश हो गये।

.....

AJAY KUMAR

# संवाद-लेखन (Dialogue Letter)

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुए वार्तालाप या सम्भाषण को संवाद कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- दो व्यक्तियों की बातचीत को 'वार्तालाप' अथवा 'संभाषण' अथवा 'संवाद' कहते हैं।

संवाद का सामान्य अर्थ बातचीत है। इसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति भाग लेते है। अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए संवाद की सहायता ली जाती है। जो संवाद जितना सजीव, सामाजिक और रोचक होगा, वह उतना ही अधिक आकर्षक होगा। उसके प्रति लोगों का खिंचाव होगा। अच्छी बातें कौन सुनना नहीं चाहता ? इसमें कोई भी व्यक्ति अपने विचार सरल ढंग से व्यक्त करने का अभ्यास कर सकता है।

वार्तालाप में व्यक्ति के स्वभाव के अनुसार उसकी अच्छी-बुरी सभी बातों को स्थान दिया जाता है। इससे छात्रों में तर्क करने की शक्ति उत्पत्र होती है। नाटकों में वार्तालाप का उपयोग सबसे अधिक होता है। इसमें रोचकता, प्रवाह और स्वाभाविकता होनी चाहिए। व्यक्ति, वातावरण और स्थान के अनुसार इसकी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो हर तरह से सरल हो। इतना ही नहीं, वार्तालाप संक्षिप्त और मुहावरेदार भी होना चाहिए।

## अच्छे संवाद-लेखन की विशेषताएँ

(1) संवाद में प्रवाह, क्रम और तर्कसम्मत विचार होना चाहिए।

(2) संवाद देश, काल, व्यक्ति और विषय के अनुसार लिखा होना चाहिए।

(3) संवाद सरल भाषा में लिखा होना चाहिए।

(4) संवाद में जीवन की जितनी अधिक स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही अधिक सजीव, रोचक और मनोरंजक होगा।

(5) संवाद का आरम्भ और अन्त रोचक हो।

ऊपर दी गयी विशेषताओं को ध्यान में रखकर छात्रों को संवाद लिखने का अभ्यास करना चाहिए। इससे उनमें जीवनगत यथार्थ को समझने और सर्जनात्मक शक्ति को जागरित करने का अवसर मिलता है। उनमें बोलचाल की भाषा लिखने की प्रवृति जगती है।

## कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

AJAY KUMAR

## हामिद और दुकानदार का संवाद

हामिद- यह चिमटा कितने का है ?

दुकानदार- यह तुम्हारे काम का नहीं है जी।

हामिद- बिकाऊ है कि नहीं ?

दुकानदार- बिकाऊ नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये है ?

हामिद- तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है ?

दुकानदार-छे पैसे लगेंगे।

हामिद- ठीक बताओ।

दुकानदार- ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं तो चलते बनो।

हामिद- तीन पैसे लोगे ?

## पड़ोसी और अँगनू काका का संवाद

पड़ोसी- यह पिल्ला कब पाला, अँगनू काका ?

अँगनू काका- अरे भैया, मैंने काहे को पाला। यहाँ अपने ही पेट का ठिकाना नहीं। रात में न जाने कहाँ से आ गया!

पड़ोसी- तुम इसे पाल लो, काका।

अँगनू काका- भैया की बातें !इसे पालकर करेंगे क्या ?

पड़ोसी- तुम्हारी कोठरी ताका करेगा।

अँगनू काका- कोठरी में कौन खजाना गड़ा है, जो ताकेगा।

## रोगी और वैद्य

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!

वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?

AJAY KUMAR

रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।

वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।

रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।

वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।

रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।

वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।

रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ?

वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।

रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।

वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

.....

AJAY KUMAR

# तार लेखन(Telegram)

कम-से-कम शब्दों में सन्देश भेजने की पद्धति को 'तार' (Telegram) कहते हैं।

पहले केवल अँगरेजी में डाकघरों से तार भेजा जाता था, किन्तु अब हिन्दी में भी तार भेजा जाता है। आजादी के बाद इसका प्रचार दिन-दिन बढ़ता जा रहा है और जनता में यह लोकप्रिय होता जा रहा है। फिर भी, इस दशा में अभी बहुत कुछ करना है। हिन्दी में तार- सभी मुख्य तारघरों में देवनागरी में तार-प्रणाली चालू की जा चुकी है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति की दृष्टि से तार-क्षेत्र में भी हिन्दी का समुचित प्रयोग हो रहा है। कुछ लोगों का यह भ्रम है कि हिन्दी में तार लिखना महँगा है। सच तो यह है कि अँगरेजी तार की अपेक्षा देवनागरी तार पर खर्च कम होता है। अँगरेजी तार लिखवाने और पढ़वाने में जो समय और पैसा लगता है, देवनागरी तार भेजने में उसकी बचत होती है।

देवनागरी तारों में शब्द गिनने के कुछ विशेष नियम हैं, जिनसे ये तार सस्ते पड़ते हैं। उन नियमों की जानकारी के लिए दिल्ली की केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने देवनागरी में तार नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की है। इस पुस्तिका में सौ ऐसे वाक्यांश दिये गये हैं, जिनके लिए अँगरेजी के तारों में कई शब्दों का प्रभार (चार्ज) देना पड़ता है, किन्तु हिन्दी में उनके लिए या तो एक शब्द से काम चल जाता है अथवा समासयुक्त शब्दों का प्रयोग कर या विभक्ति को मिलाकर लिखने से केवल एक शब्द का प्रभार देना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'day and night' अँगरेजी में तीन शब्द है, पर हिन्दी तार में 'रातदिन' एक शब्द माना जायेगा।

उसी प्रकार अँगरेजी में लिखे 'sent by goods train' में चार शब्द गिने जायेंगे, पर हिन्दी में 'मालगाड़ी से भेज दिया' इसके लिए दो शब्दों का प्रभार देना पड़ेगा। 'Again and again अँगरेजी में तीन शब्दों का वाक्यांश माना जायेगा, पर इसका हिन्दी-पर्याय एक शब्द का 'बार-बार' होगा। इसी प्रकार, 'will be able to come' के लिए हिन्दी तार में लिखा जायेगा- 'आ सकूँगा', 'wear and tear' के लिए 'टूटफूट', 'Deputy Minister' के लिए 'उपमन्त्री' 'Chief Editor' के लिए 'प्रधान सम्पादक', 'Working Committee' के लिए 'कार्यसमिति', 'Errors and omissions' के लिए एक शब्द- 'भूलचूक' का प्रयोग कर पैसे की बचत हो जाती है।

## हिन्दी तारों के सामान्य नियम

डाकघर विभाग ने देवनागरी लिपि में लिखे तारों के शब्द गिनने के कुछ नियम बनाये हैं। यदि इन नियमों का ध्यान रखकर तार-सन्देश लिखा जाय, तो उससे तार प्रभार (telegraph charges) में बचत हो सकती है। महत्त्वपूर्ण नियम निम्नलिखित हैं-

(i) दस अक्षरों तक के शब्द पर एक शब्द का तार प्रभार लगता है। यदि एक शब्द में दस से अधिक अक्षर हों, तो दस-दस अक्षरों का एक और जो अक्षर बाकी बच रहें, उनका भी एक शब्द माना जायेगा।

(ii) मात्रा को अलग अक्षर नहीं माना जाता। जैसे- ज+ी='जी' एक ही अक्षर माना जाता है।

(iii) अधिक-से-अधिक दस अक्षरोंवाले सम्पूर्ण क्रियावाचक वाक्य या वाक्यांश को तार-प्रभार के लिए एक ही शब्द गिना जाता है; जैसे- 'आ रहा हूँ', 'भेज दिया गया', 'पहुँचा दिया जायेगा', इनको एक-एक शब्द ही माना जायेगा। अँगरेजी तार के हिसाब से 'has been sent' इत्यादि तीन शब्द माने जायेंगे।

(iv) विभक्तियों के चिह्नों अथवा सम्बन्धसूचक शब्दों, जैसे- ने, को, के लिए, का, की, के, में, पै, पर, स आदि को शब्द के साथ मिलाकर लिखना चाहिए; जैसे- मोहनको, दिल्लीमें, रामकेलिए, स्टेशनपर इत्यादि। विभक्ति मिला हुआ शब्द एक ही शब्द गिना जाता है।

(v) समासयुक्त शब्द भी एक ही शब्द गिना जाता है; जैसे- उत्तराभिलाषी, पराधीन, सन्तोषजनक, आवश्यक आदि एक ही शब्द माने जाते हैं।

(vi) संयुक्त व्यंजनों में प्रत्येक अक्षर को तार-प्रभार के लिए अलग-अलग गिना जायेगा; जैसे- क्त, क्व, क्ष, त्र, ज्ञ, र्म आदि दो-दो अक्षर तथा स्थ्य तीन अक्षर माने जायेंगे।

(vii) यदि बीच में स्थान न छोड़ा गया हो और दस से अधिक अक्षर न हों तो प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानसम्पादक, सहायकसम्पादक आदि एक ही शब्द गिने जाएँगे।

(viii) व्यापारिक चिह्न या संख्याएँ गिनने के लिए पाँच अंकों या चिह्नों तक के समूह का एक शब्द गिना जाता है।

(ix) जिस स्थान को तार भेजा जा रहा है, उसके नाम को एक शब्द माना जाता है, परन्तु उसे उस रूप में लिखना चाहिए, जिस रूप में तार-निर्देशिका में नामों की सूची में लिखा गया है। उदाहरण के लिए, 'विक्टोरिया गार्डन बम्बई' को एक शब्द गिना जायेगा।

(x) शब्दों के प्रारम्भिक अक्षरों में से प्रत्येक में एक शब्द माना जाता है; जैसे- 'केन्द्रीय लोकनिर्माण विभाग' के लिए 'के० लो० नि० वि०' लिखा जाय तो ये चार शब्द माने जायेंगे।

(xi) प्रत्येक विरामचिह्न और कोष्टकों को भी शब्द माना जाता है। दो शब्दों के बीच यदि वक्ररेखा का प्रयोग हुआ हो, तो इसको भी एक शब्द माना जायेगा। जैसे- 'मई/जून' को तीन गिना जायेगा।

## तार कैसे लिखें

तार पर पता लिखने में पानेवाले का ब्योरा स्पष्ट रूप से देना चाहिए ताकि तारघर के कर्मचारियों को इधर-उधर भटकना न पड़े। बड़े शहरों में सड़क का नाम और घर की संख्या भी देनी चाहिए। जिन शहरों में डाक का वितरण क्षेत्रों के अनुसार होता है, वहाँ तार भेजने के

समय वितरण-क्षेत्र की संख्या लिख देना आवश्यक हैं, ताकि तार का वितरण जल्दी हो जाय। इसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाता।

पता संक्षिप्त रूप में लिखा जाना चाहिए। यथा, हमे निम्नलिखित पते पर तार भेजना है -

निर्मल कुमार सरकार

सुरेन्द्र नाथ बनर्जी लेन

कलकत्ता

इसमें आठ शब्द हैं,

पर इसे संक्षिप्त रूप में इस प्रकार लिखने से कम खर्च पड़ेगा-

निर्मलकुमार सरकार

सुरेन्द्रनाथबनर्जी लेन

कलकत्ता

इस ढंग से पता लिखते हैं,

तो हमें पाँच शब्दों का शुल्क देना पड़ेगा।

तार द्वारा जो सन्देश भेजना है, उसे साफ-साफ अक्षरों में लिखना चाहिए। इससे गड़बड़ी होने की सम्भावना नहीं रहती।

.....

AJAY KUMAR

# प्रतिवेदन (Report)

भूत अथवा वर्तमान की विशेष घटना, प्रसंग या विषय के प्रमुख कार्यों के क्रमबद्ध और संक्षिप्त विवरण को 'प्रतिवेदन' कहते हैं।

इससे किसी कार्य की स्थिति और प्रगति की सूचना मिलती है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) प्रतिवेदन में किसी घटना या प्रसंग की मुख्य-मुख्य बातें लिखी जाती हैं।

(2) प्रतिवेदन में बातें एक क्रम में लिखी जाती हैं। सारी बातें सिलसिलेवार लिखी होती हैं।

(3) प्रतिवेदन संक्षेप में लिखा जाता है। बातें विस्तार में नहीं, संक्षेप में लिखी जाती हैं।

(4) प्रतिवेदन ऐसा हो, जिसकी सारी बातें सरल और स्पष्ट हों; उनको समझने में सिरदर्द न हो। उनका एक ही अर्थ और निष्कर्ष हो। स्पष्टता एक अच्छे प्रतिवेदन की बड़ी विशेषता होती है।

(5) प्रतिवेदन सच्ची बातों का विवरण होता है। इसमें पक्षपात, कल्पना और भावना के लिए स्थान नहीं है।

(6) प्रतिवेदन में लेखक या प्रतिवेदक की प्रतिक्रिया या धारणा व्यक्त नहीं की जाती। उसमें ऐसी कोई बात न कही जाय, जिससे भ्रम पैदा हो।

(7) प्रतिवेदन की भाषा साहित्यिक नहीं होती। यह सरल और रोचक होती है।

(8) प्रतिवेदन किसी घटना या विषय की साफ और सजीव तस्वीर सुनने या पढ़नेवाले के मन पर खींच देता है।

**प्रतिवेदन का उद्देश्य** - प्रतिवेदन का उद्देश्य बीते हुए समय के विशेष अनुभवों का संक्षिप्त संग्रह करना है ताकि आगे किसी तरह की भूल या भ्रम न होने पाये। प्रतिवेदन में उसी कठोर सत्य की चर्चा रहती है, जिसका अच्छा या बुरा अनुभव हुआ है। प्रतिवेदन का दूसरा लक्ष्य भूतकाल को वर्तमान से जोड़ना भी है।

भूत की भूल से लाभ उठाकर वर्तमान को सुधारना उसका मुख्य प्रयोजन है। किंतु, प्रतिवेदन डायरी या दैनंदिनी नहीं है। प्रतिवेदन में यथार्थ की तस्वीर रहती है और डायरी में यथार्थ के साथ लेखक की भावना, कल्पना और प्रतिक्रिया भी व्यक्त होती है। दोनों में यह स्पष्ट भेद है।

**प्रतिवेदन के प्रकार**

AJAY KUMAR

मनुष्य की जीवन बहुरंगी है। उसमें अनेक घटनाएँ नित्य घटती रहती हैं और अच्छे-बुरे कार्य होते रहते हैं। प्रतिवेदन में सभी प्रकार के प्रसंगों और कार्यों को स्थान दिया जाता है। सरकारी या गैरसरकारी कर्मचारी समय-समय किसी कार्य या घटना का प्रतिवेदन अपने से बड़े अफसर को देते रहते हैं। समाचारपत्रों के संवाददाता भी प्रधान संपादक को प्रतिवेदन लिखकर भेजते हैं।

स्कूल के प्रधानाध्यापक भी शिक्षा पदाधिकारियों को अपने स्कूल के संबंध में प्रतिवेदन लिखकर भेजते हैं गाँव का मुखिया भी अपने गाँव का प्रतिवेदन सरकार को भेजता है। किसी संस्था का मंत्री भी उसका वार्षिक या अर्द्धवार्षिक प्रतिवेदन सभा में सुनाता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि सामाजिक और सरकारी जीवन में प्रतिवेदन का महत्त्व और मूल्य दिन-दिन बढ़ता जा रहा है।

प्रतिवेदन के तीन प्रकार हैं-

(1) व्यक्तिगत प्रतिवेदन

(2) संगठनात्मक प्रतिवेदन

(3) विवरणात्मक प्रतिवेदन

(1) व्यक्तिगत प्रतिवेदन - इस प्रकार के प्रतिवेदन में व्यक्ति अपने जीवन के किसी संबंध में अथवा विद्यार्थी-जीवन पर प्रतिवेदन लिख सकता है। इसमें व्यक्तिगत बातों का उल्लेख अधिक रहता है। यह प्रतिवेदन कभी-कभी डायरी का भी रूप ले लेता है। यह प्रतिवेदन का आदर्श रूप नहीं है।

एक उदाहरण इस प्रकार है-

7-10-2000

सुबह पाँच बजे उठा। क्रिया-कर्म कर 6 बजे पढ़ने बैठा। अचानक सिर में दर्द हुआ। बिस्तर पर लेट गया। आँखें बंद कर लीं। नींद आ गयी। एक घंटे बाद जगा, पर दर्द बना रहा। डॉक्टर के पास गया। दवा लेकर घर लौटा। दवा खाकर फिर लेट गया। दर्द दूर हो गया। दस बजे भोजन किया और स्कूल के लिए चल पड़ा। 12 बजे दोपहर में सिरदर्द शुरू हुआ, छुट्टी लेकर घर लौट आया। सारा दिन इसी प्रकार कटा।

(2) संगठनात्मक प्रतिवेदन - इस प्रकार के प्रतिवेदन में किसी संस्था, सभा, बैठक इत्यादि का विवरण दिया जाता है। यहाँ प्रतिवेदक अपने बारे में कुछ न कहकर सारी बातें संगठन या संस्था के संबंध में लिखता है।

AJAY KUMAR

यह प्रतिवेदन मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक और वार्षिक भी हो सकता है। एक स्कूल में वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक ने निम्नलिखित प्रतिवेदन पढ़कर सुनाया-

### स्कूल का वार्षिकोत्सव: प्रतिवेदन

हमारा स्कूल सन् 1930 में स्थापित हुआ था। इस नगर में यह पिछले 62 वर्षो से शिक्षा का प्रचार करता रहा है। आरंभ में जहाँ 5 शिक्षक और 50 छात्र थे, वहाँ आज शिक्षकों की संख्या 30 और छात्रों की संख्या 700 तक पहुँच गयी है। यहाँ कला, वाणिज्य और विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। शिक्षकों को समय पर वेतन मिलता है। ये सभी बड़ी निष्ठा से काम करते हैं स्कूल में सह-शिक्षा की भी व्यवस्था है। लड़कियों की संख्या 250 है। इस वर्ष से सिलाई और कताई-बुनाई की शिक्षा की भी व्यवस्था की गयी है। छात्र इसके महत्त्व से घरेलू उद्योग-धंधों में रुचि ले रहे हैं। इस वर्ष प्रवेशिका परीक्षा में तीस छात्र प्रथम श्रेणी में, बारह द्वितीय श्रेणी में और तीन तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस विवरण से स्पष्ट है कि यह स्कूल हर दिशा में विकास कर रहा है। शिक्षा-विभाग के निरीक्षक ने भी इसकी सराहना की है।

दिनांक 20. 12. 2005

विजयपाल सिंह

प्रधानाध्यापक

हरिदास हाई स्कूल

**(3) विवरणात्मक प्रतिवेदन** - इस प्रकार के प्रतिवेदन में किसी मेले, यात्रा, पिकनिक, सभा, रैली इत्यादि का विवरण तैयार किया जाता है। प्रतिवेदक को यहाँ बड़ी ईमानदारी से विषय का यथार्थ विवरण देना पड़ता है। इस प्रकार के प्रतिवेदन का एक उदाहरण इस प्रकार है-

### मेला : प्रतिवेदन

भारत का सबसे बड़ा मेला सोनपुर में हर साल लगता है ; इसे 'हरिहरक्षेत्र का मेला' कहते हैं। यह कार्तिक की पूर्णिमा के दो-तीन दिन पहले से पंद्रह-बीस दिनों तक गंडक और गंगा के संगम पर लगता है। पूर्णिमा के दिन यात्रियों की भारी भीड़ हरिहरनाथ के दर्शन के लिए होती है। इस वर्ष भी मंदिर के सामने दर्शनार्थियों की एक लंबी कतार थी। भीड़ इतनी अधिक थी कि एक लड़का कुचलकर मर गया। फिर भी, भीड़ अपनी जगह से हटी नहीं। हरिहरनाथ के दर्शन कर लोग सजी-सजायी दूकानों की ओर बढ़े। उनकी सजावट मनमोहक थी। देशभर के व्यापारी आये थे। आसपास के मकानों का किराया अधिक था। अलग-अलग स्थानों पर दूकानें लगायी गयी थीं। पशु-पक्षियों

का जमाव एक स्थान पर था। हाथी, घोड़े, गाय, बैल इत्यादि की खरीदारी हुई। दूसरे स्थान पर साधु-संन्यासी अपनी-अपनी कुटी में धुनी रमाये थे। तीसरे स्थान पर सरकसवाले तरह-तरह के खेल-तमाशे दिखा रहे थे। रात में बिजली की रोशनी में सारा मेला जगमगा रहा था। सारा दृश्य मनमोहक था। पूर्णिमा के दूसरे दिन मैं घर लौट आया।

दिनांक 20-11-2000

सुरेश गौतम

.....

AJAY KUMAR

# पल्लवन (Amplification)

किसी सुगठित एवं गुम्फित विचार अथवा भाव के विस्तार को 'पल्लवन' कहते है।

कम-से-कम शब्दों अथवा एक वाक्य में कहे अथवा लिखे गये भावों और विचारों में इतनी स्पष्टता नहीं रहती कि हर तरह के लोग उन्हें आसानी से समझ सकें। एक सधे लेखक का बड़ा गुण यह है कि वह कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक बातें लिखता है। अँगरेजी में बेकन (Bacon) और हिन्दी में पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ऐसे ही गद्यलेखक थे। कविता में तो इस प्रकार के लेखक की गुंजाइश अधिक है। किन्तु, जब 'गागर में सागर'-जैसी चेष्टा की जाती है, तब उसमें साधारण लोगों के लिए अर्थ की स्पष्टता नहीं रह जाती। ऐसी स्थिति में विचार अथवा भाव के तार-तार को अलग कर 'तारतम्य' के साथ समझने के लिए एक कुशल व्याख्याता की आवश्यकता पड़ती है।

इतना ही नहीं, हिन्दी में ऐसी हजारों सूक्तियाँ और कहावतें प्रचलित है, जिनके अर्थ ऊपर से तो स्पष्ट नहीं है, किन्तु उनका अर्थ-विस्तार करने पर उनके भाव पूरी तरह स्पष्ट हो जाते है। लेखन की इस क्रिया को हिन्दी में 'पल्लवन' कहते है। इसे हम अँगरेजी शब्दावली में 'Miniature essay' और हिन्दी में 'लघु निबन्ध' कह सकते है। इसमें मूल वाक्य में आये विचारसूत्रों को सही-सही अर्थ में पकड़ने की चेष्टा की जाती है। यहाँ यह देखा जाता है कि छात्र या व्याख्याता ने किसी गम्भीर तथ्य को कितनी बारीकी से और गहराई में उतरकर समझा है और अपनी भाषा में वह उसे कितनी दूर तक सुस्पष्ट कर सका है।

## पल्लवन,व्याख्या और भावार्थ

पल्लवन, व्याख्या और भावार्थ के तात्विक अन्तर को समझ लेना चाहिए। पल्लवन और व्याख्या दोनों में सन्निहित भाव अथवा विचार का विस्तार होता है; किन्तु पल्लवन में जहाँ केवल निहित भाव का विस्तार होता है, वहाँ व्याख्या में प्रसंगनिर्देश के साथ आलोचना तथा टीका-टिप्पणी के लिए भी स्थान सुरक्षित है। यह छूट 'पल्लवन' में नहीं है। पल्लवन और भावार्थ दोनों में मूलभाव को स्पष्ट किया जाता है। किन्तु, भावार्थ में भावविस्तार की एक सीमा होती है।

'पल्लवन' के लिए ऐसा कोई बन्धन नहीं। यहाँ विभिन्न अनुच्छेदों में तब तक लिखा जायेगा, जब तक मूल लेखक के समस्त मनोभाव पूरी तरह स्पष्ट न हो जायँ। 'भावार्थ' में मूलभाव को अनुच्छेदों में लिखना आवश्यक नहीं। वहाँ तो मूल आवरण के केन्द्रीय भाव को पकड़ने की चेष्टा की जाती है। इसके विपरीत, 'पल्लवन' में मूल और गौण दोनों प्रकार के निहित भावों एवं विचारों को ग्रहण किया जाता है। यह 'संक्षेपण' का ठीक उल्टा है।

AJAY KUMAR

## पल्लवन के कुछ सामान्य नियम

(1) पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़िए, ताकि मूल के सम्पूर्ण भाव अच्छी तरह समझ में आ जायँ।

(2) मूल विचार अथवा भाव के नीचे दबे अन्य सहायक विचारों को समझने की चेष्टा कीजिए।

(3) मूल और गौण विचारों को समझ लेने के बाद एक-एक कर सभी निहित विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिखना आरम्भ कीजिए, ताकि कोई भी भाव अथवा विचार छूटने न पाय।

(4) अर्थ अथवा विचार का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में जहाँ-तहाँ ऊपर से कुछ उदाहरण और तथ्य भी दिये जा सकते हैं।

(5) भाव और भाषा की अभिव्यक्ति में पूरी स्पष्टता, मौलिकता और सरलता होनी चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे और भाषा अत्यन्त सरल होनी चाहिए। अलंकृत भाषा लिखने की चेष्टा न करना ही श्रेयस्कर है।

(6) पल्लवन के लेखन में अप्रासंगिक बातों का अनावश्यक विस्तार या उल्लेख बिलकुल नहीं होना चाहिए।

(7) पल्लवन में लेखक को मूल तथा गौण भाव या विचार की टीका-टिप्पणी और आलोचना नहीं करनी चाहिए। इसमें मूल लेखक के मनोभावों का ही विस्तार और विश्लेषण होना चाहिए।

(8) पल्लवन की रचना हर हालत में अन्यपुरुष में होनी चाहिए।

(9) पल्लवन व्यासशैली की होनी चाहिए, समासशैली की नहीं। अतः इसमें बातों को विस्तार से लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए।

## पल्लवन के कुछ उदाहरण

(1) उदाहरण

मूल अवतरण- 'विदेशी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि है।- महात्मा गाँधी

### पल्लवन

कोई भी भाषा बुरी नहीं होती; क्योंकि सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ है, अपने-अपने बोलनेवाले होते है। हर भाषा यदि किसी अन्य के लिए केवल 'भाषा' है, तो अपने लिए 'मातृभाषा' भी होती है। किसी 'भाषा' या किसी की 'मातृभाषा' को बुरा मानना या समझना मनुष्यता नहीं, विद्याप्रेम नहीं, बल्कि संकीर्णता और नीचता है। फिर, हर भाषा का अपना साहित्य होता है और साहित्य मानवमात्र के प्रेम की वस्तु है। संसार के कोने-कोने में अनगिनत भाषाएँ बोली और लिखी जाती है जिनकी अपनी प्रकृति और अपने उच्चारण हैं। ये सारी भाषाएँ सीखी जा सकती है। हजारों विद्यार्थी विदेशी भाषाओं या दूसरे की भाषाओं का अध्ययन करते है, ताकि उनके साहित्य का ज्ञान

प्राप्त किया जा सके। हर भाषा के साहित्य की अपनी विशिष्टता है। उस विशिष्टता में किसी भी देश की मानसिक विलक्षणता रहती है। इन सारी बातों की जानकारी के लिए ही विदेशी भाषाओं का अध्ययन होता है।

यह कोई बुरी बात नहीं। अनेक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है; क्योंकि इससे मानवीय दृष्टि व्यापक विचार उदार और अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध दृढ़ होते है। इसलिए विदेशी भाषा या दूसरी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं है। लेकिन, विदेशी भाषाओं या दूसरों की भाषाओं को पढ़ने के पहले अपनी राष्ट्रभाषा और मातृभाषा का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। अपनी भाषा में हृदय बोलता है; इसमें माँ की ममता, राष्ट्रीय सम्बन्धों का माधुर्य और अपने को जानने-पहचानने की सरलता रहती है। अपनी भाषा में अपनापन रहता है। इसके लिए हमें विशेष श्रम नहीं करना पड़ता, व्यर्थ की माथापच्ची और समय की बरबादी नहीं करनी पड़ती। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसलिए इसके व्यवहार में हमें जितनी सहजता और सुविधा का बोध होता है, उतनी सहजता और सुविधा का बोध विदेशी भाषाओं में नहीं होता। कारण यह है कि हिन्दी हम घर-बाहर सभी जगह बोलते है; इसी में हम अपने मन में बातें सोचते हैं, किसी विदेशी भाषा में नहीं।

इसलिए यह हर तरह की शिक्षा का माध्यम होती है- चाहे वह अन्य किसी भाषा की शिक्षा हो या कला-कारीगरों की। अगर हम कोई विदेशी भाषा सीखते है, तो अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के माध्यम से ही। इसलिए, अब हम किसी दूसरी सीखी भाषा को बोलते है, तो मातृभाषा में मन में जो हम सोचते है, वह उसी का अनुवाद होता है। इसलिए इसके बिना हम रह ही नहीं सकते। यह हमारे दैनिक जीवन के साथ घुली-मिली है। जैसे दूध में पानी घुला होता है, उसी तरह मातृभाषा में भी हमारी माँ का संस्कार, उसका प्यार और मिठास है। अतः अपनी भाषा सर्वोपरि है। भाषाओं के अध्ययन में इसी का सबसे ऊँचा स्थान है। यही कारण है कि सभी सभ्य देशों में शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाती है।

विदेशी भाषा सीखी जा सकती है, पर वह अपनी नहीं हो सकती। वह मस्तिष्क की वस्तु हो सकती है, हृदय की वाणी नहीं हो सकती। उसमें माँ की ममता, पिता का प्यार, पड़ोसियों का स्नेह और हमारा मन या हमारे देश का दर्द नहीं हो सकता। आज अँगरेजी हमपर जबरदस्ती लदी है। फल यह है कि लाखों विद्यार्थी अँगरेजी में फेल हो रहे हैं। लादी गयी कोई भी विदेशी भाषा समाज और देश के स्वाभाविक विकास में बाधक होती है। फिर, भाषा तो अन्य विद्याओं को जानने का एक माध्यम है, अपने भाव प्रकट करने का एक जरिया है। बचपन की जानी-समझी मातृभाषा को अपनी पढ़ाई-लिखाई या काम-कारोबार का माध्यम न बनाकर अँगरेजी को बनाने से अँगरेजी सीखने में ही हमारे दस-बारह वर्ष व्यर्थ बरबाद होते है। आज अँगरेजी को माध्यम रखने के कारण देश के हर विद्यार्थी के, यानी इस देश के दस-बारह वर्ष बरबाद हो रहे हैं। क्या इस बरबादी को भी देशभक्ति में गिना जाय?

अतः, यह ठीक ही कहा गया है कि विदेशी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि है।

(2) उदाहरण

मूल अवतरण- 'नर और नारी जनमते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है।- जवाहरलाल नेहरू

पल्लवन

संसार में असंख्य नर-नारियों का जन्म प्रतिक्षण होता रहता है और हर क्षण उनकी मृत्यु भी होती है। मनुष्य के साथ जीना-मरना सदा लगा रहता है। जन्म के साथ मृत्यु का सम्बन्ध अवश्यम्भावी है। जन्म होता है, तो मृत्यु भी होगी, यह निश्चित है। यह एक ऐसा सत्य है जिसके सम्बन्ध में किसी तरह का भ्रम हो ही नहीं सकता। किन्तु राष्ट्र अमर है, इसकी आत्मा अमर है। यह मनुष्य की तरह जीता-मरता नहीं है। राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिक, उसकी संस्कृति, उसका साहित्य, उसकी परम्परा और उसकी ऐताहासिक चेतना में है। नागरिकों की सबल एकता से राष्ट्र मजबूत होता है, उसकी आत्मा सशक्त और दीर्घजीवी होती है। जब तक राष्ट्र की आन्तरिक एकता सुदृढ़ रहती है, उसपर कोई भी बाहरी शक्ति ऊँगली उठाने की हिम्मत नहीं करती, उसका अमरत्व बना रहता है, उसका पतन नहीं होता। लेकिन जब उसकी आन्तरिक शक्ति गृहकलह में पड़कर विश्रृंखल होने लगती है, तब उसका ह्रास अवश्यम्भावी हो जाता है।

किन्तु यह 'ह्रास' ह्रास ही है, 'राष्ट्र' का नाश नहीं। राष्ट्र के साथ उसकी संस्कृति, साहित्य, परम्परा, कला, ऐताहासिक चेतना-जैसे जो अमर तत्त्व है, वे किसी भी पतन के समय अपने नागरिकों को पुनः सचेत और प्रकृतिस्थ करते है और तब पहले से अधिक तीव्रता से वे नागरिक ही अपनी विश्रृंखलता को समाप्त कर एक हो जाते है, राष्ट्रमय हो जाते है। मनुष्य मरता है, मगर उसकी परम्परा कभी नहीं मरती; व्यक्ति मरता है, मगर राष्ट्र नहीं मरता। राष्ट्र की परम्परा और इतिहास-चेतना ही प्रधान होती है। इतिहास में ऐसा भी हुआ है कि किसी राष्ट्रीय जाति को किसी भौगोलिक सीमा, अर्थात देश से आक्रमणकारियों ने उखाड़ दिया। मगर अपनी परम्परा और ऐतिहासिक चेतना को लिये वह राष्ट्रीय जाति किसी ऐतिहासिक अवसर का लाभ उठाकर पुनः राष्ट्रमय हो ही जाती है। इस आधार पर कहा जाय, तो जाति, कौम और राष्ट्र एक ही अर्थ प्रकट करनेवाले शब्द हैं। इन शब्दों का ऐतिहासिक अर्थ है, साम्प्रदायिक नहीं, क्योंकि इन शब्दों के पीछे एक-जैसे सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक एकत्व का बोध है।

इसी प्रकार कश्मीर से कन्याकुमारी और कामरूप से कच्छ तक फैले भारतीय राष्ट्र में नदी, पर्वत, वृक्ष, लता, क्षेत्र इत्यादि के साथ जुड़ा आत्मीयता का सम्बन्ध केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि वंशपरम्पराओं का भी है। फिर ये वंशपरम्पराएँ एक-सी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और ऐतिहासिक विरासतों से एक-दूसरे से बंधी है। आज भारत के किसी एक कोने का निवासी मूलतः किसी अन्य छोर का वंशज है; किसी एक कोने की भाषा बोलनेवाला मूलतः किसी दूसरे ही छोर की जनमी भाषा बोलता है; सारे तीर्थ, सारी नदियाँ, सारे धाम और सारे यात्रापथ एक-दूसरे के ऐतिहासिक मिलन के साक्षी है; सारे वंशों की रगों में एक ही पारम्परिक रक्त का संचार है। यही कारण है कि भारत एक राष्ट्र है। साम्प्रदायिक चिढ़ या स्वार्थ के कारण अपनी ही राष्ट्रीयता से इनकार करनेवाले कुछ लोगों द्वारा बनाया गया पाकिस्तान भी भारत राष्ट्र का ही एक अंश है।

किन्तु वह मात्र राजनीतिक कारण से अलग है। राष्ट्रीयता का कोई राजनीतिक कारण नहीं होता, बल्कि सांस्कृतिक कारण ही होता है। समस्त का कोई राजनीतिक कारण नहीं होता, बल्कि सांस्कृतिक कारण ही होता है। समस्त सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और न्यायिक कारणों से पाकिस्तान के लोग भारत राष्ट्र की ही सन्तान हैं। रक्त से, भाषा से, खान-पान, आचार-व्यवहार या नस्ल से पाकिस्तान के लोग भी वही है जो भारत के लोग हैं। किसी के धर्मपरिवर्तन से ही नस्ल का परिवर्तन या राष्ट्र का परिवर्तन नहीं होता। यदि ऐसा होता तो

मलय राष्ट्र में मलय नस्ल या मलय जाति का क्या अर्थ होता? मलय राष्ट्र में बहुसंख्यक मुसलमान होने पर भी वे अरबी क्यों नहीं है, मलयी और ठेठ मलयी परम्परा के ही क्यों है ? व्यक्ति के मरने से राष्ट्र नहीं मरता। व्यक्ति के धर्मपरिवर्तन से राष्ट्रीयता के परिवर्तन की साम्प्रदायिक नारेबाजी तो और भी बड़ी मूर्खता है। अतः नर-नारी के जनमते-मरने पर भी राष्ट्र अमर है; बल्कि राष्ट्र की जो संस्कृति और राष्ट्रीयता है, वह सारे राष्ट्र के नागरिकों के धर्मपरिवर्तन तक कर लेने पर वही रहती है, बदलती नहीं।

.....

AJAY KUMAR

# संक्षेपण(Sankshepan)

किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य, पत्रव्यवहार या लेख के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को 'संक्षेपण' कहते है, जिसमें अप्रासंगिक, असम्बद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन हो।

इस परिभाषा के अनुसार, संक्षेपण एक स्वतःपूर्ण रचना है। उसे पढ़ लेने के बाद मूल सन्दर्भ को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। सामान्यतः संक्षेपण में लम्बे-चौड़े विवरण, पत्राचार आदि की सारी बातों को अत्यन्त संक्षिप्त और क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है।

इसमें हम कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों भावों और तथ्यों को प्रस्तुत करते है। वस्तुतः, संक्षेपण किसी बड़े ग्रन्थ का संक्षिप्त संस्करण बड़ी मूर्ति का लघु अंकन और बड़े चित्र का छोटा चित्रण है। इसमें मूल की कोई भी आवश्यक बात छूटने नहीं पाती। अनावश्यक बातें छाँटकर निकाल दी जाती है और मूल बातें रख ली जाती हैं। यह काम सरल नहीं। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

## संक्षेपण के गुण

संक्षेपण एक प्रकार का मानसिक प्रशिक्षण है, मानसिक व्यायाम भी। उत्कृष्ट संक्षेपण के निम्नलिखित गुण है-

(1) पूर्णता- संक्षेपण स्वतः पूर्ण होना चाहिए। संक्षेपण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें कहीं कोई महत्त्वपूर्ण बात छूट तो नहीं गयी। आवश्यक और अनावश्यक अंशों का चुनाव खूब सोच-समझकर करना चाहिए। यह अभ्यास से ही सम्भव है। संक्षेपण में उतनी ही बातें लिखी जायँ, जो मूल अवतरण या सन्दर्भ में हों, न तो अपनी ओर से कहीं बढ़ाई जाय और न घटाई जाय तथा न मुख्य बात कम की जाय। मूल में जिस विषय या विचार पर जितना जोर दिया गया है, उसे उसी अनुपात में, संक्षिप्त रूप में लिखा जाना चाहिए। ऐसा न हो कि कुछ विस्तार से लिख दिया जाय और कुछ कम। संक्षेपण व्याख्या, आशय, भावार्थ, सारांश इत्यादि से बिलकुल भिन्न है।

(2) संक्षिप्तता- संक्षिप्तता संक्षेपण का एक प्रधान गुण है। यद्यपि इसके आकार का निर्धारण और नियमन सम्भव नहीं, तथापि संक्षेपण को सामान्यतया मूल का तृतीयांश होना चाहिए। इसमें व्यर्थ विशेषण, दृष्टान्त, उद्धरण, व्याख्या और वर्णन नहीं होने चाहिए। लम्बे-लम्बे शब्दों और वाक्यों के स्थान पर सामासिक चिह्न लगाकर उन्हें छोटा बनाना चाहिए। यदि शब्दसंख्या निर्धारित हो, तो संक्षेपण उसी सीमा में होना चाहिए। किन्तु, इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाय कि मूल की कोई भी आवश्यक बात छूटने न पाय।

AJAY KUMAR

(3) स्पष्टता- संक्षेपण की अर्थव्यंजना स्पष्ट होनी चाहिए। मूल अवतरण का संक्षेपण ऐसा लिखा जाय, जिसके पढ़ने से मूल सन्दर्भ का अर्थ पूर्णता और सरलता से स्पष्ट हो जाय। ऐसा न हो कि संक्षेपण का अर्थ स्पष्ट करने के लिए मूल सन्दर्भ को ही पढ़ना पड़े। इसलिए, स्पष्टता के लिए पूरी सावधानी रखने की जरूरत होगी। संक्षेपक (precis writer) को यह बात याद रखनी चाहिए कि संक्षेपण के पाठक के सामने मूल सन्दर्भ नहीं रहता। इसलिए उसमें (संक्षेपण में) जो कुछ लिखा जाय, वह बिलकुल स्पष्ट हो।

(4) भाषा की सरलता- संक्षेपण के लिए यह बहुत जरूरी है कि उसकी भाषा सरल और परिष्कृत हो। क्लिष्ट और समासबहुल भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। भाषा को किसी भी हालत में अलंकृत नहीं होना चाहिए। जो कुछ लिखा जाय, वह साफ-साफ हो; उसमें किसी तरह का चमत्कार या घुमाव-फिराव लाने की कोशिश न की जाय। इसलिए, संक्षेपण की भाषा सुस्पष्ट और आडम्बरहीन होनी चाहिए। तभी उसमें सरलता आ सकेगी।

(5) शुद्धता- संक्षेपण में भाव और भाषा की शुद्धता होनी चाहिए। शुद्धता से हमारा मतलब यह है कि संक्षेपण में वे ही तथ्य तथा विषय लिखे जायँ, जो मूल सन्दर्भ में हो। कोई भी बात अशुद्ध, अस्पष्ट या ऐसी न हों, जिसके अलग-अलग अर्थ लगाये जा सकें। इसमें मूल के आशय को विकृत या परिवर्तित करने का अधिकार नहीं होता और न अपनी ओर से किसी तरह की टीका-टिप्पणी होना चाहिए। भाषा व्याकरणोचित होनी चाहिए, टेलीग्राफिक नहीं।

(6) प्रवाह और क्रमबद्धता- संक्षेपण में भाव और भाषा का प्रवाह एक आवश्यक गुण है। भाव क्रमबद्ध हों और भाषा प्रवाहपूर्ण। क्रम और प्रवाह के सन्तुलन से ही संक्षेपण का स्वरूप निखरता है। वाक्य सुसम्बद्ध और गठित हों प्रवाह बनाये रखने के लिए वाक्यरचना में जहाँ-तहाँ 'अतः', 'अतएव', 'तथापि' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। एक भाव दूसरे भाव से सम्बद्ध हो। उनमे तार्किक क्रमबद्धता (logical sequence) रहनी चाहिए।

सारांश यह कि संक्षेपण में तीन गुणों का होना बहुत जरूरी है-

(i) संक्षिप्तता (brevity), (ii) स्पष्टता (clearness), और (iii) क्रमबद्धता (coherence) ।

## संक्षेपण के नियम

यधपि संक्षेपण के निश्चित नियम नहीं बनाये जा सकते, तथापि अभ्यास के लिए कुछ सामान्य नियमों का उल्लेख किया जा सकता है। वे इस प्रकार है-

## संक्षेपण के विषयगत नियम

(1) मूल सन्दर्भ को ध्यानपूर्वक पढ़ें। जब तक उसका सम्पूर्ण भावार्थ (substance) स्पष्ट न हो जाय, तब तक संक्षेपण लिखना आरम्भ नहीं करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि मूल अवतरण कम-से-कम तीन बार पढ़ा जाय।

AJAY KUMAR

(2) मूल के भावार्थ को समझ लेने के बाद आवश्यक शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यखण्डों को रेखांकित करें, जिनका मूल विषय से सीधा सम्बन्ध हो अथवा जिनका भावों या विचारों की अन्विति में विशेष महत्त्व हो। इस प्रकार, कोई भी तथ्य छूटने न पायेगा।

(3) संक्षेपण मूल सन्दर्भ का संक्षिप्त रूप है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इसमें अपनी ओर से किसी तरह की टीका-टिप्पणी अथवा आलोचना-प्रत्यालोचना न हो। संक्षेपण के लेखक को न तो किसी मतवाद के खण्डन का अधिकार है और न अपनी ओर से मौलिक या स्वतन्त्र विचारों को जोड़ने की छूट है। उसे तो मूल के भावों अथवा विचारों के अधीन रहना है और उन्हें ही संक्षेप में लिखना है।

(4) संक्षेपण को अन्तिम रूप देने के पहले रेखांकित वाक्यों के आधार पर उसकी रुपरेखा तैयार करनी चाहिए, फिर उसमें उचित और आवश्यक संशोधन (जोड़-घटाव) करना चाहिए। यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि मूल सन्दर्भ के विचारों की क्रमव्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि जिस क्रम में मूल लिखा गया है, उसी क्रम में संक्षेपण भी लिखा जाय। लेकिन यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसमें विचारों का तारतम्य बना रहे। ऐसा मालूम हो कि एक वाक्य का दूसरे वाक्य से सीधा सम्बन्ध बना हुआ है।

(5) उक्त रुपरेखा को अन्तिम रूप देने के पहले उसे एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए, ताकि कोई भी आवश्यक विचार छूटने न पाय। जहाँ तक हो सके, वह अत्यन्त संक्षिप्त हो। यदि शब्दसंख्या पहले से निर्धारित हो, तो यह प्रयत्न करना चाहिए कि संक्षेपण में उस निर्देश का पालन किया जाय। सामान्यतया उसे मूल सन्दर्भ का एक-तिहाई होना चाहिए।

(6) अन्त में, संक्षेपण को व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार एक क्रम में लिखना चाहिए।

(7) उपर्युक्त सारी क्रियाओं के बाद संक्षेपण के भावों और विचारों के अनुकूल एक संक्षिप्त शीर्षक दे देना चाहिए। शीर्षक ऐसा हो, जो सभी तथ्यों को समेटने की क्षमता रखे। शीर्षक लघु और कम-से-कम शब्दोंवाला होना चाहिए।

## संक्षेपण के शैलीगत नियम

(1) संक्षेपण में विशेषणों और क्रियाविशेषणों के लिए स्थान नहीं है। इन्हें निकाल देना चाहिए। संक्षेपण की शैली अलंकृत नहीं होना चाहिए; उसे हर हालत में आडम्बरहीन होना चाहिए।

(2) संक्षेपण में मूल के उन्हीं शब्दों को रखना चाहिए, जो अर्थव्यंजना में सहायक हों। जहाँ तक सम्भव हो, मूल के शब्दों के बदले दूसरे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि मूल के भावों और विचारों में अर्थ का उलट-फेर न होने पाय।

(3) संक्षेपण में मूल अवतरण के वाक्यखण्डों के लिए एक-एक शब्द का प्रयोग होना चाहिए, जो मूल के भावोत्कर्ष में अधिक-से-अधिक सहायक सिद्ध हों।

कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

| वाक्यखण्ड | एक शब्द |
|---|---|
| एक से अधिक पति रखने की प्रथा | बहुपतित्व |

| | |
|---|---|
| जिसका मन अपने काम में नहीं लगता | अन्यमनस्क |
| जहाँ नदियों का मिलन हो | संगम |
| किसी विषय का विशेष ज्ञान रखनेवाला | विशेषज्ञ |
| कष्ट से होनेवाला काम | कष्टसाध्य |

जहाँ मुहावरों और कहावतों का प्रयोग हुआ हों, वहाँ उनके अर्थ को कम-से-कम शब्दों में लिखना चाहिए। मुहावरे के लिए मुहावरा रखना ठीक न होगा।

(4) संक्षेपण की शैली अलंकृत नहीं होनी चाहिए, इसलिए उपमा (simile), उत्प्रेक्षा (metaphor) या अन्य अलंकारों का प्रयोग नहीं होना चाहिए; अप्रासंगिक बातों, उद्धरणों और विचारों की पुनरावृत्ति भी हटा देनी चाहिए। संक्षेपण की भाषाशैली स्पष्ट और सरल होनी चाहिए, ताकि पढ़ते ही उसका मर्म समझ में आ जाय।

(5) संक्षेपण की भाषाशैली व्याकरण के नियमों से नियंत्रित होनी चाहिए, वह टेलिग्राफिक न हो।

(6) संक्षेपण में परोक्ष कथन (indirect narration) सर्वत्र अन्यपुरुष में होना चाहिए। जिस तरह किसी समाचारपत्र का संवाददाता अपने वाक्यों की रचना में परोक्ष कथन का प्रयोग करता है, उसी तरह संक्षेपण में उसका व्यवहार होना चाहिए। संवादों के संक्षेपण में इसका उपयोग सर्वथा अनिवार्य है। ऐसा करते समय एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हिन्दी में जब वाक्यों को परोक्ष ढंग से लिखना होता है, तब सर्वनाम, क्रिया या काल को बदलने की जरूरत नहीं होती, केवल कि जोड़ देने से काम चल जाता है। लेकिन अँगरेजी में ऐसा नहीं होता।

एक उदाहरण इस प्रकार है-

प्रत्यक्ष वाक्य (Direct narration)- राम ने कहा-'मैं जाता हूँ।'

परोक्ष वाक्य (Indirect narration)- राम ने कहा कि मैं जाता हूँ।

(7) संक्षेपण की वाक्यरचना में लम्बे-लम्बे वाक्यों और वाक्यखण्डों का व्यवहार नहीं होना चाहिए; क्योंकि उसे हर हालत में सरल और स्पष्ट होना चाहिए, ताकि एक ही पाठ में मूल के सारे भाव समझ में आ जायँ। अतः संक्षेपण में शब्द इकहरे, वाक्य छोटे, भाव सरल और शैली आडम्बरहीन होनी चाहिए।

(8) संक्षेपण में शब्दों के प्रयोग में संयम से काम लेना चाहिए। कोई भी शब्द बेकार और बेजान न हो। उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, जिनका प्रासंगिक महत्त्व है। मूल के उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, जो भावव्यंजना और प्रसंगों के अनुकूल सार्थक है, जिनके बिना काम नहीं चल सकता। शब्दों को दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं। अप्रचलित शब्दों के स्थान पर प्रचलित और सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

(9) संक्षेपण की भाषाशैली में साहित्यक चमत्कार और काव्यात्मक लालित्य लाने का प्रयत्न व्यर्थ है। इसलिए, यहाँ न तो भाषा को सजाने-सँवारने की आवश्यकता है और न उसके भावों को ललित-कलित बनाने की। जो कुछ लिखा जाय, वह साफ हो, स्पष्ट हो। कल्पना के पंख लगाकर उड़ना यहाँ नहीं हो सकता। संक्षेपण की कला तलवार की धार पर चलने की कला है। इसके लिए कुशाग्र बुद्धि, गहरी पैठ और तीव्र मनोयोग की आवश्यकता है। यह काम अभ्यास से ही सम्भव है। अतएव आवश्यक है कि संक्षेपण के लेखक की दृष्टि हर तरह वस्तुवादी हो, भावुक नहीं।

(10) संक्षेपण से समानार्थी शब्दों को हटा देना चाहिए। ये एक ही भाव या विचार को बार-बार दुहराते हैं। इसे पुनरुक्तिदोष कहते हैं। अँगरेजी में इसे Verbosity कहते हैं। उदाहरणार्थ- 'आजादी स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, स्वच्छन्दता और मुक्ति को कहते हैं' । यहाँ 'आजादी' के लिए अनेक समानार्थी शब्दों का प्रयोग हुआ है। भाषण में प्रभाव जताने के लिए ही वक्ता इस प्रकार की शैली का सहारा लेता है। संक्षेपण में ऐसे शब्दों को हटाकर इतना ही लिखना चाहिए कि 'आजादी मुक्ति का दूसरा नाम है'। संक्षेपण की कला कम-से-कम शब्दों में निखरती है।

(11) पुनरुक्तिदोष शब्दों में ही नहीं, भावों अथवा विचारों में भी होता है। कभी-कभी एक ही वाक्य में एक ही बात को विभिन्न रूपों में रख दिया जाता है। उदाहरण के लिए, एक वाक्य इस प्रकार है- 'रंगमंच पर कलाकार क्रमशः एक-एक कर आये' । इस वाक्य में क्रमशः शब्द एक-एक कर के भाव को दुहराता है। दोनों का एक ही अर्थ है, इसलिए ऐसे शब्दों को हटा देना चाहिए। अँगरेजी में इस दोष को Tautology कहते हैं।

(12) अन्त में, संक्षेपण में प्रयुक्त शब्दों की संख्या लिख देनी चाहिए ।

## निष्कर्ष

सारांश यह कि संक्षेपण की लेखनविधि अन्वय, सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ, आलेख (रुपरेखा) इत्यादि से बिलकुल भिन्न है। जिस सन्दर्भ का संक्षेपण लिखना हों, उसे सावधानी से पढ़ लिया जाय और उसके भावार्थ तथा विषय को अच्छी तरह समझने की चेष्टा की जाय। सम्भव है कि एक बार पढ़ने से कुछ भाव स्पष्ट न हों। अतः उसे दुबारा-तिबारा पढ़ा जाय और उसके महत्त्वपूर्ण अंशों को रेखांकित किया जाय। अब इन महत्त्वपूर्ण अंशों के आधार पर एक संक्षिप्त प्रारूप (draft) तैयार किया जाय।

इसे सामान्यतया मूल सन्दर्भ की एक-तिहाई के बराबर होना चाहिए। यदि कहीं कुछ अस्पष्टता रह जाय, तो फिर तीसरी बार इस दृष्टि से मूल प्रारूप को पढ़ा जाय कि कहीं भूल से कोई आवश्यक बात छूट तो न गयी है। अन्तिम रूप से जब संक्षेपण तैयार हो जाय, तब उसका एक उपयुक्त, किन्तु छोटा-सा शीर्षक भी दे दिया जाय। अन्त में, समस्त संक्षेपण को इस दृष्टि से एक बार फिर पढ़ लिया जाय कि भाषा में प्रवाह कहीं विच्छिन्न तो नहीं हुआ या क्रम तो भंग नहीं हुआ। यदि कहीं भाषा शिथिल हो गयी हो या कोई शब्द उपयुक्त नहीं जँचता हो, तो उसमें सुधार कर दिया जाय।

संक्षेपण : कुछ आवश्यक निर्देश

(1) संक्षेपण में मूल सन्दर्भ के उदाहरण, दृष्टान्त, उद्धरण और तुलनात्मक विचारों का समावेश नहीं होना चाहिए।

(2) सामान्यतः इसे भूतकाल और परोक्ष कथन में लिखा जाना चाहिए।

(3) अन्यपुरुष का प्रयोग होना चाहिए।

(4) भाषा सरल होनी चाहिए, मुहावरे और आलंकारिक नहीं।

(5) मूल तथ्य से असम्बद्ध और अनावश्यक बातों को छाँटकर निकाल देना चाहिए।

(6) आरम्भ अथवा प्रथम वाक्य ऐसा हो, जो मूल विषय को स्पष्ट कर दे। लेकिन इसका अपवाद भी हो सकता है।

(7) यह निर्दिष्ट शब्द-संख्या में लिखा जाना चाहिए। यदि कोई निर्देश न हो, तो इसे कम-से-कम मूल की एक-तिहाई होना आवश्यक है।

(8) समास, प्रत्यय और कृदन्त द्वारा वाक्यांश या वाक्य एक शब्द या पद के रूप में संक्षिप्त किये जायँ।

## संक्षेपण के कुछ उदाहरण

उदाहरण- 1

ऋतुराज वसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया। पतझड़ में पश्चिम-पवन ने जीर्ण-शीर्ण पत्रों को गिराकर लताकुंजों, पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गयी। कनेर, करवीर, मदार, पाटल इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि दिग्दिगन्त में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस-नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही है। गेहूँ के सुनहले बालों से पवनस्पर्श के कारण रुनझुन का संगीत फूट रहा है। पतों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखर हो गया है। पलाश-वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखायी पड़ती हैं। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमन्त्रण दे रही है। अशोक के अग्निवर्ण कोमल एवं नवीन पत्ते वायु के स्पर्श से तरंगित हो रहे हैं। शीतकाल के ठिठुरे अंगों में नयी स्फूर्ति उमड़ रही है। वसन्त के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नये जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गन्ध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों की चटक, वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार- सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है, आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने वसन्त के आगमन पर अपने रूप को इतना सँवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन असम्भव है, उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

## संक्षेपण

वसन्तऋतु की शोभा

वसन्तऋतु के आते ही शीत की कठोरता जाती रही। पश्चिम के पवन ने वृक्षों के जीर्ण-शीर्ण पत्ते गिरा दिये। वृक्षों और लताओं में नये पत्ते और रंग-बिरंगे फूल निकल आये। उनकी सुगन्धि से दिशाएँ गमक उठीं। सुनहले बालों से युक्त गेहूँ के पौधे खेतों में हवा से झूमने लगे। प्राणियों की नस-नस में उमंग की नयी चेतना छा गयी। आम की मंजरियों से सुगन्ध आने लगी; कोयल कूकने लगी; फूलों पर भौरें मँडराने लगे और कलियाँ खिलने लगी। प्रकृति में सर्वत्र नवजीवन का संचार हो उठा। टिप्पणी- ऊपर मूल सन्दर्भ में वसन्तऋतु प्रकृति की शोभा का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन हुआ है, जिसमें साहित्यिक लालित्य भरने की चेष्टा की गयी है। संक्षेपण में हमने सभी व्यर्थ शब्दों और वाक्यों को हटा दिया है और काम की बातों का उल्लेख कर दिया है, सीधी-सादी भाषा में। मूल वर्तमानकाल में लिखा गया है, पर संक्षेपण में सारी बातें भूतकाल में लिखी गयी हैं।

.....

AJAY KUMAR

# छन्द (Metres)

वर्णो या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से यदि आहाद पैदा हो, तो उसे छंद कहते है।

दूसरे शब्दो में-अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रागणना तथा यति-गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना 'छन्द' कहलाती है।

छंद शब्द 'छद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आह्लादित करना', 'खुश करना।'छंद का दूसरा नाम पिंगल भी है। इसका कारण यह है कि छंद-शास्त्र के आदि प्रणेता पिंगल नाम के ऋषि थे।

'छन्द' की प्रथम चर्चा ऋग्वेद में हुई है। यदि गद्य का नियामक व्याकरण है, तो कविता का छन्दशास्त्र। छन्द पद्य की रचना का मानक है और इसी के अनुसार पद्य की सृष्टि होती है। पद्यरचना का समुचित ज्ञान 'छन्दशास्त्र' का अध्ययन किये बिना नहीं होता। छन्द हृदय की सौन्दर्यभावना जागरित करते है। छन्दोबद्ध कथन में एक विचित्र प्रकार का आह्लाद रहता है, जो आप ही जगता है। तुक छन्द का प्राण है-यही हमारी आनन्द-भावना को प्रेरित करती है। गद्य में शुष्कता रहती है और छन्द में भाव की तरलता। यही कारण है कि गद्य की अपेक्षा छन्दोबद्ध पद्य हमें अधिक भाता है।

सौन्दर्यचेतना के अतिरिक्त छन्द का प्रभाव स्थायी होता है। इसमें वह शक्ति है, जो गद्य में नहीं होती। छन्दोबद्ध रचना का हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। गद्य की बातें हवा में उड़ जाती है, लेकिन छन्दों में कही गयी कोई बात हमारे हृदय पर अमिट छाप छोड़ती है। मानवीय भावों को आकृष्ट करने और झंकृत करने की अदभुत क्षमता छन्दों में होती है। छन्दाबद्ध रचना में स्थायित्व अधिक है। अपनी स्मृति में ऐसी रचनाओं को दीर्घकाल तक सँजोकर रखा जा सकता है। इन्हीं कारणों से हिन्दी के कवियों ने छन्दों को इतनी सहृदयता से अपनाया। अतः छन्द अनावश्यक और निराधार नहीं हैं। इनकी भी अपनी उपयोगिता और महत्ता है। हिन्दी में छन्दशास्त्र का जितना विकास हुआ, उतना किसी भी देशी-विदेशी भाषा में नहीं हुआ।

## छन्द के अंग

छन्द के निम्नलिखित अंग है-

(1)चरण /पद /पादा

(2) वर्ण और मात्रा

(3) संख्या क्रम और गण

(4)लघु और गुरु

(5) गति

(6) यति /विराम

(7) तुक

## (1)चरण /पद /पादा

छंद के प्रायः 4 भाग होते हैं। इनमें से प्रत्येक को 'चरण' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- छंद के चतुर्थांश (चतुर्थ भाग) को चरण कहते हैं।

कुछ छंदों में चरण तो चार होते है लेकिन वे लिखे दो ही पंक्तियों में जाते हैं, जैसे- दोहा, सोरठा आदि। ऐसे छंद की प्रत्येक को 'दल' कहते हैं।

हिन्दी में कुछ छंद छः-छः पंक्तियों (दलों) में लिखे जाते हैं। ऐसे छंद दो छंदों के योग से बनते है, जैसे कुण्डलिया (दोहा +रोला), छप्पय (रोला +उल्लाला) आदि।

चरण 2 प्रकार के होते है- सम चरण और विषम चरण।

प्रथम व तृतीय चरण को विषम चरण तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण को सम चरण कहते हैं।

## (2) वर्ण और मात्रा

### वर्ण/अक्षर

एक स्वर वाली ध्वनि को वर्ण कहते हैं, चाहे वह स्वर ह्रस्व हो या दीर्घ।

जिस ध्वनि में स्वर नहीं हो (जैसे हलन्त शब्द राजन् का 'न्', संयुक्ताक्षर का पहला अक्षर- कृष्ण का 'ष्') उसे वर्ण नहीं माना जाता।

वर्ण को ही अक्षर कहते हैं।

वर्ण 2 प्रकार के होते हैं-

ह्रस्व स्वर वाले वर्ण (ह्रस्व वर्ण): अ, इ, उ, ऋ; क, कि, कु, कृ दीर्घ स्वर वाले वर्ण (दीर्घ वर्ण) : आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ; का, की, कू, के, कै, को, कौ

AJAY KUMAR

## मात्रा

किसी वर्ण या ध्वनि के उच्चारण-काल को मात्रा कहते हैं।

ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे एक मात्रा तथा दीर्घ वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे दो मात्रा माना जाता है।

इस प्रकार मात्रा दो प्रकार के होते है-

ह्रस्व : अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ : आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

### वर्ण और मात्रा की गणना

#### वर्ण की गणना

ह्रस्व स्वर वाले वर्ण (ह्रस्व वर्ण)- एकवर्णिक- अ, इ, उ, ऋ; क, कि, कु, कृ

दीर्घ स्वर वाले वर्ण (दीर्घ वर्ण)- एकवर्णिक- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ; का, की, कू, के, कै, को, कौ

#### मात्रा की गणना

ह्रस्व स्वर- एकमात्रिक- अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर- द्विमात्रिक- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

वर्णों और मात्राओं की गिनती में स्थूल भेद यही है कि वर्ण 'सस्वर अक्षर' को और मात्रा 'सिर्फ स्वर' को कहते है।

### (3) संख्या क्रम और गण

मात्राओं और वर्णों की गणना को 'संख्या' और लघु-गुरु के स्थान निर्धारण को 'क्रम' कहते है। मात्राओं और वर्णों की 'संख्या' और 'क्रम' की सुविधा के लिए तीन वर्णों का एक-एक गण मान लिया गया है। इन गणों के अनुसार मात्राओं का क्रम वार्णिक वृतों या छन्दों में होता है, अतः इन्हें 'वार्णिक गण' भी कहते है। इन गणों की संख्या आठ है। इनके ही उलटफेर से छन्दों की रचना होती है। इन गणों के नाम, लक्षण, चिह्न और उदाहरण इस प्रकार है-

AJAY KUMAR

| गण | वर्ण क्रम | चिह्न | उदाहरण | प्रभाव |
|---|---|---|---|---|
| यगण | आदि लघु, मध्य गुरु, अन्त गुरु | ।ऽऽ | बहाना | शुभ |
| मगन | आदि, मध्य, अन्त गुरु | ऽऽऽ | आजादी | शुभ |
| तगण | आदि गुरु, मध्य गुरु, अन्त लघु | ऽऽ। | बाजार | अशुभ |
| रगण | आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त गुरु | ऽ।ऽ | नीरजा | अशुभ |
| जगण | आदि लघु, मध्य गुरु, अन्त लघु | ।ऽ। | प्रभाव | अशुभ |
| भगण | आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त लघु | ऽ।। | नीरद | शुभ |
| नगण | आदि, मध्य, अन्त लघु | ।।। | कमल | शुभ |
| सगन | आदि लघु, मध्य लघु, अन्त गुरु | ।।ऽ | वसुधा | अशुभ |

काव्य या छन्द के आदि में 'अगण' अर्थात 'अशुभ गण' नहीं पड़ना चाहिए। शायद उच्चारण कठिन अर्थात उच्चारण या लय में दग्ध होने के कारण ही कुछ गुणों को 'अशुभ' कहा गया है। गणों को सुविधापूर्वक याद रखने के लिए एक सूत्र बना लिया गया है- यमाताराजभानसलगा: । इस सूत्र में प्रथम आठ वर्णों में आठ गणों के नाम आ गये है। अन्तिम दो वर्ण 'ल' और 'ग' छन्दशास्त्र में 'दशाक्षर' कहलाते हैं। जिस गण का स्वरूप जानना हो, उस गण के आद्यक्षर और उससे आगे दो अक्षरों को इस सूत्र से ले लेना होता है। जैसे- 'तगण' का स्वरूप जानना हो तो इस सूत्र का 'ता' और उससे आगे के दो अक्षर 'रा ज'='ताराज', ( ऽऽ।) लेकर 'तगण' का लघु-गुरु जाना जा सकता है कि 'तगण' में गुरु+गुरु+लघु, इस क्रम से तीन वर्ण होते है। यहाँ यह स्मरणीय है कि 'गण' का विचार केवल वर्णवृत्त में होता है, मात्रिक छन्द इस बन्धन से मुक्त है।

## (4) लघु और गुरु

### लघु-

(i) अ, इ, उ- इन ह्रस्व स्वरों तथा इनसे युक्त एक व्यंजन या संयुक्त व्यंजन को 'लघु' समझा जाता है। जैसे- कलम; इसमें तीनों वर्ण लघु हैं। इस शब्द का मात्राचिह्न हुआ- ।।।

(ii) चन्द्रबिन्दुवाले ह्रस्व स्वर भी लघु होते हैं। जैसे- 'हँ' ।

### गुरु-

(i) आ, ई, ऊ और ॠ इत्यादि दीर्घ स्वर और इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते है। जैसे- राजा, दीदी, दादी इत्यादि। इन तीनों शब्दों का मात्राचिह्न हुआ- ऽऽ

(ii) ए, ऐ, ओ, औ- ये संयुक्त स्वर और इनसे मिले व्यंजन भी गुरु होते हैं। जैसे- ऐसा ओला, औरत, नौका इत्यादि।

(iii) अनुस्वारयुक्त वर्ण गुरु होता है। जैसे- संसार। लेकिन, चन्द्रबिन्दुवाले वर्ण गुरु नहीं होते।

(iv) विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु होता है। जैसे- स्वतः, दुःख; अर्थात- ।ऽ, ऽ ।

(v) संयुक्त वर्ण के पूर्व का लघु वर्ण गुरु होता है। जैसे- सत्य, भक्त, दुष्ट, धर्म इत्यादि, अर्थात- ऽ।।

## (5) गति

छंद के पढ़ने के प्रवाह या लय को गति कहते हैं।

गति का महत्व वर्णिक छंदों की अपेक्षा मात्रिक छंदों में अधिक है। बात यह है कि वर्णिक छंदों में तो लघु-गुरु का स्थान निश्चित रहता है किन्तु मात्रिक छंदों में लघु-गुरु का स्थान निश्चित नहीं रहता, पूरे चरण की मात्राओं का निर्देश मात्र रहता है।

मात्राओं की संख्या ठीक रहने पर भी चरण की गति (प्रवाह) में बाधा पड़ सकती है।

जैसे-

(1) दिवस का अवसान था समीप में गति नहीं है जबकि 'दिवस का अवसान समीप था' में गति है।

(2) चौपाई, अरिल्ल व पद्धरि- इन तीनों छंदों के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती है पर गति भेद से ये छंद परस्पर भिन्न हो जाते हैं।

अतएव, मात्रिक छंदों के निर्दोष प्रयोग के लिए गति का परिज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

गति का परिज्ञान भाषा की प्रकृति, नाद के परिज्ञान एवं अभ्यास पर निर्भर करता है।

## (6) यति /विराम

छंद में नियमित वर्ण या मात्रा पर साँस लेने के लिए रूकना पड़ता है, इसी रूकने के स्थान को यति या विराम कहते है।

छन्दशास्त्र में 'यति' का अर्थ विराम या विश्राम । छोटे छंदों में साधारणतः यति चरण के अन्त में होती है; पर बड़े छंदों में एक ही चरण में एक से अधिक यति या विराम होते है।

यति का निर्देश प्रायः छंद के लक्षण (परिभाषा) में ही कर दिया जाता है। जैसे मालिनी छंद में पहली यति 8 वर्णों के बाद तथा दूसरी यति 7 वर्णों के बाद पड़ती है।

AJAY KUMAR

## (7) तुक

छंद के चरणान्त की अक्षर-मैत्री (समान स्वर-व्यंजन की स्थापना) को तुक कहते हैं।

जिस छंद के अंत में तुक हो उसे तुकान्त छंद और जिसके अन्त में तुक न हो उसे अतुकान्त छंद कहते हैं।

अतुकान्त छंद को अँग्रेजी में ब्लैंक वर्स (Blank Verse) कहते हैं।

## छन्द के भेद

वर्ण और मात्रा के विचार से छन्द के चार भेद है-

(1) वर्णिक छन्द

(2) वर्णिक वृत्त

(3) मात्रिक छन्द

(4) मुक्तछन्द

(1) वर्णिक छन्द- जिस छंद के सभी चरणों में वर्णो की संख्या समान हो।

दूसरे शब्दों में- केवल वर्णगणना के आधार पर रचा गया छन्द 'वार्णिक छन्द' कहलाता है।

वर्णिक छंद के सभी चरणों में वर्णो की संख्या समान रहती है और लघु-गुरु का क्रम समान रहता है।

'वृतों' की तरह इसमें लघु-गुरु का क्रम निश्चित नहीं होता, केवल वर्णसंख्या ही निर्धारित रहती है और इसमें चार चरणों का होना भी अनिवार्य नहीं।

### वार्णिक छन्द के भेद

वार्णिक छन्द के दो भेद है- (i) साधारण और (ii) दण्डक

9 से 26 वर्ण तक के चरण या पाद रखनेवाले वार्णिक छन्द 'साधारण' होते है और इससे अधिकवाले दण्डक।

AJAY KUMAR

प्रमुख वर्णिक छंद : प्रमाणिका (8 वर्ण); स्वागता, भुजंगी, शालिनी, इन्द्रवज्रा, दोधक (सभी 11 वर्ण); वंशस्थ, भुजंगप्रयात, द्रुतविलम्बित, तोटक (सभी 12 वर्ण); वसंततिलका (14 वर्ण); मालिनी (15 वर्ण); पंचचामर, चंचला (सभी 16 वर्ण); मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी (सभी 17 वर्ण), शार्दूल विक्रीडित (19 वर्ण), स्त्रग्धरा (21 वर्ण), सवैया (22 से 26 वर्ण), घनाक्षरी (31 वर्ण) रूपघनाक्षरी (32 वर्ण), देवघनाक्षरी (33 वर्ण), कवित्त /मनहरण (31-33 वर्ण)।

दण्डक वार्णिक छन्द 'घनाक्षरी' का उदाहरण-

*किसको पुकारे यहाँ रोकर अरण्य बीच ।* -16 वर्ण

*चाहे जो करो शरण्य शरण तिहारे हैं ।।* - 15 वर्ण

'देवघनाक्षरी' का उदाहरण-

*झिल्ली झनकारैं पिक* - 8 वर्ण

*चातक पुकारैं बन* - 8 वर्ण

*मोरिन गुहारैं उठै* - 8 वर्ण

*जुगनु चमकि चमकि* - 9 वर्ण

कुल- 33 वर्ण

'रूपघनाक्षरी' का उदाहरण

*ब्रज की कुमारिका वे* - 8 वर्ण

*लीनें सक सारिका ब* - 8 वर्ण

*ढावैं कोक करिकानी* - 8 वर्ण

*केसव सब निबाहि* - 8 वर्ण

कुल- 32 वर्ण

AJAY KUMAR

साधारण वार्णिक छन्द (26 वर्ण तक का छन्द) में 'अमिताक्षर' छन्द को उदाहरणस्वरूप लिया जा सकता है। अमिताक्षर वस्तुतः घनाक्षरी के एक चरण के उत्तरांश से निर्मित छन्द है, अतः इसमें 15 वर्ण होते है और 8 वें तथा 7 वें वर्ण पर यति होती है। जैसे-

*चाहे जो करो शरण्य -* 8 वर्ण

*शरण तिहारे हैं -* 7 वर्ण

कुल-15 वर्ण

वर्णिक छंद का एक उदाहरण : मालिनी (15 वर्ण)

वर्णो की संख्या-15, यति 8 और 7 पर

परिभाषा-

न.....न.....म.....य.....य ..... मिले तो मालिनी होवे

।.....।..... ।.....।..... ।

नगन.....नगन.....मगन.....यगण.....यगण

।।।.....।।।.....sss.....।ss.....।ss

3.....3.....3.....3.....3 =15 वर्ण

प्रथम चरण- *प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है ?*

द्वितीय चरण- *दुःख-जलनिधि-डूबी का सहारा कहाँ है ?*

तृतीय चरण- *लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ*

चतुर्थ चरण- *वह हृदय हमारा नैन-तारा कहाँ है ?* (हरिऔध)

1.....2.....3.....4.....5.....6.....7.....8.....9.....10.....11.....12.....13.....14.....15

(प्रि).(य).(प)...(ति)...(व)...(ह)....(में)...(रा)...(प्रा).....(ण).....(प्या).....(रा).....(क).....(हाँ).....(है)

.....नगन.....नगन..... मगन.....यगण.....यगण

AJAY KUMAR

(2) वार्णिक वृत्त - वृत्त उस समछन्द को कहते है, जिसमें चार समान चरण होते है और प्रत्येक चरण में आनेवाले वर्णों का लघु-गुरु-क्रम सुनिश्चित रहता है। गणों में वर्णों का बँधा होना प्रमुख लक्षण होने के कारण इसे वार्णिक वृत्त, गणबद्ध या गणात्मक छन्द भी कहते हैं। ७ भगण और २ गुरु का 'मत्तगयन्द सवैया' इसके उदाहरणस्वरूप है-

भगण भगण भगण भगण

s।। s।। s।। s।।

*या लकुटी अरु कामरि या पर*

भगण भगण भगण गग

s।। s।। s।। ss

*राज तिहूँ पुर को तजि डारौं* : - कुल 7 भगण +2 गुरु=23 वर्ण

'द्रुतविलम्बित' और 'मालिनी' आदि गणबद्ध छन्द 'वार्णिक वृत्त' है।

(3) मात्रिक छन्द - मात्रा की गणना पर आधृत छन्द 'मात्रिक छन्द' कहलाता है।

मात्रिक छंद के सभी चरणों में मात्राओं की संख्या तो समान रहती है लेकिन लघु-गुरु के क्रम पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

इसमें वार्णिक छन्द के विपरीत, वर्णों की संख्या भिन्न हो सकती है और वार्णिक वृत्त के अनुसार यह गणबद्ध भी नहीं है, बल्कि यह गणपद्धति या वर्णसंख्या को छोड़कर केवल चरण की कुल मात्रासंख्या के आधार ही पर नियमित है। 'दोहा' और 'चौपाई' आदि छन्द 'मात्रिक छन्द' में गिने जाते है।

'दोहा' के प्रथम-तृतीय चरण में 13 मात्राएँ और द्वितीय-चतुर्थ में 11 मात्राएँ होती है। जैसे-

प्रथम चरण- *श्री गुरु चरण सरोज रज* - 13 मात्राएँ

द्वितीय चरण- *निज मन मुकुर सुधार* - 11 मात्राएँ

तृतीय चरण- *बरनौं रघुबर विमल जस* - 13 मात्राएँ

AJAY KUMAR

चतुर्थ चरण- ***जो दायक फल चार*** - 11 मात्राएँ

उपयुक्त दोहे के प्रथम चरण में 11 वर्ण और तृतीय चरण में 13 वर्ण है जबकि कुल मात्राएँ गिनने पर 13-13 मात्राएँ ही दोनों चरणों में होती है। गण देखने पर पहले चरण में भगण, नगन, जगण और दो लघु तथा तीसरे चरण में सगण , नगण, नगण, नगण है। अतः 'मात्रिक छन्द' के चरणों में मात्रा का ही साम्य होता है, न कि वर्णों या गणों का।

**प्रमुख मात्रिक छंद**

**(A) सम मात्रिक छंद** : अहीर (11 मात्रा), तोमर (12 मात्रा), मानव (14 मात्रा); अरिल्ल, पद्धरि/पद्धटिका, चौपाई (सभी 16 मात्रा); पीयूषवर्ष, सुमेरु (दोनों 19 मात्रा), राधिका (22 मात्रा), रोला, दिक्पाल, रूपमाला (सभी 24 मात्रा), गीतिका (26 मात्रा), सरसी (27 मात्रा), सार (28 मात्रा), हरिगीतिका (28 मात्रा), ताटंक (30 मात्रा), वीर या आल्हा (31 मात्रा) ।

(B) अर्द्धसम मात्रिक छंद : बरवै (विषम चरण में- 12 मात्रा, सम चरण में- 7 मात्रा), दोहा (विषम- 13, सम- 11), सोरठा (दोहा का उल्टा), उल्लाला (विषम-15, सम-13)।

(C) विषम मात्रिक छंद : कुण्डलिया (दोहा +रोला), छप्पय (रोला +उल्लाला)।

(4) मुक्तछन्द - जिस समय छंद में वर्णिक या मात्रिक प्रतिबंध न हो, न प्रत्येक चरण में वर्णो की संख्या और क्रम समान हो और मात्राओं की कोई निश्चित व्यवस्था हो तथा जिसमें नाद और ताल के आधार पर पंक्तियों में लय लाकर उन्हें गतिशील करने का आग्रह हो, वह मुक्त छंद है।

उदाहरण- निराला की कविता 'जूही की कली' इत्यादि।

चरणों की अनियमित, असमान, स्वच्छन्द गति और भावानुकूल यतिविधान ही मुक्तछन्द की विशेषता है। इसका कोई नियम नहीं है। यह एक प्रकार का लयात्मक काव्य है, जिसमें पद्य का प्रवाह अपेक्षित है। निराला से लेकर 'नयी कविता' तक हिन्दी कविता में इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ है।

AJAY KUMAR

## प्रमुख छन्दों का परिचय

**(1) चौपाई** - यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती है। चरण के अन्त में जगण (।s।) और तगण (ss।) का आना वर्जित है। तुक पहले चरण की दूसरे से और तीसरे की चौथे से मिलती है। यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

उदाहरणार्थ-

*नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं।।*

*बड़े भोर भूपतिमनि जागे। जाचक गुनगन गावन लागे ।।*

*गुरु पद रज मृदु मंजुल मंजन। नयन अमिय दृग दोष विभंजन।।*

*तेहि करि विमल विवेक विलोचन। बरनउँ रामचरित भवमोचन ।।*

**(2) रोला** - यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 और 13 मात्राओं पर यति ही अधिक प्रचलित है। प्रत्येक चरण के अन्त में दो गुरु या दो लघु वर्ण होते हैं। दो-दो चरणों में तुक आवश्यक है।

उदाहरणार्थ-

*जो जगहित पर प्राण निछावर है कर पाता।*

*जिसका तन है किसी लोकहित में लग जाता ।।*

**(3) हरिगीतिका** - यह मात्रिक सम छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। 16 और 12 मात्राओं पर यति तथा अन्त में लघु-गुरु का प्रयोग ही अधिक प्रचलित है।

उदाहरणार्थ-

*कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।*

*हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए ।।*

AJAY KUMAR

**(4) बरवै** - यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है। इस छन्द के विषम चरणों (प्रथम और तृतीय) में 12 और सम चरणों (दूसरे और चौथे) में 7 मात्राएँ होती है। सम चरणों के अन्त में जगण या तगण आने से इस छन्द में मिठास बढ़ती है। यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

जैसे-

*वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।*

*सरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार ।।*

**(5) दोहा** - यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है। इस छन्द के विषम चरणों (प्रथम और तृतीय) में 13 मात्राएँ और सम चरणों (द्वितीय और चतुर्थ) में 11 मात्राएँ होती है। यति चरण के अन्त में होती है। विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए। सम चरणों के अन्त में लघु होना चाहिए। तुक सम चरणों में होनी चाहिए।

जैसे-

*श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।*

*बरनौं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार ।।*

दोहों के कुल 23 प्रकार होते हैं जो निम्न प्रकार हैं।

जैसे गजल में बहर होती है वैसे ही दोहों में भी होती है। एक दोहे में कितनी गुरु और कितनी लघु मात्राएं हैं उन्हीं की गणना को विभिन्न प्रकारों में बाँटा गया है। जो निम्न प्रकार है –

1. भ्रमर- 22 गुरु, 4 लघु = 48

बाइस गुरु, लघु चार ले, रचिए दोहा मीत.

भ्रमर सद्रश गुनगुन करे, बना प्रीत की रीत.

भूले भी भूलूँ नहीं, अम्मा की वो बात।

दीवाली देती हमें, मस्ती की सौगात।।

22 2 22 12 22 2 2 21

222 22 12 22 2 221

2. सुभ्रामर - 21 गुरु, 6 लघु = 48

इक्किस गुरु छः लघु सहित, दोहा ले मन मोह.

कहें सुभ्रामर कवि इसे, सह ना सकें विछोह..

रम्मा को सुधि आ गयी, अम्मा की वो बात।

दीवाली देती हमें, मस्ती की सौगात।।

22 2 11 2 12 22 2 2 21

222 22 12 22 2 221

### 3. शरभ- 20 गुरु, 8 लघु = 48

रहे बीस गुरु आठ लघु का उत्तम संयोग.

रम्मा को सुधि आ गयी, अम्मा की वो बात।

जी में हो आनन्द तो, दीवाली दिन-रात।।

22 2 11 2 12 22 2 2 21

2 2 2 221 2 222 11 21

### 4. श्येन दोहा 19 गुरु और 10 लघु वर्ण

उन्निस गुरु दस लघु रहें, श्येन मिले शुभ नाम.

कभी भोर का गीत हो, कभी भजन की शाम..

रम्मा को सुधि आ गयी, अम्मा की वो बात।

जी में रहे उमंग तो, दीवाली दिन-रात।।

22 2 11 2 12 22 2 2 21

2 2 12 121 2 222 11 21

### 5. मण्डूक दोहा 18 गुरु और 12 लघु वर्ण

जिन के तलुवों ने कभी, छुई न गीली घास।

वो क्या समझेंगे भला, माटी की सौंधास।।

11 2 112 2 12 12 1 22 21

2 2 1122 12 22 2 221

AJAY KUMAR

### 6. मर्कट दोहा 17 गुरु और 14 लघु वर्ण

बुधिया को सुधि आ गयी, अम्मा की वो बात।

दिल में रहे उमंग तो, दीवाली दिन-रात।।

112 2 11 2 12 22 2 2 21

11 2 12 121 2 222 11 21

### 7. करभ दोहा 16 गुरु और 16 लघु वर्ण

झरनों से जब जा मिला, शीतल मन्द समीर।

कहीं लुटाईं मस्तियाँ, कहीं बढ़ाई पीर।।

112 2 11 2 12 211 21 121

12 122 212 12 122 21

### 8. नर दोहा 15 गुरु और 18 लघु वर्ण

द्वै पस्से भर चून अरु, बस चुल्लू भर आब।

फिर भी आटा गुंथ गया!!!!! पूछे कौन हिसाब?????

2 22 11 21 11 11 22 11 21

11 2 22 11 12 22 21 121

### 9. हंस दोहा 14 गुरु और 20 लघु वर्ण

अपनी मरज़ी से भला, कब होवे बरसात?

नाहक उस से बोल दी, अपने दिल की बात।।

112 112 2 12 11 22 1121

211 11 2 21 2 112 11 2 21

### 10. गयंद दोहा 13 गुरु और 22 लघु वर्ण

चायनीज़ बनते नहीं, चायनीज़ जब खाएँ।

फिर इंगलिश के मोह में, क्यूँ फ़िरंग बन जाएँ।।

2121 112 12 2121 11 21

AJAY KUMAR

11 1111 2 21 2 2 121 11 21

### 11. पयोधर दोहा 12 गुरु और 24 लघु वर्ण

हर दम ही चिपके रहो, लेपटोप के संग।

फिर ना कहना जब सजन, दिल पे चलें भुजंग।।

11 11 2 112 12 2121 2 21

11 2 112 11 111 11 2 12 121

### 12. बल दोहा 11 गुरु और 26 लघु वर्ण

सजल दृगों से कह रहा, विकल हृदय का ताप।

मैं जल-जल कर त्रस्त हूँ, बरस रहे हैं आप।।

111 12 2 11 12 111 111 2 21

2 11 11 11 21 2 111 12 2 21

### 13. पान दोहा 10 गुरु और 28 लघु वर्ण

अति उत्तम अनुपम अमित अविचल अपरम्पार

शुचिकर सरस सुहावना दीपों का त्यौहार

11 211 1111 111 1111 11221

1111 111 1212 22 2 221

### 14. त्रिकल दोहा 9 गुरु और 30 लघु वर्ण

अति उत्तम अनुपम अमित अविचल अपरम्पार

शुचिकर सरस सुहावना दीपावलि त्यौहार

11 211 1111 111 1111 11221

1111 111 1212 2211 221

### 15. कच्छप कोहा 8 गुरु और 32 लघु वर्ण

अति उत्तम अनुपम अमित अविचल अपरम्पार

शुचिकर सरस सुहावना दीप अवलि त्यौहार

AJAY KUMAR

11 211 1111 111 1111 11221

1111 111 1212 21 111 221

16. मच्छ दोहा 7 गुरु और 34 लघु वर्ण

अति उत्तम अनुपम अमित अविचल अपरम्पार

शुचिकर सुख वर्धक सरस, दीप अवलि त्यौहार

11 211 1111 111 1111 11221

1111 11211 111 21 111 221

17. शार्दूल दोहा 6 गुरु र 36 लघु वर्ण

अति उत्तम अनुपम अमित अविचल अपरम्पार

शुचिकर सुखद सुफल सरस दीप अवलि त्यौहार

11 211 1111 111 1111 11221

1111 111 111 111 21 111 221

18. अहिवर दोहा 5 गुरु और 38 लघु वर्ण

अति उत्तम अनुपम अमित अविचल अगम अपार

शुचिकर सुखद सुफल सरस दीप अवलि त्यौहार

11 211 1111 111 1111 111 121

1111 111 111 111 21 111 221

19. व्याल दोहा 4 गुरु और 40 लघु वर्ण

अचल, अटल, अनुपम, अमित, अजगुत, अगम, अपार

शुचिकर सुखद सुफल सरस दीप अवलि त्यौहार

111 111 1111 111 1111 111 121

1111 111 111 111 21 111 221

20. विडाल दोहा 3 गुरु और 42 लघु वर्ण

अचल, अटल, अनुपम, अमित, अजगुत, अगम, अपार

AJAY KUMAR

शुचिकर सुखद सुफल सरस दियनि-अवलि त्यौहार

111 111 1111 111 1111 111 121

1111 111 111 111 111 111 221

### 21. उदर दोहा 1 गुरु और 46 लघु वर्ण

डग मग महिं डगमग करत, मन बिसरत निज करम

तन तरसत, झुरसत हृदय, यही बिरह कर मरम

11 11 11 1111 111 11 1111 11 111

11 1111 1111 111 12 111 11 111

पहले और तीसरे चरण के अंत में 212 प्रावधान का सम्मान रखा गया है तथा दूसरे और चौथे चरण के अंत में 21 पदभार वाले शब्दों के अपभ्रंश स्वरूप को लिया गया है

### 22. श्वान दोहा 2 गुरु और 44 लघु वर्ण

डग मग महिं डगमग करत, परत चुनर पर दाग

तबहि सुं प्रति पल छिन मनुज, सहत रहत विरहाग

11 11 11 1111 111 111 111 11 21

111 1 11 11 11 111 111 111 1121

### 23. सर्प दोहा सिर्फ़ 48 लघु वर्ण

डग मग महिं डगमग करत, मन बिसरत निज करम

तन तरसत, झुरसत हृदय, इतिक बिरह कर मरम

11 11 11 1111 111 11 1111 11 111

11 1111 1111 111 111 111 11 111

**(6) सोरठा** - यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है। यह दोहे का उल्टा, अर्थात दोहे के द्वितीय चरण को प्रथम और प्रथम को द्वितीय तथा तृतीय को चतुर्थ और चतुर्थ को तृतीय कर देने से बन जाता है। इस छन्द के विषम चरणों में 11 मात्राएँ और सम चरणों में 13 मात्राएँ होती है। तुक प्रथम और तृतीय चरणों में होती है।

उदाहरणार्थ-

*निज मन मुकुर सुधार, श्री गुरु चरण सरोज रज।*

*जो दायक फल चार, बरनौं रघुबर विमल जस ।।*

**(7) द्रुतविलम्बित** - इस वार्णिक समवृत्त छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण, रगण के क्रम में कुल 12 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

*न जिसमें कुछ पौरुष हो यहाँ,*

*सफलता वह पा सकता कहाँ?*

**(8) मालिनी** - इस वार्णिक समवृत्त छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, भगण, यगण, यगण के क्रम से कुल 15 वर्ण होते है तथा 7-8 वर्णों पर यति होती है

उदाहरणार्थ-

*पल-पल जिसके मैं पन्थ को देखती थी,*

*निशिदिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती।*

**(9) मन्दाक्रान्ता** - इस वार्णिक समवृत्त छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु के क्रम से 17 वर्ण होते है तथा 10-7 वर्णों पर यति होती है।

जैसे-

*फूली डालें सुकुसुममयी तीय की देख आँखें।*

*आ जाती है मुरलिधर की मोहिनी मूर्ति आगे।*

.....

AJAY KUMAR

# रस(Sentiments)

रस का शाब्दिक अर्थ है 'आनंद' । काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहा जाता है।

काव्यप्रकाश के रचयिता मम्मटभट्ट ने कहा है कि आलम्बनविभाव से उदबुद्ध, उद्दीप्त, व्यभिचारी भावों से परिपुष्ट तथा अनुभाव द्वारा व्यक्त हृदय का 'स्थायी भाव' ही रस-दशा को प्राप्त होता है।

पाठक या श्रोता के हृदय में स्थित स्थायी भाव ही विभावादि से संयुक्त होकर रस रूप में परिणित हो जाता है।

रस को 'काव्य की आत्मा/ प्राण तत्व' माना जाता है।

उदाहरण- राम पुष्पवाटिका में घूम रहे हैं। एक ओर से जानकीजी आती हैं। एकान्त है और प्रातःकालीन वायु। पुष्पों की छटा मन में मोह पैदा करती हैं। राम इस दशा में जानकीजी पर मुग्ध होकर उनकी ओर आकृष्ट होते है। राम को जानकीजी की ओर देखने की इच्छा और फिर लज्जा से हर्ष और रोमांच आदि होते हैं। इस सारे वर्णन को सुन-पढ़कर पाठक या श्रोता के मन में 'रति' जागरित होती है। यहाँ जानकीजी 'आलम्बनविभाव', एकान्त तथा प्रातःकालीन वाटिका का दृश्य 'उद्दीपनविभाव', सीता और राम में कटाक्ष-हर्ष-लज्जा-रोमांच आदि 'व्यभिचारी भाव' हैं, जो सब मिलकर 'स्थायी भाव' 'रति' को उत्पत्र कर 'शृंगार रस' का संचार करते हैं। भरत मुनि ने 'रसनिष्पत्ति' के लिए नाना भावों का 'उपगत' होना कहा है, जिसका अर्थ है कि विभाव, अनुभाव और संचारी भाव यहाँ स्थायी भाव के समीप आकर अनुकूलता ग्रहण करते हैं।

आचार्यों ने अपने-अपने ढंग के 'रस' को परिभाषा की परिधि में रखने का प्रयत्न किया है। सबसे प्रचलित परिभाषा भरत मुनि की है, जिन्होंने सर्वप्रथम 'रस' का उल्लेख अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में ईसा की पहली शताब्दी के आसपास किया था। उनके अनुसार 'रस' की परिभाषा इस प्रकार है-

'विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'- नाट्यशास्त्र,

अर्थात, विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

## रस के अंग

रस के चार अंग है-

(1) विभाव

(2) अनुभाव

(3) व्यभिचारी भाव

(4) स्थायी भाव।

(1) विभाव :- जो व्यक्ति, पदार्थ अथवा ब्राह्य विकार अन्य व्यक्ति के हृदय में भावोद्रेक करता है, उन कारणों को 'विभाव' कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में- स्थायी भावों के उदबोधक कारण को 'विभाव' कहते हैं।

विभाव के भेद

विभाव के दो भेद हैं- (क) आलंबन विभाव (ख) उद्दीपन विभाव।

**(क)आलंबन विभाव-** जिसका आलंबन या सहारा पाकर स्थायी भाव जगते है, आलंबन विभाव कहलाता है।

जैसे नायक-नायिका।

आलंबन विभाव के दो पक्ष होते है- आश्रयालंबन व विषयालंबन।

जिसके मन में भाव जगे वह आश्रयालंबन कहलाता है। जिसके प्रति या जिसके कारण मन में भाव जगे वह विषयालंबन कहलाता है।

उदाहरण- यदि राम के मन में सीता के प्रति रति का भाव जगता है तो राम आश्रय होंगे और सीता विषय।

(ख) उद्दीपन विभाव - जिन वस्तुओं या परिस्थितियों को देखकर स्थायी भाव उद्दीप्त होने लगता है, उद्दीपन विभाव कहलाता है।

जैसे- चाँदनी, कोकिल, कूजन, एकांत स्थल, रमणीक उद्यान, नायक या नायिका की शारीरिक चेष्टाएँ आदि।

**(2) अनुभाव :-** आलम्बन और उद्दीपन विभावों के कारण उत्पत्र भावों को बाहर प्रकाशित करनेवाले कार्य 'अनुभाव' कहलाते है।

दूसरे शब्दों में- मनोगत भाव को व्यक्त करनेवाले शरीर-विकार अनुभाव कहलाते है।

AJAY KUMAR

अनुभावों की संख्या 8 मानी गई है-

(1) स्तंभ (2) स्वेद (3) रोमांच (4) स्वर-भंग (5 )कम्प (6) विवर्णता (रंगहीनता) (7) अश्रु (8) प्रलय (संज्ञाहीनता/निश्चेष्टता) ।

अनुभाव के भेद

अतः अनुभाव के चार भेद है-

(क) कायिक (ख) मानसिक, (ग़) वाचिक और (घ) आहार्य।

यों इसके अन्य भेद भी है।

**(3) व्यभिचारी या संचारी भाव :-** मन में संचरण करनेवाले (आने-जाने वाले) भावों को 'संचारी' या 'व्यभिचारी' भाव कहते है।

व्यभिचारी या संचारी भाव 'स्थायी भावों' के सहायक है, जो अनुकुल परिस्थितियों में घटते-बढ़ते हैं।

आचार्य भरत ने इन भावों के वर्गीकरण के चार सिद्धान्त माने हैं- (i) देश, काल और अवस्था (ii) उत्तम, मध्यम और अधम प्रकृति के लोग, (iii) आश्रय की अपनी प्रकृति या अन्य व्यक्तियों की उत्तेजना के कारण अथवा वातावरण के प्रभाव (iv) स्त्री और पुरुष के अपने स्वभाव के भेद।

जैसे- निर्वेद, शंका और आलस्य आदि स्त्रियों या नीच पुरुषों के संचारी भाव है; गर्व आत्मगत संचारी है; अमर्ष परगत संचारी; आवेग या त्रास कालानुसार संचारी हैं। भरत के अनुसार और अन्य आचार्यों के भी मत से पानी में उठनेवाले और आप-ही-आप विलीन होनेवाले बुदबुदों- जैसे ये संचारी या व्यभिचारी भाव स्थायी भावों के भेदों के अन्दर अलग-अलग भी हो सकते हैं और एक स्थायी भाव के संचारी दूसरे में भी आ सकते हैं। जैसे- गर्व 'शृंगार' (स्थायी भाव 'रति' का रस') में भी हो सकता है और 'वीर' में भी।

संचारी भावों की संख्या

संचारी भावों की कुल संख्या 33 मानी गई है-

(1) हर्ष (2) विषाद (3) त्रास (भय/व्यग्रता) (4) लज्जा (ब्रीड़ा) (5) ग्लानि (6) चिंता (7) शंका (8) असूया (दूसरे के उत्कर्ष के प्रति असहिष्णुता) (9) अमर्ष (विरोधी का अपकार करने की अक्षमता से उत्पत्र दुःख) (10) मोह (11) गर्व (12) उत्सुकता (13) उग्रता (14)

चपलता (15) दीनता (16) जड़ता (17) आवेग (18) निर्वेद (अपने को कोसना या धिक्कारना) (19) घृति (इच्छाओं की पूर्ति, चित्त की चंचलता का अभाव) (20) मति (21) बिबोध (चैतन्य लाभ) (22) वितर्क (23) श्रम (24) आलस्य (25) निद्रा (26) स्वप्न (27) स्मृति (28) मद (29) उन्माद (30) अवहित्था (हर्ष आदि भावों को छिपाना) (31) अपस्मार (मूर्च्छा) (32) व्याधि (रोग) (33) मरण

**(4) स्थायी भाव :-** मन का विकार 'भाव' है। भरत मुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में भावों की संख्या उनचास कही है, जिनमें तैतीस संचारी या व्यभिचारी, आठ सात्विक और शेष आठ 'स्थायी भाव' है। भरत के अनुसार 'स्थायी भाव' ये है- (i) रति, (ii) ह्रास (iii) शोक (iv) क्रोध (v) उत्साह (vi) भय (vii ) जुगुप्सा/घृणा (viii) विस्मय/आश्चर्य (ix)शम/निर्वेद (वैराग्य/वीतराग) (x)वात्सल्य रति (xi)भगवद विषयक रति/अनुराग

भरत ने बाद में शम या निर्वेद या शान्त को भी नवम 'स्थायी भाव' माना। बाद के आचार्यों ने भक्ति और वात्सल्य को भी 'स्थायी भाव' माना है। भाव का स्थायित्व वहीं होता है, जहाँ (i) आस्वाद्यत्व, अर्थात व्यावहारिक जीवन में स्पष्ट अनुरंजकता (ii) उत्कटत्व, अर्थात इतनी तीव्रता कि अन्य किसी सजातीय या विजातीय भावों में न दब या सिमट पाना (iii) सर्वजनसुलभत्व अर्थात संस्कार-रूप में हर मनुष्य में वर्तमान होना (iv) पुरुषार्थोपयोगिता, अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चारों पुरुषार्थो की सिद्धि की योग्यता और (v) औचित्य, अर्थात भाव के विषय में आलम्बन आदि विषय की अनुकूलता हो। इन पाँच आधारों पर प्रथम नौ भाव ही 'स्थायी भाव' हो सकते है।

अतः मन के विकार को भाव कहते है और जो भाव आस्वाद, उत्कटता, सर्वजन-सुलभता, चार पुरुषार्थो की उपयोगिता और औचित्य के नाते हृदय में बराबर बना रहे, वह 'स्थायी भाव' है। ''वास्तविक 'स्थायी भाव' के उदाहरण तो रस की परिपक्व अवस्था में ही मिल सकते है, अन्यत्र नही। '' ''जो भाव चिरकाल तक चित्त में स्थिर रहता है, जिसे विरुद्ध या अविरुद्ध भाव दबा नहीं सकते और जो विभावादि से सम्बद्ध होने पर रस रूप में व्यक्त होता है, उस आनन्द के मूलभूत भाव को 'स्थायी भाव' कहते है।''

## रस के प्रकार

रस के ग्यारह भेद होते है- (1) शृंगार रस (2) हास्य रस (3) करूण रस (4) रौद्र रस (5) वीर रस (6) भयानक रस (7) बीभत्स रस (8) अदभुत रस (9) शान्त रस (10) वत्सल रस (11) भक्ति रस ।

| रस | स्थायी भाव | उदाहरण |
|---|---|---|
| (1) शृंगार रस | रति/प्रेम | (i) संयोग शृंगार : बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। |

(संभोग श्रृंगार): सौंह करे, भौंहनि हँसै, दैन कहै, नटि जाय। (बिहारी)

(ii) वियोग श्रृंगार : निसिदिन बरसत नयन हमारे

(विप्रलंभ श्रृंगार): सदा रहित पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे।।(सूरदास)

(2)हास्य रस हास तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप,

साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप।

घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,

धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता। (काका हाथरसी)

(3)करुण रस शोक सोक बिकल सब रोवहिं रानी।

रूपु सीलु बलु तेजु बखानी।।

करहिं विलाप अनेक प्रकारा।।

परिहिं भूमि तल बारहिं बारा।। (तुलसीदास)

(4)वीर रस उत्साह वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो।

तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं।। (द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी)

(5)रौद्र रस क्रोध श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।

सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे।

संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।

करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े।। (मैथिली शरण गुप्त)

(6)भयानक रस भय उधर गरजती सिंधु लहरियाँ कुटिल काल के जालों सी।

चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाये व्यालों-सी।। (जयशंकर प्रसाद)

(7)बीभत्स रस जुगुप्सा/घृणा सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत।

खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत।।

गीध जांघि को खोदि-खोदि कै मांस उपारत।

स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत।। (भारतेन्दु)

(8)अदभुत रस विस्मय/आश्चर्य आखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु।

चकित भई गद्गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु।। (सेनापति)

(9)शांत रस शम/निर्वेद (वैराग्य/वीतराग) मन रे तन कागद का पुतला।

लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना।। (कबीर)

(10)वत्सल रस वात्सल्य रति किलकत कान्ह घुटरुवन आवत।

मनिमय कनक नंद के आंगन बिम्ब पकरिवे घावत।। (सूरदास)

(11)भक्ति रस भगवद विषयक रति/अनुराग राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे।

घोर भव नीर-निधि, नाम निज नाव रे।। (तुलसीदास)

नोट:

(1) शृंगार रस को 'रसराज/ रसपति' कहा जाता है।

(2) नाटक में 8 ही रस माने जाते है क्योंकि वहां शांत को रस में नहीं गिना जाता। भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 माना है।

(3) भरत मुनि ने केवल 8 रसों की चर्चा की है, पर आचार्य अभिन्नगुप्त (950-1020 ई०) ने 'नवमोऽपि शान्तो रसः कहकर 9 रसों को काव्य में स्वीकार किया है।

(4) श्रृंगार रस के व्यापक दायरे में वत्सल रस व भक्ति रस आ जाते हैं इसलिए रसों की संख्या 9 ही मानना ज्यादा उपयुक्त है।

## रस संबंधी विविध तथ्य

भरतमुनि (1 वी सदी) को 'काव्यशास्त्र का प्रथम आचार्य' माना जाता है। सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्य शास्त्र' में रस का विवेचन किया। उन्हें रस संप्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।

### भरत मुनि के कुछ प्रमुख सूत्र

(1) **विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद् रस निष्पतिः -** विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी (संचारी) के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

(2) **नाना भावोपगमाद् रस निष्पतिः। नाना भावोपहिता अपि स्थायिनो भावा रसत्वमाप्नुवन्ति।** - नाना (अनेक) भावों के उपागम (निकट आने/ मिलने) से रस की निष्पत्ति होती है। नाना (अनेक) भावों से युक्त स्थायी भाव रसावस्था को प्राप्त होते हैं।

(3) 'विभावानुभाव व्यभिचारि परिवृतः स्थायी भावो रस नाम लभते नरेन्द्रवत्' । - विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी से घिरे रहने वाले स्थायी भाव की स्थिति राजा के समान हैं। दूसरे शब्दों में, विभाव, अनुभाव व व्यभिचारी (संचारी) भाव को परिधीय स्थिति और स्थायी भाव को केन्द्रीय स्थिति प्राप्त है।

(4) रस- संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य, मम्मट (11 वी० सदी) ने काव्यानंद को 'ब्रह्मानंद सहोदर' (ब्रह्मानंद- योगी द्वारा अनुभूत आनंद) कहा है। वस्तुतः रस के संबंध में ब्रह्मानंद की कल्पना का मूल स्रोत तैत्तरीय उपनिषद है जिसमें कहा गया है 'रसो वै सः'- आनंद ही ब्रह्म है।

(5)रस- संप्रदाय के एक अन्य आचार्य, आचार्य विश्वनाथ (14 वी० सदी) ने रस को काव्य की कसौटी माना है। उनका कथन है 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्'- रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

(6) हिन्दी में रसवादी आलोचक हैं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल डॉ० नगेन्द्र आदि। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संस्कृत के रसवादी आचार्यों की तरह रस को अलौकिक न मानकर लौकिक माना है और उसकी लौकिक व्याख्या की है। वे रस की स्थिति को 'हृदय की मुक्तावस्था' के रूप में मानते हैं। उनके शब्द हैं : 'लोक-हृदय में व्यक्ति-हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस-दशा है'।

.....

# शब्दार्थ (शब्दों का अर्थ)

हिंदी के विद्यार्थियों को नये-नये शब्दों का ज्ञान होना चाहिए। शब्दों के अर्थ की बारीकी वाक्यों में उनका प्रयोग कर ही समझी जा सकती है। यहाँ कुछ शब्द और उनके अर्थ वाक्य-वाक्य के साथ दिये जाते है।

| शब्द | अर्थ | वाक्य |
|---|---|---|
| अहित | बुराई | उसका अहित न हो। |
| अश्लील | गंदा | अश्लील बातें मत करो। |
| अंबर | आकाश | अंबर में तारे टिमटिमा रहे हैं। |
| अत्याचार | जुल्म | गरीबों पर अत्याचार मत करो। |
| अहंकार | घमंड | आदमी को अहंकार नहीं करना चाहिए। |
| अनिवार्य | अत्यंत आवश्यक | सरकार ने हिंदी पढ़ना अनिवार्य कर दिया है। |
| अनायास | बिना मेहनत के | व्याकरण जानने पर शुद्ध भाषा लिखना अनायास आ जाता है। |
| अकर्मण्य | आलसी | अकर्मण्य जीवन मृत्यु है। |
| अनवरत | लगातार | अनवरत परिश्रम करते रहो। |
| अतीत | बीता हुआ समय | अतीत की चिंता मत करो। |
| अभियान | उद्देश्यपूर्ण यात्रा | तेनसिंह हिमालय के अभियान पर निकले। |
| अभिराम | सुंदर | अभिराम राम को देख सीता मन-ही-मन मुग्ध हो गयीं। |
| अभिमान | गर्व | अभिमान चूर होकर रहता है। |
| अस्थि | हड्डी | दुर्घटना में उसकी अस्थि चूर हो गयी। |
| अनुचित | बुरा | तुमने अनुचित कार्य किया। |
| अद्वितीय | जिसका जोड़ा न हो | गाँधीजी अद्वितीय पुरुष थे। |
| अभिज्ञ | जाननेवाला | वह साहित्य से अभिज्ञ है। |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| अभिन्न | एकरूप, परम | हरिराम मेरे अभिन्न मित्र हैं। |
| अनिल | हवा | शीतल अनिल बह रहा है। |
| अनल | आग | अनल की ज्वाला फैली है। |
| अथक | निरंतर, बिना थके | अथक परिश्रम करते रहो। |
| अमर | जो कभी न मरे | आत्मा अमर है। |
| अवधि | समय | राम के वनवास की अवधि समाप्त हो गयी। |
| अगणित | जिसकी गिनती न हो | भारत में अगणित महापुरुष हुए हैं। |
| आभा | चमक | उसके मुख पर आभा है। |
| आशंका | भय | मुझे इस बात की आशंका है। |
| आजीवन | जीवनभर | उसे आजीवन कारावास का दंड दिया गया। |
| आश्वासन | दिलासा, भरोसा | मंत्री ने जनता को आश्वासन दिया। |
| आलिंगन | गले लगाना | श्रीराम ने भरतजी का आलिंगन किया। |
| आक्रमण | हमला | पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया। |
| अविष्कार | खोज | विज्ञान नये-नये अविष्कार करता रहा है। |
| आखेट | शिकार | महाराज दिलीप आखेट के लिए जंगल की ओर बढ़े। |
| उद्गम | आरंभ होने की जगह | गंगा का उद्गम हिमालय से हुआ है। |
| उपेक्षा | अनदेखी | कोई भी देश भारत की उपेक्षा नहीं कर सकता। |
| उल्लास | प्रसन्नता | उसके चेहरे पर उल्लास था। |
| उत्तरदायित्व | जवाबदेही | अब तुमपर उत्तरदायित्व आ गया। |
| उत्थान | उन्नति | देश का उत्थान सबका उत्थान है। उभय दोनों हमें उभय पक्षों की बात सुननी पड़ी। |
| उपवन | बगीचा | भरे उपवन में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। |
| क्रांति | चमक | उसके मुख पर क्रांति है। |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| कर | हाथ, टैक्स | हरेक व्यक्ति को कर (टैक्स) देना पड़ता है। |
| कुबेर | धन के देवता | पुराणों में कुबेर की कथा है। |
| क्लेश | कष्ट | उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर क्लेश हुआ। |
| कुलीन | अच्छे कुल का | उसका जन्म कुलीन परिवार में हुआ है। |
| खरा | ठीक, विशुद्ध | यह बात पूरी तरह खरी उतरती है। |
| गगनभेदी | आकाश को भेदने या चीरनेवाला | भीम का गर्जन गगनभेदी था। |
| गति | चाल | उसकी गति धीमी है। |
| गौरव | बड़प्पन | यह हमारे लिए गौरव की बात है। |
| चिर | सदा | राम की कथा चिरकाल तक चलेगी। |
| जलज | कमल | तालाब में जलज खिले हैं। |
| तत्पर | सन्नद्ध | सेना युद्ध में तत्पर थी। |
| तिरस्कार | निरादर | उसने मेरा तिरस्कार किया। |
| दुर्भिक्ष | अकाल | यहाँ कई बार दुर्भिक्ष पड़ा है। |
| निर्भीक | निडर | हर आदमी को निर्भीक होना चाहिए। |
| नास्तिक | ईश्वर या वेद को न माननेवाला | वेद के निंदक नास्तिक हैं। |
| पर्याप्त | काफी | इतना भोजन मेरे लिए पर्याप्त है। |
| परामर्श | राय | मुझे आपका परामर्श चाहिए। |
| परंपरा | पुराने समय से | यह बात परंपरा से चली आ रही है। |
| पुनरावृति | दोहराना | आप बात की पुनरावृत्ति कर रहे है। |
| प्रगति | विकास | भारत प्रगति की ओर है। |
| प्रतिकूल | उल्टा | यह काम मेरी इच्छा के प्रतिकूल है। |
| प्रतिष्ठा | इज्जत | हमें अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखनी है। |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| प्रलोभन | लालच | प्रलोभन से बचो। |
| पुरस्कार | इनाम | तुम्हें पुरस्कार मिलेगा। |
| प्रत्यंचा | धनुष की डोरी | राम ने धनुष की प्रत्यंचा खींची। |
| प्रभाकर | सूर्य | प्रभाकर की किरणें लाल है। |
| मितव्ययी | कम खर्च करनेवाला | मेरा मित्र मितव्ययी है। |
| बहुधा | प्रायः | बहुधा ऐसा हो जाता है। |
| रिक्त | खाली | मेरे दफ्तर में एक पद रिक्त हुआ है। |
| लोल | चंचल | नदी में लोल लहरें उठ रही है। |
| वरुण | जल के देवता | जहाँ-तहाँ वरुण की पूजा होती है। |
| वसन | कपड़ा | उसने दान में वसन दिये। |
| वसुधा | धरती | युद्ध में वसुधा रक्त से लाल हो उठी। |
| विज्ञापन | प्रचारमूलक सुचना | समाचारपत्रों में विज्ञापन छपे है। |
| विहान | सबेरा उठो, | विहान हो गया। |
| विनाश | बरबादी | उसका विनाश हो गया। |
| विमान | हवाई जहाज | इस विमान से जाना होगा। |
| विख्यात | मशहूर | ताजमहल संसार में विख्यात है। |
| व्यथा | दुःख | वह व्यथा से कराह उठा। |
| शिखर | पहाड़ की चोटी | हिमालय के शिखर पर बर्फ जमी है। |
| शिविर | खेमा, पड़ाव | रामगुस शिविर में बंदी है। |
| शुल्क | फीस | आज शुल्क जमा हुआ है। |
| सरोवर | तालाब | सरोवर में कमल खिले हैं। |
| संतान | बाल-बच्चा | उसकी एकमात्र संतान जाती रही। |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| सतर्क | सावधान | देश को सतर्क रहना हैं। |
| सुर | देवता | पहले कहीं सुरलोक भी था। |
| सुमन | फूल | वाटिका में सुमन खिले हैं। |
| सुरभित | सुगंधित | फूल सुरभित है। |
| संशोधन | सुधार | मेरी पुस्तक का संशोधन किया गया। |
| सिद्ध | प्रमाणित | कबीर सिद्धपुरुष थे। |
| फूहड़ | गंवार, बेवकूफ | वह फूहड हैं। |
| क्षति | घाटा, नुकसान | इस धंधे में बड़ी क्षति हुई। |

.....

AJAY KUMAR

# धातु (Stem)

धातु - क्रिया के मूल रूप को धातु कहते है।

दूसरे शब्दों में- 'धातु' क्रियापद के उस अंश को कहते है, जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है।

तात्पर्य यह कि जिन मूल अक्षरों से क्रियाएँ बनती है, उन्हें 'धातु' कहते है।

पढ़, जा, खा, लिख आदि।

उदाहरण -'पढ़ना' क्रिया को ले। इसमें 'ना' प्रत्यय है, जो मूल धातु 'पढ़' में लगा है।

इस प्रकार 'पढ़ना' क्रिया की धातु 'पढ़' है।

इसी प्रकार 'खाना' क्रिया 'खा' धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से बनी है।

सामान्य क्रिया- क्रिया के मूल रूप अर्थात धातु के साथ 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

जैसे- पढ़ + ना =पढ़ना

लिख + ना =लिखना

जा + ना =जाना

खा + ना =खाना।

## धातु के भेद

व्युत्पत्ति अथवा शब्द-निर्माण की दृष्टि से धातु पाँच प्रकार की होती है-

(1) मूल धातु (2) यौगिक धातु (3)नामधातु (Nominal Verb) (4)मिश्र धातु (5)अनुकरणात्मक धातु

(1) मूल धातु - मूल धातु स्वतन्त्र होती है। यह किसी दूसरे शब्द पर आश्रित नहीं होती। जैसे- खा, देख, पी इत्यादि।

AJAY KUMAR

(2) यौगिक धातु - यौगिक धातु किसी प्रत्यय के योग से बनती है। जैसे- 'खाना' से खिला, 'पढ़ना' से पढ़ा। इस प्रकार धातुएँ अनन्त है- कुछ एकाक्षरी, दो अक्षरी, तीन अक्षरी, तीन अक्षरी और चार अक्षरी धातुएँ होती हैं।

यौगिक धातु की रचना

यौगिक धातु तीन प्रकार से बनती है-

(i) धातु में प्रत्यय लगाने से अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक धातुएँ बनती है;

(ii) कई धातुओं को संयुक्त करने से संयुक्त धातु बनती है;

(iii) संज्ञा या विशेषण से नामधातु बनती है।

(3) नामधातु (Nominal Verb) - जो धातु संज्ञा या विशेषण से बनती है, उसे 'नामधातु' कहते है। जैसे-

संज्ञा से- हाथ - हथियाना।

संज्ञा से- बात - बतियाना।

विशेषण से- चिकना - चिकनाना।

विशेषण से- गरम - गरमाना।

(4) मिश्र धातु - जिन संज्ञा, विशेषण, और क्रिया विशेषण शब्दों के बाद 'करना' या 'होना' जैसे क्रिया पदों के प्रयोग से जो नई क्रिया धातुएँ बनती है उसे मिश्र धातु कहते है।

होना या करना- काम करना, काम होना।

देना- पैसा देना, उधार देना।

मारना- गोता मारना, डींग मारना।

लेना- काम लेना, खा लेना।

जाना- चले जाना, सो जाना।

आना- किसी का याद आना, नजर आना।

AJAY KUMAR

(5) अनुकरणात्मक धातु - जो धातुएँ किसी ध्वनि के अनुकरण पर बनाई जाती है, उसे अनुकरणात्मक धातु कहते है।

जैसे-पटकना, टनटनाना, खटकना धातुएँ अनुकरणात्मक धातु के अंतर्गत आती है।

.....

AJAY KUMAR

# पदबंध (Phrase)

**पद** - वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में- शब्द विभक्तिरहित और पद विभक्तिसहित होते हैं।

पदबंध - जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें पदबंध कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- कई पदों के योग से बने वाक्यांशो को, जो एक ही पद का काम करता है, 'पदबंध' कहते है।

डॉ० हरदेव बाहरी ने 'पदबन्ध' की परिभाषा इस प्रकार दी है- वाक्य के उस भाग को, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर सम्बद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते- पदबन्ध या वाक्यांश कहते हैं।

जैसे-

(1) सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र जीत गया।

(2) यह लड़की अत्यंत सुशील और परिश्रमी है।

(3) नदी बहती चली जा रही है।

(4) नदी कल-कल करती हुई बह रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द पदबंध है। पहले वाक्य के 'सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र' में पाँच पद है, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात संज्ञा का कार्य कर रहे हैं। दूसरे वाक्य के 'अत्यंत सुशील और परिश्रमी' में भी चार पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात विशेषण का कार्य कर रहे हैं। तीसरे वाक्य के 'बहती चली जा रही है' में पाँच पद हैं किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात क्रिया का काम कर रहे हैं। चौथे वाक्य के 'कल-कल करती हुई' में तीन पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात क्रिया विशेषण का काम कर रहे हैं।

इस प्रकार रचना की दृष्टि से पदबन्ध में तीन बातें आवश्यक हैं- एक तो यह कि इसमें एक से अधिक पद होते हैं। दूसरे ये पद इस तरह से सम्बद्ध होते हैं कि उनसे एक इकाई बन जाती है। तीसरे, पदबन्ध किसी वाक्य का अंश होता है।

AJAY KUMAR

अँगरेजी में इसे phrase कहते हैं। इसका मुख्य कार्य वाक्य को स्पष्ट, सार्थक और प्रभावकारी बनाना है। शब्द-लाघव के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है- खास तौर से समास, मुहावरों और कहावतों में। ये पदबंध पूरे वाक्य नहीं होते, बल्कि वाक्य के टुकड़े हैं, किन्तु निश्चित अर्थ और क्रम के परिचायक हैं। हिंदी व्याकरण में इनपर अभी स्वतन्त्र अध्ययन नहीं हुआ है।

## पदबंध के भेद

पदबंध के तीन भेद किये गये हैं-

(1) संज्ञा-पदबंध

(2) विशेषण-पदबंध

(3) क्रिया पदबंध

(4) क्रिया विशेषण पदबंध

***(1) संज्ञा-पदबंध*** - जब किसी वाक्य में पदसमूह या पदबंध संज्ञा का भाव नियत क्रम और निश्चित अर्थ में प्रकट करें तब वे संज्ञा-पदबंध कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में - पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'संज्ञा पदबंध' कहलाता है।

जैसे-

(a) चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।

(b) राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।

(c) अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।

(d) आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

***(2) विशेषण-पदबंध*** - जब किसी वाक्य में पदबंध किसी संज्ञा की विशेषता नियत क्रम और निश्चित अर्थ में बतायें तब वे विशेषण-पदबंध कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में - पदबंध का शीर्ष अथवा अंतिम शब्द यदि विशेषण हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हों तो वह 'विशेषण पदबंध' कहलाता है।

AJAY KUMAR

जैसे-

(a) तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

(b) उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।

(c) उसका घोड़ा अत्यंत सुंदर, फुरतीला और आज्ञाकारी है।

(d) बरगद और पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।

***(3) क्रिया पदबंध*** - क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती है। यही 'क्रिया पदबंध' है।

जैसे-

(a) वह बाजार की ओर आया होगा।

(b) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।

(c) सुरेश नदी में डूब गया।

(d) अब दरवाजा खोला जा सकता है।

***(4) क्रिया विशेषण पदबंध*** - यह पदबंध मूलतः क्रिया का विशेषण रूप होने के कारण प्रायः क्रिया से पहले आता है। इसमें क्रियाविशेषण प्रायः शीर्ष स्थान पर होता है, अन्य पद उस पर आश्रित होते है।

जैसे-

(a) मैंने रमा की आधी रात तक प्रतीक्षा की।

(b) उसने साँप को पीट-पीटकर मारा।

(c) छात्र मोहन की शिकायत दबी जबान से कर रहे थे।

(d) कुछ लोग सोते-सोते चलते है।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'क्रिया विशेषण पदबंध' है।

## पदबन्ध और उपवाक्य में अन्तर

AJAY KUMAR

पदबन्ध और उपवाक्य में अन्तर है-

उपवाक्य (Clause) भी पदबन्ध (Phrase) की तरह पदों का समूह है, लेकिन इससे केवल आंशिक भाव प्रकट होता है, पूरा नहीं। पदबन्ध में क्रिया नहीं होती, उपवाक्य में क्रिया रहती है; जैसे-'ज्योंही वह आया, त्योंही मैं चला गया।' यहाँ 'ज्योंही वह आया' एक उपवाक्य है, जिससे पूर्ण अर्थ की प्रतीति नहीं होती।

AJAY KUMAR

# उपवाक्य (Clause)

ऐसा पदसमूह, जिसका अपना अर्थ हो, जो एक वाक्य का भाग हो और जिसमें उदेश्य और विधेय हों, उपवाक्य कहलाता हैं।

उपवाक्यों के आरम्भ में अधिकतर कि, जिससे ताकि, जो, जितना, ज्यों-त्यों, चूँकि, क्योंकि, यदि, यद्यपि, जब, जहाँ इत्यादि होते हैं।

## उपवाक्य के प्रकार

उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(1) संज्ञा-उपवाक्य (Noun Clause) (2) विशेषण-उपवाक्य (Adjective Clause) (3) क्रियाविशेषण-उपवाक्य

***(1) संज्ञा-उपवाक्य (Noun Clause)*** - जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह व्यवहृत हों, उसे 'संज्ञा-उपवाक्य' कहते हैं।

यह कर्म (सकर्मक क्रिया) या पूरक (अकर्मक क्रिया) का काम करता है, जैसा संज्ञा करती है। 'संज्ञा-उपवाक्य' की पहचान यह है कि इस उपवाक्य के पूर्व 'कि' होता है। जैसे- 'राम ने कहा कि मैं पढ़ूँगा' यहाँ 'मैं पढ़ूँगा' संज्ञा-उपवाक्य है। 'मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है'- इस वाक्य में 'वह कहाँ है' संज्ञा-उपवाक्य है।

***(2) विशेषण-उपवाक्य (Adjective Clause)*** - जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे विशेषण-उपवाक्य कहते हैं।

जैसे- वह आदमी, जो कल आया था, आज भी आया है। यहाँ 'जो कल आया था' विशेषण-उपवाक्य है।

इसमें 'जो', 'जैसा', 'जितना' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता हैं।

***(3) क्रियाविशेषण-उपवाक्य (Adverb Clause)*** - जो उपवाक्य क्रियाविशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे क्रियाविशेषण-उपवाक्य कहते हैं।

जैसे- जब पानी बरसता है, तब मेढक बोलते हैं यहाँ 'जब पानी बरसता है' क्रियाविशेषण-उपवाक्य हैं। इसमें प्रायः 'जब', 'जहाँ', 'जिधर', 'ज्यों', 'यद्यपि' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता हैं। इसके द्वारा समय, स्थान, कारण, उद्देश्य, फल, अवस्था, समानता, मात्रा इत्यादि का बोध होता हैं।

.....

AJAY KUMAR

# शब्दों की अशुद्धियाँ

व्याकरण के सामान्य नियमों की ठीक -ठीक जानकारी न होने के कारण विद्यार्थी से बोलने और लिखने में प्रायः भद्दी भूलें हो जाया करती हैं। शुद्ध भाषा के प्रयोग के लिए वर्णों के शुद्ध उच्चारण, शब्दों के शुद्ध रूप और वाक्यों के शुद्ध रूप जानना आवश्यक हैं।

विद्यार्थी से प्रायः दो तरह की भूलें होती हैं- एक शब्द-संबंधी, दूसरी वाक्य-संबंधी।

शब्द-संबंधी अशुद्धियाँ दूर करने के लिए छात्रों को श्रुतिलिपि का अभ्यास करना चाहिए।

कुछ अशुद्धियों की सूची उनके शुद्ध रूपों के साथ यहाँ दी जा रही है-

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| अनुकुल | अनुकूल | अध्यन | अध्ययन |
| अस्थान | स्थान | अद्वितिय | अद्वितीय |
| अरमूद | अमरूद | ईर्षा | ईर्ष्या |
| उँचाई | ऊँचाई | उन्नती | उन्नति |
| नमष्कार | नमस्कार | नबाव | नवाब |
| नछत्र | नक्षत्र | नारि | नारी |
| राज्यमहल | राजमहल | निरोग | नीरोग |
| पुष्टी | पुष्टि | प्रंतु | परंतु |
| पूण्य | पुण्य | पुस्प | पुष्प |
| छि: छि: | छी छी | उपर | ऊपर |
| उज्वल | उज्ज्वल | उत्कृष्ठ | उत्कृष्ट |
| कलस | कलश | कल्यान | कल्याण |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| गनित | गणित | गृहस्थ्य | गृहस्थ |
| चिन्ह | चिह्न | चांद | चाँद |
| छमा | क्षमा | ज्येष्ट | ज्येष्ठ |
| यथेष्ठ | यथेष्ट | शत्रुह्न | शत्रुघ्न |
| रसायण | रसायन | रामायन | रामायण |
| लछिमन | लक्ष्मण | लिक्खा | लिखा |
| लच्छन | लक्षण | बनावास | वनवास |
| छः | छह | अनाधिकार | अनाधिकार |
| पृष्ट | पृष्ठ | प्राप्ती | प्राप्ति |
| पत्रि | पत्री | प्रसंशा | प्रशंसा |
| प्रनाम | प्रणाम | पमेश्वर | परमेश्वर |
| परिक्षा | परीक्षा | पुज्य | पूज्य |
| पुरष्कार | पुरस्कार | प्रशाद | प्रसाद |
| प्रतिकुल | प्रतिकूल | प्रान | प्राण |
| परस्थिति | परिस्थिति | पिचास | पिशाच |
| ब्रम्ह | ब्रह्म | बुढा | बूढा |
| ब्राम्हन | ब्राह्मण | भष्म | भस्म |
| मट्टी | मिट्टी | मैथलीशरण | मैथिलीशरण |
| दांत | दाँत | हिंदु | हिंदू |
| हंसना | हँसना | हिन्दूस्तान | हिन्दुस्तान |
| मैत्रता | मित्रता, मैत्री | ऐक्यता | एकता, ऐक्य |
| धैर्यता | धैर्य, धीरता | माधुर्यता | माधुर्य, मधुरता |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| पैत्रिक | पैतृक | एकत्रित | एकत्र |
| सकुशलपूर्वक | सकुशल कुशलतापूर्वक | उपरोक्त | उपर्युक्त |
| उपरीलिखित | उपरिलिखित | निरस | नीरस |
| सन्यास | संन्यास | मंत्रीमंडल | मंत्रिमंडल |
| योगीराज | योगिराज | भाग्यमान | भाग्यवान् |
| विद्वान | विद्वान् | व्यावहार | व्यवहार |
| धनमान | धनवान् | बिठाया | बैठाया |
| पहिले | पहले | वीना | वीणा |
| वानी | वाणी | वास्प | वाष्प |
| सप्ताहिक | साप्ताहिक | सन्मान | सम्मान |
| सिंदुर | सिंदूर | सुर्य | सूर्य |
| समुद्रिक | सामुद्रिक | सुर्पनखाँ | शूर्पणखा |
| साशन | शासन | सृष्टी | सृष्टि |
| स्मसान | श्मशान | सम्राज्य | साम्राज्य |
| संसारिक | सांसारिक | समीति | समिति |
| सूचिपत्र | सूचीपत्र | स्वास्थ | स्वास्थ्य |
| स्मर्ण | स्मरण | सृंगार | श्रृंगार |
| शक्ती | शक्ति | षष्ट | षष्ठ |
| बुद्धिवान | बुद्धिमान् | भगमान | भगवान् |
| घनिष्ट | घनिष्ठ | आंख | आँख |
| बांस | बाँस | अंगना | अँगना |
| कंगना | कँगना | उंचा | ऊँचा |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| जाऊंगा | जाऊँगा | दुंगा | दूँगा |
| छटांक | छटाँक, छटाक | पांचवा | पाँचवाँ |
| शिघ्र | शीघ्र | गुंगा | गूँगा |
| पहुंचा | पहुँचा | गांधीजी | गाँधीजी |
| सूंड | सूँड | बांसुरी | बाँसुरी |
| महंगा | महँगा | मुंह | मुँह |
| उंगली | ऊँगली | जहां | जहाँ |
| डांट | डाँट | कांच | काँच |
| भिजवाया | भेजवाया | पछिताना | पछताना |

.....

AJAY KUMAR

# समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द (Paronyms)

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें स्वर, मात्रा अथवा व्यंजन में थोड़ा-सा अन्तर होता है। वे बोलचाल में लगभग एक जैसे लगते हैं, परन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है। ऐसे शब्द 'समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द' कहलाते हैं।

जैसे- घन और धन दोनों के उच्चारण में कोई खास अन्तर महसूस नहीं होता परन्तु अर्थ में भिन्नता है।

घन= बादल

धन= सम्पत्ति

नीचे कुछ ऐसे ही शब्द और उनके अर्थ दिया जा रहा हैं।

| | शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|---|
| (1) | बहु | अत्यधिक | बहू | पुत्रवधू |
| (2) | गाड़ी | यान | गाढ़ी | गहरी |
| (3) | बहार | शोभा | बाहर | आंगन में |
| (4) | नियत | निश्चित | नीयत | इरादा |
| (5) | खोलना | बन्धनमुक्त करना | खौलना | उबलना |
| (6) | गिरि | पर्वत | गिरी | बीज |
| (7) | कोश | म्यान | कोष | खजाना |
| (8) | वात | हवा | बात | बातचीत |
| (9) | सकल | पूरा | शकल | टुकड़ा |
| (10) | पास | उत्तीर्ण | पाश | बन्धन |
| (11) | आदि | प्रारम्भ | आदी | आदत |
| (12) | तरणि | सूर्य | तरणी | नाव |
| (13) | लक्ष | लाख | लक्ष्य | निशाना |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| (14) प्रसाद | कृपा | प्रासाद | भवन |
| (15) कृति | रचना | कृती | पुण्यात्मा |
| (16) गृह | घर | ग्रह | नौ ग्रह |
| (17) हाल | दशा | हॉल | बड़ा कमरा |
| (18) बुरा | खराब | बूरा | शक्कर |
| (19) चर्म | चमड़ा | चरम | अत्यधिक |
| (20) इति | समाप्त | ईति | भय |
| (21) अचार | खट्टा खाद्य पदार्थ | आचार | व्यवहार |
| (22) अधम | नीच | अधर्म | पाप |
| (23) बली | शक्तिशाली | बलि | बलिदान |
| (24) बार | पुनः | वार | दिन |
| (25) अवधि | समय | अवधी | भाषा |
| (26) पृष्ट | पूछा हुआ | पृष्ठ | पन्ना |
| (27) अन्न | अनाज | अन्य | दूसरा |
| (28) सम | समान | शम | शान्ति |
| (29) सर | तालाब | शर | बाण |
| (30) जवान | युवा | जबान | बोली |
| (31) कुल | वंश | कूल | किनारा |
| (32) छात्र | विद्यार्थी | क्षात्र | क्षत्रिय |
| (33) चिर | देर | चीर | वस्त्र |
| (34) उपकार | भलाई | अपकार | बुराई |
| (35) अंस | कन्धा | अंश | हिस्सा |

AJAY KUMAR

| | | | |
|---|---|---|---|
| (36) भवन | घर | भुवन | संसार |
| (37) अविराम | लगातार | अभिराम | सुन्दर |
| (38) क्रम | सिलसिला | कर्म | कार्य |
| (39) सन | जूट | सन् | साल, वर्ष |
| (40) सीसा | एक धातु | शीशा | दर्पण |
| (41) व्रत | उपवास | वृत्त | घेरा |
| (42) अध्ययन | पढ़ना | अध्यापन | पढ़ाना |

.....

AJAY KUMAR

# वाच्य (Voice)

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।

इनमें किसी के अनुसार क्रिया के पुरुष, वचन आदि आए हैं।

इस परिभाषा के अनुसार वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन चाहे तो कर्ता के अनुसार होंगे अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार।

## वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का अध्ययन 'प्रयोग' कहलाता है।

ऐसा देखा जाता है कि वाक्य की क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कभी कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है, तो कभी कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार, लेकिन कभी-कभी वाक्य की क्रिया कर्ता तथा कर्म के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग तथा अन्यपुरुष होती है; ये ही प्रयोग है।

## प्रयोग के प्रकार

'प्रयोग' तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तरि प्रयोग

(ख) कर्मणि प्रयोग

(ग) भावे प्रयोग

***(क) कर्तरि प्रयोग*** - जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों तब कर्तरि प्रयोग होता है;

जैसे- मोहन अच्छी पुस्तकें पढता है।

***(ख) कर्मणि प्रयोग*** - जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों तब कर्मणि प्रयोग होता है;

AJAY KUMAR

जैसे- सीता ने पत्र लिखा।

***(ग) भावे प्रयोग*** - जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग तथा अन्य पुरुष हों तब भावे प्रयोग होता है;

जैसे- मुझसे चला नहीं जाता। सीता से रोया नहीं जाता।

## ***वाच्य के भेद***

उपर्युक्त प्रयोगों के अनुसार वाच्य के तीन भेद हैं-

(1) कर्तृवाच्य (Active Voice)

(2) कर्मवाच्य(Passive Voice)

(3) भाववाच्य(Impersonal Voice)

***(1) कर्तृवाच्य (Active Voice)*** - क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो।

जैसे- राम पुरतक पढ़ता है, मैंने पुस्तक पढ़ी।

***(2) कर्मवाच्य (Passive Voice)*** - क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो।

जैसे- पुस्तक पढ़ी जाती है; आम खाया जाता है।

यहाँ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार रूपान्तररित न होकर कर्म के अनुसार परिवर्तित हुई हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अँगरेजी की तरह हिन्दी में कर्ता के रहते हुए कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता; जैसे- 'मैं दूध पीता हूँ' के स्थान पर 'मुझसे दूध पीया जाता है' लिखना गलत होगा। हाँ, निषेध के अर्थ में यह लिखा जा सकता है- मुझसे पत्र लिखा नहीं जाता; उससे पढ़ा नहीं जाता।

***(3) भाववाच्य (Impersonal Voice)*** - क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो।

AJAY KUMAR

जैसे- मोहन से टहला भी नहीं जाता। मुझसे उठा नहीं जाता। धूप में चला नहीं जाता।

***टिप्पणी*** - यहाँ यह स्पष्ट है कि कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है, किन्तु कर्मवाच्य में केवल सकर्मक और भाववाच्य में अकर्मक होती हैं।

.....

AJAY KUMAR

# सारांश (Summary)

मूल अवतरण के भावों अथवा विचारों को संक्षेप में लिखने की क्रिया को 'सारांश' कहते हैं।

मूल में जो बात विस्तार से कही गयी है, 'सारांश' में उतनी ही बात संक्षेप में, सार-रूप में कहनी या लिखनी पड़ती है।

विस्तार और विश्लेषण करने की यहाँ आवश्यकता नहीं। भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए। दूसरी बात यह है कि सारांश मूल अवतरण से छोटा होना चाहिए।

***उदाहरण***

उद्योग-धंधों में काम करनेवाला मनुष्य जनसाधारण के जीवन और उसके सभी कार्यो पर प्रभाव डालता है और इस प्रकार सबसे अच्छी व्यावहारिक शिक्षा देता है। स्कूल और कॉलेज तो केवल प्रारंभिक शिक्षा देते है, पर कल-कारखानों में काम करनेवाले लोगों से जो शिक्षा मिलती है, वह स्कूल कॉलेज की शिक्षा से कहीं अधिक प्रभावशाली है।

सारांश- स्कूलों-कॉलेजों में लड़के सैद्धांतिक शिक्षा पाते हैं, पर उद्योगशील मनुष्य अपने कार्यो द्वारा व्यावहारिक शिक्षा देते हैं, व्यावहारिक शिक्षा सैद्धांतिक शिक्षा से अधिक प्रभावशाली होती है।

.....

AJAY KUMAR

# भावार्थ (Substance)

'सारांश' की तरह 'भावार्थ' भी मूल अवतरण का छोटा रूप है, किंतु 'भावार्थ' लिखने की रीति 'सारांश' की रीति से भिन्न है। वास्तव में, 'भावार्थ' की विधि 'गागर में सागर' भरने की एक क्रिया है। यहाँ मूलभाव का कोई भी भाव या विचार छूटना नहीं चाहिए। विषय को या बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने या लिखने की यहाँ भी आवश्यकता नहीं; पर भावार्थ में भावों का पदान्वय भी नहीं होना चाहिए।

यद्यपि भावार्थ की लम्बाई-चौड़ाई की अन्तिम सीमा नहीं बाँधी जा सकती, तथापि आशय या भाव के प्रतिकूल उसे मूल अवतरण का कम-से कम आधा तो होना ही चाहिए। इसमें मूल के सभी प्रधान और गौण भाव आ जाने चाहिए। भाषा सरल और अपनी होनी चाहिए। 'सारांश' में केवल प्रधान भाव ही रहते हैं। किंतु 'भावार्थ' में छोटे-बड़े सभी भावों का समावेश किया जाता है। सच तो यह है कि 'भावार्थ' 'सारांश और 'व्याख्या' के बीच की चीज है।

'भावार्थ' के सम्बन्ध में एक विद्वान का कथन है- "भावार्थ संक्षिप्त और स्पष्ट हो। इसे व्याख्या के रूप में नहीं होना चाहिए। केवल अन्वयार्थ (paraphrase) को भी भावार्थ नहीं समझना चाहिए।"

इस उद्धरण में तीन बातें स्पष्ट हैं- (1) भावार्थ संक्षिप्त होना चाहिए (2) भावार्थ व्याख्या के रूप में नहीं होना चाहिए (3) भावार्थ में अन्वयार्थ भी नहीं होना चाहिए

भावार्थ की प्राथमिक विशेषता उसकी संक्षिप्तता है। हम थोड़े में सब कुछ कह जायें- यही इसकी पहली शर्त है। फिर, 'भावार्थ' संक्षेपण (precis) से बिलकुल भिन्न है।

## भावार्थ के लिए आवश्यक निर्देश

भावार्थ के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

(1) मूल अवतरण दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़िए और विचारों को रेखांकित कीजिए। व्यर्थ बातों या शब्दों को हटा दीजिए।

(2) व्यर्थ बातों या शब्दों को हटा दीजिए।

(3) रेखांकित वाक्यों और शब्दों को मिलाकर सार्थक वाक्य बना लीजिए। रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए कुछ बाहरी शब्द भी लिये जा सकते हैं। इस प्रकार, भावार्थ की रुपरेखा तैयार हो जायेगी।

(4) व्याख्या की तरह विषय की लम्बी-चौड़ी व्याख्या करने या प्रत्येक पंक्ति या वाक्य का विस्तार करने या अपनी ओर से टीका-टिप्पणी करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

AJAY KUMAR

(5) भावार्थ की भाषा स्पष्ट और सरल हो। मूल अवतरण में दिये गये शब्दों का ज्यों-का-त्यों प्रयोग अपेक्षित नहीं है।

(6) आलंकारिक शब्दों या भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

(7) भावार्थ में भावों का पदान्वय नहीं होना चाहिए। समूचे अवतरण को पढ़ लेने के बाद सोचना चाहिए कि मूल के सभी महत्त्वपूर्ण और आवश्यक भाव आ गये या नहीं। यदि कोई विचार छूट गया, हो तो यथास्थान समाविष्ट कर देना चाहिए।

तात्पर्य यह है कि गद्यांश या पद्यांश में आये विचारों को संक्षेप में, सरल भाषा में, लिख देने के प्रयास को 'भावार्थ कहते है। इसमें खण्डन-मण्डन या टीका-टिप्पणी की कोई गुंजाइश नहीं रहती। परीक्षार्थी को अपनी ओर से एक भी बात घटाने या बढ़ाने का अधिकार नहीं है।

यहाँ पर उदाहरण दिया जा रहा है-

मूर्ति तैयार हुई। मूर्तिकार उसे बाजार ले गया। पर दुर्भाग्य! वह न बिकी। अब कौन मुँह लेकर घर लौटे। आखिर घर तो उसे लौटना ही था। उसे देखते ही उसका बच्चा 'बताशा-बताशा' चिल्लाता हुआ दौड़ा और उसके आगे हाथ फैला दिये। मूर्तिकार के मुँह से कोई शब्द न निकला। वह बच्चे को अपनी गोद से चिपकाकर रोने लगा। वह सोचने लगा- जिसने धनवानों को बनाया, जिसने प्रकृति पर अधिकार दिया, जिसने जमीन का बंटवारा किया, क्या उसकी बुद्धि इतनी छोटी हो गयी कि कुछ लोग फूलों की सेज पर आराम से सोयें और कुछ लोग पसीने के रूप में दिन-रात खून बहाने पर भी मुट्ठीभर चने तक न पायें!

***भावार्थ*** - आज पूँजीवाद का भयानक रूप देखने को मिलता है। कुछ लोग बिना हाथ-पैर डुलाये मालपुआ चाभते हैं और सुख का जीवन बिताते है और कुछ लोग मेहनत करके भी भरपेट अन्न नहीं पाते। आज दौलत के बाजार में कलाकार को कोई नहीं पूछता। कलाकार भूखा मरता है और अपने बच्चे को बताशा भी खरीदकर नहीं दे सकता।

.....

AJAY KUMAR

# व्याख्या (Explanation)

'व्याख्या' किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं।

व्याख्या न भावार्थ है, न आशय। यह इन दोनों से भिन्न है। नियम भी भिन्न है। 'व्याख्या' किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं। इसमें परीक्षार्थी को अपने अध्ययन, मनन और चिन्तन के पदर्शन की पूरी स्वतन्त्रा रहती है।

### *व्याख्या के प्रकार*

प्रसंगनिर्देश व्याख्या का अनिवार्य अंग है। इसलिए, व्याख्या लिखने के पूर्व प्रसंग का उल्लेख कर देना चाहिए, पर प्रसंगनिर्देश संक्षिप्त होना चाहिए। परीक्षाभवन में व्याख्या लिखते समय परीक्षार्थी प्रायः दो-दो, तीन-तीन पृष्ठों में प्रसंगनिर्देशकरते है और कभी-कभी मूलभाव से दूर जाकर लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधने लगते हैं। यह ठीक नहीं। उत्तम कोटि की व्याख्या में प्रसंगनिर्देश संक्षिप्त होता है। ऐसी कोई भी बात न लिखी जाय, जो अप्रासंगिक हो। अप्रासंगिक बातों को ठूँस देने से अव्यवस्था उत्पत्र हो जाती है। अतः परीक्षार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि व्याख्या में कोई बात फिजूल और बेकार न हो। प्रसंगनिर्देशविषय के अनुकूल होना चाहिए।

व्याख्या में मूल के भावों और विचारों का समुचित और सन्तुलित विवेचन होना चाहिए। यहाँ परीक्षार्थीको अपनी स्वतन्त्र बुद्धि और विद्या से काम लेने का पूरा अधिकार है। विषय के विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है। इसलिए, विचारो का विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है। इसलिए, विचारों का विवेचन करते समय छात्र को विषय के गुण और दोष, दोनों की समीक्षा करनी चाहिए। यदि वह चाहें, तो उसके एक ही पक्ष का विवेचन कर सकता है। लेकिन, अच्छी व्याख्या में विचारों या भावों का सन्तुलित विवेचन अपेक्षित है। यदि छात्र मूल के भावों से सहमत है, तो उसे उसकी तर्कसंगत पुष्टि करनी चाहिए और यदि असहमत है, तो वह उसका खण्डन भी कर सकता है।

व्याख्या में खण्डन-मण्डन से पहले मूल के भावों का सामान्य अर्थ अथवा भावार्थ लिख देना चाहिए, ताकि परीक्षक यह जान सके कि छात्र ने उसका सामान्य अर्थ भली भाँति समझ लिया है। व्याख्या में भावार्थ अथवा आशय का इतना ही काम है। भावार्थ के बाद विषय का विवेचन होना चाहिए।

व्याख्या लिखने के लिए पहले लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ दी जाती थी। लेकिन अब एक-दो पंक्तियों या वाक्यों का अवतरण दिया जाता है। इन दो तरह के अवतरणों की व्याख्या लिखते समय थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। जब कोई बड़ा-सा अवतरण व्याख्या के लिए दिया जाय,

तब समझना चाहिए कि इसमें अनेक विचारों का समावेश हो सकता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी को अवतरण के मूल और गौण भावों की खोज करनी चाहिए। इसके विपरीत, जब एक-दो पंक्तियों का अवतरण दिया जाय, तब छात्रों को उन्हीं शब्दों का विवेचन करना चाहिए, जिनसे भाव स्पष्ट हो जाय। छोटे अवतरणों में भावों की अधिकता रहती है। व्याख्या में इन्हीं गूढ़ भावों का विस्तार होना चाहिए।

सम्यक विवेचन के बाद अन्त में कठिन शब्दों का अर्थ, टिप्पणी के रूप में दे देना चाहिए। इस तरह व्याख्या समाप्त होती है।

## व्याख्या के लिए आवश्यक निर्देश

मूल अवतरण से व्याख्या बड़ी होती है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई के सम्बन्ध में कोई निश्चित सलाह नहीं दी जा सकती। छात्रों को सिर्फ यह देखना है कि मूल भावों अथवा विचारों का समुचित और सन्तोषजनक विवेचन हुआ या नहीं। इन बातों को ध्यान में रखकर अच्छी और उत्तम व्याख्या लिखी जा सकती है। इसके बजाय इसमें निम्नलिखित बातें होनी चाहिए-

(1) व्याख्या में प्रसंग-निर्देश अत्यावश्यक है।

(2) प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त, आकर्षक और संगत होना चाहिए।

(3) व्याख्या में मूल विचार या भाव का संतोषपूर्ण विस्तार हो

(4) अंत में शब्दार्थ लिखे जायँ

(5) मूल के विचारों का खण्डन या मण्डन किया जा सकता है।

(6) मूल के विचारों के गुण-दोषों पर समानरूप से प्रकाश डालना चाहिए।

(7) यदि कोई महत्त्वपूर्ण बात हो, तो उसपर अन्त में टिप्पणी दे देनी चाहिए।

***उदाहरण -***

तुमने मुझे पहचाना नहीं। तुम्हारी आँखों पर चर्बी छाई हुई है। कंगाल ही कलियुग का कल्कि-अवतार है।

व्याख्या- ये पंक्तियाँ हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानी 'दरिद्रनारायण' से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में लेखक धनवानों को यह बताना चाहता है कि इस युग में कंगाल ही भगवान है। वे भगवान को पाने के लिए तीर्थो में जाकर पंडों को धन का दान करते है, पर वह धन कंगालों या गरीबों को मिलना चाहिए, क्योंकि कंगाल ही धन के सही अधिकारी हैं। धनी लोग

धन के घमंड में चूर है; वे गरीबों की दर्दभरी कहानी नहीं सुनते। उनकी आँखों पर घमंड का चश्मा चढ़ा है या उनपर चर्बी छायी है। जबतक वे इस चश्मे को उतार नहीं फेंकते, तबतक कलियुग के कल्कि-अवतार के दर्शन नहीं कर सकते। इस युग का भगवान कंगाल है, गरीब है। उसकी सेवा ही आज भगवान की सबसे बड़ी पूजा है।

.....

AJAY KUMAR

# टिप्पण (Noting)

किसी भी विचारधीन पत्र या आवेदन पर उसके निष्पादन (Disposal) को सरल बनाने के लिए जो टिप्पणियाँ सरकारी कार्यालयों में लिपकों, सहायकों तथा कार्यालय अधीक्षकों द्वारा लिखी जाती है, उन्हें टिप्पण-लेखन कहते हैं।

इन टिप्पणों में तीन बातें रहती हैं-

(1) उस पत्र से पूर्व के पत्र आदि का सारांश

(2) जिस प्रश्न पर निर्णय किया जाता है, उसका विवरण या विश्लेषण और

(3) उस सम्बन्ध में क्या कार्रवाई की जाय, इस विषय में सुझाव और क्या आदेश दिये जायँ, इस विषय में भी सुझावों का उल्लेख।

अभिप्राय यह है कि टिप्पण-लेखन में विचारधीन पश्र के बारे में वे सब बातें लिखी जाती हैं, जिनसे उस पश्र के सम्बन्ध में निर्णय करने और आदेश देने में सुविधा होती है। उस विचारधीन पश्र का पुराना इतिहास क्या है ? उस सम्बन्ध में नियम क्या है ? सरकारी नीति क्या है ? इत्यादि सारी बातों का उल्लेख कर अन्त में यह सुझाव देना चाहिए कि इस सम्बन्ध में अमुक प्रकार का निर्णय करना उचित होगा। इसके बाद वह पत्र निर्णय करनेवाले उच्च अधिकारी के सामने रखा जायेगा। ऊपर दिये गये निर्देशों के साथ लिखे गये टिप्पण को पढ़कर उस अधिकारी को निर्णय करने में आसानी होगी।

टिप्पण के सम्बन्ध में कुछ विशिष्ठ बातें इस प्रकार हैं-

(1) टिप्पण बहुत लम्बा या विस्तृत नहीं होना चाहिए। उसे यथासम्भव संक्षिप्त और सुस्पष्ट होना चाहिए।

(2) कोई भी टिप्पण मूलपत्र (original letter) पर नहीं लिखा जाना चाहिए। उसके लिए कोई अन्य कागज या बफ-शीट का प्रयोग करना चाहिए।

(3) टिप्पण में यदि किसी पत्र का खण्डन करना हो, तो वह बहुत ही शिष्ट और संयत भाषा में किया जाना चाहिए और किसी भी दशा में किसी प्रकार का व्यक्तिगत आरोप या आक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।

(4) यदि एक ही मामले में कई बातों पर अलग-अलग आदेश लिए जाने की आवश्यकता हो तो उनमें से हर बात पर अलग-अलग टिप्पण लिखना चाहिए।

AJAY KUMAR

(5) टिप्पण लिखने के बाद लिपिक या सहायक को नीचे बाई ओर अपना हस्ताक्षर करना चाहिए। दाई ओर का स्थान उच्च अधिकारियों के हस्ताक्षर के लिए छोड़ देना चाहिए।

(6) कार्यालय की ओर से लिखे जा रहे टिप्पण में उन सभी बातों या तथ्यों का सही-सही उल्लेख होना चाहिए जो उस पत्रावली के निस्तारण के लिए आवश्यक हों।

(7) यथासम्भव एक विषय पर कार्यालय की ओर से एक ही टिप्पण लिखा जाना चाहिए।

(8) जहाँ तक सम्भव हो, टिप्पण इस ढंग से लिखा जाना चाहिए कि पत्रावली में पत्र जिस क्रम से लगे हों, टिप्पण में भी उनका वही क्रम रहे।

(9) टिप्पण सदा स्याही से लिखे या टंकित होने चाहिए।

(10) लिपिक, सहायक और कार्यालय अधीक्षक को कागज की बाई ओर अपने नाम के प्रथमाक्षरों का ही प्रयोग करना चाहिए। उच्च अधिकारी को अपना पूरा नाम लिखना पड़ता है।

(11) टिप्पणों में ऐसे शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए, जिनके अर्थ समझने में कठिनाई हो।

### *टिप्पण लेखन का उदाहरण-*

मैसूर राज्य के एक स्कूल प्रधानाध्यापक ने राज्यसभा सचिवालय के सचिव को पत्र लिखकर दिनांक 20 नवम्बर 9986 को होनेवाले उपवेशन में अध्यापकों के नेतृत्व में 950 छात्रों के साथ उपस्थित होने के लिए प्रवेशपत्रों की व्यवस्था के सन्दर्भ में प्रार्थनापत्र लिखा। उस कार्यालय के लिपिक ने निम्नलिखित टिप्पण लिखा।-

प्राप्त पत्रसंख्या 8, पृष्ठांक 9 ।

टिप्पण- यह पत्र मराठी विद्यालय, गुलवर्गा, मैसूर राज्य के प्रधानाध्यापक ने भेजा है। इसमें प्रार्थना की गयी है कि उक्त विद्यालय के 950 छात्रों था 5 अध्यापकों के लिए राज्यसभा के दिनांक 20 नवम्बर 9986को होनेवाले उपवेशन में उपस्थित होने के लिए आवश्यक प्रवेशपत्रों की व्यवस्था की जाय।

प्रवेशपत्र - वितरण-सम्बन्धी विनियम-संख्या 90 के अधीन हम उक्त प्रार्थना को स्वीकार कर सकते है। किन्तु हमें उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक को यह सूचित करना होगा कि हमारी दर्शक दीर्घा (visitors gallery) में स्थान अत्यन्त सीमित है, अतः एक साथ केवल 25 छात्र ही दीर्घा में उपस्थितरह सकेंगे। इसके लिए इन छात्रों को 25-25 के 6 समूहों में विभक्त होकर ही दीर्घा में जाना होगा। हमें प्रार्थी को यह भी सूचित करना होगा कि जिन छात्रों के लिए प्रवेश-पत्रों की प्रार्थना की गयी है उनमे से प्रत्येक का नाम, पिता का नाम, स्थायी पता तथा दिल्ली में ठहरने का पता इत्यादि की सूचना प्राप्त होने पर ही प्रवेशपत्र जारी किये जा सकते है।

साथ ही, प्रत्येक छात्र के लिए पृथक प्रवेशपत्र जारी करने के स्थान पर यदि हम 25-25 के समूह के नाम एक-एक प्रवेशपत्र बना दें, तो इससे कार्य में अधिक सुविधा होगी।

आदेशार्थ निवेदित

डी० रा०

30-90-9986

अवरसचिव: मैंने आलेख में कुछ परिवर्तन कर दिये है। टंकित आलेख प्रेषित करें।

शिवराम

30-90-9986

.....

AJAY KUMAR

# कार्यालयीय आलेखन(Official Drafting)

आलेखन पत्राचार का एक अंग है। समाज के विकास के साथ आलेखन के भिन्न-भिन्न रूप विकसित होते रहे हैं। विशेषकर सरकारी सेवाओं में और कार्यालयों में काम करनेवालों के लिए आलेखन में निपुण होना आवश्यक है। इसकी कुशलता दो बातों पर निर्भर है-

(1) भाषा का अच्छा ज्ञान और (2) आलेखन के विविध रूपों और उसके विशिष्ट नियमों की जानकारी। आलेखन की सफलता शुद्ध, सुगठित और परिमार्जित भाषा पर निर्भर है। यहाँ आलेखन से हमारा तात्पर्य सरकारी कार्यालय में व्यवहृत आलेखनों से है। इसे 'प्रारूप' भी कहते हैं।

## आलेखन के प्रकार

आलेखन दो प्रकार के होते है-

(1) प्रारम्भिक आलेखन (Elementary Drafting)

(2) उन्नत अथवा उच्चतर आलेखन (Advanced Drafting)

***(1) प्रारम्भिक आलेखन (Elementary Drafting)*** - प्रारम्भिक आलेखन में वैयक्तिक और सामाजिक पत्राचार आते है। इनके अन्तर्गत पारिवारिक पत्र, आवेदनपत्र, पदाधिकारियों से पत्र-व्यवहार, व्यावसायिक पत्र, सम्पादक के नाम पत्र, निमन्त्रण पत्र इत्यादि आते हैं।

***(2) उन्नत अथवा उच्चतर आलेखन (Advanced Drafting)*** - उच्चतर आलेखन में सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होनेवाले भिन्न-भिन्न प्रकार के पत्राचारों का समावेश होता है।

***उच्चतर आलेखन का स्वरूप*** - आलेखन का अभिप्राय ,मोटेतौर पर पत्रों, सूचनाओं, परिपत्रों और समझौतों के आलेख (मसौदे या मसविदे) तैयार करने से है, जिनकी आवश्यकता सरकारी दफ्तरों या कार्यालयों और प्राइवेट फर्मो तथा संस्थाओं में हर दिन पड़ती रहती है। आलेखन की जानकारी न केवल सरकारी कार्यालयों में काम करनेवाले लिपिकों (clerks) और सहायकों (assistants) को होनी चाहिए, बल्कि अन्य व्यवसायों में काम करनेवाले कर्मचारियों के लिए भी जरूरी है। सरकारी कार्यालयों से अनेक प्रकार के पत्र, आदेश, परिपत्र, अधिसूचनाएँ आदि भेजी जाती है। इनका आलेख लिपिकों से उच्चतम अधिकारियों तक किसी को भी तैयार करना पड़ सकता है। अतएव, केन्द्रीय सचिवालय और राज्य सचिवालयों में काम करनेवाले कर्मचारियों के लिए आलेखन-ज्ञान अनिवार्य है।

आलेखन के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक बातों को ध्यान में रखना चाहिए। आलेख तैयार करते समय आलेखक को इन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए-

AJAY KUMAR

***(1) विषय (Subject)*** - आलेख का विषय आसानी से समझ में आ जाय, उसमें किसी बात की अस्पष्टता नहीं रहनी चाहिए। हर शब्द का अर्थ पारदर्शी हो।

***(2) निर्देश (Reference)*** - यदि आलेख में प्रस्तुत विषय के साथ पिछले पत्र-व्यवहार का सम्बन्ध जुड़ा हो, तो आलेख में उसका भी निर्देश होना चाहिए;क्योंकि विषय की पृष्ठभूमि जाने बिना आलेख को समझना कठिन होगा।

***(3) विभाजन*** - प्रत्येक आलेख को तीन भागों में विभाजित करना चाहिए। पहले भाग में विषय का स्पष्ट कथन सप्रसंग होना चाहिए, दूसरे भाग में विषम का युक्तिपूर्ण समर्थन होना चाहिए। तीसरे भाग में प्रस्तुत तर्क अथवा युक्तियों के आधार पर निष्कर्ष देते हुए अपनी सिफारिश अथवा संस्तुति (Recommendation) देनी चाहिए।

***(4) क्रमसंख्या का आलेख*** - यदि आलेख लम्बा हो तो प्रत्येक अनुच्छेद (पैराग्राफ) के स्थान पर क्रमसंख्या (serial no) का उल्लेख करना चाहिए और आवश्यकतानुसार हर अनुच्छेद के विषय के प्रसंगानुसार एक छोटा-सा उपशीर्षक (Subheading) भी दे देना चाहिए। हालाँकि, अनुच्छेद, क्रमसंख्या और उपशीर्षक के सम्बन्ध में कोई निश्चित नियम नहीं है, फिर भी आलेख का विषय हर हालत में सुस्पष्ट होना चाहिए। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि आलेख के पहले अनुच्छेद में क्रमसंख्या नहीं दी जाती; दूसरे अनुच्छेद से संख्या 2 और आगे क्रमशः 3, 4 संख्याएँ उल्लिखित करनी चाहिए।

***(5) भाषा*** - आलेख की भाषा साहित्य की भाषा नहीं होती। इसे अत्यन्त सरल होना चाहिए। तथ्यों का सीधा और स्पष्ट कथन होना चाहिए। भाषा शिष्ट हो। गंवारू शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए। उनसे एक ही अर्थ निकलना चाहिए।

***(6) उद्धरण***- यदि पत्र की प्रतिलिपियाँ एक से अधिक व्यक्तियों को भेजनी हों तो उनका उल्लेख कर देना चाहिए।

***(7) प्रतिलिपियाँ*** - यदि पत्र की प्रतिलिपियाँ एक से अधिक व्यक्तियों को भेजनी हों तो उनका उल्लेख कर देना चाहिए।

***(8) संलग्न पत्र*** - यदि पत्र के साथ कुछ अन्य पत्र संलग्न करने हों तो उनका उल्लेख पत्र के नीचे अन्त में करना चाहिए।

पत्र में निम्नलिखित बातें अवश्य होनी चाहिए-

(1) सबसे ऊपर संख्या दी जाए।

(2) उसके नीचे पत्र-प्रेषक के कार्यालय का उल्लेख हो।

(3) उसके बाद प्रेषक का नाम और पद लिखे होने चाहिए।

(4) उसके बाद प्रेषिती का नाम, पद और पता लिखा जाना चाहिए।

(5) फिर प्रेषक का पता और दिनांक लिखा जाय।

(6) इसके बाद पृष्ठ के बीच में विषय का उल्लेख किया जाय। यहाँ पत्र का सारांश एक वाक्यांश में दिया जाना चाहिए।

(7) इसके बाद पत्र के प्रारम्भ में बाई ओर सम्बोधन लिखा जाय।

(8) सम्बोधन के बाद पत्र प्रारम्भ करते हुए पिछले पत्र-व्यवहार का उल्लेख किया जाना चाहिए।

(9) पत्र के अन्त में स्वनिर्देश तथा उसके नीचे हस्ताक्षर होना चाहिए।

सरकारी आलेख का रूप इस प्रकार प्रस्तुत है-

| | |
|---|---|
| संख्या | पत्रसंख्या 250/5/86 |
| प्रेषक या कार्यालय | भारत सरकार, शिल्प मन्त्रालय। |
| प्रेषक | रणधीर सिंह,<br>अवर सचिव, भारत सरकार,<br>शिक्षा-मन्त्रालय। |
| प्रेषिती का पद और पता | सेवा में<br>मुख्य सचिव,<br>बिहार सरकार, पटना। |
| स्थान और दिनांक | नई दिल्ली 29 सितम्बर, 9986 । |
| विषय | प्राइमरी शिक्षा की व्यवस्था। |
| सम्बोधन | महोदय। |
| निर्देश | आपके पत्र, संख्या 24/93/86<br>दिनांक 4 अगस्त, 9986 के उत्तर में<br>मुझे यह सूचित करने का निर्देश हुआ<br>है कि... |
| स्वनिर्देश | आपका विश्वासी, |

AJAY KUMAR

रणधीर सिंह

हस्ताक्षर (रणधीर सिंह)

संलग्न पत्रसूची संलग्न (Encl)

एक पत्र

पृष्ठांकन प्रतिलिपि निम्नलिखित को प्रेषित

(9)

(2)

***सरकारी आलेख का एक उदाहरण इस प्रकार है-***

संख्या- 9 /28 /99 (गृ०)

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

प्रेषक

मथुरादास, आई० ए० एस०

उपसचिव, गृहमन्त्रालय।

सेवा में, मुख्य सचिव,

बिहार सरकार, पटना

नई दिल्ली, दिनांक 92 जून, 9999

विषय : बिहार में हुए छात्रों के उपद्रव।

AJAY KUMAR

महोदय,

मुझे आपको यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि भारत सरकार अभी कुछ समय पूर्व पटना में हुए छात्रों के उपद्रवों को गहरी चिन्ता की दृष्टि से देख रही है। इन उपद्रवों ने न केवल साम्प्रदायिक रूप धारण कर लिया है, बल्कि किसी सीमा तक वे अन्तरराष्ट्रीय भी हो गये हैं। छात्रों में इस प्रकार की उत्तरदायित्वहीनता उनकी अनुशासनहीनता को सूचित करती है।

भारत सरकार का विचार है कि इस प्रकार की गतिविधियों को कठोरतापूर्वक नियंत्रण में रखा जाना चाहिए; क्योंकि ऐसे उपद्रवों का प्रभाव दूसरे राज्यों पर भी पड़ सकता है और वहाँ भी इसकी अवांछनीय प्रतिक्रिया हो सकती है। भारत सरकार यह भी अनुभव करती है कि इस बात की जाँच की जाय कि इन उपद्रवों के पीछे किसी राजनीतिक दल का हाथ तो नहीं। यदि इस प्रकार के प्रमाण पाए जायँ कि किसी राजनीतिक दल ने छात्रों को गुमराह किया है तो उस दल की गतिविधियों पर सतर्क दृष्टि रखी जाय, ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने पाय।

आपका विश्वासी

(हस्ताक्षर: मथुरादास)

उपसचिव, गृहमन्त्रालय

संख्या- 9/ 28/99 (गृ०) नई दिल्ली, 92 जून 9999

जानकारी के लिए प्रतिलिपि निम्नलिखित को प्रेषित-

(9)....

(2)....

.....

AJAY KUMAR

# पर्यायवाची शब्द (Synonyms Words)

'पर्याय' का अर्थ है- 'समान' तथा 'वाची' का अर्थ है- 'बोले जाने वाले' अर्थात जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है- जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते है।

दूसरे अर्थ में- समान अर्थवाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' या समानार्थक भी कहते है।

जैसे- सूर्य, दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु, दिनेश- इन सभी शब्दों का अर्थ है 'सूरज' ।

इस प्रकार ये सभी शब्द 'सूरज' के पर्यायवाची शब्द कहलायेंगे।

पर्यायवाची शब्द को 'प्रतिशब्द' भी कहते है। अर्थ की दृष्टि से शब्दों के अनेक रूप है; जैसे- पर्यायवाची शब्द, युग्म शब्द, एकार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, समोच्चरितप्राय शब्द इत्यादि।

किसी भी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की अधिकता रहती है। जो भाषा जितनी ही सम्पत्र होगी, उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी ही अधिक होगी। संस्कृत में इनकी अधिकता है। हिन्दी के पर्यायवाची शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द है, जिन्हें हिन्दी भाषा ने ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लिया है।

यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि इन शब्दों में अर्थ की समानता होते हुए भी इनके प्रयोग एक तरह के नहीं हैं। ये शब्द अपने में इतने पूर्ण हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग सभी स्थितियों में और सभी स्थलों पर अच्छा नहीं लगता- कहीं कोई शब्द ठीक बैठता है और कहीं कोई। प्रत्येक शब्द की महत्ता विषय और स्थान के अनुसार होती है।

कुछ विशिष्ठ पर्यायवाची शब्द नीचे दी जा रही है-

## (अ, आ)

अतिथि- मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

अमृत- सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक ।

अग्नि- आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, रोहिताश्व, वायुसखा, विभावसु, हुताशन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, कृशानु, वह्नि, शिखी।

अनुपम- अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अदभुत, अनन्य।

अर्थ- हय, तुरङ, वाजि, घोडा, घोटक।

असुर-यातुधान, निशिचर, रजनीचर, दनुज, दैत्य, तमचर, राक्षस, निशाचर, दानव, रात्रिचर।

अलंकार- आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना, जेवर।

अहंकार- दंभ, गर्व, अभिमान, दर्प, मद, घमंड, मान।

अतिथि- मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

अर्थ- धन्, द्रव्य, मुद्रा, दौलत, वित्त, पैसा।

अश्व- हय, तुरंग, घोड़ा, घोटक, हरि, तुरग, वाजि, सैन्धव।

अंधकार- तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा, तमस, अंधियारा।

आँख- लोचन, अक्षि, नैन, अम्बक, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि, अक्षि।

आकाश- नभ, गगन, द्यौ, तारापथ, पुष्कर, अभ्र, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान, अंतरिक्ष, शून्य, अर्श।

आनंद- हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, आह्लाद, प्रमोद, उल्लास।

आश्रम- कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा ।

आम- रसाल, आम्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल, चूत, सहकार, च्युत (आम का पेड़), सहुकार।

आंसू- नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।

आत्मा- जीव, देव, चैतन्य, चेतनतत्तव, अंतःकरण।

अंग- अंश, अवयव, हिस्सा, भाग।

अभिमान- अस्मिता, अहं, अहंकार, अहंभाव, अहम्मन्यता, आत्मश्लाघा, गर्व, घमंड, दर्प, दंभ, मद, मान, मिथ्याभिमान।

अरण्य- जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।

अनी- कटक, दल, सेना, फौज, चमू, अनीकिनी।

AJAY KUMAR

आँगन- अँगना, अजिरा, प्राङ्गण।

अनादर- अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, अवमानना, परिभव, तिरस्कार।

## (इ,ई)

इन्द्र- सुरेश, अमरपति, वज्रधर, वज्री, शचीश, वासव, वृषा, सुरेन्द्र, देवेन्द्र, सुरपति, शक्र, पुरंदर, देवराज, महेन्द्र, मधवा, शचीपति, मेघवाहन, पुरुहूत, यासव।

इन्द्राणि- इन्द्रवधू, मधवानी, शची, शतावरी, पोलोमी।

ईश्वर- परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।

इच्छा- अभिलाषा, अभिप्राय, चाह, कामना, ईप्सा, स्पृहा, ईहा, वांछा, लिप्सा, लालसा, मनोरथ, आकांक्षा, अभीष्ट।

## (उ,ऊ)

उपवन- बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन।

उक्ति- कथन, वचन, सूक्ति।

उग्र- प्रचण्ड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।

उचित- ठीक, मुनासिब, वाज़िब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।

उच्छृंखल- उद्दंड, अक्खड़, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।

उजड्ड- अशिष्ट, असभ्य, गँवार, जंगली, देहाती, उद्दंड, निरकुंश।

उजला- उज्ज्वल, श्वेत, सफ़ेद, धवल।

उजाड- जंगल, बियावान, वन।

उजाला- प्रकाश, रोशनी, चाँदनी।

उत्कष- समृद्धि, उन्नति, प्रगति, प्रशंसा, बढ़ती, उठान।

उत्कृष्ट- उत्तम, उन्नत, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया, उम्दा।

AJAY KUMAR

उत्कोच- घूस, रिश्वत।

उत्पति- उद्गम, पैदाइश, जन्म, उद्भव, सृष्टि, आविर्भाव, उदय।

उद्धार- मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, रिहाई।

उपाय- युक्ति, साधन, तरकीब, तदबीर, यत्न, प्रयत्न।

ऊधम- उपद्रव, उत्पात, धूम, हुल्लड़, हुड़दंग, धमाचौकड़ी।

## ( ए )

ऐक्य- एकत्व, एका, एकता, मेल।

ऐश्वर्य- समृद्धि, विभूति।

( ओ, औ, ऋ )

ओज- तेज, शक्ति, बल, वीर्य।

ओंठ- ओष्ठ, अधर, होठ।

औचक- अचानक, यकायक, सहसा।

औरत- स्त्री, जोरू, घरनी, घरवाली।

ऋषि- मुनि, साधु, यति, संन्यासी, तत्वज्ञ, तपस्वी।

## ( क )

कमल- नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज, सरसिज, राजीव, पद्म, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, शतदल, पुण्डरीक, इन्दीवर।

किरण- गभस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।

कामदेव- मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति, पुष्पधन्वा, मन्मथ।

कपड़ा- मयुख, वस्त्र, चीर, वसन, पट, अंशु, कर, अम्बर, परिधान।

AJAY KUMAR

कुबेर- कित्ररेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज।

किस्मत- होनी, विधि, नियति, भाग्य।

कच- बाल, केश, कुन्तल, चिकुर, अलक, रोम, शिरोरूह।

कबूतर- कपोत, रक्तलोचन, पारावत, कलरव, हारिल।

कण्ठ- ग्रीवा, गर्दन, गला, शिरोधरा।

कृपा- प्रसाद, करुणा, अनुकम्पा, दया, अनुग्रह।

किताब- पोथी, ग्रन्थ, पुस्तक।

किनारा- तीर, कूल, कगार, तट।

किसान- कृषक, भूमिपुत्र, हलधर, खेतिहर, अन्नदाता।

कृष्ण- राधापति, घनश्याम, वासुदेव, माधव, मोहन, केशव, गोविन्द, मुरारी, नन्दनन्दन, राधारमण, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, मुरलीधर, द्वारिकाधीश, यदुनन्दन, कंसारि, रणछोड़, बंशीधर, गिरधारी।

कान- कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण, श्रोत, श्रुतिपुट।

कोयल- कोकिला, पिक, काकपाली, बसंतदूत, सारिका, कुहुकिनी, वनप्रिया।

क्रोध- रोष, कोप, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश, कोह, प्रतिघात।

कार्तिकेय- कुमार, षडानन, शरभव, स्कन्द।

कुत्ता- श्वा, श्रवान, कुक्कुर। शुनक, सरमेव।

कल्पद्रुम- देवद्रुम, कल्पवृक्ष, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दन।

काक- कौआ, वायस, काग, करठ, पिशुन।

कीर्ति- यश, प्रसिद्धि।

## ( ख )

खाना- भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार, भोजन।

खग- पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, शकुनि, पखेरू।

खंभा- स्तूप, स्तम्भ, खंभ।

खल- दुर्जन, दुष्ट, घूर्त, कुटिल।

खून- रक्त, लहू, शोणित, रुधिर।

## ( ग )

गणेश- विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन, विघ्नराज, मोदकप्रिय, मोददाता, गणपति, गणनायक, शंकरसुवन, लम्बोदर, महाकाय, एकदन्त।

गंगा- देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विश्नुपगा, देवपगा, ध्रुवनंदा, सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरि, अमरतरंगिनी, विष्णुपदी, नदीश्वरी, त्रिपथगा।

गज- हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल ।

गाय- गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।

गृह- घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आयतन, आलय, आवास, निलय, मंदिर।

गर्मी- ताप, ग्रीष्म, ऊष्मा, गरमी, निदाघ।

गुरु- शिक्षक, आचार्य, उपाध्याय।

गणेश- विनायक, गणपति, लंबोदर, गजानन्।

गंगा- भगीरथी, मंदाकिनी,सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी।

गरुड़- खगेश, पत्रगारि, उरगारि, हरियान, वातनेय, खगपति, सुपर्ण, विषमुख।

गदहा- खर, गर्दभ, धूसर, रासभ, बेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन।

## ( घ )

घट- घड़ा, कलश, कुम्भ, निप।

घर- आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन, वास, वास-स्थान, शाला, सदन।

घृत- घी, अमृत, नवनीत।

AJAY KUMAR

घास- तृण, दूर्वा, दूब, कुश, शाद।

## ( च )

चन्द्र- चाँद, सुधांशु, सुधाधर, राकेश, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगांक, कलानिधि, हिमांशु, इंदु, सुधाकर, विधु, शशि, चंद्रमा, तारापति।

चंद्रमा- चाँद, हिमांशु, इंदु, सुधांशु, विधु, तारापति, चन्द्र, शशि, कलाधर, निशाकर, मृगांक, राकापति, हिमकर, राकेश, रजनीश, निशानाथ, सोम, मयंक, सारंग, सुधाकर, कलानिधि।

चरण- पद, पग, पाँव, पैर, पाद।

चतुर- विज्ञ, निपुण, नागर, पटु, कुशल, दक्ष, प्रवीण, योग्य।

चोर- तस्कर, दस्यु, रजनीचर, मोषक, कुम्भिल, खनक, साहसिक।

चाँदनी- चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, चन्द्रमरीचि, उजियारी, चन्द्रप्रभा, जुन्हाई।

चाँदी- रजत, सौध, रूपा, रूपक, रौप्य, चन्द्रहास।

चन्द्रिका- चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी।

चोटी- मूर्धा, शीश, सानु, शृंग।

## ( छ )

छतरी- छत्र, छाता, छत्ता।

छली- छलिया, कपटी, धोखेबाज।

छवि- शोभा, सौंदर्य, कान्ति, प्रभा।

छानबीन- जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।

छैला- सजीला, बाँका, शौकीन।

छोर- नोक, कोर, किनारा, सिरा।

## ( ज, झ )

जल- मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन, पय, पेय।

AJAY KUMAR

जहर- गरल, कालकूट, माहुर, विष ।

जगत- संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।

जीभ- रसना, रसज्ञा, जिह्वा, रसिका, वाणी, वाचा, जबान।

जंगल- विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।

जेवर- गहना, अलंकार, भूषण, आभरण, मंडल।

ज्योति- आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।

जहाज- पोत, जलयान।

जानकी- सीता, वैदही, जनकसुता, जनकतनया, जनकात्मजा।

झरना- उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्त्रवण।

झण्डा- ध्वजा, पताका, केतु।

झूठ- असत्य, मिथ्या, मृषा, अनृत।

## ( ट, ठ, ड, ढ )

टक्कर- मुठभेड़, लड़ाई, मुकाबला।

टहलुआ- नौकर, सेवक, खिदमतगार।

टाँग- पाँव, पैर, टंक।

टीका- तिलक, चिह्न, दाग, धब्बा।

टोना- टोटका, जादू, यंत्रमंत्र, लटका।

ठंड- ठंड, शीत, सर्दी।

ठग- छली, धूर्त, धोखेबाज।

ठाँव- स्थान, जगह, ठिकाना।

ठिंगना- बौना, वामन, नाटा।

ठीक- उपयुक्त, उचित, मुनासिब।

AJAY KUMAR

ठेठ- निपट, निरा, बिल्कुल।

डंडा- सोंटा, छड़ी, लाठी।

डाली- भेंट, उपहार।

ढब- ढंग, रीति, तरीका, ढर्रा।

ढाँचा- पंजर, ठठरी।

ढील- शिथिलता, सुस्ती, अतत्परता।

ढूँढ- खोज, तलाश।

ढोर- चौपाया, मवेशी।

## (त)

तालाब- सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्माकर , पोखरा, जलवान, सरसी, तड़ाग।

तोता- सुग्गा, शुक, सुआ, कीर, रक्ततुण्ड, दाड़िमप्रिय।

तरुवर- वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, विटप, रूंख, पादप।

तलवार- असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।

तरकस- तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।

तामरस- कमल, पंकज, सरसिज, नीरज, पुण्डरीक, इन्दीवर।

तिमिर- तम, अंधकार, अंधेरा, तमिस्त्रा।

तीर- शर, बाण, विशिख, शिलीमुख, अनी, सायक।

## (थ)

थोड़ा- अल्प, न्यून, जरा, कम।

थाती- जमापूँजी, धरोहर, अमानत।

थाक- ढेर, समूह।

AJAY KUMAR

थप्पड़- तमाचा, झापड़।

थंभ- खंभ, खंभा, स्तम्भ।

## (द)

दूध- दुग्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गौरस, स्तन्य।

दास- नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, अनुचर, भृत्य, किंकर।

दुःख- पीड़ा, कष्ट, व्यथा, वेदना, संताप, संकट, क्लेश, यातना, यन्तणा, शोक, खेद, पीर,।

देवता- सुर, देव, अमर, वसु, आदित्य, निर्जर, त्रिदश, गीर्वाण, अदितिनंदन, अमर्त्य, अस्वप्न, आदितेय, दैवत, लेख, अजर, विबुध।

द्रव्य- धन, वित्त, सम्पदा, विभूति, दौलत, सम्पत्ति।

दैत्य- असुर, इंद्रारि, दनुज, दानव, दितिसुत, दैतेय, राक्षस।

दधि- दही, गोरस, मट्ठा, तक्र।

दरिद्र- निर्धन, ग़रीब, रंक, कंगाल, दीन।

दिन- दिवस, याम, दिवा, वार, प्रमान, वासर, अह्न।

दीन- ग़रीब, दरिद्र, रंक, अकिंचन, निर्धन, कंगाल।

दीपक- दीप, दीया, प्रदीप।

दुष्ट- पापी, नीच, दुर्जन, अधम, खल, पामर।

दाँत- दशन, रदन, रद, द्विज, दन्त, मुखखुर।

दर्पण- शीशा, आरसी, आईना, मुकुर।

दुर्गा- चंडिका, भवानी, कुमारी, कल्याणी, सिंहवाहिनी, कामाक्षी, सुभद्रा, महागौरी, कालिका, शिवा, चण्डी, चामुण्डा।

दया- अनुकंपा, अनुग्रह, करुणा, कृपा, प्रसाद, संवेदना, सहानुभूति, सांत्वना।

देव-अमर, देवता, सुर, निर्जर, वृन्दारक, आदित्य।

देह- काया, तन, शरीर, वपु, गात।

AJAY KUMAR

## (ध)

धन- दौलत, संपत्ति, सम्पदा, वित्त।

धरती- धरा, धरती, वसुधा, ज़मीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही, रत्नवती, रत्नगर्भा।

धनुष- चाप्, शरासन, कमान, कोदंड, पिनाक, सारंग, धनु।

## (न)

नदी- तनूजा, सरित, शौवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्नगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि, सारंग, जयमाला, तरंगिणी, दरिया, निर्झरिणी।

नौका- नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, तरी, पतंग।

नाग- विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।

नर्क- यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।

नर- जन, मानव, मनुष्य, पुरुष, मर्त्य, मनुज।

निंदा- दोषारोपण, फटकार, बुराई, भर्त्सना।

नेत्र- चक्षु, लोचन, नयन, अक्षि, चख, आँख।

नया- नूतन, नव, नवीन, नव्य।

## (प)

पति- भर्ता, वल्लभ, स्वामी, प्राणाधार, प्राणप्रिय, प्राणेश, आर्यपुत्र।

पत्नी- भार्या, दारा, बेगम, कलत्र, प्राणप्रिया, वधू, वामा, अर्धांगिनी, सहधर्मिणी, गृहणी, बहु, वनिता, जोरू, वामांगिनी।

पक्षी- खेचर, दविज, पतंग, पंछी, खग, विहग, परिन्दा, शकुन्त, अण्डज, चिडिया, गगनचर, पखेरू, विहंग, नभचर।

पर्वत- पहाड़, गिरि, अचल, भूमिधर, तुंग आद्रि, शैल, धरणीधर, धराधर, नग, भूधर, महीधर।

पण्डित- सुधी, विद्वान, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, प्राज्ञ, विचक्षण।

पुत्र- बेटा, लड़का, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन।

पुत्री- बेटी, आत्मजा, तनूजा, दुहिता, नन्दिनी, लड़की, सुता, तनया।

AJAY KUMAR

पृथ्वी- धरा, धरती, भू, इला, उर्वी, धरित्री, धरणी, अवनि, मेदिनी, क्षिति, मही, वसुंधरा, वसुधा, जमीन, भूमि।

पुष्प- फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।

पानी- जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।

पार्वती- अपर्णा, अंबिका, आर्या, उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी, शिवा।

परिवार- कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना।

परिवर्तन- बदलाव, हेरफेर, तबदीली, फेरबदल।

पत्थर- पाहन, पाषाण, प्रस्तर, उपल।

पथ- मग, मार्ग, राह, पंथ, रास्ता।

पिता- जनक, तात, पितृ, बाप।

प्रकाश- ज्योति, चमक, प्रभा, छवि, द्युति।

पेड़- तरु, द्रुम, वृक्ष, पादप, रुक्ष।

पैर- पाँव, पद, चरण, पाद, पग।

पवन- वायु, हवा, समीर, वात, मारुत, अनिल, पवमान, समीरण, स्पर्शन।

## (फ)

फल- फलम, बीजकोश।

फूल- पुष्प, सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून।

## (ब)

बाण- सर, तीर, सायक, विशिख, आशुग, इषु, शिलीमुख, नाराच।

बिजली- घनप्रिया, इन्द्रवज्र, चंचला, सौदामनी, चपला, बीजुरी, क्षणप्रभा, घनवल्ली, शया, ऐरावती, दामिनी, ताडित, विद्युत।

AJAY KUMAR

ब्रह्मा- विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, आत्मभू, लोकेश, पितामह, चतुरानन, विरंचि, अज, कर्तार, कमलासन, नाभिजन्म, हिरण्यगर्भ।

ब्राह्मण- द्विज, भूदेव, विप्र, महीदेव, अग्रजन्मा, द्विजाति, भूसुर, महीसुर, वाडव, भूमिसुर, भूमिदेव।

बहुत- अनेक, अतीव, अति, बहुल, भूरि, बहु, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार, अमित, अत्यन्त, असंख्य।

बादल- मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग, पयोद, पयोधर।

बालू- रेत, बालुका, सैकत।

बन्दर- वानर, कपि, कपीश, मर्कट, कीश, शाखामृग, हरि।

बगीचा- बाग़, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी, बगिया।

बाल- कच, केश, चिकुर, चूल।

बलदेव- बलराम, बलभद्र, हलायुध, राम, मूसली, रोहिणेय, संकर्षण।

## ( भ )

भौंरा- अलि, मधुव्रत, शिलीमुख, मधुप, मधुकर, द्विरेप, षट्पद, भृंग, भ्रमर।

भोजन- खाना, भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार।

भय- भीति, डर, विभीषिका।

भाई- तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।

भूषण- जेवर, गहना, आभूषण, अलंकार।

## ( म )

मछली- मीन, मत्स्य, झख, झष, जलजीवन, शफरी, मकर।

महादेव- शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश, गिरीश, हर, त्रिलोचन।

मेघ- घन, जलधर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

AJAY KUMAR

मुनि- यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

मित्र- सखा, सहचर, स्नेही, स्वजन, सुहृदय, साथी, दोस्त।

मोर- केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिय।

मनुष्य- आदमी, नर, मानव, मानुष, जन, मनुज।

मदिरा- शराब, हाला, आसव, मधु, मद्य, वारुणी, सुरा, मद।

मधु- शहद, रसा, शहद, कुसुमासव।

मृग- हिरण, सारंग, कृष्णसार।

माता- जननी, माँ, अंबा, जनयत्री, अम्मा।

मूर्ख- गँवार, अल्पमति, अज्ञानी, अपढ़, जड़।

मृत्यु- देहांत, मौत, अंत, स्वर्गवास, निधन, देहावसान, पंचत्व, इंतकाल, काशीवास, गंगालाभ, निर्वाण, मरण।

माँ- अंबा, अम्बिका, अम्मा, जननी, धात्री, प्रसू।

मुर्गा- तमचूक, अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट।

मग- पन्थ, मार्ग, बाट, पथ, राह।

मूढ- मूर्ख, अज्ञानी, निर्बुद्धि, जड़, गंवार।

मैना- सारी, सारिका, त्रिलोचना, मधुरालाषा, कलहप्रिया।

मूँगा- प्रवाल, रक्तांग, विद्रुम, रक्तमणि।

मोक्ष- मुक्ति, परधाम, निर्वाण, कैवल्य, सद्गति, निर्वाण, परमपद, अपवर्ग।

## (य)

यम- सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश, यमराज।

यमुना- कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।

युवति- युवती, सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, तरुणी, नवयौवना।

AJAY KUMAR

## (र)

रात्रि- निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, रजनी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, तमस्विनी, विभावरी।

रात- रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, निशि, यामा, विभावरी।

राजा- नृपति, भूपति, नरपति, नृप, महीप, राव, सम्राट, भूप, भूपाल, नरेश, महीपति, अवनीपति।

रवि- सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य।

रमा- इन्दिरा, हरिप्रिया, श्री, लक्ष्मी, कमला, पद्मा, पद्मासना, समुद्रजा, श्रीभार्गवी, क्षीरोदतनया।

रामचन्द्र- अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर, रावणारि, जानकीवल्लभ, कमलेन्द्र, कौशल्यानन्दन।

रावण- दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।

राधिका- राधा, ब्रजरानी, हरिप्रिया, वृषभानुजा।

रक्त- खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।

राक्षस- दैत्य, असुर, निशाचर।

## (ल)

लक्ष्मी- चंचला, कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इंदिरा, पद्ममा, सिन्धुसुता, कमलासना।

लड़का- बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार।

लड़की- बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला, कन्या।

लक्ष्मण- लखन, शेषावतार, सौमित्र, रामानुज, शेष।

लौह- अयस, लोहा, सार।

लता- बल्लरी, बल्ली, बेली।

## (व)

AJAY KUMAR

वृक्ष- तरू, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम।

विवाह- शादी, गठबंधन, परिणय, व्याह, पाणिग्रहण।

वायु- हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।

वसन- अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।

विधवा- अनाथा, पतिहीना, राँड़।

विष- ज़हर, हलाहल, गरल, कालकूट।

विष्णु- नारायण, दामोदर, पीताम्बर, माधव, केशव, गोविन्द, चतुर्भज, उपेन्द्र, जनार्दन, चक्रपाणि, विश्वम्भर, लक्ष्मीपति, मधुरिपु।

विश्व- जगत, जग, भव, संसार, लोक, दुनिया।

विद्युत- चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, बीजुरी, घनवल्ली, क्षणप्रभा, करका।

वारिश- वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।

वीर्य- जीवन, सार, तेज, शुक्र, बीज।

वज्र- कुलिस, पवि, अशनि, दभोलि।

विशाल- विराट, दीर्घ, वृहत, बड़ा, महा, महान।

वर्षा- पावस, बरसात, वर्षाकाल, चौमासा, वर्षाऋतु।

वसन्त- मधुमास, माधव, कुसुमाकर, ऋतुराज।

वन- कानन, विपिन, अरण्य, कांतार

## (श, ष)

शेर-हरि, मृगराज, व्याघ्र, मृगेन्द्र, केहरि, केशरी, वनराज, सिंह, शार्दूल, हरि, मृगराज।

शिव- भोलेनाथ, शम्भू, त्रिलोचन, महादेव, नीलकंठ, शंकर।

शरीर- देह, तनु, काया, कलेवर, वपु, गात्र, अंग, गात।

शत्रु- रिपु, दुश्मन, अमित्र, वैरी, प्रतिपक्षी, अरि, विपक्षी, अराति।

AJAY KUMAR

शिक्षक- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

शेषनाग- अहि, नाग, भुजंग, व्याल, उरग, पन्नग, फणीश, सारंग।

शुभ्र- गौर, श्वेत, अमल, वलक्ष, धवल, शुक्ल, अवदात।

शहद- पुष्परस, मधु, आसव, रस, मकरन्द।

सरस्वती- गिरा, शारदा, भारती, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी।

सेना- ऊनी, कटक, दल, चमू, अनीक, अनीकिनी।

साधु- सज्जन, भद्र, सभ्य, शिष्ट, कुलीन।

सलिल- अम्बु, जल नीर, तोय, सलिल, पानी, वारि।

सगर्भ- बंधु, भाई, सजात, सहोदर, भ्राता, सोदर।

सगर्भा- भगिनी, सजाता, सहोदर, बहिन, सोदरा।

षंड- हीजड़ा, नपुंसक, नामर्द।

षडानन- षटमुख, कार्तिकेय, षाण्मातुर।

## (स)

समुद्र- सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, नीरनिधि, अर्णव, पयोनिधि, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।

समूह- दल, झुंड, समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृंद, गण, पुंज, संघ, समुच्चय।

सरस्वती- गिरा, भाषा, भारती, शारदा, ब्राह्मी, वाक्, जातरूप, हाटक, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी।

सुमन- कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प, फूल ।

सीता- वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।

सर्प- साँप, अहि, भुजंग, ब्याल, फणी, पत्रग, नाग, विषधर, उरग, पवनासन।

सोना- स्वर्ण, कंचन, कनक, सुवर्ण, हाटक, हिरण्य, जातरूप, हेम, कुंदन।

AJAY KUMAR

सूर्य- रवि, सूरज, दिनकर, प्रभाकर, आदित्य, मरीची, दिनेश, भास्कर, दिनकर, दिवाकर, भानु, अर्क, तरणि, पतंग, आदित्य, सविता, हंस, अंशुमाली, मार्तण्ड।

संसार- जग, विश्व, जगत, लोक, दुनिया।

सिंह- केसरी, शेर, महावीर, व्याघ्र, पंचमुख, मृगेन्द्र, केहरी, केशी, ललित, हरि, मृगपति, वनराज, शार्दूल, नाहर, सारंग, मृगराज।

सम- सर्व, समस्त, सम्पूर्ण, पूर्ण, समग्र, अखिल, निखिल।

समीप- सन्निकट, आसन्न, निकट, पास।

सभा- अधिवेशन, संगीति, परिषद, बैठक, महासभा।

सुन्दर- कलित, ललाम, मंजुल, रुचिर, चारु, रम्य, मनोहर, सुहावना, चित्ताकर्षक, रमणीक, कमनीय, उत्कृष्ट, उत्तम, सुरम्य।

सन्ध्या- सायंकाल, शाम, साँझ, प्रदोषकाल, गोधूलि।

स्त्री- सुन्दरी, कान्ता, कलत्र, वनिता, नारी, महिला, अबला, ललना, औरत, कामिनी, रमणी।

सुगंधि- सौरभ, सुरभि, महक, खुशबू।

स्वर्ग- सुरलोक, देवलोक, दिव्यधाम, ब्रह्मधाम, द्यौ, परमधाम, त्रिदिव, दयुलोक।

स्वर्ण- सुवर्ण, कंचन, हेन, हारक, जातरूप, सोना, तामरस, हिरण्य।

सहेली- अलि, भटू, संगिनी, सहचारिणी, आली, सखी, सहचरी, सजनी, सैरन्ध्री।

संसार- लोक, जग, जहान, भूमण्डल, दुनियाँ, भव, जगत, विश्व।

## (ह)

हस्त- हाथ, कर, पाणि, बाहु, भुजा।

हिमालय- हिमगिरी, हिमाचल, गिरिराज, पर्वतराज, नगपति, हिमपति, नगराज, हिमाद्रि, नगेश।

हिरण- सुरभी, कुरग, मृग, सारंग, हिरन।

होंठ- अक्षर, ओष्ठ, ओंठ।

हनुमान- पवनसुत, पवनकुमार, महावीर, रामदूत, मारुततनय, अंजनीपुत्र, आंजनेय, कपीश्वर, केशरीनंदन, बजरंगबली, मारुति।

AJAY KUMAR

हिमांशु- हिमकर, निशाकर, क्षपानाथ, चन्द्रमा, चन्द्र, निशिपति।

हंस- कलकंठ, मराल, सिपपक्ष, मानसौक।

हृदय- छाती, वक्ष, वक्षस्थल, हिय, उर।

हाथ- हस्त, कर, पाणि।

हाथी- नाग, हस्ती, राज, कुंजर, कूम्भा, मतंग, वारण, गज, द्विप, करी, मदकल।

.....

AJAY KUMAR

# श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

नीचे कुछ श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द दिए जा रहे है-

(1) असन – भोजन - संतुलित असन स्वास्थ्यकर होता है।

आसन - बैठने की वस्तु - मेरे गुरु महाराज आसन पर बैठ गये।

आसत्र – निकट -'मैंने देखा है'- आसत्रभूत का उदाहरण है।

(2) अवधि - समय सीमा - अल्पावधि (कम समय में) में ही मेरा छोटा भाई अंग्रेजी सीख गया।

अवधि - भाषा विशेष - 'रामचरितमानस' की भाषा अवधी है।

(3) अवमर्ष - स्पर्श, संपर्क - भाग्यशालियों को संतों का अवमर्श प्राप्त होता है।

अवमर्ष – विचार - विमर्श, आलोचना- कोई निर्णय लेने से पहले बुद्धिमानों से अवमर्ष आवश्यक है।

(4) अंस – कंधा - मेरे अंसों पर पूरे परिवार का भार है।

अंश - हिस्सा - सबको अपना-अपना अंश मिलना चाहिए।

(5) अलि – भौंरा - फूलों पर बहुत-से अलि मँडरा रहे है।

अली – सखी - राधा की एक अली का नाम शांता था।

(6) अपेक्षा – आकांक्षा, इच्छा - मैं आपसे अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करता हूँ।

उपेक्षा – निरादर - किसी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

AJAY KUMAR

(7) अनिष्ट – बुराई - अच्छे लोग दूसरों का अनिष्ट नहीं करते।

अनिष्ठ – निष्ठारहित - अनिष्ठ समाज में सम्मानित नहीं होते।

(8) अयस – लोहा - अयस से अस्त्र-शस्त्र निर्मित होते है।

अयश – अपयश - अयश से बचना चाहिए।

(9) द्रव - रस, पिघला हुआ - जल द्रव है।

द्रव - धन, पदार्थ - द्रव्य दिन-प्रतिदिन महँगे होते जा रहे है।

(10) द्विप – हाथी - द्विप विशालकाय होते है।

द्वीप – टापू - श्रीलंका एक द्वीप है।

(11) नीर – पानी - भाषा बहता हुआ नीर होती है।

नीड़ – घोंसला - रात में पंछी अपने-अपने नीड़ों में विश्राम करते हैं।

(12) प्रकार – रीति - इस बाग में विभिन्न प्रकार के फूल खिले हैं।

प्राकार - किले का अंग - प्राकार ध्वस्त हो रहा है

(13) वसन – वस्त्र - उसके वसन पुराने किन्तु स्वच्छ थे।

व्यसन – आदत - जुए का व्यसन बहुत खराब होता है।

(14) परुष – कठोर - प्रस्तर (पत्थर) परुष होता है।

पुरुष – व्यक्ति - आज के पुरुषों में पुरुषत्व नहीं रह गया है।

AJAY KUMAR

(15) कर्म – कार्य - कर्म का फल अवश्य मिलता है।

क्रम – सिलसिला - क्रम में छात्र आते गये और अपना-अपना पुरस्कार लेते गये।

(16) मास – महीना - साल में बारह मास होते है।

मांस – गोश्त - उस भिखारी के शरीर पर मांस नहीं था।

(17) मद्य – शराब - मद्यपान से स्वास्थ्य खराब होता है।

मध्य – बीच - नौका नदी के मध्य डूब गई।

(18) कुल – वंश - जयंत के कुल में जगदीश ऐसा कोई पुत्र नहीं हुआ।

कूल – किनारा - नौका कूल पर लग गई।

(19) बात – वचन - उसकी बात में सच्चाई है।

वात – हवा - वात धीरे-धीरे बह रहा है।

(20) श्रवण – कान - श्रवणों में नुकीली चीज कभी नहीं डालनी चाहिए।

स्त्रवन – बहना - उसकी आँखों से आँसू स्त्रवित होने लगे।

(21) सूची - अनुक्रमणिका, विवरणिका - सामानों की सूची लिख लीजिये।

शुचि – पवित्र - पूजा-पाठ में शुचिता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

सूची – सूई - सूची और सूत्र (धागा) का अन्योन्याश्रित संबंध होता है।

(22) शौर्य – शूरता - राणा प्रताप शौर्य के प्रतीक थे।

AJAY KUMAR

सौर्य/सौर - सूर्य से संबद्ध - सौर्य तेज से ही हम जीवित है।/सौर-मंडल में अनेक ग्रह है।

(23) स्रोत – सोता - भयंकर गर्मी के कारण पानी के सभी स्रोत सूख गये है।

श्रोत – वेद - श्रोत चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

(24) स्वक्ष - सुंदर आँख - उसके स्वक्षों में जादू है।

स्वच्छ – साफ - स्वच्छ पानी पीना चाहिए।

(25) शर्व – शिव - शर्व को महादेव भी कहते हैं।

सर्व – सब - सर्व प्राणियों में आत्मा का निवास होता है।

(26) सुत – बेटा - राम दशरथ के बड़े सुत थे।

सूत - सारथि/धागा - कृष्ण अर्जुन के सुत (सारथि, रथ हाँकनेवाले) थे।/ महीन सूत से बना कपड़ा टिकाऊ होता है।

(27) शुक – सुग्गा - शुक डाल पर बैठा अमरुद खा रहा है।

शूक - जौ की बाल/पौधे के कड़े रोयें - शूक में महीन और लंबे-लंबे रोयें होते हैं।

(28) लक्ष्य – उद्देश्य - मेरे जीवन का लक्ष्य सुयोग्य डॉक्टर बनना है।

लक्ष – लाख - राजा ने मंत्री को दो लक्ष मुद्रायें दीं।

(29) मूल – जड़ - सुनील सारी झंझटों का मूल है।

मूल्य – दाम - मूल्यवृद्धि से उपभोक्ता परेशान है।

(30) विजन - मनुष्य रहित स्थान - वह भटकता हुआ विजन में पहुँच गया था।



AJAY KUMAR

व्यजन – पंखा - गर्मी में व्यजन से राहत मिलती है।

व्यंजन - सब्जी, तरकारी - कल दीदी ने स्वादिष्ट व्यंजन बनायी थी।

(31) यथेष्ट - जैसा चाहा हो गया - मुझे मेरे परिश्रम का यथेष्ट पुरस्कार नही मिला।

स्थेष्ट - अत्यंत दृढ - उमेश बाबू स्थेष्ट संकल्प के व्यक्ति है।

(32) परिणाम – फल - जैसा सोचा था वैसा परिणाम नहीं मिला।

परिणाम – मात्रा - अल्प परिणाम में दवा लेनी है।

(33) कृति – रचना - 'रामचरितमानस' एक महान कृति है।

कृती – निपुण - अनूप जलोटा कृती गायक है।

कीर्ति – यश - उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी।

(34) सामान – पदार्थ - विवाह में लगनेवाले सामानों की सूची तैयार करनी है।

समान - बराबर, सदृश्य - गाँधी के समान सत्य और अहिंसा के प्रेमी बहुत ही कम होंगे।

सम्मान – आदर - बड़ों को सम्मान देना चाहिए।

.....

AJAY KUMAR

# वाक्य-शुद्धि (Sentence-Correction)

वाक्य भाषा की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई होता है। अतएव परिष्कृत भाषा के लिए वाक्य-शुद्धि का ज्ञान आवश्यक है। वाक्य-रचना में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से संबंधित या अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ हो सकती है। इन्हीं को आधार बनाकर परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं।

नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे है-

***(I) संज्ञा - संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं। (बड़ी-बड़ी बाधाएँ)

(2) सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं। (कड़ियाँ)

(3) पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा। (साहस)

(4) कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है। (का आधार)

(5) प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है। (धार पर)

(6) नगर की सारी जनसंख्या भूखी है। (जनता)

(7) वह मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं देता। (मेरी बात पर)

(8) जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कथा चरितार्थ होती है। (कहावत)

(9) मुझे सफल होने की निराशा है। (आशा नहीं)

(10) इस समस्या की औषध उसके पास है। (का समाधान)

(11) गोलियों की बाढ़। (बौछार)

***(i) लिंग संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए (बदलनी)

(2) हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया। (दी गयी)

(3) मुझे मजा आती है। (आता)

(4) रामायण का टीका। (की)

(5) देश की सम्मान की रक्षा करो। (के)

(6) लड़की ने जोर से हँस दी। (दिया)

(7) दंगे में बालक, युवा, नर-नारी सब पकड़ी गयीं (पकड़े गये)

***(ii) वचन - संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) सबों ने यह राय दी। (सब)

(2) उसने अनेक प्रकार की विद्या सीखीं। (विद्याएँ)

(3) मेरे आँसू से रूमाल भींग गया। (आँसुओं)

(4) ऐसी एकाध बातें सुनकर दुःख होता है। (बात)

(5) हमारे सामानों का ख्याल रखियेगा। (सामान)

(6) वे विविध विषय से परिचित हैं। (विषयों)

(7) इस विषय पर एक भी अच्छी पुस्तकें नहीं है। (पुस्तक)

***(iii) कारक - संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) हमने यह काम करना है। (हमें)

(2) मैंने राम को पूछा। (से)

AJAY KUMAR

(3) सब से नमस्ते। (को)

(4) जनता के अन्दर असंतोष फैल गया। (में)

(5) नौकर का कमीज। (की)

(6) मैंने नहीं जाना। (मुझे)

(7) मेरे नये पते से चिट्ठियाँ भेजना। (पर)

***(II) सर्वनाम - संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) मेरे से मत पूछो। (मुझ से)

(2) मेरे को यह बात पसंद नहीं। (मुझे)

(3) तेरे को अब जाना चाहिए। (तुझे)

(4) मैंने नहीं जाना। (मुझे)

(5) आप आपका काम करो। (अपना)

(6) जो सोवेगा वह खोवेगा। (सो)

(7) आप जाकर ले लो। (तुम)

(8) वह सब भले लोग हैं। (वे)

(9) आँख में कौन पड़ गया ?(क्या)

(10) मैं उन्होंके पिताजी से जाकर मिला। (उनके)

***(III) विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) उसे भारी प्यास लगी है। (बहुत)

(2) जीवन और साहित्य का घोर संबंध है। (घनिष्ठ)

AJAY KUMAR

(3) मुझे बड़ी भूख लगी है। (बहुत)

(4) यह एक गहरी समस्या है। (गंभीर)

(5) वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा थी। (बहुत या बहुत भारी)

(6) इसका कोई अर्थ नहीं है। (कुछ भी)

(7) इस वीरान जीवन में। (नीरस)

(8) उसकी बहुत हानि हुई। (बड़ी)

(9) राजेश अग्रिम बुधवार को आएगा। (आगामी)

(10) दूध का अभाव चिन्तनीय है। (चिन्ताजनक)

***(IV) क्रिया-संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) वह कुरता डालकर गया है। (पहनकर)

(2) पगड़ी ओढ़कर आओ। (बाँधकर)

(3) वह लड़का मोटर हाँक सकता है। (चला)

(4) छोटी उम्र शिक्षा लेने के लिए है। (पाने)

(5) वे दस-बारह पशु उठा ले गए। (हाँक)

(6) राधा ने माला गूँध ली। (गूँथ)

(7) अपना हस्ताक्षर लगा दो। (कर)

(8) उपस्थित लोगों ने संकल्प लिया। (किया)

(9) हमें यह सावधानी लेनी होगी। (बरतनी)

(10) वहाँ घना अँधेरा घिरा था। (छाया)

***(V) अव्यय-संबंधी अशुद्धियाँ***

AJAY KUMAR

(1) यद्यपि वह बीमार था परन्तु वह स्कूल गया। (तथापि)

(2) पुस्तक विद्वतापूर्ण लिखी गयी है। (विद्वतापूर्वक)

(3) आसानीपूर्वक यह काम कर लिया। (आसानी से)

(4) शनैः उसको सफलता मिलने लगी। (शनैः शनैः)

(5) एकमात्र दो उपाय है। (केवल)

(6) यह पत्र आपके अनुसार है। (अनुरूप)

(7) यह बात कदापि भी सत्य नहीं हो सकती। (कदापि)

(8) वह अत्यन्त ही सुन्दर है। (अत्यन्त)

(9) सारे देश भर में अकाल है। (सारे देश में)

(10) मैं पहुँचा ही था जब कि वह आ गया। (कि)

***(VI) पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) छात्रों ने मुख्य अतिथि को एक फूलों की माला पहनाई। (फूलों की एक माला)

(2) भीड़ में चार पटना के व्यक्ति भी थे। (पटना के चार व्यक्ति)

(3) कई बैंक के कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। (बैंक के कई कर्मचारियों)

(4) आप जाएँगे क्या ? (क्या आप जाएँगे ?)

***(VII) द्विरुक्ति/पुनरुक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ***

(1) मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ बशर्ते कि तुम मेरा कहा मानो। (बशर्ते/शर्त है कि)

(2) दरअसल में वह बहुत काइयाँ है। (दरअसल/असल में)



AJAY KUMAR

(3) दरहक़ीक़त में वह बहुत घाघ। है (दरहक़ीक़त/हकीकत में)

(4) फिलहाल में वह मुंबई गया है। (फिलहाल/हाल में)

(5) मुख़्तसर में 'गोदान' ग्रामीण जीवन का महाकाव्य है। (मुख़्तसर)

(6) मेरे मना करने के बावजूद भी वह चला गया। (बावजूद)

(7) वह अभी शैशव अवस्था में है। (शैशव/शिशु अवस्था)

(8) मध्यकालीन युग में कलाओं की बहुत उन्नति हुई। (मध्यकाल/मध्ययुग)

(9) यौवनावस्था की बुराइयों से बचो। (यौवन/युवा अवस्था)

(10) साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं की संख्या कम है। (लेखिकाओं/महिला लेखकों)

(11) नौजवान युवकों को दहेज प्रथा का विरोध करना चाहिए। (नौजवानों/युवकों)

(12) आपका भवदीय। (आपका/भवदीय)

(13) प्रातः काल के समय टहलना चाहिए (प्रातः काल/प्रातः समय)

(14) राजस्थान का अधिकांश भाग रेतीला है। (अधिकांश/अधिक भाग)

(15) वे परस्पर एक दूसरे से उलझ पड़े। (परस्पर/एक दूसरे से)

## *(VIII) अधिकपदत्व-संबंधी अशुद्धियाँ*

निम्नलिखित वाक्यों में ● अक्षरों में छपे पद अनावश्यक है-

(1) मानव ईश्वर की सबसे उत्कृष्टतम कृति है।

(2) हीन भावना से ग्रस्त मोहन अपने को दुनिया का सबसे निकृष्टतम व्यक्ति समझता है।

(3) सीता नित्य गीता को पढ़ाती है।

(4) उसने गुप्त रहस्य प्रकट कर दिये।

(5) माली जल से पौधों को सींच रहा था।

AJAY KUMAR

## *(IX) शब्द-ज्ञान-संबंधी अशुद्धियाँ*

(1) बाण बड़ा उपयोगी शस्त्र है। (अस्त्र)

(2) लाठी बड़ा उपयोगी अस्त्र है। (शस्त्र)

(3) चिड़ियाँ गा रही है। (चहक)

(4) वह नित्य गाने की कसरत करता है। (का अभ्यास/का रियाज)

(5) सोहन नित्य दण्ड मारता है। (पेलता)

(6) इस समय सीता की आयु सोलह वर्ष है। (उम्र/अवस्था)

(7) धनीराम की सौभाग्यवती पुत्री का विवाह कल होगा। (सौभाग्यकांक्षिणी)

(8) कर्मवान व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है। (कर्मवीर)

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए:

(A) अपराधी और

(B) निरपराधी का

(C) अन्तर करना

(D) कठिन है

(E) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) निरपराध का

(2) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए:

(A) दीपावली पर कुछ लोग

AJAY KUMAR

(B) चमचमाती चाँदी के बर्तन

(C) खरीदने का लोभ संवरण न कर सके।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) चाँदी के चमचमाते बर्तन

(3) निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए-

(A) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपस में लड़ाते रहें।

(B) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपसी लड़ाई से दूर उलझे रहें।

(C) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपस में लड़ते रहें।

(D) नेताओं का हित इसमें है कि लोग उनसे लड़ते रहें।

Answer- (C)

(4) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) प्रत्येक देशवासियों को

(B) देश की सेवा में

(C) तन, मन, धन अर्पण करना चाहिए।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (A) प्रत्येक देशवासी को

(5) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) आतंकवाद शायद एक दिशाहीन

(B) उद्देश्यहीन अंधेरा है

(C) जो विश्व शांति एवं प्रगति को निगल रहा है।

AJAY KUMAR

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (A) आतंकवाद एक दिशाहीन

(6) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) तुम कक्षा में आते हो

(B) तो तुम्हारी पुस्तक

(C) साथ क्यों नहीं लाते ?

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) तो अपनी पुस्तक

(7) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) गुणी मनुष्य कहता है

(B) कि मैं विविध प्रकार के दुःखों को

(C) सहन करके भी दुःखी नहीं हूँ।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (A) साहसी मनुष्य कहता है

(8) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) फूल में सुगंध

(B) होती है और

(C) तितली के पास सुन्दर पंख

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (C) तितली के सुन्दर पंख

AJAY KUMAR

(9) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) अध्यापक ने

(B) आज हमारे को

(C) नया पाठ पढ़ाया

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer-(B) आज हमें

(10) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) बुरा से बुरा आदमी

(B) भी सम्मान

(C) चाहता है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (A)बुरे से बुरा

(11) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा

(B) शरीर की शोभा बढ़ जाता है

(C) उसी प्रकार अलंकारों से

(D) भाषा में लालित्य आ जाता है।

(E) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) शरीर की शोभा बढ़ जाती है

AJAY KUMAR

(12) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) सीता राम की

(B) आज्ञाकारी

(C) पत्नी थी

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) आज्ञाकारिणी

(13) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) व्यक्ति के हर प्रकार के कष्टों को

(B) वह पल भर में

(C) दूर करती है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (A) व्यक्ति के हर प्रकार के कष्ट को

(14) निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए-

(A) मैं गाने की कसरत करता हूँ।

(B) मैं गाने का अभ्यास करता हूँ।

(C) मैं गाने का शौक कर रहा हूँ।

(D) मैं गाने का व्यायाम कर रहा हूँ।

Answer- (B)

(15) निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए-

(A) वन में प्रातः काल का दृश्य बहुत ही सुहावना होता है।

AJAY KUMAR

(B) वन में प्रातः काल के समय बहुत ही सुहावना दृश्य होती है।

(C) वन में प्रातः काल के समय बहुत ही मनोहारी दृश्य होता है।

(D) वन में प्रातः काल का दृश्य बहुत ही खूबसूरत होता है।

Answer- (A)

(16) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) मैं पटना गया

(B) तो उस समय

(C) मेरे पास

(D) केवल बीस रूपये मात्र थे

(E) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (D) केवल बीस रूपये थे

(17) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) राम राज्य में

(B) शेर और बकरी एक घाट

(C) पर पानी पीती थी।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (C) पर पानी पीते थे

(18) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) राजा दशरथ को

(B) चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न

AJAY KUMAR

(C) पैदा हुए थे।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (A) राजा दशरथ के

(19) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) आज भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में

(B) शिष्टाचार के रूप में

(C) जाना जाता है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (C)माना जाता है।

(20) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) जब पृथ्वी पर पाप और अत्याचार बढ़ते है

(B) तब ईश्वर किसी-न-किसी महापुरुषों में

(C) पृथ्वी पर अवतार लेता है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) तब ईश्वर किसी-न-किसी महापुरुष के रूप में

(21) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) जीवन पथ पर

(B) हमें सतत रूप से

(C) चलते रहना चाहिए।

(D) कोई त्रुटि नहीं

AJAY KUMAR

Answer- (B) हमे सतत

(22) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) स्त्री का हृदय गुलाब की पंखुड़ियों की तरह

(B) अत्यन्त कोमल

(C) एवं संवेदनशील होता है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (C) एवं भावुक होता है।

(23) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) मैं आज सुबह

(B) आपके घर गया था

(C) किन्तु तुम घर

(D) पर नहीं मिले

(E) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (C) किन्तु आप घर

(24) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) प्रत्येक देशवासी को विभिन्न्ता में

(B) एकीकरण करने की शक्ति को उजागर करने वाले

(C) तत्वों की पहचान करनी चाहिए

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) एकता करने की शक्ति को उजागर करने वाले

AJAY KUMAR

(25) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) रेखा ने अमित को आवाज लगाकर कहा

(B) कि राहुल का दूध

(C) रसोई में गैस के ऊपर रखा है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) कि राहुल के लिए दूध

(26) निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए-

(A) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द है।

(B) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द रहेगा।

(C) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द होना है।

(D) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द था।

Answer- (D)

(27) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) जिस व्यक्ति की आत्मा

(B) जितनी विशाल है,

(C) वह उतना ही बड़ा महापुरुष है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (C) वह उतना ही महापुरुष

(28) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

AJAY KUMAR

(A) राम ने अपनी

(B) गलती के लिए

(C) क्षमा

(D) की भीख मांगी

(E) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (D) मांगी

(29) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) बड़ों की बातों को

(B) आदर से

(C) सुनना चाहिए

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (B) आदरपूर्वक

(30) वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए-

(A) मीठे वचन

(B) बोलना

(C) उत्तम गुण है।

(D) कोई त्रुटि नहीं

Answer- (D) कोई त्रुटि नहीं

.....

AJAY KUMAR

# पाठ-बोधन (Reading Comprehension)

किसी दिए गए पाठ को पढ़कर अध्येता द्वारा प्रतिपाद्य विषय तथा गद्यांश में निहित मूल अर्थ को हृदयंगम करना ही पाठ-बोधन कहलाता है।

इस प्रकार का अभ्यास परीक्षार्थी की योग्यता को जाँचने का सर्वाधिक मापदण्ड होता है। इससे परीक्षार्थी की सही सूझ-बूझ तथा ग्रहण करने की सही क्षमता की परख की जा सकती हैं।

## पाठ-बोधन संबंधी सामान्य बातें

(1) दिए गए पाठ का स्तर, विचार, भाषा, शैली आदि प्रत्येक दृष्टि से परीक्षा के स्तर के अनुरूप होता है।

(2) पाठ का स्वरूप साहित्यिक (अधिकांशतः), वैज्ञानिक, विवरणात्मक आदि होता है।

(3) दिया गया पाठ अपठित (अर्थात जो पढ़ा न गया हो) होता है।

(4) अपठित पाठ प्रायः गद्यांश होते हैं, किसी-किसी परीक्षा में पद्यांश भी।

(5) पाठ से ही संबंधित कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न नीचे दिए गए होते है तथा प्रत्येक के चार/पाँच वैकल्पिक उत्तर सुझाए गए होते हैं। परीक्षार्थी को इनमें से सही उत्तर चुनकर उसे निर्देशानुसार चिन्हित करना होता है।

## पाठ-बोधन पर आधारित प्रश्नों को हल करने की विधि

(1) प्रथम चरण में पाठ को शीघ्रता से किन्तु ध्यानपूर्वक पढ़कर विषय-वस्तु तथा केन्द्रीय भाव को जानने का प्रयास करें।

(2) दूसरे चरण में पाठ को धीरे-धीरे एवं पूरे मनोयोग से नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पढ़ें। संभावित उत्तरों को साथ-साथ रेखांकित करें।

(3) तीसरे चरण में प्रश्नों के सही उत्तरों को सावधानीपूर्वक चिन्हांकित करें।

**नोट :**

AJAY KUMAR

(i) उत्तर पाठ पर ही आधारित होने चाहिए। कल्पना पर आधारित उत्तर से बचना चाहिए।

(ii) उत्तर प्रसंगानुकूल एवं सीधा होना चाहिए।

(iii) प्रत्येक विकल्प पर विचार करके देखें कि उनमें से किसके अर्थ की संगति संबंधित वाक्य के साथ सही बैठती है।

## पाठ-बोधन पर आधारित प्रश्न

नीचे कुछ पाठ-बोधन पर आधारित प्रश्न दिया जा रहा है-

(1) वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता ने मनुष्य की बुद्धि का अपूर्व विकास कर दिया है। द्वितीय महायुद्ध में एटम बम की शक्ति ने कुछ क्षणों में ही जापान की अजेय शक्ति को पराजित कर दिया। इस शक्ति की युद्धकालीन सफलता ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रान्स आदि सभी देशों को ऐसे शस्त्रास्त्रों के निर्माण की प्रेरणा दी की सभी भयंकर और सर्वविनाशकारी शस्त्र बनाने लगे। अब सेना को पराजित करने तथा शत्रु-देश पर पैदल सेना द्वारा आक्रमण करने के लिए शस्त्र-निर्माण के स्थान पर देश के विनाश करने की दिशा में शस्त्रास्त्र बनने लगे है। इन हथियारों का प्रयोग होने पर शत्रु-देशों की अधिकांश जनता और संपत्ति थोड़े समय में ही नष्ट की जा सकेगी। चूँकि ऐसे शस्त्रास्त्र प्रायः सभी स्वतन्त्र देशों के संग्रहालयों में कुछ न कुछ आ गये है, अतः युद्ध की स्थिति में उनका प्रयोग भी अनिवार्य हो जायेगा।

अतः दुनिया का सर्वनाश या अधिकांश नाश तो अवश्य ही हो जायेगा। इसलिए निः शस्त्रीकरण की योजनाएँ बन रही हैं। शस्त्रास्त्रों के निर्माण में जो दिशा अपनाई गई, उसी के अनुसार आज इतने उत्रत शस्त्रास्त्र बन गये हैं, जिनके प्रयोग से व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है। अब भी परीक्षणों की रोकथाम तथा बने शस्त्रों के प्रयोग के रोकने के मार्ग खोजे जा रहे हैं। इन प्रयासों के मूल में एक भयंकर आतंक और विश्व विनाश का भय कार्य कर रहा है।

(1) इस गद्यांश का मूल कथ्य क्या है ?

(a) आतंक और सर्वनाश का भय

(b) विश्व में शस्त्रास्त्रों की होड़

(c) द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका

(d) निःशस्त्रीकरण और विश्व शान्ति

उत्तर- (d)

(2) भयंकर विनाशकारी आधुनिक शस्त्रास्त्रों के बनाने की प्रेरणा किसने दी ?

(a) अमेरिका ने

(b) अमेरिका की विजय ने

(c) जापान के विनाश ने

(d) बड़े देशों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा ने

उत्तर- (c)

(3) एटम बम की अपार शक्ति का प्रथम अनुभव कैसे हुआ ?

(a) जापान में हुई भयंकर विनाशलीला से

(b) जापान की अजेय शक्ति की पराजय से

(c) अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस की प्रतिस्पर्धा से

(d) अमेरिका की विजय से

उत्तर- (b)

(4) बड़े-बड़े देश आधुनिक विनाशकारी शस्त्रास्त्र क्यों बना रहे हैं ?

(a) अपनी-अपनी सेनाओं में कमी करने के उद्देश्य से

(b) अपने संसाधनों का प्रयोग करने के उद्देश्य से

(c) अपना-अपना सामरिक व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से

(d) पारस्परिक भय के कारण

उत्तर- (c)

(5) आधुनिक युद्ध भयंकर व विनाशकारी होते हैं क्योंकि-

AJAY KUMAR

(a) दोनों देशों के शस्त्रास्त्र इन युद्धों में समाप्त हो जाते हैं।

(b) अधिकांश जनता और उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।

(c) दोनों देशों में महामारी और भुखमरी फैल जाती है।

(d) दोनों देशों की सेनाएँ इन युद्धों में मारी जाती हैं।

उत्तर- (b)

(6) इस गद्यांश का सर्वाधिक उपर्युक्त शीर्षक है-

(a) निःशस्त्रीकरण

(b) आधुनिक शस्त्रास्त्रों का विनाशकारी प्रभाव

(c) एटम बम की शक्ति

(d) आतंक और विश्व-विनाश का भय

उत्तर- (a)

(7) 'व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है।' इस वाक्य में 'आसन्न' का अर्थ क्या है ?

(a) अवश्य घटित होने वाला

(b) कुछ समय बाद घटित होने वाला

(c) किसी क्षेत्र विशेष में घटित होने वाला

(d) कभी घटित नहीं होने वाला

उत्तर- (a)

(8) 'निःशस्त्रीकरण' से क्या तात्पर्य है ?

(a) आधुनिक शस्त्रास्त्रों का मुक्त व्यापार

(b) आधुनिक शस्त्रास्त्रों के परीक्षण, प्रयोग एवं भंडारण पर प्रतिबंध

AJAY KUMAR

(c) एटम की शक्ति का रचनात्मक कार्यों में प्रयोग

(d) एटम बम का जनता पर प्रयोग न करने का संकल्प

उत्तर- (b)

(9) निःशस्त्रीकरण की योजनाएँ क्यों बनाई जा रही हैं ?

(a) क्योंकि आतंक और विश्व के सर्वनाश का भय बढ़ता जा रहा है।

(b) क्योंकि बड़े देशों के संसाधन समाप्त होते जा रहे हैं।

(c) क्योंकि तृतीय विश्व युद्ध की अभी कोई सम्भावना नहीं है।

(d) क्योंकि ये योजनाएँ संयुक्त राष्ट्र संघ ने बनाई हैं।

उत्तर- (a)

(10) विश्व को सर्वनाश से बचाने के लिए कौन सी योजना सर्वाधिक प्रभावी हो सकती है ?

(a) एटम शक्ति का नियोजन

(b) निःशस्त्रीकरण की योजना

(c) प्रत्येक देश को आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करने की योजना

(d) रूस अमेरिका की मित्रता की योजना

उत्तर- (b)

(2) स्वतंत्र व्यवसाय की अर्थनीति के नये वैश्विक वातावरण ने विदेशी पूँजी निवेश को खुली छूट दे रखी है जिसके कारण दूरदर्शन में ऐसे विज्ञापनों की भरमार हो गई है जो उन्मुक्त वासना, हिंसा, अपराध, लालच और ईर्ष्या जैसी मानव की हीनतम प्रवृत्तियों को आधार मानकर चल रहे हैं। अत्यन्त खेद का विषय है कि राष्ट्रीय दूरदर्शन ने भी उनकी भोंडी नकल की ठान ली है। आधुनिकता के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा है, सुनाया जा रहा है, उससे भारतीय जीवन मूल्यों का दूर का भी रिश्ता नहीं है, वे सत्य से भी कोसों दूर हैं। नयी पीढ़ी जो स्वयं में रचनात्मक गुणों के विकास करने की जगह दूरदर्शन के सामने बैठकर कुछ सीखना, जानना और मनोरंजन करना चाहती है, उसका भगवान ही मालिक है।

AJAY KUMAR

जो असत्य है, वह सत्य नहीं हो सकता। समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही। आज यह मजबूरी हो गई है कि दूरदर्शन पर दिखावे जाने वाले वासनायुक्त अश्लील दृश्यों से चार पीढ़ियाँ एक साथ आँखें चार कर रही हैं। नतीजा सामने है ,बलात्कार, अपहरण, छोटी बच्चियों के साथ निकट सम्बन्धियों द्वारा शर्मनाक यौनाचार की घटनाओं में वृद्धि। ठुमक कर चलते शिशु दूरदर्शन पर दिखाये और सुनाये जा रहे स्वर और भंगिमाओं पर अपनी कमर लचकाने लगे हैं। ऐसे कार्यक्रम न शिव हैं, न समाज को शिव बनाने की शक्ति है इनमें। फिर जो शिव नहीं, वह सुन्दर कैसे हो सकता है।

(1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक होगा-

(a) पाश्चात्य उपभोक्तावाद और भरतीय दूरदर्शन

(b) पाश्चात्य जीवन-मूल्यों का प्रचारक भारतीय दूरदर्शन

(c) भारतीय दूरदर्शन की अनर्थकारी भूमिका

(d) भारतीय जीवन-मूल्य और दूरदर्शन

उत्तर- (c)

(2) नयी आर्थिक व्यवस्था से भारतीय दूरदर्शन किस तरह प्रभावित है ?

(a) हिंसा, यौनाचार, बलात्कार, अपहरण आदि मानव की हीन वृत्तियों से सन्बन्धित कार्यक्रमों का बाहुल्य हो चला है और यह सब पाश्चात्य मीडिया का ही असर हैं। (b) पाश्चात्य मीडिया के प्रभाव के चलते भारतीय दूरदर्शन नये और स्वतन्त्र जीवन-मूल्यों की स्थापना में पूरे जोर से लग गया है।

(c) पाश्चात्य मीडिया के अनुकरण पर भारतीय दूरदर्शन भी स्त्री-स्वातंन्त्रय का प्रचार करने लगा है।

(d) भारतीय दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर पाश्चात्य जीवन शैली का गहरा असर दिखाई देने लगा है।

उत्तर- (a)

(3) नई आर्थिक नीति का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या हो रहा है ?

(a) विकासशील देश अपनी राष्ट्रीय अस्मिता खोते जा रहे हैं।

(b) पाश्चात्य जीवन-मूल्यों का विश्व के विकासशील देशों में व्यापक प्रचार हो रहा है।

(c) उपभोक्तावाद को खुला प्रोत्साहन मिल रहा है।

AJAY KUMAR

(d) विकासशील देश विकसित देशों की आर्थिक गुलामी में फँसते जा रहे हैं।

उत्तर- (b)

(4) अर्थनीति के नये वैश्विक वातावरण से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

(a) विकासशील देशों का विकसित देशों की आर्थिक गुलामी में फँसना

(b) अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सारे विश्व का एक सूत्र में जुड जाना

(c) आर्थिक नीति में राष्ट्रीय प्रतिबंधों को हटाकर उसका उदारीकरण जिससे कोई देश अन्य किसी देश में व्यवसाय करने, उद्योग लगाने आदि आर्थिक कार्यक्रमों में स्वतंत्र हो

(d) विकसित देशों के पूँजीपतियों को विकासशील देशों में पूँजी-निवेश की स्वतन्त्रता

उत्तर- (c)

(5) 'समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही'- इस वाक्य से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

(a) भारतीय दूरदर्शन अपना दायित्व ईमानदारी से नहीं निभा रहा है।

(b) वह भारतीय समाज को कल्याण के मार्ग पर न चलाकर श्मशान के मार्ग पर ले जा रहा है।

(c) वह समाज को नए जीवन मूल्यों से अनुप्राणित करने के स्थान पर उसे मुर्दा बनाने में लगा है।

(d) भारतीय दूरदर्शन अपने 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम' के आदर्श को भूल कर सामाजिक जीवन को विकृत कर रहा है।

उत्तर- (d)

(3) हमारे इतिहास के अध्ययन ने हमें यह दर्शाया है कि जीवन प्रायः बहुत क्रूर तथा कठोर है। इसके लिए उत्तेजित होना या लोगों को पूरी तरह दोषी ठहरना मूर्खता है और उसका कोई लाभ नहीं। गरीबी, दुःख और शोषण के कारणों को समझने और उनको दूर करने के प्रयत्नों में ही समझदारी है। यदि हम ऐसा करने में असफल हो जाते है और घटनाओं की दौड़ में पीछे रह जाते है, तो हम अवश्य कष्ट पाते हैं। भारत इस तरह से पीछे रह गया। यह कुछ प्राचीन रह गया। इसके समाज ने पुरातन परम्परा को धारण कर लिया, इसके सामाजिक ढाँचे ने अपने जीवन और शक्ति को खो दिया और यह निष्क्रिय होने लगा। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि भारत ने कष्ट पाया। अंग्रेज इसका कारण रहे हैं। यदि अंग्रेज ऐसा न करते, तो शायद कोई और लोग ऐसा ही करते।

AJAY KUMAR

परन्तु अंग्रेजों ने भारत का एक बहुत बड़ा हित किया। उनके नए और हृष्ट-पुष्ट जीवन के प्रभाव ने भारत को हिला दिया और उनमें राजनीतिक एकता और राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो गई। शायद यह बड़ा दुःखदायी था कि हमारे प्राचीन देश और लोगों में नवजीवन लाने की आवश्यकता थी। अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य केवल क्लर्क बनाना और तत्कालीन पश्चिमी विचारों से लोगों को परिचित कराना था। एक नया वर्ग बनने लगा, अंग्रेजी शिक्षित वर्ग, संख्या में कम और लोगों से कटा हुआ, परन्तु जिसके भाग्य में नए राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व था। यह वर्ग पहले इंग्लैण्ड और अंग्रेजी स्वतंत्रता के विचारों का पूरी तरह प्रशंसक था। तब ही लोग स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के बारे में बातें कर रहे थे। यह सब अनिश्चित था और इंग्लैण्ड भारत में अपने लाभ के लिए निरंकुशता से राज्य कर रहा था, परन्तु यह आशा की जाती थी कि इंग्लैण्ड ठीक समय पर भारत को स्वतन्त्रता दे देगा।

भारत में पश्चिमी विचारों का प्रभाव हिन्दू धर्म पर भी कुछ सीमा तक पड़ा। जनसमूह तो प्रभावित नहीं हुआ, परन्तु जैसा मैं तुम्हें बता चुका हूँ, ब्रिटिश सरकार की नीति ने रूढ़िवादी लोगों की वास्तव में सहायता की, परन्तु नया मध्यम वर्ग जो अभी बन रहा था, जिसमे सरकारी कर्मचारी और व्यावसायिक लोग थे, प्रभावित हो गए थे। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी तरीकों से हिन्दू धर्म में सुधार लाने का प्रयत्न बंगाल में हुआ। हिन्दू धर्म के अनगिनत सुधारक अतीत में थे। इनमें से कुछ का उल्लेख मैं तुम्हें अपने इन पत्रों में कर चुका हूँ, परन्तु नया प्रयत्न निश्चय ही ईसाईवाद और पश्चिमी विचारों से प्रभावित था। इस प्रयत्न के निर्माता राजा राममोहन राय थे, एक महान व्यक्ति और एक महान विद्वान जिसका नाम हम पहले ही सती प्रथा की समाप्ति के सम्बन्ध में ले चुके हैं। वे संस्कृत, अरबी और दूसरी कई भाषाएँ बहुत अच्छी तरह जानते थे और उन्होंने ध्यान से कई धर्मों का अध्ययन किया था, वे धर्मिक समारोह और पूजा आदि के विरुद्ध थे और उन्होंने समाज सुधार और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। जिस समाज की उन्होंने स्थापना की वह ब्रह्मो समाज कहलाया।

(1) इस अवतरण से लेखक के विषय में यह पता चलता है कि

(a) भारत की समस्याओं के लिए वह विदेशी शासकों को दोषी ठहराता है।

(b) वह भारत पर ब्रिटिश प्रभाव का परीक्षण निष्पक्षता से करता है।

(c) लेखक ने बहुत से वर्ष इंग्लैण्ड में बिताये हैं और भारत की तरफ उसकी अरुचि विकसित हो गई है।

(d) वह हिन्दू धर्म का सच्चा अनुयायी है।

उत्तर- (b)

(2) लेखक कहता है कि पश्चिमी विचारों ने मार्ग प्रशस्त किया है-

(a) जनसमूह में निराशा का

(b) भारतीयों में अधिक निरक्षता का

(c) मध्यम वर्ग के लोगों की ओर से विद्रोह का

(d) हिन्दू धर्म में सुधार का

उत्तर- (d)

(3) यह अंग्रेजों द्वारा भारत को दिए गए महान लाभों में से एक नहीं है।

(a) यह राजनीतिक एकता की भावना लाया।

(b) अंग्रेजी शिक्षा भारतीयों की तत्कालीन पश्चिमी विचारधारा के सम्पर्क में लायी।

(c) एक नए शिक्षित मध्यम वर्ग का जन्म हुआ।

(d) इसने रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास को बढ़ावा दिया।

उत्तर- (d)

(4) राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व की पहचान की जाती थी-

(a) संस्कृत और अरबी की एक छात्रवृत्ति से

(b) विभिन्न धर्मों के समीकरण से

(c) पश्चिमी विचार के प्रकारों की एक निष्ठावान नकल से

(d) ईसाई धर्म के अधिकतम प्रभाव से

उत्तर- (b)

(4) संस्कृत और सभ्यता- ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलगअलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लम्बी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति उन सबसे कहीं बारीक़ चीज है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रूचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती, वह

बहुत ही सूक्ष्म और महान चीज है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं- यह हमारी संस्कृति बतलाती है।

आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छः विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। मगर ये विकार अगर बेरोक छोड़ दिए जायें, तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाये। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते है तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृतियाँ से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो।

(1) 'सभ्यता' का अभिप्राय है-

(a) मानव को कलाकार बना देने वाली विशेषता

(b) मानव के भौतिक विकास का विधायक गुण

(c) मनुष्य के स्वाधीन चिंतन की गाथा

(d) युग-युग की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी

उत्तर- (b)

(2) 'संस्कृति' का अभिप्राय है-

(a) हर युग में प्रासंगिक विशिष्टता

(b) विशिष्ट जीवन-दर्शन से सन्तुलित जीवन

(c) आनन्द मनाने का एक विशेष विधान

(d) मानव की आत्मिक उन्नति का संवर्धक आन्तरिक गुण

उत्तर- (d)

(3) संस्कृति सभ्यता से इस रूप में भी भिन्न है कि संस्कृति-

(a) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है।

AJAY KUMAR

(b) एक आदर्श विधान है और सभ्यता यथार्थ होती है।

(c) सभ्यता की अपेक्षा अत्यन्त सूक्ष्म होती है।

(d) समन्वयमूलक है और सभ्यता नितान्त मौलिक होती है।

उत्तर- (c)

(4)संस्कृति का मूल स्वभाव है कि वह-

(a) मानव-मानव में भेदभाव नहीं रखती।

(b) मनुष्य की आत्मा में विश्वास रखती है।

(c) आदान-प्रदान से बढ़ती है।

(d) एक समुदाय की जीवन में ही जीवित रह सकती है।

उत्तर- (c)

(5) मानव की मानवीयता इसी बात में निहित है कि वह-

(a) अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार करे।

(b) अपनी संस्कृति को समृद्ध करने के लिए कटिबद्ध रहे।

(c) सभ्यता की ऊँचाइयों को पाने का प्रयास करे।

(d) अपने मन से विधमान विकारों पर नियंत्रण पाने की चेष्टा करे।

उत्तर- (d)

(5) जिन्दगी के असली मजे उनके लिए नहीं है जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कंठ सूखा हुआ है, ओठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृतवाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है।

AJAY KUMAR

(1) यह गद्यांश किसका लिखा हुआ है ?

(a) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(b) रामचन्द्र शुक्ल

(c) गुलाब राय

(d) बालमुकुन्द गुप्त

उत्तर- (a)

(2) जिन्दगी के असली मजे किनके लिए है ?

(a) जो आराम करते है

(b) जो परिश्रम करते है

(c) जो शहर में रहते हैं

(d) जो पैसे वाले है

उत्तर- (b)

((3) उपर्युक्त गद्यांश में किस बात के महत्व को बताया गया है ?

((a) प्रकृति

(b) जीवन

(c) श्रम

(d) भाग्य

उत्तर- (c)

((4) जो धूप में खूब सूख चुका है, से अभिप्राय है-

(a) कड़ा परिश्रम करना

AJAY KUMAR

(b ) धूप सेंकना

(c) बीमार होना

(d) रेगिस्तान में रहना

उत्तर- (a)

((5) 'अमृतवाला तत्व' का तात्पर्य है-

(a) जीवन का सार

(b) अमृत

(c) जीवन का रहस्य

(d) समुद्र से निकलता हुआ अमृत

उत्तर- (a)

(6) वास्तव में हृदय वही है जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है, चाहे उसका देश सूखा, गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश-प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नही होती, बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं पशु-पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड़ की ओर उड़े चले जाते हैं। देशप्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है। कुछ लोग समझते हैं कि मातृ भूमि के नारे लगाने से ही देश-प्रेम व्यक्त होता है। दिन-भर वे त्याग, बलिदान और वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते, लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्यागकर, जान जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे ? आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है।

(1) देश-प्रेम का अंकुर विधमान है-

(a) सभी मानवों में

(b) सभी प्राणियों में

(c) सभी पक्षियों में

(d) सभी पशुओं में

AJAY KUMAR

उत्तर- (b)

(2) सच्चा देश-प्रेमी-

(a) वीर सपूतों की कहानियाँ सुनाता है।

(b) मातृभूमि का जयघोष करता है।

(c) परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है।

(d) अपनी भूमि देश के लिए दान कर देता है।

उत्तर- (c)

(3) देश-प्रेम का अभिप्राय है-

(a) देश के प्रति कोमल भावों का उदय

(b) अनथक प्रयत्न करके देश का निर्माण करना

(c) देशहित के लिए शत्रु से संघर्ष करना

(d) देश के प्रति व्यक्ति का स्वाभाविक ममत्व

उत्तर- (d)

(4) संध्या समय पक्षी अपने घोंसलों में वापस चले जाते हैं, क्योंकि-

(a) दिन-भर घूमकर वे थक जाते है।

(b) उन्हें रात को आराम करना है।

(c) जानवर भी अपने निवास-स्थान को चले जाते हैं।

(d) उन्हें अपना नीड़ प्यारा होता है।

उत्तर- (d)

AJAY KUMAR

(5) वही देश महान है जहाँ के लोग-

(a) शिक्षित और प्रशिक्षित हैं।

(b) बेरोजगार तथा निरूद्यमी नहीं है।

(c) कृषि और व्यापार से धनार्जन करते हैं।

(d) त्याग और उत्सर्ग में सदा आगे रहते हैं।

उत्तर- (d)

(7) आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा हो, जिससे राष्ट्र के हृदय-मन-प्राण के सूक्ष्मतम और गम्भीरतम संवेदन मुखरित हों और हमारा पाठ्यक्रम यूरोप तथा अमेरिका के पाठ्यक्रम पर आधरित न होकर हमारी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करे। भारतीय भाषाओं, भारतीय इतिहास, भारतीय दर्शन, भारतीय धर्म और भारतीय समाजशास्त्र को हम सर्वोपरि स्थान दें। उन्हें अपने शिक्षाक्रम में गौण स्थान देकर या शिक्षित जन को उनसे वंचित रखकर हमने राष्ट्रीय संस्कृति में एक महान रिक्ति को जन्म दिया है, जो नयी पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहा है। हम राष्ट्रीय परम्परा से ही नहीं, सामयिक जीवन प्रवाह से भी दूर जा पड़े हैं। विदेशी पश्चिमी चश्मों के भीतर से देखने पर अपने घर के प्राणी भी बे-पहचाने और अजीब से लगने लगे हैं। शिक्षित जन और सामान्य जनता के बीच खाई बढ़ती गई है और विश्व संस्कृति के दावेदार होने का दम्भ करते हुए भी हम घर में वामन ही बने रह गए हैं। इस स्थिति को हास्यास्पद ही कहा जा सकता है।

(1) उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपर्युक्त शीर्षक है-

(a) हमारा शिक्षा-माध्यम और पाठ्यक्रम

(b) शिक्षित जन और सामान्य जनता

(c) हमारी सांस्कृतिक परम्परा

(d) शिक्षा का माध्यम

उत्तर- (a)

(2) हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा इसलिए होना चाहिए क्योंकि उसमें-

(a) विदेशी पाठ्यक्रम का अभाव होता है।

(b) भारतीय इतिहास और भारतीय दर्शन का ज्ञान निहित होता है।

(c) सामयिक जीवन निरन्तर प्रवाहित होता रहता है।

(d) भारतीय मानस का स्पन्दन ध्वनित होता है।

उत्तर- (d)

(3) हमारी शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जिसमें

(a) सामयिक जन-संस्कृति का समावेश हो।

(b) भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व हो।

(c) पाश्चात्य संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कराने की क्षमता हो।

(d) आधुनिक वैज्ञानिक विचारधाराओं का सन्निवेश हो।

उत्तर- (b)

(4) हमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक परम्परा के साथ-साथ जुड़ना चाहिए-

(a) सामयिक जीवन-प्रवाह से

(b) समसामयिक वैज्ञानिक विचारधारा से

(c) अद्यतन साहित्यिक परम्परा से

(d) भारतीय नव्य समाजशास्त्र से

उत्तर- (d)

(5) शिक्षित जन और सामान्य जनता में निरन्तर अन्तर बढ़ने का कारण है कि हम-

(a) भारतीय समाजशास्त्र को सर्वोपरि स्थान नहीं देते।

(b) विदेशी चश्मे लगाकर अपने लोगों को देखते हैं।

(c) भारतीय भाषाओं का अध्ययन नहीं करते।

AJAY KUMAR

(d) नई पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहे हैं।

उत्तर- (b)

(8) सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों को सदा के लिए बाँध देते हैं। वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है, कभी लड़ने-मरने से, खूब बहाने से, तोप तलवार के सामने बलिदान करने से होती है, तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते है। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है जब कभी उसका विकास हुआ तभी एक रौनक, एक रंग, एक बहार संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। वीरों को बनाने के कारखाने नहीं होते। वे तो देवदार के वृक्ष की भाँति जीवन रूपी वन में स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं। "जीवन के केन्द्र में निवास करो और सत्य की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह छोड़कर जीवन के अन्दर की तहों में पहुँचें तब नये रंग खिलेंगे।' यही वीरता का सन्देश है।

(1) इस गद्यांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक होगा-

(a) वीरता संस्मरण

(b) सच्ची वीरता

(c) वीरों का उत्पन्न होना

(d) देवदार और वीर

उत्तर- (b)

(2) वीरता का संदेश क्या है ?

(a) यह संकल्प कि किसी भी हालत में युद्ध जीतना है

(b) बुद्ध जैसे राजा की भाँति विरक्त होना

(c) उद्देश्य के लिए सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना

(d) हमेशा नया और निराला रहना

उत्तर- (c)

AJAY KUMAR

(3) वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई, क्योंकि दोनों-

(a) खाना-पीना मिलने पर ही बढ़ते हैं

(b) का दिल उदार होता है

(c) सत्य का हमेशा पालन करते है

(d) स्वयं पैदा होते है और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं

उत्तर- (d)

(4) निम्नलिखित में से कौन-सा रूप वीरता का नहीं है ?

(a) क्रोध

(b) युद्ध

(c) त्याग

(d) दान

उत्तर- (a)

(5) वीरता का एक विशेष लक्षण है-

(a) नयापन

(b) नकल

(c) हास्य

(d) करुणा

उत्तर- (a)

(9) राज भाषा का अर्थ राजा या राज्य की भाषा है। वह भाषा जिसमें शासक या शासन का काम होता है। राष्ट्र भाषा वह है जिसका व्यवहार राष्ट्र के सामान्य जन करते है। राजभाषा का क्षेत्र सीमित होता है। राष्ट्र भाषा सारे देश की संपर्क भाषा है। राष्ट्र भाषा के साथ

AJAY KUMAR

जनता का भावात्मक लगाव रहता है क्योंकि उसके साथ जनसाधारण की सांस्कृतिक परंपरायें जुड़ी रहती हैं। राजभाषा के प्रति वैसा सम्मान हो तो सकता है, लेकिन नहीं भी हो सकता है, क्योंकि वह अपने देश की भी हो सकती है। किसी गैर देश से आये शासक की भी हो सकती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में आज हिन्दी राजभाषा के रूप में ही विराजित है। 14 सितंबर, 1949 ई. को भारत के संविधान में हिन्दी को मान्यता प्रदान की गई है। संविधान की धारा 120 के अनुसार संसद का कार्य हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जाता है। धारा 210 के अंतर्गत राज्यों के विधानमंडलों का कार्य अपने-अपने राज्य की राजभाषा या हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। इस भाषा का प्रसार तथा प्रचार के लिए महात्मा गाँधी का योगदान रहा है। धारा 344 में राष्ट्रपति को शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिक करने के लिए कहा गया है।

(1) राष्ट्रभाषा के प्रमुख लक्षणों में से इनमें से कौन-सा व्यवहार नहीं है ?

(a) क्षेत्र सीमित होता है

(b) सामान्य जन भाषा है

(c) सारे देश की संपर्क भाषा है

(d) जनता की भावनात्मक तथा सांस्कृतिक भाषा है

उत्तर- (a)

(2) हिन्दी भाषा को भारतीय संविधान में किस साल मान्यता प्राप्त हुई है ?

(a) 1947

(b) 1948

(c) 1949

(d) 1950

उत्तर- (c)

(3) इस अनुच्छेद का निम्न में से उचित शीर्षक चुनिए।

(a) राजभाषा और राष्ट्रभाषा

(b) भावनात्मक भाषा

AJAY KUMAR

(c) जनभाषा

(d) बोलचाल की भाषा

उत्तर- (a)

(4) इस अनुच्छेद के सार में किस भाषा को ज्यादा जोर देने की बात कही गयी है ?

(a) भारतीय सभी भाषाओं को

(b) हिन्दी भाषा को

(c) संविधानिक भाषा को

(d) दक्षिण की भाषा को

उत्तर- (b)

(5) भारतीय किस भाषा को विश्व भाषा बनने की ज्यादा संभावना है ?

(a) कन्नड़

(b) मराठी

(c) गुजराती

(d) हिन्दी

उत्तर- (d)

(6) धारा 344 किसे हिन्दी भाषा का प्रयोग ज्यादा शासकीय कार्य के लिए करने की बात कही गयी है ?

(a) मुख्यमंत्री

(b) प्रधानमंत्री

(c) राष्ट्रपति

(d) शासकगण

AJAY KUMAR

उत्तर- (c)

(7) आजादी के बाद देश में राजभाषा के रूप में कौन-सी भाषा स्थित है ?

(a) कन्नड़

(b) पंजाबी

(c) हिन्दी

(d) अंग्रेजी

उत्तर- (c)

(8) भारत वर्ष में हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है ?

(a) 2 अक्टुबर

(b) 15 अगस्त

(c) 26 जनवरी

(d) 14 सितंबर

उत्तर- (d)

(9) हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में किसका योगदान रहा ?

(a) महात्मा गाँधीजी

(b) जवाहरलाल नेहरु

(c) सुभाष चंद्र बोस

(d) जय प्रकाश नारायण

उत्तर- (a)

AJAY KUMAR

(10) संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी का उल्लेख किसमें है ?

(a) भारत में

(b) संविधान में

(c) संविधान के 343 धारा में

(d) सभी धारा के अंतर्गत

उत्तर- (c)

(11) राजभाषा का अर्थ क्या है ?

(a) देश की भाषा

(b) नगर की भाषा

(c) राजा या राज्य की भाषा

(d) विदेशियों की भाषा

उत्तर- (c)

(12) संविधान के किस धारा के अंतर्गत संसद का कार्य-कलाप हिन्दी या अंग्रेजी में करने का उल्लेख है ?

(a) धारा 210

(b) धारा 120

(c) धारा 343

(d) धारा 344

उत्तर- (b)

(13) हिन्दी भाषा की लिपि क्या है ?

(a) द्राविड़

AJAY KUMAR

(b) देवनागरी

(c) ब्राह्मी

(d) खरोष्टी

उत्तर- (b)

(14) इनमें से कौन-सी धारा हिन्दी भाषा के लिए अन्वित नहीं है ?

(a) धारा 100

(b) धारा 120

(c) धारा 210

(d) धारा 343

उत्तर- (a)

(15) राज्य विधानमंडलों के कार्य-कलाप संबंधी भाषा का उल्लेख संविधान की कौन-सी धारा करती है ?

(a) धारा 210

(b) धारा 343

(c) धारा 344

(d) धारा 345

उत्तर- (a)

.....

AJAY KUMAR

# शब्द-शक्ति (Word-Power)

शब्द का अर्थ बोध करानेवाली शक्ति 'शब्द शक्ति' कहलाती है।

शब्द-शक्ति को संक्षेप में 'शक्ति' कहते हैं। इसे 'वृत्ति' या 'व्यापार' भी कहा जाता है।

सरल शब्दों में- मिठाई या चाट का नाम सुनते ही मुँह में पानी भर आता है। साँप या भूत का नाम सुनते ही मन में भय का संचार हो जाता है। यह प्रभाव अर्थगत है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का अर्थगत प्रभाव पड़ता है वह शब्दशक्ति है।

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्य चिन्तामणि ने लिखा है कि "जो सुन पड़े सो शब्द है, समुझि परै सो अर्थ" अर्थात जो सुनाई पड़े वह शब्द है तथा उसे सुनकर जो समझ में आवे वह उसका अर्थ है। स्पष्ट है कि जो ध्वनि हमें सुनाई पड़ती है वह 'शब्द' है, और उस ध्वनि से हम जो संकेत या मतलब ग्रहण करते है वह उसका 'अर्थ' है।

शब्द से अर्थ का बोध होता है। अतः शब्द हुआ 'बोधक' (बोध करानेवाला) और अर्थ हुआ 'बोध्य' (जिसका बोध कराया जाये)।

जितने प्रकार के शब्द होंगे उतने ही प्रकार की शक्तियाँ होंगी। शब्द तीन प्रकार के- वाचक, लक्षक एवं व्यंजक होते हैं तथा इन्हीं के अनुरूप तीन प्रकार के अर्थ- वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ होते हैं। शब्द और अर्थ के अनुरूप ही शब्द की तीन शक्तियाँ- अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना होती हैं।

| शब्द | अर्थ | शक्ति |
|---|---|---|
| वाचक/अभिधेय | वाच्यार्थ/अभिधेयार्थ/मुख्यार्थ | अभिधा |
| लक्षक/लाक्षणिक | लक्ष्यार्थ | लक्षणा |
| व्यंजक | व्यंग्यार्थ/व्यंजनार्थ | व्यंजना |

वाच्यार्थ कथित होता है, लक्ष्यार्थ लक्षित होता है और व्यंग्यार्थ व्यंजित, ध्वनित, सूचित या प्रतीत होता है। शब्द में अर्थ तीन प्रकार से आता है। अर्थ के जो तीन स्त्रोत हैं उन्हीं के आधार पर शब्द की शक्तियों का नामकरण किया जाता है।

AJAY KUMAR

## शब्द शक्ति के प्रकार

प्रक्रिया या पद्धति के आधार पर शब्द-शक्ति तीन प्रकार के होते हैं-

(1) अभिधा (Literal Sense Of a Word)

(2) लक्षणा (Figurative Sense Of a Word)

(3) व्यंजना (Suggestive Sense Of a Word)

अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है, लक्षणा से मुख्यार्थ से संबद्ध लक्ष्यार्थ का, लेकिन व्यंजना से न मुख्यार्थ का बोध होता है न लक्ष्यार्थ का, बल्कि इन दोनों से भिन्न अर्थ व्यंग्यार्थ का बोध होता है।

***(1) अभिधा (Literal Sense Of a Word)*** - जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का साक्षात् संकेतित (पहला/मुख्य/प्रसिद्ध/प्रचलित/पूर्वविदित) अर्थ बोध हो, उसे 'अभिधा' कहते हैं।

जैसे- 'बैल खड़ा है।'- इस वाक्य को सुनते ही बैल नामक एक विशेष प्रकार के जीव को हम समझ लेते हैं, उसे आदमी या किताब नहीं समझते।

यहाँ 'बैल' वाचक शब्द है जिसका मुख्यार्थ विशेष जीव है। परंपरा, कोश, व्याकरण आदि से यह अर्थ पूर्वविदित (पहले से मालूम) है। यानी शब्द और उसके अर्थ के बीच किसी प्रकार की बाधा नहीं है।

(अभिधा का अर्थ है 'नाम' ।) दूसरे शब्दों में नामवाची अर्थ को बतलानेवाला शक्ति को अभिधा कहते हैं। नाम जाति, गुण, द्रव्य या क्रिया का होता है और ये सभी साक्षात् संकेतित होते हैं। अभिधा को 'शब्द की प्रथमा शक्ति' भी कहा जाता है।)

उदाहरण- निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आरंभ की ये पंक्तियाँ अभिधा के प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं-

"वह तोड़ती पत्थर।

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।"

AJAY KUMAR

इन पंक्तियों में कवि, शब्दों से सीधे-सीधे जो अर्थ प्रकट करता है, वही अर्थ कविता का है- कवि ने पत्थर तोड़ती हुई स्त्री को इलाहाबाद के पथ पर देखा।

इस शब्द-शक्ति के द्वारा तीन प्रकार के शब्दों का बोध होता है- रूढ़ शब्द (जैसे-कृष्ण), यौगिक शब्द

(जैसे- पाठशाला) एवं योगरूढ़ शब्द (जैसे- जलज) ।

अभिधा का महत्व : अलंकारशास्त्रियों के अनुसार काव्य में अभिधा शब्द-शक्ति का विशेष महत्त्व नहीं है। लेकिन अभिधा एकदम से महत्वहीन नहीं है।

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्य देव का मानना है : ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणालीन/अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।''

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है : ''वास्तव में व्यंग्यार्थ या लक्ष्यार्थ के कारण चमत्कार आता है; परन्तु वह चमत्कार होता है वाच्यार्थ में ही। अतः इस वाच्यार्थ को देने वाली अभिधा शक्ति का अपना महत्व है।'' आचार्य शुक्ल अन्यत्र लिखते हैं : ''जब कविता में कल्पना और सौंदर्यवाद का अतिशय जोर हो जाता तब जीवन की वास्तविकता पर बल देने के लिए काव्य में भी अभिधा शक्ति का महत्त्व बढ़ जाता है।''

***(2) लक्षणा (Figurative Sense Of a Word)*** - अभिधा के असमर्थ हो जाने पर जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ बोध हो, उसे 'लक्षणा' कहते हैं।

लक्षणा की शर्ते : लक्षणा के लिए तीन शर्ते है-

(i) मुख्यार्थ में बाधा- इसमें मुख्य अर्थ या अभिधेय अर्थ लागू नहीं होता है वह बाधित (असंगत) हो जाता है।

(ii) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध- जब मुख्य अर्थ बाधित हो जाता है, पर यह दूसरा अर्थ अनिवार्य रूप से मुख्य अर्थ से संबंधित होता है।

AJAY KUMAR

(iii) रूढ़ि या प्रयोजन- मुख्य अर्थ को छोड़कर उसके दूसरे अर्थ को अपनाने के पीछे या तो कोई रूढ़ि होती है या कोई प्रयोजन।

रूढ़ि कहते हैं प्रयोग-प्रवाह, प्रसिद्ध को। अर्थात वैसा बोलने का चलन है, तरीका है। किसी बात को कहने की जो प्रथा हो जाती है, वह 'रूढ़ि' कहलाती है।

जैसे- ''मुझे देखते ही वह नौ दो ग्यारह हो गया।''- इस वाक्य में 'नौ दो ग्यारह होना' (मुहावरा) का अर्थ है- 'भाग जाना।' इसके बदले में यदि कोई कहे कि 'मुझे देखते ही वह दस बीस चालीस हो गया।' या 'मुझे देखते ही वह ग्यारह दो नौ हो गया।' तो इसका कोई अर्थ नहीं होगा क्योंकि ऐसी कोई रूढ़ि नहीं है। यानी भागने की रूढ़ि अर्थात प्रसिद्ध नौ दो ग्यारह में ही है।

प्रयोजन कहते है अभिप्राय या मतलब को। अर्थात हमारे मन में कोई ऐसा अभिप्राय है जो प्रयुक्त शब्द से व्यक्त नहीं हो रहा है तब उसके लिए दूसरा शब्द प्रयोग कर अपना अभिप्राय प्रकट करते हैं। जैसे हम किसी को अतिशय मूर्ख कहना चाहते हैं तो ''तुम मूर्ख हो।'' कह देने से मूर्खता की अतिशयता प्रकट नहीं होती, लेकिन यदि हम कहे कि ''तुम बैल हो।'' तो इसका अर्थ है कि तुम अतिशय मूर्ख (बुद्धिमान) हो। यहाँ 'बैल' शब्द का प्रयोग मूर्खता की अतिशयता बताने के प्रयोजन से किया गया है।

लक्षणा की शास्त्रीय परिभाषा : मुख्यार्थ के बाधित होने पर जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ रूढ़ि या प्रयोजन के कारण लिया जाए, वह 'लक्षणा' है।

उदाहरण-

(i) सभी मुहावरे व लोकोक्तियाँ- सभी मुहावरों एवं लोकोक्तियों में लक्षणा शब्द-शक्ति के सहारे अर्थ ग्रहण किया जाता है। जैसे- ''उसके लिए चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है।''- इस वाक्य में 'चुल्लू भर पानी में डूब मरना (मुहावरा)' से हमें शब्दों का मुख्यार्थ अभीष्ट नहीं है। हम इनसे दूसरा अर्थ लेते हैं कि 'बड़ी लज्जा की बात है।' इसी तरह 'राम चरण की जगह उसके भतीजे पिण्टू के घर के मालिक होने पर उसके पड़ोसी ने कहा- हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान।'- इस वाक्य में 'हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान (लोकोक्ति) से हम शब्दों का मुख्यार्थ नहीं लेते, बल्कि हम इनसे दूसरा अर्थ लेते हैं कि उक्त घर में 'सज्जन/योग्य/गुणवान व्यक्ति के स्थान पर दुर्जन/अयोग्य/गुणहीन व्यक्ति का आधिपत्य हो गया है।'

(ii) एक पद्यबद्ध उदाहरण- निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की अंतिम पंक्ति-

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं।

दृष्टि मार नहीं खाती, प्राणी मार खाता है, दृष्टि नहीं रोती प्राणी रोता है। इसलिए दृष्टि 'जो मार खा रोई नहीं'- इस कथन में अभिधेय अर्थ या मुख्य अर्थ लागू नहीं होता, बाधित हो जाता है। तब हम उससे संबंधित अन्य अर्थ दूसरा अर्थ लेते हैं- कवि उस स्त्री की बात कह रहा है जो जीवन संघर्ष में बार-बार मार खाकर या आघात झेलकर रोई नहीं।

(iii) एक और पद्यबद्ध उदाहरण- दिनकर की काव्य-कृति 'रेणुका' से-

विद्युत की इस चकाचौंध में,

देख, दीप की लौ रोती है,

अरी, ह्रदय को थाम,

महल के लिए झोपड़ी बलि होती है।

इस पद्य का मुख्यार्थ स्पष्ट है कि विद्युत की इस चकाचौंध में दीप की लौ रोती है। अरी ! ह्रदय को थाम ले, यहाँ महल के लिए झोपड़ी बलि होती है। किन्तु इसका लक्ष्यार्थ यह है कि महलों में रहनेवाले लोगों को जो वैभव प्राप्त है वह वस्तुतः झोंपड़ी में रहनेवाले मजदूरों के श्रम का ही परिणाम है। इस पद्य में 'महल' का अर्थ महल के निवासी अर्थात 'धनी' और 'झोपड़ी' का अर्थ झोंपड़ी के निवासी अर्थात 'निर्धन' अर्थ भी लक्षणा शब्द-शक्ति से गृहीत होते हैं। इसी प्रकार इस पद्य में प्रयुक्त 'विद्युत की चकाचौंध' का 'वैभव' अर्थ और 'दीपक की लौ का रोना' का 'श्रमिक जीवन' अर्थ भी लक्षणा शब्द-शक्ति द्वारा ज्ञात होते हैं।

## लक्षणा के भेद

लक्षणा के भेद कारण के आधार पर लक्षणा के दो भेद हैं-

(1) रूढ़ा लक्षणा

(2) प्रयोजनवती लक्षणा

(1) रूढ़ा लक्षणा - जहाँ रूढ़ि के कारण मुख्यार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ का बोध हो, वहाँ 'रूढ़ा लक्षणा' होती है।

उदाहरण :

(i) गद्यात्मक उदाहरण : "आप तो एकदम राजा हरिश्चन्द्र है" का लक्ष्यार्थ है आप हरिश्चन्द्र के समान सत्यवादी हैं। सत्यवादी व्यक्ति को राजा हरिश्चन्द्र कहना रूढ़ि है।

(ii) पद्यबद्ध उदाहरण : 'आगि बड़वाग्नि ते बड़ी है आगि पेट की' (तुलसी) का मुख्यार्थ है- बड़वाग्नि यानी समुद्र में लगने वाली आग से बड़ी पेट की आग होती है। पेट में आग नहीं, भूख लगती है इसलिए मुख्यार्थ की बाधा है। लक्ष्यार्थ है तीव्र और कठिन भूख को व्यक्त करना जो पेट की आग के जरिये किया गया है। तीव्र और कठिन भूख के लिए 'पेट में आग लगना' कहना रूढ़ि है।

(2) प्रयोजनवती लक्षणा - जहाँ प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ का बोध हो, वहाँ 'प्रयोजनवती लक्षणा' होती है।

उदाहरण :

(i) "शिवाजी सिंह है"- यदि हम कहें कि शिवाजी सिंह हैं। तो सिंह शब्द के मुख्यार्थ (विशेष जीव) में बाधा पड़ जाती है। हम सब जानते है कि शिवाजी आदमी थे, सिंह नहीं लेकिन यहाँ शिवाजी के लिए सिंह शब्द का प्रयोग विशेष प्रयोजन के लिए किया गया है। शिवाजी को वीर या साहसी बताने के लिए सिंह शब्द का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार 'सिंह' शब्द का 'वीर' या 'साहसी' अर्थ लक्ष्यार्थ है।

(ii) "लड़का शेर है"- यदि हम कहें कि 'लड़का शेर है।' तो इसका लक्ष्यार्थ है 'लड़का निडर है।' यहाँ पर शेर का सामान्य अर्थ अभीष्ट नहीं है। लड़के को निडर बताने के प्रयोजन से उसके लिए शेर शब्द का प्रयोग किया गया है।

(iii) एक पद्यबद्ध उदाहरण :

कौशल्या के वचन सुनि भरत सहित रनिवास।

व्याकुल विलप राजगृह मनहुँ शोक निवास।। -तुलसी

कौशल्या के वचन सुनकर समस्त राजगृह व्याकुल होकर रो रहा है। 'राजगृह' अर्थात राजभवन नहीं रो सकता। 'राजगृह' का लक्ष्यार्थ है 'राजगृह में रहनेवाले लोग' । समस्त राजगृह के रोने से अत्यधिक दुःख को व्यक्त करने का विशेष प्रयोजन है।

प्रयोजनवती लक्षणा के भेद

AJAY KUMAR

भेद लक्षण/पहचान-चिह्न परिभाषा एवं उदाहरण

(1) गौणी लक्षणा सादृश्य संबंध जहाँ सादृश्य संबंध अर्थात समान गुण या धर्म के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो।

उदाहरण : 'मुख कमल'। सादृश्य संबंध के द्वारा लक्ष्यार्थ का बोध हो रहा है कि मुख कमल के समान कोमल है।

(i) सारोपा

(स +_आरोपा) विषय/उपमेय/आरोप का विषय + विषयी/उपमान/आरोप्यमाण (दोनों) जहाँ विषय और विषयी दोनों का शब्द निर्देश करते हुए अभेद बताया जाए।

उदाहरण : 'सीता गाय है।' का लक्ष्यार्थ है- सीता सीधी-सादी है। यहाँ गाय (विषयी) का सीधापन-सादापन सीता (विषय) पर आरोपित है।

(ii) साध्यावसाना (स + अध्यवसाना) अध्यवसान =आत्मसात, निगरण विषयी (केवल) जहाँ केवल विषयी का कथन कर अभेद बताया जाए।

उदाहरण : यदि कोई मालिक खीझ कर नौकर को कहे कि 'बैल कहीं का।' तो इस वाक्य में विषय (नौकर) का निर्देश नहीं है, केवल विषयी (बैल) का कथन है।

(2) शुद्धा लक्षणा सादृश्येतर संबंध सादृश्येतर

= सादृश्य + इतर जहाँ सादृश्येतर संबंध (सादृश्य संबंध के अतिरिक्त किसी अन्य संबंध) से लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो।

सादृश्येतर संबंध हैं- आधार-आधेय भाव, सामीप्य, वैपरीत्य, कार्य-कारण, तात्कर्म्य आदि।

उदाहरण :

(i) आधार-आधेय संबंध का उदाहरण : 'महात्मा गाँधी को देखने के लिए सारा शहर उमड़ पड़ा।' यहाँ 'शहर' का मुख्यार्थ (नगर) बाधित है, 'शहर' का लक्ष्यार्थ है- 'शहर के निवासी' । शहर है- आधार और शहर का निवासी है- आधेय।

(ii) सामीप्य संबंध का उदाहरण : आँचल में है दूध और आँखों में पानी। (यशोधरा) यहाँ आँचल का मुख्यार्थ (साड़ी का छोर) बाधित है, आँचल मैथलीशरण गुप्त का लक्ष्यार्थ है- स्तन। चूँकि आँचल सदा स्तन के समीप रहता है, इसलिए आँचल और स्तन में सामीप्य संबंध है।

(iii) वैपरीत्य संबंध का उदाहरण : 'तुम सूख-सूख कर हाथी हुए जा रहे हो।' कोई व्यक्ति सूख-सूखकर हाथी नहीं हो सकता है, लक्ष्यार्थ है- तुम बहुत दुर्बल हो गये हो।

(iv) वैपरीत्य संबंध का एक और उदाहरण : 'उधो तुम अति चतुर सुजान' यहाँ जब गोपियाँ उद्धव को चतुर और सुजान बता रही है तो सूरदास वे वस्तुतः उद्धव को सीधा और अजान कह रही है। यहाँ चतुर और सुजान के मुख्यार्थ बाधित है और उनमें चतुरता का अभाव और अज्ञता का बोध कराना लक्ष्यार्थ है।

AJAY KUMAR

(i) उपादान लक्षणा (उपादान = ग्रहण करना) मुख्यार्थ + लक्ष्यार्थ (दोनों) जहाँ मुख्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ का भी ग्रहण हो।

उदाहरण : 'पगड़ी की लाज रखिए।' यहाँ 'पगड़ी' का मुख्यार्थ है- पगड़ी, पाग और लक्ष्यार्थ है- 'पगड़ी वाला' । यहाँ लक्ष्यार्थ के साथ-साथ मुख्यार्थ का भी ग्रहण किया गया है।

(ii) लक्षण-लक्षणालक्ष्यार्थ (केवल) जहाँ मुख्यार्थ को छोड़कर (त्याग कर) केवल लक्ष्यार्थ का ग्रहण हो।

उदाहरण :

(i) 'वह पढ़ाने में बहुत कुशल है।'- इस वाक्य में 'कुशल' का मुख्यार्थ (कुशलाने वाला) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (दक्ष) का ग्रहण किया गया है।

(ii) 'माधुरी नृत्य में प्रवीण है।'- इस वाक्य में 'प्रवीण' का मुख्यार्थ (वीणा बजाने में निपुण) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (कुशल) को ग्रहीत किया गया है।

(iii) 'देवदत्त चौकन्ना हो गया।'- इस वाक्य में 'चौकन्ना' का मुख्यार्थ (चार कानों वाला) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (सावधान) का ग्रहण किया गया है।

लक्षणा का महत्त्व : काव्य में लक्षणा के प्रयोग से जीवन के अनुभव को समृद्ध किया जाता है। कल्पना के सहारे सादृश्य और साधर्म्य के अनेकानेक विधानों द्वारा अनुभवों की सूक्ष्मता और विस्तार को प्रकट किया जाता है। इसलिए काव्य में लक्षणा शब्द-शक्ति की प्रबलता है।

***(3) व्यंजना (Suggestive Sense Of a Word)*** - अभिधा व लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ बोध हो, उसे 'व्यंजना' कहते हैं।

'व्यंजना' (वि + अंजना) शब्द का अर्थ है- 'विशेष प्रकार का अंजन' । अंजन लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ती है, पर विशेष प्रकार के अंजन लगाने से परोक्ष वस्तु भी दिखने लगती है। इसी प्रकार व्यंजना शब्द-शक्ति से अकथित अर्थ स्पष्ट होते हैं। जब अभिधा एवं लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है तब व्यंजना शक्ति काव्य के छिपे हुए व्यंग्यार्थ का बोध कराती है।

व्यंग्यार्थ को 'ध्वन्यार्थ', 'सूच्यार्थ', 'आक्षेपार्थ', 'प्रतीयमानार्थ' आदि भी कहा जाता है।

उदाहरण :

(i) प्रसिद्ध उदाहरण : 'सूर्य अस्त हो गया।' इस वाक्य के सुनने के उपरांत प्रत्येक व्यक्ति इससे भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण करता है। प्रसंग विशेष के अनुसार इस वाक्य के अनंत व्यंजनार्थ हो सकते हैं।

AJAY KUMAR

| वाक्य | प्रसंग विशेष (वक्ता-श्रोता) | अर्थ |
|---|---|---|
| सूर्य अस्त हो गया | पिता के पुत्र से कहने पर | पढ़ाई-लिखाई शुरू करो। |
| सास के बहू से कहने पर | चूल्हा-चौका आरंभ करो। | |
| किसान के हलवाहे से कहने पर | हल चलाना बंद करो | |
| पशुपालक के चरवाहे से कहने पर | पशुओं को घर ले चलो। | |
| पुजारी के चेले से कहने पर | संध्या-पूजन का प्रबंध करो। | |
| राहगीर के अपने साथी से कहने पर | ठहरने का इंतजाम करो। | |
| कारवाँ-प्रमुख के उपप्रमुख से कहने पर | पड़ाव की व्यवस्था करो। | |

इस तरह इस एक वाक्य से वक्ता-श्रोता के अनुसार न जाने कितने अर्थ निकल सकते हैं। यहाँ जिसने भी अर्थ दिये गये है वे साक्षात् संकेतित नहीं है, इसलिए इनमें अभिधा शक्ति नहीं है। इनमें लक्षणा शक्ति भी नहीं है, कारण है कि उक्त वाक्य लक्षणा की शर्त मुख्यार्थ में बाधा को पूरा नहीं करता क्योंकि यहाँ सूर्य का जो मुख्यार्थ है वह मौजूद है। साफ है कि इनमें पायी जानेवाली शब्द-शक्ति व्यंजना है।

(ii) एक पद्यबद्ध उदाहरण :

*प्रभुहिं चितइ पुनि चितइ महि राजत लोचन लोल।*

*खेलत मनसिजु-मीन-जुग, जनु विधुमंडल डोल।।* - तुलसी

यहाँ धनुष-यज्ञ के प्रसंग में सीता की मनोदशा का चित्रण किया गया है। इस पद्य की पहली पंक्ति का वाच्यार्थ/अभिधेयार्थ यह है कि सीता पहले राम की ओर देखती है और फिर धरती की ओर। इससे उनके चपल नेत्र शोभित हो रहे हैं। किन्तु व्यंजनार्थ यह है कि सीता के मन में इस समय उत्सुकता, हर्ष, लज्जा आदि के भाव क्षण-क्षण में प्रकट हो रहे हैं। राम को देखकर उत्सुकता और हर्ष का भाव उत्पन्न होता है, साथ ही दूसरों की उपस्थिति का ध्यान कर उनके मन में तुरंत लज्जा भी आ जाती है, और वे धरती की ओर देखने लगती है। पर हर्ष और उत्सुकता के वशीभूत होने से वे अपने को रोक नहीं पाती और फिर राम की और देखती है, किन्तु लज्जावश फिर धरती की ओर देखने लगती है। इस प्रकार यह चक्र कुछ समय तक चलता रहता है।

AJAY KUMAR

स्पष्ट है कि उक्त पद्य की पहली पंक्ति से हमें हर्ष, उत्सुकता, लज्जा आदि भावों की जो प्रतीति होती है वह न तो अभिधा शक्ति से होती है और न लक्षणा शक्ति से, बल्कि होती है व्यंजना शक्ति से।

(iii) एक और पद्यबद्ध उदाहरण :

*चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय।*

*दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।* -कबीर

यहाँ चलती चक्की को देखकर कबीरदास के दुःखी होने की बात कही गई है। उसके द्वारा यह अर्थ व्यंजित होता है कि संसार चक्की के समान है जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच आदमी पिसता रहता है।

**प्रयोजनवती लक्षणा के भेद**

भेद लक्षण/पहचान-चिह्न परिभाषा एवं उदाहरण

(1) गौणी लक्षणा सादृश्य संबंध जहाँ सादृश्य संबंध अर्थात समान गुण या धर्म के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो।

उदाहरण : 'मुख कमल'। सादृश्य संबंध के द्वारा लक्ष्यार्थ का बोध हो रहा है कि मुख कमल के समान कोमल है।

(i) सारोपा

(स +_आरोपा) विषय/उपमेय/आरोप का विषय + विषयी/उपमान/आरोप्यमाण (दोनों) जहाँ विषय और विषयी दोनों का शब्द निर्देश करते हुए अभेद बताया जाए।

उदाहरण : 'सीता गाय है।' का लक्ष्यार्थ है- सीता सीधी-सादी है। यहाँ गाय (विषयी) का सीधापन-सादापन सीता (विषय) पर आरोपित है।

(ii) साध्यावसाना (स + अध्यवसाना) अध्यवसान =आत्मसात, निगरण विषयी (केवल) जहाँ केवल विषयी का कथन कर अभेद बताया जाए।

उदाहरण : यदि कोई मालिक खीझ कर नौकर को कहे कि 'बैल कहीं का।' तो इस वाक्य में विषय (नौकर) का निर्देश नहीं है, केवल विषयी (बैल) का कथन है।

(2) शुद्धा लक्षणा सादृश्येतर संबंध

सादृश्येतर = सादृश्य + इतर जहाँ सादृश्येतर संबंध (सादृश्य संबंध के अतिरिक्त किसी अन्य संबंध) से लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो।

सादृश्येतर संबंध हैं- आधार-आधेय भाव, सामीप्य, वैपरीत्य, कार्य-कारण, तात्कर्म्य आदि।

उदाहरण :

(i) आधार-आधेय संबंध का उदाहरण : 'महात्मा गाँधी को देखने के लिए सारा शहर उमड़ पड़ा।' यहाँ 'शहर' का मुख्यार्थ (नगर) बाधित है, 'शहर' का लक्ष्यार्थ है- 'शहर के निवासी' । शहर है- आधार और शहर का निवासी है- आधेय।

(ii) सामीप्य संबंध का उदाहरण : आँचल में है दूध और आँखों में पानी। (यशोधरा) यहाँ आँचल का मुख्यार्थ (साड़ी का छोर) बाधित है, आँचल मैथलीशरण गुप्त का लक्ष्यार्थ है- स्तन। चूँकि आँचल सदा स्तन के समीप रहता है, इसलिए आँचल और स्तन में सामीप्य संबंध है।

(iii) वैपरीत्य संबंध का उदाहरण : 'तुम सूख-सूख कर हाथी हुए जा रहे हो।' कोई व्यक्ति सूख-सूखकर हाथी नहीं हो सकता है, लक्ष्यार्थ है- तुम बहुत दुर्बल हो गये हो।

(iv) वैपरीत्य संबंध का एक और उदाहरण : 'उधो तुम अति चतुर सुजान' यहाँ जब गोपियाँ उद्धव को चतुर और सुजान बता रही है तो सूरदास वे वस्तुतः उद्धव को सीधा और अजान कह रही है। यहाँ चतुर और सुजान के मुख्यार्थ बाधित है और उनमें चतुरता का अभाव और अज्ञता का बोध कराना लक्ष्यार्थ है।

(i) उपादान लक्षणा (उपादान = ग्रहण करना) मुख्यार्थ + लक्ष्यार्थ (दोनों) जहाँ मुख्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ का भी ग्रहण हो।

उदाहरण : 'पगड़ी की लाज रखिए।' यहाँ 'पगड़ी' का मुख्यार्थ है- पगड़ी, पाग और लक्ष्यार्थ है- 'पगड़ी वाला' । यहाँ लक्ष्यार्थ के साथ-साथ मुख्यार्थ का भी ग्रहण किया गया है।

(ii) लक्षण-लक्षणालक्ष्यार्थ (केवल) जहाँ मुख्यार्थ को छोड़कर (त्याग कर) केवल लक्ष्यार्थ का ग्रहण हो।

उदाहरण :

(i) 'वह पढ़ाने में बहुत कुशल है।'- इस वाक्य में 'कुशल' का मुख्यार्थ (कुशलाने वाला) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (दक्ष) का ग्रहण किया गया है।

(ii) 'माधुरी नृत्य में प्रवीण है।'- इस वाक्य में 'प्रवीण' का मुख्यार्थ (वीणा बजाने में निपुण) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (कुशल) को ग्रहीत किया गया है।

(iii) 'देवदत्त चौकन्ना हो गया।'- इस वाक्य में 'चौकन्ना' का मुख्यार्थ (चार कानों वाला) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (सावधान) का ग्रहण किया गया है।

AJAY KUMAR

लक्षणा का महत्त्व : काव्य में लक्षणा के प्रयोग से जीवन के अनुभव को समृद्ध किया जाता है। कल्पना के सहारे सादृश्य और साधर्म्य के अनेकानेक विधानों द्वारा अनुभवों की सूक्ष्मता और विस्तार को प्रकट किया जाता है। इसलिए काव्य में लक्षणा शब्द-शक्ति की प्रबलता है।

.....

AJAY KUMAR

# हिन्दी संख्याएँ एक से लेकर सौ तक

| *संख्याएँ* | *हिन्दी शब्द* | *रोमन लिपि* |
|---|---|---|
| 0.....० | शून्य.....Shoonya | I |
| 1.....१ | एक..... Ek | I |
| 2.....२ | दो.....Do | II |
| 3..... ३ | तीन.....Teen | III |
| 4.....४ | चार.....Chaar | IV |
| 5.....५ | पाँच..... Panch | v |
| 6.....६ | छह.....Chhah | VI |
| 7.....७ | सात.....Saat | VII |
| 8.....८ | आठ.....Aath | VIII |
| 9 .....९ | नौ.....Nau | IX |
| 10.....१० | दस.....Das | X |
| 11.....११ | ग्यारह..... Gyaarah | XI |
| 12.....१२ | बारह .....Baarah | XII |
| 13.....१३ | तेरह..... Terah | XIII |
| 14.....१४ | चौदह.....Chaudah | XVI |
| 15.....१५ | पन्द्रह .....Pandrah | XV |
| 16.....१६ | सोलह.....Solah | XVI |
| 17.....१७ | सत्रह.....Satrah | XVII |
| 18.....१८ | अठारह..... Athaarah | XVIII |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| 19.....१९ | उन्नीस..... Unnees | XIX |
| 20.....२० | बीस..... Bees | XX |
| 21.....२१ | इक्कीस..... Ikkees | XXI |
| 22.....२२ | बाईस.....Baaees | XXII |
| 23.....२३ | तेईस..... Teees | XXIII |
| 24.....२४ | चौबीस.....Chaubees | XXIV |
| 25.....२५ | पच्चीस.....Pachchees | XXV |
| 26.....२६ | छब्बीस.....Chhabbees | XXVI |
| 27.....२७ | सत्ताईस.... Sattaaees | XXVII |
| 28.....२८ | अट्ठाईस..... Atthaaees | XXVIII |
| 29.....२९ | उनतीस..... Unatees | XXIX |
| 30.....३० | तीस .....Tees | XXX |
| 31.....३१ | इकतीस..... Ikatees | XXXI |
| 32.....३२ | बत्तीस.....Battees | XXXII |
| 33.....३३ | तैंतीस ..... Taintees | XXXIII |
| 34.....३४ | चौंतीस..... Chauntees | XXXIV |
| 35.....३५ | पैंतीस..... Paintees | XXXV |
| 36.....३६ | छत्तीस....Chhattees | XXXVI |
| 37.....३७ | सैंतीस .....Saintees | XXXVII |
| 38.....३८ | अड़तीस..... Aratees | XXXVIII |
| 39.....३९ | उनतालीस.....Unataalees | XXXIX |
| 40.....४० | चालीस.....Chaalees | XXXX |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| 41.....४१ | इकतालीस..... Ikataalees | XXXXI |
| 42.....४२ | बयालीस.....Bayaalees | XXXXII |
| 43.....४३ | तैंतालीस.... Taintaalees | XXXXIII |
| 44.....४४ | चौवालीस.....Chauvaalees | XXXXIV |
| 45.....४५ | पैंतालीस.....Paintaalees | XXXXV |
| 46.....४६ | छियालीस.....Chhiyaalees | XXXXVI |
| 47.....४७ | सैंतालीस..... Saintaalees | XXXXII |
| 48.....४८ | अड़तालीस..... Addataalees | XXXXIII |
| 49.....४९ | उनचास..... Unachaas | XXXXIX |
| 50.....५० | पचास.....Pachaas | XXXXX |
| 51.....५१ | इक्यावन..... Ikyaavan | XXXXXI |
| 52.....५२ | बावन.....Baavan | XXXXXII |
| 53.....५३ | तिरेपन.....Tirepan | XXXXXIII |
| 54.....५४ | चौवन.....Chauvan | XXXXXIV |
| 55.....५५ | पचपन..... pachapan | XXXXXV |
| 56.....५६ | छप्पन.....Chhappan | XXXXXVI |
| 57.....५७ | सत्तावन.....Sattaavan | XXXXXVII |
| 58.....५८ | अट्ठावन..... Atthaavan | XXXXXVIII |
| 59.....५९ | उनसठ..... Unasath | XXXXXIX |
| 60.....६० | साठ.....Saath | XXXXXX |
| 61.....६१ | इकसठ..... Ikasath | XXXXXXI |
| 62.....६२ | बासठ.....Baasath | XXXXXXII |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| 63.....६३ | तिरेसठ.....Tiresath | XXXXXXIII |
| 64.....६४ | चौंसठ.....Chaunsath | XXXXXXIV |
| 65.....६५ | पैंसठ.....Painsath | XXXXXXV |
| 66.....६६ | छियासठ.....Chhiyaasath | XXXXXXVI |
| 67.....६७ | सड़सठ..... Saddasath | XXXXXXVII |
| 68.....६८ | अड़सठ..... Addasath | XXXXXXVIII |
| 69.....६९ | उनहत्तर..... Unahattar | XXXXXXIX |
| 70.....७० | सत्तर..... sattar | XXXXXXX |
| 71.....७१ | इकहत्तर..... Ikahattar | XXXXXXXI |
| 72.....७२ | बहत्तर.....Bahattar | XXXXXXXII |
| 73.....७३ | तिहत्तर.....Tihattar | XXXXXXXIII |
| 74.....७४ | चौहत्तर.... Chauhattar | XXXXXXXIV |
| 75.....७५ | पचहत्तर.....Pachahattar | XXXXXXXV |
| 76.....७६ | छिहत्तर.....Chhihattar | XXXXXXXVI |
| 77.....७७ | सतहत्तर.....Satahattar | XXXXXXXVII |
| 78.....७८ | अठहत्तर..... Athahattar | XXXXXXXVIII |
| 79.....७९ | उनासी..... Unaasee | XXXXXXXIX |
| 80.....८० | अस्सी..... Assee | XXXXXXXX |
| 81.....८१ | इक्यासी..... Ikyaasee | XXXXXXXXI |
| 82.....८२ | बयासी.....Bayaasee | XXXXXXXXII |
| 83.....८३ | तिरासी.....Tiraasee | XXXXXXXXIII |
| 84.....८४ | चौरासी.....Chaoraasee | XXXXXXXXIV |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| 85.....८५ | पचासी..... Pachaasee | XXXXXXXXV |
| 86.....८६ | छियासी.....Chhiyaasee | XXXXXXXXVI |
| 87.....८७ | सत्तासी.....Sattaasee | XXXXXXXXVII |
| 88.....८८ | अट्ठासी..... Atthaasee | XXXXXXXXVIII |
| 89.....८९ | नवासी.....Navaasee | XXXXXXXXIX |
| 90.....९० | नब्बे..... Nabbe | XXXXXXXXX |
| 91.....९१ | इक्यानबे..... Ikyaanabe | XXXXXXXXXI |
| 92.....९२ | बानबे.....Baanabe | XXXXXXXXXII |
| 93.....९३ | तिरानबे.....Tiraanabe | XXXXXXXXXI |
| 94.....९४ | चौरानबे.....Chauraanabe | XXXXXXXXXIV |
| 95.....९५ | पंचानबे.....Panchaanabe | XXXXXXXXXV |
| 96.....९६ | छियानबे.....Chhiyaanabe | XXXXXXXXXVI |
| 97.....९७ | सत्तानबे..... Sattaanabe | XXXXXXXXXVII |
| 98.....९८ | अट्ठानबे.....Atthaanabe | XXXXXXXXXVIII |
| 99.....९९ | निन्यानबे .....Ninyaanabe | XXXXXXXXXIX |
| 100.....१०० | सौ.....Sau | XXXXXXXXXX |

| संख्याएँ | हिन्दी शब्द |
|---|---|
| 1000.....१,००० | हजार..... Hajaara |
| 1,00,000.....१,००,००० | लाख..... Laakh |
| 1,00,00,000.....१,००,००,००० | करोड़ .....karodd |
| 1,00,00,00,000.....१,००,००,००,००० | अरब..... Arab |

AJAY KUMAR

# पारिभाषिक शब्दावली

- Above all – सर्वोपरि
- Above cited – ऊपर उद्धृत
- Above quoted – ऊपर दिया हुआ
- Acting in good faith – सद्भाव से कार्य करते हुए
- Ad hoc – तदर्थ
- After adequate consideration – समुचित विचार के बाद
- After consulation – से परामर्श करके
- Approved as proposed – यथा प्रस्ताव अनुमोदित
- As above – जैसा ऊपर दिया है
- As a last resort – अन्तिम उपाय के रूप में
- As a matter of fact – यथार्थतः/वस्तुतः
- As a result of – के फलस्वरूप
- As directed – निदेशानुसार
- As is where is – जैसा है और जहाँ है
- As may be necessary – यथावश्यक
- As of right – साधिकार
- As per – के अनुसार
- As per details below – नीचे लिखे ब्यौरों के अनुसार
- As modified – यथा शोधित

AJAY KUMAR

- As the case may be – यथा प्रकरण/यथास्थिति
- Attention is invited to – की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है
- Beg to state – निवेदन है
- Best of knowledge and belief – मेरी जानकारी और विश्वास में
- By authority of – के प्राधिकार में
- By order – के आदेश से
- By return of post – लौटती डाक से
- Cabinet – मंत्रिमण्डल
- Cadre – संवर्ग
- Calling – व्यवसाय
- Camera meeting – गुप्त सभा
- Candidate – उम्मीदवार/प्रत्याशी
- Capital – पूँजी, राजधानी
- Capitaion fee – प्रतिव्यक्ति शुल्क
- Career – जीविका, वृत्तिका
- Carried down – तल शेष
- Carried forward – अग्रेषित शेष
- Carry out – पालन/कार्यान्विति
- Cartage – गाड़ी भाड़ा
- Case – मामला/प्रकरण
- Casting vote – निर्णायक मत
- Catch Word – सूचक शब्द

AJAY KUMAR

- Caution – सावधानी, सावधान
- Census – जनगणना
- Charge – भार
- Charge sheet – आरोप पत्र
- Charity – खैरात/दान
- Civil – दीवानी
- Clarification – स्पष्टीकरण
- Clause – खण्ड
- Co-accused – सह–अभियुक्त
- Codification – संहिताकरण
- Coherance – संबद्धता/संगति
- Coincidence - संयोग
- Collaboration - सहयोग
- Collusion - धोखा, दुरभि संधि
- Colour blindness - वर्णान्धता
- Comittee - समिति
- Command - रक्षा, समादेश
- Commencement - आरम्भ
- Commenoration - स्मारक
- Commission - आयोग, दलाली
- Common roster - सामान्य नामावली
- Communique - विज्ञप्ति

AJAY KUMAR

- Commutaion - विनिमय/परिवर्तन
- Commuted Leave - परिवर्तित छुट्टी
- Compassionate allowance - अनुकम्पा भत्ता
- Compensatory allowance - प्रतिपूरक भत्ता
- Competence - क्षमता/समर्थता
- Compilation - संकलन
- Complaint Book - शिकायत पुस्तिका
- Compliance - अनुपालना
- Complimentary - मानार्थ
- Concern - प्रतिष्ठान, सम्बन्धित
- Concise - संक्षिप्त
- Concurrence - सहमति
- Condition - शर्त
- Condone - माफ करना
- Confer - प्रदान या विचार–विमर्श करना
- Conference - सम्मेलन
- Come into affect – प्रभावशाली होना
- Come into force – लागू होना
- Come into operation – प्रवर्तन में लाया जाना
- Copy inclosed – प्रतिलिपि संलग्न है
- Delay regretted – विलम्ब के लिए खेद है
- Demi official (D.O.) – अर्द्धशासकीय

AJAY KUMAR

- Draft as amended is put up – यथा संशोधित प्रारूप प्रस्तुत है
- Draft for approval – अनुमोदनार्थ प्रारूप
- Draw attention – ध्यान दिलाना
- Duly complied – विधिवत् पालन किया गया
- During the course of discussion – विचार–विमर्श के दौरान
- Expedite action – कार्यवाही शीघ्र करें
- Ex-officio – पदेन
- Express Delivery – अविलम्ब वितरण
- Follow up action – अनुवर्ती कार्यवाही
- For approval – अनुमोदनार्थ
- For consideration – विचारार्थ
- For disposal – निपटाने के लिए
- For favourable action – अनुकूल कार्यवाही के लिए
- For favour of doing the needful – उचित कार्यवाही की कृपा के लिए
- For favour of orders – आदेशार्थ
- For further action – आगे की कार्यवाही के लिए
- For guidance – मार्गदर्शन के लिए
- For information – सूचनार्थ
- For perusal – अवलोकनार्थ
- For signature – हस्ताक्षरार्थ
- For suggestion – सुझाव देने के लिए
- For sympathetic consideration – सहानुभूतिपूर्वक विचार के लिए

AJAY KUMAR

- Hard and fast rule – पक्का नियम
- I am directed to – मुझे निर्देश हुआ है
- In anticipation of – की प्रत्याशा में
- In complianee with – के अनुपालन में
- In continuation of – के आगे
- In course of business – काम के दौरान
- In default of – के अभाव में
- In detail – विस्तार से
- In due course – यथा विधि
- In favour of – के पक्ष में/के नाम
- In his discretion – स्वविवेक से
- In lump sum – एक मुश्त
- In offical capacity – पद की हैसियत से
- In order of priority – प्राथमिकता क्रम से
- In public interest – लोक हित में
- In supersession of – का अतिक्रमण करते हुए
- Inter alia – और बातों में
- Interference undue – अनुचित हस्तक्षेप
- In the interest of – के हित में
- In the prescribed manner – निर्धारित ढंग से
- Is here by informed – को सूचित किया जाता है
- Keep in abeyance – मुल्तवी रखा जाये

AJAY KUMAR

- Keeping pending – लम्बित रखा जाये
- Keep with the file – पत्रावली के साथ रखिये
- Last Pay Certificate (LPC) – अन्तिम वेतन प्रमाण-पत्र
- Leave not due – छुट्टी हक में नहीं है
- Matter is under consideration – मामला विचाराधीन है
- May be considered – विचार किया जाये
- May be informed accordingly – तद्नुसार सूचित कर दिया जाये
- May please see – कृपया देखें
- Necessary action – आवश्यक कार्यवाही
- Needful done – अपेक्षित कार्यवाही हो चुकी है
- No action – कोई कार्यवाही नहीं
- No admission – प्रवेश निषेध
- No Objection Certificate (NOC) – अनापत्ति-पत्र
- Noted, thanks – नोट कर लिया, धन्यवाद
- Notice in writing – लिखित सूचना
- Not playable before – के पूर्व अदेय
- Objectionable action – आपत्तिजनक कार्य
- Observations made above – उपर्युक्त विचार
- Office Copy (O.C.) – कार्यालय प्रति
- On deputation – प्रतिनियुक्ति पर
- Out today – आज ही
- Paper for disposal – निपटाने के लिए कागज

AJAY KUMAR

- Paper under consideration – विचाराधीन पत्र
- Please discuss – कृपया बात करें
- Put up – प्रस्तुत कीजिए
- Reminder may be sent – स्मरण-पत्र भेज दें
- Retrospective effect with – पूर्वव्यापी प्रभाव से
- See, thanks – देख लिया, धन्यवाद
- Show cause notice – कारण बताओ नोटिस
- Submitted for orders – आदेशार्थ प्रस्तुत
- Submitted for perusal – अवलोकनार्थ प्रस्तुत
- Take over – कार्यभार संभालना
- Through proper channel – उचित माध्यम से
- To the best of my knowledge – जहाँ तक मुझे पता है
- To the point – विषयानुकूल
- Under consideration – विचाराधीन
- Whichever is earlier – जो भी पहले हो
- With full particulars – पूरे विवरण के साथ।

♦ कार्यालय में दैनिक प्रयोग में आने वाली अभिव्यक्तियाँ ♦

- Hello – हैलो, कहिये, जी हाँ, हाँ जी
- File please – पत्रावली प्रस्तुत करें
- Report please – कृपया रिपोर्ट करें

AJAY KUMAR

- Please speak – कृपया बात करें
- Get it cyclostyled – इसे साइक्लोस्टाइल करें
- File is not complete – पत्रावली अपूर्ण है
- Issue sanction – स्वीकृति जारी करें
- Top priority may be given to it – इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाये
- This may be treated most urgent – इसे अत्यावश्यक समझा जाये
- Progress is very slow – प्रगति बहुत मंद है
- Explain the position clearly – स्थिति स्पष्ट की जाये
- Put up with rules – नियमों के साथ प्रस्तुत करें
- Please get it done now – कृपया अब इसकी व्यवस्था करें
- Please explain – स्पष्ट करें
- Today please – आज ही
- Report is not clear – रिपोर्ट स्पष्ट नहीं है
- Post may be abolished – पदों को समाप्त किया जाये
- Notice may be issued – नोटिस जारी हो
- Action taken approved – कार्यवाही अनुमोदित है
- Admit the case – मामला विचारार्थ लें
- May be allowed – अनुमति दे दी जाये
- Tour programme may be intimated – दौरे के कार्य की सूचना दे दी जाये
- May be permited – अनुमति दी जाये
- Fair draft be put up – शुद्ध प्रारूप प्रस्तुत करें
- Keep pending – विचाराधीन रखें

AJAY KUMAR

• Put up after a week – एक सप्ताह बाद प्रस्तुत करें

• The file is in submission – फाइल पेशी पर है

• Sanction may please be accorded – कृपया स्वीकृति दी जाये

• Election urgent – चुनाव अत्यावश्यक

• Checked and found correct – जाँचा और सही पाया।

♦♦♦

.....

AJAY KUMAR

AJAY KUMAR

# हिन्दी साहित्य

## हिंदी के प्रसिद्ध कवि

चंदवरदाई, कबीर, जायसी, तुलसीदास, सूरदास, नंददास, मीराबाई, रहीम, बिहारी, देव, मतिराम, पद्याकर, भूषण, भारतेंदु हरिशचन्द्र, जगन्नाथ दास, 'रत्नाकर', मैथलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी, हरिवंश राय 'बच्चन', गोपाल सिंह 'नेपाली', स० हि० वा० अज्ञेय, श्यामनारायण पांडेय, शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', जानकीवल्लभ शास्त्री, भवानीप्रसाद मिश्र, रघुवर सहाय, गजानन माधव मुक्तिबोध, मोहनलाल महतो 'वियोगी', केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामदयाल पांडेय।

## हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार

भारतेंदु हरिशचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, गोविंद-वल्लभ पंत, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचंद्र माथुर, सेठ गोंविंददास, लक्ष्मीनारायण लाल, उपेंद्रनाथ अश्क, मोहन राकेश।

## हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार

रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, गणेशप्रसाद द्विवेदी, उदयशंकर भट्ट, भुवनेश्वरप्रसाद मिश्र, सेठ गोविंद दास, उपेंद्रनाथ 'अश्क', जगदीशचंद्र माथुर, गोविंदवल्लभ पंत, भगवतीचरण वर्मा, जगन्नाथ 'नलिन'। हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार- देवकीनंदन खत्री, प्रेमचंद्र, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, जैनेंद्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, वृंदावनलाल वर्मा, अज्ञेय, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गुरुदत्त, फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, राधाकृष्ण, हिमांशु श्रीवास्तव।

## हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार

प्रेमचंद, सुदर्शन, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', जैनेंद्र कुमार, चतुरसेन शास्त्री, गोविंदवल्लभ पंत, वृंदावनलाल वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा , इलाचंद्र जोशी, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, राधाकृष्ण, उषादेवी मित्रा, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कंडेय, निर्मल वर्मा, शिवानी।

AJAY KUMAR

## हिंदी के प्रसिद्ध लेखक

महावीर प्रसाद द्विवेदी, पद्यसिंह शर्मा, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सरदार पूर्ण सिंह, रामचंद्र शुक्ल, शिवपूजन सहाय, राहुल सांकृत्यायन, हजारीप्रसाद द्विवेदी, बनारसी दास चतुर्वेदी, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, रामविलास शर्मा, श्रीराम शर्मा, हरिशंकर परसाई।

### प्रसिद्ध काव्य-पुस्तकें और उनके कवि-

| | |
|---|---|
| पृथ्वीराजरासो - | चंदवरदाई |
| पद्मावत - | मलिक मुहम्मद जायसी |
| कवितावली,विनयपत्रिका,रामचरितमानस- | तुलसीदास |
| प्रेममाधुरी - | भारतेंदु हरिश्चंद्र |
| सूरसागर - | सूरदास |
| रासपंचाध्यायी, भँवरगीत - | नंददास |
| रामचंद्रिका - | केशवदास |
| बिहारी सतसई - | बिहारीलाल |
| प्रियप्रवास - | हरिऔध |
| हिमकिरीटनी - | माखनलाल चतुर्वेदी |
| साकेत, यशोधरा, भारत-भारती - | मैथलीशरण गुप्त |
| आँसू, कामायनी - | जयशंकर प्रसाद |
| गुंजन, लोकायतन, चिदम्बरा - | सुमित्रानन्दन पंत |
| दीपशिखा, यामा - | महादेवी वर्मा |
| तुलसीदास - | निराला |
| हल्दीघाटी - | श्यामनारायण पांडेय |
| कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रश्मिरथी - | रामधारी सिंह दिनकर |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| मधुशाला - | बच्चन |
| आर्यावर्त - | मोहनलाल महतो 'वियोगी' |

## हिंदी के कुछ उपन्यास और उनके लेखक-

| | |
|---|---|
| गोदान, सेवासदन, गबन, निर्मला - | प्रेमचंद |
| तितली, कंकाल - | जयशंकर प्रसाद |
| दिल्ली का दलाल - | पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' |
| मृगनयनी, झाँसी की रानी - | वृंदावनलाल वर्मा |
| गिरती दीवारें - | उपेन्द्रनाथ 'अश्क' |
| पतितों के देश में - | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| काकली - | जानकीवल्लभ शास्त्री |
| राम-रहीम - | राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह |
| शेखर: एक जीवनी - | अज्ञेय |
| त्यागपत्र - | जैनेंद्र कुमार |
| देहाती दुनिया - | शिवपूजन सहाय |
| प्रेत और छाया - | इलाचंद्र जोशी |
| झूट-सच - | यशपाल |
| टेढ़े-मेढ़े रस्ते, चित्रलेखा - | भगवतीचरण वर्मा |
| बाणभट्ट की आत्मकथा - | हजारीप्रसाद दद्विवेदी |
| सूरज का सातवाँ घोड़ा - | धर्मवीर भारती |
| मैला आँचल - | फणीश्वरनाथ रेणु |
| बलचनमा - | नागार्जुन |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| चौदह फेरे - | शिवानी |

## हिंदी के प्रसिद्ध नाटक और नाटककार-

| | |
|---|---|
| सत्य हरिश्चन्द्र - | भारतेंदु हरिश्चन्द्र |
| चंद्रगुप्त,स्कंदगुप्त,अजातशत्रु,ध्रुवस्वामिनी- | जयशंकर प्रसाद |
| अम्बपाली, नेत्रदान - | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| भोर का तारा, कोणार्क - | वजगदीशचंद्र माथुर |
| आधे-अधूरे - | मोहन राकेश |
| रेशमी टाई - | रामकुमार वर्मा |
| लोहा सिंह - | रामेश्वर सिंह काश्यप |

.....

AJAY KUMAR

# काव्य (Poetry)

## आदिकाल (650 ई०-1350 ई०)

हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।

हिन्दी साहित्येतिहास के आरंभिक काल के नामकरण का प्रश्न विवादास्पद है। इस काल को ग्रियर्सन ने 'चरण काल', मिश्र बंधु ने 'प्रारंभिक काल', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीज वपन काल', शुक्ल ने 'आदिकाल: वीर गाथाकाल', राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध- सामंत काल', राम कुमार वर्मा ने 'संधिकाल' व 'चारण काल', हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' की संज्ञा दी है।

आदिकाल में तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ मिलती है- धार्मिकता, वीरगाथात्मकता व श्रृंगारिकता।

प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ : रासो काव्य, कीर्तिलता , कीर्तिपताका इत्यादि।

मुक्तक काव्यकृतियाँ : खुसरो की पहेलियाँ, सिद्धों-नाथों की रचनाएँ, विद्यापति की पदावली इत्यादि।

विद्यापति ने 'कीर्तिलता' व 'कीर्तिपताका' की रचना अवहट्ट में और 'पदावली' की रचना मैथली में की।

आदिकाल में दो शैलियाँ मिलती हैं डिंगल व पिंगल। डिंगल शैली में कर्कश शब्दावलियों का प्रयोग होता है जबकि पिंगल शैली में कर्णप्रिय शब्दावलियों की। कर्कश शब्दावलियों के कारण डिंगल शैली अलोकप्रिय होती चली गई। जबकि कर्णप्रिय शब्दावलियों के कारण पिंगल शैली लोकप्रिय होती चली गई और आगे चलकर इसका ब्रजभाषा में विगलन हो गया।

'पृथ्वी राज रासो' कथानक रूढ़ियों का कोश है। [(कथानक रूढ़ि (Motiff)- एक प्रकार का प्रतीक जिसके साथ एक पूरी की पूरी कथा जुड़ी हो)]

अपभ्रंश में 15 मात्राओं का एक 'चउपई' छंद मिलता है। हिन्दी ने चउपई में एक मात्रा बढ़ाकर 'चौपाई' के रूप में अपनाया अर्थात चौपाई 16 मात्राओं का छंद है।

आदिकाल में 'आल्हा' छंद (31 मात्रा) बहुत प्रचलित था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।

दोहा, रासा, तोमर, नाराच, पद्धति, पज्झटिका, अरिल्ल आदि छंदों का प्रयोग आदिकाल में मिलता है।

चौपाई के साथ दोहा रखने की पद्धति 'कडवक' कहलाती है। कडवक का प्रयोग आगे चलकर भक्ति काल में जायसी और तुलसी ने किया।

अमीर खुसरो को 'हिन्द-इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रथम प्रतिनिधि' कहा जाता है।

आदिकालीन साहित्य के तीन सर्वप्रमुख रूप है- सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य एवं रासो साहित्य।

AJAY KUMAR

सिद्धों द्वारा जनभाषा में लिखित साहित्य को 'सिद्ध-साहित्य' कहा जाता है। यह साहित्य बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा का प्रचार करने हेतु रचा गया।

सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है। तांत्रिक क्रियाओं में आस्था तथा मंत्र द्वारा सिद्धि चाहने के कारण इन्हें 'सिद्ध' कहा गया। 84 सिद्धों में सरहपा, शबरपा, कण्हपा, लुइपा, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा आदि प्रमुख हैं। सरहपा प्रथम सिद्ध है। इन्हें सहजयान का प्रवर्तक कहा जाता है।

सिद्ध कवियों की रचनाएँ दो रूपों में मिलती है 'दोहा कोष' और 'चर्यापद' । सिद्धाचार्यों द्वारा रचित दोहों का संग्रह 'दोहा कोष' के नाम से तथा उनके द्वारा रचित पद 'चर्या पद' के नाम से प्रसिद्ध है।

सिद्ध-साहित्य की भाषा को अपभ्रंश एवं हिन्दी के संधि काल की भाषा मानी जाती है इसलिए इसे 'संधा' या 'संध्या' भाषा का नाम दिया जाता है।

10 वीं सदी के अंत में शैव धर्म एक नये रूप में आरंभ हुआ जिसे 'योगिनी कौल मार्ग', 'नाथ पंथ' या 'हठयोग' कहा गया। इसका उदय बौद्ध-सिद्धों की वाममार्गी भोग-प्रधान योगधारा की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।

अनुश्रुति के अनुसार 9 नाथ हैं- आदि नाथ (शिव), जलंधर नाथ, मछंदर नाथ, गोरखनाथ, गैनी नाथ, निवृति नाथ आदि। लेकिन नाथ-साहित्य के प्रवर्तक गोरखनाथ ही थे।

बौद्ध-सिद्धों की वाणी में पूर्वीपन का पुट है तो शैव-नाथों की वाणी में पश्चिमीपन का।

'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है।

रासो-काव्य को मुख्यतः 3 वर्गों में बाँटा जाता है-

(1) वीर गाथात्मक रासो काव्य : पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, खुमाण रासो, परमाल रासो, विजयपाल रासो।

(2) शृंगारपरक रासो काव्य : बीसल देव रासो, सन्देश रासक, मुंज रासो।

(3) धार्मिक व उपदेशमूलक रासो काव्य : उपदेश रसायन रास, चन्दनबाला रस, स्थूलिभद्र रास, भरतेश्वर बाहुबलि रास, रेवन्तगिरि रास।

पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई) : रासो काव्य परंपरा का प्रतिनिधि व सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ, काव्य-रूप-प्रबंध, रस-वीर व श्रृंगार, अलंकार- अनुप्रास व यमक (चंदबरदाई के प्रिय), छंद- विविध छंद (लगभग 68), गुण-ओज व माधुर्य, भाषा-राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा, शैली-पिंगल।

पृथ्वीराज रासो में चौहान शासक पृथ्वीराज के अनेक युद्धों और विवाहों का सजीव चित्रण हुआ है।

पृथ्वीराज रासो एक अर्द्धप्रामाणिक रचना है।

AJAY KUMAR

परमाल रासो (जगनिक) : मूल रूप से उपलब्ध नहीं है लेकिन इसका एक अंश उपलब्ध है जिसे 'आल्हा खंड' कहा जाता है। इसका छंद आल्हा या वीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

संदेश रासक (अब्दुल रहमान) : एक विरह काव्य है।

रासो काव्य की सामान्य विशेषताएँ :

(1) ऐतिहासिकता व कल्पना का सम्मिश्रण

(2) प्रशस्ति काव्य

(3) युद्ध व प्रेम का वर्णन

(4) वैविध्यपूर्ण भाषा

(5) डिंगल-पिंगल शैली का प्रयोग

(6) छंदों का बहुमुखी प्रयोग

चंदबरदाई दिल्ली के चौहान शासक पृथ्वी राज-III चौहान के सामंत व राजकवि थे।

अमीर खुसरो का मूल नाम अबुल हसन था। दिल्ली के सुल्तान जलालुद्दीन खल्जी ने उनकी कविता से खुश होकर उन्हें 'अमीर' का ख़िताब दिया और 'खुसरो' उनका तखल्लुस (उपनाम) था। इस प्रकार वे बन गए-अमीर खुसरो। बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत एवं हिन्दी के विद्वान थे। उन्होंने फारसी में ऐतिहासिक-साहित्यिक पुस्तकें लिखीं, व्रजभाषा में गीतों-कव्वालियों की रचना की और खड़ी बोली में पहेलियाँ-मुकरियाँ बुझाई। संगीत के क्षेत्र में उन्हें कव्वाली, तराना गायन शैली एवं सितार वाद्य यंत्र का जन्मदाता माना जाता है।

विद्यापति बिहार के दरभंगा जिले के बिसफी गाँव रहनेवाले थे। उन्हें मिथिला के महाराजा कीर्ति सिंह और शिव सिंह का संरक्षण प्राप्त था।

जिस रचना के कारण विद्यापति 'मैथिल कोकिल' कहलाए वह उनकी मैथिली में रचित 'पदावली' है। यह मुक्तक काव्य है और इसमें पदों का संकलन है। पूरी पदावली भक्ति व श्रृंगार की धूपछांही है।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

*बारह बरस लौं कूकर जीवै अरु तेरह लौं जिये सियार/बरस अठारह क्षत्रिय जीवै आगे जीवन को धिक्कार* -जगनिक

*भल्ला हुआ जो मारिया बहिणी म्हारा कंतु/लज्जेजंतु वयस्सयहु जइ भग्गा घरु एंतु* (अच्छा हुआ जो मेरा पति युद्ध में मारा गया; हे बहिन ! यदि वह भागा हुआ घर आता तो मैं अपनी समवयस्काओं (सहेलियों) के सम्मुख लज्जित होती।) -हेमचंद्र

*बालचंद्र विज्जवि भाषा/दुनु नहीं लग्यै दुजन भाषा* (जिस तरह बाल चंद्रमा निर्दोष है उसी तरह विद्यापति की भाषा; दोनों का दुर्जन उपहास नहीं कर सकते) -विद्यापति

*षटभाषा पुराणं च कुराणंग कथित मया* (मैंने अपनी रचना षटभाषा में की है और इसकी प्रेरणा पुराण व कुरान दोनों से ली है) -चंदरबरदाई

***'मैंने एक बूंद चखी है और पाया है कि घाटियों में खोया हुआ पक्षी अब तक महानदी के विस्तार से अपरिचित था'*** (संस्कृत साहित्य के संबंध में) -अमीर खुसरो

*पंडिअ सअल सत्य वक्खाणअ/देहहिं बुद्ध बसन्त न जाणअ।* [पंडित सभी शास्त्रों का बखान करते हैं परन्तु देह में बसने वाले बुद्ध (ब्रह्म) को नहीं जानते।] -सरहपा

*जोइ जोइ पिण्डे सोई ब्रह्माण्डे* (जो शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में है) -गोरखनाथ

*गगन मंडल मैं ऊँधा कूबा, वहाँ अमृत का बासा/सगुरा होइ सु भरि-भरि पीवै, निगुरा जाइ पियासा* -गोरखनाथ

*काहे को बियाहे परदेस सुन बाबुल मोरे* (गीत) -अमीर खुसरो

*बड़ी कठिन है डगर पनघट की* (कव्वाली)-अमीर खुसरो

*छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइके* (पूर्वी अवधी में रचित कव्वाली) -अमीर खुसरो

*एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा/चारो ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे* (पहेली) -अमीर खुसरो

*नित मेरे घर आवत है रात गये फिर जावत है/फंसत अमावस गोरी के फंदा हे सखि साजन, ना सखि, चंदा* (मुकरी/कहमुकरनी) -अमीर खुसरो

*खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय।*

*आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय। ला पानी पिला।*

(ढकोसला) -अमीर खुसरो

*जेहाल मिसकीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियाँ;/के ताब-ए-हिज्रा न दारम-ए-जां न लेहु काहे लगाय छतियाँ-* प्रिय मेरे हाल से बेखबर मत रह, नजरों से दूर रहकर यूँ बातें न बनाओ कि मैं जुदाई को सहने की ताकत नहीं रखता, मुझे अपने सीने से लगा क्यों नहीं लेते (फारसी-हिन्दी मिश्रित गजल) -अमीर खुसरो

AJAY KUMAR

*गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस/ चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस* (अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु पर) -अमीर खुसरो

[नोट : सूफी मत में आराध्य (भगवान, गुरु) को स्त्री तथा आराधक (भक्त, शिष्य) को पुरुष के तीर पर देखने की रचायत है।]

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार।

जो उबरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।। -अमीर खुसरो

खुसरो पाती प्रेम की, बिरला बांचे कोय।

वेद कुरआन पोथी पढ़े, बिना प्रेम का होय।। -अमीर खुसरो

खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।

तन मेरो मन पीव को दोऊ भय एक रंग।। -अमीर खुसरो

तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब

(अर्थात मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ, हिन्दवी में जवाब देता हूँ।) -अमीर खुसरो

"मैं हिन्दुस्तान की तूती ('तूती-ए-हिन्दुस्तान') हूँ। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो, तो हिंदवी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा।" -अमीर खुसरो

न लफ्जे हिंदवीस्त अज फारसी कम

(अर्थात हिंदवी बोल फारसी से कम नहीं।) -अमीर खुसरो

आध बदन ससि विहँसि देखावलि आध पिहिलि निज बाहू/कछु एक भाग बलाहक झाँपल किछुक गरासल राहू- नायिका ने अपना चेहरा हाथ से छिपा रखा है। कवि कहता है कि उसका चंद्रमुख आधा छिपा है और आधा दिख रहा है। ऐसा लगता है मानो चंद्रमा के एक भाग को बादल ने ढँक रखा है और आधा दिख रहा है ('पदावली' से) -विद्यापति

'आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गये हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों को 'गीत गोविन्द' (जयदेव) के पदों में आध्यात्मिकता दिखती है वैसे ही 'पदावली' (विद्यापति) के पदों में।' -रामचन्द्र शुक्ल

प्राइव मुणि है वि भंतडी ते मणिअडा गणंति/अखइ निरामइ परम-पइ अज्जवि लउ न लहंति।- प्रायः मुनियों को भी भ्रांति हो जाती है, वे मनका गिनते है। अक्षय निरामय परम पद में आज भी लौ नहीं लगा पाते। -हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)

पिय-संगमि कउ निददडी पिअहो परोक्खहो केम/मइँ विन्निवि विन्नासिया निदद न एम्ब न-तेम्ब -प्रिय के संगम में नींद कहाँ ? प्रिय के परोक्ष में (सामने न रहने पर) नींद कहाँ ? मैं दोनों प्रकार से नष्ट हुई ? नींद न यों, न त्यों। -हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)

AJAY KUMAR

जो गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु/तसु हउँ कलजुगि दुल्लहहो बलि किज्जऊँ सुअणस्सु।- जो अपना गुण छिपाए, दूसरे का प्रकट करे, कलियुग में दुर्लभ सुजन पर मैं बलि जाउँ। -हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)

माधव हम परिनाम निरासा -विद्यापति

कनक कदलि पर सिंह समारल ता पर मेरु समाने -विद्यापति

जाहि मन पवन न संचरई

रवि ससि नहीं पवेस -सरहपा

अवधू रहिया हाटे वाटे रूप विरष की छाया।

तजिवा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया।। -गोरखनाथ

पुस्तक जल्हण हाथ दै चलि गज्जन नृप काज - चंदबरदाई

मनहु कला सभसान कला सोलह सौ बन्निय - चंदरबरदाई

## आदिकालीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | रचना |
|---|---|
| स्वयंभू | पउम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ (अरिष्टनेमि चरित) |
| सरहपा | दोहाकोष |
| शबरपा | चर्या पद |
| कण्हपा | कण्हपाद गीतिका, दोहा कोश |
| गोरखनाथ | (नाथ सबदी, पद, प्राण संकली, सिष्या दासन पथ के प्रवर्तक) |
| चंदरबरदाई | पृथ्वीराज रासो (शुक्ल के अनुसार-हिन्दी का प्रथम महाकाव्य) |
| शार्ङ्गधर | हम्मीर रासो |
| दलपति विजय | खुमाण रासो |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| जगनिक | परमाल रासो |
| नल्ह सिंह भाट | विजयपाल रासो |
| नरपति नाल्ह | बीसल देव रासो |
| अब्दुर रहमान | संदेश रासक |
| अज्ञात | मुंज रासो |
| देवसेन | श्रावकाचार |
| जिन दत्त सूरी | उपदेश रसायन रास |
| आसगु | चन्दनबाला रस |
| जिनधर्म सूरी | स्थूलिभद्र रास |
| शलिभद्र सूरी | भारतेश्वर बाहुबली रास |
| विजय सेन | रेवन्तगिरि रास |
| सुमतिगणि | नेमिनाथ रास |
| हेमचंद्र | सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन |
| विद्यापति | पदावली (मैथली में) कीर्तिलता व कीर्तिपताका (अवहट्ट में) लिखनावली (संस्कृत में) |
| कल्लोल कवि | ढोला मारू रा दूहा |
| मधुकर | जयमयंक जस चंद्रिका |
| भट्ट केदार | जयचंद प्रकाश |

## पूर्व मध्य काल/भक्ति काल (1350ई०-1650 ई०)

भक्ति काल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल' कहा जाता है।

भक्ति काल के उदय के बारे में सबसे पहले जार्ज ग्रियर्सन ने मत व्यक्त किया। वे ही 'ईसायत की देन' मानते हैं।

AJAY KUMAR

ताराचंद के अनुसार भक्ति काल का उदय 'अरबों की देन' है।

रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार, 'देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उनके देव मंदिर गिराए जाते थे, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। ..... अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शरणागति में जाने के अलावा दूसरा मार्ग ही क्या था ?.....

भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।'

हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार, मैं तो जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।..... बौद्ध तत्ववाद जो निश्चित ही बौद्ध आचार्यों की चिंता की देन था, मध्ययुग के हिन्दी साहित्य के उस अंग पर अपना निश्चित पदचिह्न छोड़ गया है जिसे संत साहित्य नाम दिया गया है। ..... मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि बौद्ध धर्म क्रमशः लोक धर्म का रूप ग्रहण कर रहा था और उसका निश्चित चिह्न हम हिन्दी साहित्य में पाते हैं।

समग्रतः भक्ति आंदोलन का उदय ग्रियर्सन व ताराचंद के लिए बाह्य प्रभाव, शुक्ल के लिए बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया तथा द्विवेदी के लिए भारतीय परंपरा का स्वतः स्फूर्त विकास था।

भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण में हुई और उसके पुरस्कर्ता आलवार भक्त थे। बाद में वैष्णव आचार्यों-रामानुज, निम्बार्क, मध्व, विष्णु स्वामी-ने भक्ति को दार्शनिक आधार प्रदान किया। दार्शनिक विवेचन द्वारा पुष्टि पाकर दक्षिण भारत में भक्ति की बहुत उन्नति हुई और दक्षिण से चली हुई भक्ति की लहर 13 वीं सदी ई० में महाराष्ट्र पहुँची। तदन्तर यह उत्तर भारत पहुँची। उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के सूत्रपात का श्रेय रामानन्द को है ('भक्ति द्राविड़ उपजी, लाए रामानन्द') । रामानंद ने उत्तर भारत में भक्ति को जन-जन तक पहुँचाकर इसे लोकप्रिय बनाया।

भक्ति आंदोलन का स्वरूप देशव्यापी था। दक्षिण में आलवार-नायनार व वैष्णव आचार्यो, महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय (ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुका राम), उत्तर भारत में रामानं, बल्लभ आचार्य, बंगाल में चैतन्य, असम में शंकरदेव (महापुरुषीय धर्म- एक शरण संप्रदाय), उड़ीसा में पंचसखा (बलरामदास, अनंतदास, यशोवंत दास, जगन्नाथ दास, अच्युतानंद) आदि इसी बात को प्रमाणित करते हैं।

भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ हैं- निर्गुण काव्य-धारा व सगुण काव्य-धारा।

निर्गुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ हैं- ज्ञानाश्रयी शाखा/संत काव्य व प्रेमाश्रयी शाखा/सूफी काव्य। संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर है व सूफी काव्य के प्रतिनिधि कवि जायसी हैं।

सगुन काव्य-धारा की दो शाखाएँ हैं- कृष्णाश्रयी शाखा/कृष्ण भक्ति काव्य व रामाश्रयी शाखा/राम भक्ति काव्य। कृष्ण भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि सूरदास हैं व राम भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि तुलसी दास हैं।

प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ : पद्मावत, रामचरितमानस

मुक्तक काव्य कृतियाँ : गीतावली, कवितावली, कबीर के पद

कबीर की रचनाओं में साधनात्मक रहस्यवाद मिलता है जबकि जायसी की रचनाओं में भावात्मक रहस्यवाद।

निर्गुण काव्य की विशेषताएँ :

(1) निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास

(2) लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक/आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति

(3) धार्मिक रूढ़ियों व सामाजिक कुरीतियों का विरोध

(4) जाति प्रथा का विरोध व हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन

(5) रहस्यवाद का प्रभाव

(6) लोक भाषा का प्रयोग।

सगुण काव्य की विशेषताएँ :

(1) अवतारवाद में विश्वास

(2) ईश्वर की लीलाओं का गायन

(3) भक्ति का विशिष्ट रूप (रागानुगा भक्ति-कृष्ण भक्त कवियों द्वारा, वैधी भक्ति-राम भक्त कवियों द्वारा)

(4) लोक भाषा का प्रयोग

कबीर ने अपने आदर्श-राज्य (Utopia) को 'अमर देस', रैदास ने 'बेगमपुरा' (ऐसा शहर जहाँ कोई गम न हो) एवं तुलसी ने 'राम-राज कहा है।

'संत काव्य' का सामान्य अर्थ है संतों के द्वारा रचा गया काव्य। लेकिन जब हिन्दी में 'संत काव्य' कहा जाता है तो उसका अर्थ होता है निर्गुणोपासक ज्ञानमार्गी कवियों के द्वारा रचा गया काव्य।

संत कवि : कबीर, नामदेव, रैदास, नानक, धर्मदास, रज्जब, मलूकदास, दादू, सुंदरदास, चरणदास, सहजोबाई आदि।

सुंदरदास को छोड़कर सभी संत कवि कामगार तबके से आते है; जैसे-कबीर (जुलाहा), नामदेव (दर्जी), रैदास (चमार), दादू (बुनकर), सेना (नाई), सदना (कसाई)।

संत काव्य की विशेषताएँ-धार्मिक :

AJAY KUMAR

(1) निर्गुण ब्रह्म की संकल्पना

(2) गुरु की महत्ता

(3) योग व भक्ति का समन्वय

(4) पंचमकार

(5) अनुभूति की प्रामाणिकता व शास्त्र ज्ञान की अनावश्यकता

(6) आडम्बरवाद का विरोध

(7) संप्रदायवाद का विरोध;

सामाजिक : (1) जातिवाद का विरोध

(2) समानता के प्रेम पर बल;

शिल्पगत : (1) मुक्तक काव्य-रूप

(2) मिश्रित भाषा

(3) उलटबाँसी शैली (संधा/संध्याभाषा-हर प्रसाद शास्त्री)

(4) पौराणिक संदर्भो व हठयोग से संबंधित मिथकीय प्रयोग

(5) प्रतीकों का भरपूर प्रयोग।

रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी भाषा' की संज्ञा दी है।

श्यामसुंदर दास ने कई बोलियों के मिश्रण से बनी होने के कारण कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

'प्रेमाख्यानक काव्य' का अर्थ है जायसी आदि निर्गुणोपासक प्रेममार्गी सूफी कवियों के द्वारा रचित प्रेम-कथा काव्य।

प्रेमाख्यानक काव्य को प्रेमाख्यान काव्य, प्रेमकथानक काव्य, प्रेम काव्य, प्रेममार्गी (सूफी) काव्य आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

प्रेमाख्यानक काव्य की विशेषताएँ :

AJAY KUMAR

(1) विषय वस्तु/कथावस्तु का प्रयोग

(2) अवांतर/गौण प्रसंगों की भरमार व काव्येतर विषयों का समावेश

(3) विभिन्न तरह के पात्र

(4) प्रेम का आधिक्य

(5) काव्य-रूप - कथा काव्य

(6) द्वंद्वात्मक काव्य-शिल्प (लोक कथा व शिष्ट कथा का मेल)

(7) काव्य-भाषा-अवधी

(8) कथा रूपक या प्रतीक काव्य

(9) वियोग श्रृंगार/विरह श्रृंगार को अधिक महत्व ('पद्मावत' के एक अंश-नागमती का विरह वर्णन- को हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि कहा जाता है)

यों तो सभी प्रेमाख्यानों में सामान्य मानव की प्रेम कथाएं है लेकिन सूफियों का तर्क है कि इश्क मजाजी (मानवीय प्रेम) इश्क हकीकी (दैविक प्रेम) की सीढ़ी है।

मलिक मुहम्मद जायसी जायस के रहने वाले थे। ये सिंकदर लोदी एवं बाबर के समकालीन थे।

जायसी के यश का आधार है- ''पद्मावत'।

'पद्मावत' प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद प्रबंध काव्य है। यह चौपाई-दोहा में निबद्ध (7 चौपाई के बाद 1 दोहा) मसनवी शैली में लिखा गया है।

'पद्मावत' की कथा चितौड़ के शासक रतन सेन और सिंहलद्वीप की राजकन्या पदमिनी की प्रेम कहानी पर आधारित है। इसमें ( 'पद्मावत' में) रतनसेन की पहली पत्नी नागमती के वियोग का अनूठा वर्णन किया गया है। 'पद्मावत' के नागमती-वियोग खंड को हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि माना जाता है।

जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'कृष्णाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए।

मध्य युग में कृष्ण भक्ति का प्रचार ब्रज मण्डल में बड़े उत्साह और भावना के साथ हुआ। इस ब्रज मण्डल में कई कृष्ण-भक्ति संप्रदाय सक्रिय थे। इनमें बल्लभ, निम्बार्क, राधा वल्लभ, हरिदासी (सखी संप्रदाय) और चैतन्य (गौड़ीय) संप्रदाय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन संप्रदायों से जुड़े ढ़ेर सारे कवि कृष्ण काव्य रच रहे थे।

लेकिन जो समर्थ कवि कृष्ण काव्य को एक लोकप्रिय काव्य आंदोलन के रूप में प्रतिष्ठित किया वे सभी बल्लभ संप्रदाय से जुड़े थे।

बल्लभ संप्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत 'शुद्धाद्वैत' तथा साधना मार्ग 'पुष्टि मार्ग' कहलाता है। पुष्टि मार्ग का आधार-ग्रंथ 'भागवत' (श्रीमदभागवत) है।

पुष्टि मार्ग में बल्लभाचार्य ने कवियों (सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास व कृष्णदास) को दीक्षित किया। उनके मरणोपरांत उनके पुत्र विटठलनाथ आचार्य की गद्दी पर बैठे और उन्होंने भी 4 कवियों (छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास व नंददास) को दीक्षित किया। विटठलनाथ ने इन दीक्षित कवियों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई० में की। सूरदास इनमें सर्वप्रमुख हैं और उन्हें 'अष्टछाप का जहाज' कहा जाता है।

निम्बार्क संप्रदाय से जुड़े कवि थे- श्री भट्ट, हरि व्यास देव; राधा बल्लभ संप्रदाय से संबद्ध कवि हित हरिवंश थे; हरिदासी संप्रद्राय की स्थापना स्वामी हरिदास ने की और वे ही इस संप्रदाय के प्रथम और अंतिम कवि थे। चैतन्य संप्रदाय से संबद्ध कवि गदाधर भट्ट थे।

कुछ कृष्ण भक्त कवि संप्रदाय निरपेक्ष भी थे; जैसे- मीरा, रसखान आदि।

कृष्ण भक्ति काव्य धारा ऐसी काव्य धारा थी जिसमें सबसे अधिक कवि शामिल हुए।

कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ :

(1) कृष्ण का ब्रह्म रूप में चित्रण

(2) बाल-लीला  व वात्सल्य वर्णन

(3) श्रृंगार चित्रण

(4) नारी मुक्ति

(5) सामान्यता पर बल

(6) आश्रयत्व का विरोध

(7) लोक संस्कृति पर बल

(8) लोक संग्रह

(9) काव्य-रूप : मुक्तक काव्य की प्रधानता

(10) काव्य-भाषा-ब्रजभाषा

(11) गेय पद परंपरा।

माता पिता की जो ममता अपने संतान पर बरसती है उसे 'वात्सल्य' कहते हैं। सूर वात्सल्य चित्रण के लिए विश्व में अन्यतम कवि माने जाते हैं। इन्हीं के कारण, रसों के अतिरिक्त वात्सल्य को एक रस के रूप में मान्यता मिली।

AJAY KUMAR

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की राय है, 'यद्यपि तुलसी के समान सूर का काव्य क्षेत्र इतना व्यापक नहीं कि उसमें जीवन की भिन्न-भिन्न दशाओं का समावेश हो पर जिस परिमित पुण्यभूमि में उनकी वाणी ने संचरण किया उसका कोई कोना अछूता न छूटा। श्रृंगार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुँची वहाँ तक और किसी कवि की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने मानो औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं।'

भक्ति आंदोलन में कृष्ण काव्यधारा ही एकमात्र ऐसी धारा है जिसमें नारी मुक्ति का स्वर मिलता है। इनमें सबसे प्रखर स्वर मीरा बाई का है। मीरा अपने समय के सामंती समाज के खिलाफ एक क्रांतिकारी स्वर है।

जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में राम की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'रामाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए।

कुछ उल्लेखनीय राम भक्त कवि हैं- रामानंद, अग्रदास, ईश्वर दास, तुलसी दास, नाभादास, केशवदास, नरहरिदास आदि।

राम भक्ति काव्य धारा के सबसे बड़े और प्रतिनिधि कवि है तुलसी दास।

राम भक्त कवियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। कम संख्या होने का सबसे बड़ा कारण है तुलसीदास का बरगदमयी व्यक्तित्व।

यह सवर्णवादी काव्य धारा है इसलिए यह उच्चवर्ण में ज्यादा लोकप्रिय हुआ।

राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ :

(1) राम का लोक नायक रूप

(2) लोक मंगल की सिद्धि

(3) सामूहिकता पर बल

(4) समन्वयवाद

(5) मर्यादावाद

(6) मानवतावाद

(7) काव्य-रूप-प्रबंध व मुक्तक दोनों

(8) काव्य-भाषा-मुख्यतः अवधी

(9) दार्शनिक प्रतीकों की बहुलता।

राम भक्ति काव्य धारा आगे चलकर रीति काल में मर्यादावाद की लीक छोड़कर रसिकोपासना की ओर बढ़ जाती है। 'तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।' -हजारी प्रसाद द्विवेदी

'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।' -हजारी प्रसाद द्विवेदी

AJAY KUMAR

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

संतन को कहा सीकरी सो काम ?

आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयो हरिनाम।

जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम। -कुंभनदास

नाहिन रहियो मन में ठौर

नंद नंदन अक्षत कैसे आनिअ उर और -सूरदास

हऊं तो चाकर राम के पटौ लिखौ दरबार,

अब का तुलसी होहिंगे नर के मनसबदार। -तुलसीदास

आँखड़ियाँ झाँई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि

जीभड़ियाँ झाला पड़याँ, राम पुकारि पुकारि। -कबीर

तीरथ बरत न करौ अंदेशा। तुम्हारे चरण कमल मतेसा।।

जह तह जाओ तुम्हारी पूजा। तुमसा देव और नहीं दूजा।। -जायसी

तलफत रहित मीन चातक ज्यों, जल बिनु तृषानु छीजे अँखियां हरि दर्शन की भूखी।

हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दरद न जाने कोई। -मीरा

एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास।

एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास। -तुलसीदास

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूँ पाई।

बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताई।। -कबीर

पाँड़े कौन कुमति तोंहि लागे, कसरे मुल्ला बाँग नेवाजा। -कबीर

बंदऊ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।

महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।। -तुलसीदास

AJAY KUMAR

राम नांव ततसार है। -कबीर

कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल। -कबीर

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोई।

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होई।। -कबीर

आयो घोष बड़ो व्यापारी।

लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आय उतारी। -सूरदास

मूक होई वाचाल, पंगु चढ़ई गिरिवर गहन।

जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कली मल दहन।। -तुलसीदास

सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि। -तुलसीदास

जांति-पांति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई। -रामानंद

साई के सब जीव है कीरी कुंजर दोय।

सब घाट साईयां सूनी सेज न कोय। -कबीर

मैं राम का कुत्ता मोतिया मेरा नाम। -कबीर

बड़े न हुजै गुनन बिन, बिरद बड़ाई पाय।

कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढ़ो न जाय।। (बिरद = नाम, सो = सदृश, समान) -कबीर

राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो ?

राम सो खरो है कौन, मोसो कौन खोटो। -तुलसीदास

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी। -रैदास

सुखिया सब संसार है खावे अरु सोवे,

दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै। -कबीर

नारी नसावे तीन गुन, जो नर पासे होय।

भक्ति मुक्ति नित ध्यान में, पैठि सकै नहीं कोय।। -कबीर

AJAY KUMAR

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब है तारन के अधिकारी। -तुलसीदास

पांणी ही तैं हिम भया, हिम हवै गया बिलाई।

जो कुछ था सोई भया, अब कछु कहया न जाइ।। -कबीर

एक जोति थैं सब उपजा, कौन ब्राह्मण कौन सूदा। -कबीर

एक कहै तो है नहीं, दोइ कहै तो गारी।

है जैसा तैसा रहे कहे कबीर उचारि।। -कबीर

सतगुरु है रंगरेज मन की चुनरी रंग डारी -कबीर

संसकिरत (संस्कृत) है कूप जल भाषा बहता नीर -कबीर

अवधु मेरा मन मतवारा।

गुड करि ज्ञान, ध्यान करि महुआ, पीवै पीवनहारा।। -कबीर

पंडित मुल्ला जो कह दिया।

झाड़ि चले हम कुछ नहीं लिया।। -कबीर

पंडित वाद वदन्ते झूठा -कबीर

पठत-पठत किते दिन बीते गति एको नहीं जानि। -कबीर

मैं कहता हूँ आँखिन देखी/तू कहता है कागद लेखी। -कबीर

गंगा में नहाये कहो को नर तरिए।

मछिरी न तरि जाको पानी में घर है ।।-कबीर

कंकड़ पाथड़ जोड़ि के मस्जिद लिये बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।। -कबीर

जो तू बाभन बाभनि जाया तो आन बाट काहे न आया।

जो तू तुरक तुरकनि जाया तो भीतर खतना क्यों न कराया।। -कबीर

हिन्दु तुरक का कर्ता एके, ता गति लखि न जाय। -कबीर

AJAY KUMAR

हिन्दुअन की हिन्दुआइ देखी, तुरकन की तुरकाइ

अरे इन दोऊ कहीं राह न पाई। -कबीर

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।। -कबीर

जात भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा करब करम हमारा।

नीचे से फिर ऊंचा कीन्ह, कह रैदास खलास चमारा।। - रैदास

झिलमिल झगरा झूलते बाकी रहु न काहु।

गोरख अटके कालपुर कौन कहावे साधु।। -कबीर

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना -कबीर

शूरा सोइ (सती) सराहिए जो लड़े धनी के हेत।

पुर्जा-पुर्जा कटि पड़ै तौ ना छाड़े खेत।। -कबीर

आगा जो लागा नीर में कादो जरिया झारि।

उत्तर दक्षिण के पंडिता, मुए विचारि विचारि।। -कबीर

सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे, अरथ अमित अति आखर धोरे (तुलसी के अनुसार कविता की परिभाषा) -तुलसी

गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग। (कवितावली) -तुलसी

गुपुत रहहु, कोऊ लखय न पावे, परगट भये कछु हाथ न आवे।

गुपुत रहे तेई जाई पहूंचे, परगट नीचे गए विगुचे।। -उसमान

पहले प्रीत गुरु से कीजै, प्रेम बाट में तब पग दीजै। -उसमान

रवि ससि नखत दियहि ओहि जोती, रतन पदारथ माणिक मोती।

जहँ तहँ विहसि सुभावहि हँसी, तहँ जहँ छिटकी जोति परगसी।। -जायसी

बसहि पक्षी बोलहि बहुभाखा, करहि हुलास देखिके शाखा। -जायसी

तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल, बुधि पदमिनी चीन्हा।।

AJAY KUMAR

गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा। बिनु गुरु जगत को निरगुण पावा।।

नागमती यह दुनिया धंधा। बांचा सोई न एहि चित्त बंधा।।

राघव दूत सोई सैतान। माया अलाउदी सुल्तान।। -जायसी

जहाँ न राति न दिवस है, जहाँ न पौन न घरानि।

तेहि वन होई सुअरा बसा, को रे मिलावे आनि।। -जायसी

मानुस प्रेम भएउँ बैकुंठी, नाहि त काह छार भरि मूठि।

(प्रेम ही मनुष्य के जीवन का चरम मूल्य है, जिसे पाकर मनुष्य बैकुंठी हो जाता है, अन्यथा वह एक मुट्ठी राख नहीं तो और क्या है ? - जायसी

छार उठाइ लीन्हि एक मूठी,

दीन्हि उड़ाइ पिरिथमी झूठी। -जायसी

सोलह सहस्त्र पीर तनु एकै, राधा जीव सब देह। -सूरदास

पुख नछत्र सिर ऊपर आवा।

हौं बिनु नौंह मंदिर को छावा।

बरिसै मघा झँकोरि झँकोरि।

मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी। -जायसी

पिउ सो कहहू संदेसड़ा हे भौंरा हे काग।

सो धनि बिरहें जरि मुई तेहिक धुँआ हम लाग।। -जायसी

जसोदा हरि पालने झुलावे/सोवत जानि मौन है रहि करि-करि सैन बतावे/इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमती मधुरै गावे। -सूरदास

सिखवत चलत जसोदा मैया

अरबराय करि पानि गहावत डगमगाय धरनी धरि पैंया। - सूरदास

मैया हौं न चरैहों गाय -सूरदास

मैया री मोहिं माखन भावे -सूरदास

AJAY KUMAR

मैया कबहि बढ़ेगी चोटी -सूरदास

मैया मोहि दाउ बहुत खिझायौ -सूरदास

'जिस तरह के उन्मुक्त समाज की कल्पना अंग्रेज कवि शेली ने की है ठीक उसी तरह का उन्मुक्त समाज है गोपियों का।' -आचार्य शुक्ल

'गोपियों का वियोग-वर्णन, वर्णन के लिए ही है उसमें परिस्थितियों का अनुरोध नहीं है। राधा या गोपियों के विरह में वह तीव्रता और गंभीरता नहीं है जो समुद्र पार अशोक वन में बैठी सीता के विरह में है।' -आचार्य शुक्ल

अति मलीन वृषभानु कुमारी।/छूटे चिहुर वदन कुभिलाने, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी। -सूरदास

ज्यों स्वतंत्र होई त्यों बिगड़हिं नारी

(जिमी स्वतंत्र भए बिगड़हिंनारी) -तुलसीदास

सास कहे ननद खिजाये राणा रहयो रिसाय

पहरा राखियो, चौकी बिठायो, तालो दियो जराय। -मीरा

संतन ठीग बैठि-बैठि लोक लाज खोई -मीरा

या लकुटि अरु कंवरिया पर

राज तिहु पुर को तजि डारो -रसखान

काग के भाग को का कहिये,

हरि हाथ सो ले गयो माखन रोटी -रसखान

मानुस हौं तो वही रसखान बसो संग गोकुल गांव के ग्वारन -रसखान

'जिस प्रकार रामचरित का गान करने वाले भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार कृष्णचरित गानेवाले भक्त कवियों में महात्मा सूरदास जी का। वास्तव में ये हिन्दी काव्यगगन के सूर्य और चंद्र है।' -आचार्य शुक्ल

रचि महेश निज मानस राखा, पाई सुसमय शिवासन भाखा -तुलसीदास

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदशरथ अजिर बिहारी -तुलसीदास

सबहिं नचावत राम ग़ोसाई, मोहि नचावत तुलसी गोसाई -फादर कामिल बुल्के

'बुद्ध के बाद तुलसी भारत के सबसे बड़े समन्वयकारी है' -जार्ज ग्रियर्सन

AJAY KUMAR

'मानस (तुलसी) लोक से शास्त्र का, संस्कृत से भाषा (देश भाषा) का, सगुण से निर्गुण का, ज्ञान से भक्ति का, शैव से वैष्णव का, ब्राह्मण से शूद्र का, पंडित से मूर्ख का, गार्हस्थ से वैराग्य का समन्वय है।' -हजारी प्रसाद द्विवेदी

बहुरि वदन विधु अँचल ढाँकी, पिय तन चितै भौंह करि बांकी खंजन मंजु तिरीछे नैननि, निज पति कहेउं तिनहहिं सिय सैननि। (ग्रामीण स्त्रियों द्वारा राम से संबंध के प्रश्न पूछने पर सीता का आंगिक लक्षणों से जवाब) -तुलसीदास

हे खग हे मृग मधुकर श्रेणी क्या तूने देखी सीता मृगनयनी -तुलसीदास

पूजिये विप्र शील गुण हीना, शूद्र न गुण गन ज्ञान प्रवीना -तुलसीदास

छिति, जल, पावक, गगन, समीरा,  पंचरचित यह अधम शरीरा। -तुलसीदास

कत विधि सृजी नारी जग माहीं, पराधीन सपनेहु सुख नाहीं -तुलसीदास

अखिल विश्व यह मोर उपाया , सब पर मोहि बराबर माया। -तुलसीदास

काह कहौं छवि आजुकि भले बने हो नाथ।

तुलसी मस्तक तव नवै धरो धनुष शर हाथ।। -तुलसीदास

सब मम प्रिय सब मम उपजाये

सबते अधिक मनुज मोहिं भावे -तुलसीदास

मेरी न जात-पाँत, न चहौ काहू की जात-पाँत -तुलसीदास

सुन रे मानुष भाई,

सबार ऊपर मानुष सत्य

ताहार ऊपर किछु नाई। -चण्डी दास

बड़ा भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा -तुलसीदास

'जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर जैसे रससिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तः करणों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यतः भक्ति युग कहते हैं। निश्चित ही वह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग था।' -श्याम सुन्दर दास

'हिन्दी काव्य की सब प्रकार की रचना शैली के ऊपर गोस्वामी तुलसीदास ने अपना ऊँचा आसन प्रतिष्ठित किया है। यह उच्चता और किसी को प्राप्त नहीं।' -रामचन्द्र शुक्ल

जनकसुता, जगजननि जानकी।

AJAY KUMAR

अतिसय प्रिय करुणानिधान की। -तुलसीदास

तजिए ताहि कोटि बैरी सम जयपि परम सनेही। -तुलसीदास

अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेल बोई।

सावन माँ उमग्यो हियरा भणक सुण्या हरि आवण री। -मीरा

घायल की गति घायल जानै और न जानै कोई। -मीरा

मोर पंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।

ओढि पिताबंर लै लकुटी बन गोधन ग्वालन संग फिरौंगी।

भावतो सोई मेरो रसखानि सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी। - रसखान

जब जब होइ धरम की हानि। बढ़हिं असुर महा अभिमानी।।

तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं सकल सज्जन भवपीरा।। -तुलसीदास

'समूचे भारतीय साहित्य में अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति साहित्य है। यह एक नई दुनिया है।' -हजारी प्रसाद द्विवेदी

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।

प्रेम गली अती सांकरी, ता में दो न समाहि।। -कबीर

मो सम कौन कुटिल खल कामी -सूरदास

भरोसो दृढ इन चरनन केरो -सूरदास

धुनि ग्रमे उत्पन्नो, दादू योगेंद्रा महामुनि -रज्जब

सब ते भले विमूढ जन, जिन्हें न व्यापै जगत गति -तुलसीदास

केसव कहि न जाइ का कहिए।

देखत तब रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिए। ('विनय पत्रिका') -तुलसीदास

पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेउ -विट्ठलदास

AJAY KUMAR

हरि है राजनीति पढ़ि आए - सूरदास

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।। -मलूकदास

हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।

सब जग जलता देख, भया कबीर उदास।। -कबीर

विक्रम धँसा प्रेम का बारा, सपनावती कहँ गयऊ पतारा। -मंझन

कब घर में बैठे रहे, नाहिंन हाट बाजार

मधुमालती, मृगावती पोथी दोउ उचार। -बनारसी दास

मुझको क्या तू ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास रे। -कबीर

रुकमिनि पुनि वैसहि मरि गई

कुलवंती सत सो सति भई -कुतबन

बलंदीप देखा अँगरेजा, तहाँ जाई जेहि कठिन करेजा -उसमान

जानत है वह सिरजनहारा, जो किछु है मन मरम हमारा।

हिंदु मग पर पाँव न राखेऊ, का जो बहुतै हिंदी भाखेऊ।। ('अनुराग बाँसुरी') -नूर मुहम्मद

यह सिर नवे न राम कू, नाहीं गिरियो टूट।

आन देव नहिं परसिये, यह तन जायो छूट।। -चरनदास

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहत अस होय।

गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।। -रहीम

मो मन गिरिधर छवि पै अटक्यो/ललित त्रिभंग चाल पै चलि कै, चिबुक चारु गड़ि ठटक्यो -कृष्णदास

कहा करौ बैकुंठहि जाय

जहाँ नहिं नंद, जहाँ न जसोदा, नहिं जहँ गोपी, ग्वाल न गाय -परमानंद दास

बसो मेरे नैनन में नंदलाल

मोहनि मूरत, साँवरि सूरत, नैना बने रसाल -मीरा

लोटा तुलसीदास को लाख टका को मोल -होलराय

साखी सबद दोहरा, कहि कहिनी उपखान।

भगति निरूपहिं निंदहि बेद पुरान।। -तुलसीदास

माता पिता जग जाइ तज्यो

विधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई -तुलसीदास

निर्गुण ब्रह्म को कियो समाधु

तब ही चले कबीरा साधु। -दादू

अपना मस्तक काटिकै बीर हुआ कबीर -दादू

सो जागी जाके मन में मुद्रा/रात-दिवस ना करई निद्रा -कबीर

काहे री नलिनी तू कुम्हलानी/तेरे ही नालि सरोवर पानी। -कबीर

कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो -नाभादास

नैया बिच नदिया डूबति जाय -कबीर

भक्तिहिं ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा -तुलसी

प्रभुजी मोरे अवगुन चित्त न धरो -सूर

अब लौ नसानो अब न नसैहौं [अब तक का जीवन नाश (बर्बाद) किया। आगे न करूँगा।] -तुलसी

अव्वल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे -कबीर

संत हृदय नवनीत समाना -तुलसी

रामझरोखे बैठ के जग का मुजरा देख -कबीर

निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोई।

सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि-मन भ्रम होई।। -तुलसी

स्याम गौर किमि कहौं बखानी।

AJAY KUMAR

गिरा अनयन नयन बिनु बानी।। -तुलसी

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे मांहि।

ज्यों रहीम नटकुंडली, सिमिट कूदि चलि जांहि।। -रहीम

प्रेम प्रेम ते होय प्रेम ते पारहिं पइए -सूर

तब लग ही जीबो भला देबौ होय न धीम।

जन में रहिबो कुँचित गति उचित न होय रहीम।। -रहीम

सेस महेस गनेस दिनेस, सुरेसहुँ जाहि निरंतर गावैं।

जाहिं अनादि अनन्त अखंड, अछेद अभेद सुबेद बतावैं।। -रसखान

बहु बीती थोरी रही, सोऊ बीती जाय।

हित ध्रुव बेगि विचारि कै बसि बृंदावन आय।। -ध्रुवदास

## पूर्व-मध्यकालीन/भक्तिकालीन रचना एवं रचनाकार

### (A) संत काव्य

| | |
|---|---|
| बीजक (1. रमैनी 2. सबद 3. साखी; संकलन धर्मदास) | कबीरदास |
| बानी | रैदास |
| ग्रंथ साहिब में संकलित (संकलन-गुरु अर्जुन देव) | नानक देव |
| सुंदर विलाप | सुंदर दास |
| रत्न खान, ज्ञानबोध | मलूक दास |

### (B) सूफी काव्य

| | |
|---|---|
| हंसावली | असाइत |
| चंदायन या लोरकहा | मुल्ला दाऊद |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| मधुमालती | मंझन |
| मृगावती | कुतबन |
| चित्रावती | उसमान |
| पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कन्हावत | जायसी |
| माधवानल कामकंदला | आलम |
| ज्ञान दीपक | शेख नबी |
| रस रतन | पुहकर |
| लखमसेन पद्मावत कथा | दामोदर कवि |
| रूप मंजरी | नंद दास |
| सत्यवती कथा | ईश्वर दास |
| इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी | नूर मुहम्मद |

(C) कृष्ण भक्ति काव्य

सूरसागर,सूरसारावली,साहित्य लहरी,भ्रमरगीत(सूरसागर से संकलित अंश) सूरदास

| | |
|---|---|
| फुटकल पद | कुंभन दास |
| परमानंद सागर | परममानंद दास |
| जुगलमान चरित्र | कृष्ण दास |
| फुटकल पद | गोविंद स्वामी |
| द्वादशयश, भक्ति प्रताप, हितजू को मंगल | चतुर्भुज दास |
| रास पंचाध्यायी, भंवर गीत (प्रबंध काव्य) | नंद दास |
| युगल शतक | श्री भट्ट |
| हित चौरासी | हित हरिवंश |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| हरिदास जी के पद | स्वामी हरिदास |
| भक्त नामावली, रसलावनी | ध्रुव दास |
| नरसी जी का मायरा,गीत गोविंद टीका,राग गोविंद,राग सोरठ के पद | मीराबाई |
| प्रेम वाटिका, सुजान रसखान, दानलीला | रसखान |
| सुदामा चरित | नरोत्तमदास |

(D) राम भक्ति काव्य

| | |
|---|---|
| राम आरती | रामानंद |
| रामाष्टयाम, राम भजन मंजरी | अग्र दास |
| भरत मिलाप, अंगद पैज | ईश्वर दास |
| रामचरित मानस (प्र०), गीतावली, कवितावली, | तुलसीदास |
| विनयपत्रिका, दोहावली, कृष्ण गीतावली, | तुलसीदास |
| पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण (प्र०), | तुलसीदास |
| रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी, राम लला नहछू | तुलसीदास |
| भक्त माल | नाभादास |
| रामचन्द्रिका (प्रबंध काव्य) | केशव दास |
| पौरुषेय रामायण | नरहरि दास |

(E) विविध

| | |
|---|---|
| पंचसहेली | छीहल |
| हरिचरित, भागवत दशम स्कंध भाषा | लालच दास |
| रुक्मिणी मंगल, छप्पय नीति, कवित्त संग्रह महापात्र | नरहरि बंदीजन |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| माधवानल कामकंदला | आलम |
| शत प्रश्नोत्तरी | मनोहर कवि |
| हनुमन्नाटक | बलभद्र मिश्र |
| कविप्रिया, रसिक प्रिया , वीर सिंह, देव चरित(प्र०), | केशव दास |
| विज्ञान गीता, रतनबावनी, जहाँगीर जस चंद्रिका | केशव दास |
| रहीम दोहावली या सतसई, बरवै नायिका भेद, | रहीम (अब्दुर्रहीम खाने खाना) |
| श्रृंगार सोरठा, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली | रहीम (अब्दुर्रहीम खाने खाना) |
| काव्य कल्पद्रुम | सेनापति |
| रस रतन | पुहकर कवि |
| सुंदर श्रृंगार | सुंदर |
| पद्मिनी चरित्र | लालचंद |

'अष्टछाप' के कवि

| | |
|---|---|
| बल्लभाचार्य के शिष्य | (1) सूरदास (2) कुंभन दास (3) परमानंद दास (4) कृष्ण दास |
| बिट्ठलनाथ के शिष्य | (5) छीत स्वामी (6) गोविंद स्वामी (7) चतुर्भुज दास (8) नंद दास |

## उत्तर-मध्यकाल/रीतिकाल (1650ई० - 1850ई०)

नामकरण की दृष्टि से उत्तर-मध्यकाल विवादास्पद है। इसे मिश्र बंधु ने 'अलंकृत काल', रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल' और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगार काल' कहा है।

रीतिकाल के उदय के संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है : 'इसका कारण जनता की रूचि नहीं, आश्रयदाताओं की रूचि थी, जिसके लिए वीरता और कर्मण्यता का जीवन बहुत कम रह गया था। .... रीतिकालीन कविता में लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, श्रृंगारिकता आदि की जो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं उसकी परंपरा संस्कृत साहित्य से चली आ रही थीं।

AJAY KUMAR

डॉ० नगेन्द्र का मत है, 'घोर सामाजिक और राजनीतिक पतन के उस युग में जीवन बाहय अभिव्यक्तियों से निराश होकर घर की चारदीवारी में कैद हो गया था। घर में न शास्त्र चिंतन था न धर्म चिंतन। अभिव्यक्ति का एक ही माध्यम था-काम। जीवन की बाहय अभिव्यक्तियों से निराश होकर मन नारी के अंगों में मुँह छिपाकर विशुद्ध विभोर तो हो जाता था' ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, 'संस्कृत के प्राचीन साहित्य विशेषतः रामायण और महाभारत से यदि भक्तिकाल के कवियों ने प्रेरणा ली तो रीतिकाल के कवियों ने उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य से प्रेरणा व प्रभाव लिया। ..... लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, अलंकार और संचारी आदि भावों के पूर्वनिर्मित वर्गीकरण का आधार लेकर ये कवि बंधी-सधी बोली में बंधे-सधे भावों की कवायद करने लगे' ।

समग्रतः रीतिकालीन काव्य जनकाव्य नहीं है बल्कि दरबारी संस्कृति का काव्य है। इसमें श्रृंगार और शब्द-सज्जा पर जोर रहा। कवियों ने सामान्य जनता की रुचि को अनदेखा कर सामंतों एवं रईसों की अभिरुचियों को कविता के केन्द्र में रखा। इससे कविता आम आदमी के दुख एवं हर्ष से जुडने के बजाय दरबारों के वैभव व विलास से जुड़ गई।

रीतिकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ थीं-

(1) रीति निरूपण

(2) श्रृंगारिकता।

रीति निरूपण को काव्यांग विवेचन के आधार पर दो वर्गो में बाँटा जा सकता है

(1) सर्वांग विवेचन : सर्वांग विवेचन के अन्तर्गत काव्य के सभी अंगों (रस, छंद, अलंकार आदि) को विवेचन का विषय बनाया गया है। चिन्तामणि का 'कविकुलकल्पतरु', देव का 'शब्द रसायन', कुलपति का 'रस रहस्य', भिखारी दास का 'काव्य निर्णय' इसी तरह के ग्रंथ हैं।

(ii) विशिष्टांग विवेचन : विशिष्टांग विवेचन के तहत काव्यांगों में रस, छंद व अलंकारों में से किसी एक अथवा दो अथवा तीनों का विवेचन का विषय बनाया गया है। तीनों में रस में और रस में भी श्रृंगार रस में रचनाकारों ने विशेष दिलचस्पी दिखाई है। 'रसविलास' (चिंतामणि), 'रसार्णव' (सुखदेव मिश्र), 'रस प्रबोध' (रसलीन), 'रसराज' (मतिराम), 'श्रृंगार निर्णय' (भिखारी दास), 'अलंकार रत्नाकर' (दलपति राय), 'छंद विलास' (माखन) आदि इसी श्रेणी के ग्रंथ हैं।

रीति निरूपण की परिपाटी बहुत सतही है। रीति निरूपण में रीति कालीन रचनाकारों की रूचि शास्त्र के प्रति निष्ठा का परिणाम नहीं है बल्कि दरबार में पैदा हुई रचनात्मक आवश्यकता है। इनका उद्देश्य सिर्फ नवोदित कवियों को काव्यशास्त्र की हल्की-फुल्की जानकारी देना है तथा अपने आश्रयदाताओं पर अपने पांडित्य का धौंस जमाकर अर्थ दोहन करना है।

रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त।

(i) रीतिबद्ध कवि : रीतिबद्ध कवियों (आचार्य कवियों) ने अपने लक्षण ग्रंथों में प्रत्यक्ष रूप से रीति परम्परा का निर्वाह किया है; जैसे- केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, सेनापति, देव, पद्माकर आदि। आचार्य राचन्द्र शुक्ल ने केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है।

(ii) रीतिसिद्ध कवि : रीतिसिद्ध कवियों की रचनाओं की पृष्ठभूमि में अप्रत्यक्ष रूप से रीति परिपाटी काम कर रही होती है। उनकी रचनाओं को पढ़ने से साफ पता चलता है कि उन्होंने काव्य शास्त्र को पचा रखा है। बिहारी, रसनिधि आदि इस वर्ग में आते है।

(iii) रीतिमुक्त कवि : रीति परंपरा से मुक्त कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा जाता है। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव आदि इस वर्ग में आते हैं।

रीतिकालीन आचार्यों में देव एकमात्र अपवाद है जिन्होंने रीति निरूपण के क्षेत्र में मौलिक उद्भावनाएं की।

रीतिकाल की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति श्रृंगारिकता थी।

(i) रीतिबद्ध कवियों की श्रृंगारिकता : रीतिबद्ध कवियों ने काव्यांग निरूपण करते हुए उदाहरणस्वरूप श्रृंगारिकता रचनाएँ प्रस्तुत की है। केशवदास, चिंतामणि, देव, मतिराम आदि की रचनाओं में इसे देखा जा सकता है।

(ii) रीतिसिद्ध कवियों की श्रृंगारिकता : रीतिसिद्ध कवियों का काव्य रीति निरूपण से तो दूर है, किन्तु रीति की छाप लिए हुए है। बिहारी, रसनिधि आदि की रचनाओं में इसे देखा जा सकता है।

(iii) रीतिमुक्त कवियों की श्रृंगारिकता : रीतिमुक्त कवियों की श्रृंगारिकताविशिष्ट प्रकार की है। रीतिमुक्त कवि 'प्रेम की पीर' के सच्चे गायक थे। इनके श्रृंगार में प्रेम की तीव्रता भी है एवं आत्मा की पुकार भी। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा आदि की रचनाओं में इसे महसूस किया जा सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है : "श्रृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है। .... बिहारी ने इस सतसई के अतिरिक्त और कोई ग्रंथ नहीं लिखा। यही एक ग्रंथ उनकी इतनी बड़ी कीर्ति का आधार है। .... मुक्तक कविता में जो गुण होना चाहिए वह बिहारी के दोहों में अपने चरम उत्कर्ष को पहुँचा है, इसमें कोई संदेह नहीं।

जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी। इसी से वे दोहे ऐसे छोटे छंद में इतना रस भर सके हैं। इनके दोहे क्या है रस के छोटे-छोटे छीटें है।"

थोड़े में बहुत कुछ कहने की अदभुत क्षमता को देखते हुए किसी ने कहा है-

*सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।*

*देखन में छोटे लगे, घाव करै गंभीर।।*

AJAY KUMAR

अर्थात जिस तरह नावक अर्थात तीरंदाज के तीर देखने में छोटे होते हैं पर गंभीर घाव करते हैं, उसी तरह बिहारी सतसई के दोहे देखने में छोटे लगते है पर अत्यंत गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

रीतिकाल की गौण प्रवृत्तियाँ थीं- भक्ति वीरकाव्य/राज प्रशस्ति व नीति।

रीतिकाल में भक्ति की प्रवृत्ति मंगलाचरणों, ग्रंथों की समाप्ति पर आशीर्वचनों, काव्यांग विवेचन संबंधी ग्रंथों में दिए गए उदाहरणों आदि में मिलती है।

रीतिकाल में लाल कवि, पद्माकर भट्ट, सूदन, खुमान, जोधराज आदि ने जहाँ प्रबंधात्मक वीर-काव्य की रचना की, वहीं भूषण, बाँकी दास आदि मुक्तक वीर-काव्य की। इन कवियों ने अपने संरक्षक राजाओं का ओजस्वी वर्णन किया है।

रीतिकाल में वृन्द, रामसहाय दास, दीन दयाल गिरि, गिरिधर, कविराय, घाघ-भड्डरि, वैताल आदि ने निति विषयक रचनाएँ रची।

रीतिकालीन शिल्पगत विशेषताएँ :

(1) सतसई परम्परा का पुनरुद्धार

(2) काव्य भाषा-वज्रभाषा (श्रुति मधुर व कोमल कांत पदावलियों से युक्त तराशी हुई भाषा)

(3) काव्य रूप-मुख्यतः मुक्तक का प्रयोग

(4) दोहा छंद की प्रधानता (दोहे 'गागर में सागर' शैली वाली कहावत को चरितार्थ करते है तथा लोकप्रियता के लिहाज से संस्कृत के 'श्लोक' एवं अरबी-फारसी के शेर के समतुल्य है।); दोहे के अलावा 'सवैया' (श्रृंगार रस के अनुकूल छंद) और 'कवित्त' (वीर रस के अनुकूल छंद) रीति कवियों के प्रिय छंद थे। केशवदास की 'रामचंद्रिका' को 'छंदों' का अजायबघर' कहा जाता है।

रीतिमुक्त/रीति स्वच्छन्द काव्य की विशेषताएँ : बंधन या परिपाटी से मुक्त रहकर रीतिकाव्य धारा के प्रवाह के विरुद्ध एक अलग तथा विशिष्ट पहचान बनाने वाली काव्यधारा 'रीतिमुक्त काव्य' के नाम से जाना जाता है। रीतिमुक्त काव्य की विशेषताएँ थीं :

(1) रीति स्वच्छंदता

(2) स्वअनुभूत प्रेम की अभिव्यक्ति

(3) विरह का आधिक्य

(4) कला पक्ष के स्थान पर भाव पक्ष पर जोर

(5) पृथक काव्यादर्श/प्राचीन काव्य परम्परा का त्याग

AJAY KUMAR

(6) सहज, स्वाभाविक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति

(7) सरल, मनोहारी बिम्ब योजना व सटीक प्रतीक विधान

रीतिकालीन देव ने फ्रायड की तरह, लेकिन फ्रायड के बहुत पहले ही, काम को समस्त जीवों की प्रक्रियाओं के केन्द्र में रखकर अपने समय में क्रांतिकारी चिंतन दिया।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

**इत आवति चलि, जाति उत चली छ सातक हाथ।**

**चढ़ि हिंडोरे सी रहै लागे उसासनु हाथ।।**

(विरही नायिका इतनी अशक्त हो गयी है कि सांस लेने मात्र से छः सात हाथ पीछे चली जाती है और सांस छोड़ने मात्र से छः सात हाथ आगे चली जाती है। ऐसा लगता है मानो जमीन पर खड़ी न होकर हिंडोले पर चढ़ी हुई है।) -बिहारी

**वासर की संपति उलूक ज्यों न चितवत**

(जिस तरह दिन में उल्लू संपत्ति की ओर नहीं ताकते उसी तरह राम अन्य स्त्रियों की तरफ नहीं देखते।) -केशवदास

आगे के कवि रीझिहें, तो कविताई, न तौ

राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

(आगे के कवि रीझें तो कविता है अन्यथा राधा-कृष्ण के स्मरण का बहाना ही सही।) -भिखारी दास

जान्यौ चहै जु थोरे ही, रस कविता को बंस।

तिन्ह रसिकन के हेतु यह, कान्हों रस सारंस।। -भिखारी दास

काव्य की रीति सिखी सुकवीन सों

(मैंने काव्य की रीति कवियों से ही सीखी है।) -भिखारी दास

तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार -भिखारी दास

रीति सुभाषा कवित की बरनत बुधि अनुसार -चिंतामणि

अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि -रीति -देव

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नैकु सयानप बाँक नहीं।

तहँ साँचे चलैं ताजि आपनपौ, झिझकै कपटी जे निसांक नहीं।। -घनानन्द

यह कैसो संयोग न सूझि पड़ै जो वियोग न एको विछोहत है -घनानंद

मोहे तो मेरे कवित्त बनावत। -घनानंद

यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पर धाबनो है -बोधा

जदपि सुजाति सुलक्षणी सुवरण सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न विराजई कविता वनिता मीत।। -केशवदास

लोचन, वचन, प्रसाद, मुद्द हास, वास चित्त मोद।

इतने प्रगट जानिये वरनत सुकवि विनोद।। -मतिराम

युक्ति सराही मुक्ति हेतु, मुक्ति भुक्ति को धाम।

युक्ति, मुक्ति और भुक्ति को मूल सो कहिये काम।। -देव

दृग अरुझत, टूटत कुटुम्ब, जुरत चतुर चित प्रीति।

पड़ति गांठ दुर्जन हिये दई नई यह रीति।। -बिहारी

फागु के भीर अभीरन में गहि, गोविंदै लै गई भीतर गोरी।

भाई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाहिं अबीर की झोरी।

छीनी पितंबर कम्मर ते सु, विदा दई मीड़ि कपोलन रोरी

नैन नचाय कही मुसकाय,'लला फिर आइयो खेलन होरी' । -पद्माकर

आँखिन मूंदिबै के मिस, आनि अचानक पीठि उरोज लगावै -चिंतामणि

मानस की जात सभै एकै पहिचानबो -गुरु गोविंद सिंह

अभिधा उत्तम काव्य है मध्य लक्षणा लीन

अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत प्रवीन। -देव

अमिय, हलाहल, मदभरे, सेत, स्याम, रतनार।

जियत, मरत, झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार।। -रसलीन

भले बुरे सम, जौ लौ बोलत नाहिं

जानि परत है काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं। -वृन्द

कनक छुरी सी कामिनी काहे को कटि छीन -आलम

नेही महा बज्रभाषा प्रवीन और सुंदरतानि के भेद को जानै -बज्रनाथ

एक सुभान कै आनन पै कुरबान जहाँ लगि रूप जहाँ को -बोधा

आलम नेवाज सिरताज पातसाहन के

गाज ते दराज कौन नजर तिहारी है -चन्द्रशेखर

देखे मुख भावै अनदेखे कमल चंद

ताते मुख मुरझे कमला न चंद। -केशवदास

सटपटाति-सी ससि मुखी मुख घूँघट पर ढाँकि -बिहारी

मेरी भव बाधा हरो -बिहारी

कुंदन का रंग फीको लगै, झलकै अति अंगनि चारु गोराई।

आँखिन में अलसानि, चित्तौन में मंजु विलासन की सरसाई।।

को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकानि मिठाई।

ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे है नैननि त्यों-त्यों खरी निकरै सी निकाई।। -मतिराम

तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।

अनबूड़े बूड़ेतिरे जे बूड़ेसब अंग।। -बिहारी

साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि -भूषण

गुलगुली गिलमैं, गलीचा है, गुनीजन हैं, चिक हैं, चिराकैं है, चिरागन की माला हैं।

कहै पदमाकर है गजक गजा हूँ सजी,

सज्जा हैं, सुरा हैं, सुराही हैं, सुप्याला हैं। -पद्माकर

AJAY KUMAR

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागै ज्यौं ज्यौं निहारियै।

त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै। -घनानंद

घनानंद प्यारे सुजान सुनौ, इत एक तें दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

[सुजान-घनानंद की प्रेमिका का नाम: घनानंद ने प्रायः सुजान

(एक अर्थ-सुजान, दूसरा अर्थ-श्रीकृष्ण) को संबोधित करते हुए अपनी कविताएँ रची है] -घनानंद

चाह के रंग मैं भीज्यौ हियो, बिछुरें-मिलें प्रीतम सांति न मानै।

भाषा प्रबीन, सुछंद सदा रहै, सो घनजी के कबित्त बखानै।। -बज्रनाथ (घनानंद के कवि-मित्र एवं प्रशस्तिकार)

## उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना |
|---|---|
| चिंतामणि | कविकुल कल्पतरु, रस विलास, काव्य विवेक, श्रृंगार मंजरी, छंद विचार |
| मतिराम | रसराज, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी |
| राजा जसवंत सिंह | भाषा भूषण |
| भिखारी दास | काव्य निर्णय, श्रृंगार निर्णय |
| याकूब खाँ | रस भूषण |
| रसिक सुमति | अलंकार चन्द्रोदय |
| दूलह | कवि कुल कण्ठाभरण |
| देव | शब्द रसायन, काव्य रसायन, भाव विलास, भवानी विलास, सुजान विनोद, सुख सागर तरंग |
| कुलपति मिश्र | रस रहस्य |
| सुखदेव मिश्र | रसार्णव |
| रसलीन | रस प्रबोध |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| दलपति राय | अलंकार रत्नाकर |
| माखन | छंद विलास |
| बिहारी | बिहारी सतसई |
| रसनिधि | रतनहजारा |
| घनानन्द | सुजान हित प्रबंध, वियोग बेलि, इश्कलता, प्रीति पावस, पदावली |
| आलम | आलम केलि |
| ठाकुर | ठाकुर ठसक |
| बोधा | विरह वारीश, इश्कनामा |
| द्विजदेव | श्रृंगार बत्तीसी, श्रृंगार चालीसी, श्रृंगार लतिका |
| लाल कवि | छत्र प्रकाश (प्रबंध) |
| पद्माकर भट्ट | हिम्मत बहादुर विरुदावली (प्रबंध) |
| सूदन | सुजान चरित (प्रबंध) |
| खुमान | लक्ष्मण शतक |
| जोधराज | हम्मीर रासो |
| भूषण | शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक |
| वृन्द | वृन्द सतसई |
| राम सहाय दास | राम सतसई |
| दीन दयाल गिरि | अन्योक्ति कल्पद्रुम |
| गिरिधर कविराय | स्फुट छन्द |
| गुरु गोविंद सिंह | सुनीति प्रकाश, सर्वसोलह प्रकाश, चण्डी चरित्र |

## आधुनिक काल (1850 ई०-अब तक)

AJAY KUMAR

## भारतेन्दु युग (1850ई० - 1900 ई०)

भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर किया गया है।

भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ थीं- (1) नवजागरण (2) सामाजिक चेतना (3) भक्ति भावना (4) श्रृंगारिकता

(5) रीति निरूपण (6) समस्या-पूर्ति।

भारतेन्दु युग में भारतेन्दु को केन्द्र में रखते हुए अनेक कृती साहित्यकारों का एक उज्ज्वल मंडल प्रस्तुत हुआ, जिसे 'भारतेन्दु मण्डल' के नाम से जाना गया। इसमें भारतेन्दु के समानधर्मा रचनाकार थे। इस मंडल के रचनाकारों ने भारतेन्दु से प्रेरणा ग्रहण की और साहित्य की श्रीवृद्धि का काम किया।

भारतेन्दु मंडल के प्रमुख रचनाकार हैं- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', बाल कृष्ण भट्ट, अम्बिका दत्त व्यास, राधा चरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला श्री निवास दास, सुधाकर द्विवेदी, राधा कृष्ण दास आदि।

भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों का मूल स्वर नवजागरण है। नवजागरण की पहली अनुभूति हमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में मिलती है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गोपाल चन्द्र 'गिरिधर दास' अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे।

भारतेन्दु युगीन नवजागरण में एक ओर राजभक्ति (ब्रिटिश शासन की प्रशंसा) है तो दूसरी ओर देशभक्ति (ब्रिटिश शोषण का विरोध) ।

सामाजिक चेतना के चित्रण में कुछ कवियों की दृष्टि सुधारवादी थी तो कुछ कवियों की यथास्थितिवादी।

भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत आदि को लेकर सहानुभूतिपूर्ण कविताएं लिखी गयीं।

भारतेन्दु युगीन कवियों ने जनता की समस्याओं का व्यापक रूप से चित्रण किया।

भारतेन्दु युगीन भक्ति अन्य युगों की भाँति भक्ति-संप्रदाय निर्धारित भक्ति नहीं है। एक ही रचनाकार सगुण और निर्गुण दोनों तरह के पद रचते हैं।

इस युग की भक्ति रचना की विशेषता यह थी निर्गुण और सगुण भक्ति में सगुण भक्ति ही मुख्य साधना दिशा थी और सगुण भक्ति में भी कृष्ण भक्ति काव्य अधिक परिमाण में रचे गये।

भारतेन्दु युगीन कवियों ने श्रृंगार चित्रण में भक्ति कालीन कृष्ण काव्य परम्परा, रीतिकालीन नख-शिख, नायिका भेदी परम्परा तथा उर्दू कविता से सम्पर्क के फलस्वरूप प्रेम की वेदनात्मक व्यंजना को अपनाया।

भारतेन्दु युगीन कवि सेवक, सरदार, लछिराम आदि ने रीतिकालीन पद्धति को अपनाया।

रीति निरूपण के क्षेत्र में सेवक, सरदार, हनुमान, लछिराम वाली धारा सक्रिय रही।

रीति निरूपण की तरह समस्या पूर्ति भी रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्ति थी जिसे भारतेन्दु युगीन कवियों ने नया रूप दिया तथा इसे सामंतोन्मुख के स्थान पर जनोन्मुख बनाया।

कविता को जनोन्मुख बनाने का सबसे अधिक श्रेय समस्या पूर्ति को ही है।

भारतेन्दु 'कविता वर्धिनी सभा' के जरिये समस्यापूर्तियों का आयोजन करते थे। इसकी देखा-देखी कानपुर के 'रसिक समाज', आजमगढ़ के 'कवि समाज' ने समस्या पूर्ति के सिलसिले को आगे बढ़ाया।

भारतेन्दु युग में प्रबंध काव्य कम लिखे गये और जो लिखे गये वे प्रसिद्ध नहीं प्राप्त कर सके। मुक्तक कविताएँ ज्यादा लोकप्रिय हुई।

भारतेन्दु ने उन मुक्तक काव्य-रूपों का पुनरुद्धार किया जिन्हें अमीर खुसरो के बाद लगभग भुला दिया गया था। ये हैं पहेलियाँ और मुकरियाँ।

भारतेन्दु युग में भाषा के क्षेत्र में द्वैत वर्तमान रहा-पद्य के लिए बज्रभाषा और गद्य के लिए खड़ी बोली। हिन्दी गद्य की प्रायः सभी विधाओं का सूत्रपात भारतेन्दु युग में हुआ।

समग्रत : भारतेन्दु युगीन काव्य में प्राचीन व नयी काव्य प्रवृत्तियों का मिश्रण मिलता है। इसमें यदि एक ओर खुसरो कालीन काव्य प्रवृत्ति पहेली व मुकरियां, भक्ति कालीन काव्य प्रवृत्ति भक्ति भावना, रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियाँ श्रृंगारिकता, रीति निरूपण, समस्यापूर्ति जैसी पुरानी काव्य प्रवृत्तियाँ मिलती है तो दूसरी ओर राज भक्ति, देश भक्ति, देशानुराग की भक्ति, समाज सुधार, अर्थनीति का खुलासा, भाषा प्रेम जैसी नयी काव्य प्रवृत्तियाँ भी मिलती हैं।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

रोवहु सब मिलि, आवहु 'भारत भाई' ।

हा! हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई।। -भारतेन्दु

कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जल बल नासी।

जिन भय सिर न हिलाय सकत कहुँ भारतवासी।। -भारतेन्दु

यह जीय धरकत यह न होई कहूं कोउ सुनि लेई।

कछु दोष दै मारहिं और रोवन न दइहिं।। -प्रताप नारायण मिश्र

अमिय की कटोरिया सी चिरजीवी रहो विक्टोरिया रानी। -अंबिका दत्त व्यास

अँगरेज-राज सुख साज सजे सब भारी।

पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।। -भारतेन्दु

भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन-मन-धन मूसै।

जाहिर बातन में अति तेय, क्यों सखि सज्जन! नही अंगरेज।। -भारतेन्दु

सब गुरुजन को बुरा बतावैं, अपनी खिचड़ी अलग पकावै।

भीतर तत्व न, झूठी तेजी, क्यों सखि साजन नहिं अँगरेज़ी।। -भारतेन्दु

सर्वसु लिए जात अँगरेज़,

हम केवल लेक्चर के तेज। -प्रताप नारायण मिश्र

अभी देखिये क्या दशा देश की हो,

बदलता है रंग आसमां कैसे-कैसे -प्रताप नारायण मिश्र

हम आरत भारत वासिन पे अब दीनदयाल दया कीजिये। -प्रताप नारायण मिश्र

हिन्दू मुस्लिम जैन पारसी इसाई सब जात।

सुखि होय भरे प्रेमघन सकल 'भारती भ्रात'। -बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

कौन करेजो नहिं कसकत,

सुनि विपत्ति बाल विधवन की। -प्रताप नारायण मिश्र

हे धनियों !क्या दीन जनों की नहीं सुनते हो हाहाकार।

जिसका मरे पड़ोसी भूखा उसके भोजन को धिक्कार। -बाल मुकुन्द गुप्त

बहुत फैलाये धर्म, बढ़ाया छुआछूत का कर्म। -भारतेन्दु

सभी धर्म में वही सत्य, सिद्धांत न और विचारो। -भारतेन्दु

परदेशी की बुद्धि और वस्तुन की कर आस।

परवस है कबलौ कहौं रहिहों तुम वै दास।। -भारतेन्दु

तबहि लख्यौ जहँ रहयो एक दिन कंचन बरसत।

AJAY KUMAR

तहँ चौथाई जन रूखी रोटिहुँ को तरसत।। -प्रताप नारायण मिश्र

सखा पियारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के। -भारतेन्दु

साँझ सवेरे पंछी सब क्या कहते हैं कुछ तेरा है।

हम सब इक दिन उड़ जायेंगे यह दिन चार बसेरा है। -भारतेन्दु

बिन देखे न धीरज आनति है

प्रिय प्यारे तिहारे बिना

आँखियाँ दुखिया नहीं मानति है। -भारतेन्दु की एक समस्यापूर्ति

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।। -भारतेन्दु

अँगरेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन को हीन।। -भारतेन्दु

पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देश कलेस।

जैसे कन्ता घर रहै, तैसे रहे विदेस।। -प्रताप नारायण मिश्र

चहहु जु साँचहु निज कल्याण, तौ सब मिलि भारत सन्तान।

जपो निरन्तर एक जबान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।। -प्रताप नारायण मिश्र

भारतेन्दु ने गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया। उनके भाषा संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गए। -रामचन्द्र शुक्ल

'भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य को एक नये मार्ग पर खड़ा किया।

वे साहित्य के नये युग के प्रवर्तक हुए।' -रामचन्द्र शुक्ल

इन मुसलमान जनन पर कोटिन हिंदू बारहि -भारतेन्दु

आठ मास बीते जजमान

अब तो करो दच्छिना दान -प्रताप नारायण मिश्र

AJAY KUMAR

'साहित्य जन-समूह के हृदय का विकास है' । -बालकृष्ण भट्ट

'हिन्दी नयी चाल में ढली, सन् 1873 ई० में। -भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

## भारतेन्दुयुगीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | भारतेन्दुयुगीन रचना |
|---|---|
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | प्रेम मालिका, प्रेम सरोवर, गीत गोविन्दानन्द, वर्षा-विनोद, विनय-प्रेम, |
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | पचासा, प्रेम-फुलवारी, वेणु-गीति, दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा (खड़ी बोली में) |
| बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' | जीर्ण जनपद, आनन्द अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्श, |
| बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' | मयंक महिमा, अलौकिक लीला, वर्षा-बिन्दु, लालित्य लहरी, बृजचन्द पंचक |
| प्रताप नारायण मिश्र | प्रेमपुष्पावली,मन की लहर,लोकोक्ति शतक,तृप्यन्ताम,श्रृंगार विलास,दंगल खंड, ब्रेडला स्वागत |
| जनमोहन सिंह | प्रेमसंपत्ति लता, श्यामलता, श्यामा-सरोजिनी, देवयानी, ऋतु संहार (अ०), मेघदूत (अ०) |
| अम्बिका दत्त व्यास | पावस पचासा, सुकवि सतसई, हो हो होरी |
| राधा कृष्ण दास | कंस वध (अपूर्ण), भारत बारहमासा, देश दशा |

## द्विवेदी युग (1900ई०-1920ई०)

द्विवेदी युग 20 वी० सदी के पहले दो दशकों का युग है। इन दो दशकों के कालखण्ड ने हिन्दी कविता को श्रृंगारिकता से राष्ट्रीयता, जड़ता से प्रगति तथा रूढ़ि से स्वच्छंदता के द्वार पर ला खड़ा किया।

इस कालखंड के पथ प्रदर्शक, विचारक और सर्वस्वीकृत साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।

यह सर्वथा उचित है क्योंकि हिन्दी के कवियों और लेखकों की एक पीढ़ी का निर्माण करने, हिन्दी के कोश निर्माण की पहल करने, हिन्दी व्याकरण को स्थिर करने और खड़ी बोली का परिष्कार करने और उसे पद्य की भाषा बनाने आदि का श्रेय बहुत हद तक महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है।

द्विवेदी युग को 'जागरण-सुधार काल' भी कहा जाता है।

द्विवेदी युग में अधिकांश कवियों ने द्विवेदी जी के दिशा निर्देश के अनुशासन में काव्य रचना की। किन्तु कुछ कवि ऐसे भी थे जो उनके अनुशासन में नही थे और काव्य सृ जन कर रहे थे।

इस तरह, इस युग के कवियों के दो वर्ग थे-द्विवेदी मंडल के कवि और द्विवेदी मंडल के बाहर के कवि। द्विवेदी मंडल के कवियों की काव्यधारा को 'अनुशासन की धारा' तथा द्विवेदी मंडल के बाहर के कवियों की काव्यधारा को 'स्वच्छंदता की धारा' कहा जाता है।

द्विवेदी मंडल के कवियों में मैथलीशरण गुप्त, हरिऔध, सियारामशरण गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', महावीर प्रसाद द्विवेदी आते हैं।

द्विवेदी मंडल के बाहर (स्वच्छंदता की धारा) के कवियों में श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय, लोचन प्रसाद पांडेय, राम नरेश त्रिपाठी आदि प्रमुख हैं। इन कवियों की विशेषताएँ है प्रकृति का पर्यवेक्षण, उसकी स्वच्छंद भंगिमाओं का चित्रण, देशभक्ति, कथा गीत का प्रयोग, काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की स्वीकृति आदि। स्वच्छंदता वादी काव्य की यही धारा आगे चलकर छायावाद में गहरी हो जाती है।

द्विवेदी युग की विशेषताएँ :

(1) जागरण-सुधार (राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार/सामाजिक चेतना, मानवतावाद आदि)

(2) सोद्देश्यता, आदर्शपरकता व नीतिमत्ता

(3) आधुनिकता

(4) समस्या पूर्ति

(5) प्रकृति चित्रण

(6) विषय-विस्तार, इतिवृत्तात्मकता/विवरणात्मकता व उपदेशात्मकता

(7) काव्य-रूप-प्रबंध काव्य, खंड काव्य व मुक्तक कविता तीनों पर जोर

(8) गद्य और पद्य दोनों की भाषा के रूप में खड़ी बोली की मान्यता, बोधगम्य भाषा।

राम नरेश त्रिपाठी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की एक संकल्पना विकसित की। उनकी राय में राष्ट्रीयता के तीन खतरे हैं- विदेशी शासन (पराधीनता), एक तंत्रीय शासन (तानाशाही शासन) और विदेशी आक्रमण। इन्हीं तीन विषयों को लेकर त्रिपाठीजी ने काव्य त्रयी (Trio) की रचना की 'मिलन', 'पथिक' व 'स्वप्न' ।

मैथली शरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य- 'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

भारतेन्दु युग में जिस तरह अम्बिका चरण व्यास समस्यापूर्ति की राह से कविता के क्षेत्र में आये उसी तरह द्विवेदी युग में नाथूराम शर्मा 'शंकर'।

AJAY KUMAR

पहली बार द्विवेदी युग में प्रकृति को काव्य-विषय के रूप में मान्यता मिली। इसके पूर्व प्रकृति या तो उद्दीपन के रूप में आती थी या फिर अप्रस्तुत विधान का अंग बनकर। द्विवेदी युग में प्रकृति को आलंबन तथा प्रस्तुत विधान के रूप में मान्यता मिली। पर द्विवेदी युग में प्रकृति का स्थिर-चित्रण हुआ है, गतिशील चित्रण नहीं।

द्विवेदी युगीन कविता कथात्मक तथा अभिधात्मक होने के कारण इतिवृत्तात्मक/विवरणात्मक हो गई है।

प्रबंध काव्य : 'प्रिय प्रवास' व 'वैदेही वनवास' (हरिऔध), 'साकेत' व 'यशोधरा' (मैथली शरण गुप्त), 'उर्मिला' (बालकृष्ण शर्मा नवीन) आदि।

खण्ड काव्य : 'रंग में भंग', 'पंचवटी', 'जयद्रथ वध' व 'किसान' (मैथलीशरण गुप्त), 'मिलन', 'पथिक' व 'स्वप्न' (राम नरेश त्रिपाठी) आदि।

द्विवेदी युग के आरंभ में खड़ी बोली अनगढ़, शुष्क और अस्थिर-स्वरूप थी, किन्तु, शनैः शनैः उसका स्वरूप निश्चित, सुघड़ और मधुर बनता चला गया।

खड़ी बोली के स्वरूप निर्धारण और विकास का श्रेय द्विवेदी युग को है। मैथली शरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि थे। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' (1909) है। इनकी ख्याति का मूलाधार 'भारत-भारती' (1912) है। 'भारत भारती' ने हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएं जगाई और तभी से ये 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए। ये प्रसिद्ध राम भक्त कवि थे। 'राम चरित मानस' के पश्चात हिन्दी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण मैथली शरण गुप्त कृत 'साकेत' है।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी। -मैथली शरण गुप्त ('भारत-भारती')

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,

ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और हैं ? -मैथली शरण गुप्त ('भारत-भारती')

देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।। -नाथूराम शर्मा 'शंकर'

धरती हिलाकर नींद भगा दे।

वज्रनाद से व्योम जगा दे।

दैव, और कुछ लाग लगा दे। (स्वदेश-संगीत) -मैथली शरण गुप्त

जिसको नहीं गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं नरपशु निरा हैं, और मृतक समान है।। -मैथली शरण गुप्त

वन्दनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों।

बांधवता में बँधे परस्पर परता के अज्ञानी हों।। -श्रीधर पाठक

पराधीन रहकर अपना सुख शोक न कह सकता है।

यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।। -राम नरेश त्रिपाठी

सखि, वे मुझसे कहकर जाते ('यशोधरा') -मैथली शरण गुप्त

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।। -मैथली शरण गुप्त

नारी पर नर का कितना अत्याचार है।

लगता है विद्रोह मात्र ही अब उसका प्रतिकार है।। -मैथली शरण गुप्त

राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या ?

विश्व में रमे हुए सब कहीं नहीं हो क्या ? -मैथली शरण गुप्त

मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में,

तू मुझे खोजता था जब दीन के वतन में।

तू आह बन किसी को मुझको पुकारता था,

मैं था तुझे बुलाता संगीत के भजन में।। -राम नरेश त्रिपाठी

साहित्य समाज का दर्पण है। -महावीर प्रसाद द्विवेदी

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म नहीं होना चाहिए,

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए। ('भारत-भारती') -मैथली शरण गुप्त

अधिकार खोकर बैठना यह महा दुष्कर्म है,

न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। ('जयद्रथ वध') -मैथली शरण गुप्त

AJAY KUMAR

अन्न नहीं है वस्त्र नहीं है रहने का न ठिकाना

कोई नहीं किसी का साथी अपना और बिगाना। -रामनरेश त्रिपाठी

दिवस का अवसान समीप था,

गगन था कुछ लोहित हो चला

तरु शिखा पर थी अब राजति 'कमलिनी कुल-वल्लभ की प्रभा ('प्रिय प्रवास') -अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अहा, ग्राम्य जीवन भी क्या है,

क्यों न इसे सबका मन चाहे। -मैथली शरण गुप्त

खरीफ के खेतों में जब सुनसान है,

रब्बी के ऊपर किसान का ध्यान है। -श्रीधर पाठक

विजन वन-प्रांत था, प्रकृति मुख शांत था,

अटन का समय था, रजनि का उदय था। -श्रीधर पाठक

लख अपर-प्रसार गिरीन्द में।

ब्रज धराधिप के प्रिय-पुत्र का।

सकल लोग लगे कहने, उसे

रख लिया है ऊँगली पर श्याम ने। ('प्रियप्रवास') -हरिऔध

संदेश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया,

इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया। ('साकेत') -मैथली शरण गुप्त

'मैथली शरण गुप्त की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से हिन्दी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निस्संदेह कहे जा सकते हैं। -रामचन्द्र शुक्ल

मैं आया उनके हेतु कि जो शापित हैं,

जो विवश, बलहीन दीन शापित है ('साकेत' में राम की उक्ति) -मैथलीशरण गुप्त

हम राज्य लिये मरते हैं -मैथलीशरण गुप्त

AJAY KUMAR

## द्विवेदीयुगीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | द्विवेदीयुगीन रचना |
|---|---|
| नाथूराम शर्मा 'शंकर' | अनुराग रत्न, शंकर सरोज, गर्भरण्डा रहस्य, शंकर सर्वस्व |
| श्रीधर पाठक | वनाष्टक, काश्मीर सुषमा, देहरादून, भारत गीत, जार्ज वंदना (कविता), बाल विधवा (कविता) |
| महावीर प्रसाद द्विवेदी | काव्य मंजूषा, सुमन, कान्यकुब्ज अबला-विलाप |
| 'हरिऔध' | प्रियप्रवास, पद्यप्रसून, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, बोलचाल, रसकलस, वैदही वनवास |
| राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' | स्वदेशी कुण्डल, मृत्युंजय, राम-रावण विरोध, वसन्त-वियोग |
| रामचरित उपाध्याय | राष्ट्र भारती, देवदूत, देवसभा, विचित्र विवाह, रामचरित-चिन्तामणि (प्रबंध) |
| गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' | कृषक-क्रन्दन, प्रेम प्रचीसी, राष्ट्रीय वीणा, त्रिशूल तरंग, करुणा कादंबिनी |
| मैथली शरण गुप्त | रंग में भंग,जयद्रथ वध,भारत भारती,पंचवटी,झंकार,साकेत,यशोधरा,द्वापर,जय भारत,विष्णु प्रिया |
| रामनरेश त्रिपाठी | मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी |
| बाल मुकुन्द गुप्त | स्फुट कविता |
| लाला भगवानदीन 'दीन' | वीर क्षत्राणी, वीर बालक, वीर पंचरत्न, नवीन बीन |
| लोचन प्रसाद पाण्डेय | प्रवासी, मेवाड़ गाथा, महानदी, पद्य पुष्पांजलि |
| मुकुटधर पाण्डेय | पूजा फूल, कानन कुसुम |

## छायावाद युग (1918ई० - 1936 ई०)

'छायावाद' के वास्तविक अर्थ को लेकर विद्वानों में मतभेद है।

छायावाद का अर्थ मुकुटधर पाण्डेय ने 'रहस्यवाद', सुशील कुमार ने 'अस्पष्टता', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अन्योक्ति पद्धति', रामचन्द्र शुक्ल ने 'शैली वैचित्र्य', नंद दुलारे बाजपेयी ने 'आध्यात्मिक छाया का भान', डॉ० नगेन्द्र ने 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' बताया है।

AJAY KUMAR

नामवर सिंह के शब्दों में, 'छायावाद शब्द का अर्थ चाहे जो हो परंतु व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की उन समस्त कविताओं का द्योतक है जो 1918 ई० से लेकर 1936ई० ('उच्छवास' से 'युगान्त') तक लिखी गई'।

सामान्य तौर पर किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो वह 'छायावादी कविता' है। उदाहरण के तौर पर पंत की निम्न पंक्तियाँ देखी जा सकती है जो कहा तो जा रहा है छाँह के बारे में लेकिन अर्थ निकल रहा है नारी स्वातंत्र्य संबंधी :

कहो कौन तुम दमयंती सी इस तरु के नीचे सोयी, अहा तुम्हें भी त्याग गया क्या अलि नल-सा निष्ठुर कोई।

छायावाद युग की विशेषताएँ :

(1) आत्माभिव्यक्ति अर्थात 'मैं' शैली/उत्तम पुरुष शैली

(2) आत्म-विस्तार/सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति

(3) प्रकृति प्रेम

(4) नारी प्रेम एवं उसकी मुक्ति का स्वर

(5) अज्ञात व असीम के प्रति जिज्ञासा (रहस्यवाद)

(6) सांस्कृतिक चेतना व सामाजिक चेतना/मानवतावाद

(7) स्वच्छंद कल्पना का नवोन्मेष

(8) विविध काव्य-रूपों का प्रयोग

(9) काव्य-भाषा-ललित-लवंगी कोमल कांत पदावली वाली भाषा

(10) मुक्त छंद का प्रयोग

(11) प्रकृति संबंधी बिम्बों की बहुलता

(12) भारतीय अलंकारों के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य के मानवीकरण व विशेषण विपर्यय अलंकारों का विपुल प्रयोग

छायावाद के कवि चातुष्टय -प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी

छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति को मिलाया, निराला ने मुक्तक छन्द दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और सरस बनाया, तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले।

छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है।

AJAY KUMAR

प्रसाद की प्रथम काव्य कृति -उर्वशी (1909ई०)

प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति -झरना (1918 ई०)

प्रसाद की अंतिम काव्य कृति कामायनी (1937 ई०) -सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति

कामायनी के पात्र -मनु, श्रद्धा व इड़ा

पंत की प्रथम छायावादी काव्य कृति -उच्छवास (1918 ई०)

पंत की अंतिम छायावादी काव्य कृति -गुंजन (1932 ई०)

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

मैंने मैं शैली अपनाई

देखा एक दुःखी निज भाई। -निराला

व्यर्थ हो गया जीवन

मैं रण में गया हार। ('वनवेला') -निराला

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था

कुछ भी तेरे हित न कर सका।

जाना तो अर्थागमोपाय

पर रहा सदा संकुचित काय

लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर

हारता रहा मैं स्वार्थ समर। ('सरोज स्मृति') -निराला

छोटे से घर की लघु सीमा में

बंधे है क्षुद्र भाव,

यह सच है प्रिय

प्रेम का पयोनिधि तो उमड़ता है

AJAY KUMAR

सदा ही निःसीम भू पर। ('पंचवटी प्रसंग') -निराला

ताल-ताल से रे सदियों के जकड़े हृदय कपाट

खोल दे कर-कर कठिन प्रहार

आए अभ्यन्तर संयत चरणों से नव्य विराट

करे दर्शन पाये आभार। -निराला

हाँ सखि ! आओ बाँह खोलकर हम

लगकर गले जुड़ा ले प्राण

फिर तुम तम में, मैं प्रियतम में

हो जावें द्रुत अंतर्धान। -पंत

बीती विभावरी जाग री !

अम्बर-पनघट में डूबो रही

तारा-घट-ऊषा-नागरी। -प्रसाद

दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुंदरी परी-सी

धीरे-धीरे-धीरे। ('संध्या सुंदरी') -निराला

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया

तोड़ प्रकृति से भी माया

बाले तेरे बाल-जाल में

कैसे उलझा दूँ लोचन ? -पंत

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में। ('कामायनी') -प्रसाद

मैं नीर भरी दुःख की बदली -महादेवी

AJAY KUMAR

तुमको पीड़ा में ढूँढा

तुमको ढूँढेगी पीड़ा -महादेवी

नील परिधान बीच सुकुमार

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग

खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ बीच गुलाबी रंग। ('कामायनी') -प्रसाद

तोड़ दो यह झितिज, मैं भी देख लूं उस ओर क्या है ?

जा रहे जिस पंथ से युग कल्प, उसका छोर क्या है ? -महादेवी

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार

चकित रहता शिशु सा नादान,

विश्व के पलकों पर सुकुमार

विचरते है स्वप्न अजान !

न जाने, नक्षत्रों से कौन ?

निमंत्रण देता मुझको मौन !! ('मौन निमंत्रण') -पंत

ले चल वहाँ भुलावा देकर

मेरे नाविक ! धीरे-धीरे।

जिस निर्जन में सागर लहरी

अम्बर के कानों में गहरी

निश्छल प्रेम कथा कहती हो

तज कोलाहल की अवनी रे। ('लहर') -प्रसाद

हिमालय के आंगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार -प्रसाद

राजनीति का प्रश्न नहीं रे आज

AJAY KUMAR

जगत के सम्मुख एक वृहत सांस्कृतिक समस्या जग के निकट उपस्थित -पंत

छोड़ो मत ये सुख का कण है। -प्रसाद

आह ! वेदना मिली विदाई। ('स्कंदगुप्त') -प्रसाद

जिए तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष निछावर कर दे हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष। ('स्कंदगुप्त') -प्रसाद

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा। ('चन्द्रगुप्त') -प्रसाद

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से

प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयंप्रभा समुज्जवला

स्वतंत्रता पुकारती

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पंथ है-बढ़े चलो, बढ़े चलो। ('चन्द्रगुप्त') -प्रसाद

भारत माता ग्रामवासिनी। -पंत

भारति जय विजय करे। -निराला

शेरो की माँद में

आया है आज स्यार

जागो फिर एक बार। -निराला

वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता। -निराला

वह तोड़ती पत्थर।

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर। -निराला

वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।

AJAY KUMAR

उमड़ कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।। -पंत

विजय-वन-वल्लरी पर

सोती थी सुहाग भरी

स्नेह-स्वप्न-मग्न-अमल-कोमल तन तरुणी

जूही की कली

दृग बंद किए, शिथिल पत्रांक में। ('जूही की कली') -निराला

खुल गये छंद के बंध

प्रास के रजत पाश। -पंत

सहज प्रकाशन वह मन का

निज भावों का प्रकट अकृत्रिम चित्र। -निराला

तुमुल कोलाहल में

मैं हृदय की बात रे मन। ('कामायनी') -प्रसाद

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि ! तूने कैसे पहचाना ? -पंत

जो घनीभूत पीड़ा थी

मस्तक में स्मृति-सी छाई,

दुर्दिन में आँसू बनकर

वह आज बरसने आई। ('आँसू') -प्रसाद

बाँधों न नाव इस ठाँव, बंधु !

पूछेगा सारा गाँव, बंधु ! -निराला

हाय ! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन।

जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन। (ताज -'युगांत') -पंत

'प्रसाद पढ़ाने योग्य हैं, निराला पढ़े जाने योग्य है और पंतजी से काव्यभाषा सीखने योग्य है' । -अज्ञेय

AJAY KUMAR

छायावादी कविता का गौरव अक्षय है उसकी समृद्धि की समता केवल भक्ति काव्य ही कर सकता है। -डॉ० नगेन्द्र

'निराला से बढ़कर स्वच्छंदतावादी कवि हिन्दी में नहीं है'। -हजारी प्रसाद द्विवेदी

'मैं मजदूर हूँ, मजदूरी किए बिना मुझे भोजन करने का अधिकार नहीं'। -प्रेमचंद्र

'यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक चुना हुआ गुलदस्ता'। -रामचन्द्र शुक्ल

अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है (स्कंदगुप्त') -प्रसाद

स्नेह निर्झर बह गया है -निराला

औ वरुणा की शांत कछार -प्रसाद

सजनि मधुर निजत्व दे कैसे मिलू अभिमानिनी मैं -महादेवी वर्मा

प्रिय के हाथ लगाए जागी, ऐसी मैं सो गई अभागी -निराला

अधरों में राग अमंद पिये, अलकों में मलयज बंद किये तू अब तक सोई है आली, आँखों में भरे विहाग री -प्रसाद

कहो तुम रूपसि कौन, व्योम से उत्तर रही चुपचाप -पंत

शैया सैकत पर दुग्ध धवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विकल -पंत

'साहित्य, राजनीति के पीछे चलनेवाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सच्चाई है'।

-प्रेमचंद (प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष पद से बोलते हुए, 1936)

## छायावादयुगीन रचना एवं रचनाकार

(A)

| छायावादी काल धारा | रचनाकार |
|---|---|
| उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छवास, बभ्रूवाहन, | जयशंकर प्रसाद |
| कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व; | जयशंकर प्रसाद |
| झरना, आँसू, लहर,कामायनी (केवल झरना से लेकर कामायनी तक छायावादी कविता है) | जयशंकर प्रसाद |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, सरोज | सूर्यकान्त त्रिपाठी |
| स्मृति (कविता), राम की शक्ति पूजा (कविता) | 'निराला' |
| उच्छ्वास, ग्रन्थि, वीणा, पल्लव, गुंजन (छायावादयुगीन); युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, | सुमित्रानंदन पंत |
| स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, रजतशिखर, उत्तरा, वाणी, पतझर, स्वर्ण काव्य, लोकायतन | सुमित्रानंदन पंत |
| नीहार, रश्मि, नीरजा व सांध्य गीत (सभी का संकलन 'यामा' नाम से) | महादेवी वर्मा |
| रूपराशि, निशीथ, चित्ररेखा, आकाशगंगा | राम कुमार वर्मा |
| राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष | उदय शंकर भट्ट |
| निर्माल्य, एकतारा, कल्पना | 'वियोगी' |
| अन्तर्जगत | लक्ष्मी नारायण मिश्र |
| अनुभूति, अन्तर्ध्वनि | जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' |

(B)

| राष्ट्रवादी सांस्कृतिक काव्य धारा | रचनाकार |
|---|---|
| कैदी और कोकिला, हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिनी, पुष्प की अभिलाषा (क०) | माखन लाल चतुर्वेदी |
| मौर्य विजय, अनाथ, दूर्वादल, विषाद, आर्द्रा, पाथेय, मृण्मयी, बापू, दैनिकी | सिया राम शरण गुप्त |
| त्रिधारा, मुकुल, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी (क०), वीरों का कैसा हो वसंत | सुभद्रा कुमारी चौहान |

## छायावादोत्तर युग (1936 ई० के बाद)

छायावादोत्तर युग में हिन्दी काव्यधारा बहुमुखी हो जाती है-

(A)

| पुरानी काव्यधारा | रचनाकार |
|---|---|

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा | सियाराम शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहन लाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय आदि। |
| उत्तर-छायावादी काव्यधारा | निराला, पंत, महादेवी, जानकी वल्लभ शास्त्री आदि। |

(B)

| नवीन काव्यधारा | रचनाकार |
|---|---|
| वैयक्तिक गीति कविता धारा (प्रेम और मस्ती की काव्य धारा) | बच्चन, नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', भगवती चरण वर्मा, नेपाली, आरसी प्रसाद सिंह आदि। |
| प्रगतिवादी काव्यधारा | केदारनाथ अग्रवाल, राम विलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि। |
| प्रयोगवादी काव्य धारा | अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती आदि। |

**प्रगतिवाद (1936 ई० से .... )**

संगठित रूप में हिन्दी में प्रगतिवाद का आरंभ 'प्रगतिशील लेखक संघ' द्वारा 1936 ई० में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेशन से होता है जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की थी। इसमें उन्होंने कहा था, 'साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले हुए वर्ग की मुक्ति का होना चाहिए' ।

1935 ई० में इ० एम० फोस्टर ने प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक एक संस्था की नींव पेरिस में रखी थी। इसी की देखा-देखी सज्जाद जहीर और मुल्क राज आनंद ने भारत में 1936 ई० में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की।

एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रगतिवाद का इतिहास मोटे तौर पर 1936 ई० से लेकर 1956 ई० तक का इतिहास है, जिसके प्रमुख कवि हैं- केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, राम विलास शर्मा, रांगेय राघव, शिव मंगल सिंह, 'सुमन', त्रिलोचन आदि।

किन्तु व्यापक अर्थ में प्रगतिवाद न तो स्थिर मतवाद है और न ही स्थिर काव्य रूप बल्कि यह निरंतर विकासशील साहित्य धारा है। प्रगतिवाद के विकास में अपना योगदान देनेवाले परवर्ती कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विमल, अरुण कमल, राजेश जोशी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

AJAY KUMAR

प्रगतिवाद काव्य का मूलाधार मार्क्सवादी दर्शन है पर यह मार्क्सवादी का साहित्यिक रूपांतर मात्र नहीं है। प्रगतिवाद आंदोलन की पहचान जीवन और जगत के प्रति नये दृष्टिकोण में निहित है।

यह नया दृष्टिकोण था : पुराने रूढ़िबद्ध जीवन-मूल्यों का त्याग; आध्यात्मिक व रहस्यात्मक अवधारणाओं के स्थान पर लोक आधारित अवधारणाओं को मानना; हर तरह के शोषण और दमन का विरोध; धर्म, लिंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र पर आधृत गैर-बराबरी का विरोध; स्वतंत्रता, समानता तथा लोकतंत्र में विश्वास; परिवर्तन व प्रगति में विश्वास; मेहनतकश लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति; नारी पर हर तरह के अत्याचार का विरोध; साहित्य का लक्ष्य सामाजिकता में मानना आदि।

प्रगतिवाद वैसी साहित्यिक प्रवृत्ति है जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्ग चेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो।

प्रगतिवादी काव्य एक सीधी-सहज-तेज-प्रखर, कभी व्यंग्यपूर्ण आक्रामक काव्य-शैली का वाचक है।

प्रगतिवादी साहित्य को सोद्देश्य मानता है और उसका उद्देश्य है 'जनता के लिए जनता का चित्रण' करना। दूसरे शब्दों में, वह कला 'कला के लिए' के सिद्धांत में यकीन नहीं करता बल्कि उसका यकीन तो 'कला जीवन के लिए' के फलसफे में है। मतलब कि प्रगतिवाद आनंदवादी मूल्यों के बजाय भौतिक उपयोगितावादी मूल्यों में विश्वास करता है।

राजनीति में जो स्थान 'समाजवाद' का है वही स्थान साहित्य में 'प्रगतिवाद' का है।

## प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएं :

(1) समाजवादी यथार्थवाद सामाजिक यथार्थ का चित्रण

(2) प्रकृति के प्रति लगाव

(3) नारी प्रेम

(4) राष्ट्रीयता

(5) सांप्रदायिकता का विरोध

(6) बोधगम्य भाषा (जनता की भाषा में जनता की बातें) व व्यंग्यात्मकता

(7) मुक्त छंद का प्रयोग (मुक्त छंद का आधार कजरी, लावनी, ठुमरी जैसे लोक गीत)

(8) मुक्तक काव्य रूप का प्रयोग।

## छायावाद व प्रगतिवाद में अंतर

AJAY KUMAR

(i) छायावाद में कविता करने का उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' है जबकि प्रगतिवाद में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' है।

(ii) छायावाद में वैयक्तिक भावना प्रबल है जबकि प्रगतिवाद में सामाजिक भावना।

(iii) छायावाद में अतिशय कल्पनाशीलता है जबकि प्रगतिवाद में ठोस यथार्थ।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

मार हथौड़ा कर-कर चोट

लाल हुए काले लोहे को

जैसा चाहे वैसा मोड़। -केदारनाथ अग्रवाल

घुन खाए शहतीरों पर की बारहखड़ी विधाता बाँचे

फटी भीत है छत चूती है, आले पर विसतुइया नाचे

बरसाकर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पाँच तमाचे

दुखरन मास्टर गढ़ते रहते किसी तरह आदम के साँचे। -नागार्जुन

बापू के भी ताऊ निकले

तीनों बंदर बापू के

सरल सूत्र उलझाऊ निकले

तीनों बंदर बापू के। -नागार्जुन

काटो-काटो-काटो करवी

साइत और कुसाइत क्या है ?

मारो-मारो-मारो हंसिया

हिंसा और अहिंसा क्या है ?

जीवन से बढ़ हिंसा क्या है। -केदार नाथ अग्रवाल

भारत माता ग्रामवासिनी। -पंत

AJAY KUMAR

एक बीते के बराबर

यह हरा ठिंगना चना

बाँधे मुरैठा शीश पर

छोटे गुलाबी फूल

सजकर खड़ा है। -केदार नाथ अग्रवाल

हवा हूँ, हवा हूँ

मैं वसंती हवा हूँ। -केदार नाथ अग्रवाल

तेज धार का कर्मठ पानी

चट्टानों के ऊपर चढ़कर

मार रहा है घूंसे कसकर

तोड़ रहा है तट चट्टानी। -केदार नाथ अग्रवाल

मुझे जगत जीवन का प्रेमी

बना रहा है प्यार तुम्हारा। -त्रिलोचन

खेत हमारे, भूमि हमारी

सारा देश हमारा है

इसलिए तो हमको इसका

चप्पा-चप्पा प्यारा है। -नागार्जुन

झुका यूनियन जैक

तिरंगा फिर ऊँचा लहराया

बांध तोड़ कर देखो कैसे

जन समूह लहराया। -राम विलास शर्मा

जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के

AJAY KUMAR

जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सबकी समता के। -नरेंद्र शर्मा

मांझी न बजाओ वंशी मेरा मन डोलता

मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता

जल का जहाज जैसे हल-हल डोलता। -केदार नाथ अग्रवाल

## प्रयोगवाद (1943 ई० से.....)

यों तो प्रयोग हरेक युग में होते आये हैं, किन्तु 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नये बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करनेवाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार सप्तक' के माध्यम से वर्ष 1943 ई० में प्रकाशन जगत में आई और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयी तथा जिनका पर्यावसान 'नयी कविता' में हो गया।

इस तरह की कविताओं को सबसे पहले नंद दुलारे बाजपेयी ने 'प्रयोगवादी कविता' कहा।

प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में उभरे और 1943 ई० के बाद की अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचंद जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि तथा नकेनवादियों -नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश-की कविताएँ प्रयोगवादी कविताएँ हैं। प्रयोगवाद के अगुआ कवि अज्ञेय को 'प्रयोगवाद का प्रवर्तक' कहा जाता है।

चूँकि नकेनवादियों ने अपने काव्य को 'प्रयोग पद्य' यानी 'प्रपद्य' कहा है, इसलिए नकेनवाद को 'प्रपद्यवाद' भी कहा जाता है।

चूँकि प्रयोगवाद का उदय प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में हुआ इसलिए यह स्वाभाविक था कि प्रयोगवाद समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचार धारा की तुलना में अनुभव को, विषय वस्तु की तुलना में कलात्मकता को महत्व देता। मतलब कि प्रयोगवाद भाव में व्यक्ति-सत्य तथा शिल्प में रूपवाद का पक्षधर है।

प्रयोगवाद की विशेषताएँ :

(1) अनुभूति व यथार्थ का संश्लेषण/बौद्धिकता का आग्रह

(2) वाद या विचार धारा का विरोध

(3) निरंतर प्रयोगशीलता

(4) नई राहों का अन्वेषण

(5) साहस और जोखिम

(6) व्यक्तिवाद

(7) काम संवेदना की अभिव्यक्ति

(8) शिल्पगत प्रयोग

(9) भाषा-शैलीगत प्रयोग।

शिल्प के प्रति आग्रह देखकर ही इन्हें आलोचकों ने रूपवादी (Formist) तथा इनकी कविताओं को 'रूपाकाराग्रही कविता' कहा।

प्रगतिवाद ने जहाँ शोषित वर्ग/निम्न वर्ग के जीवन को अपनी कविता के केन्द्र में रखा था जो उनके लिए अनजीया, अनभोगा था वहाँ मध्यवर्गीय प्रयोगवादी कवियों ने उस यथार्थ का चित्रण किया जो स्वयं उनका जीया हुआ, भोगा हुआ था। इसी कारण उनकी कविता में विस्तार कम है लेकिन गहराई अधिक।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

फूल को प्यार करो

पर झरे तो झर जाने दो

जीवन का रस लो

देह, मन, आत्मा की रसना से

पर मरे तो मर जाने दो। -अज्ञेय

कन्हाई ने प्यार किया

कितनी गोपियों को कितनी बार

पर उड़ेलते रहे अपना सदा एक रूप पर

जिसे कभी पाया नहीं

जो किसी रूप में समाया नहीं

यदि किसी प्रेयसी में उसे पा लिया होता

तो फिर दूसरे को प्यार क्यों करता। -अज्ञेय

किन्तु हम है द्वीप

हम धारा नहीं हैं

AJAY KUMAR

स्थिर समर्पण है हमारा

द्वीप हैं हम। -अज्ञेय

उड़ चल हारिल, लिये हाथ में

यही अकेला ओछा तिनका

उषा जाग उठी प्राची में

कैसी बाट, भरोसा किनका ! -अज्ञेय

ये उपमान मैले हो गये हैं

देवता इन प्रतीकों से कर गये हैं कूच

कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है -अज्ञेय

'प्रयोगवाद' हिन्दी में बैठे-ठाले का धंधा बनकर आया था।

प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य संबंधी कोई कौशल था

और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।('नयी साहित्य : नये प्रश्न') -नंददुलारे वाजपेयी

## नयी कविता (1951 ई० से ....)

यों तो 'नयी कविता' के प्रारंभ को लेकर विद्वानों में विवाद है, लेकिन 'दूसरे सप्तक' के प्रकाशन वर्ष 1951ई० से 'नयी कविता' का प्रारंभ मानना समीचीन है। इस सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को नयी कविता की संज्ञा दी है।

जिस तरह प्रयोगवादी काव्यांदोलन को शुरू करने का श्रेय अज्ञेय की पत्रिका 'प्रतीक' को प्राप्त है उसी तरह नयी कविता आंदोलन को शुरू करने का श्रेय जगदीश प्रसाद गुप्त के संपादकत्व में निकलनेवाली पत्रिका 'नयी कविता' को जाता है।

'नयी कविता' भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया।

अज्ञेय को 'नयी कविता का भारतेन्दु' कहा सकते हैं क्योंकि जिस प्रकार भारतेन्दु ने जो लिखा ही, साथ ही उन्होंने समकालीनों को इस दिशा में प्रेरित किया उसी प्रकार अज्ञेय ने भी स्वयं पृथुल साहित्य सृजन किया तथा औरों को प्रेरित-प्रोत्साहित किया।

AJAY KUMAR

आम तौर पर 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के कवियों को नयी कविता के कवियों में शामिल किया जाता है। 'दूसरा सप्तक' के कविगण : रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर व हरि नारायण व्यास। 'तीसरा सप्तक' के कविगण : कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदार नाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना व मदन वात्स्यायन। अन्य कवि : श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेंद्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अशोक बाजपेयी, चंद्रकांत देवताले आदि।

नयी कविता आंदोलन में एक साथ भिन्न-भिन्न वाद/दर्शन से जुड़े रचनाकार शामिल हुए। यदि अज्ञेय आधुनिक भावबोध वादी-अस्तित्ववादी या व्यक्तिवादी हैं तो मुक्तिबोध, केदार नाथ सिंह आदि मार्क्सवादी/समाजवादी; भवानी प्रसाद मिश्र यदि गाँधीवादी हैं तो रघुवर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि लोहियावादी-समाजवादी और धर्मवीर भारती की रुचि सिर्फ देहवाद में हैं।

नयी कविता के रचनाकारों पर दो वाद या विचारधाराओं अस्तित्ववाद व आधुनिकतावाद का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा। 'अस्तित्ववाद' एक आधुनिक दर्शन है जिसमें यह विश्वास किया जाता है कि मनुष्य के अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए वह खुद उत्तरदायी होता है। वैयक्तिकता, आत्मसम्बद्धता, स्वतंत्रता, अजनबियत, संवेदना, मृत्यु, त्रास, ऊब आदि इसके मुख्य तत्व हैं। 'आधुनिकतावाद' का संबंध पूँजीवाद विकास से है। पूँजीवाद विकास के साथ उभरे नये जीवन-मूल्यों एवं नयी जीवन पद्धति को आधुनिकतावाद की संज्ञा दी जाती है। इतिहास और परम्परा से विच्छेद, गहन स्वात्म चेतना, तटस्थता और अप्रतिबद्धता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अपने-आप में बंद दुनिया आदि इसके मुख्य तत्व हैं।

नयी कविता की विशेषताएँ :

(1) कथ्य की व्यापकता

(2) अनुभूति की प्रमाणिकता

(3) लघुमानववाद, क्षणवाद तथा तनाव व द्वन्द्व

(4) मूल्यों की परीक्षा (वैयक्तिकता का एक मूल्य के रूप में स्थापना, निरर्थकता बोध, विसंगति बोध, पीड़ावाद सामाजिकता)

(5) लोक-सम्पृक्ति

(6) काव्य संरचना (दो तरह की कविताएं : छोटी कविताएं-प्रगीतात्मक, लंबी कविताएं-नाटकीय, क्रिस्टलीय संरचना, छंदमुक्त कविता, फैंटेसी/स्वप्न कथा का भरपूर प्रयोग)

(7) काव्य-भाषा-बातचीत की भाषा, शब्दों पर जोर

(8) नये उपमान, नये प्रतीक, नये बिम्बों का प्रयोग।

यदि छायावादी कविता का नायक 'महामानव' था, प्रगतिवादी कविता का नायक 'शोषित मानव' तो नयी कविता का नायक है 'लघुमानव' ।

1950 ई० का साल ऐतिहासिक दृस्टि से नयी कविता के विकास का प्रायः चरम बिन्दु था। इस बिन्दु से एक रास्ता नयी कविता की रूढ़ियों की ओर जाता था जिसमें बिम्ब आदि विज्ञापित नुस्खों का अंधानुकरण किया जाता या फिर दूसरा रास्ता सच्चे सृजन का था जो बिम्बवादी प्रवृत्ति को तोड़ता। नये कवियों ने दूसरा रास्ता अपनाया। फलतः धीरे-धीरे काव्य सृजन बिम्ब के दायरे से निकलकर सीधे सपाट कथन की ओर अभिमुख हुआ, जिसे अशोक वाजपेयी 'सपाट बयानी' की संज्ञा देते हैं।

## प्रसिद्ध पंक्तियाँ

हम तो 'सारा-का सारा' लेंगे जीवन

'कम-से-कम' वाली बात न हमसे कहिए। -रघुवीर सहाय

मौन भी अभिव्यंजना है

जितना तुम्हारा सच है, उतना ही कहो

तुम व्याप नहीं सकते

तुममें जो व्यापा है उसे ही निबाहो। -अज्ञेय

जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।

मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ

मैं किसिम -किसिम के

गीत बेचता हूँ। ('गीतफरोश') -भवानी प्रसाद मिश्र

हम सब बौने है, मन से, मस्तिष्क से

भावना से, चेतना से भी बुद्धि से, विवेक से भी क्योंकि हम जन हैं

साधारण हैं

हम नहीं विशिष्ट। -गिरिजा कुमार माथुर

मैं प्रस्तुत हूँ

यह क्षण भी कहीं न खो जाय

अभिमान नाम का, पद का भी तो होता है। -कीर्ति चौधरी

AJAY KUMAR

कुछ होगा, कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा

न टूटे, न टूटे तिलिस्म सत्ता का मेरे अंदर एक कायर टूटेगा, टूट ! -रघुवीर सहाय

जो कुछ है, उससे बेहतर चाहिए

पूरी दुनिया साफ करने के लिए एक मेहतर चाहिए

जो मैं हो नहीं सकता। -मुक्तिबोध

भागता मैं दम छोड़

घूम गया कई मोड़। ('अंधेरे में') -मुक्तिबोध

दुखों के दागों को तमगों सा पहना ('अंधेरे में') -मुक्तिबोध

कहीं आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी। ('अंधेरे में') -मुक्तिबोध

मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ

लेकिन मुझे फ़ेंक मत

इतिहासों की सामूहिक गति

सहसा झूठी पड़ जाने पर क्या जाने

सच्चाई टूटे हुए पहिये का आश्रय ले। ('टूटा पहिया') -धर्मवीर भारती

जिंदगी, दो उंगलियों में दबी

सस्ती सिगरेट के जलते हुए टुकड़े की तरह है

जिसे कुछ लम्हों में पीकर

गली में फ़ेंक दूँगा। -नरेश मेहता

मैं यह तुम्हारा अश्वत्थामा हूँ

शेष हूँ अभी तक

जैसे रोगी मुर्दे के मुख में शेष रहता है

गंदा कफ बासी पीप के रूप में

AJAY KUMAR

शेष अभी तक मैं ('अंधा युग') -धर्मवीर भारती

दुःख सबको मांजता है और

चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु जिनको माँजता है

उन्हें यह सीख देता है सबको मुक्त रखे। -अज्ञेय

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे

उठाने ही होंगे

तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब। ('अंधेरे में') -मुक्तिबोध

साँप !

तुम सभ्य हुए तो नहीं

नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे ?)

तब कैसे सीखा डँसना

विषकहाँ पाया ? -अज्ञेय

पर सच तो यह है

कि यहाँ या कहीं भी फर्क नहीं पड़ता।

तुमने जहाँ लिखा है 'प्यार'

वहाँ लिख दो 'सड़क'

फर्क नहीं पड़ता।

मेरे युग का मुहावरा है :

'फर्क नहीं पड़ता' । -केदार नाथ सिंह

मैं मरूँगा सुखी

मैंने जीवन की धज्जियाँ उड़ाई है। -अज्ञेय

AJAY KUMAR

छायावादोत्तर युगीन

प्रसिद्ध पंक्तियाँ (विविध) :

श्वानो को मिलता दूध वस्त्र

भूखे बालक अकुलाते हैं -दिनकर

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,

जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढाती है;

दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,

सिंहसान खाली करो कि जनता आती है। -दिनकर

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं, जिससे उथल-पुथल मच जाए

एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आए। -बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

एक आदमी रोटी बेलता है एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है, जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ .... 'यह तीसरा आदमी कौन है ?'

मेरे देश की संसद मौन है। (रोटी और संसद) -धूमिल

क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है

जिन्हें एक पहिया ढोता है

या इसका कोई खास मतलब होता है ?(बीस साल बाद- 'संसद से सड़क तक') -धूमिल

बाबूजी ! सच कहूँ- मेरी निगाह में

AJAY KUMAR

न कोई छोटा है

न कोई बड़ा है

मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है

जो मेरे सामने

मरम्मत के लिए खड़ा है (मोचीराम- 'संसद से सड़क तक') -धूमिल

मेरे देश का समाजवाद

मालगोदाम में लटकती हुई

उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग' लिखा है

और उनमें बालू और पानी भरा है। (पटकथा- 'संसद से सड़क तक') -धूमिल

अपने यहाँ संसद

तेल की वह घानी है

जिसमें आधा तेल है

और आधा पानी है (पटकथा- 'संसद से सड़क तक') -धूमिल

अपना क्या है इस जीवन में

सब तो लिया उधार

सारा लोहा उन लोगों का

अपनी केवल धार ('अपनी केवल धार') -अरुण कमल

## छायावादोत्तर युगीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | छायावादोत्तर युगीन रचना |
|---|---|
| स्वयंभू | पउम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ (अरिष्टनेमि चरित) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| रामधारी सिंह 'दिनकर' | हुंकार, रेणुका, द्वंद्वगीत, कुरुक्षेत्र, इतिहास के आँसू, रश्मिरथी, धूप और धुआँ, दिल्ली, रसवंती, उर्वशी |
| बालकृष्ण शर्मा 'नवीन ' | कुंकुम, उर्मिला, अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि, हम विषपायी जनम के |
| हरिवंशराय 'बच्चन' | मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, सूत की माला, निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, सतरंगिनी, मिलन-यामिनी, आरती और अंगारे, आकुल अंतर |
| सुमित्रा नंदन पंत | शिल्पी, अतिमा, कला और बूढा चाँद, लोकायतन, सत्यकाम |
| जानकी वल्लभ शास्त्री | मेघगीत, अवंतिका |
| नरेंद्र शर्मा | प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाश वन, मिट्टी और फूल, कदलीवन |
| रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' | मधूलिका, अपराजिता, किरणबेला, लाल चूनर |
| आरसी प्रसाद सिंह | कलापी, पांचजन्य |
| केदारनाथ सिंह | नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, अपूर्व, युग की गंगा |
| नागार्जुन | प्यासी पथराई आँखें, युगधारा, भस्मांकुर, सतरंगे पंखों वाली; ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या; खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, हरिजन गाथा (क०) |
| रांगेय राघव | राह का दीपक, अजेय खँडहर, पिघलते पत्थर, मेधावी, पांचाली |
| गिरिजाकुमार माथुर | मंजीर, कल्पांतर, शिलापंख चमकीले, नाश और निर्माण, मशीन का पुर्जा, धूप के धान, मैं वक्त के हूँ सामने, छाया मत छूना मन |
| गजानन माधव 'मुक्तिबोध' | भूरी-भूरी खाक धूल, चाँद का मुँह टेढ़ा है |
| भवानीप्रसाद मिश्र | सतपुड़ा के जंगल, गीतफरोश, खुशबू के शिलालेख, बुनी हुई रस्सी, कालजयी, गाँधी पंचशती, कमल के फूल, इदं न मम, चकित है दुःख, वाणी की दीनता |
| सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' | भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जनता हूँ, सागर-मुद्रा, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया, प्रिजन डेज एंड अदर पोएम्स (अंग्रेजी में), असाध्य वीणा, रूपाम्बरा |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| धर्मवीर भारती | अंधायुग, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष |
| शमशेर बहादुर सिंह | अमन का राग, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने |
| कुँवर नारायण | परिवेश, हम तुम, चक्रव्यूह, आत्मजयी, आमने-सामने |
| नरेश मेहता | संशय की एक रात, वनपाखी सुनो, मेरा समर्पित एकांत, बोलने दो चीड़ को |
| त्रिलोचन | मिट्टी की बारात, धरती, गुलाब और बुलबुल,दिगंत,ताप के ताये हुए दिन, सात शब्द, उस जनपद का कवि हूँ |
| भारत भूषण अग्रवाल | कागज के फूल, जागते रहो, मुक्तिमार्ग, ओ अप्रस्तुत मन, उतना वह सूरज है |
| दुष्यंत कुमार | साये में धूप, सूर्य का स्वागत, एक कंठ विषपायी, आवाज के घंटे |
| प्रभाकर माचवे | जहाँ शब्द हैं, तेल की पकौड़ियाँ, स्वप्नभंग, अनुक्षण, मेपल |
| रघुवीर सहाय | सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, लोग भूल गए हैं, मेरा प्रतिनिधि, हँसो-हँसो जल्दी हँसो |
| शंभूनाथ सिंह | मन्वंतर, खण्डित सेतु |
| शिवमंगल सिंह 'सुमन' | हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय-सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया |
| शकुंतला माथुर | अभी और कुछ इनका, चाँदनी और चूनर, दोपहरी, सुनसान गाड़ी |
| सर्वेश्वर दयाल सक्सेना | खूँटियों पर टँगे लोग, कुआनो नदी, बाँस के पुल, काठ की घंटियाँ, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, जंगल का दर्द |
| विजयदेव नारायण साही | मछलीघर, संवाद तुम से साखी |
| जगदीश गुप्त | नाव के पाँव, शब्दशः, हिमबिद्ध, युग्म |
| हरिनारायण व्यास | मृग और तृष्णा, एक नशीला चाँद, उठे बादल झुके बादल, त्रिकोण पर सूर्योदय |
| श्रीकांत वर्मा | मायदर्पण, मगध, शब्दों की शताब्दी, दीनारंभ |
| राजकमल चौधरी | कंकावती, मुक्तिप्रसंग |
| अशोक वाजपेयी | एक पतंग अनंत में, शहर अब भी संभावना है |
| बालस्वरूप राही | जो नितांत मेरी है |
| 'धूमिल' | संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र |
| अजित कुमार | अंकित होने दो, अकेले कंठ की पुकार |

| | |
|---|---|
| रामदरश मिश्र | पक गई है धूप, बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ |
| डॉ० विनय | एक पुरुष और, कई अंतराल, दूसरा राग |
| जगदीश चतुर्वेदी | इतिहास हंता |
| प्रमोद कौंसवाल | अपनी तरह का आदमी |
| संजीव मिश्र | कुछ शब्द जैसे मेज |
| 'निराला ' | कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी, प्रेम-संगीत, रानी और कानी खजोहरा, मास्को डायलाग्स, स्फटिक शिला, नये पत्ते, गीत गुंज, सांध्य काकली (प्रकाशन मरणोपरांत- 1969 ई०) |
| उदयप्रकाश | सुनो कारीगर, क से कबूतर |

## प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ

| रचनाकार | प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ |
|---|---|
| देवराज | आत्महत्याएँ, इला और अमिताभ |
| नरेश मेहता | प्रवाद पर्व, महाप्रस्थान, शबरी |
| भवानीप्रसाद मिश्र | कालजयी |
| भारतभूषण अग्रवाल | अग्निलीक |
| डॉ० विनय | पुनर्वास का दण्ड, एक मृत्यु प्रश्न |
| जगदीश चतुर्वेदी | सूर्यपुत्र |
| रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' | अपराधिता |
| शैलेश जैदी | अब किसे बनवास दोगे |

## सप्तक के कवि

| | |
|---|---|
| तार सप्तक' (1943 ई०) | अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, |

AJAY KUMAR

नेमिचंद्र जैन, रामविलास शर्मा

दूसरा सप्तक (1951 ई०) रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, हरिनारायण व्यास

तीसरा सप्तक (1959 ई०) कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवरनारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन

चौथा सप्तक (1979 ई०) अवधेश कुमार, राजकुमार कुम्भज, स्वदेश भारती, नंद किशोर आचार्य, सुमन राजे, श्रीराम वर्मा व राजेंद्र किशोर

.....

AJAY KUMAR

# हिन्दी गद्य

## उपन्यास (Novel)

| उपन्यासकार | उपन्यास |
|---|---|
| श्रद्धाराम फिल्लौरी | भाग्यवती |
| लाला श्रीनिवासदास | परीक्षागुरू |
| बालकृष्ण भट्ट | नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान |
| भारतेंदु हरिश्चंद्र | पूर्ण प्रकाश, चंद्रप्रभा |
| देवकीनंदन खत्री | चंद्रकांता, नरेंद्रमोहिनी, वीरेंद्रवीर अथवा कटोरा भर खून, कुसुमकुमारी, चंद्रकांता संतति, भूतनाथ |
| मेहता लज्जाराम शर्मा | धूर्त रसिकलाल, स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी, हिंदू गृहस्थ, आदर्श दम्पति, सुशीला विधवा, आदर्श हिंदू |
| किशोरीलाल गोस्वामी | प्रणयिनी-परिणय, त्रिवेणी, लवंगलता, लीलावती, तारा, चपला, |
| किशोरीलाल गोस्वामी | मल्लिकादेवी वा बंगसरोजिनी अँगूठी का नगीना, लखनऊ की कब्रा वा शाही महलसरा |
| गोपालराय गहमरी | अदभुत लाश, अदभुत खून, खूनी कौन |
| 'हरिऔध' | ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल |
| जनमोहन सिंह | श्यामा स्वप्न |
| पंडित गौरीदत्त | देवरानी-जेठानी की कहानी |
| सियारामशरण गुप्त | गोद, नारी, अंतिम आकांक्षा |
| शिवपूजन सहाय | देहाती दुनिया |
| ऋषभचरण जैन | दिल्ली का कलंक, दिल्ली का व्यभिचार, वेश्यायुग, रहस्यमयी |
| भवानीप्रसाद | पतिता की साधना, चंदन और पानी, त्यागमयी |
| प्रेमचंद | प्रेमा, सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, रंगभूमि, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण) |
| जयशंकर प्रसाद | कंकाल, तितली, इरावती (अधूरा) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| 'निराला' | अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, चोटी की पकड़, काले कारनामे |
| पंत | हार |
| राधिकारमण प्रसाद सिंह | राम-रहीम |
| इलाचंद्र जोशी | पर्दे की रानी, घृणामयी, सन्यासी, प्रेत और छाया, मुक्तिपथ, जिप्सी, जहाज का पंछी, |
| इलाचंद्र जोशी | ऋतुचक्र, सुबह के भूले, भूत का भविष्य |
| जैनेंद्र | परख, त्यागपत्र, कल्याणी, सुनीता, सुखदा, मुक्तिबोध |
| यशपाल | दिव्या, अमिता, झूठा-सच (दो भाग), दादा कामरेड, मनुष्य के रूप, मेरी तेरी उसकी बात, बारह घंटे |
| 'अश्क' | गिरती दीवारें, शहर में घूमता आइना, सितारों का खेल, बड़ी-बड़ी आँखें, गरम राख, |
| 'अश्क' | एक नन्ही कंदील, पत्थर-अल-पत्थर |
| अमृतलाल नागर | सुहाग के नूपुर, शतरंज के मोहरे, करवट, नाच्यौ बहुत गोपाल, अमृत और विष, |
| अमृतलाल नागर | बूँद और समुद्र, मानस का हंस, नवाबी मसनद, सेठ बाँकेमल, बिखरे तिनके, महाकाल, भूख, |
| अमृतलाल नागर | एकदा नैमिषारण्ये, खंजन नयन, करवट |
| उदयशंकर भट्ट | सागर लहरें और मनुष्य, डॉ० शेफाली, शेष-अशेष, लोक-परलोक, नए मोड़, एक नीड़ दो पंछी, दो अध्याय |
| भगवतीचरण वर्मा | चित्रलेखा, सबहिं नचावत राम गोसाई, तीन वर्ष, भूले बिसरे चित्र, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, |
| भगवतीचरण वर्मा | सीधी-सच्ची बातें, सामर्थ्य और सीमा, आखिरी दाँव |
| वृंदावनलाल वर्मा | मृगनयनी, झाँसी की रानी, गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, अहिल्याबाई |
| आचार्य चतुरसेन शास्त्री | वैशाली की नगरवधू, धर्मयुग, अपराजिता, नरमेध, मंदिर की नर्तकी, हृदय की परख, |
| आचार्य चतुरसेन शास्त्री | हृदय की प्यास, वयं रक्षामः, आत्मदाह |
| राहुल सांकृत्यायन | सिंह सेनापति, जय यौधेय, वोल्गा से गंगा तक, किन्नरों के देश में, शैतान की आँखें, मधुर स्वप्न |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी | बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा |
| 'उग्र' | दिल्ली का दलाल, चाकलेट, बुधुआ की बेटी, शराबी, चंद हसीनों के खतूत, फागुन के दिन चार |
| रांगेय राघव | मुर्दो का टीला, कब तक पुकारूँ, मेरी भवबाधा हरो, विषादमय, लखिमा की आँखें, |

| | |
|---|---|
| रांगेय राघव | देवकी का बेटा, यशोधरा जीत गई, अँधेरे के जुगनू |
| 'रेणु' | मैला आँचल, जुलूस, कितने चौराहे, परती परिकथा, पल्टू बाबू रोड (मरणोपरांत प्रकाशित) |
| नागार्जुन | बलचनमा, रतिनाथ की चाची, नई पौध, उग्रतारा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक |
| राजेंद्र यादव | सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, मंत्रबिद्ध, अनदेखे अनजान पुल |
| धर्मवीर भारती | गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा |
| 'अज्ञेय' | शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी |
| 'मुक्तिबोध' | विपात्र |
| डॉ० द्वारका प्रसाद | घेरे के बाहर, मम्मी बिगड़ेगी |
| विष्णु प्रभाकर | निशिकांत, तट के बंधन, अर्द्धनारीश्वर, स्वप्नमयी |
| नरेश मेहता | प्रथम फाल्गुन, डूबते मस्तूल, धूमकेतु, नदी यशस्वी है, यह पथबंधु था, उत्तरकथा |
| रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' | चढ़ती धूप, नयी इमारत, उल्का, मरुप्रदीप |
| कमलेश्वर | एक सड़क 57 गलियाँ, लौटे हुए मुसाफिर, डाक बँगला, काली आँधी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, |
| कमलेश्वर | सुबह दोपहर शाम, तीसरा आदमी, एक और चन्द्रकान्ता, कितने पाकिस्तान |
| प्रभाकर माचवे | परंतु, साया, द्वाभा, दर्द के पैवंद |
| मोहन राकेश | अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, नीली बाँहों की रोशनी में, काँपता हुआ दरिया, कई एक अकेले, अंतराल |
| निर्मल वर्मा | वे दिन, लाल टीन की छत, रात का रिपोर्टर, एक चिथड़ा सुख, अंतिम अरण्य |
| मन्नू भंडारी | महाभोज, आपका बंटी, एक इंच मुसकान (सहयोगी लेखक राजेंद्र यादव) |
| मार्कण्डेय | सेमल का फूल |
| उषा प्रियंवदा | पचपन खम्भे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका |
| सर्वेश्वर | सोया हुआ जल, पागल कुत्तों का मसीहा, अँधेरे पर अँधेरा, उड़ते हुए रंग |
| भीष्म साहनी | तमस, झरोखे, कड़ियाँ, बसंती, मय्यादास की माड़ी |
| शरतचंद्र | देवदास, श्रीकांत, चरित्रहीन, गृहदाह, परिणीता, पथ के दावेदार |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| नरेंद्र कोहली | दीक्षा, अवसर, युद्ध की ओर, अभिज्ञान |
| शानी | काला जल, साँप और सीढ़ी, नदियाँ और सीपियाँ |
| राही मासूम रजा | आधा गाँव, सीन-75, असंतोष के दिन, ओस की बूँद, नीम का पेड़, कटरा बी आर्जू |
| श्रीलाल शुक्ल | राग दरबारी, सीमाएँ टूटती हैं आदमी का जहर, अज्ञातवास |
| हरिशंकर परसाई | रानी नागमती की कहानी,तट की खोज |
| लक्ष्मीकांत वर्मा | टेराकोटा, खाली कुर्सी की आत्मा, एक कटा हुआ कागज, कोयल और आवृत्तियाँ |
| श्रीकांत वर्मा | दूसरी बार |
| राजकमल चौधरी | मछली मरी हुई, एक अनार एक बीमार, शहर था- शहर नहीं था |
| लक्ष्मी नारायण लाल | बड़ी चंपा छोटी चंपा, मन वृंदावन, काले फूले का पौधा, हरा समंदर-गोपी चंदर, |
| लक्ष्मी नारायण लाल | धरती की आँखें, रूपाजीवा, प्रेम अपवित्र नदी |
| मनोहर श्याम जोशी | कुरु-कुरु स्वाहा, कसप, नेता जी कहिन, क्या |
| देवराज | पथ की खोज, अजय की डायरी, मैं, वे और आप, रोड़े और पत्थर |
| कृष्णा सोबती | सूरजमुखी अँधेरे के, जिंदगीनामा, हम हशमत, मित्रो मरजानी, यारों के यार, डार से बिछुडी, दिलो दानिश |
| महेंद्र भल्ला | एक पति के नोट्स |
| गिरिराज किशोर | यथा प्रस्तावित, ढाई घर, चिड़ियाघर, साहब, मात्राएँ |
| मणि मधुकर | सफेद मेमने, मेरी स्त्रियाँ, खुले हुए दरीचे |
| मंजुल भगत | अनारो, लेडी क्लब |
| दुष्यंत कुमार | छोटे-छोटे सवाल, दोहरी जिंदगी, आँगन में एक वृक्ष |
| शैलेश मटियानी | सर्पगंधा, मुठभेड़, आकाश कितना अनंत है, डेरेवाले, बावन नदियों का संगम, चंद औरतों का शहर, |
| शैलेश मटियानी | किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई, बोरीबली से बोरीबंदर तक, उगते सूरज की किरण |
| भैरव प्रसाद गुप्त | गंगा मैया, सत्ती मैया का चौरा |
| शिवप्रसाद सिंह 'रुद्र' | बहती गंगा, अलग-अलग वैतरणी |

| | |
|---|---|
| देवेंद्र सत्यार्थी | रथ के पहिए, कठपुतली, दूधगाछ, ब्रह्मपुत्र |
| विमल मित्र | हम चाकर रघुनाथ के, कैसे-कैसे सच, मन क्यों उदास है, मुजरिम हाजिर |
| जगदंबा प्रसाद दीक्षित | मुर्दाघर |
| रघुवंश | अर्थहीन |
| बदी उज्जमां | एक चूहे की मौत, सभापर्व, छाको की वापसी |

.....

## कहानी (Story)

| कहानीकार | कहानी/कहानी-संग्रह |
|---|---|
| इंशाअल्ला खाँ | रानी केतकी की कहानी |
| राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद' | राजा भोज का सपना |
| भारतेंदु | अदभुत अपूर्व सपना |
| राजा बाला घोष (बंगमहिला) | दुलाईवाली |
| किशोरीलाल गोस्वामी | इंदुमती, गुलबहार |
| माधवप्रसाद मिश्र | मन की चंचलता |
| भगवानदीन | प्लेग की चुड़ैल |
| रामचंद्र शुक्ल | ग्यारह वर्ष का समय |
| राधिकारमण प्रसाद सिंह | कानों में कंगना |
| चंद्रधारी शर्मा गुलेरी | सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा, उसने कहा था |
| वृंदावनलाल वर्मा | राखीबंद भाई |
| विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' | रक्षाबंधन, ताई, चित्रशाला (दो भाग), गल्प मंदिर, मंगली, प्रेम प्रतिमा, कल्लोल, मणिमाला |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| मुंशी प्रेमचंद | पंचपरमेश्वर, सौत, बेटों वाली विधवा, सज्जनता का दण्ड, ईश्वरीय न्याय, रानी सारंधा, |
| मुंशी प्रेमचंद | आत्माराम, बूढी काकी, ईदगाह, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, कजाकी, अलग्योझा,तावान, |
| मुंशी प्रेमचंद | ठाकुर का कुआँ, कफन; सप्त सरोज (कहानी-संग्रह), मान सरोवर-8 भागों में (कहानी-संग्रह) |
| जयशंकर प्रसाद | ग्राम, छाया (कहानी-संग्रह), इंद्रजाल, आकाशदीप, आँधी, सुनहरा साँप, सालवती, मधुवा, |
| जयशंकर प्रसाद | गुंडा, पुरस्कार, चूड़ी वाली नीरा, प्रतिध्वनि, देवरथ |
| सुदर्शन | सुदर्शन सुधा, तीर्थयात्रा, पुष्पलता, गल्पमंजरी, पनघट, हार की जीत, कवि की स्त्री |
| चतुरसेन शास्त्री | दुखवा मैं कासों कहूँ मोरी सजनी, अंबपालिका, भिक्षुराज, हल्दीघाटी में, बाणवधू |
| पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' | चिनगारियाँ,शैतान मंडली,इंद्रधनुष,बलात्कार,चाकलेट,दोजख की आग,निर्लज्जा, |
| पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र | जब सारा आलम सोता है |
| जैनेंद्र | हत्या, खेल, अपना-अपना भाग्य, जय संधि, बाहुबली, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, |
| जैनेंद्र | दो चिड़ियाँ, ध्रुवयात्रा, पाजेब, एक दिन, राजीव और भाभी |
| 'अज्ञेय' | विपथगा, त्रिपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अमर वल्लरी, ये तेरे प्रतिरूप, |
| 'अज्ञेय' | रोज, पठार का धीरज, सिगनेलर, रेल की सीटी, कविप्रिया, मैना, हरसिंगार |
| 'निराला' | लिली, सुकुल की बीवी, श्रीमती गजानंद देवी, चतुरी चमार, पद्मा |
| पंत | पानवाला |
| राहुल सांकृत्यायन | सतमी के बच्चे |
| सुभद्रा कुमारी चौहान | बिखरे मोती, उन्मादिनी, पापी पेट |
| भगवती चरण वर्मा | इंस्टालमेंट, दो बाँके, उत्तमी की माँ, प्रायश्चित, मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, वो दुनिया |
| 'अश्क' | मुक्त, देशभक्त, डाची, कांगड़ा का तेली, आकाशचारी, टेबुल लैंड |
| भुवनेश्वर | सूर्यपूजा, भेड़िए |
| 'मुक्तिबोध' | काठ का सपना |
| इलाचंद्र जोशी | आहुति, धन का अभिशाप, एकांकी चोर, कापलिक, प्रथम कहानी, दिवाली, चरणों की दासी मैं, |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| इलाचंद्र जोशी | खँडहर की आत्माएँ, डायरी के नीरस पृष्ठ, आहुति और दिवाली |
| यशपाल | मक्रील, कुत्ते की पूँछ, फूलों का कुर्ता, पराया सुख, भस्मावृत चिनगारी, पाप का कीचड़, |
| यशपाल | ज्ञानदान, तुमने क्यों कहा कि मैं सुंदर हूँ, पिंजरे की उड़ान |
| विष्णु प्रभाकर | धरती अब भी घूम रही है, संघर्ष के बाद |
| 'रेणु' | ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, तीसरी कसम, विघटन के क्षण, तीन बिंदिया |
| मोहन राकेश | मलबे का मालिक, एक और जिंदगी, जानवर और जानवर, परमात्मा का कुत्ता, खोया हुआ शहर, |
| मोहन राकेश | आर्द्रा, वासना की छाया में, फौलाद का आकाश, रोयें-रेशे |
| भीष्म साहनी | चीफ की दावत, मौकापरस्त, खून का रिश्ता, वाँग चू, पटरियाँ, भटकती राख |
| हरिशंकर परसाई | भोलेराम का जीव, निठल्ले की डायरी, एक फरिश्ते की कथा |
| शिवप्रसाद सिंह | आरपार की माला, मुर्दा सराय, इन्हें भी इंतजार है, कर्मनाशा की हार |
| निर्मल वर्मा | परिंदे, लवर्स, लंदन की एक रात, डेढ़ इंच ऊपर, कुत्ते की मौत, अँधेरे में, जलती झाड़ी, |
| निर्मल वर्मा | माया-दर्पण, धूप का एक टुकड़ा, पोस्टकार्ड, बीच बहस में |
| कमलेश्वर | राजा निरबंसिया, युद्ध, एक अश्लील कहानी, नीली झील, जार्ज पंचम की नाक, देवा की माँ, |
| कमलेश्वर | मांस का दरिया, बयान जो लिखा नहीं जाता, एक रुकी हुई जिंदगी |
| कमल जोशी | शीराजी, पत्थर की आँखें |
| राजेंद्र यादव | जहाँ लक्ष्मी कैद है, प्रतीक्षा, छोटे-छोटे ताजमहल, एक दुनिया समानांतर, लहरें और परछाइयाँ, |
| राजेंद्र यादव | टूटना तथा अन्य कहानियाँ, एक कमजोर लड़की की कहानी, अभिमन्यु की आत्मकथा |
| शेखर जोशी | कोसी का घटवार, बदबू, दाज्यू |
| अमरकांत | जिंदगी और जोंक, डिप्टी कलेक्टरी |
| मार्कण्डेय | गुलरा के बाबा, हंसा जाई अकेला, महुए का पेड़, सेमल का फूल, साबुन |
| धर्मवीर भारती | गुलकी बन्नो, सावित्री नं० 2, बंद गली का आखिरी मकान, चाँद और टूटे हुए लोग, मुर्दों का गाँव |
| नरेश मेहता | निशा जी, तथापि, एक समर्पित महिला |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| सर्वेश्वर | पागल कुत्तों का मसीहा, अँधेरे पर अँधेरा |
| मन्नू भंडारी | मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, एक प्लेट पुलाव, रानी माँ का चबूतरा, गीत का चुंबन |
| उषा प्रियंवदा | जिंदगी और गुलाब के फूल, चाँदनी में बर्फ पर, मछलियाँ, कितना बड़ा झूठ, एक कोई दूसरा, वापसी |
| कृष्णा सोबती | यारों के यार, बादलों के घेरे, तिन पहाड़, ऐ लड़की |
| ज्ञानरंजन | बहिगर्मन, घंटा, पिता, फेंस के इधर और उधर |
| गंगाप्रसाद 'विमल' | एक और विदाई, प्रश्नचिह्न |
| ज्ञानप्रकाश | अँधेरे के सिलसिले |
| महेंद्र भल्ला | एक पति के नोट्स, तीन-चार दिन |
| काशीनाथ सिंह | चायघर में मृत्यु, चोट, हस्तक्षेप |
| मंजुल भगत | सफेद कौआ |
| गिरिराज किशोर | गाउन, पेपरवेट, चिड़ियाघर, अलग-अलग कद के दो आदमी, फ्राक वाला घोड़ा |
| उदय प्रकाश | दरियाई घोड़ा, तिरीछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, दत्तात्रेय का दुःख, अरेबा-परेबा, |
| उदय प्रकाश | मैंगोसिल; मोहनदास; पीली छतरी वाली लड़की, वारेन हेस्टिंग्स का सांड़ |

.....

## नाटक (Drama)

### भारतेंदु युग

| नाटककार | नाटक |
|---|---|
| प्राणचंद चौहान | रामायण महानाटक |
| महाराज विश्वनाथ सिंह | आनंद रघुनंदन |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| गोपालचंद्र गिरिधर दास | नहुष |
| भारतेंदु हरिश्चंद्र | विद्यासुंदर, रत्नावली, पाखण्ड विडंबन, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी, भारत-जननी, मुद्राराक्षस, |
| भारतेंदु हरिश्चंद्र | दुर्लभ बंधु (उपर्युक्त सभी अनूदित); वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्यहरिश्चंद्र, श्रीचन्द्रावली, |
| भारतेंदु हरिश्चंद्र | विषस्य विषमौषधम, भारत-दुर्दशा, नीलदेवी, अँधेरे नगरी, सती प्रताप, प्रेम योगिनी (मौलिक) |
| शिवनंदन सहाय | कृष्ण-सुदामा नाटक |
| लाला श्रीनिवासदास | संयोगिता स्वयंवर, प्रहाद-चरित्र, रणधीर प्रेममोहिनी, तप्त संवरण |
| राधाचरण गोस्वामी | अमरसिंह राठौर, बूढे मुँह मुँहासे (प्रहसन) |
| किशोरीलाल गोस्वामी | मयंक मंजरी, प्रणयिनी-परिणय |
| प्रताप नारायण मिश्र | भारत-दुर्दशा, कलिकौतुक रूपक, संगीत शाकुंतल, हठी हम्मीर |
| बालकृष्ण भट्ट | कलिराज की सभा, रेल का विकट खेल, दमयंती स्वयंवर, जैसा काम वैसा परिणाम (प्रहसन), |
| बालकृष्ण भट्ट | नई रोशनी का विष, वेणुसंहार |
| शीतला प्रसाद त्रिपाठी | जानकीमंगल |
| राधाकृष्ण दास | महाराणा प्रताप, दुःखिनी बाला, पद्मावती, धर्मालाप |
| देवकीनंदन त्रिपाठी | भारत-हरण |
| अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' | प्रद्युम्न विजय व्यायोग, रुक्मिणी परिणय |

## प्रसाद/प्रसादोत्तर नाटक

| नाटककार | नाटक |
|---|---|
| माखनलाल चतुर्वेदी | कृष्णार्जुन युद्ध |
| वृंदावनलाल वर्मा | सेनापति ऊदल |
| मिश्रबंधु | नेत्रोन्मीलन |
| जयशंकर प्रसाद | करुणालय, सज्जन, कामना, विशाख, कल्याणी परिणय, अजातशत्रु, एक घूँट, प्रायश्चित, |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| जयशंकर प्रसाद | चंद्रगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी |
| हरिकृष्ण 'प्रेमी' | स्वर्णविहान, रक्षाबंधन, साँपों की सृष्टि, पाताल विजय, शिवसाधना, स्वप्नभंग, |
| हरिकृष्ण 'प्रेमी' | विषपान, अमृत पुत्री, उद्धार, प्रतिशोध |
| लक्ष्मीनारायण मिश्र | अशोक, संन्यासी, आधी रात, मुक्ति का रहस्य, राक्षस का मंदिर, राजयोग, |
| लक्ष्मीनारायण मिश्र | सिंदूर की होली, अपराजित, चक्रव्यूह |
| रामनरेश त्रिपाठी | सुभद्रा, जयंत |
| प्रेमचंद | कर्बला, संग्राम, प्रेम की बेदी |
| चतुरसेन शास्त्री | उत्सर्ग, अमर राठौर |
| उदयशंकर भट्ट | विक्रमादित्य, विश्वामित्र, दाहर अथवा सिंध पतन, शक-विजय, मत्स्यगंधा |
| सुदर्शन | अंजना, आनरेरी मजिस्ट्रेट, भाग्यचक्र |
| पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' | चुंबन, डिक्टेटर |
| सुमित्रानंदन पंत | ज्योत्स्ना, रजत शिखर, शिल्पी सौवर्ण |
| मैथलीशरण गुप्त | अनघ, तिलोत्तमा, चंद्रहास |
| 'अश्क' | जय-पराजय, छठा बेटा, कैद, उड़ान, अलग-अलग रास्ते, सूखी डाली, तौलिए, |
| 'अश्क' | पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, कस्बे के डिस्को क्लब का उदघाटन, भँवर, अंधी गली, पैंतरे |
| विष्णु प्रभाकर | डॉक्टर, समाधि, टूटते परिवेश, अब और नहीं, लिपस्टिक की मुस्कान, नवप्रभात, रक्तचंदन, युगे युगे क्रांति |
| जगदीशचंद्र माथुर | कोणार्क, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नंदन |
| धर्मवीर भारती | अंधा युग |
| 'अज्ञेय' | उत्तरप्रियदर्शी |
| डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल | अंधा कुआँ, मादा कैक्टस, रातरानी, तीन आँखों वाली मछली, सुंदर रस, कलंकी, सूखा सरोवर, |
| डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल | रक्तकमल,सूर्यमुखी,पंचपुरुष,मिस्टर अभिमन्यु,करफ्यू,सुगन पंछी,दर्पन,गंगामाटी,राक्षस का मंदिर |
| मोहन राकेश | आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैरों तले की जमीन (अधूरा) |

AJAYKUMAR

| | |
|---|---|
| सेठ गोविंददास | स्नेह या स्वर्ग, कर्तव्य |
| गिरिजा कुमार माथुर | कल्पांतर |
| सिद्धनाथ | सृष्टि की साँझ, लौह देवता, संघर्ष, विकलांगों का देश, बादलों का शाप |
| दुष्यंत कुमार | एक कण्ठ विषपायी |
| मन्नू भण्डारी | बिना दीवारों के घर, रजनी दर्पण |
| नरेश मेहता | सुबह के घंटे, खंडित यात्राएँ, उलझन |
| शिवप्रसाद सिंह | घाटियाँ गूँजती है। |
| ज्ञानदेव अग्निहोत्री | नेफा की एक शाम, शुतुरमुर्ग |
| विपिन कुमार अग्रवाल | तीन अपाहिज, खोए हुए आदमी की खोज |
| सुरेंद्र वर्मा | द्रौपदी, आठवाँ सर्ग, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सेतुबंध, |
| सुरेंद्र वर्मा | छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी |
| गिरीश कर्नाड | तुगलक, नागमंडल, रक्त-कल्याण |
| सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | बकरी, लड़ाई, कल भात आएगा |
| भीष्म साहनी | कबीर खड़ा बजार में, हानूश, माधवी |
| हबीब तनवीर | चरणदास चोर, मिट्टी की गाड़ी, आगरा बाजार |
| शंकर शेष | एक और द्रोणाचार्य, फंदी, बंधन अपने-अपने, कोमल गांधार |
| गिरिराज किशोर | नरमेध, प्रजा ही रहने दो |
| मणि मधुकर | रसगंधर्व, खेला पोलमपुर |
| निर्मल वर्मा | तीन एकांत, वीक एण्ड, धूप का एक टुकड़ा, डेढ़ इंच ऊपर |
| गोविंद चातक | काला मुँह, अपने-अपने खूँटे |
| विजय तेंदुलकर | घासीराम कोतवाल, हल्ला बोल |
| स्वदेश दीपक | नाटक बाल भगवान, कोर्ट मार्शल, जलता हुआ रथ, सबसे उदास कविता, काल कोठरी |

AJAY KUMAR

.....

## एकांकी (Ekaanki)

| एकांकीकार | एकांकी |
|---|---|
| राधाचरण गोस्वामी | तन-मन-धन गुसाँई जी के अर्पण |
| बालकृष्ण भट्ट | शिक्षादान |
| देवकीनंदन खत्री | जनेऊ का खेल |
| 'उग्र' | चार बेचारे, अफजल बध, भाई मियाँ |
| सुदर्शन | आनरेरी मजिस्ट्रेट , राजपूत की हार, प्रताप प्रतिज्ञा |
| जयशंकर प्रसाद | एक घूँट |
| डॉ० रामकुमार वर्मा | रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्तकिरण, औरंगजेब की आखिरी रात, पृथ्वी राज की आँखें, |
| डॉ० रामकुमार वर्मा | एक तोले अफीम की कीमत, दीपहीन, दस मिनट, चंगेज खाँ, कौमुदीमहोत्सव, |
| डॉ० रामकुमार वर्मा | मयूरपंख, जूही के फूल. 18 जुलाई की शाम, एक्ट्रेस |
| भुवनेश्वर | ताँबे के कीड़े, आजादी की नींद, सिकंदर, एक साम्यहीन साम्यवादी, प्रतिभा का विवाह, |
| भुवनेश्वर | स्ट्राइक, बाजीराव की तस्वीर, फोटोग्राफर के सामने, लाटरी, श्यामा |
| उदयशंकर भट्ट | आत्मदान, दस हजार, एक ही कब्र में, विस्फोट, समस्या का अंत, निर्दोष की रक्षा, बीमार का इलाज |
| 'अश्क' | लक्ष्मी का स्वागत, जोंक, अधिकार का रक्षक, अंधी गली, अंजो दीदी, सूखी डाली, स्वर्ग की झलक, |
| 'अश्क' | भँवर, मोहब्बत, आपस का समझौता, छः एकांकी, साहब को जुकाम है, विवाह के दिन, देवताओं की छाया में |
| जगदीशचंद्र माथुर | भोर का तारा, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, मेरी बाँसुरी, ओ मेरे सपने, कबूतरखाना |
| सेठ गोविंददास | ईद और होली, फाँसी, प्रायश्चित, एकादमी |
| रामनरेश त्रिपाठी | स्वप्नों के चित्र, दिमागी ऐयाशी |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| भगवतीचरण वर्मा | सबसे बड़ा आदमी |
| विष्णु प्रभाकर | प्रकाश और परछाई, पापी इन्सान, दस बजे रात, गहरा सागर, क्या वह दोषी था, वापसी |
| लक्ष्मी नारायण मिश्र | स्वर्ग में विप्लव, कटोरी में कमल, मुक्ति का रहस्य राजयोग |
| जैनेंद्र | टकराहट |
| लक्ष्मीनारायण लाल | पर्वत के पीछे, बहुरंगी, ताजमहल के आँसू, औलादी का बेटा, दूसरा दरवाजा |
| धर्मवीर भारती | नदी प्यासी थी, नीली झील, संगमरमर पर एक रात, सृष्टि का आखिरी आदमी, आवाज का नीलाम |
| प्रभाकर माचवे | गली के मोड़ पर, गाँधी की राह पर, पागलखाने में पंचकन्या, वधू चाहिए |
| हरिकृष्ण 'प्रेमी' | मातृमंदिर, राष्ट्रमंदिर, न्यायमंदिर, वाणीमंदिर |
| मोहन राकेश | अंडे के छिलके, प्यालियाँ टूटती हैं, सिपाही की माँ, छतरियाँ, बहुत बड़ा सवाल, हाँ ! करफ्यू |
| गिरिजाकुमार माथुर | उमरकैद |
| मार्कण्डेय | पत्थर और परछाई |

.....

## आलोचना (Criticism)

| कृतिकार | कृति |
|---|---|
| भारतेंदु | नाटक |
| शिवसिंह सेंगर | शिवसिंह सरोज |
| पद्मसिंह शर्मा | बिहारी सतसई की भूमिका |
| कृष्ण बिहारी मिश्र | देव और बिहारी |
| बाबू गुलाबराय | सिद्धांत और अध्ययन, काव्य के रूप, नवरस |
| श्यामसुंदर दास | साहित्यालोचन, रूपक रहस्य, भाषा रहस्य |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| रामचंद्र शुक्ल | काव्य में रहस्यवाद,रस-मीमांसा,गोस्वामी तुलसीदास,भ्रमरगीत-सार,जायसी ग्रंथावली की भूमिका |
| निराला | रवींद्र कविता कानन, पंत और पल्लव |
| पंत | गद्यपथ, शिल्प और दर्शन छायावादः पुनर्मूल्यांकन |
| रामकुमार वर्मा | साहित्य समालोचना |
| नंददुलारे वाजपेयी | नया साहित्य नए प्रश्न, प्रकीर्णिका, कवि निराला |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी | कबीर, सूर साहित्य, हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल |
| गिरिजा कुमार माथुर | नई कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ |
| रामविलास शर्मा | निराला की साहित्य साधना (तीन भाग), भारतेंदु हरिश्चंद्र, नई कविता और अस्तित्ववाद |
| रामविलास शर्मा | भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा, भाषा और समाज, |
| रामविलास शर्मा | महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, आचार्य शुक्ल, लोकजागरण और हिंदी साहित्य, |
| डॉ० नगेंद्र | सुमित्रानंदन पंत,साकेत : एक अध्ययन,रस-सिद्धांत, विचार और अनुभूति, रीतिकाव्य की भूमिका, |
| डॉ० नगेंद्र | देव और उनकी कविता, मिथक और साहित्य, भारतीय समीक्षा और आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि |
| 'अज्ञेय' | त्रिशंकु, आत्मनेपद, अद्यतन, संवत्सर, स्मृति-लेखा, चौथा सप्तक, केंद्र और परिधि, |
| डॉ० नगेंद्र | पुष्करिणी, जोग लिखि, सर्जना और संदर्भ |
| नामवर सिंह | कविता के नए प्रतिमान, छायावाद, वाद-विवाद-संवाद, इतिहास और आलोचना, कहानी और नई कहानी |
| विजयदेव नारायण साही | शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट, लघुमानव के बहाने हिंदी कविता पर एक बहस, जायसी |
| रामस्वरूप चतुर्वेदी | मध्ययुगीन हिंदी काव्य-भाषा, अज्ञेय: आधुनिक रचना की समस्या, भाषा और संवेदना |
| लक्ष्मीकांत वर्मा | नई कविता के प्रतिमान, नये प्रतिमान पुराने निकष |
| जगदीश गुप्त | नई कविता: स्वरूप और समस्याएँ |
| धर्मवीर भारती | मानव मूल्य और साहित्य |
| विपिन कुमार अग्रवाल | आधुनिकता के पहलू |
| मलयज | कविता से साक्षात्कार |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| अशोक वाजपेयी | फिलहाल, कुछ पूर्वग्रह |
| निर्मल वर्मा | शब्द और स्मृति |
| 'मुक्तिबोध' | नई कविता का आत्मसंघर्ष |
| नेमिचंद्र जैन | अधूरे साक्षात्कार |
| शिवदान सिंह चौहान | प्रगतिवाद, हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष, साहित्यनुशीलन, साहित्य की परख |
| डॉ बच्चन सिंह | हिंदी आलोचना के बीज शब्द, साहित्य का समाजशास्त्र और रूपवाद, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास |

.....

## निबंध (Essay)

| निबंधकार | निबंध/निबंध-संग्रह |
|---|---|
| शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद' | राजा भोज का सपना |
| महावीर प्रसाद द्विवेदी | म्युनिसिपैलिटी के कारनामे, जनकस्य दण्ड, रसज्ञ रंजन, कवि और कविता, |
| महावीर प्रसाद द्विवेदी | लेखांजलि, आत्मनिवेदन, सुतापराधे |
| चंद्रधर शर्मा गुलेरी | विक्रमोर्वशी की मूल कथा, अमंगल के स्थान में मंगल शब्द, मारेसि मोहि कुठाँव, कछुवा धर्म |
| बालमुकुंद गुप्त | शिवशंभू के चिट्ठे, चिट्ठे और खत |
| प्रतापनारायण मिश्र | निबंध-नवनीत, खुशामद, आप, बात, भौं, प्रताप पीयूष |
| पद्मसिंह शर्मा | पद्म पराग, प्रबंध मंजरी में संकलित निबंध |
| बालकृष्ण भट्ट | साहित्य सरोज, भट्ट निबंधावली (आँसू, रुचि, जात-पाँत, सीमा रहस्य, आशा, चलन आदि), |
| बालकृष्ण भट्ट | साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है (नि०) |
| भारतेंदु | पाँचवे पैगम्बर |
| सरदार पूर्णसिंह | मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, अमरीका का मस्त जोगी वाल्ट हिटमैन, |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| सरदार पूर्णसिंह | पवित्रता, कन्यादान, आचरण की सभ्यता |
| बाबू गुलाबराय | फिर निराशा क्यों, ठलुआ क्लब, मन की बातें, मेरी असफलताएँ, कुछ उथले कुछ गहरे |
| रामचंद्र शुक्ल | चिंतामणि (चार भाग)में संकलित निबंध, कविता क्या है, साधारणीकरण और व्यक्ति-वैचित्र्यवाद |
| पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी | पंचपात्र (संग्रह) |
| शिवपूजन सहाय | कुछ (संग्रह) |
| 'उग्र' | बुढापा, गाली |
| माखनलाल चतुर्वेदी | साहित्य देवता, अमीर देवता, गरीब देवता |
| प्रसाद | काव्य कला तथा अन्य निबंध, यथार्थवाद और छायावाद, रंगमंच, मौर्यो का राज्य-परिवर्तन |
| महादेवी वर्मा | साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, शृंखला की कड़ियाँ, क्षणदा, संधिनी, चिंतन के क्षण |
| जैनेंद्र | जड़ की बात, सोच-विचार, मंथन, मैं और वे, साहित्य का श्रेय और प्रेय, इतस्ततः, पूर्वोदय |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी | अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क, नाख़ून क्यों बढ़ते हैं, कुटज, पुनश्च, |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी | प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, ठाकुर की बटोर, आम फिर बौरा गए, कुटज (नि०) |
| 'दिनकर' | मिट्टी की ओर, पंत, उजली आग, प्रसाद और मैथलीशरण गुप्त, रेती के फूल, अर्द्धनारीश्वर |
| नंददुलारे वाजपेयी | आधुनिक साहित्य, नया साहित्य : नये प्रश्न, हिंदी साहित्य : 20वीं शताब्दी, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद |
| नगेंद्र | यौवन के द्वार पर, आस्था के चरण, चेतना के बिंब, छायावाद की परिभाषा, साधारणीकरण (नि०) |
| रामवृक्ष बेनीपुरी | गेहूँ और गुलाब, वंदे वाणी विनायकौ, लाल तारा |
| 'अज्ञेय' | त्रिशंकु, आलवाल, हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, भवंती, लिखि कागद कोरे, |
| 'अज्ञेय' | आत्मपरक, सबरंग (ललित निबंध-संग्रह) |
| देवेंद्र सत्यार्थी | धरती गाती हैं एक युग : एक प्रतीक, रेखाएँ बोल उठी |
| यशपाल | चक्कर क्लब, बात-बात में मात, गांधीवाद की शव परीक्षा, न्याय का संघर्ष, देखा सोचा समझा |
| कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | जिंदगी मुस्काई, बाजे पायलिया में घुँघुरु, महके आँगन चहके द्वार |
| 'अश्क' | मंटो : मेरा दुश्मन |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| प्रभाकर माचवे | खरगोश के सींग |
| विद्यानिवास मिश्र | छितवन की छाँह, अंगद की नियति, तुम चंदन हम पानी, आँगन का पंछी और बंजारा मन, |
| विद्यानिवास मिश्र | मैंने सिल पहुँचाई, कदम की फूली डाल, परंपरा बंधन नहीं, बसंत आ गया पर कोई बंधन नहीं, |
| विद्यानिवास मिश्र | मेरा देश वापस लाओ, अग्निरथ |
| 'मुक्तिबोध' | नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध, नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, |
| 'मुक्तिबोध' | समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी, कला का तीसरा बाण, शमशेर : मेरी दृष्टि में, |
| 'मुक्तिबोध' | कलाकार की व्यक्तिगत ईमानदारी, सौंदर्य प्रतीति की प्रक्रिया, कलात्मक अनुभव, |
| 'मुक्तिबोध' | उर्वशी : मनोविज्ञान उर्वशी : दर्शन और काव्य, मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन का एक पहलू |
| धर्मवीर भारती | ठेले पर हिमालय, पश्यंती, कहानी-अनकहनी, रामजी की चींटी : रामजी का शेर |
| शिवप्रसाद सिंह | शिखरों के सेतु |
| हरिशंकर परसाई | निठल्ले की डायरी, भूत के पाँव, सदाचार का तावीज, ठिठुरता, गणतंत्र, जैसे उनके दिन फिरे, |
| हरिशंकर परसाई | सुनो भाई साधो, विकलांग श्रद्धा का दौर, पगडंडियों का जमाना |
| कुबेरनाथ राय | प्रिया नीलकंठी, रस आखेटक, गंधमादन, विषादयोग |
| विजयेंद्र स्नातक | चिंतन के क्षण |
| नामवर सिंह | इतिहास और आलोचना, बकलम खुद |
| निर्मल वर्मा | शब्द और स्मृति, कला और जोखिम, ढलान से उतरते हुए |
| बनारसी दास चतुर्वेदी | हमारे आराध्य, साहित्य और जीवन |
| लक्ष्मीकांत वर्मा | नए प्रतिमान : पुराने निकष |
| कृष्ण बिहारी | बेहया का जंगल |
| विजयदेव नारायण साही | लघुमानव के बहाने हिंदी कविता पर बहस, शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट |

.....

## आत्मकथा (Autobiography)

### मौलिक आत्मकथाएं

| कृति | कृतिकार |
|---|---|
| अर्द्धकथानक (1641 ई०) | बनारसीदास जैन |
| स्वरचित आत्मचरित (1879 ई०) | दयानंद सरस्वती |
| मुझमें देव जीवन का विकास (1909 ई०) | सत्यानंद अग्निहोत्री |
| मेरे जीवन के अनुभव (1914 ई०) | संत राय |
| फिजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष (1914 ई०) | तोताराम सनाढय |
| मेरा संक्षिप्त जीवन चरित्र-मेरा लिखित (1920 ई०) | राधाचरण गोस्वामी |
| आपबीता : काले पानी के कारावास की कहानी (1921 ई०) | भाई परमानंद |
| कल्याण मार्ग का पथिक (1925 ई०) | स्वामी श्रद्धानंद |
| आपबीती (1933 ई०) | लज्जाराम मेहता शर्मा |
| मैं क्रांतिकारी कैसे बना (1933 ई०) | राम विलास शुक्ल |
| प्रवासी की आत्मकथा (1939 ई०) | भवानी दयाल संन्यासी |
| मेरी असफलताएँ (1941 ई०) | गुलाब राय |
| मेरी आत्म कहानी (1943 ई०) | श्यामसुंदर दास |
| पत्रकार की आत्मकथा (1943 ई०) | मूलचंद अग्रवाल |
| आत्मकथा (1943 ई०) | महात्मा नारायण स्वामी |
| मेरी जीवन यात्रा (भाग-1-1944 ई०, भाग-2-1949 ई०, भाग-3, 4, 5-1967 ई०) | राहुल सांकृत्यायन |
| आत्मकथा (1946 ई०) | लाला लाजपत राय |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| अपनों की खोज में या बुकसेलर की डायरी (1947 ई०) | रामकुमार विद्यार्थी 'रावी' |
| मेरी जीवन कहानी (1948 ई०) | गणेश नारायण सोमाणी |
| मेरा जीवन प्रवाह (1948 ई०) | वियोगी हरि |
| मेरी जीवन गाथा (1949 ई०) | क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णी |
| उलझी स्मृतियाँ (1950 ई०) | विनोद शंकर व्यास |
| स्वतंत्रता की खोज (1951 ई०) | सत्यदेव परिव्राजक |
| जीवन चक्र (1951ई०) | गंगा प्रसाद उपाध्याय |
| क्रांतिकारी की आत्मकथा (1951 ई०) | मन्मथनाथ गुप्त |
| अज्ञात जीवन (1952 ई०) | अजित प्रसाद जैन |
| परिव्राजक की प्रजा (1952 ई०) | शांतिप्रिय द्विवेदी |
| सिंहावलोकन (भाग-1, 2-1952 ई०; भाग-3-1955 ई०) | यशपाल |
| चाँद-सूरज के वीरन (1952 ई०) | देवेंद्र सत्यार्थी |
| साहित्यिक जीवन के अनुभव (1953 ई०) | किशोरीदास बाजपेयी |
| मुदर्रिस की रामकहानी (1953 ई०) | कालीदास कपूर |
| मेरी जीवन कहानी (1956 ई०) | रमादेवी मुरारका |
| समय का फेर (1956 ई०) | एल० पी० नागर |
| मेरी जीवन यात्रा (1956 ई०) | जानकी देवी बजाज |
| आत्मकथा : आपबीती-जगबीती (1957 ई०) | नरदेव शास्त्री |
| मेरा नाटक काल (1957 ई०) | राधेश्याम कथावाचक |
| मेरी अपनी कथा (1958 ई०) | पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी |
| आत्म परीक्षण (भाग-1, 2, 3-1958 ई०) | सेठ गोविन्द दास |
| आत्मकथा (1958 ई०) | राम प्रसाद बिस्मिल |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| बचपन के दो दिन (1959 ई०); यौवन के द्वार पर (1970 ई०) | डॉ० देवराज उपाध्याय |
| साठ वर्ष : एक रेखांकन (1960 ई०) | सुमित्रानंदन पंत |
| अपनी खबर (1960 ई०) | पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' |
| मेरी आत्मकहानी (1963 ई०) | आचार्य चतुरसेन शास्त्री |
| क्रांति पथ का पथिक (1966 ई०) | पृथ्वी सिंह आजाद |
| जीवन के चार अध्याय (1966 ई०) | भुवनेश्वर माधव मिश्र |
| आत्मकथा और संस्मरण (1967 ई०) | गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी |
| क्या भूलूं क्या याद करुं (1969 ई०); नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई०); | हरिवंशराय बच्चन |
| बसेरे से दूर (1978 ई०); दशद्वार से सोपान तक (1985 ई०) | हरिवंशराय बच्चन |
| अपनी कहानी (1970 ई०) | वृंदावन लाल वर्मा |
| प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र (1970 ई०) | हीरालाल शास्त्री |
| सेवा, सृजन और संघर्ष (1972 ई०) | व्योहार राजेन्द्र सिंह |
| भूली बातें याद करुं (1973 ई०) | राधाकृष्ण बिरला |
| विदा बंधु विदा (1973 ई०) | प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय |
| एक आत्मकथा-अरुणायन (1974 ई०) | बलराज साहनी |
| राह चलते-चलते (1976 ई०) | रामेश्वर टांटिया |
| घर की बात (1983 ई०), अपनी धरती अपने लोग (1966 ई०) | रामविलास शर्मा |
| राख से लपटें (1984 ई०) | पुरुषोत्तम दास टंडन |
| मेरा जीवन (1985 ई०) | शिवपूजन सहाय |
| मेरे सात जनम (खंड-1, 2, 3) | हंसराज रहबर |
| टुकड़े-टुकड़े दास्तान (1986 ई०) | अमृतलाल नागर |
| मेरी जीवनधारा (1987 ई०) | यशपाल जैन |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| आत्म परिचय (1988 ई०) | फणीश्वर नाथ 'रेणु' |
| अर्धकथा (1988 ई०) | डॉ नगेन्द्र |
| तपती पगडंडियों पर पदयात्रा (1989 ई०) | कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' |
| सहचर है समय (1991 ई०) | रामदरश मिश्र |
| फुरसत के दिन (2000 ई०); जो मैंने जिया (1992 ई०); | कमलेश्वर |
| यादों का चिराग (1997 ई०); जलती हुई नदी (1999 ई०) | कमलेश्वर |
| कहो व्यास कैसी कटी (1994 ई०) | गोपाल प्रसाद व्यास |
| ग़ालिब छूटी शराब (2000 ई०) | रवीन्द्र कालिया |
| मुड मुड़कर देखता हूँ (2001 ई०) | राजेन्द्र यादव |
| वह जो यथार्थ था (2001 ई०) | आखिलेश |
| आज के अतीत (2003 ई०) | भीष्म साहनी |
| पाव भर जीरे में ब्रह्मभोज (2003 ई०) | अशोक बाजपेयी |
| मैंने मांरू नहीं देखा (2003 ई०) | स्वदेश दीपक |
| वसन्त से पतझर तक (2005 ई०) | रवीन्द्रनाथ त्यागी |
| पंखहीन (2004 ई०); मुक्त गगन में (2004 ई०); पंछी उड़ गया (2004 ई०) | विष्णु प्रभाकर |
| एक अंतहीन तलाश (2007 ई०) | कन्हैयालाल नंदन |
| गुजरा कहाँ-कहाँ से (2007 ई०) | देवेश ठाकुर |

## महिला लेखन धारा की आत्मकथाएं

| | |
|---|---|
| दस्तक जिन्दगी की (1990 ई०); मोड़ जिन्दगी का (1996 ई०) | प्रतिभा अग्रवाल |
| जो कहा नहीं गया (1996 ई०) | कुसुम अंसल |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| लगता नहीं है दिल मेरा (1997 ई०) | कृष्णा अग्निहोत्री |
| बूंद बावड़ी (1999 ई०) | पद्मा सचदेव |
| कुछ कही कुछ अनकही (2000 ई०) | शीला झुनझुनवाला |
| कस्तूरी कुण्डल बसै (2002 ई०) हादसे (2005 ई०) | रमणिका गुप्ता |
| एक कहानी यह भी (2007 ई०) | मन्नू भण्डारी |
| अन्या से अनन्या (2007 ई०) | प्रभा खेतान |
| पिंजड़े की मैना (2008 ई०) | चन्द्रकिरण सौनरेक्सा |

दलित लेखन धारा की आत्मकथाएं

| | |
|---|---|
| अपने-अपने पिंजरे (भाग-1-1995 ई०); भाग-2-2000 ई०) | मोहन नैमिशराय |
| जूठन 1997 ई०) | ओम प्रकाश वाल्मीकि |
| मेरा बचपन मेरे कंधो पर (2009 ई०) | श्योराज सिंह बेचैन |
| मुर्दहिया (2010 ई०) | डॉ तुलसीदास |
| शिकंजे का दर्द (2012 ई०) | सुशीला टाकभौरे |

(II) अनुदित आत्मकथाएं

| आत्मकथाकार | आत्मकथा का मूल नाम, भाषा, प्रकाशन वर्ष | हिन्दी अनुवाद का नाम |
|---|---|---|
| मीर तकी मीर | जिक्र-ए-मीर, उर्द, 1783 ई० | जिक्रे-मीर |
| मुंशी लुत्फुल्ला | एन ऑटोबायोग्राफी, अंग्रेजी, 1848 ई० | एक आत्मकथा |
| महात्मा गाँधी | आत्मचरित, गुजराती, 1926 ई० | आत्मकथा अथवा सत्य के प्रयोग |
| सुभाष चंद्र बोस | तरुणे सपन, बांग्ला, 1935 ई० | तरुण के स्वप्न |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| जवाहर लाल नेहरू | माई स्टोरी, अंग्रेजी, 1936 ई० | मेरी कहानी |
| वेद मेहता | फेस टू फेस, अंग्रेजी, 1958 ई० | मेरा जीवन संघर्ष |
| शचीन्द्र नाथ सान्याल | बंदी जीवन बांग्ला, 1963 ई० | बंदी जीवन |
| हंसा वाडकर | सांगत्ये एका, मराठी, 1972 ई० | आभिनेत्री की आपबीती |
| जोश मलीहाबादी | यादों की बारात, उर्दू, 1972 ई० | यादों की बारात |
| अमृता प्रीतम | रसीदी टिकट, पंजाबी, 1977 ई० | रसीदी टिकट |
| कमला दास | माई स्टोरी, अंग्रेजी, 1977 ई० | मेरी कहानी |
| दलीप कौर टिवाणा | नंगे पैरों दा सफर, पंजाब, 1980 ई० | नंगे पैरों का सफर |

.....

## जीवनी (Biography)

| जीवनीकार | जीवनी (प्रकाशन वर्ष) |
|---|---|
| नाभा दास | भक्तमाल (1585 ई०) |
| गोसाई गोकुलनाथ | चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता (17 वीं सदी ई०) |
| गोपाल शर्मा शास्त्री | दयानंद दिग्विजय (1881 ई०) |
| रमाशंकर व्यास | नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन चरित्र (1883 ई०) |
| देवी प्रसाद मुंसिफ | महाराजा मान सिंह का जीवन चरित्र (1883 ई०), राजा मालदेव (1889 ई०), |
| देवी प्रसाद मुंसिफ | उदय सिंह महाराजा (1893 ई०), जसवंत सिंह (1896 ई०), प्रताप सिंह महाराणा (1903 ई०), |
| देवी प्रसाद मुंसिफ | संग्राम सिंह राणा (1904 ई०) |
| कार्तिक प्रसाद खत्री | अहिल्याबाई का जीवन चरित्र (1887 ई०), छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र (1890 ई०), |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| कार्तिक प्रसाद खत्री | मीराबाई का जीवन चरित्र (1893 ई०) |
| राधाकृष्ण दास | श्री नागरीदास जी का जीवन चरित्र (1894 ई०), कविवर बिहारी लाल (1895 ई०), |
| राधाकृष्ण दास | सूरदास (1900 ई०), भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र (1904 ई०) |
| बलभद्र मिश्र | स्वामी दयानंद महाराज का जीवन चरित्र (1896 ई०) |
| गौरीशंकर हीराचंद ओझा | कर्नल जेम्स टॉड (1902 ई०) |
| शिवनंदन सहाय | हरिश्चन्द्र (1905 ई०) |
| बालमुकुंद गुप्त | प्रताप नारायण मिश्र (1907 ई०) |
| बाबू श्याम सुंदर दास | हिन्दी कोविद रत्नमाला (प्रथम भाग-1909 ई०, द्वितीय भाग-1914 ई०, |
| बाबू श्याम सुंदर दास | हिन्दी के 40 साहित्यकारों की जीवननियाँ) |
| आचार्य रामचन्द्र शुक्ल | बाबू राधाकृष्ण दास (1913 ई०) |
| मुकुंदी लाल वर्मा | कर्मवीर गाँधी (1913 ई०) |
| संपूर्णानंद | धर्मवीर गाँधी (1914 ई०), देशबंधु चित्तरंजन दास (1921 ई०) |
| आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी | प्राचीन पंडित और कवि (1918 ई०), सुकवि संकीर्तन (1924 ई०), चरित चर्चा (1929 ई०) |
| सुख संपतिराय भंडारी | डाक्टर सर जगदीश चन्द्र बसु और उनके अविष्कार (1919 ई०) |
| स्वामी सत्यानंद | दयानंद प्रकाश (1919 ई०) |
| राजेन्द्र प्रसाद | चंपारण में महात्मा गाँधी (1919 ई०), बापू के कदमों में (1950 ई०) |
| रामचंद्र वर्मा | महात्मा गाँधी (1921 ई०) |
| रामदयाल तिवारी | गाँधी मीमांसा (1921 ई०) |
| ईश्वरी प्रसाद वर्मा | लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (1921 ई०) |
| बनारसी दास चतुर्वेदी | कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी (1926 ई०) |
| गणेश शंकर विद्यार्थी | श्री गाँधी (1931 ई०) |
| इन्द्र वाचस्पति | जवाहर लाल नेहरू (1933 ई०) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| सत्यभक्त | कार्ल मार्क्स (1933 ई०) |
| ब्रजरत्न दास | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1934 ई०) |
| सीताराम चतुर्वेदी | महामना पंडित मदन मोहन मालवीय (1937 ई०) |
| मन्मथनाथ गुप्त | चंद्रशेखर आजाद (1938 ई०) |
| लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज | महात्मा गाँधी (1939 ई०), हमारे जवाहर लाल नेहरु (1948 ई०) |
| घनश्याम बिड़ला | बापू (1940 ई०), मेरे जीवन में गाँधीजी (1975 ई०) |
| शिवरानी देवी | प्रेमचंद घर में (1944 ई०) |
| छविनाथ पाण्डेय | नेताजी सुभाष (1946 ई०) |
| काका कालेलकर | बापू की झाँकियाँ (1948 ई०) |
| सुशीला नायर | बापू के कारावास की कहानी (1949 ई०) |
| रामवृक्ष बेनीपुरी | जयप्रकाश नारायण (1951 ई०) |
| राहुल सांकृत्यायन | स्तालिन, कार्ल मार्क्स, लेनिन (1954 ई०) |
| जैमिनी कौशिक बरूआ | माखन लाल चतुर्वेदी (1960 ई०) |
| लक्ष्मी शंकर व्यास | पराड़करजी और पत्रकारिता (1960 ई०) |
| चंद्रशेखर शुक्ल | रामचन्द्र शुक्ल : जीवनी और कृतित्व (1962 ई०) |
| मदन गोपाल | कलम का मजदूर (1964 ई०; मूलतः अंग्रेजी में; प्रेमचंद के जीवन पर) |
| जैनेन्द्र कुमार | अकाल पुरुष गाँधी (1968 ई०) |
| राम विलास शर्मा | निराला की साहित्य साधना-प्रथम खंड (1969 ई०) |
| शिव कुमार कौशिक | प्रियदर्शिनी इंदिरा गाँधी (1970 ई०) |
| शांति जोशी | सुमित्रानंदन पंत : जीवन और साहित्य (प्रथम खंड-1970 ई ; द्वितीय खंड-1977 ई०) |
| जगदीश चंद्र माथुर | जिन्होंने जीना जाना (1954 ई०; 12 प्रसिद्ध व्यक्तियों के चरित-लेख) |
| शिव प्रसाद सिंह | उत्तर योगी : श्री अरविंद (1972 ई०) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| विष्णु प्रभाकर | आवारा मसीहा (1974 ई०; बांग्ला साहित्यकार शरतचन्द्र की जीवनी) |
| विष्णुचंद्र शर्मा | अग्निसेतु (1976 ई०; बांग्ला के विद्रोही कवि नजरूल इस्लाम के जीवन पर), |
| विष्णुचंद्र शर्मा | समय साम्यवादी (1997 ई०; राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर) |
| राम कमल राय | शिखर से सागर तक (1986 ई०; अज्ञेय की जीवन-यात्रा) |
| शोभाकांत | बाबूजी (1991 ई०; नागार्जुन के जीवन पर) |
| तेज बहादुर चौधरी | मेरे बड़े भाई शमशेर जी (1995 ई०) |
| कमला सांकृत्यायन | महामानव महापंडित (1995 ई०; राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर) |
| प्रतिभा अग्रवाल | प्यारे हरिश्चन्द्र जू (1997 ई०) |
| सुलोचना रांगेय राघव | रांगेय राघव : एक अंतरंग परिचय (1997 ई०) |
| मदन मोहन ठाकौर | राजेन्द्र यादव-मार्फत मदन मोहन ठाकौर (1999 ई०) |
| बिन्दु अग्रवाल | स्मृति के झरोखे में (1999 ई०; भारत भूषण अग्रवाल की जीवन पर) |
| महिमा मेहता | उत्सव पुरुष-नरेश मेहता (2003 ई०) |
| कुमुद नागर | वट वृक्ष की छाया में (2004 ई०; अमृत लाल नागर के जीवन पर) |
| ज्ञान चंद जैन | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तिगत चित्र (2004 ई०) |
| कृष्ण बिहारी मिश्र | रामकृष्ण परमहंस : कल्पतरू की उत्सव लीला (2004 ई०) |
| गायत्री कमलेश्वर | मेरे हमसफर (2005 ई०) |

.....

AJAY KUMAR

## संस्मरण (Sansmaran)

| कृति | कृतिकार |
|---|---|
| अनुमोदन का अंत (1905 ई०) सभा की सभ्यता (1907 ई०) | महावीर प्रसाद द्विवेदी |
| हरिऔध जी का संस्मरण | बालमुकुंद गुप्त |
| शिकार (1936 ई०) बोलती प्रतिमा (1937 ई०), | श्रीराम शर्मा |
| भाई जगन्नाथ, प्राणों का सौदा (1939 ई०), जंगल के जीव (1949 ई०) | श्रीराम शर्मा |
| लाल तारा (1938 ई०), माटी की मूरतें (1946 ई०), गेहूँ और गुलाब (1950 ई०) | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| जंजीर और दीवारें (1955 ई०), मील के पत्थर (1957 ई०) | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| अतीत के चलचित्र (1941 ई०), स्मृति की रेखाएँ (1947 ई०), पथ के साथी (1956 ई०), | महादेवी वर्मा |
| क्षणदा (1957 ई०), स्मारिका (1971 ई०) | महादेवी वर्मा |
| तीस दिन : मालवीय जी के साथ (1942 ई०) | रामनरेश त्रिपाठी |
| हमारे आराध्य (1952 ई०) | बनारसीदास चतुर्वेदी |
| जिंदगी मुस्काई (1953 ई०), दीप जले शंख बजे (1959 ई०), माटी हो गई सोना (1959 ई०) | कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' |
| ये और वे (1954 ई०) | जैनेंद्र |
| बचपन की स्मृतियाँ (1955 ई०), असहयोग के मेरे साथी (1956 ई०), जिनका मैं कृतज्ञ (1957 ई०) | राहुल सांकृत्यायन |
| मंटो : मेरा दुश्मन (1956 ई०), ज्यादा अपनी कम परायी (1959 ई०) | 'अश्क' |
| वट-पीपल (1961 ई०) | 'दिनकर' |
| समय के पाँव (1962 ई०) | माखन लाल चतुर्वेदी |
| नए-पुराने झरोखे (1962 ई०) | 'बच्चन' |
| दस तस्वीरें (1963 ई०), जिन्होंने जीना जाना (1971 ई०) | जगदीश चंद्र माथुर |
| वे दिन वे लोग (1965 ई०) | शिवपूजन सहाय |
| कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ (1965 ई०) | विष्णु प्रभाकर |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| चेतना के बिंब (1967 ई०) | नगेंद्र |
| जिनके साथ जिया (1973 ई०) | अमृत लाल नागर |
| स्मृतिलेखा (1982 ई०) | 'अज्ञेय' |

.....

## रेखा चित्र (Rekha-Chitr)

| रेखा-चित्रकार | रेखा-चित्र (प्रकाशन वर्ष) |
|---|---|
| पदम् सिंह शर्मा | पदम् पराग (1929 ई०) |
| श्रीराम शर्मा | बोलती प्रतिमा (1937 ई०) |
| प्रकाशचंद्र गुप्त | शब्द-चित्र एवं रेखा-चित्र (1940 ई०, पुरानी स्मृतियाँ और नये स्केच (1947 ई०) |
| महादेवी वर्मा | अतीत के चलचित्र (1941 ई०), स्मृति की रेखाएँ (1947 ई०) |
| भदन्त आनंद कौसल्यायन | जो न भूल सका (1945 ई०) |
| रामवृक्ष बेनीपुरी | माटी की मूरतें (1946 ई०), गेहूँ और गुलाब (1950 ई०) |
| देवेंद्र सत्यार्थी | रेखाएँ बोल उठीं (1949 ई०) |
| सत्यवती मल्लिक | अमिट रेखाएँ (1951 ई०) |
| बनारसी दास चतुर्वेदी | रेखाचित्र (1952 ई०) |
| विनय मोहन शर्मा | रेखा और रंग (1955 ई०) |
| उपेन्द्र नाथ अश्क | रेखाएँ और चित्र (1955 ई०) |
| सेठ गोविन्द दास | स्मृति कण (1959 ई०) |
| जगदीश चंद्र माथुर | दस तस्वीरें (1963 ई०) |
| रामनाथ सुमन | बाबूराव विष्णु पराड़कर |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| शिवपूजन सहाय | वे दिन वे लोग (1965 ई०) |
| विष्णु प्रभाकर | कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ (1965 ई०) |
| महावीर त्यागी | मेरी कौन सुनेगा |
| कृष्णा सोबती | हम हशमत (1977 ई०) |
| भीमसेन त्यागी | आदमी से आदमी तक (1982 ई०) |
| राम विलास शर्मा | विराम चिह्न (1985 ई०) |

.....

## यात्रा-वृतान्त (Yatra Vritant)

| यात्रा-वृतान्तकार | यात्रा-वृतान्त (प्रकाशन वर्ष) |
|---|---|
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | सरयू पार की यात्रा, मेंहदावल की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, हरिद्वार की यात्रा (1871 ई० से 1879 ई० के बीच) |
| श्रीमती हरदेवी | लंदन यात्रा (1883 ई०) |
| भगवान दास वर्मा | लंदन का यात्री (1884 ई०) |
| दामोदर शास्त्री | मेरी पूर्व दिग्यात्रा (1885 ई०), मेरी दक्षिण दिग्यात्रा (1886 ई०) |
| तोताराम वर्मा | ब्रजविनोद (1888 ई०) |
| देवी प्रसाद खत्री | रामेश्वरम यात्रा (1893 ई०), बद्रिकाश्रम यात्रा (1902 ई०) |
| बाल कृष्ण भट्ट | गया यात्रा (1894 ई०) |
| प्रताप नारायण मिश्र | विलायत यात्रा (1897 ई०) |
| ठाकुर गदाधर सिंह | चीन में तेरह मास (1902 ई०) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| स्वामी सत्यदेव परिव्राजक | अमरीका दिग्दर्शन (1911 ई०), मेरी कैलाश यात्रा (1951 ई०), अमरीका भ्रमण (1916 ई०), |
| स्वामी सत्यदेव परिव्राजक | मेरी जर्मन यात्रा (1926 ई०), यूरोप की सुखद स्मृतियाँ (1937 ई०), |
| स्वामी सत्यदेव परिव्राजक | अमरीका प्रवास की मेरी अदभुत कहानी (1937 ई०), मेरी पाँचवी जर्मनी यात्रा |
| शिव प्रसाद गुप्त | पृथ्वी प्रदक्षिणा (1914 ई०) |
| गोपालराम गहमरी | लंका यात्रा (1916 ई०) |
| राहुल सांकृत्यायन | मेरी लद्दाख यात्रा (1916 ई०), लंका यात्रावलि (1927-28 ई०), मेरी यूरोप यात्रा (1932 ई०), |
| राहुल सांकृत्यायन | मेरी तिब्बत यात्रा (1934 ई०), यात्रा के पन्ने (1934-36 ई०), मेरी यूरोप यात्रा (1935 ई०), |
| राहुल सांकृत्यायन | जापान (1935 ई०), ईरान (1935-37 ई०), तिब्बत में सवा वर्ष (1939 ई०), |
| राहुल सांकृत्यायन | किन्नर देश में (1940 ई०), रूस में पच्चीस मास (1944-47 ई०), धुमक्कड़ शास्त्र (1949 ई०), |
| राहुल सांकृत्यायन | एशिया के दुर्गम खंडों में (1956 ई०), चीन में कम्यून (1959 ई०) |
| जवाहर लाल नेहरू | रूस की सैर (1929 ई०), आँखों देखा रूस (1953 ई०) |
| मौलवी महेश प्रसाद | मेरी ईरान यात्रा (1930 ई०) |
| कन्हैयालाल मिश्र 'आर्योच्पदेशक' | मेरी ईराक यात्रा (1940 ई०) |
| राम नारायण मिश्र | यूरोप यात्रा में छः मास (1932 ई०) |
| गणेश नारायण सोमानी | मेरी यूरोप यात्रा (1932 ई०) |
| प्रो० मनोरंजन | उत्तराखण्ड के पथ पर (1936 ई०) |
| सेठ गोविन्द दास | हमारा प्रधान उपनिवेश (1938 ई०), सुदूर दक्षिण पूर्व (1951 ई०), पृथ्वी परिक्रमा (1954 ई०) |
| संता राम | स्वदेश-विदेश यात्रा (1940 ई०) |
| सूर्य नारायण व्यास | सागर प्रवास (1940 ई०) |
| सत्य नारायण | आवारे की यूरोप यात्रा (1940 ई०), युद्ध यात्रा (1940 ई०) |
| राम वृक्ष बेनीपुरी | पैरों में पंख बांधकर (1952 ई०), उड़ते चलो, उड़ते चलो (1954 ई०) |
| यशपाल | लोहे की दीवार के दोनों ओर (1953 ई०), जय अमरनाथ (1955 ई०), राह बीती (1956 ई०), |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| यशपाल | उत्तराखंड के पथ पर (1958 ई०), स्वर्गोद्यान बिना साँप (1975 ई०) |
| अज्ञेय | अरे यायावर, रहेगा याद ? (1953 ई०), एक बूँद सहसा उछली (1960 ई०) |
| मोहन राकेश | आखिरी चट्टान तक (1953 ई०) |
| भगवत शरण उपाध्याय | कलकत्ता से पीकिंग (1954 ई०), सागर की लहरों पर (1959 ई०) |
| भदंत आनंद कौसल्यायन | आज का जापान |
| आर.आर.खाडिलकर | हालैण्ड में पच्चीस दिन (1954 ई०), बदलते रूस में (1958 ई०) |
| स्वामी सत्यभक्त | मेरी अफ्रीका यात्रा (1955 ई०) |
| अमृत राय | सुबह के रंग |
| बज्र किशोर नारायण | नंदन से लंदन (1957 ई०) |
| दिनकर | देश-विदेश यात्रा (1957 ई०), मेरी यात्राएँ (1970 ई०) |
| भुवनेश्वर प्रसाद 'भुवन' | आँखों देखा यूरोप (1958 ई०) |
| प्रभाकर द्विवेदी | पार उतरि कहँ जइहों (1958 ई०), धूप में सोई नदी (1976 ई०) |
| गोपाल प्रसाद व्यास | अरबों के देश में (1960 ई०) |
| रघुवंश | हरी घाटी (1961 ई०) |
| प्रभाकर माचवे | गोरी नजरों में हम (1964 ई०) |
| निर्मल वर्मा | चीड़ों पर चाँदनी (1964 ई०) |
| बलराज साहनी | रूसी सफरनामा (1971 ई०) |
| डॉ नगेन्द्र | अप्रवासी की यात्राएँ (1972 ई०) |
| शंकर दयाल सिंह | गाँधी के देश से लेनिन के देश में (1973 ई०) |
| श्रीकांत वर्मा | अपोलो का रथ (1975 ई०) |
| कमलेश्वर | खण्डित यात्राएँ (1975 ई०), कश्मीर : रात के बाद (1997 ई०), आँखों देखा पाकिस्तान (2006 ई०) |
| गोविन्द मिश्र | धुंध भरी सुर्खी (1979 ई०), दरख्तों के पार शाम (1980 ई०), झूलती जड़े (1990 ई०), परतों के बीच (1997 ई०) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| कन्हैया लाल नंदन | धरती लाल गुलाबी चेहरे (1982 ई०) |
| विष्णु प्रभाकर | ज्योति पुंज हिमालय (1982 ई०), हमसफर मिलते रहे (1996 ई०) |
| अजित कुमार | सफरी झोले में (1958 ई०), यहाँ से कहीं भी (1997 ई०) |
| राजेन्द्र अवस्थी | हवा में तैरते हुए (1986 ई०) |
| राम दरश मिश्र | तना हुआ इन्द्रधनुष (1990 ई०), भोर का सपना (1993 ई०), पड़ोस की खुशबू (1999 ई०) |
| धर्मवीर भारती | यात्रा चक्र (1995 ई०) |
| शिव प्रसाद सिंह | सब्जा पत्र कथा कहै (1996 ई०) |
| सीतेश आलोक | लिबर्टी के देश में (1997 ई०) |
| वल्लभ डोभाल | आधी रात का सफर (1998 ई०) |
| हिमांशु जोशी | यातना शिविर में (1998 ई०) |
| कृष्णदत्त पालीवाल | जापान में कुछ दिन (2003 ई०) |
| नरेश मेहता | कितना अकेला आकाश (2003 ई०) |
| नासिरा शर्मा | जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं (2003 ई०) |
| मनोहर श्याम जोशी | क्या हाल है चीन के (2006 ई०), पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर (2006 ई०) |

.....

## रिपोर्ताज (Riportaj)

| रचनाकार | रिपोर्ताज (प्रकाशन वर्ष) |
|---|---|
| शिवदान सिंह चौहान | लक्ष्मीपुरा (1938 ई०, 'रूपाभ' पत्रिका में प्रकाशित होने वाली रिपोर्ट) |
| रांगेय राघव | तूफानों के बीच (1946 ई०, हंस' पत्रिका में बंगाल के अकाल से संबंधित रिपोर्टों का पुस्तकाकार संकलन) |
| भदंत आनंद कौसल्यायन | देश की मिट्टी बुलाती है |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| शमशेर बहादुर सिंह | प्लाट का मोर्चा (1952 ई०) |
| कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | क्षण बोले कण मुस्काए (1953 ई०) |
| शिव सागर मिश्र | वे लड़ेंगे हजारों साल (1966 ई०) |
| धर्मवीर भारती | युद्ध यात्रा (1972 ई०) |
| फणीश्वरनाथ 'रेणु' | ऋण जल धन जल (1977 ई०), नेपाली क्रांति कथा (1978 ई०), श्रुत-अश्रुत पूर्व (1984 ई०) |

.....

## भाषेतिहास (Bhashetihas)

| भाषेतिहासकार | भाषेतिहास |
|---|---|
| धीरेन्द्र वर्मा (1897-1973 ई०) | हिन्दी भाषा का इतिहास (1933 ई०) |
| उदय नारायण तिवारी (1903-1984 ई०) | हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास (1955 ई०) |
| हरदेव बाहरी (1907-2000 ई०) | हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप (1965 ई०) |
| भोलानाथ तिवारी (1922-1989 ई०) | हिन्दी भाषा (1966 ई०) |

.....

## शोध-प्रबंध (Shodh-Prbndh)

| शोध-प्रबंधकार | शोध-प्रबंध |
|---|---|
| धीरेन्द्र वर्मा (1897-1973 ई०) | ला लाँग ब्रज (फ्रेंच भाषा में, 1935 ई०, हिन्दी में अनुवाद- 'ब्रजभाषा' नाम से) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| बाबू राम सक्सेना (1897-1988 ई०) | दि इवॉल्यूशन ऑफ अवधी (अंग्रेजी भाषा में, 1938 ई०, हिन्दी में अनुवाद- 'अवधी का विकास' नाम से) |
| उदय नारायण तिवारी (1903-1984 ई०) | ऑरिजिन एण्ड डेवलपमेण्ट ऑफ भोजपुरी (अंग्रेजी भाषा में, 1946 ई०; हिन्दी में अनुवाद- 'भोजपुरी भाषा का उद्गम और विकास' नाम से) |
| फादर कामिल बुल्के (1909-1982 ई०) | रामकथा :उत्पत्ति और विकास (हिन्दी भाषा में प्रस्तुत हिन्दी का प्रथम शोध-प्रबंध, 1949 ई०) |
| नामवर सिंह (जन्म-1927 ई०) | हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (हिन्दी भाषा में, 1952 ई०) |

.....

## साहित्येतिहास (Sahityetihas)

| साहित्येतिहासकार | साहित्येतिहास |
|---|---|
| गाँर्सा-द-तासी (1794-1878 ई०) | इस्तवार द ला लितरेच्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दूस्तानी (फ्रेंच भाषा में लिखा गया हिंदी साहित्य का पहला इतिहास) दो भागों में- 1839 ई० व 1847 ई०) |
| ठाकुर शिवसिंह सेंगर (1833-78 ई०) | शिवसिंह सरोज (हिंदी भाषा में लिखा गया हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला ग्रंथ।,1000 कवियों का परिचय) 1878 ई० |
| जॉर्ज ए० ग्रियसन (1851-1941 ई०) | माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दोस्तान, 1889 (काल-विभाजन व नामकरण का सर्वप्रथम प्रयास किया गया) प्रथम प्रकाशन- एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में 1888 ई० में। |
| मिश्रबंधु [(गणेश बिहारी मिश्र (1866-1939 ई०) श्याम बिहारी मिश्र (1874-1947 ई०) | |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| व शुकदेव बिहारी मिश्र (1879-1951 ई०)] | मिश्रबंधु-विनोद प्रथम तीन भाग-1913, चतुर्थ भाग-1934 [5000 कवियों का परिचय ('बड़ा भारी कवि वृत्त संग्रह'-आचार्य शुक्ल के शब्दों में), सूचनाओं का अपार भंडार, परवर्ती साहित्येहासकारों के लिए कच्चे माल का खजाना] |
| एडविन ग्रीव्स (1854-1941 ई०) | ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर (हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास) 1918 ई० |
| एफ० ई० के० (1879-1974 ई०) | ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर (हिन्दी साहित्य का परिचय मात्र ) 1920 ई० |
| रामचंद्र शुक्ल (1884-1941 ई०) | हिंदी साहित्य का इतिहास (1000 कवियों का परिचय दिया गया है) 1929, संवर्द्धित संस्करण :1940 |
| डॉ० रामकुमार वर्मा (1905-90 ई०) | हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (1938 ई०, 693 ई० से 1693 ई० तक की कालावधि का इतिहास) |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-79 ई०) | हिंदी साहित्य की भूमिका (1940 ई०), हिंदी साहित्य का आदिकाल (1952 ई०), हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास (1953 ई०) |
| लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय (जन्म-1914 ई०) | आधुनिक हिन्दी साहित्य (1941 ई०), आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका (1952 ई०) |
| नंददुलारे वाजपेयी (1906-67 ई०) | हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी (1942 ई०), आधुनिक साहित्य (1950 ई०) |
| राहुल सांकृत्यायन (1893-1963 ई०) | हिंदी काव्यधारा, (1944 ई०), दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा (1952 ई०) |
| नामवर सिंह (जन्म-1927 ई०) | आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ (1954 ई०) |
| विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (1906-82 ई०) | हिंदी साहित्य का अतीत प्रथम भाग : 1959 ई०, द्वितीय भाग : 1960 ई०) |
| गणपतिचंद्र गुप्त (जन्म-1928 ई०) | हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो भाग) : 1965 ई० |
| 'अज्ञेय' (1911-87 ई०) | हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य (1967 ई०) |
| डॉ० नगेंद्र (1915-99 ई०) | हिंदी साहित्य का इतिहास (संपादन) : 1973 ई०, हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित) : 6वें एवं 10वें भाग का संपादन डॉ० नगेंद्र द्वारा |
| राममूर्ति त्रिपाठी (1929-2009 ई०) | हिंदी साहित्य का इतिहास |
| शिवकुमार शर्मा | हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| प्रो० महेंद्र कुमार | हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल |
| प्रभाकर माचवे (1919-91 ई०) | हिंदी साहित्य की कहानी |
| रामस्वरूप चतुर्वेदी (1931-2003 ई०) | हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास (1986 ई०) |
| विजयेन्द्र स्नातक (1914-98 ई०) | हिंदी साहित्य का इतिहास (1996 ई०) |
| बच्चन सिंह (1919-2008 ई०) | हिंदी साहित्य दूसरा इतिहास (1996 ई०) |
| सुमन राजे (1938-2008 ई०) | हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास (2003 ई०) |

.....

.....

AJAY KUMAR

## प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ (Pramukh Patra-Ptraikayen)

(1) बंगाल गजट/कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर/हिक्की गजट : 29 जनवरी, 1780, साप्ताहिक (अंग्रेजी में), संपादक : जेम्स आगस्टस हिक्की, भारत का प्रथम समाचारपत्र

(2) उदंत मार्तण्ड : 30 मई, 1826, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : पं० जुगलकिशोर शुक्ल, प्रथम हिंदी पत्र (चूँकि हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदंत मार्तण्ड' 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ था इसलिए 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।)

(3) बंगदूत : 1829, साप्ताहिक, कलकत्ता, संपादक : राजा राममोहन राय, एकसाथ चार भाषाओं- बांग्ला, हिन्दी, उर्दू व बनारसी में छपनेवाला पत्र।

(4) बनारस अख़बार : 1849, काशी से प्रकाशित, संपादक : राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद', हिन्दी प्रदेश से प्रकाशित पहला हिंदी समाचारपत्र

(5) समाचार-सुधावर्षण : 1854, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : श्यामसुंदर सेन, प्रथम हिंदी दैनिक पत्र

(6) प्रजा हितैषी : 1855, आगरा से प्रकाशित, संपादक : राजा लक्ष्मणसिंह

(7) तत्त्वबोधिनी पत्रिका : 1865, मासिक, बरेली, संपादक : गुलाब शंकर

(8) वृत्तांत विलास : 1867, मासिक, जम्मू से प्रकाशित्र

(9) कविवचन सुधा : 15 अगस्त, 1867, मासिक पत्रिका, काशी, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र

(10) हरिश्चंद्र मैगजीन (हरिश्चंद्र पत्रिका) : 1873, बनारस, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र

AJAY KUMAR

(11) बालाबोधिनी :1874, मासिक पत्रिका, बनारस, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र, केवल महिलाओं के लिए

(12) सदादर्श : 1874, साप्ताहिक, दिल्ली, संपादक : लाला श्रीनिवास दास

(13) हिंदी प्रदीप : 1877, मासिक, इलाहाबाद, संपादक : बालकृष्ण भट्ट

(14) भारत मित्र : 1877, साप्ताहिक, संपादक :बालमुकुंद गुप्त

(15) ब्राह्मण : 1880, मासिक, कानपुर, संपादक : प्रतापनारायण मिश्र

(16) आनंद कादंबिनी : 1881 ई०, मासिक, मिर्जापुर, संपादक : बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

(17) भारतेंदु : 1883, वृदांवन, संपादक : राधाचरण गोस्वामी

(18) द्वंद्व : 1883, मासिक, लाहौर, संपादक : अंबिकादत्त व्यास

(19) भारतोदय : 1885, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : सीताराम शर्मा, दूसरा हिंदी दैनिक

(20) (i) अखबारे चुनार : 1866, चुनार, संपादक : बालमुकुंद गुप्त, उर्दू का पत्र

(ii) कोहिनूर : 1888, लाहौर, संपादक : बालमुकुंद गुप्त, उर्दू का पत्र

(21) नागरी नीरद : 1893, साप्ताहिक, मिर्जापुर, संपादक : बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

AJAY KUMAR

(22) नागरीप्रचारिणी पत्रिका : 1896, त्रैमासिक, कशी, संस्थापक : श्यामसुंदरदास, रामनारायण मिश्र, शिवकुमार सिंह

(23) उपन्यास : 1898, काशी, मासिक, संपादक : पं० किशोरीलाल गोस्वामी;

(24) सरस्वती : 1900, मासिक, इलाहाबाद (प्रारंभ में काशी से); संपादक : श्याम सुन्दर दास व चार अन्य (1900-03), महावीर प्रसाद द्विवेदी (1903-20), पं० देवीदत्त शुक्ल (1920-47), प्रकाशन काल : (1900-82)

(25) सुदर्शन : 1900, मासिक, काशी, संपादक : देवकीनंदन खत्री, माधवप्रसाद मिश्र

(26) समालोचक : 1902, जयपुर, संपादक : चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(27) अभ्युदय : 1907, साप्ताहिक, प्रयाग, संपादक : मदनमोहन मालवीय

(28) इन्दु : 1909, मासिक, वाराणसी, संपादक : अम्बिका प्रसाद गुप्त, रूप नारायण पाण्डेय; जयशंकर प्रसाद की आरंभिक रचनाओं को प्रकाशित करने का श्रेय।

(29) मर्यादा : 1910, 1921-23, मासिक, वाराणसी, संपादक : कृष्णकांत मालवीय, पद्मकांत मालवीय, लक्ष्मीधर बाजपेयी।

(30) प्रताप : 1913, साप्ताहिक, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : गणेश शंकर विद्यार्थी

(31) प्रभा : 1913, मासिक, खण्डवा (कानपुर), संपादक : कालूराम, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी

(32) श्री शारदा : 1916, मासिक, जबलपुर, संपादक : नर्मदा प्रसाद मिश्र, द्वारिका प्रसाद मिश्र, सालग्राम द्विवेदी, संरक्षक : सेठ गोविन्द दास; छायावाद युग का श्रेष्ठ पत्र, इसने 1920 में छायावाछ संबंधी लेखमाला प्रकाशित कर छायावाद को सर्वप्रथम मान्यता प्रदान की।

AJAY KUMAR

(33) कर्मवीर : 1919, जबलपुर, साप्ताहिक, संपादक : माखनलाल चतुर्वेदी

(34) चाँद : 1920, साप्ताहिक (बाद में मासिक), प्रयाग, संपादक : रामरख सहगल, चंडीप्रसाद, महादेवी वर्मा

(35) हिंदी नवजीवन : 1921, साप्ताहिक, अहमदाबाद, संपादक : महात्मा गाँधी

(36) समन्वय : 1922, मासिक, कलकत्ता, माधवानंद के संपादकत्व में आरंभ, बाद में 'निराला' द्वारा संपादन

(37) माधुरी : 1922, लखनऊ, संपादक : प्रेमचंद

(38) मतवाला : 1923, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : 'निराला'

(39) वीणा : 1927, मासिक, श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य, इन्दौर, प्रथम संपादक : पंडित अम्बिका प्रसाद, वर्तमान संपादक : विनायक पाण्डेय त्रिपाठी, हिन्दी में निकलनेवाली पत्रिकाओं में सबसे प्राचीन पत्रिका

(40) विशाल भारत : 1928, मासिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : बनारसीदास चतुर्वेदी, 'अज्ञेय', श्रीराम शर्मा

(41) सुधा : 1929, मासिक, लखनऊ, संपादक : दुलारेलाल भार्गव, 'निराला'

(42) हंस : 1930, मासिक, बनारस, संपादक : प्रेमचंद

(43) हिन्दुस्तानी : 1931, त्रैमासिक, इलाहबाद, संपादक : रामचंद्र टंडन; हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद का मुखपत्र।

(44) जागरण : 1932, साप्ताहिक, बनारस, प्रेमचंद, छायावाद का घोर समर्थक पत्र

AJAY KUMAR

(45) भारत : 1933, अर्द्ध साप्ताहिक, इलाहाबाद से प्रकाशित, संपादक : नंददुलारे वाजपेयी

(46) साहित्य-संदेश : 1937, मासिक, आगरा, संपादक : बाबू गुलाबराय

(47) रूपाभ : 1938, मासिक पत्र, संपादक : पंत

(48) हिन्दी अनुशीलन : 1943, त्रैमासिक, प्रयाग, संपादक : धीरेन्द्र वर्मा; भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग का मुख पत्र।

(49) प्रतीक : 1947, द्विमासिक, इलाहाबाद, संपादक : 'अज्ञेय'

(50) कल्पना : 1949, द्विमासिक, हैदराबाद, संपादक : आर्येन्द्र शर्मा

(51) धर्मयुग : 1950, साप्ताहिक, बंबई, संपादक : धर्मवीर भारती

(52) आलोचना : 1951, त्रैमासिक, दिल्ली, संपादक : शिवदान सिंह चौहान, चार सदस्यीय संपादकमंडल (धर्मवीर भारती, रघुवंश, व्रजेश्वर वर्मा व विजयदेव नारायण साही), नामवर सिंह

(53) वसुधा : 1953, मासिक, जबलपुर, संपादक : राजेश्वर प्रसाद गुरु, हरिशंकर परसाई; प्रलेस का मुखपत्र मुक्तिबोध की रचनाएँ पहली बार इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई।

(54) नये पत्ते : 1953, इलाहाबाद, संपादक : लक्ष्मीकान्त वर्मा

(55) नयी कविता : 1954, अर्द्धवार्षिक, इलाहाबाद, संस्थापक-संपादक : जगदीश गुप्त

(56) ज्ञानोदय : 1955, मासिक, कलकत्ता, संपादक : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

(57) निकष : 1956, साप्ताहिक, इलाहाबाद, संपादक : धर्मवीर भारती

(58) कृति : 1958, दिल्ली, संपादक : नरेश मेहता, श्रीकांत वर्मा

(59) समालोचक : 1958, मासिक पत्र, आगरा से प्रकाशित, संपादक : रामविलास शर्मा

(60) पहल : 1960, त्रैमासिक, जयपुर, संपादक : ज्ञानरंजन

(61) क ख ग : 1963, त्रैमासिक, इलाहबाद, संपादक : रघुवंश

(62) माध्यम : 1964, मासिक, प्रयाग/इलाहाबाद, संपादक : बालकृष्ण राव।

(63) दिनमान : 1965, साप्ताहिक, दिल्ली, संपादक : रघुवीर सहाय

(64) संचेतना : 1967, त्रैमासिक, दिल्ली, संपादक : महीप सिंह; उच्च स्तरीय लघु पत्र।

(65) समीक्षा : 1968, त्रैमासिक (बाद में मासिक), पटना, संपादक : देवेन्द्र नाथ शर्मा, गोपाल राय।

(66) कथा : 1972, त्रैमासिक (बाद में मासिक), इलाहाबाद, संपादक : मार्कण्डेय

(67) पूर्वग्रह : 1974, मासिक, भोपाल, संपादक : अशोक बाजपेयी

(68) साक्षात्कार : 1976, त्रैमासिक, भोपाल, संपादक : ज्ञानी; म० प्र० साहित्य परिषद, भोपाल का मुखपत्र

AJAY KUMAR

(69) दस्तावेज : 1978, गोरखपुर, संपादक :विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

(70) अभिप्राय : 1981, इलाहाबाद, संपादक : राजेन्द्र कुमार

(71) समकालीन जनमत : 1981, पटना/इलाहाबाद, संपादक : रामजी राय।

(72) वर्तमान साहित्य : 1984, मासिक, इलाहबाद, संपादक : विभूति नारायण

(73) हंस (पुनर्प्रकाशन) : 1986, मासिक, दिल्ली, संपादक : राजेन्द्र यादव

(74) वागर्थ : जून 1995, मासिक, कलकत्ता, संपादक : प्रभाकर श्रोत्रिय।

(75) साहित्य अमृत : अगस्त 1995, मासिक, नई दिल्ली, संपादक : पं० विद्यानिवास मिश्र

(76) कथादेश : 1997, मासिक, दिल्ली, संपादक : हरि नारायण

(77) तद्भव : मार्च 1999, लखनऊ, संपादक : अखिलेश

(78) कसौटी : अप्रैल-जून 1999, त्रैमासिक, पटना, संपादक : नंदकिशोर नवल।

(79) बहुवचन : अक्तू-दिसम्बर 1999, त्रैमासिक, वर्धा, संपादक : अशोक बाजपेयी; महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का पत्र।

(80) कथाक्रम : 2000, त्रैमासिक, लखनऊ, संपादक : शैलेन्द्र सागर

AJAY KUMAR

(81) परख :2000, इलाहाबाद, संपादक : कृष्ण मोहन

(82) संधान : अप्रैल-जून 2001, त्रैमासिक, इलाहाबाद/दिल्ली, संपादक : लाल बहादुर वर्मा

(83) पुस्तक वार्ता : 2001, द्वैमासिक, वर्धा, संपादक : राकेश श्रीमाल; महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीयहिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का पत्र।

(84) नया ज्ञानोदय : 2002, मासिक, नई दिल्ली, संपादक : रवीन्द्र कालिया; भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली का पत्र।

(85) वाक् : 2007, त्रैमासिक, नई दिल्ली, संपादक : सुधीश पचौरी।

(86) पाखी : सितम्बर 2008, मासिक, नोएडा (उ० प्र०), संपादक : अपूर्व जोशी।

(87) पुस्तक संस्कृति : जनवरी-मार्च 2016, त्रैमासिक, नई दिल्ली से बलदेव भाई शर्मा, एन० बी० टी० नई दिल्ली की पत्रिका

.....

AJAY KUMAR

# प्रमुख स्थापनाएँ

| | |
|---|---|
| फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता | 4 मई, 1800 ई० |
| कवितावर्धिनी सभा, काशी | 1870 ई० (संस्थापक-भरतेन्दु हरिश्चन्द्र) |
| हिन्दी (भाषा) संवर्द्धिनी सभा, अलीगढ़ | 1874 ई० (संस्थापक-भरतेन्दु मंडल के एक सदस्य बाबू तोताराम वर्मा) |
| हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा, प्रयाग | 1884 ई० |
| नागरी प्रचारिणी सभा, काशी | 16 जुलाई, 1893 ई० (संस्थापक-श्याम सुंदर दास, राम नारायण मिश्र व शिव कुमार सिंह) |
| सरस्वती (पत्रिका), काशी (बाद में इलाहाबाद से प्रकाशन) | 1900 ई० (संस्थापक-चिंतामणि घोष) |
| हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग | 1910 ई० (प्रथम सभापति-मदन मोहन मालवीय) |
| दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार संस्था, मद्रास | 1915 ई० (संस्थापक-महात्मा गाँधी) |
| अखिल भारतीय संगीत परिषद | 1919 ई० |
| प्रगतिशील लेखक संघ (प्रलेस) | 9 अप्रैल, 1936 ई० (प्रथम अधिवेशन-लखनऊ, प्रथम सभापति-प्रेमचंद) |
| इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन (IPTA) | 25 मई, 1942 ई० |
| परिमल, इलाहाबाद (नये लेखकों की संस्था) | 10 दिसम्बर, 1944 ई० (संस्थापक-डॉ० रघुवंश, लक्ष्मीकांत वर्मा, विजयदेव नारायण साही, धर्मवीर भारती व जगदीश गुप्त) प्रलेसं के जवाब में स्थापित संस्था) |
| संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली | 28 जनवरी, 1953 ई० (भारत सरकार द्वारा) |
| साहित्य अकादमी, नई दिल्ली | 12 मार्च, 1954 ई० (भारत सरकार द्वारा) |
| राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD), नई दिल्ली | 1959 ई० |
| केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ० प्र०) | 1962 ई० (भारत सरकार द्वारा) |
| जनवादी लेखक संघ (जलेस), नई दिल्ली | फरवरी, 1982 ई० |
| जन संस्कृति मंच (जसम), नई दिल्ली | 26 अक्तुम्बर, 1985) ई० |
| महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) | 1997 ई० |

AJAY KUMAR

# प्रमुख वाद

## संस्कृत काव्यशास्त्र

| वाद | प्रवर्तक |
|---|---|
| रस-संप्रदाय | भरत मुनि |
| अलंकार-संप्रदाय | भामह, मम्मट |
| रीति-संप्रदाय | दण्डी, वामन |
| ध्वनि-संप्रदाय | आनंदवर्धन |
| वक्रोक्ति-संप्रदाय | कुन्तक |
| औचित्य-संप्रदाय | क्षेमेन्द्र |

## हिन्दी काव्यशास्त्र

| | |
|---|---|
| रीतिवाद | केशवदास (शुक्ल के अनुसार चिंतामणि) |
| स्वच्छंदतावाद | श्रीधर पाठक |
| छायावाद | जय शंकर प्रसाद |
| हालावाद | हरिवंश राय 'बच्चन' |
| प्रयोगवाद | 'अज्ञेय' |
| प्रपद्यवाद या नकेनवाद | नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश |
| मांसलवाद | रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' |
| कैप्सूलवाद | ओंकार नाथ त्रिपाठी |

## पाश्चात्य काव्यशास्त्र

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| औदात्यवाद | लोंजाइनस (3 री सदी ई०) |
| अस्तित्ववाद | सॉरेन कीर्कगार्द (1813-55) |
| मार्क्सवाद | कार्ल मार्क्स (1818-83) |
| मनोविश्लेषणवाद | फ्रायड (1856-1939 ई०) |
| प्रतीकवाद | जीन मोरियस (1856-1910) |
| अभिव्यंजनावाद | बेनदेतो क्रोचे (1866-1952) |
| बिम्बवाद | टी० ई० ह्यूम (1883-1917 |

.....

AJAY KUMAR

# प्रमुख दर्शन

| दर्शन | प्रवर्तक |
|---|---|
| सांख्य | कपिल |
| योग | पतंजलि |
| न्याय | अक्षपाद गौतम |
| वैशेषिक | उलूक कणद |
| मीमांसा/पूर्व-मीमांसा | जैमिनी |
| वेदांत/उत्तर मीमांसा | बादरायण |
| लोकायत/बार्हस्पत्य | चार्वाक (बृहस्पति का शिष्य) |
| बौद्ध/क्षणिकवाद | गौतम बुद्ध |
| जैन/स्यादवाद | महावीर |
| अद्वैत मत | शंकराचार्य (भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाला) |
| विशिष्टाद्वैत मत (श्री संप्रदाय) | रामानुज आचार्य (भक्ति आंदोलन का प्रारंभिक प्रतिपादक |
| द्वैताद्वैत/ भेदाभेद मत (सनकादि/रसिक संप्रदाय) | निम्बार्क आचार्य |
| द्वैत मत (ब्रह्म संप्रदाय) | मध्व आचार्य |
| शुद्धाद्वैत मत (रूद्र संप्रदाय) | विष्णु स्वामी |
| पुष्टिमार्ग/शुद्धाद्वैत मत (रूद्र संप्रदाय) | वल्लभ आचार्य |
| अचिंत्यभेदाभेद मत (गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय) | चैतन्य |
| राधा वल्लभ संप्रदाय | हित हरिवंश |
| रामावत/ रामानंदी संप्रदाय | रामानंद |
| कबीर पंथी संप्रदाय | कबीर |
| सिख मत (नानक पंथी संप्रदाय) | नानक |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| उदासी संप्रदाय | श्रीचंद (गुरु नानक के पुत्र) |
| बिश्नुई संप्रदाय | जंभनाथ |
| हरिदासी (सखी) संप्रदाय | स्वामी हरिदास |

.....

AJAY KUMAR

# प्रमुख उपनाम

| मूल नाम | उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम |
|---|---|
| बाल्मीकि | आदि कवि |
| स्वयंभू | अपभ्रंश का बाल्मीकि |
| सरहपा | हिन्दी का प्रथम कवि |
| अमीर खुसरो | हिन्दुस्तान की तूती/हिन्द-इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रतिनिधि |
| विद्यापति | मैथिल कोकिल/अभिनव जयदेव |
| असाइत | प्रथम सूफी कवि |
| मलिक मुहम्मद | जायसी |
| सूरदास | अष्टछाप का जहाज/पुष्टिमार्ग का जहाज/खंजन नयन/भावाधिपति/वात्सल्य रस सम्राट |
| नंददास | जड़िया कवि |
| सैयद इब्राहिम | रसखान |
| तुलसीदास | कवि शिरोमणि/मानस का हंस/लोक नायक/हिन्दी का जातीय कवि |
| तुलसी और गंग | सुकविन के सरदार |
| अब्दुर्रहीम 'खानेखाना' | रहीम |
| नरहरि बंदीजन | महापात्र |
| महेश दास | ब्रह्म/बीरबल |
| केशवदास | कठिन काव्य का प्रेत |
| मतिराम | पुराने पंथ के पथिक |
| घनानंद | प्रेम की पीर का कवि/साक्षात रसमूर्ति/जबाँदानी का दावा रखनेवाला कवि |
| भिखारीदास | दास |
| सैयद गुलाम नबी | रसलीन |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| महाराज सावंत सिंह | नागरीदास |
| सदासुख लाल | नियाज |
| जगन्नाथ दास | रत्नाकर |
| राजा शिव प्रसाद | सितारे-हिन्द/भारतेन्दु के विद्यागुरु |
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | हिन्दी नवजागरण का अग्रदूत/नवयुग के अग्रदूत/हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता/रसा |
| बदरी नारायण चौधरी | प्रेमघन |
| महावीर प्रसाद द्विवेदी | भुजंगभूषण भट्टाचार्य/सुकवि किंकर/कल्लू अल्हइत/नियम नारायण शर्मा |
| नाथूराम शर्मा | कविता-कामिनी कांत/भारतेन्दु-प्रज्ञेन्दु/साहित्य-सुधाकर/शंकर |
| अयोध्या सिंह उपाध्याय | कवि सम्राट/हरिऔध |
| राय देवी प्रसाद | पूर्ण |
| गया प्रसाद शुक्ल | स्नेही/त्रिशूल |
| मैथलीशरण गुप्त | प्रथम राष्ट्रकवि/दददा |
| बाल मुकुंद गुप्त | शिवशंभु |
| लाला भगवानदीन | दीन |
| सत्य नारायण | कविरत्न |
| जयशंकर प्रसाद | झारखण्डी/कलाधर/आधुनिक कविता के सुमेरु |
| सूर्यकांत त्रिपाठी | निराला/महाप्राण |
| सुमित्रा नंदन पंत | प्रकृति का सुकुमार कवि/गोसाई दत्त/साईदा/नन्दिनी/एक निहत्था/ सुधाकर प्रिय/रावणार्यनुज/मोती/नंदनजी/नयन/लक्ष्मण/मुकुल |
| महादेवी वर्मा | आधुनिक युग की मीरा |
| माखन लाल चतुर्वेदी | एक भारतीय आत्मा |
| मोहन लाल महतो | वियोगी |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| जनार्दन प्रसाद झा | द्विज |
| वैद्यनाथ मिश्र | नागार्जुन/यात्री/जनकवि |
| त्र्यंबक वीर राघवाचार्य | रांगेय राघव |
| रामधारी सिंह | दिनकर |
| बालकृष्ण शर्मा | नवीन |
| शिव मंगल सिंह | सुमन |
| गोपाल शरण सिंह | नेपाली |
| हरिवंश राय बच्चन | हालावादी कवि |
| सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन | अज्ञेय/कठिन गद्य का प्रेत/कुट्टि चातन |
| नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश (नाम के आदि अक्षर न के न से बनाया गया नामकरण) | नकेन |
| शमशेर बहादुर सिंह | कवियों का कवि |
| सुदामा पांडे | धूमिल |
| कुमार विकल | धूम्रधर्मी कविताओं का कवि |
| धनपत राय | प्रेमचन्द्र/उपन्यास सम्राट/कहानी सम्राट/कलम का सिपाही/कलम का मजदूर/भारत का मैक्सिम गोर्की |
| वृंदावन लाल वर्मा | बुंदेलखंड का चंदबरदाई |
| शिव पूजन सहाय | शिव |
| पाण्डेय बेचन शर्मा | उग्र |
| उपेन्द्र नाथ | अश्क |
| रामेश्वर शुक्ल | अंचल/मांसलवादी |
| विश्वंभर नाथ शर्मा | कौशिक |
| चण्डी प्रसाद | हृदयेश |
| फणीश्वर नाथ | रेणु |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| चन्द्रधर शर्मा | गुलेरी |
| राजेन्द्र बाला घोष | बंग महिला |
| शरतचंद्र | आवारा मसीहा |
| हरिकृष्ण | प्रेमी |
| विद्यानिवास मिश्र | भ्रमरानंद/परंपरा जीवी |
| वियोगी हरि | गद्य-काव्य का लेखक |
| गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र व शुक्रदेव बिहारी मिश्र | मिश्रबंधु |
| रामचंद्र शुक्ल | मुनि मार्ग के हिमायती |
| नंद दुलारे बाजपेयी | सौष्ठववादी/स्वच्छंदतावादी आलोचक |
| डॉ० नगेन्द्र | रसवादी आलोचक |
| नेमिचन्द्र जैन | आलोचकों का आलोचक |
| किशोरीदास बाजपेयी | हिन्दी के पाणिनी |
| राम विलास शर्मा | अगिया बैताल/निरंजन |
| दुष्यंत कुमार | हिन्दी गजलों के राजकुमार |

.....

AJAY KUMAR

# प्रमुख तिथि/वर्ष

ईसा पूर्व (ई० पू०)

750 लौकिक संस्कृत का क्रमिक विकास।

500 बौद्ध व जैन प्राकृत-ग्रंथो का उद्भव (पूर्वी भारत) ।

400 पाणिनी द्वारा 'अष्टाध्यायी' (संस्कृत व्याकरण) का प्रचलन (पश्चिमी भारत), जिसमें वैदिक संस्कृत से पाणिनीय संस्कृत (लौकिक संस्कृत) में स्वरूप परिवर्तन की झलक मिलती है।

322 मौर्य सम्राटों के प्राकृत (पालि) भाषा में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि के शिलालेख।

ईसवी (ई०)

320 गुप्त लिपि का उद्भव (ब्राह्मी की उत्तरी शैली से) जोकि 5 वीं सदी ई० तक प्रयुक्त होती रही।

400 कालिदास प्रणीत ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम' में अपभ्रंश का प्रयोग।

550 वल्लभी नरेश धरसेन के शिलालेख में अपभ्रंशसाहित्य (विशेषतः प्रबंध रचना) का उल्लेख।

769 सिद्ध कवि सरहपा (जो हिन्दी के सर्वप्रथम कवि माने जाते है) द्वारा 'दोहाकोश' की रचना।

779 'कुवलयमालाकहा' में उद्योतन सूरि द्वारा प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग।

933 जैन कवि देवसेन द्वारा 'श्रावकाचार' (जिसे हिन्दी का प्रथम ग्रंथ माना जाता है) की रचना।

1088-1172 'शब्दानुशासन' के रचयिता आचार्य हेमचन्द्र का जीवन-काल।

1100 प्राचीन नागरी लिपि का उद्भव (15 वीं-16 वीं सदी से आधुनिक नागरी लिपि का उद्भव)।

1168-92 'पृथ्वीराजरासो' के रचयिता चंदरबरदाई का जीवन काल।

1252-1325 अमीर खुसरो का जीवन-काल। खुसरो ने अपनी भाषा के लिए 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग किया।

1350-1450 मैथिल कोकिल विद्यापति का जीवन काल।

1354 ब्रजभाषा के प्रथम ग्रंथ 'प्रद्युम्नचरित' (सुधीर अग्रवाल) की रचना।

1368-1468 आचार्य रामानंद का जीवन-काल। आचार्य रामानंद के प्रभाव से सगुण भक्ति काव्य धारा का आरंभ (1450)।

AJAY KUMAR

1370 सूफी कवि असाइत द्वारा 'हंसावली' की रचना से सूफी प्रेमगाथा काव्य धारा का आरंभ।

1379 अवधी की प्रथम कृति 'चंदायन' या 'लोरकहा' (मुल्ला दाउद) की रचना।

1398-1518 संत कवि कबीर का जीवन-काल। कबीर की रचनाओं से निर्गुण भक्ति काव्य धारा का आरंभ।

1400-79 अपभ्रंश काव्य परम्परा के अंतिम कवि रयधू का जीवन काल।

1479-1582 'सूरसागर' के रचयिता सूरदास का जीवन-काल।

1492-1542 'पद्मावत' के रचयिता जायसी का जीवन-काल।

1498-1562 मीराबाई का जीवन-काल।

1532-1623 'रामचरितमानस' महाकाव्य के रचयिता तुलसीदास का जीवन-काल। 1555-1617 केशवदास का जीवन काल।

1580 बुरहानुद्दीन जानम की 'कलमीत-उल-हकायत' प्रारंभिक दक्खिनी साहित्य रचना।

1585 भक्त कवि नाभादास कृत 'भक्तमाल' (हिन्दी भक्त कवियों का परिचयात्मक ग्रंथ) : हिन्दी की प्रथम जीवनी।

1595-1663 'बिहारी सतसई' के रचयिता बिहारी का जीवन काल।

1604 'आदि ग्रंथ' में सिक्खों के 5 वें गुरु, गुरु अर्जुनदेव द्वारा अनेक कवियों की रचनाओं का संग्रह।

1609-85 चिंतामणि का जीवन-काल।

1623 जटमल रचित 'गोरा बादल की कथा' : खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रंथ।

1613-1715 भूषण का जीवन-काल।

1617-93 मतिराम का जीवन-काल।

1641 बनारसीदास रचित 'अर्धकथानक' : हिन्दी की प्रथम आत्मचरित।

1643 आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रीति-काव्य परंपरा का प्रारंभ।

1645 मुगल बादशाह शाहजहाँ द्वारा दिल्ली में लाल किले का निर्माण। स्थानीय भाषा को 'उर्दू' कहा जाने लगा।

1650 सेनापति का रचना-काल।

1667-1707 वली दक्कनी का जीवन-काल। दिल्ली के अभिजात वर्ग में फारसी का स्थान उर्दू ने लेना प्रारंभ किया, जिसे साधारणतः सौदा, मीर आदि द्वारा 'हिन्दी' कहा गया।

AJAY KUMAR

1673-1767 देव का जीवन-काल।

1689-1757 घनानंद का जीवन-काल।

1750 भिखारीदास का रचना-काल।

1753-1833 पद्माकर का जीवन-काल।

1796 प्राचीनतम मुद्राक्षर आधारित देवनागरी लिपि में मुद्रण (जॉन गिलक्राइस्ट, 'हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण', कलकत्ता) ।

1803 फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के लिए आधुनिक हिन्दी गद्यकार लल्लूजी लाल प्रणीत 'प्रेमसागर' (श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कंध का खड़ी बोली गद्य रूपान्तर) का प्रकाशन।

1813-46 त्रावणकोर के महाराजा स्वाति तिरुनल राम वर्मा का जीवन-काल। वर्मा ने दक्षिण भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी में पद्य रचना की।

1826 कलकत्ता से हिन्दी के प्रथम समाचार-पत्र 'उदंत मार्तड' (संपादक : युगल किशोर शुक्ल) का प्रकाशन आरंभ (30 मई) । 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1833-86 गुजराती के महाकवि नर्मद का जीवन-काल। नर्मद ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1837-81 ओम जय जगदीश हरे' (भजन) के रचनाकार श्रद्धाराम फुल्लौरी का जीवन-काल।

1839, 1847 फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी द्वारा फ्रांसीसी भाषा में हिन्दी साहित्य का इतिहास ('इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दोई ऐ ऐन्दुस्तानी') दो भागों में लिखा गया।

1850 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग उस भाषा के लिए समास हो गया जिसे अब 'उर्दू' कहा जाता है।

1850-85 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन-काल ['भारत दुर्दशा' (नाटक) : 1876, 'अंधेर नगरी' (नाटक) : 1881, नाटक (आलोचना) : 1883]

1854 कलकत्ता से प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' (संपादक : श्यामसुंदर सेन) का प्रकाशन आरंभ।

1856-94 प्रताप नारायण मिश्र का जीवन-काल ['भारत दुर्दशा' (नाटक) : 1886] ।

1864-1938 महावीर प्रसाद द्विवेदी का जीवन-काल ['सरस्वती पत्रिका का संपादन : 1903-20, 'संपत्तिशास्त्र' (अर्धशास्त्र विषयक ग्रंथ) : 1907] ।

1873 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' का प्रकाशन आरंभ (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' के प्रकाशक वर्ष को एक महत्त्वपूर्ण घटना माना और अपने इतिहास-जर्नल 'काल चक्र' में लिखा : 'हिन्दी नई चाल में ढली, सन् 1873 ई० में।)

1875 स्वामी दयानंद के हिन्दी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन।

1875-1945 श्यामसुंदर दास का जीवन-काल ('साहित्यालोचन' : 1912 'हिन्दी कोविद रत्नमाला'- पहला भाग : 1909, दूसरा भाग : 1914)

1877 श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती नामक उपन्यास रचा। 'भाग्यवती' का प्रकाशन दस वर्ष बाद 1887 में।

1880-1936 प्रेमचंद का जीवन-काल ['सेवासदन' (उपन्यास) : 1918, 'गोदान' (उपन्यास) : 1936]

1882 हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास 'परीक्षा गुरु' (लाला श्रीनिवास दास) का प्रकाशन।

1884-1941 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जीवन-काल [हिन्दी साहित्य का इतिहास : 1929, चिंतामणि- भाग एक : 1939]

1886-1964 मैथिली शरण गुप्त का जीवन-काल ['भारत भारती' (काव्य) : 1912, 'साकेत' (काव्य) : 1932, 'यशोधरा' (काव्य) : 1962]।

1888-1963 बाबू गुलाब राय का जीवन-काल ['मेरी असफलताएँ (आत्मकथा) : 1941]।

1889-1937 जयशंकर प्रसाद का जीवन-काल ['स्कंदगुप्त' (नाटक) : 1932, 'कामयानी' (काव्य) : 1937]।

1889-1968 माखनलाल चतुर्वेदी ['हिमकिरीटनी' (काव्य) : 1941, 'हिमतरंगिनी' (काव्य) : 1948] ।

1889-1969 वृंदावन लाल वर्मा का जीवन-काल [झांसी की रानी (उपन्यास) : 1946] ।

1891 'चन्द्रकांता'- उपन्यास (बाबू देवकी नंदन खत्री) का प्रकाशन।

1893 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की स्थापना (संस्थापकत्रयी : बाबू श्याम सुंदर दास, पं० रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह)

1893-1963 राहुल सांस्कृत्यायन का जीवन-काल।

1899-1961 निराला का जीवन-काल ['अनामिका' (काव्य) : 1923, परिमल (काव्य) : 1929, गीतिका (काव्य) : 1936, तुलसीदास (काव्य) : 1938, कुकुरमुत्ता (काव्य) : 1942, अणिमा (काव्य) : 1943, नये पत्ते (काव्य) : 1946] ।

1900-77 सुमित्रनंदन पंत का जीवन-काल ['उच्छवास' (काव्य) : 1920, 'युगांत (काव्य) : 1936, 'ग्राम्या' (काव्य) : 1940, 'कला और बूढा चाँद' (काव्य) : 1959, 'चिदम्बरा' (काव्य) : 1959]

1900 प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन आरंभ। (संपादक : श्यामसुंदरदास व 4 अन्य) । 'सरस्वती' पत्रिका में किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती' का प्रकाशन ('इंदुमती' हिन्दी की पहली कहानी मानी जाती है। )।

1902-82 इलाचंद्र जोशी का जीवन-काल

1903-76 यशपाल का जीवन-काल ['दिव्या' (उपन्यास) : 1945, 'झूठा सच' (उपन्यास)- प्रथम भाग : 1958, द्वितीय भाग : 1960]

1903-81 भगवती चरण वर्मा का जीवन-काल ['चित्रलेखा' (उपन्यास) : 1934]

1905 'चंद्रकाता संतति'- उपन्यास (बाबू देवकीनंदन खत्री) का प्रकाशन।

1905-88 जैनेन्द्र कुमार का जीवन-काल ['त्यागपत्र' (उपन्यास) : 1937] ।

1906-67 नंददुलारे बाजपेयी का जीवन-काल।

1907-87 महादेवी वर्मा का जीवन-काल।

1907-89 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जीवन-काल ['हिन्दी साहित्य की भूमिका' : 1940, 'कबीर' : 1940]

1907-2003 हरिवंश राय 'बच्चन' का जीवन-काल ['मधुशाला' (काव्य) : 1935]

1908-74 रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन-काल ['कुरुक्षेत्र' (काव्य) : 1940, 'रश्मिरथी' (काव्य) : 1952, 'उर्वशी' (काव्य) : 1961; 'संस्कृति के चार अध्याय' (निबंध) : 1956]

1909 'कविता क्या है ?' -निबंध (रामचन्द्र शुक्ल) का 'सरस्वती' में प्रकाशन।

1910-96 उपेन्द्रनाथ अश्क का जीवन-काल।

1910-98 नागार्जुन का जीवन-काल।

1911-87 'अज्ञेय' का जीवन-काल [शेखर : एक जीवनी (उपन्यास)- प्रथम भाग : 1941, द्वितीय भाग : 1944, 'कितनी नावों में कितनी (काव्य) : 1967]

1912-2009 विष्णु प्रभाकर का जीवन-काल ['आवारा मसीहा' (जीवनी ) : 1974, 'अर्द्धनारीश्वर' (उपन्यास): 1992]

1912-2000 राम विलास शर्मा का जीवन-काल [निराला की साहित्य साधना (आलोचना) -प्रथम भाग: 1969, द्वितीय भाग: 1972, तृतीय भाग: 1976]

1913 दादा साहब फाल्के ने हिन्दी चित्रपट के इतिहास में 'राजा हरिश्चन्द्र' नामक प्रथम हिन्दी फ़िल्म (चलचित्र) का निर्माण किया।

1914 खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' (अयोध्या सिंह अध्याय 'हरिऔध') का प्रकाशन।

1915 गाँधीजी ने 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना मद्रास में की। 'उसने कहा था'- कहानी (चंद्रधर शर्मा गुलेरी) का 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशन।

1916-90 अमृत लाल नागर का जीवन-काल।

1916 'जुही की कली'- कविता (निराला) का प्रकाशन।

1917-64 मुक्तिबोध का जीवन-काल ['चाँद का मुँह टेढ़ा है' (काव्य) : 1964] ।

1918 मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषणा की हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।

1921 'हिंदी व्याकरण' (पं० कामतां प्रसाद गुरु) का प्रकाशन।

1921-77 फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जीवन-काल ['मैला आँचल' (उपन्यास) : 1954]

1922-90 रघुवीर सहाय का जीवन-काल ['आत्म हत्या के विरुद्ध' (काव्य) : 1967] ।

1925-2011 श्रीलाल शुक्ल का जीवन-काल ['राग दरबारी' (उपन्यास) : 1968] ।

1925-72 मोहन राकेश का जीवन-काल [आषाढ़ का एक दिन (नाटक) : 1958, 'अंधेरे बंद कमरे' (उपन्यास) : 1961]

1926-97 धर्मवीर भारती का जीवन-काल [गुनाहों का देवता (उपन्यास) : 1949, 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' (उपन्यास) : 1952, अंधा युग (नाटक) : 1954]

1927 नामवर सिंह का जन्म ['छायावाद' (आलोचना) : 1954, 'कविता के नये प्रतिमान' (आलोचना) : 1968, 'दूसरी परंपरा की खोज' (आलोचना) : 1982, 'वाद-विवाद-संवाद' (आलोचना) : 1989]

1929-2005 निर्मल वर्मा का जीवन-कॉल ['वे दिन (उपन्यास) : 1964] ।

1929 'हिन्दी शब्द सागर' (संपादकत्रयी : श्याम सुंदर दास, रामचन्द्र शुक्ल, रामचन्द्र वर्मा) का प्रकाशन।

1930 का दशक हिन्दी टाइपराइटर का विकास (शैलेन्द्र मेहता)।

1931 हिन्दी की पहली बोलती फ़िल्म 'आलम आरा' (निर्माता : आर्देशिर ईरानी) पर्दे पर आई।

1934 'चित्रलेखा'- उपन्यास (भगवती चरण वर्मा) का प्रकाशन।

1935 'मधुशाला'- काव्य ('बच्चन') का प्रकाशन। 'सरोज स्मृति'- कविता (निराला) का प्रकाशन। मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री की हैसियत से सी० राजागोपालाचारी ने राज्य में हिंदी शिक्षा को अनिवार्य किया।

1936 'गोदान'- उपन्यास (प्रेमचंद) का प्रकाशन। 'राम की शक्ति पूजा'- कविता (निराला) का प्रकाशन। 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना।

1937 'कामायनी'- काव्य (प्रसाद) का प्रकाशन वर्ष। 'त्यागपत्र'- उपन्यास (जैनेन्द्र कुमार) का प्रकाशन।

1943 'तार सप्तक' का प्रकाशन।

1944 'परिमल' की स्थापना।

1949 14 सितम्बर, 1949 ई० को संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1950 26 जनवरी, 1950 ई० को भारत का संविधान लागू। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान (अनुच्छेद 120, 210, 343 से 351 तक एवं 8 वीं अनुसूची) लागू।

1951 'आलोचना' (पत्रिका) का प्रकाशनारंभ। 'दूसरे सप्तक' का प्रकाशन।

1954 'मैला आँचल'- उपन्यास (रेणु) का प्रकाशन, 'अंधा युग'- नाटक (धर्मवीर भारती) का प्रकाशन।

1955 प्रथम राजभाषा आयोग/बाल गंगाधर (बी० जी०) खेर आयोग का गठन (7 जून) ।

1957 प्रथम राजभाषा समिति/गोविन्द बल्लभ (जी० बी०) पंत समिति का गठन (16 नवम्बर) ।

1958 'हिन्दी शब्दानुशासन' (पं० किशोरीदास बाजपेयी) का प्रकाशन।

1960 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली की स्थापना।

1962 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ० प्र०) की स्थापना।

1963 राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित (1967 में संशोधन) ।

1966 'आधा गाँव'- उपन्यास (राही मासूम रजा) का प्रकाशन।

1967 केन्द्रीय हिन्दी समिति, नई दिल्ली की स्थापना।

1968 संसद द्वारा संकल्प (resolution) पारित। तदनुसार त्रिभाषा सूत्र (Three-Language Formula) लागू। 'राग दरबारी'- उपन्यास (श्रीलाल शुक्ल) का प्रकाशन।

1972 'संसद से सड़क तक'- काव्य (धूमिल) का प्रकाशन।

1975 नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन (10 जनवरी से 14 जनवरी तक); प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' (World Hindi Day) के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय का अधीनस्थ विभाग) की स्थापना। 'साये में धूप'- हिन्दी गजल संग्रह (दुष्यन्त कुमार) का प्रकाशन।

1976 भारत सरकार द्वारा राजभाषा नियम पारित (यथासंशोधित, 1987) जिनमें प्रधान राजभाषा हिन्दी एवं सहराजभाषा अंग्रेजी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग हेतु नियम दिए गए हैं।

1977 संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) में हिन्दी में पहली बार अटल बिहारी बाजपेयी ने भाषण दिया (4 अक्टूबर) ।

1979 संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित किए जाने वाले सिविल सेवा (Civil Services) परीक्षा में माध्यम के रूप में अभ्यर्थियों को अंग्रेजी भाषा के स्थान पर 8 वीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं (जिनमें एक भाषा हिन्दी भी है) में से किसी एक भाषा में उत्तर देने का विकल्प मिला। (नोट : इससे पूर्व परीक्षा का माध्यम सिर्फ अंग्रेजी था।)

AJAY KUMAR

1982 'जनवादी लेखक संघ' (जलेस), नई दिल्ली की स्थापना।

1985 'जन संस्कृति मंच' (जसम), नई दिल्ली की स्थापना।

1986 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' (राम स्वरूप चतुर्वेदी) का प्रकाशन।

1996 हिन्दी के प्रथम समांतर कोश/थिसॉरस (Thesaurus)- 'समांतर कोश'- (संपादक दंपती : अरविंद कुमार व कुसुम कुमार) का प्रकाशन। 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' (बच्चन सिंह) का प्रकाशन।

1997 हिन्दी के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय- महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)- की स्थापना।

2003 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की 8 वीं अनुसूची में हिन्दी की एक बोली- मैथली- को स्थान दिया गया। मैथली, हिन्दी क्षेत्र की बोलियों में से 8 वीं अनुसूची में स्थान पाने वाली पहली बोली है।

2007 न्यूयार्क (अमेरिका) में आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन (13 जुलाई से 15 जुलाई तक) ।

2012 जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में नवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन (22 सितम्बर से 24 सितम्बर तक)।

2015 भोपाल (भारत) में दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन (10 सितम्बर से 12 सितम्बर तक)।

.....

AJAY KUMAR

# हिंदी में सर्वप्रथम

| | |
|---|---|
| अपभ्रंश के प्रथम महा कवि | स्वयंभू |
| अपभ्रंश का प्रथम कड़वक बद्ध (7 चौपाई के बाद एक दोहा का क्रम) रचना | पउम चरित्र (स्वयंभू) |
| अपभ्रंश के प्रथम ऐतिहासिक वैयाकरण | हेमचंद्र |
| हिंदी के प्रथम कवि | सरहपा (9वीं सदी) |
| हिंदी में चौपाई-दोहा का सर्वप्रथम प्रयोग | सरहपा |
| हिंदी की प्रथम रचना | श्रावकाचार (देवसेन कृत) |
| हिंदी साहित्य की प्रथम रचना | पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई) |
| हिंदी साहित्य का प्रथम महाकाव्य | पृथ्वीराज रासो |
| हिंदी काव्य में प्रथम बारहमासा वर्णन का प्रथम प्रयोग | बीसलदेव रासो(नरपति नाल्ह) |
| किसी भारतीय भाषा में रचित इस्लाम धर्मावलंबी कवि की प्रथम रचना | संदेश रासक (अब्दुर रहमान) |
| अवहट्ठ का सर्वप्रथम प्रयोग | विद्यापति ने कीर्ति लता में |
| हिंदी के सर्वप्रथम गीतकार | विद्यापति |
| हिंदी में सर्वप्रथम मुकरियों की शुरुआत | अमीर खुसरो ने |
| भक्ति के प्रवर्तक | रामानुज आचार्य |
| हिंदी के प्रथम सूफी कवि | असाइत |
| सूफी प्रेमाख्यान का प्रथम काव्य | हंसावली (असाइत) |
| हिंदी का प्रथम बड़ा महाकाव्य | पद्मावत (जायसी) |
| हिंदी का प्रथम वक्रोक्ति कथात्मक महाकाव्य | पद्मावत |
| हिंदी की आदि कवयित्री | मीराबाई |
| कृष्ण भक्ति काव्य का सबसे प्रसिद्ध काव्य | सूरसागर (सूरदास) |
| राम भक्ति का सबसे प्रसिद्ध काव्य | रामचरितमानस (तुलसीदास ) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| भक्तिकाल को 'हिन्दी काव्य का स्वर्ण युग' घोषित करने वाला प्रथम व्यक्ति | जॉर्ज ग्रियर्सन |
| सर्वप्रथम सतसई परंपरा का आरंभ | तुलसी सतसई (कुछ कृपाराम की 'हिततरंगिनी' को मानते हैं) |
| रीति काव्य का सर्वप्रथम ग्रंथ | हिततरंगिनी (कृपाराम) |
| खड़ी बोली में लिखित सर्वप्रथम काव्य ग्रंथ | श्रीधर पाठक द्वारा अनूदित 'एकांतवासी योगी' |
| खड़ी बोली के प्रथम स्वच्छंदतावादी कवि | श्रीधर पाठक |
| 'स्वच्छंदतावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग | श्लेगर (जर्मन आलोचक) मुकुटधर पाण्डेय (हिन्दी में) |
| खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य | प्रियप्रवास (हरिऔंध) |
| गीतिकाव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग | लोचन प्रसाद पांडेय ने 'कुसुमन माला' की भूमिका में |
| छायावाद की प्रथम कृति | 'झरना' (1918 ई०) प्रसाद |
| शुक्लानुसार छायावाद का प्रथम व प्रतिनिधि कवि | पंत |
| मुक्तछंद का प्रथम प्रयोगकर्ता | निराला ('जूही की कली' मे) |
| निराला की प्रथम कविता | जूही की कली (1916 ई०) |
| निराला की प्रथम काव्य कृति | 'जुही की कली (1918 ई०) |
| प्रसाद की प्रथम काव्य कृति | 'उर्वशी' (1909 ई०) |
| प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति | 'झरना' (1918 ई०) |
| पंत की प्रथम छायावादी काव्यकृति | 'उच्छवास' (1918 ई०) |
| महादेवी की प्रथम काव्य कृति | 'नीहार' (1930 ई०) |
| 'प्रयोगवाद' शब्द का प्रथम प्रयोग | नंददुलारे बाजपेयी |
| 'नई कविता' नाम दिया | 'अज्ञेय ने' |
| अज्ञेय की प्रथम काव्य कृति | भग्नदूत (1933 ई०) |
| हिन्दी की प्रथम दलित रचना | 'अछूत की शिकायत', रचनाकार-पटना (बिहार) के वासी हीरा डोम, प्रकाशन- 'सरस्वती' पत्रिका के सितम्बर, 1914 अंक में |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| प्रेमचन्द्र का प्रथम उपन्यास | प्रेमा अर्थात दो सखियों का विवाह,(1907 ई०) |
| | (हमखुर्मा व हम सवाब का हिन्दी रूपान्तर) |
| हिंदी का प्रथम उपन्यास | परीक्षा गुरु (लाला श्री निवास दास कृत) |
| प्रेमचंद का मूल रूप से हिंदी में लिखित प्रथम उपन्यास | कायाकल्प (1926 ई० ) |
| जैनेंद्र का प्रथम उपन्यास | परख (1929 ई०) |
| इलाचंद्र जोशी का प्रथम उपन्यास | घृणामयी (1929 ई०) |
| भगवती चरण वर्मा का प्रथम उपन्यास | चित्रलेखा (1934 ई०) |
| अज्ञेय का प्रथम उपन्यास | शेखर एक जीवनी (1941 ई०) |
| रेणु का प्रथम उपन्यास | मैला आँचल (1954 ई०) |
| निर्मल वर्मा का प्रथम उपन्यास | वे दिन (1964 ई०) |
| हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी | इंदुमती (किशोरीला) |
| हिंदी की प्रथम कहानी लेखिका | बंग महिला( राजेंद्र बाला घोष) |
| प्रसाद की प्रथम कहानी | ग्राम (1911 ई०) |
| प्रेमचंद की प्रथम कहानी | पंच परमेश्वर (1916 ई०) |
| अज्ञेय का प्रथम कहानी संग्रह | विपथगा (1937 ई०) |
| 'नयी कहानी' की प्रथम कृति | परिंदे (निर्मल वर्मा) |
| निर्मल वर्मा का प्रथम कहानी संग्रह | परिंदे (1960 ई०) |
| कमलेश्वर का प्रथम कहानी संग्रह | राजा निरबंसिया (1957 ई०) |
| हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक | नहुष (गोपाल चंद्र) |
| हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक | जानकी मंगल (शीतला प्रसाद त्रिपाठी) |
| प्रसाद का प्रथम ऐतिहासिक नाटक | राज्यश्री 1915 ई० |
| हिंदी का प्रथम एकांकी | एक घूंट (प्रसाद) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पहली सैद्धांतिक आलोचनात्मक कृति | काव्य में रहस्यवाद |
| रस विवेचन को पहली बार मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया | रामचंद्र शुक्ल ने |
| हिंदी में साधारणीकरण के संबंध में पहला चिंतन (साधारणीकरण का प्रथम प्रयोग कर्ता- भट्टनायक) | रामचंद्र शुक्ल |
| पद्य में रचित हिन्दी की प्रथम आत्मकथा | अर्द्धकथानक (1641 ई० बनारसीदास) |
| गद्य में रचित हिन्दी की प्रथम आत्मकथा | स्वचरित आत्मचरित (1879 ई०, दयानंद सरस्वती) |
| हिंदी में प्रथम जीवनी | भक्तमाल (1585 ई० नाभादास) |
| प्रथम मौलिक जीवनी लेखक | कार्तिक प्रसाद खत्री |
| हिंदी में प्रथम संस्मरण | हरिऔंध का संस्मरण (बालमुकुंद गुप्त) |
| हिंदी में प्रथम रेखाचित्र | पदम पराग (1929 ई०, पदम सिंह शर्मा) |
| हिंदी में प्रथम यात्रा-वृतांत | लंदन यात्रा (1883 ई० श्रीमती हरदेवी) |
| हिंदी में प्रथम रिपोर्ताज | लक्ष्मीपुरा (1938 ई०, शिवदान सिंह चौहान) |
| हिंदी गद्य-काव्य की प्रथम रचना | साधना (राय कृष्णदास) |
| हिंदी साहित्य इतिहास का प्रथम ग्रंथ | इस्तवार द ला लितरेच्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी (गाँर्सा-द-तासी) |
| हिन्दी साहित्येतिहास का हिन्दी भाषा में लिखा जानेवाला प्रथम ग्रंथ | शिवसिंह सरोज (शिव सिंह सेंगर) |
| हिंदी साहित्य इतिहास का प्रथम वास्तविक ग्रंथ | द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान (जॉर्ज ग्रियर्स) |
| हिंदी साहित्य के काल विभाजन व नामकरण का प्रथम प्रयास करने वाला | जॉर्ज ग्रियर्सन |
| हिंदी साहित्य इतिहास का प्रथम व्यवस्थित ग्रंथ | हिंदी साहित्य का इतिहास( रामचंद्र शुक्ल) |
| परंपरा की दृष्टि से रचित हिंदी साहित्य इतिहास का प्रथम ग्रंथ | हिंदी साहित्य की भूमिका (हजारी प्रसाद द्विवेदी) |
| साहित्य इतिहास का प्रथम मार्क्सवादी ग्रंथ कार | रामविलास शर्मा |
| खड़ी बोली (पद्य) का प्रथम प्रयोगकर्ता | अमीर खुसरो |
| खड़ी बोली की प्रथम गद्य रचना | चंद छंद बरनन की महिमा (गंग कवि) |
| खड़ी बोली में साहित्यिक स्वरूप का सर्वप्रथम प्रयोग किया | राम प्रसाद निरंजनी ने 'योगभाषा वशिष्ठ' में |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| खड़ी बोली काव्य रचना के पक्ष में आंदोलन चलाने वाले इतिहास-पुरुष | अयोध्या प्रसाद खत्री |
| किसी भारतीय द्वारा देशी भाषा में प्रकाशित प्रथम पत्र | संवाद कौमुदी(1821ई०,सं.राजा राममोहन राय) |
| प्रथम हिंदी पत्र | उदंत मार्तण्ड (30 मई 1826 ई०) |
| सर्वप्रथम हिंदी दैनिक पत्र | समाचार सुधा वर्षण (1854 ई०) |
| हिंदी की प्रथम लघु पत्रिका | नए पत्ते (लक्ष्मीकांत वर्मा) |
| हिंदी में प्रकाशित प्रथम ग्रंथावली | भारतेंदु ग्रंथावली (खड्ग विलास प्रेस, पटना) |
| हिंदी के लिए प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार | हिम तरंगिनी(माखनलाल चतुर्वेदी 1954ई० में) |
| ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिंदी साहित्यकार | पंत (चिदम्बरा, 1968 ई०) |
| ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिंदी महिला साहित्यकार | महादेवी वर्मा(यामा, 1982 ई०) |
| प्रथम व्यास सम्मान | भारत के भाषा परिवार और हिंदी(डॉ रामविलास शर्मा1991ई०) |
| प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन | नागपुर (1975 ई०) |
| एम.ए . (हिंदी) का सर्वप्रथम शिक्षण प्रारंभ हुआ | काशी हिंदू विश्वविद्यालय में (1921 ई० में ) |
| काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रथम हिंदी विभागाध्यक्ष | श्यामसुंदर दास |
| साहित्य अकादमी का प्रथम अध्यक्ष | पंडित जवाहरलाल नेहरु |
| हिंदी साहित्य परिषद का प्रथम अध्यक्ष | पुरुषोत्तम दास टंडन |
| संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) में हिंदी में भाषण देने वाला प्रथम व्यक्ति | अटल बिहारी बाजपेयी (1977 ई०) |
| हिंदी भाषा का प्रथम वैज्ञानिक इतिहास | हिंदी भाषा का इतिहास (1933 ई०, धीरेंद्र वर्मा) |
| विश्व का प्रथम व्याकरण-ग्रंथ | 'अष्टाध्यायी' (4 वीं सदी ई० पू. पाणिनी) |
| हिन्दी का प्रथम वैयाकरण | जोहन जोशुआ केटलेर [हालैण्ड निवासी केटलेर डच ईस्ट इंडिया कंपनी के एलची (राजदूत) के रूप में भारत में दो दशक (1696-1716) तक रहे; 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' (1698 ई०, डच भाषा में] |
| हिन्दी भाषा में हिन्दी का व्याकरण लिखने वाला प्रथम वैयाकरण | पादरी एम.टी. आदम ['हिन्दी भाषा का व्याकरण' |

AJAY KUMAR

(1827 ई०, हिन्दी भाषा में, कलकत्ता से प्रकाशित)]

| | |
|---|---|
| हिन्दी का प्रथम भारतीय वैयाकरण | पं. श्रीलाल (बिहारी निवासी; 'भाषा चन्द्रोदय', 1855 ई०) |
| हिन्दी के दो सर्वाधिक प्रसिद्ध वैयाकरण | पं. कामता प्रसाद गुरु('हिन्दी व्याकरण',1921 ई०;नागरी प्रचारिणी सभा,काशी से प्रकाशित) एवं पं किशोरी दास बाजपेयी ('हिन्दी शब्दानुशासन', 1958 ई०; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित) |
| विश्व का प्रथम कोशकार/शब्दाकोशकार | महर्षि यास्क ('निरुक्त', 5 वीं, सदी ई० पू.) |
| हिन्दी के प्रथम कोशकार/शब्दकोशकार | अमीर खुसरो ('खलिक-ए-बारी'- द्विभाषी कोश/फारसी-हिन्दवी कोश) |
| हिन्दी भाषा में हिन्दी का कोश/शब्दकोश संपादित करने वाला प्रथम कोशकार/ शब्दाकोशकार | पादरी एम.टी.आदम ('हिन्दी कोश', 1829 ई., कलकत्ता से प्रकाशित) |
| हिन्दी का प्रथम मौलिक कोश/शब्दकोश | 'हिन्दी शब्द सागर' (1929 ई०; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित, संपादक त्रयी; श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व आचार्य रामचन्द्र वर्मा) |
| हिन्दी का प्रथम समांतर कोश/थिसॉरस (Thesauras) | 'समांतर कोश (1996 ई.; नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक दंपति; अरविन्द कुमार व कुसुम कुमार) |
| हिन्दी का प्रथम भाषा सर्वेक्षक | अमीर खुसरो (1317 ई. में भाषा सर्वेक्षण) |
| हिन्दी का सर्वाधिक प्रसिद्ध भाषा सर्वेक्षक | जॉर्ज ए.ग्रियर्सन (1894 ई. में भाषा सर्वेक्षण का कार्य आरंभ एवं 1927 ई. में भाषा सर्वेक्षण का कार्य संपन्न, संपादित ग्रंथ का नाम : 'ए लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (भारतीय भाषा सर्वेक्षण) |
| छपाई के लिए नागरी टाइपों का निर्माण करने वाला प्रथम व्यक्ति | चार्ल्स विल्किन्स (1750-1836 ई.) |
| हिन्दी माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा देने वाली देश की पहली संस्था | गुरुकुल काँगड़, हरिद्वार |
| हिन्दी का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय | महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) |

AJAY KUMAR

| | |
|---|---|
| हिन्दी की प्रथम शोध कृति/हिन्दी साहित्य से संबद्ध प्रथम शोध कृति | डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल कृत 'निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोएट्री' (अंग्रेजी भाषा में, 1934 ई., हिन्दी में अनुवाद- 'हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय' नाम से) |
| हिन्दी भाषा से संबद्ध प्रथम शोध कृति | डॉ.धीरेन्द्र वर्मा 'ला लाँग ब्रज' (फ्रेंच भाषा में, 1935 ई., हिन्दी में अनुवाद- 'ब्रजभाषा' नाम से) |
| हिन्दी माध्यम में प्रस्तुत हिन्दी की प्रथम शोध कृति | फादर कामिल बुल्के कृत 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास (1949 ई.) |
| हिन्दी का पहला स्वतन्त्र मौलिक निबंध | राजा भोज का सपना (राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द) |
| प्राचीनतम गद्य | पद्य(चम्पू )काव्य -राउरवेळ -रोड़ा कवि |
| ब्रजभाषा गद्य की प्रथम रचना | शृंगार रस मंडन -गोंसाई विट्ठलनाथ |
| आधुनिक खड़ी बोली हिंदी गद्य का जनक | भारतेन्दु |
| हिन्दी की पहली वैज्ञानिक कहानी | चन्द्र लोक की यात्रा |
| फ्लेश बैक पद्धति आधारित प्रथम कहानी | उसने कहा था |
| नवगीत परम्परा के सूत्रधार | अज्ञेय |
| हिन्दी आलोचना के प्रवर्तक | भारतेंदु |
| हिन्दी के प्रथम लक्षण ग्रंथकार | केशवदास |
| हिन्दी में रामभक्ति साहित्य सम्बन्धी प्रथम काव्य रचना | रामरक्षा स्त्रोत (रामानंद) |

.....

AJAY KUMAR

# पुरस्कार (Reward)

## साहित्य अकादमी (हिन्दी के लिए)

| रचना | साहित्यकार | वर्ष |
|---|---|---|
| हिमतरंगिनी (काव्य) | माखनलाल चतुर्वेदी | 1955 ई० |
| पद्मावत संजीवनी व्याख्या (टीका/व्याख्या) | वासुदेवशरण अग्रवाल | 1956 ई० |
| बुद्ध धर्म दर्शन | आचार्य नरेंद्र देव | 1957 ई० |
| मध्य एशिया का इतिहास (इ०) | राहुल सांकृत्यायन | 1958 ई० |
| संस्कृति के चार अध्याय (नि०) | 'दिनकर' | 1959 ई० |
| कला और बूढा चाँद (काव्य) | पंत | 1960 ई० |
| भूले-बिसरे चित्र (उपन्यास) | भगवतीचरण वर्मा | 1961 ई० |
| कलम का सिपाही (जीवनी) | अमृतराय | 1963 ई० |
| आँगन के पार द्वार (काव्य) | 'अज्ञेय' | 1964 ई० |
| रस-सिद्धांत (समीक्षा) | नगेंद्र | 1965 ई० |
| मुक्तिबोध (उपन्यास) | जैनेंद्र | 1966 ई० |
| अमृत और विष (उपन्यास) | अमृतलाल नागर | 1967 ई० |
| दो चट्टानें (काव्य) | हरिवंशराय 'बच्चन' | 1968 ई० |
| राग दरबारी (उपन्यास) | श्रीलाल शुक्ल | 1969 ई० |
| निराला की साहित्य साधना (आ०) | रामविलास शर्मा | 1970 ई० |
| कविता के नये प्रतिमान (आ०) | डॉ० नामवर सिंह | 1971 ई० |
| बुनी हुई रस्सी (काव्य) | भवानीप्रसाद मिश्र | 1972 ई० |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| आलोक पर्व (निबंध) | हजारीप्रसाद द्विवेदी | 1973 ई० |
| मिट्टी की बारात (काव्य) | शिवमंगल सिंह 'सुमन' | 1974 ई० |
| तमस (उपन्यास) | भीष्म साहनी | 1975 ई० |
| मेरी तेरी उसकी बात (उपन्यास) | यशपाल | 1976 ई० |
| चुका भी नहीं हूँ मैं (काव्य) | शमशेर | 1977 ई० |
| उतना बस सूरज हूँ (काव्य) | भारतभूषण अग्रवाल | 1978 ई० |
| कल सुनना मुझे (काव्य) | 'धूमिल' | 1979 ई० |
| जिंदगीनामा (उपन्यास) | कृष्णा सोबती | 1980 ई० |
| ताप के ताये हुए दिन (काव्य) | त्रिलोचन शास्त्री | 1981 ई० |
| विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग्य) | हरिशंकर परसाई | 1982 ई० |
| खूँटियों पर टँगे लोग (काव्य) | सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | 1983 ई० |
| लोग भूल गए हैं (काव्य) | रघुवीर सहाय | 1984 ई० |
| कव्वे और काला पानी (क० स०) | निर्मल वर्मा | 1985 ई० |
| अपूर्व (काव्य) | केदारनाथ अग्रवाल | 1986 ई० |
| मगध (काव्य) | श्रीकांत वर्मा | 1987 ई० |
| अरण्य (काव्य) | नरेश मेहता | 1988 ई० |
| अकाल में सारस (काव्य) | केदारनाथ सिंह | 1989 ई० |
| नीला चाँद (उपन्यास) | शिवप्रसाद सिंह | 1990 ई० |
| मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य) | गिरिजाकुमार माथुर | 1991 ई० |
| ढाई पर (उपन्यास) | गिरिराज किशोर | 1992 ई० |
| अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास) | विष्णु प्रभाकर | 1993 ई० |
| कहीं नहीं वहीं (काव्य) | अशोक वाजपेयी | 1994 ई० |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| कोई दूसरा नहीं (काव्य) | कुँवर नारायण | 1995 ई० |
| मुझे चाँद चाहिए (उपन्यास) | सुरेंद्र वर्मा | 1996 ई० |
| अनुभव के आकाश में चाँद (काव्य) | लीलाधर जगूड़ी | 1977 ई० |
| नये इलाके में (काव्य) | अरुण कमल | 1998 ई० |
| दीवार में एक खिड़की रहती थी (उपन्यास) | विनोद कुमार शुक्ल | 1999 ई० |
| हम जो देखते है (काव्य) | मंगलेश डबराल | 2000 ई० |
| कलिकथा : वाया बाईपास (उपन्यास) | अलका सरावगी | 2001 ई० |
| दो पंक्तियों के बीच (काव्य) | राजेश जोशी | 2002 ई० |
| कितने पाकिस्तान (उपन्यास) | कमलेश्वर | 2003 ई० |
| दुष्चक्र में स्रष्टा (काव्य) | वीरेन डंगवाल | 2004 ई० |
| क्याप (उपन्यास) | मनोहर श्याम जोशी | 2005 ई० |
| संशयात्मा (काव्य) | ज्ञानेंद्रपति | 2006 ई० |
| इन्हीं हथियारों से (उपन्यास) | अमरकांत | 2007 ई० |
| कोहरे में कैद रंग (उपन्यास) | गोविन्द मिश्र | 2008 ई० |
| हवा में हस्ताक्षर (काव्य) | कैलाश बाजपेयी | 2009 ई० |
| मोहन दास (कहानी) | उदय प्रकाश | 2010 ई० |
| रेहन पर रग्घू (उपन्यास) | काशीनाथ सिंह | 2011 ई० |
| पत्थर फ़ेंक रहा हूँ (काव्य) | चन्द्रकांत देवताले | 2012 ई० |
| मिलजुल मन (उपन्यास) | मृदुला गर्ग | 2013 ई० |
| विनायक (उपन्यास) | रमेश चन्द्र शाह | 2014 ई० |
| आग की हंसी (काव्य) | राम दरश मिश्र | 2015 ई० |
| पारिजात (उपन्यास) | नासिरा शर्मा | 2016 |

AJAY KUMAR

## व्यास सम्मान

(हिन्दी की उत्कृष्ट साहित्यिक कृति हेतु के. के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जानेवाला सम्मान)

| रचना | साहित्यकार | वर्ष |
|---|---|---|
| भारत के भाषा परिवार और हिन्दी | डॉ० रामविलास शर्मा | 1991 ई० |
| नीला चाँद (उपन्यास) | शिवप्रसाद सिंह | 1992 ई० |
| मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य) | गिरिजा कुमार माथुर | 1993 ई० |
| सपना अभी भी (काव्य) | धर्मवीर भारती | 1994 ई० |
| आत्मजयी (काव्य) | कुँवर नारायण | 1995 ई० |
| हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास (साहित्येतिहास) | रामस्वरूप चतुर्वेदी | 1996 ई० |
| उत्तर कबीर व अन्य कविताएँ (काव्य) | केदारनाथ सिंह | 1997 ई० |
| पाँच आंगनों वाला घर (उपन्यास) | गोविंद मिश्र | 1998 ई० |
| विस्रामपुर का संत (उपन्यास) | श्री लाल शुक्ल | 1999ई० |
| पहला गिरमिटिया (उपन्यास) | गिरिराज किशोर | 2000 ई० |
| आलोचना का पक्ष (आलोचना) | रमेश चंद्र शाह | 2001 ई० |
| पृथ्वी का कृष्ण पक्ष (काव्य) | कैलाश वाजपेयी | 2002 ई० |
| आवां (उपन्यास) | चित्रा मुद्गल | 2003 ई० |
| कठगुलाब (उपन्यास) | मृदुला गर्ग | 2004 ई० |
| कथा सतीसर (उपन्यास) | चंद्रकांता | 2005 ई० |
| कवित का अर्थात (आलोचना) | परमानंद श्रीवास्तव | 2006 ई० |
| समय-सरगम (उपन्यास) | कृष्णा सोबती | 2007 ई० |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| एक कहानी यह भी (आत्मकथा) | मन्नू भंडारी | 2008 ई० |
| इन्हीं हथियारों से (उपन्यास) | अमरकांत | 2009 ई० |
| फिर भी कुछ रह जाएगा (काव्य) | विश्वनाथ तिवारी | 2010 ई० |
| आम के पत्ते (काव्य) | राम दरश मिश्र | 2011 ई० |
| न भूतो न भविष्यति (उपन्यास) | नरेंद्र कोहली | 2012 ई० |
| व्योमकेश दरवेश (जीवनी) | विश्वनाथ त्रिपाठी | 2013 ई० |
| प्रेमचंद कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन (आलोचना) | कमल किशोर गोयनका | 2014 ई० |
| क्षमा (काव्य) | सुनीता जैन | 2015 ई० |
| काटना शमी का वृक्ष पद्मपखुरी की धार से (उपन्यास) | सुरेन्द्र वर्मा | 2016 |
| दुक्खम-सुक्खम (उपन्यास) | ममता कालिया | 2017 |

## ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

| रचना | साहित्यकार | वर्ष |
|---|---|---|
| चिदंबरा | पंत | 1968 ई० (4 वां) |
| उर्वशी | 'दिनकर' | 1972 ई० (8 वां) |
| कितनी नावों में कितनी बार | 'अज्ञेय' | 1978 ई० (14 वां) |
| यामा | महादेवी वर्मा | 1982 ई० (18 वां) |
| सम्पूर्ण साहित्य | नरेश मेहता | 1992 ई० (28 वां) |
| सम्पूर्ण साहित्य | निर्मल वर्मा (पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह के साथ संयुक्त रूप से) | 1999 ई० (35 वां) |
| सम्पूर्ण साहित्य | कुँवर नारायण | 2005 ई० (41 वां) |
| सम्पूर्ण साहित्य | अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल | 2009 ई० (45 वां) |

AJAY KUMAR

| | | |
|---|---|---|
| सम्पूर्ण साहित्य | केदारनाथ सिंह | 2013 ई० (49 वां) |
| सम्पूर्ण साहित्य | कृष्णा सोबती | 2017 ई० (53 वां) |

नोट : वर्ष 1984 ई० के बाद यह पुरस्कार लेखक के समग्र योगदान पर दिया जाने लगा है।

.....

AJAY KUMAR

# हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Hindi Sahity Ka Vstunishth Prshn)

(1) हिन्दी साहित्य के आरंभिक काल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने क्या कहा है ?

(A)आदि काल

(B) चारण काल

(C) वीरगाथा काल

(D) सिद्ध-सामंत काल

Answer-(C)

(2) वीरगाथा काल का कवि नहीं है-

(A)चन्दबरदाई

(B) नामदेव

(C) जगनिक

(D) मधुकर

Answer-(B)

(3) वीरगाथा काल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं-

(A) चन्दबरदाई

(B) जगनिक

(C) दलपति विजय

(D) विद्यापति

Answer-(A)

(4) 'पृथ्वीराज रासो' के रचनाकार हैं-

AJAY KUMAR

(A) जयदेव

(B) चन्दबरदाई

(C) जगनिक

(D) विद्यापति

Answer-(B)

(5) कबीरदास की भाषा थी-

(A) ब्रज

(B) कन्नौजी

(C) सधुक्कड़ी

(D)खड़ी बोली

Answer- (C)

(6) कटकटान कपि कुंजर भारी।

दुहु भुजदंड तमकि महिमारी।।

डोलत धरनि सभापद खसे

चले भाजि भय मारूत ग्रसे।।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) तुलसीदास

(B) जायसी

(C) देव

(D) नूर मोहम्मद

Answer- (A)

AJAY KUMAR

(7) नयन जो देखा कमल-सा निरमल नीर सरीर।

हंसत जो देखा हंस भा दसन ज्योति नगहीर।।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) तुलसीदास

(B) जयशंकर प्रसाद

(C) जायसी

(D) कबीरदास

Answer- (C)

(8) 'शिवा बावनी' के रचनाकार हैं-

(A) पद्माकर

(B) भूषण

(C) केशवदास

(D) जगनिक

Answer- (B)

(9) नर की और नल नीर की गति एके करि जोय।

जेतो नीचो हे चले तेतो ऊँचो होय।।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) तुलसीदास

(B) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(C) बिहारीलाल

AJAY KUMAR

(D) केशवदास

Answer- (C)

(10) सखि वे मुझसे कह कर जाते।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) अज्ञेय

(B) मैथली शरण गुप्त

(C) हरिऔध

(D) जयशंकर प्रसाद

Answer- (B)

(11) हिन्दी कविता को छंदों की परिधि से मुक्त करानेवाले थे-

(A)सुमित्रानंदन पंत

(B) जयशंकर प्रसाद

(C) महादेवी वर्मा

(D) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

Answer-(D)

(12) 'तितली' किसकी रचना है ?

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(C) श्याम सुन्दर दास

(D) आचार्य महावीर प्र० द्विवेदी

AJAY KUMAR

Answer-(A)

(13) 'अतीत के चलचित्र' के रचयिता हैं-

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(C) महादेवी वर्मा

(D)सुमित्रानंदन पंत

Answer- (C)

(14) पल्लव के रचयिता हैं-

(A) सुमित्रानंदन पंत

(B) निराला

(C) जयशंकर प्रसाद

(D)महादेवी वर्मा

Answer- (A)

(15) 'चिन्तामणि' के रचयिता हैं-

(A)जयशंकर प्रसाद

(B)महावीर प्रसाद द्विवेदी

(C) रामचन्द्र शुक्ल

(D)हरिऔध

Answer- (C)

(16) 'जनमेजय का नागयज्ञ' किसकी कृति हैं ?

AJAY KUMAR

(A) सेठ गोविन्द दास

(B) जयशंकर प्रसाद

(C) लक्ष्मी नारायण लाल

(D) गोविन्द वल्लभ पंत

Answer- (B)

(17) हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ कल वहाँ चले।

मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) सियारामशरण गुप्त

(B) भगवती चरण वर्मा

(C) सुभद्रा कुमारी चौहान

(D) रामधारी सिंह दिनकर

Answer- (B)

(18) निम्नलिखित में सबसे पहले अपनी आत्मकथा हिन्दी में किसने लिखी ?

(A) श्याम सुन्दर दास

(B) सेठ गोविन्द दास

(C) जवाहर लाल नेहरू

(D) राजेन्द्र प्रसाद

Answer- (D)

(19) अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,

AJAY KUMAR

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

उपर्युक्त पंक्तियों किस काव्य की हैं ?

(A) कामायनी

(B) साकेत

(C) यशोधरा

(D) आँसू

Answer- (C)

(20) हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,

उषा ने हँस अभिवादन किया और पहनाया हीरे का हार।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) रामधारी सिंह दिनकर

(B) माखन लाल चतुर्वेदी

(C) जयशंकर प्रसाद

(D) मैथली शरण गुप्त

Answer- (C)

(21) आंचलिक रचनाएँ किससे संबंधित होती हैं ?

(A) देश विशेष से

(B) लोक विशेष से

(C) क्षेत्र विशेष से

(D) जाति विशेष से

Answer- (C)

AJAY KUMAR

(22) निर्गुण भक्ति काव्य का प्रमुख कवि है ?

(A) सूरदास

(B) तुलसीदास

(C) कबीरदास

(D) केशवदास

Answer- (C)

(23) 'श्रद्धा' किस कृति की नायिका है ?

(A) कामायनी

(B) कुरुक्षेत्र

(C) रामायण

(D) साकेत

Answer- (A)

(24) तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)रहीम

(B)कबीरदास

(C) रसखान

(D)बिहारी

Answer-(A)

AJAY KUMAR

(25) तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाए।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(B)रामधारी सिंह दिनकर

(C)माखनलाल चतुर्वेदी

(D) राम नरेश त्रिपाठी

Answer- (A)

(26) बुँदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)सत्यनारायण पाण्डेय

(B)मैथलीशरण गुप्त

(C)सुभद्रा कुमारी चौहान

(D) महादेवी वर्मा

Answer- (C)

(27) मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में देना तुम फ़ेंक

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A) सत्यनारायण पाण्डेय

(B)सोहन लाल द्विवेदी

(C)बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

AJAY KUMAR

(D) माखन लाल चतुर्वेदी

Answer- (D)

(28) दरवाजे से चंडालगढ़ी की तरफ नजर दौड़ाने पर एक अद्भुत दृश्य दिखाई देता था।- इस पंक्ति के रचनाकार हैं :

(A)राहुल सांकृत्यायन

(B)रामचन्द्र शुक्ल

(C)जवाहर लाल नेहरू

(D) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

Answer- (A)

(29) भूषण की कविता का प्रधान स्वर है-

(A) व्यंग्यात्मक

(B)प्रशस्तिपरक

(C)श्रृंगारिक

(D)कारुणिक

Answer- (B)

(30) अपभ्रंश में कृष्ण काव्य के प्रणेता हैं-

(A) पुष्पदन्त

(B)शालिभद्र सूरि

(C)स्वयंभू

(D) हरिभद्र सूरि

Answer- (A)

AJAY KUMAR

(31) प्रथम सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के रचयिता हैं-

(A)नूर मुहम्मद

(B)जायसी

(C)मुल्ला दाऊद

(D) कुतबन

Answer- (C)

(32) हिन्दी के प्रथम गद्यकार है-

(A) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'

(B)लल्लूलाल

(C)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(D) बालकृष्ण भट्ट

Answer- (B)

(33) हिन्दी के सर्वप्रथम प्रकाशित पत्र का नाम है-

(A) सम्मेलन पत्रिका

(B)उतण्ड मार्तण्ड

(C)सरस्वती

(D)नागरी प्रचारिणी पत्रिका

Answer- (B)

(34) छायावाद के प्रवर्तक का नाम है-

(A)सुमित्रानंदन पंत

AJAY KUMAR

(B)श्रीधर पाठक

(C) मुकुटधर पांडेय

(D) जयशंकर प्रसाद

Answer- (D)

(35) 'प्रगतिवाद उपयोगितावाद का दूसरा नाम है।'- यह कथन किसका है ?

(A)राम विलास शर्मा

(B)प्रेमचंद

(C) नन्द दुलारे बाजपेयी

(D)सुमित्रनंदन पंत

Answer- (C)

(36) प्रेमचन्द्र के अधूरे उपन्यास का नाम है

(A)गबन

(B)रंगभूमि

(C) मंगलसूत्र

(D)सेवासदन

Answer- (C)

(37) रामधारी सिंह दिनकर को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था-

(A)'रश्मिरथी' पर

(B)'परशुराम की प्रतीक्षा' पर

(C) 'कुरुक्षेत्र' पर

AJAY KUMAR

(D)'उर्वशी' पर

Answer- (D)

(38) हिन्दी साहित्य के इतिहास के सर्वप्रथम लेखक का नाम है-

(A)जार्ज ग्रियर्सन

(B)शिवसिंह सेंगर

(C)आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(D)गार्सा द तासी

Answer- (D)

(39) 'पद्मावत' किसकी रचना है ?

(A)नाभादास

(B)केशवदास

(C)तुलसीदास

(D)जायसी

Answer- (D)

(40) 'बैताल पचीसी' के रचनाकार हैं-

(A)लल्लूलाल

(B)सदल मिश्र

(C)नाभा दास

(D) सुरति मिश्र

Answer- (D)

AJAY KUMAR

(41) 'सुहाग के नूपुर' के रचयिता हैं-

(A)निराला

(B)मोहन राकेश

(C)अमृत लाल नागर

(D) प्रेमचन्द्र

Answer- (C)

(42) 'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी रचना है ?

(A)रामधारी सिंह 'दिनकर'

(B)भगवती चरण वर्मा

(C)माखनलाल चतुर्वेदी

(D) सुभद्रा कुमारी चौहान

Answer- (A)

(43 ) 'अशोक के फूल' (निबंध-संग्रह) के रचनाकार हैं-

(A)कुबेरनाथ राय

(B)गुलाब राय

(C)रामचन्द्र शुक्ल

(D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

Answer- (D)

(44) 'झरना' (काव्य-संग्रह) के रचयिता हैं-

(A)सोहन लाल द्विवेदी

AJAY KUMAR

(B)महादेवी वर्मा

(C)जयशंकर प्रसाद

(D) सुभद्रा कुमारी चौहान

Answer- (C)

(45) 'भारत भारती' (काव्य) के रचनाकार है-

(A)गोपालशरण सिंह 'नेपाली'

(B)नरेश मेहता

(C)मैथलीशरण गुप्त

(D) धर्मवीर भरती

Answer- (C)

(46) 'दोहाकोश' के रचयिता हैं-

(A)लुइपा

(B)जोइन्दु

(C)सरहपा

(D) कण्हपा

Answer- (C)

(47) 'प्रेमसागर' के रचनाकार है-

(A)सदल मिश्र र

(B)उसमान

(C)लल्लूलाल

AJAY KUMAR

(D)सुन्दर दास

Answer- (C)

(48) 'पंच परमेश्वर' (कहानी) के लेखक हैं-

(A)रामधारी सिंह 'दिनकर'

(B)प्रेमचन्द

(C)मैथलीशरण गुप्त

(D) सुमित्रनंदन पंत

Answer- (B)

(49) 'तोड़ती पत्थर' (कविता) के कवि हैं-

(A)सुभद्रा कुमारी चौहान

(B)महादेवी वर्मा

(C)सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(D)माखन लाल चतुर्वेदी

Answer- (C)

(50) 'हार की जीत' (कहानी) के कहानीकार हैं-

(A)सुदर्शन

(B)यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

(C)कमलेश्वर

(D) रांगेय राघव

Answer- (A)

AJAY KUMAR

(51) 'रानी केतकी की कहानी' के रचयिता हैं-

(A)वृन्दावन लाल वर्मा

(B)किशोरी लाल गोस्वामी

(C)माधव रावे सप्रे

(D)इंशा अल्ला खाँ

Answer- (D)

(52) 'शिव शंभु के चिट्ठे' से संबंधित रचनाकार हैं-

(A)बाबू तोता राम

(B)केशव राम भट्ट

(C)अम्बिका दत्त व्यास

(D)बाल मुकुन्द गुप्त

Answer- (D)

(53) 'रसिक प्रिया' के रचयिता हैं-

(A)मलूक दास

(B)बिहारी लाल

(C)दादू दयाल

(D) केशव दास

Answer- (D)

(54) 'कुटज' के रचयिता हैं-

(A)शांति प्रिय द्विवेदी

AJAY KUMAR

(B)हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C)कुबेरनाथ राय

(D)विद्या निवास मिश्र

Answer- (B)

(55) 'आँसू' (काव्य) के रचनाकार हैं-

(A)सुमित्रानंदन पंत

(B)सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(C)जयशंकर प्रसाद

(D) मैथलीशरण गुप्त

Answer- (C)

(56) चन्दन विष व्याप्त नहीं, लिपटे रहत भुजंग-

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)सूरदास

(B)कबीर

(C)बिहारी

(D)रहीम

Answer- (D)

(57)अमिय हलाहल, मदभरे, सेत स्याम, रतनार।

जियत, मरत, झुकि-झुकि परत जेहि चितवत इक बार।।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

AJAY KUMAR

(A)आलम

(B)रसलीन

(C)बिहारी

(D)मतिराम

Answer- (B)

(58) जब-जब होय धर्म की हानी, बाढ़ै असुर अधम अभिमानी।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)रसखान

(B)तुलसी

(C)बिहारी

(D)कबीर

Answer- (B)

(59) परसित सरिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)रसखान

(B)तुलसी

(C)बिहारी

(D)मीरा

Answer- (B)

(60) रक्त है ? या है नसों में क्षद्र पानी,

AJAY KUMAR

जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)माखनलाल चतुर्वेदी

(B)रामधारी सिंह 'दिनकर'

(C)बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

(D)सुभद्रा कुमारी चौहान

Answer- (A)

(61) दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुन्दरी परी सी

धीरे-धीरे-धीरे।

प्रस्तुत पंक्ति के रचनाकार हैं-

(A)महादेवी वर्मा

(B)सुमित्रनंदन पंत

(C)रामधारी सिंह 'दिनकर'

(D)सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Answer- (D)

(62) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)कबीर

(B)जायसी



AJAY KUMAR

(C)मीरा

(D)रसखान

Answer-(A)

(63) 'अष्टछाप' के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि के रूप में..... का नाम लिया जाता है।

(A)कुंभनदास

(B)सूरदास

(C)परमानंद दास

(D)कृष्ण दास

Answer- (B)

(64) 'राम चरित मानस' की भाषा क्या है ?

(A)भोजपुरी

(B)प्राकृत

(C)ब्रजभाषा

(D)अवधी

Answer- (D)

(65) भूषण किस रस के कवि थे ?

(A)रौद्र रस

(B)करुण रस

(C)वीर रस

(D)श्रृंगार रस

AJAY KUMAR

Answer-(C)

(66) 'हिन्दी का आदि कवि' किसे माना जाता है ?

(A)अब्दुर रहमान

(B)सरहपा

(C)स्वयंभू

(D)पुष्पदंत

Answer- (C)

(67) 'राम चरित मानस' में कितने काण्ड हैं ?

(A)4

(B)5

(C)7

(D)8

Answer- (C)

(68) निम्नलिखित में कौन-सा एक व्यंग्य लेखक है ?

(A)श्याम सुन्दर दास

(B)विद्या निवास मिश्र

(C)राहुल सांकृत्यायन

(D)हरिशंकर परसाई

Answer- (D)

(69) 'आपका बंटी' रचना की प्रधान समस्या को उजागर करने वाले विकल्प को चुनिए-

AJAY KUMAR

(A)राजनितिक समस्या

(B)मनोवैज्ञानिक समस्या

(C)शिक्षा समस्या

(D)तलाक से जुड़ी बाल समस्या

Answer- (D)

(70) हिन्दी पत्रिका 'कादम्बिनी' के संपादक कौन है ?

(A)राजेन्द्र अवस्थी

(B)रमेश बक्षी

(C)राजेन्द्र यादव

(D)दुर्गा प्रसाद शुक्ल

Answer- (A)

(71) 'निराला' को कैसा कवि माना जाता है ?

(A)अवसरवादी

(B)क्रांतिकारी

(C)पलायनवादी

(D)भाग्यवादी

Answer- (B)

(72) कवि कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' का हिन्दी अनुवाद किसने किया ?

(A)सदासुख लाल

(B)गोस्वामी विट्ठलनाथ

AJAY KUMAR

(C)राजा शिवप्रसाद

(D)राजा लक्ष्मण सिंह

Answer- (D)

(73) किस काल को स्वर्णकाल कहा जाता है ?

(A)रीति काल

(B)भक्ति काल

(C)आदि काल

(D)आधुनिक काल

Answer- (B)

(74) हिन्दी गद्य का जन्मदाता किसको माना जाता है ?

(A)प्रताप नारायण मिश्र

(B)महावीर प्रसाद द्विवेदी

(C)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(D)बालकृष्ण भट्ट

Answer- (C)

(75) सूरदास के गुरु कौन थे ?

(A)रामानंद

(B)मध्वाचार्य

(C)रामदास

(D)बल्लभाचार्य

AJAY KUMAR

Answer- (D)

(76) 'कामायनी' किस प्रकार का ग्रंथ है ?

(A)खण्ड काव्य

(B)मुक्तक काव्य

(C)महाकाव्य

(D)चम्पू काव्य

Answer- (C)

(77) 'गागर में सागर' भरने का कार्य किस कवि ने किया है ?

(A)बिहारी

(B)रसखान

(C)घनानंद

(D)सूरदास

Answer- (A)

(78) 'महाभोज' रचना की प्रधान समस्या को उजागर करने वाले विकल्प को चुनिए-

(A)भ्रष्टाचार की समस्या

(B) नारी समस्या

(C)राजनीतिक समस्या

(D) मनोवैज्ञानिक समस्या

Answer- (C)

(79) 'वापसी' किस विधा में रचित है ?

AJAY KUMAR

(A)आत्मकथा

(B)कहानी

(C)संस्मरण

(D)यात्रा-वृत्त

Answer- (B)

(80) 'तोड़ती पत्थर' कैसी कविता है ?

(A)व्यंग्यपरक

(B)उपदेशात्मक

(C)यथार्थवादी

(D)आदर्शवादी

Answer- (C)

(81) फणीश्वरनाथ 'रेणु' से संबद्ध सही प्रदेश का नाम चुनिए-

(A)महाराष्ट्र

(B)बिहार

(C)हिमाचल

(D)उत्तरांचल

Answer- (B)

(82) विद्यापति की 'पदावली' की भाषा क्या है ?

(A)मैथली

(B)ब्रजभाषा

AJAY KUMAR

(C)भोजपुरी

(D)मगही

Answer- (A)

(83) ..... को 'उग्र' कहते हैं ?

(A)रामेश्वर लाल दूबे

(B)पाण्डेय बेचन शर्मा

(C)नरेश मेहता

(D)अज्ञेय

Answer- (B)

(84) बिहारी किस राजा के दरबारी कवि थे ?

(A)महाराणा प्रताप

(B)शिवाजी

(C)जय सिंह

(D)तेज सिंह

Answer- (C)

(85) 'शेष कादम्बरी' के रचयिता है ?

(A)नरेश मेहता

(B)हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C)बाणभट्ट

(D)अलका सरावगी

AJAY KUMAR

Answer- (D)

(86) 'राग दरबारी' (उपन्यास) के रचयिता है ?

(A)राही मासूम रजा

(B)श्रीलाल शुक्ल

(C)हरिशंकर परसाई

(D)शरद जोशी

Answer- (B)

(87) 'पूस की रात' (कहानी) के रचनाकार हैं-

(A)प्रेमचन्द्र

(B)शिवपूजन सहाय

(C)निराला

(D)प्रसाद

Answer- (A)

(88) 'ध्रुव स्वामिनी' (नाटक) के रचयिता हैं-

(A)राम कुमार वर्मा

(B)राम वृक्ष बेनीपुरी

(C)जयशंकर प्रसाद

(D)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Answer- (C)

AJAY KUMAR

(89) 'आत्मनिर्भरता' (निबंध) के रचनाकार हैं-

(A)महावीर प्रसाद द्विवेदी

(B)बालकृष्ण भट्ट

(C)रामचन्द्र शुक्ल

(D)अजित कुमार

Answer- (B)

(90) 'गंगा छवि वर्णन' (कविता) के रचनाकार हैं-

(A)जयशंकर प्रसाद

(B)मैथलीशरण गुप्त

(C)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(D)हरिऔध

Answer- (C)

(91) 'भिक्षुक' (कविता) के रचयिता हैं-

(A)प्रसाद

(B)पंत

(C) महादेवी वर्मा

(D)निराला

Answer-(D)

(92) 'ईदगाह' (कहानी) के रचनाकार हैं-

(A)प्रेमचंद

AJAY KUMAR

(B) अज्ञेय

(C)प्रसाद

(D)जैनेन्द्र

Answer- (A)

(93) 'वीरों का कैसा हो वसंत' (कविता) के रचयिता है-

(A)केदारनाथ सिंह

(B) सुभद्रा कुमारी चौहान

(C) अज्ञेय

(D)धर्मवीर भारती

Answer- (B)

(94) मसि कागद छुयो नहीं कलम गही नहिं हाथ।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)दादू दयाल

(B)कबीरदास

(C) रैदास

(D)सुन्दर दास

Answer- (B)

(95) लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहिं तो मेरे कवित्त बनावत।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)केशवदास

AJAY KUMAR

(B)घनानन्द

(C) भिखारी दास

(D)पद्माकर

Answer- (B)

(96) ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)नरेन्द्र शर्मा

(B)जयशंकर प्रसाद

(C) राम नरेश त्रिपाठी

(D)सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

Answer- (B)

(97) बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

(A)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(B)मुक्तिबोध

(C) रामचन्द्र शुक्ल

(D)हजारी प्रसाद द्विवेदी

Answer- (C)

(98) ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय।

प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं-

AJAY KUMAR

(A)मीराबाई

(B)कबीर दास

(C) जायसी

(D)तुलसीदास

Answer- (B)

(99) 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे' के रचयिता है-

(A)जगदीश गुप्त

(B)बाल मुकुन्द गुप्त

(C)मैथली शरण गुप्त

(D)सियाराम शरण गुप्त

Answer- (C)

(100) निम्नलिखित में से कौन-सा प्रबंध काव्य है ?

(A)रामचरित मानस

(B)आँसू

(C)एक कंठ विषपायी

(D)बिहारी रत्नाकर

Answer- (A)

(101) निम्नलिखित में किन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है ?

(A)प्रेमचन्द

(B)नामवर सिंह

AJAY KUMAR

(C)निराला

(D)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Answer- (B)

(102) 'आत्मजयी' के रचयिता हैं-

(A)श्रीकांत वर्मा वसंत

(B)नरेश मेहता

(C)कुँवर नारायण

(D)मुक्तिबोध

Answer- (C)

(103) 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' (काव्य) के रचयिता हैं-

(A)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(B) भवानी प्रसाद मिश्र

(C)गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(D) गिरिजा कुमार माथुर

Answer- (C)

(104) 'यामा' के रचयिता है-

(A)सुमित्रनंदन पंत

(B)सुभद्रा कुमारी चौहान

(C)महादेवी वर्मा

(D)मीराबाई

AJAY KUMAR

Answer- (C)

(105) 'संसद से सड़क तक' (काव्य) के रचनाकार हैं-

(A)श्रीकांत वर्मा

(B)सुदामा पांडेय 'धूमिल'

(C)अज्ञेय

(D)रघुवीर सहाय

Answer- (B)

(106) 'रंगभूमि' (उपन्यास) के रचनाकार हैं-

(A) राजेन्द्र यादव

(B)रांगेय राघव

(C)प्रेमचंद

(D)अमरकांत

Answer- (C)

(107)प्रभुजी तुम चंदन हम पानी।

जाकी अंग-अंग बास समानी।।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) रैदास

(B)मलूक दास

(C)गुरु नानक

(D)कबीर दास

AJAY KUMAR

Answer- (A)

(108) जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं-

(A) सूरदास

(B) मीराबाई

(C) तुलसीदास

(D) गिरिधर

Answer- (C)

(109) 'प्रेम पचीसी' (कहानी-संग्रह) के रचनाकार हैं-

(A) प्रेमचंद

(B)जयशंकर प्रसाद

(C) अज्ञेय

(D) यशपाल

Answer- (A)

(110) ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य के लिए दिया जाता है ?

(A) सिनेमा

(B) विज्ञान

(C) समाज सेवा

(D) साहित्य

Answer- (D)

AJAY KUMAR

(111) 'प्रेमसागर' के लेखक कौन हैं ?

(A)इंशा अल्ला खाँ

(B) लल्लू लाल

(C) मुंशी प्रेमचन्द्र

(D)मुंशी सदासुख लाल

Answer- (B)

(112) तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में किसका वर्णन किया हैं ?

(A)शिव

(B) कृष्ण

(C) राम

(D) विष्णु

Answer- (C)

(113) 'त्यागपत्र' (उपन्यास) किसकी रचना है ?

(A)प्रेमचंद

(B) जैनेन्द्र कुमार

(C) अज्ञेय

(D) रेणु

Answer- (B)

(114) ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाता है-

(A)हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु

AJAY KUMAR

(B) भारतीय लेखकों की आर्थिक सहायता हेतु

(C) भारतीय भाषा में साहित्यकारों के रचनात्मक लेखन हेतु

(D) इनमें से कोई नहीं

Answer- (C)

(115) 'मजदूरी और प्रेम' (निबंध) के रचनाकार हैं-

(A) सरदार पूर्ण सिंह

(B) बालकृष्ण भट्ट

(C) प्रताप नारायण मिश्र

(D) रामचन्द्र शुक्ल

Answer- (D)

(116) 'कलम की सिपाही' क्या है ?

(A) आत्मकथा

(B) रेखाचित्र

(C) संस्मरण

(D) जीवनी

Answer- (D)

(117) दुःख ही जीवन की कथा रही।

क्या कहूँ आज जो नहीं कही।।

प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता का नाम है-

(A) महादेवी वर्मा

AJAY KUMAR

(B) जयशंकर प्रसाद

(C) सुमित्रनंदन पंत

(D)सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

Answer- (D)

(118 ) हिंदी की पहली कहानी लेखिका का नाम है-

(A) बंग महिला

(B) सत्यवती

(C) चन्द्र किरन

(D) चन्द्रकांता

Answer- (A)

(119) खड़ी बोली के सर्वप्रथम लोकप्रिय कवि माने जाते है ?

(A) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(B) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(C)मैथली शरण गुप्त

(D)अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

Answer- (D)

(120 ) 'गोदान' किसकी कृति है ?

(A)फणीश्वर नाथ 'रेणु'

(B) प्रेमचंद

(C) अज्ञेय

AJAY KUMAR

(D)जयशंकर प्रसाद

Answer- (B)

(121) 'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्मकथा है-

(A) शीला झुनझुनवाला की

(B) मैत्रेयी पुष्पा की

(C) कुसुम अंचल की

(D) गोपाल प्रसाद व्यास की

Answer-(B)

(122) 'चरणदास चोर' किसकी नाट्य कृति है ?

(A)मुद्राराक्षस

(B) बलराज पंडित

(C) हबीब तनवीर

(D) नाग बोडस

Answer- (C)

(123) ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों को किस नाम से पुकारा जाता है ?

(A)सिद्ध कवि

(B) नाथपंथी कवि

(C) भक्त कवि

(D) संत कवि

Answer- (D)

AJAY KUMAR

(124) 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' किसे कहा जाता है ?

(A)पुष्पदंत को

(B) धनपाल को

(C)शालिभद्र सूरि को

(D) स्वयंभू को

Answer-(D)

(125) चंदरबरदाई किसके दरबारी कवि थे ?

(A) महाराज हम्मीर के

(B) महाराज बीसल देव के

(C) महाराणा प्रताप के

(D) पृथ्वीराज चौहान के

Answer-(D)

(126) रीतिकाल का वह कौन-सा कवि है, जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया ?

(A)रहीम

(B) मतिराम

(C) बिहारी

(D)देव

Answer- (C)

(127) 'कठिन काव्य का प्रेत' किस कवि को कहा जाता हैं ?

(A) सेनापति को

AJAY KUMAR

(B) चिन्तामणि को

(C) मतिराम को

(D)केशवदास को

Answer- (D)

(128) 'द्विवेदी युग' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है ?

(A)शांतिप्रिय द्विवेदी

(B) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D)राम अवध द्विवेदी

Answer- (B)

(129) 'मैथिल कोकिल' किसे कहा जाता है ?

(A)विद्यापति

(B) अमीर खुसरो

(C) चंदबरदाई

(D)हेमचन्द्र

Answer-(A)

(130) 'प्रकृति के सुकुमार कवि' किसे कहा जाता है ?

(A)जयशंकर प्रसाद

(B) सुमित्रानंदन पंत

(C) महादेवी वर्मा

AJAY KUMAR

(D)निराला

Answer- (B)

(131) 'एक भारतीय आत्मा' किसे कहा जाता है ?

(A)जयशंकर प्रसाद

(B) माखनलाल चतुर्वेदी

(C)रामधारी सिंह दिनकर

(D) सुमित्रानंदन पंत

Answer- (B)

(132) कथा सम्राट किसे कहा जाता है ?

(A)प्रेमचंद

(B)जैनेन्द्र कुमार

(C)अज्ञेय

(D)फणीश्वरनाथ 'रेणु'

Answer- (A)

AJAY KUMAR

# BEST OF LUCK

AJAY KUMAR